शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनघनपाठः

ŚUKLAYAJURVEDA MĀDHYANDINA GHANAPĀṬHAḤ

प्रथमो दशकः

प्रथमो भागः

VOLUME - I

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

जनपथ, नई दिल्ली

॥ शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनघनपाठः ॥

ŚUKLAYAJURVEDA MĀDHYANDINA GHANAPĀṬHAḤ

दुर्लभप्राच्यग्रन्थमालायाः प्रथमं पुष्पम्

शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनघनपाठः

प्रथमो दशकः

प्रथमो भागः

सम्पादकः एवं पाठगृहीता

प्रो० गोपाल प्रसाद शर्मा

भूतपूर्व वेदविभागाध्यक्षः

(श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

सहसम्पादकः

डॉ० कीर्तिकान्त शर्मा



इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

जनपथ, नई दिल्ली

प्रथम संस्करण : २०२२

भाग – १

ISBN 978 – 93 – 80935 – 72 –0

978 – 93 – 80935 – 73 –7 (Part- I)

मूल्य – 000 रुपये

अक्षर साधना – श्री कर्मवीर सिंह रोहिल्ला

मुद्रक – नई दिल्ली –

प्रकाशक -

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

जनपथ, नई दिल्ली – ११०००१

विषयानुक्रमणी

प्राक्कथन

वेदों के सस्वर अध्ययन - अध्यापन की आदि काल से चली आ रही श्रुति परम्परा आज भी अपने विशुद्ध स्वरूप में निरन्तर प्रवहमान है। गुरुमुख से श्रवण करके ही वेदों के अध्ययन की प्राचीन परम्परा रही है। इसीलिए वेदों को श्रुति कहा जाता है। जब हम अपनी वैदिक संस्कृति की परम्परा के विषय में विचार या मनन करते हैं तथा पुरातन काल की ओर दृष्टि डालते हैं कि अर्वाचीन काल की बहुत सी ऐसी ही अनेक परम्पराएँ प्रायः लुप्तता को प्राप्त हो गईं। परन्तु वैदिक अध्ययन की सस्वर सनातन परम्परा आज भी यथापूर्वमकल्पयत् वैसी ही विद्यमान है। इसका मूल कारण है कि हमारे पूर्व जन्मा ऋषियों (जिन्होंने वेद मन्त्रों का साक्षात्कार किया) ने वेदों के पठन – पाठन के ऐसे ३ सामान्य प्रकृति पाठ (संहिता, पद और क्रम) तथा ८ विकृतिपाठ (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ और घन) के प्रकार बनाये कि जिनके पठन-पाठन से मन्त्रों में एक भी मात्रा या वर्ण इधर से उधर नहीं हो सकता अर्थात् उन वेद के मन्त्रों में कोई भी विकार नहीं आ सके। विकृति नहीं आये इसीलिए उनका नाम भी विकृति पाठ ही रखा गया। वे इस प्रकार हैं –

जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः॥

जिनमें से **घन पाठ** का सर्वाधिक महत्त्व है तथा श्रुति मधुर भी है। वेद पाठशालाओं में वैदिक ब्रह्मचारी वटुक जब घन पाठ करते हैं तो वह दृश्य अपने में एक अनन्त, अनन्य और आनन्दप्रद होता है। यह हमारे ऋषि – मुनियों की अपूर्व, अप्रतिम और अद्वितीय कृति है जो बहुत समय से सामान्य जनों के लिए दुर्लभ थी। अभी तक जटा पाठ को छोड़कर विकृति पाठों का कहीं से भी प्रकाशन नहीं हुआ है। जटा पाठ भी अभी श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति से प्रकाशित होना है। जो प्रो० गोपाल प्रसाद शर्मा जी के द्वारा ही सम्पादित है। विकृति पाठों के अन्तर्गत घनपाठ का पहली वार संपादन के पश्चात् प्रकाशन किया जा रहा है।

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, दिल्ली इस शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन घनपाठ का सर्व प्रथम प्रकाशक है। यह हमारी संस्था के लिए बड़े ही

सौभाग्य का अवसर है। इसके प्रकाशन से घनपाठ की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परम्परा के साधकों को सहायता होगी तथा वह परम्परा अनवरत रखना सहज सुलभ हो जायेगा। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का यह सदा उद्देश्य रहा है कि ऐसे ग्रन्थों अथवा शास्त्रीय पक्षों के सम्बन्ध में प्रकाशन प्रस्तुत किये जायें जो दुर्लभ तथा कठिन हैं। भारतीय संस्कृति की धारा को अनवरत प्रवाहमान रखने में केन्द्र अपनी विनम्र आहुति ऐसे प्रकाशनों के माध्यम से अनवरत रखता है।

मैं इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से कामना करता हूँ कि यह शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन घनपाठ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं प्रथम प्रकाशन वैदिक जगत् के विद्वानों, वेद के अध्येताओं, अनुसन्धाताओं और वैदिक जिज्ञासुओं के लिए बहुत ही उपयोगी एवं कल्याणकारक होगा। शुभमस्तु।

(डॉ० सच्चिदानन्द जोशी)
सदस्य सचिव

भूमिका

विश्व के प्राचीनतम वाङ्मय के रूप में वेद सर्वमान्य रूप से प्रतिष्ठित हैं। भारतीय जीवन पद्धति के मूल में वेद ही हैं क्योंकि स्मृतियाँ भी वेद विरुद्ध होने पर स्वीकार्य नहीं होती हैं। मीमांसकों का वेद के प्रति श्रद्धा का भाव उनके वेदापौरुषेयत्व सिद्धान्त से ही स्पष्ट है। मन्त्रों के भाष्यों में भाष्यकारों में दृष्टि की भिन्नता हो सकती है परन्तु मन्त्रों के विषय में ऐसा नहीं कहा जा सकता है। किसी भी मन्त्र के अक्षर अथवा स्वर के विषय में कोई दुविधा हमें नहीं होती है। इस दुविधा के अभाव का श्रेय वैदिकों को जाता है, जिन्होंने घोर परिश्रम कर सम्पूर्ण वेद को सुरक्षित रखा। निष्कारण अध्ययन ही वेद-रक्षा का मूल कारण है।

वेद की रक्षा का बहुत बड़ा श्रेय प्रकृति पाठ के अन्तर्गत आने वाले पद तथा क्रमपाठ साथ ही विकृतिपाठों को भी जाता है। इन पाठों ने मूल संहिता की रक्षा कुछ इस प्रकार की है कि कहीं न तो कुछ जोड़ा जा सकता है न हटाया जा सकता है। किसी प्रकार के आवाप तथा उद्वाप की कोई भी सम्भावना नहीं है। मन्त्रान्त में अथवा अवसानान्त में कुछ नया जोड़े जाने की सम्भावना को परिग्रह (इतिकरण) समाप्त कर देते हैं।

आठ विकृति पाठ कहे गये हैं-

जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः॥

इनमें घनपाठ को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। घनपाठ के दो प्रकार हैं।

(१) आद्य प्रकार।

(२) द्वितीय प्रकार अथवा शिखामूलक घन।

प्रथम प्रकार के घन का लक्षण इस प्रकार कहा गया है-

अन्तात्क्रमं पठेत्पूर्वमादिपर्यन्तमानयेत्।
आदिक्रमं नयेदन्तं घनमाहुर्मनीषिणः॥

द्वितीय प्रकार के घन का लक्षण इस प्रकार कहा गया है-

शिखामुक्त्वा विपर्यस्य तत्पदानि पुनः पठेत्।
अयं घन इति प्रोक्त इत्यष्टौ विकृतीः पठेत्॥

घन के द्वितीय प्रकार को जानने के लिये क्रम, जटा, तथा शिखा का लक्षण जानना आवश्यक होता है।

क्रमपाठ सभी विकृतिपाठों के लिये प्रकृति है।

जैसा कि कहा गया है-

जटामालादण्डरेखारथध्वजशिखाघनाः।
क्रममाश्रित्यनिर्वृत्ता विकारा अष्ट विश्रुताः॥

क्रमपाठ के स्वरूप के विषय में वा.प्रा. के चतुर्थ अध्याय में कहा गया है कि क्रमपाठ में अपृक्त पदों (आकार तथा उकार) को छोड़कर दो - दो पदों को मिलाया जाता है अर्थात् आनुपूर्वी के क्रम से प्रथम तथा द्वितीय पदों को मिलाया जाता है। तदनन्तर प्रथम क्रमवर्ग के द्वितीय पद के साथ उसके उत्तरवर्ती पद को मिलाया जाता है। तदनन्तर उस उत्तरवर्ती पद के साथ उसके उत्तरवर्ती पद को मिलाया जाता है। यह क्रम अवसान तक चलता है। मध्य में अपृक्त पद आने पर त्रिक्रम का विधान किया गया है। आकार के साथ उसके उत्तरवर्त्ती पद को पुनः मिलाया जाता है। उकार प्रगृह्य होने के कारण इसका स्थितोपस्थित पाठ किया जाता है। इसके अतिरिक्त **मो षू णः** (वा.सं.३.४५) (पद ३.४५) तथा **अभी षु णः** (वा.सं.२७.४१) (पद २७.४०) ये दोनों स्थल भी त्रिक्रम के उदाहरण हैं। **ऊर्ध्वऽ ऊ षु णः** (वा.सं ११.४१) (पद ११.३९) **एतादृक्षासऽ ऊ षु णः** (वा.सं १७.८४) (पद १७.७७) तथा **गोमदू षु णासत्या** (वा.सं २०.८१) (पद २०.७२) इन तीनों स्थलों में चार पदों का क्रम वर्ग बनाया जाता है। इन त्रिक्रम तथा चतुष्क्रम के स्थलों में **सु** पद के साथ उसके उत्तरवर्त्ती पद को दूसरी बार मिलाया जाता है। क्रमपाठ के अन्तर्गत यदि पूर्ववर्त्ती पद अवग्रह के योग्य है तो उत्तरवर्त्ती पद के साथ सन्धि करने के बाद पूर्ववर्ती पद का स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये। पद के मध्य में दीर्घ होने की स्थिति में भी परवर्ती पद के साथ सन्धि होने के अनन्तर उस दीर्घीभाव को प्राप्त पद का स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये। इसी प्रकार मूर्धन्यभाव के स्थल में भी स्थितोपस्थित पाठ किया जाता है। सभी पूर्ववर्ती प्रगृह्य संज्ञक पदों की उत्तरवर्ती पद के साथ सन्धि होने के बाद उस पूर्ववर्ती प्रगृह्य संज्ञक पद का स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये। जिस रिफित पद का रेफ स्वरूप संहिता पाठ में ज्ञात नहीं होता है, उस पूर्ववर्ती पद का भी उत्तरवर्ती पद के साथ सन्धि होने के बाद

स्थितोपस्थित पाठ किया जाता है। अवसान में स्थित पद का भी स्थितोपस्थित पाठ किया जाता है। क्रमसन्धान शिक्षा में तथा संहिता पाठ में जिन अवसान के स्थलों का सन्धान उपदिष्ट है, उन स्थलों में अवसान में स्थित पद का स्थितोपस्थित पाठ नहीं किया जाता है। जैसे - **ह्वार्षीच्छतधारम्** (वा.सं.१.२) (पद १.२) कहने के बाद **ह्वार्षीत्** पद का स्थितोपस्थित पाठ नहीं होता। इसी प्रकार भूयास्तमस्कन्नम् (वा.सं.२.७) (पद २.७) कहने के बाद भूयास्तम् पद का स्थितोपस्थित पाठ नहीं किया जाता है। पदपाठ में अवसानान्त में जो स्थितोपस्थित पाठ हैं, उनका स्थितोपस्थित पाठ होता है।

वा.प्रा. के सप्तम अध्याय में क्रमपाठ करते समय अवसान में स्थित वर्णों के परिग्रह का विधान किया गया है। यही परिग्रह का विधान सभी विकृति-पाठों में भी माना जाता है।

प्लुत से भिन्न कण्ठ्य स्वर (अ तथा आ) का एकार के रूप में परिग्रह किया जाता है। जैसे- **रक्षेति रक्ष** (वा.सं.१.४) (पद १.४) **पाणिनेति पाणिना** (वा.सं.१.१६) (पद१.१६)।

इवर्ण (इ तथा ई) का ईकार के रुप में परिग्रह किया जाता है। जैसे - **असीत्यसि** (वा.सं.१.२०) (पद १.२०) **हिरण्ययीति हिरण्ययी** (वा.सं.८.२९) (पद ८.२४)।

उवर्ण का वकार के रूप में परिग्रह किया जाता है। जैसे - **सदन्त्विति सदन्तु** (वा.सं.२.५) (पद २.५)।

औकार का भी वकार के रूप में परिग्रह किया जाता है। जैसे - **अद्रावित्यद्रौ** (वा.सं.४.३१) (पद ४.३१)।

अकार है पूर्व में जिसके ऐसे अरिफित विसर्जनीयान्त पदों का विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **वरूथ्यऽ इति वरूथ्यः** (वा.सं.३.२५) (पद ३.२५)।

आकार है पूर्ववर्ती वर्ण जिनका ऐसे विसर्जनीयान्त पदों का, विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **देवाऽ इति देवाः** (वा.सं.२.१८) (पद २.१८)। एकारान्त पदों का भी विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **दधऽ इति दधे** (वा.सं.३.५) (पद ३.५) ऐकारान्त पदों का भी विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **मादयध्याऽ इति मादयध्यै** (वा.सं.३.१३) (पद ३.१३) प्लुत पदों का भी विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **विवेशा३ऽ इति विवेशा३** (वा.सं.२३.४९) (पद २३.४४) प्रगृह्य पदों का भी

विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **जन्मनीऽ इति जन्मनी** (वा.सं.८.३) (पद ८.२)।

भाव्युपध विसर्जनीयान्त का रेफ के रूप में परिग्रह किया जाता है। जैसे - **अग्निरित्यग्निः** (वा.सं.७.१४) (पद ७.१३) **गीरिति गीः** (वा.सं.३.४६) (पद ३.४५), **पशुरिति पशुः** (वा.सं.३.५७) (पद ३.५६), **अग्नेरित्यग्नेः** (वा.सं.७.४२) (पद ७.४०), **सदस्यैरिति सदस्यैः** (वा.सं.७.४५) (पद ७.४१), **विष्णोरिति विष्णोः** (वा.सं.१९.५६) (पद १९.५४), **द्यौरिति द्यौः** (वा.सं.३३.४२) (पद ३३.३८)।

प्रथमान्त स्पर्श में समाप्त होने वाले पदों का तृतीय स्पर्श के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **भिषगिति भिषक्** (वा.सं.१६.५) (पद १६.५), **वाडिति वाट्** (वा.सं.२.१८) (पद २.१८), **अस्मादित्यस्मात्** (वा.सं.२.३०) (पद २.२९)।

पञ्चम स्पर्श में समाप्त होने वाले पदों का पञ्चम स्पर्श के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **अर्वाङित्यर्वाङ्** (वा.सं.३४.२६) (पद ३४.२६),**पुष्यन्निति पुष्यन्** (वा.सं.४.२) (पद ४.२), **पितॄनिति पितॄन्** (वा.सं.२.३४) (पद २.३३), **तप्यद्ध्वमिति तप्यद्ध्वम्** (वा.सं.१.१८) (पद १.१८)।

जटा पाठ का लक्षण इस प्रकार है-

क्रमं यथोक्तं प्रब्रूयाद्व्युत्क्रमेण क्रमेण च।
सलक्षणं सर्वसन्धौ जटा सा प्रोच्यते बुधैः॥

अर्थात् क्रम पाठ के नियमानुसार यथास्थान द्विक्रम, त्रिक्रम अथवा चतुष्क्रम का पाठ करके उसका विलोम पाठ करके पुनः अनुलोम पाठ किया जाता है। इस प्रकार के लक्षणयुक्त पाठ को जटा पाठ कहा जाता है। इस जटा पाठ में पाँच क्रम होते हैं-

अनुक्रमश्चोत्क्रमश्च व्युत्क्रमोभिक्रमस्तथा।
सङ्क्रमश्चेति पञ्चैते जटायां कथिताः क्रमाः॥

जैसे- **इषे त्वा** – अनुक्रम
त्वा त्वा - उत्क्रम
त्वेषे - व्युत्क्रम
इषऽ इषे - अभिक्रम

इषे त्वा – सङ्क्रम

इन्हीं पाँचों क्रमों को पञ्चसन्धि पाठ के रूप में वैदिकों द्वारा पाठ किया जाता है।

स्वपूर्वांश पदद्वन्द्वं स्वागर्भे त्रिचतुष्क्रमे।
पुनरुक्तमसन्देहार्थं जटात्वं न चार्हति॥

सु तथा आ ये दो पद आने पर जहाँ त्रिक्रम का विधान है, वहाँ पर तथा गोमदू षु णासत्या आदि में जहाँ चतुष्क्रम का विधान है, उन स्थलों में सु तथा आ ये दो पद जटा पाठ के पश्चात् पुनः उच्चरित होते हैं। ये दो पद जटाभाव को प्राप्त नहीं होते हैं। इसी प्रकार **उदु त्यम्** इत्यादि में **उँऽ इत्यूँ** इस प्रकार से मध्य के पद का वेष्टन किया जाता है। इस उ पद के साथ भी जटा पाठ पृथक् नहीं किया जाता है।

शिखा पाठ का लक्षण इस प्रकार किया गया है-

पदोत्तरां जटामेव शिखामार्याः प्रचक्षते।

पूर्वोक्त जटा पाठ के पश्चात् अग्रिम एक पद को जोड़कर जो पाठ किया जाता है, उसे शिखा पाठ कहा जाता है।

इसी शिखा पाठ के पश्चात् इस शिखा पाठ में पठित पदों का विपर्यास तथा पुनः अनुलोम क्रम से उन तीन पदों के पाठ को घन पाठ कहा गया है। इस घन पाठ में सन्धि के प्रारम्भ से अवसान तक तेरह पद कहे जाते हैं। अवसान में अन्तिम दो पदों का जटा पाठ किया जाता है, जिसमें छः पद कहे जाते हैं। क्रम पाठ, जटा पाठ तथा शिखा पाठ के नियमानुसार ही घनपाठ में भी अन्तिम पद का परिग्रह (इतिकरण) किया जाता है।

यहाँ इसी शिखामूलक घन पाठ को प्रस्तुत किया गया है। सम्बन्धित टिप्पणी को सामान्यतया सन्धि के अन्त में संख्या निर्देश कर पाद-टिप्पणी के रूप में लिखा गया है। पठन सौविध्य की दृष्टि से यथा सम्भव पदों को पृथक्-पृथक् कर लिखा गया है। उपस्थित पदों के मध्य में पृथक्करण हेतु स्थान (स्पेस) छोड़ा गया है। इस सम्बन्ध में दो पद्धतियाँ प्रचलित हैं, प्रथम पद्धति में स्थान छोड़ा जाता है, जैसे - **उपस्थऽ इत्युप स्थे** (वा.सं.१.११) (प१.११) द्वितीय पद्धति में पूर्णविराम का चिह्न दिखाया जाता है। जैसे - **उपस्थऽ इत्युप। स्थे।** यहाँ प्रथम पद्धति का ही अनुसरण किया गया है। दोनों ही पद्धतियों में अवग्रह के पश्चात् स्थान (स्पेस) नहीं छोड़ा जाता है, यहाँ पठन सौविध्य की दृष्टि से स्थान छोड़ा गया

है। दोनों ही पद्धतियों में **इति** पद के बाद भी स्थान नहीं छोड़ा जाता है। यहाँ पद स्वरूप की स्पष्टता के लिये स्थान छोड़ा गया है। संहिता धर्म से पाठ करते समय यथा शक्ति अवसान तक एक श्वास में पाठ करना चाहिये। **वर्णानामेकप्राणयोगः संहिता** (वा.प्रा.१.१५८) यदि अवसान तक एक प्राणयोग (एक श्वास) से पाठ अशक्य हो तो यथा सम्भव पदों के अन्त तक एक प्राणयोग होना चाहिये।

पदों के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए उन्हें पृथक् लिखा गया है। बहुप्रकृति पद जैसे - **सꣳसम्** (वा.सं.६.२०) (पद ६.१८), **सुप्रजाः** (वा.सं.३.३७) (पद ३.३७) इत्यादि पदों को एक साथ स्थान न छोड़कर लिखा गया है। इस प्रथम भाग में वा.सं. का प्रथम दशक (१-१० अध्याय) प्रस्तुत किया गया है। पुनरुक्त मन्त्र आ जाने से संहिता की अपेक्षा पद, क्रम सहित सभी विकृति-पाठों के मन्त्रों की संख्या में अन्तर आ जाता है। यहाँ प्रत्येक शतम् (१०० मन्त्र) को संहिता पाठानुसार न दिखा कर पद पाठ के मन्त्रों के आधार पर दिखाया गया है। अतः स्वाभाविक रूप से संहिता पाठ की अपेक्षा यहाँ मन्त्रों की संख्या में न्यूनता है। संहिता पाठ में १९७५ मन्त्र हैं। जबकि पद, क्रम, जटा, शिखा घनादि पाठों में १८१४ मन्त्र ही हैं।

आत्म-निवेदन

मेरा जन्म पुण्यभूमि वाराणसी में हुआ। प्रातःस्मरणीय पूज्य पिताजी स्व० डॉ० मणिलाल शर्मोपाध्याय जी की प्रेरणा से मैं वेदाध्ययन में प्रवृत्त हुआ। आरम्भ में पूज्य पिताजी से ही वेदाध्ययन किया। तदनन्तर श्री वल्लभ शुक्लयजुर्वेद स्वाध्याय केन्द्र चौखम्भा वाराणसी में प्रातःस्मरणीय पूज्य गुरुजी स्व. मनोहर देवीदास जोशी जी घनपाठी के चरणों में बैठकर अपनी शाखा का तथा श्रीमद्भागवतादि का अध्ययन किया।

गुरवो बहवः सन्ति शिष्यवित्तापहारकाः।
गुरवो दुर्लभा लोके शिष्यसन्तापहारकाः॥

मेरे गुरुजी शिष्यसन्तापहारक थे। उनके द्वारा अध्यापन के बिना प्रस्तुत लेखन-कार्य असम्भव था। इस पुस्तक में जो अच्छाई है वह उनकी है। जो त्रुटियाँ हैं, वे मेरी हैं। गुरुजी ने बड़े वात्सल्य भाव से वेदाध्ययन के क्रम में शिक्षा-प्रातिशाख्यादि का सन्दर्भ देते

हुए मुझे पढ़ाया, जिससे मेरा सन्देह रहित वेदाध्ययन हो सका। मैं उनके प्रति हार्दिक प्रणामाञ्जलि निवेदित करता हूँ।

इस प्रकाशन-कार्य से घनपाठ के अध्ययन में सुविधा होगी, मैं ऐसी आशा करता हूँ। पारम्परिक अध्ययन पद-पाठ की पुस्तक से होता आया है, मैंने भी घनपाठ का अध्ययन पद पाठ की पुस्तक से ही किया है।

इस लेखन कार्य के क्रम में पूज्य गुरुद्वय प्रो० युगल किशोर मिश्र जी तथा प्रो० श्रीकिशोर मिश्र जी का निर्देशन बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। मैं आप दोनों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ० सच्चिदानन्द जोशी जी के प्रति मैं हृदय से आभार अभिव्यक्त करता हूँ कि उन्होंने मेरे निवेदन को स्वीकार कर प्रकाशन की सहर्ष अनुमति प्रदान की। हमारा साभार सादर निवेदन है कि आगामि माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड और रथ पाठ के सम्पादन हेतु आपका अनुग्रह इसी प्रकार बना रहेगा।

घनपाठ का अधिकांश लेखन कार्य दिल्ली में किया गया है। मेरे अन्तेवासी श्री आशुतोषमणि त्रिपाठी ने मुझे सभी गृह-कार्य से मुक्त रखा, जिससे मैं सावधानी से लेखन कार्य कर सका, एतदर्थ श्री त्रिपाठी को अनेकशः आशीर्वाद देता हूँ।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः॥

गोपाल प्रसाद शर्मा

राम नवमी
विक्रमी २०७९

किञ्चिन्निवेदन

वेद भारतीय सनातन धर्म एवं संस्कृति के मूल आधार हैं। जिन्हें विश्व के सभी विद्वानों ने विश्व धरोहर के रूप में स्वीकार किया है। विशेष रूप से ऋग्वेद को विश्व का आदि ग्रन्थ माना गया है। इनके संरक्षण के लिए यूनेस्को चेयर और फोर्ड फाउन्डेशन आदि विदेशी संस्थाएँ भी परिपूर्ण प्रयास और सहयोग कर रही हैं। हमारा उन सभी से अधिक दायित्त्व है कि अपनी इस मूल वेदविद्या की संरक्षा तन - मन - धन से करें।

कुछ शाखाओं को छोड़कर प्रायः मूल वेद संहिताएँ तो प्रकाशित हैं। परन्तु उन सभी शाखाओं के कुछ प्रकृति एवं सभी विकृतिपाठ अभी तक प्रकाशित नहीं हैं। मूल वेदों की संरक्षा के लिए ही ऋषियों के द्वारा प्रकृति एवं विकृतिपाठों का विधान किया गया था। इनके संरक्षण के लिए आज भी हस्तलेखों के माध्यम से ही प्रकृति एवं विकृतिपाठों का पठन-पाठन हो रहा है। परन्तु छात्रों के द्वारा हस्तलेखों की हाथ से पुनः प्रतिलिपि कर पढ़ना बहुपरिश्रमसाध्य हो जाता है। इसलिए इन दुर्लभ और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रकृति – विकृतिपाठों का सम्पादन एवं प्रकाशन करना परमावश्यक है।

इस सम्बन्ध में श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्व-विद्यालय) नई दिल्ली के आचार्य **डॉ० गोपाल प्रसाद शर्मा** (जो शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनीय शाखा के पारम्परिक एवं आधिकारिक विद्वान् है जिन्हें शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनीय शाखा के संहिता, पद-क्रम के साथ विकृतिपाठ भी कण्ठस्थ हैं) जी के द्वारा घनपाठ के सम्पादन का प्रस्ताव माननीय सदस्य सचिव डॉ० सच्चिदानन्द जोशी जी को भेजा गया। मा० सदस्य सचिव जी ने आगे की कार्यवाही करने के लिए प्रो० प्रतापानन्द झा जी (निदेशक, कल्चरल इन्फोर्मेटिक्स) को सौंप दिया। प्रो० झा जी ने चर्चा के पश्चात् आवश्यक कार्यवाही हेतु मुझे प्रेषित किया है। मैंने डॉ० शर्मा से प्रकृति – विकृतिपाठों के सम्पादन के सम्बन्ध में दूरवाणी से चर्चा की तो डॉ० शर्मा ने कहा कि प्रकृति पाठों का तो कुत्रचित् प्रकाशन हुआ भी है। किन्तु विकृतिपाठों का नहीं। विकृति पाठों में केवल जटा पाठ का सम्पादन कर मैंने वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय को प्रकाशनार्थ दे दिया है। वर्तमान में माला, शिखा, रेखा,

ध्वज, दण्ड, रथ और घन ये सप्त विकृतिपाठ शेष हैं जिनका कोई सम्पादन कार्य नहीं हुआ है। इसलिए इन शेष विकृतिपाठों के सम्पादन – प्रकाशन का विचार करना चाहिए।

इसीलिए वेदों की रक्षा के इस मूल उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इन शेष सप्त विकृतिपाठों में सर्वप्रथम घनपाठ के समीक्षात्मक सम्पादन का विचार किया गया। तुरन्त ही मैंने शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन शाखीय घनपाठ के सम्पादन की पंजिका सुसज्जित कर अपने विभागाध्यक्ष के माध्यम से माननीय सदस्य सचिव जी को भिजवा दी। उनकी सहर्ष सहज रूप से स्वीकृति प्राप्त हो गयी। स्वीकृति के पश्चात् डॉ० शर्मा के साथ अनुबन्ध कर यह कार्यभार उनको सौंप दिया गया। डॉ० शर्मा ने भी एक वर्ष के अन्तर्गत इसकी पाण्डुलिपि तैयार कर हमें समर्पित कर दी। तदनन्तर यह कार्य टंकण के लिए वेद-वेदांगों में अनुसन्धान करने वाले विद्यापीठ के वेदविद् (वरिष्ठ छात्रों) को ही दिया गया। जिससे शुद्ध टंकण कार्य हो सके। लगभग छः मास के अन्तर्गत टंकण कार्य भी पूर्ण हो गया। परन्तु टंकण कार्य के अन्तर्गत फॉण्ट में स्वर चिह्न एवं संयुक्ताक्षरों से सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न हो गयीं।

इन समस्याओं के विषय में मैंने विभागाध्यक्ष (कलानिधि) से चर्चा की तो उन्होंने किसी फॉण्ट विशेषज्ञ से सम्पर्क कर इसका समाधान करने का निर्देश दिया। तन्निर्देशानुसार मैंने फॉण्ट निर्माण विशेषज्ञ श्री कर्मवीर सिंह रोहिल्ला जी से सम्पर्क किया तथा फॉण्ट संस्कृत 2003 में सुधार करने के लिए निवेदन किया। श्री रोहिल्ला जी ने भी वरीयता पूर्वक बड़े मनोयोग से स्वर चिह्न और संयुक्ताक्षर की समस्याओं का समाधान करते हुए सर्वश्रेष्ठ एवं सुन्दर अक्षरों में प्रकाशन के लिए प्रख्यात निर्णय सागर प्रैस, मुम्बई के समान बहुत ही सुन्दर अक्षर शैली में नया फॉण्ट ही निर्माण करना आरम्भ कर दिया। प्रूफ रीडिंग करते समय जो जो समस्याएँ समक्ष उपस्थित होती रहीं उनका सुधार होता रहा। इस प्रकार फॉण्ट की समस्याओं के समाधान में भी लगभग दो वर्ष का समय लग गया। परन्तु लगभग नब्बे प्रतिशत फॉण्ट भी तैयार हो गया। श्री रोहिल्ला जी ने इस फॉण्ट का नाम वेदाक्षर रखा। इस वेदाक्षर फॉण्ट की कृपा से शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखीय घनपाठ का समुद्धार हो गया। यह उस परम पिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा अपार

दया तथा महती कृपादृष्टि का परिणाम है। जो इसका प्रथम दशक (प्रथम भाग) आपके करकमलों की सुशोभा अभिवर्द्धन कर रहा है।

अभी तक इस शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखीय घनपाठ का मुद्रित संस्करण कहीं भी उपलब्ध नहीं है। इसलिए यह शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन घनपाठ वेद अध्येताओं तथा वैदिक पोर्टल के दर्शकों, अन्वेषकों तथा अनुसन्धाताओं लिए बहुत उपयोगी होगा। महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के सहस्रों वेद विद्यालयों में पाठ्यक्रम में निर्धारित है। परन्तु उपलब्ध न होने से हस्तलेख अथवा उनकी छायाप्रति से ही निर्वाह करना पड़ता है। अब इसके प्रकाशित होने से वे सभी लाभान्वित हो जायेंगे। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के द्वारा यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और श्रेयस्कर कार्य है। शेष छः विकृतिपाठों तथा अन्य वेद शाखाओ के भी ग्रन्थों का क्रमशः सम्पादन और प्रकाशन करने के लिए हमारा पूर्ण प्रयास रहेगा।

इस दुर्लभ एवं प्रथम प्रकाशित ग्रन्थ के अनेक वार परिशोधन करने पर भी प्रमादवश अशुद्धियाँ रह जाना सम्भव है। एतदर्थ आप सभी अध्येताओं से विनम्र प्रार्थना है कि उन अशुद्धियों से हमें अवगत कराते रहेंगे। जिससे आगामि संस्करणों में सुधार किया जा सकेगा।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

कीर्तिकान्त शर्मा

मेष संक्रान्ति
विक्रमी २०७९

आभार

वेद भारतीय संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान के प्रमुख आधार ग्रन्थ माने जाते हैं। इसलिए वेदों का ज्ञान सभी को आवश्यक बताया गया है। विश्व के शिक्षा शास्त्री भी वेदों को ज्ञान विज्ञान का अखण्ड भण्डार मानते हैं। विज्ञान वेत्ता भी वेदों पर अनुसन्धान कार्य कर नई - नई खोज कर रहे हैं। इसलिए वेदों के अध्ययन – अध्यापन, अनुसंधान और उनके संरक्षण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इसी उद्देश्य से इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र कला एवं संस्कृति से सम्बन्धित अनेक कार्यकलापों (अध्ययन, अनुसन्धान, व्याख्यान, प्रदर्शनी, कार्यशाला, बुक रीडिंग और ग्रन्थ सम्पादन व प्रकाशन) का आयोजन कर रहा है। अध्ययन के अन्तर्गत विविध डिप्लोमा एवं अल्पकालीन अन्तर्जालीय पाठ्यक्रमों का भी संचालन करता है। पुस्तकालय विज्ञान और पाण्डुलिपि एवं लिपि विज्ञान के दो डिप्लोमा पाठ्यक्रम के साथ-साथ बुक रीडिंग और ग्रन्थ सम्पादन व प्रकाशन के कार्य भी कलानिधि विभाग से सम्पादित किये जा रहे हैं।

उपर्युक्त कार्यकलापों के साथ-साथ ग्रन्थ सम्पादन और प्रकाशन के क्रम में वेदों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा श्रुति मधुर शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखीय घनपाठ का सम्पादन किया जा रहा है। इसके सम्पादन और प्रकाशन में कितनी समस्याएँ आयीं उनके विषय में हमारे सहकर्मी डॉ० कीर्तिकान्त शर्मा ने अपने निवेदन में स्पष्ट कर दिया है। इसलिए जिन विद्वानों और सहयोगियों के सहयोग से यह महत्त्वपूर्ण सम्पादन एवं प्रकाशन सम्भव व सुसम्पन्न हुआ है। उनके लिए मैं हृदय से आभार प्रकट करना चाहता हूँ।

इस शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखीय घनपाठ को आप सभी अध्येताओं के समक्ष उपलब्ध कराने का सर्वप्रथम श्रेय विशेष रूप से प्रो० गोपाल प्रसाद शर्मा जी को जाता है जिन्होंने यथाशीघ्र घनपाठ की स्वहस्त लिखित पाण्डुलिपि तैयार कर उपलब्ध करायी। इसलिए हम इनके हृदय से बहुत – बहुत आभारी हैं।

तत्पश्चात् डॉ० कीर्तिकान्त शर्मा, इकाई प्रमुख, पाण्डुलिपि इकाई (कलानिधि) का मैं हृदय से आभार अभिव्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस ग्रन्थ के सम्पादन एवं प्रकाशन में बड़े ही मनोयोग और परिश्रम से अपनी देख रेख में इसे तैयार कराया।

इसके साथ ही शोधाध्येता एवं अक्षरांकन साधक (Fontographer) फॉण्ट विशेषज्ञ श्री कर्मवीर रोहिल्ला जी ने फॉण्ट की कठिनतम समस्याओं के समाधान में बडे ही मनोयोग से हमारा साथ दिया। फॉण्ट की समस्याओं का समाधान करते - करते चारों वेदों के प्रकाशन के लिए एक सुन्दर और सर्वांगपूर्ण वैदिक (वेदाक्षर) फॉण्ट भी तैयार हो गया इसके लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं।

तदनन्तर श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के शोध अध्येता एवं प्रो० गोपाल प्रसाद शर्मा जी के विद्यार्थी रहे डॉ० इन्द्रेश कुमार शुक्ल, श्री वेणुगोपाल शर्मा, श्री हितेश शर्मा तथा श्री प्रियङ्कर मिश्र का भी हृदय से आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने ग्रन्थ का विशुद्ध टङ्कण कार्य बड़े मनोयोग से किया है। वास्तव में वेद् के स्वर और संयुक्त वर्णों का शुद्ध टंकण करना बहुत ही दुष्कर एवं समय साध्य कार्य था जिसे इन वैदिक एवं शोधाध्येताओं ने बड़े परिश्रम से सफलता पूर्वक सम्पन्न किया।

प्रो० रमेश चन्द्र गौड़

डीन एवं विभागाध्यक्ष (कलानिधि)

॥पूर्वविंशतिः॥

॥प्रथमो दशकः॥

॥अथ माध्यन्दिनीयघनपाठे प्रथमोध्यायः॥

हरिंः ॐ[1]॥ इषे त्वा त्वेषऽ इषे त्वोर्ज्जऽ ऊर्ज्जे त्वेषऽ इषे त्वोर्ज्जे[2]। त्वोर्ज्जऽ ऊर्ज्जे त्वा त्वोर्ज्जे त्वा त्वोर्ज्जे त्वा त्वोर्ज्जे त्वा। ऊर्ज्जे त्वा त्वोर्ज्जऽ ऊर्ज्जे त्वा व्वायवो व्वायवस्त्वोर्ज्जऽ ऊर्ज्जे त्वा व्वायवंः। त्वा व्वायवो व्वायवस्त्वा त्वा व्वायवं स्त्थ स्त्थ व्वायवस्त्वा त्वा व्वायवं स्त्थ। व्वायवं स्त्थ स्त्थ व्वायवो व्वायवं स्त्थ देवो देव स्त्थं व्वायवो व्वायवं स्त्थ देवः। स्त्थ देवो देव स्त्थं स्त्थ देवो वो वो देव स्त्थं स्त्थ देवो वंः। देवो वो वो देवो देवो वंः सविता संविता वो देवो देवो वंः सविता। व्वः सविता संविता वो वः सविता प्प्र प्प्र संविता वो वः सविता प्प्र। सविता प्प्र प्प्र संविता संविता प्प्रार्प्पयत्वर्प्पयतु प्प्र संविता संविता प्प्रार्प्पयतु। प्रार्प्पयत्वर्प्पयतु प्प्र प्प्रार्प्पयतु श्रेष्ठंतमाय श्रेष्ठंतमायार्प्पयतु प्प्र प्प्रार्प्पयतु श्रेष्ठंतमाय। अर्प्पयतु श्रेष्ठंतमाय श्रेष्ठंतमायार्प्पयत्वर्प्पयतु श्रेष्ठंतमाय कर्म्मणे कर्म्मणे श्रेष्ठंतमायार्प्पयत्वर्प्पयतु श्रेष्ठंतमाय कर्म्मणे। श्रेष्ठंतमाय कर्म्मणे कर्म्मणे श्रेष्ठंतमाय श्रेष्ठंतमाय कर्म्मणऽ आ प्प्यायद्ध्वम्प्यायद्ध्वमा कर्म्मणे श्रेष्ठंतमाय श्रेष्ठंतमाय कर्म्मणऽ आ प्प्यायद्ध्वम्। श्रेष्ठंतमायेति श्रेष्ठ-तमाय। कर्म्मणऽ आ प्प्यायद्ध्वम्प्यायद्ध्वमा कर्म्मणे कर्म्मणऽ आ प्प्यायद्ध्वम-घ्न्याऽ अघ्न्याः प्प्यायद्ध्वमा कर्म्मणे कर्म्मणऽ आ प्प्यायद्ध्वमघ्न्याः। आ प्प्या-यद्ध्वम्। प्यायद्ध्वमघ्न्याऽ अघ्न्याः प्प्यायद्ध्वम्प्यायद्ध्वमघ्न्याऽ इन्द्रायेन्द्रायाघ्न्याः

---

[1]. वेदे रामायणे पुण्ये भारते भरतर्षभ। आदौ चान्ते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते। - महाभारत माहात्म्य का अन्तिम श्लोक
प्रश्नानुवाकाद्यारम्भे सविसर्गोषको हरिः। न तस्य प्रणवे सन्धिर्विरामे स्वरितो भवेत्। - भारद्वाजी शिक्षा
फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा १५ संवत् १९५० में महल्ला दशाश्वमेध, बंगाली टोला गणेश महाल भैरो प्रसाद वाजपेयी जी गौरीश यन्त्रालय, बनारस से प्रकाशित पद पाठ की पुस्तक के प्रारम्भ में शिवंः ॥ॐ ३॥ ऐसा मुद्रण है।

[2]. इषे त्वा यहाँ स्वरात्संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र (वा.प्रा.४.१०१) से तकार का द्विरुच्चारण प्राप्त है।

प्प्यायद्ध्वम्प्यायद्ध्वमघ्न्या॒ऽ इन्द्रा॑य। अ॒घ्न्या॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑याघ्न्याऽ अघ्न्या॒ऽ इन्द्रा॑य भा॒गम्भा॒गमिन्द्रा॑याघ्न्याऽ अघ्न्या॒ऽ इन्द्रा॑य भा॒गम्। इन्द्रा॑य भा॒गम्भा॒गमिन्द्रा॒येन्द्रा॑य भा॒गम्प्र॒जाव॑तीः प्र॒जाव॑तीर्भा॒गमिन्द्रा॒येन्द्रा॑य भा॒गम्प्र॒जाव॑तीः। भा॒गम्प्र॒जाव॑तीः प्र॒जाव॑तीर्भा॒गम्भा॒गम्प्र॒जाव॑तीरनमी॒वाऽ अ॑नमी॒वाः प्र॒जाव॑तीर्भा॒गम्भा॒गम्प्र॒जाव॑तीरनमी॒वाः। प्र॒जाव॑तीरनमी॒वाऽ अ॑नमी॒वाः प्र॒जाव॑तीः प्र॒जाव॑तीरनमी॒वाऽ अ॑य॒क्ष्माऽ अ॑य॒क्ष्माऽ अ॑नमी॒वाः प्र॒जाव॑तीः प्र॒जाव॑तीरन-मी॒वाऽ अ॑य॒क्ष्माः[1]। प्र॒जाव॑ती॒रिति॑ प्र॒जा व्व॑तीः। अ॒न॒मी॒वाऽ अ॑य॒क्ष्माऽ अ॑य॒क्ष्माऽ अ॑नमी॒वाऽ अ॑नमी॒वाऽ अ॑य॒क्ष्मा मा माय॒क्ष्माऽ अ॑नमी॒वाऽ अ॑नमी॒वाऽ अ॑य॒क्ष्मा मा। अ॒य॒क्ष्मा मा माय॒क्ष्माऽ अ॑य॒क्ष्मा मा वो॑ वो॒ माय॒क्ष्माऽ अ॑य॒क्ष्मा मा वः॑। मा वो॑ वो॒ मा मा वः॑ स्ते॒न स्ते॒नो वो॒ मा मा वः॑ स्ते॒नः। व्व॒ स्ते॒न स्ते॒नो वो॑ व स्ते॒नऽ ई॑शतेशत स्ते॒नो वो॑ व स्ते॒नऽ ई॑शत। स्ते॒नऽ ई॑शतेशत स्ते॒न स्ते॒नऽ ई॑शत॒ मा मेश॑तेशत स्ते॒न स्ते॒नऽ ई॑शत॒ मा। ई॒श॒त॒ मा मेश॑तेशत॒ माघश॑ꣳसो॒घश॑ꣳसो॒ मेश॑ते-शत॒ माघश॑ꣳसः। माघश॑ꣳसो॒घश॑ꣳसो॒ मा माघश॑ꣳसो ध्रु॒वा ध्रु॒वाऽ अ॒घश॑ꣳसो॒ मा माघश॑ꣳसो ध्रु॒वाः। अ॒घश॑ꣳसो ध्रु॒वा ध्रु॒वाऽ अ॒घश॑ꣳसो॒घश॑ꣳसो ध्रु॒वाऽ अ॒-स्मिम॑न्न॒स्मिम॒न्ध्रु॒वाऽ अ॒घश॑ꣳसो॒घश॑ꣳसो ध्रु॒वाऽ अ॒स्मिम॑न्। अ॒घश॑ꣳस॒ऽ इत्य॒घ श॑ꣳसः। ध्रु॒वाऽ अ॒स्मिम॑न्न॒स्मिम॒न्ध्रु॒वा ध्रु॒वाऽ अ॒स्मिम॒न्गोप॑तौ॒ गोप॑ताव॒स्मिम॒न्ध्रु॒वा ध्रु॒वाऽ अ॒स्मिम॒न्गोप॑तौ। अ॒स्मिम॒न्गोप॑तौ॒ गोप॑ताव॒स्मिम॑न्न॒स्मिम॒न्गोप॑तौ स्यात स्यात॒ गोप॑ताव॒स्मिम॑न्न॒स्मिम॒न्गोप॑तौ स्यात। गोप॑तौ स्यात स्यात॒ गोप॑तौ॒ गोप॑-तौ स्यात ब॒ह्वीर्ब्ब॒ह्वीः स्या॑त॒ गोप॑तौ॒ गोप॑तौ स्यात ब॒ह्वीः[2]। गोप॑ता॒विति॒ गो प॑तौ।

---

[1]. अयक्ष्माः यहाँ पर स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र (वा.प्रा.४.१०१) इस सूत्र से ककार का द्विरुच्चारण प्रतीत होता है परन्तु "येस्तु परं तेर्न पूर्वम्" (वा.प्रा.४.१०५) इस सूत्र से द्विरुच्चारण नहीं होगा, यह ज्ञात होता है।

[2]. बह्वीः यहाँ "परं तु रेफहकाराभ्याम्" (वा.प्रा.४.१०२) इस सूत्र से हकार से परे वकार का द्वित्व होता है।

स्यात् बृद्धीर्बृद्धीः स्यात स्यात बृद्धीर्य्यजमानस्य यजमानस्य बृद्धीः स्यात स्यात बृद्धीर्य्यजमानस्य। बृद्धीर्य्यजमानस्य यजमानस्य बृद्धीर्बृद्धीर्य्यजमानस्य पशून्पशून्यजमानस्य बृद्धीर्बृद्धीर्य्यजमानस्य पशून्। यजमानस्य पशून्पशून्यजमानस्य यजमानस्य पशून्पाहि पाहि पशून्यजमानस्य यजमानस्य पशून्पाहि। पशून्पाहि पाहि पशून्पशून्पाहि। पाहीति पाहि[1] ॥१॥

वसोः पवित्रम्पवित्रँव सोर्वसोः पवित्रमस्यसि पवित्रँव सोर्वसोः पवित्रमसि। पवित्रमस्यसि पवित्रम्पवित्रमसि द्यौर्द्यौरसि पवित्रम्पवित्रमसि द्यौः। असि द्यौर्द्यौरस्यसि द्यौः पृथिवी पृथिवी द्यौरस्यसि द्यौः पृथिवी। द्यौः पृथिवी पृथिवी द्यौर्द्यौः पृथिवी मातरिश्वनो मातरिश्वनः पृथिवी द्यौर्द्यौः पृथिवी मातरिश्वनः। पृथिवी मातरिश्वनो मातरिश्वनः पृथिवी पृथिवी मातरिश्वनो घर्म्मो घर्म्मो मातरिश्वनः पृथिवी पृथिवी मातरिश्वनो घर्म्मः। मातरिश्वनो घर्म्मो घर्म्मो मातरिश्वनो मातरिश्वनो घर्म्मो विश्वधा विश्वधा घर्म्मो मातरिश्वनो मातरिश्वनो घर्म्मो विश्वधाः। घर्म्मो विश्वधा विश्वधा घर्म्मो घर्म्मो विश्वधाः परमेण परमेण विश्वधा घर्म्मो घर्म्मो विश्वधाः परमेण। विश्वधाः परमेण परमेण विश्वधा विश्वधाः परमेण धाम्म्ना धाम्म्ना परमेण विश्वधा विश्वधाः परमेण धाम्म्ना। विश्वधाऽ इति विश्व धाः॥ परमेण धाम्म्ना धाम्म्ना परमेण परमेण धाम्म्ना दृꣳहस्व दृꣳहस्व धाम्म्ना परमेण परमेण धाम्म्ना दृꣳहस्व। धाम्म्ना दृꣳहस्व दृꣳहस्व धाम्म्ना धाम्म्ना दृꣳहस्व मा मा दृꣳहस्व धाम्म्ना धाम्म्ना दृꣳहस्व मा। दृꣳहस्व मा मा दृꣳहस्व दृꣳहस्व मा ह्वार्ह्वार्म्मा दृꣳहस्व दृꣳहस्व मा ह्वाः। मा ह्वार्ह्वार्म्मा मा ह्वार्म्मा मा ह्वार्म्मा मा ह्वार्म्मा। ह्वार्म्मा मा ह्वार्ह्वार्म्मा

[1]. अवसाने च (वा. प्रा. ४.१९६) अवसान में स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये।

तें ते मा ह्वार्ह्वार्म्मा तें[1]। मा तें ते मा मा तें यज्ञपतिर्य्यज्ञपतिस्ते मा मा तें यज्ञपतिः। ते यज्ञपतिर्य्यज्ञपतिस्ते ते यज्ञपतिर्ह्वाषीद्धार्षीद्यज्ञपतिस्ते ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्। यज्ञपतिर्ह्वार्षीद्धार्षीद्य ज्ञपतिर्य्यज्ञपतिर्ह्वार्षीच्छतधारꣳ शतधारꣳ ह्वार्षीद्यज्ञपतिर्य्यज्ञपतिर्ह्वार्षी च्छतधारम्। यज्ञपतिरिति यज्ञ पतिः। ह्वार्षीच्छतधारꣳ शतधारꣳ ह्वार्षीद्धा र्षीच्छतधारꣳ सहस्रधारꣳ सहस्रधारꣳ शतधारꣳ ह्वार्षीद्धार्षीच्छतधारꣳ सहस्रं धारम्॥२॥

शतधारꣳ सहस्रधारꣳ सहस्रधारꣳ शतधारꣳ शतधारꣳ सहस्रधारन्देवो देवः सहस्रधारꣳ शतधारꣳ शतधारꣳ सहस्रधारन्देवः। शतधारमिति शत धारम्। सहस्रधारन्देवो देवः सहस्रधारꣳ सहस्रधारन्देवस्त्वा त्वा देवः सहस्र धारꣳ सहस्रधारन्देवस्त्वा। सहस्रधारमिति सहस्रं धारम्॥ देवस्त्वा त्वा देवो देवस्त्वा सविता संविता त्वा देवो देवस्त्वा सविता। त्वा सविता संविता त्वा त्वा सविता पुनातु पुनातु सविता त्वा त्वा सविता पुनातु। सविता पुनातु पुनातु सविता संविता पुनातु व्वसोर्व्वसोः पुनातु सविता संविता पुनातु व्वसोः। पुनातु व्वसोर्व्वसोः पुनातु पुनातु व्वसोः पवित्त्रेण पवित्त्रेण व्वसोः पुनातु पुनातु व्वसोः पवित्त्रेण[2]। व्वसोः पवित्त्रेण पवित्त्रेण व्वसोर्व्वसोः पवित्त्रेण शतधारेण शतधारेण पवित्त्रेण व्वसोर्व्वसोः पवित्त्रेण शतधारेण। पवित्त्रेण शतधारेण शतधारेण पवित्त्रेण पवित्त्रेण शतधारेण सुप्प्वा सुप्प्वा शतधारेण पवित्त्रेण पवित्त्रेण शतधारेण सुप्प्वा। शतधारेण सुप्प्वा सुप्प्वा शतधारेण शतधारेण सुप्प्वा काङ्क्षाꣳ सुप्प्वा शतधारेण

[1]. ह्वार्म्मा यहाँ सन्धि के प्रारम्भ में अस्वरपूर्व होने से वकार का द्वित्व अनपेक्षित है।

[2]. स्वरात्संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र (वा. प्रा. ४.१०१) स्वर से परे संयोगादि सर्वत्र द्वित्व होता है। पवित्रेण यहाँ तकार का द्वित्व होगा। विसर्जनीयः(वा.प्रा.४.११६) इस सूत्र के अनुसार व्वसोः पवित्रेण यहाँ विसर्जनीय का द्वित्व नहीं होगा। वा.प्रा.८.७ के अधिकार में आये हुये अः इति विसर्जनीयः(वा.प्रा.८.२२) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय की गणना व्यञ्जनों में है। यहाँ वा.प्रा.४.१०१. से प्राप्त विसर्जनीय के द्वित्व का निषेध ४.११६. से होगा।

शतधारेण सुप्वा काम्। शतधारेणेति शत धारेण। सुप्वा काङ्काᳫं सुप्वा सुप्वा कामधुक्षोधुक्षः काᳫं सुप्वा सुप्वा कामधुक्षः। सुप्वेति सु प्वा। कामधुक्षोधुक्षः काङ्कामधुक्षः सा साधुक्षः काङ्कामधुक्षः सा। अधुक्षः सा साधुक्षोधुक्षः सा विश्वायुर्विश्वायुः साधुक्षोधुक्षः सा विश्वायुः ॥३॥

सा विश्वायुर्विश्वायुः सा सा विश्वायुर्विश्वकर्म्मा विश्वकर्म्मा विश्वायुः सा सा विश्वायुर्विश्वकर्म्मा। विश्वायुर्विश्वकर्म्मा विश्वकर्म्मा विश्वायुर्विश्वायुर्विश्व-कर्म्मा विश्वधाया विश्वधाया विश्वकर्म्मा विश्वायुर्विश्वायुर्विश्वकर्म्मा विश्वधायाः । विश्वायुरिति विश्व आयुः। विश्वकर्म्मा विश्वधाया विश्वधाया विश्वकर्म्मा विश्व कर्म्मा विश्वधायाऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य विश्वधाया विश्वकर्म्मा विश्वकर्म्मा विश्वधायाऽ इन्द्रस्य। विश्वकर्म्मेति विश्व कर्म्मा। विश्वधायाऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य विश्वधाया विश्वधायाऽ इन्द्रस्य त्वा त्वेन्द्रस्य विश्वधाया विश्वधायाऽ इन्द्रस्य त्वा। विश्व धायाऽ इति विश्व धायाः॥ इन्द्रस्य त्वा त्वेन्द्रस्येन्द्रस्य त्वा भागम्भागन्त्वेन्द्र स्येन्द्रस्य त्वा भागम्। त्वा भागम्भागन्त्वा त्वा भागꣳ सोमेन सोमेन भागन्त्वा त्वा भागꣳ सोमेन[1]। भागꣳ सोमेन सोमेन भागम्भागꣳ सोमेना तनच्मि तनच्म्या सोमेन भागम्भागꣳ सोमेना तनच्मि। सोमेना तनच्मि तनच्म्या सोमेन सोमेना तनच्मि विष्णो विष्णो तनच्म्या सोमेन सोमेना तनच्मि विष्णो। आ तनच्मि। तनच्मि विष्णो विष्णो तनच्मि तनच्मि विष्णो हव्यꣳ हव्यँविष्णो तनच्मि तनच्मि विष्णो हव्यम्। विष्णो हव्यꣳ हव्यँ विष्णो विष्णो हव्यꣳ रक्ष रक्ष हव्यँविष्णो विष्णो हव्यꣳ रक्ष।

---

1. भागम् सोमेन यहाँ पर अनुस्वारं रेफ्मसु मकारः(वा.प्रा.४.१) इस सूत्र से मकार का अनुस्वार होता है तथा प्र.सू.३.१ के अनुसार अनुस्वार का ꣳ आदेश होता है।

व्विष्णोऽ इति विष्णो। हृद्ध्यᳫं रक्ष रक्ष हृद्ध्यᳫं हृद्ध्यᳫं रक्ष। रक्षेति रक्ष॥४॥

अग्ग्ने व्व्रतपते व्व्रतपतेग्ग्नेग्ग्ने व्व्रतपते व्व्रतँव्व्रतँव्व्रतपतेग्ग्नेग्ग्ने व्व्रतपते व्व्रतम्। व्व्रतपते व्व्रतँव्व्रतँव्व्रतपते व्व्रतपते व्व्रतञ्चरिष्ष्यामि चरिष्ष्यामि व्व्रतँव्व्रतपते व्व्रतपते व्व्रत-ञ्चरिष्ष्यामि। व्व्रतपतऽ इति व्व्रत पते। व्व्रतञ्चरिष्ष्यामि चरिष्ष्यामि व्व्रतँव्व्रतञ्चरि-ष्ष्यामि तत्तच्चरिष्ष्यामि व्व्रतँव्व्रतञ्चरिष्ष्यामि तत्। चरिष्ष्यामि तत्तच्चरिष्ष्यामि चरिष्ष्यामि तच्छकेयᳫं शकेयन्तच्चरिष्ष्यामि चरिष्ष्यामि तच्छकेयम्। तच्छ-केयᳫं शकेयन्तत्तच्छकेयन्तत्तच्छकेयन्तत्तच्छकेयन्तत्। शकेयन्तत्तच्छकेयᳫं शकेयन्तन्मे मे तच्छकेयᳫं शकेयन्तन्मे। तन्मे मे तत्तन्मे राद्ध्यताᳫं राद्ध्यता-म्मे तत्तन्मे राद्ध्यताम्। मे राद्ध्यताᳫं राद्ध्यताम्मे मे राद्ध्यतामिदमिदᳫं राद्ध्य ताम्मे मे राद्ध्यतामिदम्। राद्ध्यतामिदमिदᳫं राद्ध्यताᳫं राद्ध्यतामिदमहमह मिदᳫं राद्ध्यताᳫं राद्ध्यतामिदमहम्॥ इदमहमहमिदमिदमहमनृतादनृतादहमि दमिदमहमनृतात्। अहमनृतादनृतादहमहमनृतात्सत्त्यᳫं सत्त्यमनृतादहमहमनृ तात्सत्त्यम्। अनृतात्सत्त्यᳫं सत्त्यमनृतादनृतात्सत्त्यमुपोप सत्त्यमनृतादनृतात्स त्यमुप। सत्त्यमुपोप सत्त्यᳫं सत्त्यमुपैम्म्येम्म्युप सत्त्यᳫं सत्त्यमुपैमि। उपैम्म्ये म्म्युपोपैमि कः कऽ एम्म्युपोपैमि कः। एमि कः कऽ एम्म्येमि कस्त्वा त्वा कऽ एम्म्येमि कस्त्वा॥५॥

कस्त्वा त्वा कः कस्त्वा युनक्ति युनक्ति त्वा कः कस्त्वा युनक्ति। त्वा युनक्ति युनक्ति त्वा त्वा युनक्ति स स युनक्ति त्वा त्वा युनक्ति सः। युनक्ति स स युनक्ति युनक्ति स कस्म्मै कस्म्मै स युनक्ति युनक्ति स कस्म्मै[1]। स कस्म्मै

[1]. पुनरुक्तानि लुप्यन्ते पदानीत्याह शाकलः। अलोप इति गार्ग्यस्य काण्वस्यार्थवशादिति। वा. प्रा. ४.१७७. के भाष्य में उव्वट द्वारा उद्धृत। यहाँ त्वा, युनक्ति इन पुनरुक्त पदों का लोप हुआ है। कस्म्मै यहाँ ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) इस सूत्र से मकार का द्वित्व होता है।

कस्म्मै स स कस्म्मै तस्म्मै तस्म्मै कस्म्मै स स कस्म्मै तस्म्मैं। कस्म्मै तस्म्मै तस्म्मै कस्म्मै कस्म्मै तस्म्मै कर्म्मणे कर्म्मणे तस्म्मै कस्म्मै कस्म्मै तस्म्मै कर्म्मणे। तस्म्मै कर्म्मणे कर्म्मणे तस्म्मै तस्म्मै कर्म्मणे वाँव्वाङ्कर्म्मणे तस्म्मै तस्म्मै कर्म्मणे वाम्॥ कर्म्मणे वाँव्वाङ्कर्म्मणे कर्म्मणे वाँव्वेषाय व्वेषाय वाङ्कर्म्मणे कर्म्मणे वाँव्वेषाय। व्वाँव्वेषाय व्वेषाय वाँव्वाँव्वेषाय वाँव्वाँव्वेषाय वाँव्वाँव्वेषाय वाम्। व्वेषाय वाँव्वाँव्वेषाय व्वेषाय वाम्प्रत्युंष्टम्प्रत्युंष्टँव्वाँव्वेषाय व्वेषाय वाम्प्रत्युंष्टम्। व्वाम्प्रत्युंष्टम्प्रत्युंष्टँव्वाँव्वाम्प्रत्युंष्टꣳ रक्क्षो रक्क्षः प्रत्युंष्टँव्वाँव्वाम्प्रत्युंष्टꣳ रक्क्षः॥६॥

प्रत्युंष्टꣳ रक्क्षो रक्क्षः प्प्रत्युंष्टम्प्रत्युंष्टꣳ रक्क्षः प्प्रत्युंष्टाः प्प्रत्युंष्टा रक्क्षः प्प्रत्युंष्टम्प्रत्युंष्टꣳ रक्क्षः प्प्रत्युंष्टाः। प्रत्युंष्टमिति प्प्रतिं उष्टम्। रक्क्षः प्प्रत्युंष्टाः प्प्रत्युंष्टा रक्क्षो रक्क्षः प्प्रत्युंष्टाऽ अरातयोरातयः प्प्रत्युंष्टा रक्क्षो रक्क्षः प्प्रत्युंष्टाऽ अरातयः। प्रत्युंष्टाऽ अरातयोरातयः प्प्रत्युंष्टाः प्प्रत्युंष्टाऽ अरातयो निष्टंप्प्तन्निस्तंप्तमरातयः प्प्रत्युंष्टाः प्प्रत्युंष्टाऽ अरातयो निष्टंप्तम्। प्रत्युंष्टाऽ इति प्प्रतिं उष्टाः। अरातयो निष्टंप्प्तन्निस्तंप्तमरातयोरातयो निष्टंप्तꣳ रक्क्षो रक्क्षो निस्तंप्तमरातयोरातयो निष्टंप्तꣳ रक्क्षः। निष्टंप्तꣳ रक्क्षो रक्क्षो निस्तंप्तन्निष्टंप्तꣳ रक्क्षो निष्टंप्ता निस्तंप्ता रक्क्षो निस्तंप्तन्निष्टंप्तꣳ रक्क्षो निष्टंप्ताः। निस्तंप्तमिति निः तंप्तम्। रक्क्षो निष्टंप्ता निस्तंप्ता रक्क्षो रक्क्षो निष्टंप्ताऽ अरातयोरातयो निस्तंप्ता रक्क्षो रक्क्षो निष्टंप्ताऽ अरातयः। निष्टंप्ताऽ अरातयोरातयो निस्तंप्ता निष्टंप्ताऽ अरातयऽ उरूर्व्वरातयो निस्तंप्ता निष्टंप्ताऽ अरातयऽ उरु। निस्तंप्ताऽ इति निः तंप्ताः। अरातयऽ उरूर्व्वरातयोरातयऽ उर्व्वन्तरिक्क्षमन्तरिक्क्षमुर्व्वरातयोरातयऽ उर्व्वन्तरिक्क्षम्॥ उर्व्वन्तरिक्क्षमन्तरिक्क्षमुरूर्व्वन्तरिक्क्षमन्वन्वन्तरिक्क्षमुरूर्व्वन्तरिक्क्षमनु। अन्तरिक्क्षमन्वन्वन्तरि

क्षमन्तरिक्षमन्त्वेम्म्येम्म्यन्त्वन्तरिक्षमन्तरिक्षमन्त्वेमि। अन्त्वेम्म्येम्म्यन्त्व-न्त्वेमि धूर्द्धूरेम्म्यन्त्वन्त्वेमि धूः। एमि धूर्द्धूरेम्म्येमि धूर्रस्यसि धूरेम्म्येमि धूर्रसि॥७॥

धूर्रस्यसि धूर्द्धूर्रसि धूर्व्व धूर्व्वसि धूर्द्धूर्रसि धूर्व्व[1]। असि धूर्व्व धूर्व्वस्यसि धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्वन्तन्धूर्व्वस्यसि धूर्व्व धूर्व्वन्तम्। धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्वन्तन्धूर्व्व धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धू-र्व्व धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्व धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्व। धूर्व्वन्तन्धूर्व्व धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्वन्तन्धूर्व्व तन्त-न्धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्वन्तन्धूर्व्व तम्। धूर्व्व तन्तन्धूर्व्व धूर्व्व तँ᳚ यो यस्तन्धूर्व्व धूर्व्व तँ᳚ यः। तँ᳚ यो यस्तन्तँ᳚ योस्म्मानस्म्मान्यस्तन्तँ᳚ योस्म्मान्। योस्म्मानस्म्मान्यो यो-स्म्मान्धूर्व्वति धूर्व्वत्यस्म्मान्यो योस्म्मान्धूर्व्वति। अस्म्मान्धूर्व्वति धूर्व्वत्यस्म्मान-स्म्मान्धूर्व्वति तन्तन्धूर्व्वत्यस्म्मानस्म्मान्धूर्व्वति तम्। धूर्व्वति तन्तन्धूर्व्वति धूर्व्वति तन्धूर्व्व धूर्व्व तन्धूर्व्वति धूर्व्वति तन्धूर्व्व। तन्धूर्व्व धूर्व्व तन्तन्धूर्व्व यँ᳚ यन्धूर्व्व तन्तन्धूर्व्व यम्। धूर्व्व यँ᳚ यन्धूर्व्व धूर्व्व यँव्वयँव्वयँ᳚ यन्धूर्व्व धूर्व्व यँव्वयम्। यँव्वयँव्वयँ᳚ यँ᳚ यँव्वयन्धूर्व्वा-मो धूर्व्वामो व्वयँ᳚ यँ᳚ यँव्वयन्धूर्व्वामः। व्वयन्धूर्व्वामो धूर्व्वामो व्वयँव्वयन्धूर्व्वामो देवाना-न्देवानान्धूर्व्वामो व्वयँव्वयन्धूर्व्वामो देवानाम्। धूर्व्वामो देवानान्देवानान्धूर्व्वामो धूर्व्वा-मो देवानामस्यसि देवानान्धूर्व्वामो धूर्व्वामो देवानामसि॥ देवानामस्यसि देवाना-न्देवानामसि व्वह्नितमँव्वह्नितममसि देवानान्देवानामसि व्वह्नितमम्। असि व्वह्नित-मँव्वह्नितममस्यसि व्वह्नितमꣳ सस्निन्तमꣳ सस्निन्तमँव्वह्नितममस्यसि व्वह्नितमꣳ सस्निन्तमम्[2]। व्वह्नितमꣳ सस्निन्तमꣳ सस्निन्तमँव्वह्नितमँव्वह्नितमꣳ सस्निन्तम-म्पप्रितमम्पप्रितमꣳ सस्निन्तमँव्वह्नितमँव्वह्नितमꣳ सस्निन्तमम्पप्रितमम्। व्वह्नि

---

[1]. परं तु रेफहकाराभ्याम् (वा. प्रा. ४.१०२) रेफ एवं हकार से परे व्यञ्जन का द्वित्व होता है। धूर्व्व यहाँ रेफ तथा दो वकार संयुक्त व्यञ्जन हैं। रेफ तथा हकार का द्वित्व नहीं होता है। ज्यो. वृ. पृ.१२९ में भी कहा है- रेफहकारयोः प्रत्यक्षश्रुतिनिमित्तत्वेन सामान्यप्राप्तकार्यबाधः, तेन रहभिन्नव्यञ्जनस्यैवानेन द्वित्वम्। अतिहृस्वम्।(पद.३०।२० सं.३०।२२)

[2]. ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः (वा. प्रा. ४.१०३) ऊष्म एवं अन्तस्थ से परे स्पर्श का द्वित्व होता है। यहाँ सस्निन्तमम् में नकार का द्वित्व होगा।

तम॒मिति॒ वह्निं॑ तमम्[1]। सस्नि॑तम॒म्पप्प्रि॑तम॒म्पप्प्रि॑तम॒ꣳ सस्नि॑तम॒ꣳ सस्नि॑त म॒म्पप्प्रि॑तम॒ञ्जुष्टं॑तम॒ञ्जुष्टं॑तम॒म्पप्प्रि॑तम॒ꣳ सस्नि॑तम॒ꣳ सस्नि॑तम॒म्पप्प्रि॑तम॒ञ्जुष्टं॑त-मम्। सस्नि॑तम॒मिति॒ सस्नि॑ तमम्। पप्प्रि॑तम॒ञ्जुष्टं॑तम॒ञ्जुष्टं॑तम॒म्पप्प्रि॑तम॒म्पप्प्रि॑ तम॒ञ्जुष्टं॑तमन्देव॒हूतं॑मन्देव॒हूतं॑म॒ञ्जुष्टं॑तम॒म्पप्प्रि॑तम॒म्पप्प्रि॑तम॒ञ्जुष्टं॑तमन्देव॒हूतं॑मम्। पप्प्रि॑तम॒मिति॒ पप्प्रि॑ तमम्। जुष्टं॑तमन्देव॒हूतं॑मन्देव॒हूतं॑म॒ञ्जुष्टं॑तम॒ञ्जुष्टं॑तमन्देव॒हूतं॑-म॒मह्रु॑तम॒ह्रु॑तन्देव॒हूतं॑म॒ञ्जुष्टं॑तम॒ञ्जुष्टं॑तमन्देव॒हूतं॑म॒मह्रु॑तम्। जुष्टं॑तम॒मिति॒ जुष्टं॑त-मम्। दे॒व॒हूतं॑म॒मह्रु॑त॒मह्रु॑तन्देव॒हूतं॑मन्देव॒हूतं॑म॒मह्रु॑तमस्य॒स्यह्रु॑तन्देव॒हूतं॑मन्देव॒हूतं॑-म॒मह्रु॑तमसि। दे॒व॒हूतं॑म॒मिति॑ देव॒ हूतं॑मम्॥८॥

अह्रु॑तमस्य॒स्यह्रु॑त॒मह्रु॑तमसि हवि॒र्द्धानं॑ꣳ हवि॒र्द्धानं॑म॒स्यह्रु॑त॒मह्रु॑तमसि हवि॒-र्द्धानं॑म्। अ॒सि॒ ह॒वि॒र्द्धानं॑ꣳ हवि॒र्द्धानं॑मस्यसि हवि॒र्द्धानँ॒व्विष्ण्णु॒र्व्विष्ण्णु॑र्हवि॒र्द्धानं॑म-स्यसि हवि॒र्द्धानँ॒व्विष्ण्णु॑ः। ह॒वि॒र्द्धानँ॒व्विष्ण्णु॒र्व्विष्ण्णु॑र्हवि॒र्द्धानं॑ꣳ हवि॒र्द्धानँ॒व्विष्ण्णु॑-स्त्वा त्वा॒ व्विष्ण्णु॑र्हवि॒र्द्धानं॑ꣳ हवि॒र्द्धानँ॒व्विष्ण्णु॑स्त्वा। ह॒वि॒र्द्धान॒मिति॑ हवि॒ः धानं॑म् ॥ व्विष्ण्णु॑स्त्वा त्वा॒ व्विष्ण्णु॒र्व्विष्ण्णु॑स्त्वा क्क्रमताङ्क्रमतान्त्वा॒ व्विष्ण्णु॒र्व्विष्ण्णु॑स्त्वा क्क्रमताम्। त्वा॒ क्क्र॒म॒ता॒ङ्क्र॒म॒ता॒न्त्वा॒ त्वा॒ क्क्र॒म॒ता॒मु॒रूरु क्क्रं॑मतान्त्वा त्वा क्क्रमतामु॒रु[2] । क्क्र॒म॒ता॒मु॒रूरु क्क्रं॑मताङ्क्रमतामु॒रु व्वातां॑य॒ व्वातां॑यो॒रु क्क्रं॑मताङ्क्रमतामु॒रु व्वातां॑य। उ॒रु व्वातां॑य॒ व्वातां॑यो॒रूरु व्वा॒ता॒याप॑हत॒मप॑हतँ॒व्वातां॑यो॒रूरु व्वा॒ता॒याप॑हतम्। व्वा॒ता॒-याप॑हत॒मप॑हतँ॒व्वातां॑य॒ व्वा॒ता॒याप॑हत॒ꣳ रक्क्षो॒ रक्क्षोप॑हतँ॒व्वातां॑य॒ व्वा॒ता॒याप॑हत॒ꣳ रक्क्षं॑ः। अप॑हत॒ꣳ रक्क्षो॒ रक्क्षोप॑हत॒मप॑हत॒ꣳ रक्क्षो॒ यच्छं॑न्ताँ॒व्यच्छं॑न्ता॒ꣳ रक्क्षोप॑हत॒मप॑हत॒ꣳ रक्क्षो॒ यच्छं॑न्ताम्। अप॑हत॒मित्यप॑ हतम्। रक्क्षो॒ यच्छं॑न्ताँ॒-

---

1. समासेऽवग्रहो ह्रस्वसमकालः(वा.प्रा.५.१) सामासिक पदों में एकमात्राकाल का अवग्रह होता है।

2. उरु उरु यहाँ सिं सवर्णे दीर्घम्(वा.४.५२) इस सूत्र से दीर्घ होता है। सिमादितोऽष्टौ स्वराणाम्(वा.प्रा.१.४४) के अनुसार उ सिं संज्ञक स्वर है।

ऽयच्छंन्ताꣳ रक्षो रक्षो यच्छंन्ताम्पञ्च पञ्च यच्छंन्ताꣳ रक्षो रक्षो यच्छं-न्ताम्पञ्चं। यच्छंन्ताम्पञ्च पञ्च यच्छंन्ताँऽयच्छंन्ताम्पञ्चं। पञ्चेति पञ्चं॥९॥

देवस्यं त्वा त्वा देवस्यं देवस्यं त्वा सवितुः संवितुस्त्वा देवस्यं देवस्यं त्वा सवितुः। त्वा सवितुः संवितुस्त्वा त्वा सवितुः प्प्रसवे प्प्रसवे संवितुस्त्वा त्वा सवितुः प्प्रसवे। सवितुः प्प्रसवे प्प्रसवे संवितुः संवितुः प्प्रसवेऽश्विनोरश्विनोः प्प्रसवे संवितुः संवितुः प्प्रसवेऽश्विनोः। प्रसवेऽश्विनोरश्विनोः प्प्रसवे प्प्रसवे-ऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्बाहुब्भ्यामश्विनोः प्प्रसवे प्प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्[1]। प्रसवऽ इति प्प्र सवे। अश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्बाहुब्भ्यामश्विनोरश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णणः पूष्णणो बाहुब्भ्यामश्विनोरश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णणः। बाहुब्भ्याम्पूष्णणः पूष्णणो बाहु-ब्भ्याम्बाहुब्भ्याम्पूष्णणो हस्ताब्भ्याꣳ हस्ताब्भ्याम्पूष्णणो बाहुब्भ्याम्बाहुब्भ्या-म्पूष्णणो हस्ताब्भ्याम्। बाहुब्भ्यामिति बाहु भ्याम्। पूष्णणो हस्ताब्भ्याꣳ हस्ताब्भ्याम्पूष्णणः पूष्णणो हस्ताब्भ्यामग्ग्नयेऽग्ग्नये हस्ताब्भ्याम्पूष्णणः पूष्णणो हस्ताब्भ्यामग्ग्नये। हस्ताब्भ्यामग्ग्नयेऽग्ग्नये हस्ताब्भ्याꣳ हस्ताब्भ्यामग्ग्नये जुष्ट-ञ्जुष्टमग्ग्नये हस्ताब्भ्याꣳ हस्ताब्भ्यामग्ग्नये जुष्टम्॥ अग्ग्नये जुष्टञ्जुष्टमग्ग्नयेऽग्ग्नये जुष्टङ्गृह्णामि गृह्णामि जुष्टमग्ग्नयेऽग्ग्नये जुष्टङ्गृह्णामि। जुष्टङ्गृह्णामि गृह्णामि जुष्ट-ञ्जुष्टङ्गृह्णाम्म्यग्ग्नीषोमाब्भ्यामग्ग्नीषोमाब्भ्याङ्गृह्णामि जुष्टञ्जुष्टङ्गृह्णाम्म्यग्ग्नीषोमा-ब्भ्याम्[2]। गृह्णाम्म्यग्ग्नीषोमाब्भ्यामग्ग्नीषोमाब्भ्याङ्गृह्णामि गृह्णाम्म्यग्ग्नीषोमा-ब्भ्याञ्जुष्टञ्जुष्टमग्ग्नीषोमाब्भ्याङ्गृह्णामि गृह्णाम्म्यग्ग्नीषोमाब्भ्याञ्जुष्टम्। अग्ग्नीषो-माब्भ्याञ्जुष्टञ्जुष्टमग्ग्नीषोमाब्भ्यामग्ग्नीषोमाब्भ्याञ्जुष्टङ्गृह्णामि गृह्णामि जुष्टमग्ग्नी-षोमाब्भ्यामग्ग्नीषोमाब्भ्याञ्जुष्टङ्गृह्णामि। जुष्टङ्गृह्णामि गृह्णामि जुष्टञ्जुष्टङ्गृह्णामि

---

1. अवसान में मकार आने पर मुष्टिकाकृति का प्रदर्शन विहित है। - या. शि. ५६।

2. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि(वा.प्रा.२.४८) इस सूत्र के अनुसार आमन्त्रित न होने से यहाँ अग्नीषोमाभ्याम् यह पद द्विरुदात्त है।

भूतायं भूतायं गृह्णामि जुष्टञ्जुष्टङ्गृह्णामि भूतायं। गृह्णामि भूतायं भूतायं गृह्णामि गृह्णामि भूतायं त्वा त्वा भूतायं गृह्णामि गृह्णामि भूतायं त्वा॥१०॥

भूतायं त्वा त्वा भूतायं भूतायं त्वा न न त्वां भूतायं भूतायं त्वा न। त्वा न न त्वां त्वा नारांतयेरांतये न त्वां त्वा नारांतये। नारांतयेरांतये न नारांतये स्वः स्वररांतये न नारांतये स्वः। अरांतये स्वः स्वररांतयेरांतये स्वरभिविक्रूयेंषमभिविक्रूयेंषु स्वररांतयेरांतये स्वरभिविक्रूयेंषम्। स्वंरभिविक्रूयेंषमभिविक्रूयेंषु स्वः स्वंरभिविक्रूयेंषन्दृंहन्तान्दृंहन्तामभिविक्रूयेंषु स्वः स्वंरभिविक्रूयेंषन्दृंहन्ताम्[1]। अभिविक्रूयेंषन्दृंहन्तान्दृंहन्तामभिविक्रूयें षमभिविक्रूयेंषन्दृंहन्तान्दुर्व्या दुर्व्या दृंहन्तामभिविक्रूयेंषमभिविक्रूयें-षन्दृंहन्तान्दुर्व्याः। अभिविक्रूयेंषमित्यंभि विक्रूयेंषम्। दृंहन्तान्दुर्व्या दुर्व्या दृंहन्तान्दृंहन्तान्दुर्व्याः पृथिव्याम्पृंथिव्यान्दुर्व्या दृंहन्तान्दृं-हन्तान्दुर्व्याः पृथिव्याम्। दुर्व्याः पृथिव्याम्पृंथिव्यान्दुर्व्या दुर्व्याः पृथिव्यामुरूरु पृंथिव्यान्दुर्व्या दुर्व्याः पृथिव्यामुरु। पृथिव्यामुरूरु पृंथिव्याम्पृंथिव्यामुर्वन्तरिं-क्षमन्तरिंक्षमुरु पृंथिव्याम्पृंथिव्यामुर्वन्तरिंक्षम्। उर्वन्तरिंक्षमन्तरिंक्षमुरू-र्वन्तरिंक्षमन्वन्वन्तरिंक्षमुरूर्वन्तरिंक्षमनुं। अन्तरिंक्षमन्वन्वन्तरिंक्षम-न्तरिंक्षमन्वेंम्म्येम्म्यन्वन्तरिंक्षमन्तरिंक्षमन्वेंमि। अन्वेंम्म्येम्म्यन्वेंमि पृथिव्याः पृंथिव्या एम्म्यन्वन्वेंमि पृथिव्याः। एमि पृथिव्याः पृंथिव्या एंम्म्येमि पृथिव्यास्त्वां त्वा पृथिव्या एंम्म्येमि पृथिव्यास्त्वां। पृथिव्यास्त्वां त्वा पृथिव्याः पृंथिव्यास्त्वा नाभौ नाभौं त्वा पृथिव्याः पृंथिव्यास्त्वा नाभौं। त्वा नाभौ नाभौं त्वा त्वा नाभौं सादयामि सादयामि नाभौं त्वा त्वा नाभौं सादयामि। नाभौं सादयामि सादयामि नाभौ नाभौं सादयाम्म्यदिंत्या

[1]. वा.प्रा.१.१११. के भाष्यकारों ने अनुदातापूर्व स्वंः इस पद को भी जात्य स्वरित माना है।

अदित्याः सादयामि नाभौ नाभौ सादयाम्म्यदित्याः। सादयाम्म्यदित्याऽ अदित्याः सादयामि सादयाम्म्यदित्याऽ उपस्त्थेऽ उपस्त्थेदित्याः सादयामि सादयाम्म्यदित्याऽ उपस्त्थे। अदित्याऽ उपस्त्थेऽ उपस्त्थेदित्याऽ अदित्याऽ उपस्त्थेग्ग्नेग्ग्नेऽ उपस्त्थेदित्याऽ अदित्याऽ उपस्त्थेग्ग्ने। उपस्त्थेग्ग्नेग्ग्नेऽ उपस्त्थेऽ उपस्त्थेग्ग्ने हव्यꣳ हव्यमग्ग्नेऽ उपस्त्थेऽ उपस्त्थेग्ग्ने हव्यम्[1]। उपस्त्थऽ इत्युप स्त्थे। अग्ग्ने हव्यꣳ हव्यमग्ग्नेग्ग्ने हव्यꣳ रक्ष रक्ष हव्यमग्ग्नेग्ग्ने हव्यꣳ रक्ष। हव्यꣳ रक्ष रक्ष हव्यꣳ हव्यꣳ रक्ष। रक्षेति रक्ष॥११॥

पवित्रे स्त्थ स्त्थः पवित्रे पवित्रे स्त्थो व्वैष्ण्णव्यौ व्वैष्ण्णव्यौ स्त्थः पवित्रे पवित्रे स्त्थो व्वैष्ण्णव्यौ[2]। पवित्रेऽ इति पवित्रे। स्त्थो व्वैष्ण्णव्यौ व्वैष्ण्णव्यौ स्त्थ स्त्थो व्वैष्ण्णव्यौ सवितुः सवितुर्व्वैष्ण्णव्यौ स्त्थ स्त्थो व्वैष्ण्णव्यौ सवितुः। व्वैष्ण्णव्यौ सवितुः सवितुर्व्वैष्ण्णव्यौ व्वैष्ण्णव्यौ सवितुर्व्वो वः सवितुर्व्वैष्ण्णव्यौ व्वैष्ण्णव्यौ सवितुर्व्वः। सवितुर्व्वो वः सवितुः सवितुर्व्वः प्प्रसवे प्प्रसवे वः सवितुः सवितुर्व्वः प्प्रसवे। व्वः प्प्रसवे प्प्रसवे वो वः प्प्रसवऽ उदुत्प्रसवे वो वः प्प्रसवऽ उत्। प्रसवऽ उदुत्प्रसवे प्प्रसवऽ उत्पुनामि पुनाम्म्युत्प्रसवे प्प्रसवऽ उत्पुनामि। प्रसवऽ इति प्प्र सवे। उत्पुनामि पुनाम्म्युदुत्पुनाम्म्यच्छिद्रेणाच्छिद्रेण पुनाम्म्युदुत्पुनाम्म्यच्छिद्रेण। पुनाम्म्यच्छिद्रेणाच्छिद्रेण पुनामि पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रेण पवित्रेणाच्छिद्रेण पुनामि पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रेण। अच्छिद्रेण पवित्रेण पवित्रेणाच्छिद्रेणाच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य पवित्रेणाच्छिद्रेणाच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य। पवित्रेण सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य पवित्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्म्मिभी रश्म्मिभिः सूर्य्यस्य पवित्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्म्मिभिः। सूर्य्यस्य रश्म्मिभी

1. उदात्त के अनन्तर स्वरित हो (प्रचय न हो) तो मृदु निपातन का निर्देश है। जैसे उपस्त्थेग्ग्ने। याज्ञ० शि० - ११०।

2. व्वैष्ण्णव्यौ यहाँ औ का जात्य स्वरित स्वर है। एकपदे नीचपूर्वः सयवो जात्यः(वा.प्रा.१.१११)।

रश्मिभिः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य रश्मिभिर्देवीर्देवी रश्मिभिः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य रश्मिभिर्देवीः। रश्मिभिर्देवीर्देवी रश्मिभी रश्मिभीर्देवीरापऽ आपो देवी रश्मिभी रश्मिभिर्देवीरापः। रश्मिभिरिति रश्मि भिः॥ देवीरापऽ आपो देवीर्देवीरापोऽ अग्ग्रेगुवोग्ग्रेगुवऽ आपो देवीर्देवीरापोऽ अग्ग्रेगुवः[1]। आपोऽ अग्ग्रेगुवोग्ग्रेगुवऽ आपऽ आपोऽ अग्ग्रेगुवोऽ अग्ग्रेपुवोग्ग्रेपुवोग्ग्रेगुवऽ आपऽ आपोऽ अग्ग्रेगुवोऽ अग्ग्रेपुवः[2]। अग्ग्रेगुवोऽ अग्ग्रेपुवोग्ग्रेपुवोग्ग्रेगुवोग्ग्रेगुवोऽ अग्ग्रेपुवोग्ग्रेग्ग्रेग्ग्रेपुवोग्ग्रेगुवोग्ग्रेगुवोऽ अग्ग्रेपुवोग्ग्रे। अग्ग्रेगुवऽ इत्यग्ग्रे गुवः। अग्ग्रेपुवोग्ग्रेग्ग्रेग्ग्रेपुवोग्ग्रेपुवोग्ग्रऽ इममिममग्ग्रेग्ग्रेपुवोग्ग्रेपुवोग्ग्रऽ इमम्। अग्ग्रेपुवऽ इत्यग्ग्रे पुवः। अग्ग्रऽ इममिममग्ग्रेग्ग्रऽ इममद्याद्येममग्ग्रेग्ग्रऽ इममद्य। इममद्याद्येममिममद्य यज्ञँय्यज्ञमद्येममिममद्य यज्ञम्। अद्य यज्ञँय्यज्ञमद्याद्य यज्ञन्नयत नयत यज्ञमद्याद्य यज्ञन्नयत। यज्ञन्नयत नयत यज्ञँय्यज्ञन्नयताग्ग्रेग्ग्रे नयत यज्ञँय्यज्ञन्नयताग्ग्रे। नयताग्ग्रेग्ग्रे नयत नयताग्ग्रे यज्ञपतिँय्यज्ञपतिमग्ग्रे नयत नयताग्ग्रे यज्ञपतिम्। अग्ग्रे यज्ञपतिँय्यज्ञपतिमग्ग्रेग्ग्रे यज्ञपतिꣳ सुधातुꣳ सुधातुँय्यज्ञपतिमग्ग्रेग्ग्रे यज्ञपतिꣳ सुधातुम्। यज्ञपतिꣳ सुधातुꣳ सुधातुँय्यज्ञपतिँय्यज्ञपतिꣳ सुधातुँय्यज्ञपतिँय्यज्ञपतिꣳ सुधातुँय्यज्ञपतिँय्यज्ञपतिꣳ सुधातुँय्यज्ञपतिम्। यज्ञपतिमिति यज्ञ पतिम्। सुधातुँय्यज्ञपतिँय्यज्ञपतिꣳ सुधातुꣳ सुधातुँय्यज्ञपतिन्देवयुवन्देवयुवँय्यज्ञपतिꣳ सुधातुꣳ सुधातुँय्यज्ञपतिन्देवयुवम्। सुधातुमिति सु धातुम्। यज्ञपतिन्देवयुवन्देवयुवँय्यज्ञपतिँय्यज्ञपतिन्देवयुवँय्युष्म्मा युष्म्मा देवयुवँय्यज्ञपतिँय्यज्ञपतिन्देवयुवँय्युष्म्माः। यज्ञपतिमिति यज्ञ पतिम्। देवयुवँ-

---

[1]. आपोऽ अग्ग्रेगुवः यहाँ ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।– वा. प्रा. ४.८५।

[2]. अग्ग्रेगुवोऽअग्ग्रेपुवः यहाँ ओकार प्रकृति भाव से रहता है। - वा.प्रा.४.८५.

ऽश्शु॒ष्म्मा शु॒ष्म्मा दे॑व॒युर्व॑न्देव॒युर्वँ॑ऽश्शु॒ष्म्माऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ शु॒ष्म्मा दे॑व॒युर्व॑न्देव॒युर्वँ-ऽश्शु॒ष्म्माऽ इन्द्र॑ः । दे॒व॒यु॒रिति॑ देव॒ युर्व॑म् ॥१२॥

शु॒ष्म्माऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ शु॒ष्म्मा शु॒ष्म्माऽ इन्द्रो॑वृणीताऽवृणी॒तेन्द्रो॑ शु॒ष्म्मा शु॒ष्म्माऽ इन्द्रो॑वृणीत। इन्द्रो॑वृणीताऽवृणी॒तेन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑वृणीत वृत्र॒तूर्य्ये॑ वृत्र॒तूर्य्ये॑वृ-णी॒तेन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑वृणीत वृत्र॒तूर्य्ये॑[1] । अ॒वृ॒णी॒त॒ वृत्र॒तूर्य्ये॑ वृत्र॒तूर्य्ये॑वृणीताऽवृणीत वृत्र॒तू-र्य्ये॑ यू॒यँ॑ऽयू॒यँ॑वृत्र॒तूर्य्ये॑वृणीताऽवृणीत वृत्र॒तूर्य्ये॑ यू॒यम्। वृत्र॒तूर्य्ये॑ यू॒यँ॑ऽयू॒यँ॑वृत्र॒तूर्य्ये॑ वृत्र॒तूर्य्ये॑ यू॒यमिन्द्र॒मिन्द्रँ॑ऽयू॒यँ॑वृत्र॒तूर्य्ये॑ वृत्र॒तूर्य्ये॑ यू॒यमिन्द्र॑म्। वृ॒त्र॒तूर्य्य॒ऽ इति॑ वृत्र तूर्य्ये॑। यू॒यमिन्द्र॒मिन्द्रँ॑ऽयू॒यँ॑ऽयू॒यमिन्द्र॑मवृणीध्वमवृणी॒ध्व॒मिन्द्रँ॑ऽयू॒यँ॑ऽयू॒यमिन्द्र॑मवृ-णीध्वम्। इन्द्र॑मवृणीध्वमवृणी॒ध्व॒मिन्द्र॒मिन्द्र॑मवृणी॒ध्वँ॑वृत्र॒तूर्य्ये॑ वृत्र॒तूर्य्ये॑वृणी॒ध्व॒मिन्द्र॒-मिन्द्र॑मवृणी॒ध्वँ॑वृत्र॒तूर्य्ये॑। अ॒वृ॒णी॒ध्वँ॑वृत्र॒तूर्य्ये॑ वृत्र॒तूर्य्ये॑वृणीध्वमवृणी॒ध्वँ॑वृत्र॒तूर्य्ये॒ प्प्रो-क्क्षि॑ता॒ः प्प्रोक्क्षि॑ता वृत्र॒तूर्य्ये॑वृणीध्वमवृणी॒ध्वँ॑वृत्र॒तूर्य्ये॒ प्प्रोक्क्षि॑ताः। वृ॒त्र॒तूर्य्ये॒ प्प्रो-क्क्षि॑ता॒ः प्प्रोक्क्षि॑ता वृत्र॒तूर्य्ये॑ वृ॒त्र॒तूर्य्ये॒ प्प्रोक्क्षि॑ता स्त्थ स्त्थ॒ प्प्रोक्क्षि॑ता वृत्र॒तूर्य्ये॑ वृत्र॒तूर्य्ये॒ प्प्रोक्क्षि॑ता स्त्थ। वृ॒त्र॒तूर्य्य॒ऽ इति॑ वृत्र॒ तूर्य्ये॑। प्रोक्क्षि॑ता स्त्थ स्त्थ॒ प्प्रोक्क्षि॑ता॒ः प्प्रोक्क्षि॑ता स्त्था॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ स्त्थ॒ प्प्रोक्क्षि॑ता॒ः प्प्रोक्क्षि॑ता स्त्था॒ग्ग्नये॑। प्रोक्क्षि॑ता॒ऽ इति॒ प्प्र उ॑क्क्षिताः। स्त्था॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ स्त्थ स्त्था॒ग्ग्नये॑ त्वा त्वा॒ग्ग्नये॑ स्त्थ स्त्था॒ग्ग्नये॑ त्वा॥ अ॒ग्ग्नये॑ त्वा त्वा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ त्वा॒ जुष्ट॒ञ्जुष्ट॑न्त्वा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ त्वा॒ जुष्ट॑म्। त्वा॒ जुष्ट॒ञ्जुष्ट॑न्त्वा त्वा॒ जुष्ट॒म्प्र प्प्र जुष्ट॑न्त्वा त्वा॒ जुष्ट॒म्प्र। जुष्ट॒म्प्र प्प्र जुष्ट॒ञ्जुष्ट॒म्प्रोक्क्षा॑म्म्युक्क्षामि॒ प्प्र जुष्ट॒ञ्जुष्ट॒म्प्रोक्क्षा॑मि। प्रोक्क्षा॑म्म्युक्क्षामि॒ प्प्र प्प्रोक्क्षा॑म्म्य॒ग्ग्नीषोमा॑ब्भ्याम॒ग्ग्नीषोमा॑ब्भ्यामुक्क्षामि॒ प्प्र प्प्रोक्क्षा॑म्म्य॒ग्ग्नीषोमा॑-ब्भ्याम्[2]। उ॒क्क्षा॒म्म्य॒ग्ग्नीषोमा॑ब्भ्याम॒ग्ग्नीषोमा॑ब्भ्यामुक्क्षाम्म्युक्क्षाम्म्य॒ग्ग्नीषो-

---

1. वृत्रतूर्य्ये यहाँ वा.प्रा.४.१०१. से प्राप्त त्र अक्षर में तकार की द्विरुक्ति का निषेध वा.प्रा.६.२७. से है।

2. अग्ग्नीषोमाब्भ्याम् यहां भकार की द्विरुक्ति बकार के साथ होती है। -पा. शि. १०६।

माभ्याम्दैव्याय दैव्यायाग्नीषोमाभ्यामुक्षाम्म्युक्षाम्म्यग्नीषोमाभ्यान्दै-व्याय। अग्नीषोमाभ्यान्दैव्याय दैव्यायाग्नीषोमाभ्यामग्नीषोमाभ्यान्दैव्याय कर्म्मणे कर्म्मणे दैव्यायाग्नीषोमाभ्यामग्नीषोमाभ्यान्दैव्याय कर्म्मणे॥ दैव्याय कर्म्मणे कर्म्मणे दैव्याय दैव्याय कर्म्मणे शुन्धध्वꣳ शुन्धध्वङ्कर्म्मणे दैव्याय दैव्याय कर्म्मणे शुन्धध्वम्। कर्म्मणे शुन्धध्वꣳ शुन्धध्वङ्कर्म्मणे कर्म्मणे शुन्धध्वन्देवयज्ज्यायै देवयज्ज्यायै शुन्धध्वङ्कर्म्मणे कर्म्मणे शुन्धध्वन्देवयज्ज्यायै। शुन्धध्वन्देवयज्ज्यायै देवयज्ज्यायै शुन्धध्वꣳ शुन्धध्वन्देवयज्ज्यायै यद्यद्देवयज्ज्यायै शुन्धध्वꣳ शुन्धध्वन्देवयज्ज्यायै यत्। देवयज्ज्यायै यद्यद्देवयज्ज्यायै देवयज्ज्यायै यद्वो वो यद्देवयज्ज्यायै देवयज्ज्यायै यद्वः[1]। देवयज्ज्याया इति देव यज्ज्यायै। यद्वो वो यद्यद्वोशुद्धा अशुद्धा वो यद्यद्वोशुद्धाः। वोशुद्धा अशुद्धा वो वोशुद्धाः पराजग्घुः पराजग्घुरशुद्धा वो वोशुद्धाः पराजग्घुः। अशुद्धाः पराजग्घुः परा-जग्घुरशुद्धा अशुद्धाः पराजग्घुरिदमिदम्पराजग्घुरशुद्धा अशुद्धाः पराजग्घुरि-दम्। पराजग्घुरिदमिदम्पराजग्घुः पराजग्घुरिदँव्वो वऽ इदम्पराजग्घुः पराजग्घु-रिदँव्वः। पराजग्घुरिति परा जग्घुः। इदँव्वो वऽ इदमिदँव्वस्तत्तद्वऽ इदमिदँव्वस्तत्। व्वस्तत्तद्वो वस्तच्छुन्धामि शुन्धामि तद्वो वस्तच्छुन्धामि। तच्छुन्धामि शुन्धामि ततच्छुन्धामि। शुन्धामीति शुन्धामि॥१३॥

शर्म्मास्यसि शर्म्म शर्म्मास्यवधूतमवधूतमसि शर्म्म शर्म्मास्यवधूतम्। अस्यवधूतमवधूतमस्यस्यवधूतꣳ रक्षो रक्षोवधूतमस्यस्यवधूतꣳ रक्षः। अवधूतꣳ रक्षो रक्षोवधूतमवधूतꣳ रक्षोवधूता अवधूता रक्षोवधूत-मवधूतꣳ रक्षोवधूताः। अवधूतमित्यव धूतम्। रक्षोवधूता अवधूता रक्षो रक्षोवधूता अरातयोरातयोवधूता रक्षो रक्षोवधूता अरातयः। अवधूता

[1]. वो वान्ते त्वदर्थे(वा.प्रा.२.५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ वः पद अनुदात्त है।

अरातयोरातयोवधूताऽ अवधूताऽ अरातयोदित्याऽ अदित्याऽ अरातयोवधूताऽ अवधूताऽ अरातयोदित्याः। अवधूताऽ इत्यव धूताः। अरातयोदित्याऽ अदित्याऽ अरातयोरातयोदित्यास्त्वक्क्वगदित्याऽ अरातयोरातयोदित्यास्त्वक्। अदित्यास्त्वक्क्वगदित्याऽ अदित्यास्त्वगस्यसि त्वगदित्याऽ अदित्यास्त्वगसि। त्वगस्यसि त्वक्क्वगसि प्प्रति प्प्रत्यसि त्वक्क्वगसि प्प्रति। असि प्प्रति प्प्रत्यस्यसि प्प्रति त्वा त्वा प्प्रत्यस्यसि प्प्रति त्वा। प्रति त्वा त्वा प्प्रति प्प्रति त्वादितिरदितिस्त्वा प्प्रति प्प्रति त्वादितिः। त्वादितिरदितिस्त्वा त्वादितिर्व्वेत्तु व्वेत्त्वदितिस्त्वा त्वादितिर्व्वेत्तु। अदितिर्व्वेत्तु व्वेत्त्वदितिरदितिर्व्वेत्त्वद्रिरद्रिर्व्वेत्त्वदितिरदितिर्व्वेत्त्वद्रिः[1]। व्वेत्त्वद्रिरद्रिर्व्वेत्तु व्वेत्त्वद्रिरस्यस्यद्रिर्व्वेत्तु व्वेत्त्वद्रिरसि॥ अद्रिरस्यस्यद्रिरद्रिरसि व्वानस्प्पत्त्यो व्वानस्प्पत्त्योस्यद्रिरद्रिरसि व्वानस्प्पत्त्यः। असि व्वानस्प्पत्त्यो व्वानस्प्पत्त्योस्यसि व्वानस्प्पत्त्यो ग्ग्रावा ग्ग्रावा व्वानस्प्पत्त्योस्यसि व्वानस्प्पत्त्यो ग्ग्रावा। व्वानस्प्पत्त्यो ग्ग्रावा ग्ग्रावा व्वानस्प्पत्त्यो व्वानस्प्पत्त्यो ग्ग्रावास्यसि ग्ग्रावा व्वानस्प्पत्त्यो व्वानस्प्पत्त्यो ग्ग्रावासि। ग्रावास्यसि ग्ग्रावा ग्ग्रावासि पृथुबुद्ध्नः पृथुबुद्ध्नोसि ग्ग्रावा ग्ग्रावासि पृथुबुद्ध्नः[2]। असि पृथुबुद्ध्नः पृथुबुद्ध्नोस्यसि पृथुबुद्ध्नः प्प्रति प्प्रति पृथुबुद्ध्नोस्यसि पृथुबुद्ध्नः प्प्रति। पृथुबुद्ध्नः प्प्रति प्प्रति पृथुबुद्ध्नः पृथुबुद्ध्नः प्प्रति त्वा त्वा प्प्रति पृथुबुद्ध्नः पृथुबुद्ध्नः प्प्रति त्वा। पृथुबुद्ध्नऽ इति पृथु बुद्ध्नः। प्रति त्वा त्वा प्प्रति प्प्रति त्वादित्याऽ अदित्यास्त्वा प्प्रति प्प्रति त्वादित्याः। त्वादित्याऽ अदित्यास्त्वा त्वादित्यास्त्वक्क्वगदित्यास्त्वा त्वादित्यास्त्वक्। अदित्यास्त्वक्क्वगदित्याऽ अदित्यास्त्वग्ग्वेत्तु व्वेत्तु त्वगदित्याऽ

---

1. व्वेत्तु यहाँ वकार का उच्चारण गुरुवृत्ति से निर्दिष्ट है (या.शि.१५५) भाष्यकार अमरनाथ शास्त्री के अनुसार पादादि वकार का गुरुवृत्ति से सुस्पृष्ट उच्चारण होता है, सुस्पृष्टत्वेन उच्चारण में कालविलम्ब के प्रदर्शन हेतु सम्प्रदायविद् दो वकार लिखते हैं।

2. पृथुबुद्ध्नः यहाँ पर धकार की द्विरुक्ति दकार के साथ होगी। - पा. शि. १०७।

अदि॑त्यास्त्वग्ग्वे॑तु। त्वग्ग्वे॑तु ब्वे॑तु त्वक्क्वग्ग्वे॑त्त्वग्ग्नेरग्ग्नेर्ब्वे॑तु त्वक्क्वग्ग्वे॑त्त्वग्ग्नेः। ब्वेत्त्वग्ग्नेरग्ग्नेर्ब्वे॑तु ब्वेत्त्वग्ग्नेस्तनूस्तनूरग्ग्नेर्ब्वे॑तु ब्वेत्त्वग्ग्नेस्तनूः ॥१४॥

अग्ग्नेस्तनूस्तनूरग्ग्नेरग्ग्नेस्तनूरस्यसि तनूरग्ग्नेरग्ग्नेस्तनूरसि। तनूरस्यसि तनूस्तनूरसि ब्वाचो ब्वाचोसि तनूस्तनूरसि ब्वाचः। असि ब्वाचो ब्वाचोस्यसि ब्वाचो ब्विसर्ज्जनँब्विसर्ज्जनँब्वाचोस्यसि ब्वाचो ब्विसर्ज्जनम्[1]। ब्वाचो ब्विसर्ज्जनँब्विसर्ज्जनँब्वा-चो ब्वाचो ब्विसर्ज्जनन्देववीतये देववीतये ब्विसर्ज्जनँब्वाचो ब्वाचो ब्विसर्ज्जनन्देववीतये। ब्विसर्ज्जनन्देववीतये देववीतये ब्विसर्ज्जनँब्विसर्ज्जनन्देववीतये त्वा त्वा देववीतये ब्विसर्ज्जनँब्विसर्ज्जनन्देववीतये त्वा। ब्विसर्ज्जनमिति वि सर्ज्जनम्। देववीतये त्वा त्वा देववीतये देववीतये त्वा गृह्णामि गृह्णामि त्वा देववीतये देववीतये त्वा गृह्णामि[2]। देववीतयऽ इति देव ब्वीतये। त्वा गृह्णामि गृह्णामि त्वा त्वा गृह्णामि बृहद्ग्रावा बृहद्ग्रावा गृह्णामि त्वा त्वा गृह्णामि बृहद्ग्रावा। गृह्णामि बृहद्ग्रावा बृहद्ग्रावा गृह्णामि गृह्णामि बृहद्ग्रावास्यसि बृहद्ग्रावा गृह्णामि गृह्णामि बृहद्ग्रावासि। बृहद्ग्रावा-स्यसि बृहद्ग्रावा बृहद्ग्रावासि ब्वानस्प्पत्त्यो ब्वानस्प्पत्त्योसि बृहद्ग्रावा बृहद्ग्रावासि ब्वानस्प्पत्त्यः। बृहद्ग्रावेति बृहत् ग्रावा। असि ब्वानस्प्पत्त्यो ब्वानस्प्पत्त्योस्यसि ब्वानस्प्पत्त्यः स स ब्वानस्प्पत्त्योस्यसि ब्वानस्प्पत्त्यः सः[3]। ब्वानस्प्पत्त्यः स स ब्वानस्प्पत्त्यो ब्वानस्प्पत्त्यः सऽ इदमिदꣳ स ब्वानस्प्पत्त्यो ब्वानस्प्पत्त्यः सऽ इदम्। सऽ इदमिदꣳ स सऽ इदन्देवेब्भ्यो देवेब्भ्यऽ इदꣳ स सऽ इदन्देवेब्भ्यः। इदन्देवेब्भ्यो देवेब्भ्यऽ इदमिदन्देवेब्भ्यो हविर्हविर्द्देवेब्भ्यऽ इदमिदन्देवेब्भ्यो हविः। देवेब्भ्यो हविर्हविर्द्देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो हविः शमीष्ष्व शमिष्ष्व हविर्द्देवेब्भ्यो

---

1. ऋकाररेफारुदयश्च(वा.प्रा.३.८२) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनम् पद में सकार अविकृत रहता है।

2. गृह्णामि यहाँ ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) इस सूत्र से णकार का द्वित्व होता है। गृण्ण्हामि अथवा गृण्णहाँमि ऐसा उच्चारण उचित नहीं है। संयोग-पिण्ड मानने पर भी किसी न किसी वर्ण का उच्चारण पहले या बाद में करना होगा।

3. सः सः यहाँ पर (वा.प्रा.३.१६) के अनुसार व्यञ्जन परे होने पर सः का विसर्जनीय लुप्त होता है।

दे॒वेभ्य्यो॑ ह॒विः॒ शं॑मीष्ष्व। ह॒विः॒ शं॑मीष्ष्व शमिष्ष्व ह॒विर्ह॒विः॒ शं॑मीष्ष्व सु॒शमि॑
सु॒शमि॑ शमिष्ष्व ह॒विर्ह॒विः॒ शं॑मीष्ष्व सु॒शमि॑। श॒मी॒ष्ष्व॒ सु॒शमि॑ सु॒शमि॑ शमिष्ष्व
शमीष्ष्व सु॒शमि॑ शमीष्ष्व शमिष्ष्व सु॒शमि॑ शमिष्ष्व शमीष्ष्व सु॒शमि॑ शमीष्ष्व।
श॒मि॒ष्ष्वेति॑ शमिष्ष्व। सु॒शमि॑ शमीष्ष्व शमिष्ष्व सु॒शमि॑ सु॒शमि॑ शमीष्ष्व॒
हवि॑ष्कृ॒द्धवि॑÷कृच्छमिष्ष्व सु॒शमि॑ सु॒शमि॑ शमीष्ष्व॒ हवि॑ष्कृत्। सु॒शमीति॑ सु
शमि॑। श॒मी॒ष्ष्व॒ हवि॑ष्कृ॒द्धवि॑÷कृच्छमिष्ष्व शमीष्ष्व॒ हवि॑ष्कृ॒देही॒ह्या हवि॑÷कृ-
च्छमिष्ष्व शमीष्ष्व॒ हवि॑ष्कृ॒देहि॑। श॒मि॒ष्ष्वेति॑ शमिष्ष्व॥ हवि॑ष्कृ॒देही॒ह्या
हवि॑÷कृ॒द्धवि॑ष्कृ॒देहि॑ कु॒क्कु॒टः॒ कुं॑क्कुटऽ इ॒ह्या हवि॑÷कृ॒द्धवि॑ष्कृ॒देहि॑ कु॒क्कु॒टः॒।
हवि॑÷कृ॒दिति॒ हवि॑÷ कृत्। एहि॑। इ॒हि॒ कु॒क्कु॒टः॒ कुं॑क्कुटऽ इं॑हीहि कु॒क्कु॒टो॒स्यसि
कु॒क्कु॒टऽ इं॑हीहि कु॒क्कु॒टो॒सि॑[1] ॥१५॥

कु॒क्कु॒टो॒स्यसि कु॒क्कु॒टः॒ कुं॑क्कु॒टो॒सि॒ मधुं॑जिह्वो॒ मधुं॑जिह्वोसि कु॒क्कु॒टः॒ कुं॑क्कु-
टो॒सि॒ मधुं॑जिह्वः। अ॒सि॒ मधुं॑जिह्वो॒ मधुं॑जिह्वोस्यसि॒ मधुं॑जिह्व॒ऽ इष॒मिष॒म्मधुं॑जि-
ह्वोस्यसि॒ मधुं॑जिह्व॒ऽ इषं॑म्। मधुं॑जिह्व॒ऽ इष॒मिष॒म्मधुं॑जिह्वो॒ मधुं॑जिह्व॒ऽ इष॒मूर्ज्ज॒मू-
र्ज्ज॒मिष॒म्मधुं॑जिह्वो॒ मधुं॑जिह्व॒ऽ इष॒मूर्ज्जं॑म्। मधुं॑जिह्व॒ऽ इति॒ मधुं॑ जिह्वः। इष॒मूर्ज्ज॒-
मूर्ज्ज॒मिष॒मिष॒मूर्ज्ज॒मा वं॑द ब्व॒दोर्ज्ज॒मिष॒मिष॒मूर्ज्ज॒मा वं॑द। ऊर्ज्ज॒मा वं॑द ब्व॒दोर्ज्ज॒मू-
र्ज्ज॒मा वं॑द॒ त्वया॒ त्वया॑ ब्व॒दोर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मा वं॑द॒ त्वया॑। आ वं॑द। ब्व॒द॒ त्वया॒ त्वया॑ ब्वद
ब्वद॒ त्वया॑ ब्व॒यँब्व॒यन्त्वया॑ ब्वद ब्वद॒ त्वया॑ ब्व॒यम्। त्वया॑ ब्व॒यँब्व॒यन्त्वया॒ त्वया॑ ब्व॒यꣳ
सं॑ङ्घातꣳसङ्घातꣳ सङ्घा॒तꣳसङ्घा॒तँब्व॒यन्त्वया॒ त्वया॑ ब्व॒यꣳ सं॑ङ्घा॒तꣳसङ्घातम्।
ब्व॒यꣳ सं॑ङ्घा॒तꣳसङ्घातꣳ सङ्घा॒तꣳसङ्घा॒तँब्व॒यँब्व॒यꣳ सं॑ङ्घा॒तꣳसङ्घातञ्जेष्म्म जेष्म्म
सङ्घा॒तꣳसङ्घा॒तँब्व॒यँब्व॒यꣳ सं॑ङ्घा॒तꣳसङ्घातञ्जेष्म्म। स॒ङ्घा॒तꣳसङ्घातञ्जेष्म्म जेष्म्म
सङ्घा॒तꣳसङ्घातꣳ सङ्घा॒तꣳसं॑ङ्घातञ्जेष्म्म ब्व॒र्षवृं॑द्धँब्व॒र्षवृं॑द्धञ्जेष्म्म सङ्घा॒तꣳसङ्घातꣳ

[1]. कुक्कुटः कामलुब्धोऽपि ककारद्वयमुच्चरेत्। एवं वर्णाः प्रयोक्तव्याः कुक्कुटोऽसि निदर्शनम्॥ - या. शि. १८५।

सङ्घातꣳसंङ्घातञ्जेष्म्म ब्वृर्षवृंद्धम्[1]। सङ्घातꣳसंङ्घातमितिं सङ्घातम् संङ्घातम्। जेष्म्म् ब्वृर्षवृंद्धँब्वृर्षवृंद्धञ्जेष्म्म जेष्म्म ब्वृर्षवृंद्धमस्यसि ब्वृर्षवृंद्धञ्जेष्म्म जेष्म्म ब्वृर्षवृंद्धमसि। ब्वृर्षवृंद्धमस्यसि ब्वृर्षवृंद्धँब्वृर्षवृंद्धमसि प्प्रति प्प्रत्त्यंसि ब्वृर्षवृंद्धँब्वृर्षवृंद्धमसि प्प्रतिं। ब्वृर्षवृंद्धमितिं वृर्ष ब्वृंद्धम्। असि प्प्रति प्प्रत्त्यंस्यसि प्प्रतिं त्त्वा त्त्वा प्प्रत्त्यंस्यसि प्प्रतिं त्त्वा। प्रतिं त्त्वा त्त्वा प्प्रति प्प्रतिं त्त्वा ब्वृर्षवृंद्धँब्वृर्षवृंद्धन्त्वा प्प्रति प्प्रतिं त्त्वा ब्वृर्षवृंद्धम्। त्त्वा ब्वृर्षवृंद्धँब्वृर्षवृंद्धन्त्वा त्त्वा ब्वृर्षवृंद्धँब्वेत्तु ब्वेत्तु ब्वृर्षवृंद्धन्त्वा त्त्वा ब्वृर्षवृंद्धँब्वेत्तु[2]। ब्वृर्षवृंद्धँब्वेत्तु ब्वेत्तु ब्वृर्षवृंद्धँब्वृर्षवृंद्धँब्वेत्तु परांपूतम्परांपूतँब्वेत्तु ब्वृर्षवृंद्धँब्वृर्षवृंद्धँब्वेत्तु परांपूतम्। ब्वृर्षवृंद्धमितिं वृर्ष ब्वृंद्धम्। ब्वेत्तु परांपूतम्परांपूतँब्वेत्तु ब्वेत्तु परांपूतꣳ रक्क्षो रक्क्षः परांपूतँब्वेत्तु ब्वेत्तु परांपूतꣳ रक्क्षः। परांपूतꣳ रक्क्षो रक्क्षः परांपूतम्परांपूतꣳ रक्क्षः परांपूताः परांपूता रक्क्षः परांपूतम्परांपूतꣳ रक्क्षः परांपूताः। परांपूतमिति परां पूतम्। रक्क्षः परांपूताः परांपूता रक्क्षो रक्क्षः परांपूताऽ अरांतयोरांतयः परांपूता रक्क्षो रक्क्षः परांपूताऽ अरांतयः। परांपूताऽ अरांतयोरांतयः परांपूताः परांपूताऽ अरांतयोपंहतमपंहतमरांतयः परांपूताः परांपूताऽ अरांतयोपंहतम्। परांपूताऽ इति परां पूताः। अरांतयोपंहतमपंहतमरांतयोरांतयोपंहतꣳ रक्क्षो रक्क्षोपंहतमरांतयोरांतयोपंहतꣳ रक्क्षः। अपंहतꣳ रक्क्षो रक्क्षोपंहतमपंहतꣳ रक्क्षों ब्वायुर्ब्वायू रक्क्षोपंहतमपंहतꣳ रक्क्षों ब्वायुः[3]।अपंहतमित्त्यपं हतम्। रक्क्षों ब्वायुर्ब्वायू रक्क्षो रक्क्षों ब्वायुर्ब्वों वो ब्वायू रक्क्षो रक्क्षों ब्वायुर्ब्वः। ब्वायुर्ब्वों वो ब्वायुर्ब्वायुर्ब्वों ब्वि वि वों ब्वायुर्ब्वायुर्ब्वों ब्वि। ब्वो ब्वि वि वों वो ब्वि विंनक्क्तु ब्विनक्क्तु ब्वि वों वो ब्वि विंनक्क्तु। ब्वि विंनक्क्तु ब्विनक्क्तु ब्वि वि विंनक्क्तु देवो देवो ब्विंनक्क्तु ब्वि वि विंनक्क्तु

1. रलावृलृवर्णाभ्यामूष्मणि स्वरोदये सर्वत्र (वा.प्रा.४.१५) इस सूत्र के अनुसार वर्षवृद्धम् यहाँ रेफ ऋ के सदृश उच्चरित होता है (एकारघटित पाठ होता है)।

2. द्विस्पर्शम्(वा.प्रा.६.२५) इस अधिकार-सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र ६.२६. के अनुसार वेत्तु इस पद में दो स्पर्श त हैं।

3. विष्णुर्वायुस्तथा वह्निर्वरुणस्य विषूचिका। वसोर्विभाति विश्वस्य ह्यष्टौ दन्त्याः प्रकीर्तिताः ॥– अ. शि. १६।

देवः। विनक्तु देवो देवो विनक्तु विनक्तु देवो वो वो देवो विनक्तु विनक्तु देवो वः। देवो वो वो देवो देवो वः सविता सविता वो देवो देवो वः सविता। वः सविता सविता वो वः सविता हिरण्यपाणिर्हिरण्यपाणिः सविता वो वः सविता हिरण्यपाणिः। सविता हिरण्यपाणिर्हिरण्यपाणिः सविता सविता हिरण्यपाणिः प्रति प्रति हिरण्यपाणिः सविता सविता हिरण्यपाणिः प्रति। हिरण्यपाणिः प्रति प्रति हिरण्यपाणिर्हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णातु गृभ्णातु प्रति हिरण्यपाणिर्हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णातु। हिरण्यपाणिरिति हिरण्य पाणिः। प्रति गृभ्णातु गृभ्णातु प्रति प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेणाच्छिद्रेण गृभ्णातु प्रति प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण। गृभ्णात्वच्छिद्रेणाच्छिद्रेण गृभ्णातु गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना पाणिनाच्छिद्रेण गृभ्णातु गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना। अच्छिद्रेण पाणिना पाणिनाच्छिद्रेणाच्छिद्रेण पाणिना। पाणिनेति पाणिना॥१६॥

धृष्टिरस्यसि धृष्टिर्धृष्टिरस्यपापासि धृष्टिर्धृष्टिरस्यप। अस्यपापास्यस्यपाग्नेग्नेपास्यस्यपाग्ने। अपाग्नेग्नेपापाग्नेऽ अग्निमग्निमग्नेपापाग्नेऽ अग्निम्[1]। अग्नेऽ अग्निमग्निमग्नेग्नेऽ अग्निमामादमामादमग्निमग्नेग्नेऽ अग्निमामादम्। अग्निमामादमामादमग्निमग्निमामादञ्जहि जह्यामादमग्निमग्निमामादञ्जहि। आमादञ्जहि जह्यामादमामादञ्जहि निर्निर्जह्यामादमामादञ्जहि निः। आमादमित्याम् अदम्। जहि निर्निर्जहि जहि निष्क्रव्यादङ्क्रव्यादन्निर्जहि जहि निष्क्रव्यादम्[2]। निष्क्रव्यादङ्क्रव्यादन्निर्निष्क्रव्यादः सेध सेध क्रव्यादन्निर्निष्क्रव्यादः सेध। क्रव्यादः सेध सेध क्रव्यादङ्क्रव्यादः सेधा देवयजन्देवयजमा सेध क्रव्या-

1. अग्नेऽ अग्निम् यहाँ पर अकार परे रहते एकार का प्रकृति भाव हुआ है। वा. प्रा. ४.८५।

2. क तथा प के संयोग में क्ष का उच्चारण होता है, विपरीत(ष,क) के संयोग में ऐसा उच्चारण नहीं होगा।

दृङ्ह्यादृंह॰ सेधा देवयजम्। क्रव्यादमितिं क्रव्य अदम्। सेधा देवयजन्देवयज-
मा सेध सेधा देवयजँवह वह देवयजमा सेध सेधा देवयजँवह। आ देवयजम्।
देवयजँवह वह देवयजन्देवयजँवह ध्रुवन्ध्रुवँवह देवयजन्देवयजँवह ध्रुवम्। देवय-
जमितिं देव यजम्। वह ध्रुवन्ध्रुवँवह वह ध्रुवमस्यसि ध्रुवँवह वह ध्रुवमसि[1]॥
ध्रुवमस्यसि ध्रुवन्ध्रुवमसि पृथिवीम्पृथिवीमसि ध्रुवन्ध्रुवमसि पृथिवीम्। असि
पृथिवीम्पृथिवीमस्यसि पृथिवीन्दृंह॰ह दृंह॰ह पृथिवीमस्यसि पृथिवीन्दृंह॰ह। पृथि-
वीन्दृंह॰ह दृंह॰ह पृथिवीम्पृथिवीन्दृंह॰ह ब्रह्मवनिं ब्रह्मवनिं दृंह॰ह पृथिवीम्पृथिवी-
न्दृंह॰ह ब्रह्मवनिं। दृंह॰ह ब्रह्मवनिं ब्रह्मवनिं दृंह॰ह दृंह॰ह ब्रह्मवनिं त्वा त्वा ब्रह्मवनिं
दृंह॰ह दृंह॰ह ब्रह्मवनिं त्वा। ब्रह्मवनिं त्वा त्वा ब्रह्मवनिं ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं
क्षत्रवनिं त्वा ब्रह्मवनिं ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं। ब्रह्मवनीतिं ब्रह्म वनिं। त्वा
क्षत्रवनिं क्षत्रवनिं त्वा त्वा क्षत्रवनिं सजातवनिं सजातवनिं क्षत्रवनिं त्वा
त्वा क्षत्रवनिं सजातवनिं। क्षत्रवनिं सजातवनिं सजातवनिं क्षत्रवनिं क्षत्रव-
निं सजातवन्युपोप सजातवनिं क्षत्रवनिं क्षत्रवनिं सजातवन्युप। क्षत्रवनीतिं
क्षत्र वनिं। सजातवन्युपोप सजातवनिं सजातवन्युप दधामि दधाम्म्युप
सजातवनिं सजातवन्युप दधामि। सजातवनीतिं सजात वनिं। उप दधामि
दधाम्म्युपोप दधामि भ्रातृव्यस्य भ्रातृव्यस्य दधाम्म्युपोप दधामि भ्रातृव्यस्य
। दधामि भ्रातृव्यस्य भ्रातृव्यस्य दधामि दधामि भ्रातृव्यस्य वधाय वधाय
भ्रातृव्यस्य दधामि दधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। भ्रातृव्यस्य वधाय वधाय
भ्रातृव्यस्य भ्रातृव्यस्य वधायाग्नेग्ने वधाय भ्रातृव्यस्य भ्रातृव्यस्य वधाया-
ग्ने। वधायाग्नेग्ने वधाय वधायाग्ने ब्रह्म ब्रह्माग्ने वधाय वधायाग्ने ब्रह्म॥१७॥

[1]. वा.प्रा.२.८ के अनुसार यहाँ असि पद अनुदात है।

अग्ग्ने ब्रह्म ब्रह्माग्ग्नेग्ग्ने ब्रह्म गृभ्भ्णीष्ष्व गृभ्भ्णीष्ष्व ब्रह्माग्ग्नेग्ग्ने ब्रह्म गृभ्भ्णीष्ष्व[1]। ब्रह्म गृभ्भ्णीष्ष्व गृभ्भ्णीष्ष्व ब्रह्म ब्रह्म गृभ्भ्णीष्ष्व धुरुणन्धुरुणङ्गृभ्भ्णीष्ष्व ब्रह्म ब्रह्म गृभ्भ्णीष्ष्व धुरुणम्। गृभ्भ्णीष्ष्व धुरुणन्धुरुणङ्गृभ्भ्णीष्ष्व गृभ्भ्णीष्ष्व धुरुणमुन्तरिक्क्षमुन्तरिक्क्षन्धुरुणङ्गृभ्भ्णीष्ष्व गृभ्भ्णीष्ष्व धुरुणमुन्तरिक्क्षम्। धुरुणमुन्तरिक्क्षमुन्तरिक्क्षन्धुरुणन्धुरुणमुन्तरिक्क्षन्धुर्त्रन्धुर्त्रमुन्तरिक्क्षन्धुरुणन्धुरुणमुन्तरिक्क्षन्धुर्त्रम्। अुन्तरिक्क्षन्धुर्त्रन्धुर्त्रमुन्तरिक्क्षमुन्तरिक्क्षन्धुर्त्रन्दिवुन्दिवन्धुर्त्रमुन्तरिक्क्षमुन्तरिक्क्षन्धुर्त्रन्दिवम्॥ धुर्त्रन्दिवुन्दिवन्धुर्त्रन्धुर्त्रन्दिवँव्विश्श्वाब्भ्यो व्विश्श्वाब्भ्यो दिवन्धुर्त्रन्धुर्त्रन्दिवँव्विश्श्वाब्भ्यः। दिवँव्विश्श्वाब्भ्यो व्विश्श्वाब्भ्यो दिवुन्दिवँव्विश्श्वाब्भ्यस्त्वा त्वा व्विश्श्वाब्भ्यो दिवुन्दिवँव्विश्श्वाब्भ्यस्त्वा॥ व्विश्श्वाब्भ्यस्त्वा त्वा व्विश्श्वाब्भ्यो व्विश्श्वाब्भ्युस्त्वाशाब्भ्युऽ आशाब्भ्यस्त्वा व्विश्श्वाब्भ्यो व्विश्श्वाब्भ्युस्त्वाशाब्भ्यः। त्वाशाब्भ्युऽ आशाब्भ्यस्त्वा त्वाशाब्भ्युऽ उपोपाशाब्भ्यस्त्वा त्वाशाब्भ्युऽ उप। आशाब्भ्युऽ उपोपाशाब्भ्युऽ आशाब्भ्युऽ उप दधामि दधाम्म्युपाशाब्भ्युऽ आशाब्भ्युऽ उप दधामि । उप दधामि दधाम्म्युपोप दधामि चितुश्चितो दधाम्म्युपोप दधामि चितः। दुधामि चितुश्चितो दधामि दधामि चित स्त्थ स्त्थ चितो दधामि दधामि चित स्त्थ। चित स्त्थ स्त्थ चितुश्चित स्त्थोर्द्धचितऽ ऊर्द्धचित स्त्थ चितुश्चित स्त्थोर्द्धचितः। स्थोर्द्धचितऽ ऊर्द्धचित स्त्थ स्त्थोर्द्धचितो भृगूणाम्भृगूणामूर्द्धचित स्त्थ स्त्थोर्द्धचितो भृगूणाम् । ऊर्द्धचितो भृगूणाम्भृगूणामूर्द्धचितऽ ऊर्द्धचितो भृगूणामङ्गिरसामङ्गिरसाम्भृगूणामूर्द्धचितऽ ऊर्द्धचितो भृगूणामङ्गिरसाम्। ऊर्द्धचितुऽ इत्यूर्द्ध चितः। भृगूणामङ्गिरसामङ्गिरसाम्भृगूणाम्भृगूणा-

[1]. वा.प्रा.२.२४. के अनुसार यहाँ अग्ने पद आद्युदात है।

मङ्गिरसा॒न्तप॑सा॒ तप॒साङ्गि॑रसा॒म्भृगू॑णा॒म्भृगू॑णा॒मङ्गि॑रसा॒न्तप॑सा[1]। अङ्गि॑रसा॒न्तप॑सा॒ तप॒साङ्गि॑रसा॒मङ्गि॑रसा॒न्तप॑सा तप्प्य॑द्धन्तप्प्य॑द्धन्तप॒साङ्गि॑रसा॒मङ्गि॑रसा॒न्तप॑सा तप्प्य॑द्धम्। तप॑सा तप्प्य॑द्धन्तप्प्य॑द्धन्तप॑सा॒ तप॑सा तप्प्य॑द्धम्। त॒प्प्य॒द्धमिति॑ तप्प्य॑द्धम्॥१८॥

धि॒षणा॑स्यसि धि॒षणा॑ धि॒षणा॑सि पर्ब्व॒ती पर्ब्व॒त्य॒सि धि॒षणा॑ धि॒षणा॑सि पर्ब्व॒ती। अ॒सि॒ प॒र्ब्व॒ती पर्ब्व॒त्य॒स्यसि पर्ब्व॒ती प्प्रति॒ प्प्रति॑ पर्ब्व॒त्य॒स्यसि[2] पर्ब्व॒ती प्प्रति॑। प॒र्ब्व॒ती प्प्रति॒ प्प्रति॑ पर्ब्व॒ती पर्ब्व॒ती प्प्रति॑ त्वा त्वा॒ प्प्रति॑ पर्ब्व॒ती पर्ब्व॒ती प्प्रति॑ त्वा। प्रति॑ त्वा त्वा॒ प्प्रति॒ प्प्रति॒ त्वादि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्यास्त्वा॒ प्प्रति॒ प्प्रति॒ त्वादि॑त्त्याः। त्वादि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्यास्त्वा॒ त्वादि॑त्त्या॒स्त्वक्क्वगदि॑त्त्यास्त्वा॒ त्वादि॑त्त्या॒स्त्वक्। अदि॑त्त्या॒स्त्वक्क्वगदि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्या॒स्त्वग्ग्वे॑तु व्वे॒तु त्वगदि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्या॒स्त्वग्ग्वे॑तु। त्वग्ग्वे॑तु व्वे॒तु त्वक्क्वग्ग्वे॑तु दि॒वो दि॒वो व्वे॑तु त्वक्क्वग्ग्वे॑तु दि॒वः। व्वे॒तु दि॒वो दि॒वो व्वे॑तु व्वे॒तु दि॒व स्कम्भ॒नी स्क॑म्भ॒नीर्द्दि॒वो व्वे॑तु व्वे॒तु दि॒व स्क॑म्भ॒नीः। दि॒व स्क॑म्भ॒नी स्क॑म्भ॒नीर्द्दि॒वो दि॒व स्क॑म्भ॒नीर॑स्यसि स्कम्भ॒नीर्द्दि॒वो दि॒व स्क॑म्भ॒नीर॑सि। स्क॒म्भ॒नीर॑स्यसि स्कम्भ॒नी स्क॑म्भ॒नीर॑सि धि॒षणा॑ धि॒षणा॑सि स्कम्भ॒नी स्क॑म्भ॒नीर॑सि धि॒षणा॑। अ॒सि॒ धि॒षणा॑ धि॒षणा॑स्यसि धि॒षणा॑स्यसि धि॒षणा॑स्यसि धि॒षणा॑सि । धि॒षणा॑स्यसि धि॒षणा॑ धि॒षणा॑सि पार्ब्वते॒यी पार्ब्वते॒य्य॒सि धि॒षणा॑ धि॒षणा॑सि पार्ब्वते॒यी। अ॒सि॒ पा॒र्ब्व॒ते॒यी पार्ब्वते॒य्य॒स्यसि पार्ब्वते॒यी प्प्रति॒ प्प्रति॑ पार्ब्वते॒य्य॒स्यसि पार्ब्वते॒यी प्प्रति॑। पा॒र्ब्व॒ते॒यी प्प्रति॒ प्प्रति॑ पार्ब्वते॒यी पार्ब्वते॒यी प्प्रति॑ त्वा त्वा॒ प्प्रति॑ पार्ब्वते॒यी पार्ब्वते॒यी प्प्रति॑ त्वा। प्रति॑ त्वा त्वा॒ प्प्रति॒

[1]. अङ्गिरसाम् तपसा यहाँ स्पर्शे परपञ्चमम् (वा.प्रा.४.१२) इस सूत्र से स्पर्श-वर्ण बाद में होने पर मकार परवर्ती-स्पर्श का पञ्चम-वर्ण होता है।

[2]. पु॒र्ब्व॒ती अ॒सि॒ यहाँ वा. प्रा. १.११५. के अनुसार पु॒र्ब्व॒त्यु॒सि ऐसा क्षेप्र स्वर निर्दिष्ट है।

प्प्रतिं त्वा पर्व्वती पंर्व्वती त्वा प्प्रति प्प्रतिं त्वा पर्व्वती। त्वा पर्व्वती पंर्व्वती त्वां त्वा पर्व्वती व्वेंतु व्वेतु पर्व्वती त्वां त्वा पर्व्वती व्वेंतु। पर्व्वती व्वेंतु व्वेतु पर्व्वती पंर्व्वती व्वेंतु धान्न्यन्धान्न्यँव्वेतु पर्व्वती पंर्व्वती व्वेंतु धान्न्यम्[1]। व्वेतु धान्न्यन्धान्न्यँव्वेतु व्वेतु धान्न्यमस्यसि धान्न्यँव्वेतु व्वेतु धान्न्यमसि॥१९॥

धान्न्यमस्यसि धान्न्यन्धान्न्यमसि धिनुहि धिंनुह्यसि धान्न्यन्धान्न्यमसि धिनुहि। असि धिनुहि धिंनुह्यस्यसि धिनुहि देवान्देवान्धिंनुह्यस्यसि धिनुहि देवान्। धिनुहि देवान्देवान्धिंनुहि धिंनुहि देवान्प्राणायं प्प्राणायं देवान्धिंनुहि धिंनुहि देवान्प्राणायं। देवान्प्राणायं प्प्राणायं देवान्देवान्प्राणायं त्वा त्वा प्प्राणायं देवान्देवान्प्राणायं त्वा। प्राणायं त्वा त्वा प्प्राणायं प्प्राणायं त्वोदानायोंदानायं त्वा प्प्राणायं प्प्राणायं त्वोदानायं। त्वोदानायोंदानायं त्वा त्वोदानायं व्व्यानायं व्व्यानायोंदानायं त्वा त्वोदानायं व्व्यानायं। उदानायं व्व्यानायं व्व्यानायोंदानायों-दानायं व्व्यानायं दीर्ग्घान्दीर्ग्घांव्व्यानायोंदानायोंदानायं व्व्यानायं दीर्ग्घाम्। उदानायेत्युंत् आनायं। व्व्यानायं दीर्ग्घान्दीर्ग्घांव्व्यानायं व्व्यानायं दीर्ग्घामन्न्वनुं दीर्ग्घांव्व्यानायं व्व्यानायं दीर्ग्घामनुं। व्व्यानायेतिं वि आनायं॥ दीर्ग्घामन्न्वनुं दीर्ग्घान्दीर्ग्घामनु प्प्रसिंतिम्प्रसिंतिमनुं दीर्ग्घान्दीर्ग्घामनु प्प्रसिंतिम्[2]। अनु प्प्रसिंतिम्प्रसिंतिमन्न्वनु प्प्रसिंतिमायुंषऽ आयुंषे प्प्रसिंतिमन्न्वनु प्प्रसिंतिमायुंषे। प्रसिंतिमायुंषऽ आयुंषे प्प्रसिंतिम्प्रसिंतिमायुंषे धान्धामायुंषे प्प्रसिंतिम्प्रसिंति-मायुंषे धाम्। प्रसिंतिमिति प्प्र सिंतिम्। आयुंषे धान्धामायुंषऽ आयुंषे धाञ्चक्क्षुंषे चक्क्षुंषे धामायुंषऽ आयुंषे धाञ्चक्क्षुंषे। धाञ्चक्क्षुंषे चक्क्षुंषे धान्धाञ्चक्क्षुंषे त्वा त्वा चक्क्षुंषे धान्धाञ्चक्क्षुंषे त्वा। चक्क्षुंषे त्वा त्वा चक्क्षुंषे चक्क्षुंषे त्वा महीनां-

---

1. धान्न्यम् इस पद में अनुदात्तपूर्व एवं यकार से युक्त स्वर जात्य-संज्ञक स्वरित है। वा. प्रा. १.१११

2. वा.प्रा.६.८. के अनुसार प्रसितिम् पद बाद में होने पर अनु पद अनुदात्त नहीं होता है।

म्महीनान्त्वा चक्षुषे चक्षुषे त्वा महीनाम्। त्वा महीनाम्महीनान्त्वा त्वा महीनाम्पयः पयो महीनान्त्वा त्वा महीनाम्पयः। महीनाम्पयः पयो महीनाम्महीनाम्पयोस्यसि पयो महीनाम्महीनाम्पयोसि[1]। पयोस्यसि पयः पयोसि। असीत्यसि॥२०॥

सँव्वपामि व्वपामि सछ सँव्वपाम्म्याप ऽ आपो व्वपामि सछ सँव्वपाम्म्यापः। व्वपाम्म्याप ऽ आपो व्वपामि व्वपाम्म्याप ऽ ओषधीभिरोषधीभिरापो व्वपामि व्वपाम्म्याप ऽ ओषधीभिः। आप ऽ ओषधीभिरोषधीभिराप ऽ आप ऽ ओषधीभिरोषधय ऽ ओषधय ऽ ओषधीभिराप ऽ आप ऽ ओषधीभिरोषधयः। ओषधीभिरोषधय ऽ ओषधय ऽ ओषधीभिरोषधीभिरोषधयो रसेन रसेनौषधय ऽ ओषधीभिरोषधीभिरोषधयो रसेन। ओषधयो रसेन रसेनौषधय ऽ ओषधयो रसेन रेवती रेवती रसेनौषधय ऽ ओषधयो रसेन रेवतीः। रसेन रेवती रेवती रसेन रसेन रेवतीर्ज्जगतीभिर्ज्जगतीभी रेवती रसेन रसेन रेवतीर्ज्जगतीभिः॥ रेवतीर्ज्जगतीभिर्ज्जगतीभी रेवती रेवतीर्ज्जगतीभिः पृच्यन्ताम्पृच्यन्ताञ्जगतीभी रेवती रेवतीर्ज्जगतीभिः पृच्यन्ताम्। जगतीभिः पृच्यन्ताम्पृच्यन्ताञ्जगतीभिर्ज्जगतीभिः पृच्यन्ताम्मधुमतीर्म्मधुमतीः पृच्यन्ताञ्जगतीभिर्ज्जगतीभिः पृच्यन्ताम्मधुमतीः। पृच्यन्ताम्मधुमतीर्म्मधुमतीः पृच्यन्ताम्पृच्यन्ताम्मधुमतीर्म्मधुमतीभिर्म्मधुमतीभिर्म्मधुमतीः पृच्यन्ताम्पृच्यन्ताम्मधुमतीर्म्मधुमतीभिः। मधुमतीर्म्मधुमतीभिर्म्मधुमतीभिर्म्मधुमतीर्म्मधुमतीर्म्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्पृच्यन्ताम्मधुमतीभिर्म्मधुमतीर्म्मधुमतीर्म्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्। मधुमतीरिति मधु मतीः[2]। मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्पृच्यन्ताम्मधुमतीभिर्म्मधुमतीभिः पृच्यन्ताञ्जनयत्यै जनयत्यै पृच्यन्ताम्मधुमतीभिर्म्मधुमतीभिः पृच्यन्ताञ्ज-

[1]. पयः असि यहाँ वा.प्रा.४.८०. के अनुसार अकार का अभिनिधान होता है।

नयत्यै। मधुमतीभिरिति मधु मतीभिः। पृच्यन्ताञ्जनयत्यै जनयत्यै पृच्यन्ताम्पृच्यन्ताञ्जनयत्यै त्वा त्वा जनयत्यै पृच्यन्ताम्पृच्यन्ताञ्जनयत्यै त्वा॥२१॥

जनयत्यै त्वा त्वा जनयत्यै जनयत्यै त्वा सꣳ सन्त्वा जनयत्यै जनयत्यै त्वा सम्। त्वा सꣳ सन्त्वा त्वा सँय्यौमि यौमि सन्त्वा त्वा सँय्यौमि[1]। सँय्यौमि यौमि सꣳ सँय्यौमीदमिदँय्यौमि सꣳ सँय्यौमीदम्। यौमीदमिदँय्यौमि यौमीदमग्ग्नेरग्ग्नेरिदँय्यौमि यौमीदमग्ग्नेः। इदमग्ग्नेरग्ग्नेरिदमिदमग्ग्नेरिदमिदमग्ग्नेरिदमिदमग्ग्नेरिदम्। अग्ग्नेरिदमिदमग्ग्नेरग्ग्नेरिदमग्ग्नीषोमयोरग्ग्नीषोमयोरिदमग्ग्नेरग्ग्नेरिदमग्ग्नीषोमयोः। इदमग्ग्नीषोमयोरग्ग्नीषोमयोरिदमिदमग्ग्नीषोमयोरिषऽ इषेग्ग्नीषोमयोरिदमिदमग्ग्नीषोमयोरिषे। अग्ग्नीषोमयोरिषऽ इषेग्ग्नीषोमयोरग्ग्नीषोमयोरिषे त्वा त्वेषेग्ग्नीषोमयोरग्ग्नीषोमयोरिषे त्वा। इषे त्वा त्वेषऽ इषे त्वा घर्म्मो घर्म्मस्त्वेषऽ इषे त्वा घर्म्मः। त्वा घर्म्मो घर्म्मस्त्वा त्वा घर्म्मोस्यसि घर्म्मस्त्वा त्वा घर्म्मोसि। घर्म्मोस्यसि घर्म्मो घर्म्मोसि व्विश्वायुर्व्विश्वायुरसि घर्म्मो घर्म्मोसि व्विश्वायुः। असि व्विश्वायुर्व्विश्वायुरस्यसि व्विश्वायुरुरुप्प्रथाऽ उरुप्प्रथा व्विश्वायुरस्यसि व्विश्वायुरुरुप्प्रथाः। व्विश्वायुरुरुप्प्रथाऽ उरुप्प्रथा व्विश्वायुर्व्विश्वायुरुरुप्प्रथाऽ उरूरुरुप्प्रथा व्विश्वायुर्व्विश्वायुरुरुप्प्रथाऽ उरु। व्विश्वायुरिति विश्व आयुः। उरुप्प्रथाऽ उरूरुरुप्प्रथाऽ उरुप्प्रथाऽ उरु प्प्रथस्व प्प्रथस्वोरूरुप्प्रथाऽ उरुप्प्रथाऽ उरु प्प्रथस्व। उरुप्प्रथाऽ इत्युरु प्रथाः। उरु प्प्रथस्व प्प्रथस्वोरूरु प्प्रथस्वोरूरु प्प्रथस्वोरूरु प्प्रथस्वोरु। प्रथस्वोरूरु प्प्रथस्व

---

[2]. संहितावदवग्रहः स्वरविधौ परं च सर्वं चेदनुदात्तम् (वा. प्रा. १.१४८) सावग्रह पद का पूर्वपद संहिता के समान स्वर प्राप्त करता है एवं उत्तर पद भी संहिता के समान स्वर प्राप्त करता है., यदि उत्तर पद सर्वानुदात्त हो जैसे मधुमतीः यहां मतीः सर्वानुदात्त है।

[1]. सम् यौमि यहां वा.प्रा.४.१०. के अनुसार मकार अनुनासिक यकार होता है। सवर्णे(वा.प्रा.४.११२) के द्वारा जो द्वित्व का निषेध है, वह तृतीय यकार के लिये है। परसवर्णेषत्प्रकृत्या चान्यत्र (प्र.प्र.३.३) इस सूत्र से अनुस्वार परसवर्णभाव से रहता है यहा कहा गया है। अनुनासिक होना यकार का धर्म है अनुनासिक पृथक् वर्ण नहीं है। अतः दो यकार होने की स्थिति में षकारोच्चारण होगा।

प्प्रथस्वोरु तें तऽ उरु प्प्रथस्व प्प्रथस्वोरु तें। उरु तें तऽ उरूरु तें
य्यज्ञपतिर्य्यज्ञपतिस्तऽ उरूरु तें य्यज्ञपतिः। ते य्यज्ञपतिर्य्यज्ञपतिस्ते ते
य्यज्ञपतिः प्प्रथताम्प्रथताँऽय्यज्ञपतिस्ते ते य्यज्ञपतिः प्प्रथताम्। य्यज्ञपतिः
प्प्रथताम्प्रथताँऽय्यज्ञपतिर्य्यज्ञपतिः प्प्रथतामग्निरग्निः प्प्रथताँऽय्यज्ञपति-
र्य्यज्ञपतिः प्प्रथतामग्निः। य्यज्ञपतिरिति यज्ञ पतिः। प्रथतामग्निरग्निः
प्प्रथताम्प्रथतामग्निष्टे तेग्निः प्प्रथताम्प्रथतामग्निष्टे[1]। अग्निष्टे तेग्निरग्निष्टे
त्वचन्त्वचन्तेग्निरग्निष्टे त्वचम्। ते त्वचन्त्वचन्ते ते त्वचम्मा मा त्वचन्ते ते
त्वचम्मा। त्वचम्मा मा त्वचन्त्वचम्मा हिंꣳसीद्धिꣳसीन्मा त्वचन्त्वचम्मा
हिंꣳसीत्। मा हिंꣳसीद्धिꣳसीन्मा मा हिंꣳसीद्देवो देवो हिंꣳसीन्मा मा
हिंꣳसीद्देवः। हिꣳसीद्देवो देवो हिंꣳसीद्धिꣳसीद्देवस्त्वा त्वा देवो हिंꣳसीद्धिꣳ-
सीद्देवस्त्वा। देवस्त्वा त्वा देवो देवस्त्वा सविता सविता त्वा देवो देवस्त्वा
सविता[2]। त्वा सविता सविता त्वा त्वा सविता श्श्रपयतु श्श्रपयतु सविता त्वा त्वा
सविता श्श्रपयतु। सविता श्श्रपयतु श्श्रपयतु सविता सविता श्श्रपयतु व्वर्षिष्ठे व्वर्षिष्ठे
श्श्रपयतु सविता सविता श्श्रपयतु व्वर्षिष्ठे। श्रपयतु व्वर्षिष्ठे व्वर्षिष्ठे श्श्रपयतु श्श्रपयतु
व्वर्षिष्ठेद्ध्यधि वर्षिष्ठे श्श्रपयतु श्श्रपयतु व्वर्षिष्ठेधि। व्वर्षिष्ठेद्ध्यधि वर्षिष्ठे व्वर्षिष्ठेधि नाके
नाकेधि वर्षिष्ठे व्वर्षिष्ठेधि नाके। अधि नाके नाकेद्ध्यधि नाके। नाकऽ इति नाके
॥२२॥

1. अग्निः ते यहाँ वायुरग्निरग्नेरेकाक्षरे(वा.प्रा.३.७६) इस सूत्र से अग्निः पद से बाद में एकाक्षर पद होने से विसर्जनीय सकार षकार होता है।

2. त्वा च (वा. प्रा. २.६) इस सूत्र के अनुसार त्वा पद अनुदात्त होता है।

मा भेर्भेर्म्मा मा भेर्म्मा मा भेर्म्मा मा भेर्म्मा।[1] भेर्म्मा मा भेर्भेर्म्मा सङ्क्ष सम्मा भेर्भेर्म्मा सम्। मा सङ्क्ष सम्मा मा सँव्विक्क्था व्विक्क्थाः सम्मा मा सँव्विक्क्थाः। सँव्विक्क्था व्विक्क्थाः सङ्क्ष सँव्विक्क्थाऽ अतंमेरुरतंमेरुर्व्विक्क्थाः सङ्क्ष सँव्विक्क्थाऽ अतंमेरुः। व्विक्क्थाऽ अतंमेरुरतंमेरुर्व्विक्क्था व्विक्क्थाऽ अतंमेरुर्य्युज्ज्ञो युज्ज्ञोतंमेरुर्व्विक्क्था व्विक्क्थाऽ अतंमेरुर्य्युज्ज्ञः। अतंमेरुर्य्युज्ज्ञो युज्ज्ञोतंमेरुरतं मेरुर्य्युज्ज्ञोतं मेरुरतं मेरुर्य्युज्ज्ञोतंमेरुरतं मेरुर्य्युज्ज्ञोतंमेरुः। युज्ज्ञोतंमेरुरतं मेरुर्य्युज्ज्ञो युज्ज्ञोतंमेरुर्य्यजंमानस्य यजंमानस्यातं मेरुर्य्युज्ज्ञो युज्ज्ञोतं मेरुर्य्यजंमानस्य। अतंमेरुर्य्यजंमानस्य यजंमानस्यातंमेरुरतंमेरुर्य्यजंमानस्य प्प्रजा प्प्रजा यजंमानस्यातंमेरुरतंमेरुर्य्यजंमानस्य प्प्रजा। यजंमानस्य प्प्रजा प्प्रजा यजंमानस्य यजंमानस्य प्प्रजा भूंयाद्भूयात्प्रजा यजंमानस्य यजंमानस्य प्प्रजा भूंयात्। प्रजा भूंयाद् भूयात्प्रजा प्प्रजा भूंयात्त्रितायं त्रितायं भूयात्प्रजा प्प्रजा भूंयात्त्रितायं। प्रजेतिं प्प्र जा। भूयात्त्रितायं त्रितायं भूयाद् भूयात्त्रितायं त्वा त्वा त्रितायं भूयाद् भूयात्त्रितायं त्वा। त्रितायं त्वा त्वा त्रितायं त्रितायं त्वा द्वितायं द्वितायं त्वा त्रितायं त्रितायं त्वा द्वितायं। त्वा द्वितायं द्वितायं त्वा त्वा द्वितायैकुतायैकुतायं द्वितायं त्वा त्वा द्वितायैकुतायं। द्वितायैकुतायैकुतायं द्वितायं द्वितायैकुतायं। एकुतायेत्येकुतायं॥२३॥

आ ददे ददऽ आ ददेद्ध्वरकृतंमद्ध्वरकृतन्ददऽ आ ददेद्ध्वरकृतंम्। ददेद्ध्वरकृतं-मद्ध्वरकृतन्ददे ददेद्ध्वरकृतन्देवेब्भ्यों देवेब्भ्योंद्ध्वरकृतन्ददे ददेद्ध्वरकृतन्देवेब्भ्यः। अद्ध्वरकृतन्देवेब्भ्यों देवेब्भ्योंद्ध्वरकृतंमद्ध्वरकृतन्देवेब्भ्यऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य देवेब्भ्यों-द्ध्वरकृतंमद्ध्वरकृतन्देवेब्भ्यऽ इन्द्रस्य। अद्ध्वरकृतमित्यंद्ध्वर कृतंम्। देवेब्भ्यऽ इन्द्र-

[1]. वा.प्रा.२.२. के अधिकार में आये मा च (वा.प्रा.२.४) इस सूत्र के अनुसार उत्तमपुरुष के अर्थ में ही मा पद अनुदात्त होता है। यहाँ निषेधार्थक होने से यह पद अनुदात्त नहीं होगा।

स्येन्द्रस्य देवेभ्यो देवेभ्यऽ इन्द्रस्य बाहुर्बाहुरिन्द्रस्य देवेभ्यो देवेभ्यऽ इन्द्रस्य बाहुः। इन्द्रस्य बाहुर्बाहुरिन्द्रस्येन्द्रस्य बाहुरस्यसि बाहुरिन्द्रस्येन्द्रस्य बाहुरसि। बाहुरस्यसि बाहुर्बाहुरसि दक्षिणो दक्षिणोसि बाहुर्बाहुरसि दक्षिणः। असि दक्षिणो दक्षिणोस्यसि दक्षिणः सहस्रभृष्टिः सहस्रभृष्टिर्दक्षिणोस्यसि दक्षिणः सहस्रभृष्टिः। दक्षिणः सहस्रभृष्टिः सहस्रभृष्टिर्दक्षिणो दक्षिणः सहस्रभृष्टिः शततेजाः शततेजाः सहस्रभृष्टिर्दक्षिणो दक्षिणः सहस्रभृष्टिः शततेजाः[1]। सहस्रभृष्टिः शततेजाः शततेजाः सहस्रभृष्टिः सहस्रभृष्टिः शततेजा व्वायुर्व्वायुः शततेजाः सहस्रभृष्टिः सहस्रभृष्टिः शततेजा व्वायुः[2]। सहस्रभृष्टिरिति सहस्र भृष्टिः। शततेजा व्वायुर्व्वायुः शततेजाः शततेजा व्वायुरस्यसि व्वायुः शततेजाः शततेजा व्वायुरसि। शततेजाऽ इति शत तेजाः। व्वायुरस्यसि व्वायुर्व्वायुरसि तिग्मतेजास्तिग्मतेजाऽ असि व्वायुर्व्वायुरसि तिग्मतेजाः। असि तिग्मतेजास्तिग्मतेजाऽ अस्यसि तिग्मतेजा द्विषतो द्विषतस्तिग्मतेजाऽ अस्यसि तिग्मतेजा द्विषतः। तिग्मतेजा द्विषतो द्विषतस्तिग्मतेजास्तिग्मतेजा द्विषतो व्वधो व्वधो द्विषतस्तिग्मतेजास्तिग्मतेजा द्विषतो व्वधः। तिग्मतेजाऽ इति तिग्म तेजाः। द्विषतो व्वधो व्वधो द्विषतो द्विषतो व्वधः पृथिवि पृथिवि व्वधो द्विषतो द्विषतो व्वधः पृथिवि। व्वधः पृथिवि पृथिवि व्वधो व्वधः पृथिवि देवयजनि देवयजनि पृथिवि व्वधो व्वधः पृथिवि देवयजनि॥२४॥

---

1. सहस्रभृष्टिः सहस्रभृष्टिः तथा सहस्रभृष्टिः शततेजाः यहाँ अविकारं शाकल्यः शषसेषु(वा.प्रा.३.१०) इस सूत्र से विसर्ग का विकार नहीं होता है।

2. सन्धिश्चतुर्विधो भवति लोपागमविकाराः प्रकृतिभावश्चेति। तत्र लोपो यथा अयक्ष्माः मा अयक्ष्मा मा, शततेजाः व्वायुः शततेजा व्वायुः – या. शि. ९३.

पृथि॑वि देवयजनि देवयजनि॒ पृथि॑वि॒ पृथि॑वि देवयज॒न्योष॑ध्या॒ऽ ओष॑ध्या देवयजनि॒ पृथि॑वि॒ पृथि॑वि देवयज॒न्योष॑ध्याः[1]। दे॒व॒य॒ज॒न्योष॑ध्या॒ऽ ओष॑ध्या देवयजनि देवयज॒न्योष॑ध्यास्ते त॒ऽ ओष॑ध्या देवयजनि देवयज॒न्योष॑ध्यास्ते। दे॒व॒य॒ज॒नीति॑ देव यजनि। ओष॑ध्यास्ते त॒ऽ ओष॑ध्या॒ऽ ओष॑ध्यास्ते॒ मूल॒म्मूल॑न्त॒ऽ ओष॑ध्या॒ऽ ओष॑ध्यास्ते॒ मूल॑म्। ते॒ मूल॒म्मूल॑न्ते ते॒ मूल॒म्मा मा मूल॑न्ते ते॒ मूल॒म्मा। मूल॒म्मा मा मूल॒म्मूल॒म्मा हि॑ꣳसिषꣳ हिꣳसिष॒म्मा मूल॒म्मूल॒म्मा हि॑ꣳसिषम्। मा हि॑ꣳसिषꣳ हिꣳसिष॒म्मा मा हि॑ꣳसिषँ॑व्व्रजँ॑व्व्रजꣳ हि॑ꣳसिष॒म्मा मा हि॑ꣳसिषँ॑व्व्रजम्। हि॒ꣳसि॒षँ॒व्व्र॒जँ॑व्व्रजꣳ हि॑ꣳसिषꣳ हिꣳसिषँ॑व्व्रजङ्ग॑च्छ गच्छ व्रजꣳ हि॑ꣳसिषꣳ हिꣳसिषँ॑व्व्रजङ्ग॑च्छ। व्रजङ्ग॑च्छ गच्छ व्रजँ॑व्व्रजङ्ग॑च्छ गो॒ष्ठान॑ङ्गो॒स्थान॑ङ्गच्छ व्रजँ॑व्व्रजङ्ग॑च्छ गो॒ष्ठान॑म्[2]। ग॒च्छ॒ गो॒ष्ठान॑ङ्गो॒स्थान॑ङ्गच्छ गच्छ गो॒ष्ठान॒ँव्वर्ष॑तु॒ व्वर्ष॑तु गो॒स्थान॑ङ्गच्छ गच्छ गो॒ष्ठान॒ँव्वर्ष॑तु। गो॒ष्ठान॒ँव्वर्ष॑तु॒ व्वर्ष॑तु गो॒स्थान॑ङ्गो॒ष्ठान॒ँव्वर्ष॑तु ते ते॒ व्वर्ष॑तु गो॒स्थान॑ङ्गो॒ष्ठान॒ँव्वर्ष॑तु ते। गो॒स्थान॒मिति॑ गो॒ स्थान॑म्। व्वर्ष॑तु ते ते॒ व्वर्ष॑तु॒ व्वर्ष॑तु ते॒ द्यौर्द्यौस्ते॒ व्वर्ष॑तु व्वर्ष॑तु ते॒ द्यौः। ते॒ द्यौर्द्यौस्ते॑ ते॒ द्यौर्ब्ब॑धा॒न ब॑धा॒न द्यौस्ते॑ ते॒ द्यौर्ब्ब॑धा॒न। द्यौर्ब्ब॑धा॒न ब॑धा॒न द्यौर्द्यौर्ब्ब॑धा॒न दे॑व देव बधा॒न द्यौर्द्यौर्ब्ब॑धा॒न दे॑व। ब॒धा॒न दे॑व देव बधा॒न ब॑धा॒न दे॑व सवितः सवितर्द्दे॑व बधा॒न ब॑धा॒न दे॑व सवितः। दे॒व॒ स॒वि॒त॒ः स॒वि॒त॒र्द्दे॒व॒ दे॒व॒ स॒वि॒त॒ः प॒र॒मस्या॑म्पर॒मस्या॑ꣳ सवितर्द्दे॑व देव सवितः पर॒मस्या॑म्। स॒वि॒त॒ः प॒र॒मस्या॑म्पर॒मस्या॑ꣳ सवितः सवितः पर॒मस्या॑म्पृथि॒व्याम्पृ॑थि॒व्याम्प॑र॒मस्या॑ꣳ सवितः सवितः पर॒मस्या॑म्पृथि॒-

---

1. पृथिवि देवयजन्योषद्ध्याः यहाँ एक पद के समान स्वर नहीं है।– वा. प्रा. २.१९.

2. गोस्थानम् यहाँ भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) इस सूत्र से सकार षकार होता है। षात्तथौ मूर्धन्यम् (वा.प्रा.३.७८) इस सूत्र से षकारोत्तरवर्ती थकार ठकार होता है।

ध्याम्। सवितुरिति सवितः।[1] परमस्यांम्पृथिव्याम्पृथिव्याम्परमस्यांम्परमस्यांम्पृथिव्याꣳ शतेनं शतेनं पृथिव्याम्परमस्यांम्परमस्यांम्पृथिव्याꣳ शतेनं। पृथिव्याꣳ शतेनं शतेनं पृथिव्याम्पृथिव्याꣳ शतेन पाशैः पाशैः शतेनं पृथिव्याम्पृथिव्याꣳ शतेन पाशैः। शतेन पाशैः पाशैः शतेनं शतेन पाशैर्य्यो यः पाशैः शतेनं शतेन पाशैर्य्यः। पाशैर्य्यो यः पाशैः पाशैर्य्योस्म्मान्स्म्मान्यः पाशैः पाशैर्य्योस्म्मान्। योस्म्मानस्म्मान्यो योस्म्मान्द्वेष्टि द्वेष्ट्यस्म्मान्यो योस्म्मान्द्वेष्टिं। अस्म्मान्द्वेष्टि द्वेष्ट्यस्म्मानस्म्मान्द्वेष्टि यँय्यन्द्वेष्ट्यस्म्मानस्म्मान्द्वेष्टि यम्। द्वेष्टि यँय्यन्द्वेष्टि द्वेष्टि यञ्च च यन्द्वेष्टि द्वेष्टि यञ्चं। यञ्चं च यँय्यञ्चं व्वयँव्वयञ्च यँय्यञ्चं व्वयम्। च व्वयँव्वयञ्चं च व्वयन्द्विष्म्मो द्विष्म्मो व्वयञ्चं च व्वयन्द्विष्म्मः। व्वयन्द्विष्म्मो द्विष्म्मो व्वयँव्वयन्द्विष्म्मस्तन्तन्द्विष्म्मो व्वयँव्वयन्द्विष्म्मस्तम्। द्विष्म्मस्तन्तन्द्विष्म्मो द्विष्म्मस्तमतोतस्तन्द्विष्म्मो द्विष्म्मस्तमतंः। तमतोतस्तन्तमतो मा मातस्तन्तमतो मा। अतो मा मातोतो मा मौङ्क् मौङ्क् मातोतो मा मौक्। मा मौङ्क् मौङ्क् मा मा मौगपापं मौङ्क् मा मा मौगपं। मौगपापं मौङ्क् मौगपारुंमररुमपं मौङ्क् मौगपारुंम्॥२५॥

अपारुंमररुमपापारुंम्पृथिव्यै पृंथिव्याऽ अररुमपापारुंम्पृथिव्यै। अररुंम्पृथिव्यै पृंथिव्याऽ अररुंमररुंम्पृथिव्यै देंवयजंनाद्देवयजंनात्पृथिव्याऽ अररुंमररुंम्पृथिव्यै देंवयजंनात्। पृथिव्यै देंवयजंनाद्देवयजंनात्पृथिव्यै पृंथिव्यै देंवयजंनाद्वद्ध्यासँव्वद्ध्यासन्देवयजंनात्पृथिव्यै पृंथिव्यै देंवयजंनाद्वद्ध्यासम्। देवयजंनाद्वद्ध्यासँव्वद्ध्यासन्देवयजंनाद्देवयजंनाद्वद्ध्यासमररोरंरो व्वद्ध्यासन्देवयजंनाद्देवयजंनाद्वद्ध्यासमरंरो। देवयजंनादिति देव यजंनात्। व्वद्ध्यासमररोरंरो व्वद्ध्या-

[1]. वा.प्रा.१.१६८. के अनुसार सवितः इस पद का विसर्जनीय रिफित संज्ञक है तथा वा.प्रा.४.१८. के अनुसार इस पद को इति के द्वारा व्यवहित किया जाता है।

सँब्वद्ध्यास॒मर॑रो॒ दि॒वन्दि॒वमर॑रो ब्वद्ध्यासँब्वद्ध्यास॒मर॑रो॒ दिव॑म्॥ अर॑रो॒ दि॒वन्दि॒व-
म॒र॒रोर॑रो॒ दि॒वम्मा मा दि॒वम॒र॒रोर॑रो॒ दि॒वम्मा। अर॑रो॒ऽ इत्यर॑रो[1]। दि॒वम्मा मा
दि॒वन्दि॒वम्मा प॑प्तः पप्तो॒ मा दि॒वन्दि॒वम्मा प॑प्तः। मा प॑प्तः पप्तो॒ मा मा प॑प्तो
द्र॒प्प्सो द्र॒प्प्सः प॑प्तो॒ मा मा प॑प्तो द्र॒प्प्सः। प॒प्तो॒ द्र॒प्प्सो द्र॒प्प्सः प॑प्तः पप्तो
द्र॒प्प्सस्ते॑ ते द्र॒प्प्सः प॑प्तः पप्तो द्र॒प्प्सस्ते॑। द्र॒प्प्सस्ते॑ ते द्र॒प्प्सो द्र॒प्प्सस्ते॒
द्यान्द्यान्ते॑ द्र॒प्प्सो द्र॒प्प्सस्ते॒ द्याम्। ते॒ द्यान्द्यान्ते॑ ते॒ द्याम्मा मा द्यान्ते॑ ते॒ द्याम्मा।
द्याम्मा मा द्यान्द्याम्मा स्क॑न्त्स्कु॒न्न्मा द्यान्द्याम्मा स्क॑न्।[2] मा स्क॑न्त्स्कु॒न्न्मा मा
स्क॑न्न्गाय॒त्रेण॑ गाय॒त्रेण॑ स्क॒न्न्मा मा स्क॑न्न्गाय॒त्रेण॑। स्क॒न्न्गा॒य॒त्रेण॑ गाय॒त्रेण॑
स्कन्त्स्कन्न्गाय॒त्रेण॑ त्वा त्वा गाय॒त्रेण॑ स्कन्त्स्कन्न्गाय॒त्रेण॑ त्वा॥२६॥

गा॒य॒त्रेण॑ त्वा त्वा गाय॒त्रेण॑ गाय॒त्रेण॑ त्वा॒ च्छन्द॑सा॒ च्छन्द॑सा त्वा गाय॒-
त्रेण॑ गाय॒त्रेण॑ त्वा॒ च्छन्द॑सा। त्वा॒ च्छन्द॑सा॒ च्छन्द॑सा त्वा त्वा॒ च्छन्द॑सा॒ परि॒
परि॒ च्छन्द॑सा त्वा त्वा॒ च्छन्द॑सा॒ परि॑। छन्द॑सा॒ परि॒ परि॒ च्छन्द॑सा॒ च्छन्द॑सा॒ परि॑
गृह्णामि गृह्णामि॒ परि॒ च्छन्द॑सा॒ च्छन्द॑सा॒ परि॑ गृह्णामि। परि॑ गृह्णामि गृह्णामि॒
परि॒ परि॑ गृह्णामि॒ त्रैष्टु॑भेन॒ त्रैस्तु॑भेन गृह्णामि॒ परि॒ परि॑ गृह्णामि॒ त्रैष्टु॑भेन। गृ॒ह्णा॒मि॒
त्रैष्टु॑भेन॒ त्रैस्तु॑भेन गृह्णामि गृह्णामि॒ त्रैष्टु॑भेन॒ जाग॑तेन॒ जाग॑तेन॒ त्रैस्तु॑भेन गृह्णामि
गृह्णामि॒ त्रैष्टु॑भेन॒ जाग॑तेन। त्रैष्टु॑भेन॒ जाग॑तेन॒ जाग॑तेन॒ त्रैस्तु॑भेन॒ त्रैष्टु॑भेन॒
जाग॑तेन सु॒क्ष्मा सु॒क्ष्मा जाग॑तेन॒ त्रैस्तु॑भेन॒ त्रैष्टु॑भेन॒ जाग॑तेन सु॒क्ष्मा। त्रैस्तु॑भे॒नेति॒
त्रैस्तु॑भेन।[3] जाग॑तेन सु॒क्ष्मा सु॒क्ष्मा जाग॑तेन॒ जाग॑तेन सु॒क्ष्मा च॑ च सु॒क्ष्मा

---

1. अररो यह ओकारान्त पद इति बाद में रहने पर प्रगृह्य होता है। अतः अररोऽ इत्यररो ऐसा स्थितोपस्थित पाठ होता है।

2. स्कन् स्कन् यहाँ ङ्णौ क्ताभ्यां सकारे(वा.प्रा.४.१५) इस सूत्र से न के बाद तकार का आगम होता है। स्ववर्गीये चानुत्तमे(वा.प्रा.४.११७) के अनुसार तकार बाद में होने से नकार का द्वित्व नहीं होगा। द्वितीय ककार का भी द्वित्व नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः(वा.प्रा.४.१०६) से नहीं होगा अतः स्कन्त्स्कन् ऐसी सन्धि होगी।

3. तद्धिते चैकाक्षरवृद्धावनिहिते(वा.प्रा.५.२८) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अवग्रह नहीं है।

जागंतेन् जागंतेन सुक्ष्मा चं॥ सुक्ष्मा चं च सुक्ष्मा सुक्ष्मा चास्यसिं च सुक्ष्मा सुक्ष्मा चासिं। चास्यसिं च चासिं शिवा शिवासिं च चासिं शिवा। असिं शिवा शिवास्यसिं शिवा चं च शिवास्यसिं शिवा चं[1]। शिवा चं च शिवा शिवा चास्य-सि च शिवा शिवा चासि। चास्यसि च चासि स्योना स्योनासिं च चासि स्योना। असि स्योना स्योनास्यंसि स्योना सुषदा सुसदा स्योनास्यंसि स्योना सुषदा। स्योना सुषदा सुसदा स्योना स्योना सुषदोर्ज्जस्वत्यूर्ज्जस्वती सुसदा स्योना स्योना सुषदोर्ज्जस्वती। सुषदोर्ज्जस्वत्यूर्ज्जस्वती सुसदा सुषदोर्ज्जस्वती पर्यस्वती पर्यस्वत्यूर्ज्जस्वती सुसदा सुषदोर्ज्जस्वती पर्यस्वती। सुसदेतिं सु सदा। ऊर्ज्जस्व-ती पर्यस्वती पर्यस्वत्यूर्ज्जस्वत्यूर्ज्जस्वती पर्यस्वती। पर्यस्वतीति पर्यस्वती॥२७॥

पुरा क्क्रूरस्यं क्क्रूरस्यं पुरा पुरा क्क्रूरस्यं व्विसृपों व्विसृपं÷ क्क्रूरस्यं पुरा पुरा क्क्रूरस्यं व्विसृपं÷। क्क्रूरस्यं व्विसृपों व्विसृपं÷ क्क्रूरस्यं क्क्रूरस्यं व्विसृपों व्विरप्प्शिन्न्विरप्प्शिन्न्विसृपं÷ क्क्रूरस्यं क्क्रूरस्यं व्विसृपों व्विरप्प्शिन्। व्विसृपों व्विरप्प्शिन्न्विरप्प्शिन्न्विसृपों व्विसृपों व्विरप्प्शिन्नुदादायोंदादायं व्विरप्प्शिन्न्विसृपों व्विसृपों व्विरप्प्शिन्नुदादायं। व्विसृपऽ इतिं वि सृपं÷। व्विरप्प्शिन्नुदादायोंदादायं व्विरप्प्शिन्न्विरप्प्शिन्नुदादायं पृथिवीम्पृंथिवीमुंदादायं व्विरप्प्शिन्न्विरप्प्शिन्नुदादायं पृथिवीम्। व्विरप्प्शिन्निति वि रप्प्शिन्। उदादायं पृथिवीम्पृंथिवीमुंदादायोंदादायं पृथिवीञ्जीवदानुञ्जीवदानुम्पृथिवीमुंदादायोंदादायं पृथिवीञ्जीवदानुम्। उदादाये-त्युंत् आदायं। पृथिवीञ्जीवदानुञ्जीवदानुम्पृथिवीम्पृंथिवीञ्जीवदानुम्। जीवदानु-मितिं जीव दानुम्॥ याामैरंयन्नैरंयन्त्याँव्यामैरंयँश्चन्द्रमंसि चन्द्रमस्यैरंयन्त्याँव्या-मैरंयँश्चन्द्रमंसि। ऐरंयँश्चन्द्रमंसि चन्द्रमस्यैरंयन्नैरंयँश्चन्द्रमंसि स्वधाभिं÷ स्वधाभिंश्चन्द्रमस्यैरंयन्नैरंयँश्चन्द्रमंसि स्वधाभिं÷। चन्द्रमंसि स्वधाभिं÷

1. असिं शिवा यहाँ पर वा. प्रा. २.४०. के अनुसार असिं पद आद्युदात्त है।

स्वधाभिंश्चन्द्रमंसि चन्द्रमंसि स्वधाभिस्तान्ताꣳ स्वधाभिंश्चन्द्रमंसि चन्द्रमंसि स्वधाभिस्ताम्। स्वधाभिस्तान्ताꣳ स्वधाभिं÷ स्वधाभिस्तामु धीरासो धीरासऽ उ ताꣳ स्वधाभिं÷ स्वधाभिस्तामु धीरासः। तामु धीरासो धीरासऽ उ तान्तामु धीरासोऽ अनुदिश्श्यानुदिश्श्य धीरासऽ उ तान्तामु धीरासोऽ अनुदिश्श्यं। ऊँऽ इत्यूँ[1]। धीरासोऽ अनुदिश्श्यानुदिश्श्य धीरासो धीरासोऽ अनुदिश्श्यं यजन्ते यजन्तेनुदिश्श्य धीरासो धीरासोऽ अनुदिश्श्यं यजन्ते। अनुदिश्श्यं यजन्ते यजन्तेनुदिश्श्यानुदिश्श्यं यजन्ते। अनुदिश्श्येत्यंनु दिश्श्यं। यजन्तऽ इति यजन्ते॥ प्रोक्क्षंणीरा सादय सादया प्प्रोक्क्षंणीः प्प्रोक्क्षंणीरा सादय द्विषतो द्विंषतः सादया प्प्रोक्क्षंणीः प्प्रोक्क्षंणीरा सादय द्विषतः। प्रोक्क्षंणीरिति प्प्र उक्क्षंणीः। आ सादय। सादय द्विषतो द्विंषतः सादय सादय द्विषतो ब्बधो ब्बधो द्विंषतः सादय सादय द्विषतो ब्बधः। द्विषतो ब्बधो ब्बधो द्विंषतो द्विंषतो ब्बधोस्यसि ब्बधो द्विंषतो द्विंषतो ब्बधोसि। ब्बधोस्यसि ब्बधो ब्बधोसि। असीत्यंसि॥२८॥

अनिंशितोस्यस्यनिंशितोनिंशितोसि सपत्नक्क्षित्त्संपत्नक्क्षिदस्यनिंशितोनिंशितोसि सपत्नक्क्षित्[2]। अनिंशितऽ इत्यनिं शितः। असि सपत्नक्क्षित्त्संपत्नक्क्षिदंस्यसि सपत्नक्क्षिद्वाजिनँव्वाजिनंꣳ सपत्नक्क्षिदंस्यसि सपत्नक्क्षिद्वाजिनंम्। सपत्नक्क्षिद्वाजिनँव्वाजिनंꣳ सपत्नक्क्षित्त्संपत्नक्क्षिद्वाजिनंन्त्वा त्वा व्वाजिनंꣳ सपत्नक्क्षित्त्संपत्नक्क्षिद्वाजिनंन्त्वा। सपत्नक्क्षिदिति सपत्न क्षित्। व्वाजिनंन्त्वा त्वा व्वाजिनँव्वाजिनंन्त्वा व्वाजेद्ध्यायैं व्वाजेद्ध्यायैं त्वा व्वाजिनँव्वाजिनंन्त्वा व्वाजेद्ध्यायैं। त्वा व्वाजेद्ध्यायैं व्वाजेद्ध्यायैं त्वा त्वा व्वाजेद्ध्यायै सꣳ

[1]. वा.प्रा.४.९४. के अनुसार अपृक्त उकार इति परे होने पर दीर्घ तथा अनुनासिक होता है। वा.प्रा.१.९२. के सातत्य में पढ़े गये उकारोऽपृक्तः(वा.प्रा.१.९५) के अनुसार यहाँ उकार अपृक्तसंज्ञक है।

[2]. प्रतिषेधे नावग्रहः(वा.प्रा.५.२४) इस सूत्र के अनुसार निषेधार्थक नञ् के साथ समास होने पर पृथक्करण नहीं होता है। प्रकृत उदाहरण अनिशितः में पर्युदास है, अतः पृथक्करण होगा।

सँव्वा॑जे॒द्ध्यायै॑ त्वा त्वा व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सम्। व्वा॒जे॒द्ध्यायै॒ सꣳ सँव्वा॑जे॒द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सम्मा॑र्ज्मि माज्र्मि॒ सँव्वा॑जे॒द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सम्मा॑र्ज्मि[1]। व्वा॒जे॒द्ध्याया॒ऽ इति॑ वाज इ॒द्ध्यायै॑। सम्मा॑र्ज्मि माज्र्मि॒ सꣳ सम्मा॒र्ज्ज्म्यनि॑शि॒तानि॑शिता माज्र्मि॒ सꣳ सम्मा॒र्ज्ज्म्यनि॑शिता। मा॒र्ज्ज्म्यनि॑शि॒तानि॑शिता माज्र्मि मा॒र्ज्ज्म्यनि॑शि-तास्यु॒स्यनि॑शिता माज्र्मि मा॒र्ज्ज्म्यनि॑शितासि॥ अनि॑शितास्यु॒स्यनि॑शि॒तानि॑-शितासि सपत्न॒क्षित्त्स॑पत्न॒क्षिद॒स्यनि॑शि॒तानि॑शितासि सपत्न॒क्षित् । अनि॑-शि॒तेत्यनि॑ शिता। अ॒सि॒ स॒प॒त्न॒क्षित्त्स॑पत्न॒क्षिद॑स्यसि सपत्न॒क्षिद्वा॒जिनीँ॑व्वा॒-जिनीं॑ꣳ सपत्न॒क्षिद॑स्यसि सपत्न॒क्षिद्वा॒जिनी॑म्। स॒प॒त्न॒क्षिद्वा॒जिनीँ॑व्वा॒जि-नीं॑ꣳ सपत्न॒क्षित्त्स॑पत्न॒क्षिद्वा॒जिनीं॑न्त्वा त्वा व्वा॒जिनीं॑ꣳ सपत्न॒क्षित्त्स॑पत्न॒-क्षिद्वा॒जिनीं॑न्त्वा। स॒प॒त्न॒क्षिदिति॑ सपत्न॒ क्षित्। व्वा॒जिनीं॑न्त्वा त्वा व्वा॒जिनीँ॑-व्वा॒जिनीं॑न्त्वा व्वाजे॒द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॑ त्वा व्वाजिनीँ॑व्वा॒जिनीं॑न्त्वा व्वाजे॒द्ध्यायै॑। त्वा॒ व्वा॒जे॒द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॑ त्वा त्वा व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सꣳ सँव्वा॑जे॒द्ध्यायै॑ त्वा त्वा व्वाजे॒द्ध्या-यै॒ सम्। व्वा॒जे॒द्ध्यायै॒ सꣳ सँव्वा॑जे॒द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सम्मा॑र्ज्मि माज्र्मि॒ सँव्वा॑जे॒-द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सम्मा॑र्ज्मि। व्वा॒जे॒द्ध्याया॒ऽ इति॑ वाज इ॒द्ध्यायै॑। सम्मा॑र्ज्मि माज्र्मि॒ सꣳ सम्मा॒र्ज्ज्म्यदि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्यै माज्र्मि॒ सꣳ सम्मा॒र्ज्ज्म्यदि॑त्त्यै। मा॒र्ज्ज्म्यदि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्यै माज्र्मि मा॒र्ज्ज्म्यदि॑त्त्यै॒ रास्न्ना॒ रास्न्नादि॑त्त्यै माज्र्मि मा॒र्ज्ज्म्यदि॑त्त्यै॒ रास्न्ना॑॥२९॥

अदि॑त्त्यै॒ रास्न्ना॒ रास्न्नादि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्यै॒ रास्न्ना॑स्यसि॒ रास्न्नादि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्यै॒ रास्न्ना॑सि। रास्न्ना॑स्यसि॒ रास्न्ना॒ रास्न्ना॑सि॒ व्विष्ष्णो॒र्व्विष्ष्णो॑रसि॒ रास्न्ना॒ रास्न्ना॑सि॒ व्विष्ष्णो॑ः। अ॒सि॒ व्विष्ष्णो॒र्व्विष्ष्णो॑रस्यसि॒ व्विष्ष्णो॑र्व्वे॒ष्प्पो व्वे॒ष्प्पो व्विष्ष्णो॑रस्यसि॒

---

[1]. जकारौ द्वौ मकारश्च रेफस्तदुपरि स्थितः। अशरीरं यमं विद्यात्सम्माज्र्मीति निदर्शनम्॥ - पा. शि. ५८.

व्विष्ण्णोर्व्वे॒ष्प्पः ।[1] व्विष्ण्णोर्व्वे॒ष्प्पो व्वे॒ष्प्पो व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णोर्व्वे॒ष्प्पो॒स्यसि व्वे॒ष्प्पो व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णोर्व्वे॒ष्प्पो॒सि। व्वे॒ष्प्पो॒स्यसि व्वे॒ष्प्पो व्वे॒ष्प्पो॒स्यू॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे॒सि व्वे॒ष्प्पो व्वे॒ष्प्पो॒स्यू॒र्ज्जे। अ॒स्यू॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे॒स्यस्यू॒र्ज्जे त्वां॑ त्वो॒र्ज्जे॒स्यस्यू॒र्ज्जे त्वा॑। ऊ॒र्ज्जे त्वा॑ त्वो॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे त्वाद॑ब्धेनाद॑ब्धेन त्वो॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे त्वाद॑ब्धेन[2] । त्वाद॑ब्धे॒नाद॑ब्धेन त्वा॒ त्वाद॑ब्धेन त्वा॒ त्वाद॑ब्धेन त्वा॒ त्वाद॑ब्धेन त्वा। अद॑ब्धेन त्वा॒ त्वाद॑ब्धे॒ना-द॑ब्धेन त्वा॒ चक्क्षु॑षा॒ चक्क्षु॑षा॒ त्वाद॑ब्धे॒नाद॑ब्धेन त्वा॒ चक्क्षु॑षा। त्वा॒ चक्क्षु॑षा॒ चक्क्षु॑षा त्वा त्वा॒ चक्क्षु॒षावाव॒ चक्क्षु॑षा त्वा त्वा॒ चक्क्षु॒षाव॑। चक्क्षु॒षावाव॒ चक्क्षु॑षा॒ चक्क्षु॒षाव॑ पश्श्यामि पश्श्या॒म्म्यव॒ चक्क्षु॑षा॒ चक्क्षु॒षाव॑ पश्श्यामि। अव॑ पश्श्यामि पश्श्या॒म्म्यवाव॑ पश्श्याम्म्यु॒ग्ग्नेर॒ग्ग्नेः पश्श्या॒म्म्यवाव॑ पश्श्याम्म्यु॒ग्ग्नेः । प॒श्श्या॒म्म्यु॒ग्ग्नेर॒ग्ग्नेः प॑श्श्यामि पश्श्याम्म्यु॒ग्ग्नेर्ज्जि॒ह्वा जि॒ह्वाग्ग्नेः प॑श्श्यामि पश्श्याम्म्यु॒ग्ग्नेर्ज्जि॒ह्वा॥ अ॒ग्ग्नेर्ज्जि॒ह्वा जि॒ह्वाग्ग्नेर॒ग्ग्नेर्ज्जि॒ह्वास्य॑सि जि॒ह्वाग्ग्नेर॒ग्ग्नेर्ज्जि॒-ह्वासि॑। जि॒ह्वास्य॑सि जि॒ह्वा जि॒ह्वासि॑ सु॒हूः सु॒हूर॑सि जि॒ह्वा जि॒ह्वासि॑ सु॒हूः। अ॒सि सु॒हूः सु॒हूर॑स्यसि सु॒हूर्द्दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑÷ सु॒हूर॑स्यसि सु॒हूर्द्दे॒वेब्भ्य॑÷ । सु॒हूर्द्दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑÷ सु॒हूः सु॒हूर्द्दे॒वेब्भ्यो॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने दे॒वेब्भ्य॑÷ सु॒हूः सु॒हूर्द्दे॒वे-ब्भ्यो॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने। सु॒हूरिति॑ सु हूः। दे॒वेब्भ्यो॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने मे मे॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने मे। धाम्म्ने॑धाम्म्ने मे मे॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने मे भव भव मे॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने॒ धाम्म्ने॑-धाम्म्ने मे भव। धाम्म्ने॑धाम्म्न॒ऽ इति॒ धाम्म्ने॑ धाम्म्ने। मे॒ भ॒व॒ भ॒व॒ मे॒ मे॒ भ॒व॒ स॒जु॑षे-

---

[1]. वेष्पः के स्थान पर भाष्यकार उव्वट तथा महीधर ने वेष्यः पाठ माना है। माध्यन्दिनसंहिता के पदपाठ के परिशिष्ट में सम्पादक ने वेष्पः पाठ स्वीकार किया है। यकार तथा पकार की लिपि का सादृश्य होने से यकार की स्वीकृति मान ली गयी होगी उभयथा अर्थसङ्गति होने पर भी सम्प्रदाय में वेष्पः पाठ प्रचलित है।

[2]. अदब्धेन यहाँ बकार ही है।– मा. शि. - १

यजुषे यजुंषेयजुषे भव मे मे भव यजुंषेयजुषे।[1] भव यजुंषेयजुषे यजुंषेयजुषे भव भव यजुंषेयजुषे सवितुः संवितुर्यजुंषेयजुषे भव भव यजुंषेयजुषे सवितुः। यजुंषेयजुषे सवितुः संवितुर्यजुंषेयजुषे यजुंषेयजुषे सवितुस्त्वां त्वा सवितुर्यजुंषेयजुषे यजुंषेयजुषे सवितुस्त्वां। यजुंषेयजुषऽ इति यजुंषे यजुषे॥३०॥

सवितुस्त्वां त्वा सवितुः संवितुस्त्वा तेजस्तेजंस्त्वा सवितुः संवितुस्त्वा तेजः। त्वा तेजस्तेजंस्त्वा त्वा तेजोंस्यसि तेजंस्त्वा त्वा तेजोंसि॥ तेजोंस्यसि तेजस्तेजोंसि शुक्रꣳ शुक्रमंसि तेजस्तेजोंसि शुक्रम्। असि शुक्रꣳ शुक्रमंस्यसि शुक्रममृतंममृतꣳ शुक्रमंस्यसि शुक्रममृतंम्। शुक्रममृतंममृतꣳ शुक्रꣳ शुक्रममृतन्धाम धामामृतꣳ शुक्रꣳ शुक्रममृतन्धामं। अमृतन्धाम धामामृतंममृतन्धाम नाम नाम धामामृतंममृतन्धाम नामं। धाम नाम नाम धाम धाम नामं प्रियम्प्रियन्नाम धाम धाम नामं प्रियम्। नामं प्रियम्प्रियन्नाम नामं प्रियन्देवानांन्देवानांम्प्रियन्नाम नामं प्रियन्देवानांम्। प्रियन्देवानांन्देवानांम्प्रियम्प्रियन्देवानामनांधृष्टमनांधृष्टन्देवानांम्प्रियम्प्रियन्देवानामनांधृष्टम्। देवानामनांधृष्टमनांधृष्टन्देवानांन्देवानामनांधृष्टन्देवयजंनन्देवयजंनमनांधृष्टन्देवानांन्देवानामनांधृष्टन्देवयजंनम्[2]। अनांधृष्टन्देवयजंनन्देवयजंनमनांधृष्टमनांधृष्टन्देवयजंनमस्यसि देवयजंनमनांधृष्टमनांधृष्टन्देवयजंनमसि। देवयजंनमस्यसि देवयजंनन्देवयजंनमसि। देवयजंनमितिं देव यजंनम्। असीत्यंसि॥३१॥

॥ इति माध्यन्दिनीयघनपाठे प्रथमोध्यायः॥

---

1. वा.प्रा.१.८७. के अनुसार मे पद उदात्त होने पर प्रगृह्य होता है, यहाँ उक्त स्थिति न होने से प्रगृह्य संज्ञक नहीं होगा।

2. अनाधृष्टम् देवयजनम् यहाँ सन्धि की दशा में व. शि. १४६ के अनुसार पदान्त मकार का नकार उपदिष्ट है।

॥द्वितीयोध्यायः॥

हरिः ॐ॥ कृष्णोऽस्यसि कृष्णः कृष्णोऽस्याखरेष्ठ आखरेस्थोसि कृष्णः कृष्णोऽस्याखरेष्ठः[1]। अस्याखरेष्ठ आखरेस्थोस्यस्याखरेष्ठोग्नये-ग्नये आखरेस्थोस्यस्याखरेष्ठोग्नये। आखरेष्ठोग्नयेग्नये आखरेस्थ आखरे-ष्ठोग्नये त्वा त्वाग्नये आखरेस्थ आखरेष्ठोग्नये त्वा। आखरेस्थ इत्याखरे स्थः। अग्नये त्वा त्वाग्नयेग्नये त्वा जुष्टञ्जुष्टन्त्वाग्नयेग्नये त्वा जुष्टम्। त्वा जुष्टञ्जुष्टन्त्वा त्वा जुष्टम्प्र प्र जुष्टन्त्वा त्वा जुष्टम्प्र। जुष्टम्प्र प्र जुष्टञ्जुष्टम्प्रो-क्षाम्म्युक्षामि प्र जुष्टञ्जुष्टम्प्रोक्षामि। प्रोक्षाम्म्युक्षामि प्र प्रोक्षामि वेदिर्वेदिरुक्षामि प्र प्रोक्षामि वेदिः। उक्षामि वेदिर्वेदिरुक्षाम्म्युक्षामि वेदिरस्यसि वेदिरुक्षाम्म्युक्षामि वेदिरसि। वेदिरस्यसि वेदिर्वेदिरसि बर्हिषे बर्हिषेसि वेदिर्वेदिरसि बर्हिषे। असि बर्हिषे बर्हिषेस्यसि बर्हिषे त्वा त्वा बर्हिषेस्य-सि बर्हिषे त्वा। बर्हिषे त्वा त्वा बर्हिषे बर्हिषे त्वा जुष्टाञ्जुष्टान्त्वा बर्हिषे बर्हिषे त्वा जुष्टाम्। त्वा जुष्टाञ्जुष्टान्त्वा त्वा जुष्टाम्प्र प्र जुष्टान्त्वा त्वा जुष्टाम्प्र। जुष्टाम्प्र प्र जुष्टाञ्जुष्टाम्प्रोक्षाम्म्युक्षामि प्र जुष्टाञ्जुष्टाम्प्रोक्षामि। प्रोक्षाम्म्युक्षामि प्र प्रोक्षामि बर्हिर्बर्हिरुक्षामि प्र प्रोक्षामि बर्हिः। उक्षामि बर्हिर्बर्हिरु-क्षाम्म्युक्षामि बर्हिरस्यसि बर्हिरुक्षाम्म्युक्षामि बर्हिरसि। बर्हिरस्यसि बर्हि-र्बर्हिरसि स्रुग्भ्यः स्रुग्भ्योसि बर्हिर्बर्हिरसि स्रुग्भ्यः। असि स्रुग्भ्यः स्रुग्भ्यो-स्यसि स्रुग्भ्यस्त्वा त्वा स्रुग्भ्योस्यसि स्रुग्भ्यस्त्वा। स्रुग्भ्यस्त्वा त्वा स्रुग्भ्यः स्रुग्भ्यस्त्वा जुष्टञ्जुष्टन्त्वा स्रुग्भ्यः स्रुग्भ्यस्त्वा जुष्टम्। स्रुग्भ्य इति स्रुक् भ्यः। त्वा जुष्टञ्जुष्टन्त्वा त्वा जुष्टम्प्र प्र जुष्टन्त्वा त्वा जुष्टम्प्र। जुष्टम्प्र प्र जुष्ट-ञ्जुष्टम्प्रोक्षाम्म्युक्षामि प्र जुष्टञ्जुष्टम्प्रोक्षामि। प्रोक्षाम्म्युक्षामि प्र प्रो-

[1]. कृष्ण शब्द मृग का वाचक होने पर आद्युदात्त होता है। - वा. प्रा. २.२५।

क्षाम्म्यदित्याऽ अदित्याऽ उक्षामि प्र प्रोक्षाम्म्यदित्यै। उक्षाम्म्यदित्याऽ अदित्याऽ उक्षाम्म्युक्षाम्म्यदित्यै द्युन्दनँद्युन्दनमदित्याऽ उक्षाम्म्युक्षाम्म्यदित्यै द्युन्दनम्॥१॥

अदित्यै द्युन्दनँद्युन्दनमदित्याऽ अदित्यै द्युन्दनमस्यसि द्युन्दनमदित्याऽ अदित्यै द्युन्दनमसि। द्युन्दनमस्यसि द्युन्दनँद्युन्दनमसि व्विष्णोर्व्विष्णोरसि द्युन्दनँद्युन्दनमसि व्विष्णोः। द्युन्दनमिति वि उन्दनम्। असि व्विष्णोर्व्विष्णोरस्यसि व्विष्णो स्तुप स्तुपो व्विष्णोरस्यसि व्विष्णो स्तुपः[1]। व्विष्णो स्तुप स्तुपो व्विष्णोर्व्विष्णो स्तुपोस्यसि स्तुपो व्विष्णोर्व्विष्णो स्तुपोसि। स्तुपोस्यसि स्तुप स्तुपोस्यूर्ण्णम्म्रदसमूर्ण्णम्म्रदसमसि स्तुप स्तुपोस्यूर्ण्णम्म्रदसम्। अस्यूर्ण्णम्म्रदसमूर्ण्णम्म्रदसमस्यस्यूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा त्वोर्ण्णम्म्रदसमस्यस्यूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा। ऊर्ण्णम्म्रदसन्त्वा त्वोर्ण्णम्म्रदसमूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा स्तृणामि स्तृणामि त्वोर्ण्णम्म्रदसमूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा स्तृणामि। ऊर्ण्णम्म्रदसमित्यूर्ण्ण म्रदसम्। त्वा स्तृणामि स्तृणामि त्वा त्वा स्तृणामि स्वासस्थाꣳ स्वासस्थाꣳ स्तृणामि त्वा त्वा स्तृणामि स्वासस्थाम्। स्तृणामि स्वासस्थाꣳ स्वासस्थाꣳ स्तृणामि स्तृणामि स्वासस्थान्देवेब्भ्यो देवेब्भ्यः स्वासस्थाꣳ स्तृणामि स्तृणामि स्वासस्थान्देवेब्भ्यः। स्वासस्थान्देवेब्भ्यो देवेब्भ्यः स्वासस्थाꣳ स्वासस्थान्देवेब्भ्यो भुवपतये भुवपतये देवेब्भ्यः स्वासस्थाꣳ स्वासस्थान्देवेब्भ्यो भुवपतये। स्वासस्थामिति सु आसस्थाम्। देवेब्भ्यो भुवपतये भुवपतये देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो भुवपतये स्वाहा स्वाहा भुवपतये देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो भुवपतये स्वाहा[2]। भुवपतये स्वाहा स्वाहा भुवपतये भुवपतये स्वाहा भुवनपतये

[1]. विष्णोः स्तुपः यहाँ वा.प्रा.३.१३. के अनुसार विसर्जनीय का लोप होता है।

[2].वा.प्रा.२.३९. के अनुसार स्वाहा पद आद्युदात होता है।

भुवंनपतये स्वाहा भुवंपतये भुवंपतये स्वाहा भुवंनपतये। भुवंपतयऽ इति भुवं पतये। स्वाहा भुवंनपतये भुवंनपतये स्वाहा स्वाहा भुवंनपतये भूतानांम्भूताना-म्भुवंनपतये स्वाहा स्वाहा भुवंनपतये भूतानांम्। भुवंनपतये भूतानांम्भूताना-म्भुवंनपतये भुवंनपतये भूतानाम्पतंये पतंये भूतानाम्भुवंनपतये भुवंनपतये भूतानाम्पतंये। भुवंनपतयऽ इति भुवंन पतये। भूतानाम्पतंये पतंये भूतानांम्भू-तानाम्पतंये गन्धर्व्वो गंन्धर्व्वः पतंये भूतानांम्भूतानाम्पतंये गन्धर्व्वः। पतंये गन्धर्व्वो गंन्धर्व्वः पतंये पतंये गन्धर्व्वस्त्वां त्वा गन्धर्व्वः पतंये पतंये गन्धर्व्वस्त्वां॥२॥

गन्धर्व्वस्त्वां त्वा गन्धर्व्वो गंन्धर्व्वस्त्वां व्विश्वावंसुर्व्विश्ववंसुस्त्वा गन्धर्व्वो गंन्धर्व्वस्त्वां व्विश्वावंसुः[1]। त्वा व्विश्वावंसुर्व्विश्ववंसुस्त्वा त्वा व्विश्वावंसुः परि परिं विश्ववंसुस्त्वा त्वा व्विश्वावंसुः परिं। व्विश्वावंसुः परि परिं विश्ववंसुर्व्विश्वावंसुः परिं दधातु दधातु परिं विश्ववंसुर्व्विश्वावंसुः परिं दधातु। व्विश्ववंसुरितिं विश्व व्वंसुः। परिं दधातु दधातु परि परिं दधातु व्विश्वंस्य व्विश्वंस्य दधातु परि परिं दधातु व्विश्वं-स्य। दधातु व्विश्वंस्य व्विश्वंस्य दधातु दधातु व्विश्वस्यारिंष्ट्याऽ अरिंष्ट्यै व्विश्वंस्य दधातु दधातु व्विश्वस्यारिंष्ट्यै। व्विश्वस्यारिंष्ट्याऽ अरिंष्ट्यै व्विश्वंस्य व्विश्वस्यारिंष्ट्यै यजंमानस्य यजंमानस्यारिंष्ट्यै व्विश्वंस्य व्विश्वस्यारिंष्ट्यै यजंमानस्य। अरिंष्ट्यै यजंमानस्य यजंमानस्यारिंष्ट्याऽ अरिंष्ट्यै यजंमानस्य परिधिः पंरिधिर्य्यजं-मानस्यारिंष्ट्याऽ अरिंष्ट्यै यजंमानस्य परिधिः। यजंमानस्य परिधिः पंरिधिर्य्य-जंमानस्य यजंमानस्य परिधिरंस्यसि परिधिर्य्यजंमानस्य यजंमानस्य परिधि-रंसि। परिधिरंस्यसि परिधिः पंरिधिरंस्यग्निरग्निरंसि परिधिः पंरिधिरंस्यग्निः। परिधिरितिं परि धिः। अस्यग्निरग्निरंस्यस्यग्निरिडऽ इडोग्निरंस्यस्य-

[1]. यहाँ वा. प्रा. ३.१०१. के अनुसार विश्व का अकार दीर्घ हो गया है।

ग्निरि॒डः[1]। अ॒ग्निरि॒डऽ इ॒डो॒ग्निर॒ग्निरि॒डऽ ई॑डि॒तऽ ई॑डि॒तऽ इ॒डो॒ग्निर॒ग्निरि॒डऽ ई॑डि॒तः। इ॒डऽ ई॑डि॒तऽ ई॑डि॒तऽ इ॒डऽ इ॒डऽ ई॑डि॒तऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्येडि॒तऽ इ॒डऽ इ॒डऽ ई॑डि॒तऽ इन्द्र॑स्य। ई॒डि॒तऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्येडि॒तऽ ई॑डि॒तऽ इन्द्र॑स्य बा॒हुर्बा॒हुरिन्द्र॑स्येडि॒तऽ ई॑डि॒तऽ इन्द्र॑स्य बा॒हुः॥ इन्द्र॑स्य बा॒हुर्बा॒हुरिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य बा॒हुर॑स्यसि बा॒हुरिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य बा॒हुर॑सि। बा॒हुर॑स्यसि बा॒हुर्बा॒हुर॑सि॒ दक्षि॑णो॒ दक्षि॑णोसि बा॒हुर्बा॒हुर॑सि॒ दक्षि॑णः[2]। अ॒सि॒ दक्षि॑णो॒ दक्षि॑णोस्यसि॒ दक्षि॑णो मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णौ॒ दक्षि॑णोस्यसि॒ दक्षि॑णो मि॒त्रावरु॑णौ[3]। दक्षि॑णो मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णौ॒ दक्षि॑णो॒ दक्षि॑णो मि॒त्रावरु॑णौ त्वा त्वा मि॒त्रावरु॑णौ॒ दक्षि॑णो॒ दक्षि॑णो मि॒त्रावरु॑णौ त्वा॥ मि॒त्रावरु॑णौ त्वा त्वा मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णौ त्वोत्तर॒तऽ उत्त॑र॒तस्त्वा॑ मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णौ त्वोत्तर॒तः। त्वो॒त्त॒र॒तऽ उत्त॑र॒तस्त्वा॑ त्वोत्तर॒तः परि॒ पर्यु॑त्तर॒तस्त्वा॑ त्वोत्तर॒तः परि॑। उ॒त्त॒र॒तः परि॒ पर्यु॑त्तर॒तऽ उत्त॑र॒तः परि॑ धत्तान्धत्ता॒म्पर्यु॑त्तर॒तऽ उत्त॑र॒तः परि॑ धत्ताम्। परि॑ धत्तान्धत्ता॒म्परि॒ परि॑ धत्तान्ध्रु॒वेण॑ ध्रु॒वेण॑ धत्ता॒म्परि॒ परि॑ धत्तान्ध्रु॒वेण॑। ध॒त्ता॒न्ध्रु॒वेण॑ ध्रु॒वेण॑ धत्तान्धत्तान्ध्रु॒वेण॒ धर्म्म॑णा॒ धर्म्म॑णा ध्रु॒वेण॑ धत्तान्धत्तान्ध्रु॒वेण॒ धर्म्म॑णा। ध्रु॒वेण॒ धर्म्म॑णा॒ धर्म्म॑णा ध्रु॒वेण॑ ध्रु॒वेण॒ धर्म्म॑णा। धर्म्म॒णेति॒ धर्म्म॑णा॥३॥

वी॒तिहो॑त्रन्त्वा त्वा वी॒तिहो॑त्रँवी॒तिहो॑त्रन्त्वा कवे कवे त्वा वी॒तिहो॑त्रँवी॒ति-हो॑त्रन्त्वा कवे। वी॒तिहो॑त्र॒मिति॑ वी॒ति हो॑त्रम्। त्वा॒ क॒वे॒ क॒वे॒ त्वा॒ त्वा॒ क॒वे॒ द्यु॒म-न्तं॑न्द्यु॒मन्तं॑ङ्कवे त्वा त्वा कवे द्यु॒मन्तं॑म्। क॒वे॒ द्यु॒मन्तं॑न्द्यु॒मन्तं॑ङ्कवे कवे द्यु॒मन्तु॒ᳲ

---

1. इडः अग्निः यहाँ अकारे च(वा.प्रा.४.४४) इस सूत्र से अःकार ओकार होता है। एदोद्भ्यां पूर्वमकारः(वा.प्रा.४.६२) से ओकार से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त होता है। तौ चेदुदात्तावनुदात्ते स्वरितौ(वा.प्रा.४.६३) से ओकार स्वरित होता है तथा वा.प्रा.१.११४. से अभिनिहित संज्ञा होती है।

2. दक्षिणा च (वा.प्रा.२.२९) दक्षिणा पद भी आद्युदात्त होता है।

3. पूर्वो द्वन्द्वेष्ववायुषु वा. प्रा. ३.१२७. इस सूत्र से द्वन्द्व समास का मित्र यह पूर्वपद दीर्घ हो गया है।

सꣳ सन्द्युमन्तंङ्कवे कवे द्युमन्तꣳ सम्। द्युमन्तꣳ सꣳ सन्द्युमन्तंन्द्युमन्तꣳ समिंधीमहीधीमहि सन्द्युमन्तंन्द्युमन्तꣳ समिंधीमहि। द्युमन्तमितिं द्यु मन्तंम्। समिंधीमहीधीमहि सꣳ समिंधीमहि। इधीमहीतींधीमहि॥ अग्ग्नें बृहन्तंम्बृहन्तमग्ग्नेग्ग्नें बृहन्तंमद्ध्वरेद्ध्वरे बृहन्तमग्ग्नेग्ग्नें बृहन्तंमद्ध्वरे। बृहन्तंमद्ध्वरेद्ध्वरे बृहन्तंम्बृहन्तंमद्ध्वरे[1]। अद्ध्वरऽ इत्यंद्ध्वरे॥४॥

समिदंस्यसि समित्तसमिदंसि सूर्ब्बꣳ सूर्ब्बोसि समित्तसमिदंसि सूर्ब्बंः। समिदितिं सम् इत्। असि सूर्ब्बꣳ सूर्ब्बोंस्यसि सूर्ब्बंस्त्वा त्वा सूर्ब्बोंस्यसि सूर्ब्बंस्त्वा। सूर्ब्बंस्त्वा त्वा सूर्ब्बꣳ सूर्ब्बंस्त्वा पुरस्तांत्पुरस्तांत्वा सूर्ब्बꣳ सूर्ब्बंस्त्वा पुरस्तांत् । त्वा पुरस्तांत्पुरस्तांत्वा त्वा पुरस्तांत्पातु पातु पुरस्तांत्वा त्वा पुरस्तांत्पातु। पुरस्तांत्पातु पातु पुरस्तांत्पुरस्तांत्पातु कस्याꣳ कस्यांꣳ पातु पुरस्तांत्पुरस्तांत्पातु कस्यांꣳ। पातु कस्याꣳ कस्यांꣳ पातु पातु कस्यांश्चिचित्कस्यांꣳ पातु पातु कस्यांश्चित्। कस्यांश्चिचित्कस्याꣳ कस्यांश्चिदभिशंस्त्याऽ अभिशंस्त्यै चित्कस्याꣳ कस्यांश्चिदभिशंस्त्यै। चिदभिशंस्त्याऽ अभिशंस्त्यै चिचिदभिशंस्त्यै सवितुꣳ संवितुरभिशंस्त्यै चिचिदभिशंस्त्यै सवितुꣳ। अभिशंस्त्यै सवितुꣳ संवितुरभिशंस्त्याऽ अभिशंस्त्यै सवितुर्ब्बाहू बाहू संवितुरभिशंस्त्याऽ अभिशंस्त्यै सवितुर्ब्बाहू। अभिशंस्त्याऽ इत्यभि शंस्त्यै॥ सवितुर्ब्बाहू बाहू संवितुꣳ संवितुर्ब्बाहू स्त्थं स्त्थो बाहू संवितुꣳ संवितुर्ब्बाहू स्त्थंः[1]। बाहू स्त्थं स्त्थो बाहू बाहू स्त्थऽ ऊर्ण्णंम्म्रदसमूर्ण्णंम्म्रदसꣳ स्थो बाहू बाहू स्त्थऽ ऊर्ण्णंम्म्रदसम्। बाहूऽ इतिं बाहू। स्थऽ ऊर्ण्णंम्म्रदसमूर्ण्णंम्म्रदसꣳ स्थ स्त्थऽ ऊर्ण्णंम्म्रदसन्त्वा

---

[1]. मा. शि. (शि. सं. पृ. ६२) के अनुसार बृहन्तम् पद में बकार है।

[1]. स्थः बाहू यहाँ सर्वो अःकार ओकारम्(वा.प्रा.४.४३) के अनुसार सोपध विसर्जनीय ओकार होता है। वा.प्रा.१.३५. के अनुसार विसर्जनीय से पूर्ववर्ती अकार की उपधा संज्ञा है।

त्वोर्ण्णम्म्रदसꣳ स्थ स्त्थ॒ऽ ऊर्ण्णम्म्रदसन्त्वा। ऊर्ण्णम्म्रदसन्त्वा॒ त्वोर्ण्णम्म्रद-स॒मूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा स्तृणामि स्तृणामि॒ त्वोर्ण्णम्म्रदस॒मूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा स्तृणामि। ऊर्ण्णम्म्रदस॒मित्यूर्ण्णं म्रदसम्। त्वा॒ स्तृ॒णा॒मि॒ स्तृ॒णा॒मि॒ त्वा॒ त्वा॒ स्तृ॒णा॒मि॒ स्वा॒स॒स्त्थꣳ स्वा॑स॒स्त्थꣳ स्तृ॑णामि त्वा त्वा स्तृणामि स्वास॒स्त्थम्। स्तृ॒णा॒मि॒ स्वा॒स॒स्त्थꣳ स्वा॑स॒स्त्थꣳ स्तृ॑णामि स्तृणामि स्वास॒स्त्थन्दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यं॑ः स्वास॒स्त्थꣳ स्तृ॑णामि स्तृणामि स्वास॒स्त्थन्दे॒वेब्भ्यं॑ः। स्वा॒स॒स्त्थन्दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यं॑ः स्वास॒स्त्थꣳ स्वा॑स॒स्त्थन्दे॒वेब्भ्य॒ऽ आ त्वा॒ त्वा दे॒वेब्भ्यं॑ः स्वास॒स्त्थꣳ स्वा॑स॒स्त्थन्दे॒वेब्भ्य॒ऽ आ त्वा॑। स्वा॒स॒स्त्थमिति॑ सु आस॒स्त्थम्। दे॒वेब्भ्य॒ऽ आ त्वा॒ त्वा दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॒ऽ आ त्वा॒ ब्वसं॑वो॒ ब्वसं॑व॒स्त्वा दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॒ऽ आ त्वा॒ ब्वसं॑वः। आ त्वा॑। त्वा॒ ब्वसं॑वो॒ ब्वसं॑वस्त्वा त्वा॒ ब्वसं॑वो रु॒द्द्रा रु॒द्द्रा ब्वसं॑वस्त्वा त्वा॒[1] ब्वसं॑वो रु॒द्द्राः। ब्वसं॑वो रु॒द्द्रा रु॒द्द्रा ब्वसं॑वो॒ ब्वसं॑वो रु॒द्द्राऽ आ॑दि॒त्त्याऽ आ॑दि॒त्त्या रु॒द्द्रा ब्वसं॑वो॒ ब्वसं॑वो रु॒द्द्राऽ आ॑दि॒त्त्याः। रु॒द्द्राऽ आ॑दि॒त्त्याऽ आ॑दि॒त्त्या रु॒द्द्रा रु॒द्द्राऽ आ॑दि॒त्त्याः सं॑दन्तु सदन्त्वादि॒त्त्या रु॒द्द्रा रु॒द्द्राऽ आ॑दि॒त्त्याः सं॑दन्तु। आ॒दि॒त्त्याः सं॑दन्तु सदन्त्वादि॒त्त्याऽ आ॑दि॒त्त्याः सं॑दन्तु। स॒द॒न्त्विति॑ सदन्तु॥५॥

घृ॒ताच्च्य॑स्यसि घृ॒ताची॑ घृ॒ताच्च्य॑सि जु॒हूर्ज्जु॒हूर॑सि घृ॒ताची॑ घृ॒ताच्च्य॑सि जु॒हूः[2]। अ॒सि॒ जु॒हूर्ज्जु॒हूर॑स्यसि जु॒हून्र्नाम्म्ना॒ नाम्म्ना॑ जु॒हूर॑स्यसि जु॒हून्र्नाम्म्ना॑। जु॒हून्र्नाम्म्ना॒ नाम्म्ना॑ जु॒हूर्ज्जु॒हून्र्नाम्म्ना॒ सा सा नाम्म्ना॑ जु॒हूर्ज्जु॒हून्र्नाम्म्ना॒ सा। नाम्म्ना॒ सा सा नाम्म्ना॒ नाम्म्ना॒ सेदमि॒दꣳ सा नाम्म्ना॒ नाम्म्ना॒ सेदम्। सेदमि॒दꣳ सा सेदम्प्प्रि॒येण॑ प्प्रि॒येणे॒दꣳ सा सेदम्प्प्रि॒येण॑। इ॒दम्प्प्रि॒येण॑ प्प्रि॒येणे॒दमि॒दम्प्प्रि॒येण॒ धाम्म्ना॒ धाम्म्ना॑ प्प्रि॒येणे॒दमि॒दम्प्प्रि॒येण॒ धाम्म्ना॑। प्प्रि॒येण॒ धाम्म्ना॒ धाम्म्ना॑ प्प्रि॒येण॑ प्प्रि॒येण॒

---

[1]. वा. प्रा. २.६ के अनुसार त्वा पद अनुदात होता है।

[2]. यहाँ घृताची पद द्विवचन में नहीं है। जुहू को घृताची कहा है, अतः इतिकरण नहीं होगा।

धाम्न्नां प्प्रियम्प्रियन्धाम्न्नां प्प्रियेणं प्प्रियेण धाम्न्नां प्प्रियम्। धाम्न्नां प्प्रियम्प्रियन्धाम्न्ना धाम्न्नां प्प्रियछ सदँ सदं प्प्रियन्धाम्न्ना धाम्न्नां प्प्रियछ सदं। प्रियछ सदँ सदं प्प्रियम्प्रियछ सदऽ आ सींद सीदा सदं प्प्रियम्प्रियछ सदऽ आ सींद। सदऽ आ सींद सीदा सदँ सदऽ आ सींदोपभृदुंपभृत्सीदा सदँ सदऽ आ सींदोपभृत्। आ सींद। सीदोपभृदुंपभृत्सींद सीदोपभृद्धुवा द्धुवोपभृत्सींद सीदोपभृद्धुवा। उपभृद्धुवा द्धुवोपभृदुंपभृद्धुवा द्धुवा द्धुवा द्धुवोपभृदुंपभृद्धुवा द्धुवा। उपभृदित्त्युंप भृत्। ध्रुवा द्धुवा द्धुवा द्धुवा द्धुवा द्धुवाऽ अंसदन्नसदन्ध्रुवा द्धुवा द्धुवा द्धुवाऽ अंसदन्[1]॥ ध्रुवाऽ अंसदन्नसदन्ध्रुवा द्धुवाऽ अंसदन्नृतस्यंऽ ऋतस्यांसदन्ध्रुवा द्धुवाऽ अंसदन्नृतस्यं। असदन्नृतस्यंऽ ऋतस्यांसदन्नसदन्नृतस्य य्योनौ य्योनांवृतस्यांसदन्नसदन्नृतस्य य्योनौं। ऋतस्य य्योनौ य्योनांवृतस्यंऽ ऋतस्य य्योनौ ता ता य्योनांवृतस्यंऽ ऋतस्य य्योनौ ता[2]। य्योनौ ता ता य्योनौ य्योनौ ता व्विंष्ण्णो व्विष्ण्णो ता य्योनौ य्योनौ ता व्विंष्ण्णो। ता व्विंष्ण्णो व्विष्ण्णो ता ता व्विंष्ण्णो पाहि पाहि व्विष्ण्णो ता ता व्विंष्ण्णो पाहि। व्विष्ण्णो पाहि पाहि व्विष्ण्णो व्विष्ण्णो पाहि पाहि पाहि पांहि व्विष्ण्णो व्विष्ण्णो पाहि पाहि। व्विष्ण्णोऽ इतिं विष्ण्णो। पाहि पाहि पाहि पांहि पाहि पाहि य्यज्ञँव्यज्ञम्पाहि पांहि पाहि पाहि य्यज्ञम्। पाहि य्यज्ञँव्यज्ञम्पाहि पाहि य्यज्ञम्पाहि पाहि य्यज्ञम्पाहि पाहि य्यज्ञम्पाहि। य्यज्ञम्पाहि पाहि य्यज्ञँव्यज्ञम्पाहि य्यज्ञपंतिंव्यज्ञपंतिम्पाहि य्यज्ञँव्यज्ञम्पाहि य्यज्ञपंतिम्। पाहि य्यज्ञपंतिंव्यज्ञपंतिम्पाहि पाहि य्यज्ञपंतिम्पाहि पाहि य्यज्ञपंतिम्पाहि पाहि य्यज्ञपंतिम्पाहि। य्यज्ञपंतिम्पाहि पाहि य्यज्ञपंतिं-

[1]. वा.प्रा.४.८७. के अनुसार ध्रुवा असदन् यहाँ ध्रुवा पद प्रकृतिभाव से रहता है। अतः सिं सवर्णे दीर्घम्(वा.प्रा.४.५२) से दीर्घ नहीं होगा।

[2]. वा. प्रा. ४.३१. के अनुसार यहाँ ता पद स्वरान्त है।

ऽय॒ज्ञप॑तिम्पा॒हि माम्माम्पा॒हि य॒ज्ञप॑तिँऽय॒ज्ञप॑तिम्पा॒हि माम्। य॒ज्ञप॑ति॒-मिति॑ य॒ज्ञ प॑तिम्। पा॒हि माम्माम्पा॒हि पा॒हि माँऽय॑ज्ज्ञ॒न्यँऽय॒ज्ज्ञ॒न्यु॒म्माम्पा॒हि पा॒हि माँऽय॑ज्ज्ञ॒न्य॒म्। माँऽय॑ज्ज्ञ॒न्यँऽय॒ज्ज्ञ॒न्यु॒म्माम्माँऽय॑ज्ज्ञ॒न्य॒म्। य॒ज्ज्ञ॒न्यु॒-मिति॑ यज्ज्ञ॒ न्य॒म्॥६॥

अग्ग्ने॑ ब्वाजजिद्वाजजि॒दग्ग्नेग्ग्ने॑ ब्वाजजि॒द्वाजँ॒ब्वाजँ॒ब्वाजजि॒दग्ग्नेग्ग्ने॑ ब्वाजजि॒-द्वाज॑म्। ब्वा॒ज॒जि॒द्वाजँ॒ब्वाजँ॒ब्वाजजिद्वाजजि॒द्वाज॑न्त्वा त्वा॒ ब्वाजँ॒ब्वाजजिद्वाजजि॒द्वा-ज॑न्त्वा। ब्वा॒ज॒जि॒दिति॑ वाज जित्। ब्वाज॑न्त्वा त्वा॒ ब्वाजँ॒ब्वाज॑न्त्वा सरि॒ष्ष्यन्त॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्त॑न्त्वा॒ ब्वाजँ॒ब्वाज॑न्त्वा सरि॒ष्ष्यन्त॑म्। त्वा॒ स॒रि॒ष्ष्यन्त॑ꣳ सरि॒ष्ष्य-न्त॑न्त्वा त्वा सरि॒ष्ष्यन्तँ॒ब्वाज॒जित॑ँब्वाज॒जित॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्त॑न्त्वा त्वा सरि॒ष्ष्यन्तँ॒ ब्वाज॒जित॑म्। स॒रि॒ष्ष्यन्तँ॒ब्वाज॒जितँ॒ब्वाज॒जित॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्त॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्तँ॒ ब्वाज॒जित॒ꣳ सꣳ सँ॒ब्वा॑ज॒जित॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्त॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्तँ॒ब्वाज॒जित॒ꣳ सम्। ब्वा॒ज॒जित॒ꣳ सꣳ सँ॒ब्वा॑ज॒जितँ॒ब्वाज॒जित॒ꣳ सम्मा॑ज्र्मिर्म माज्र्मि॒र्म सँ॒ब्वा॑ज॒जितँ॒ ब्वाज॒जित॒ꣳ सम्मा॑ज्र्मिर्म । ब्वा॒ज॒जित॒मिति॑ वाज॒ जित॑म्। सम्मा॑ज्र्मिर्म माज्र्मि॒र्म सꣳ सम्मा॑ज्र्मि॒र्म नमो॒ नमो॑ माज्र्मि॒र्म सꣳ सम्मा॑ज्र्मि॒र्म नम॑ः[1]। मा॒ज्र्मि॒र्म नमो॒ नमो॑ माज्र्मिर्म माज्र्मि॒र्म नमो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॒ नमो॑ माज्र्मिर्म माज्र्मि॒र्म नमो॑ दे॒वेब्भ्य॑ः॥ नमो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॒ नमो॒ नमो॑ दे॒वेब्भ्य॑ः स्व॒धा स्व॒धा दे॒वेब्भ्यो॒ नमो॒ नमो॑ दे॒वेब्भ्य॑ः स्व॒धा। दे॒वेब्भ्य॑ः स्व॒धा स्व॒धा दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑ः स्व॒धा पि॒तृब्भ्य॑ः पि॒तृब्भ्य॑ः स्व॒धा दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑ः स्व॒धा पि॒तृब्भ्य॑ः। स्व॒धा पि॒तृब्भ्य॑ः पि॒तृब्भ्य॑ः स्व॒धा स्व॒धा पि॒तृब्भ्य॑ः सु॒यमे॑ सु॒यमे॑ पि॒तृब्भ्य॑ः स्व॒धा स्व॒धा पि॒तृब्भ्य॑ः सु॒यमे॑। पि॒तृब्भ्य॑ः सु॒यमे॑ सु॒यमे॑ पि॒तृब्भ्य॑ः पि॒तृब्भ्य॑ः सु॒यमे॑ मे मे

[1]. वा.प्रा.२.३९. के अनुसार नमः पद आद्युदात्त होता है।

सुयमें पितृभ्य॑ः पितृभ्य॑ः सुयमें मे। पितृभ्यऽ इति॑ पितृ भ्य॑ः[1]। सुयमें मे मे सुयमें सुयमें मे भूयास्तम्भूयास्तम्मे सुयमें सुयमें मे भूयास्तम्। सुयमेऽ इति॑ सु यमें। मे भूयास्तम्भूयास्तम्मे मे भूयास्तमस्कं॑न्नमस्कं॑न्नम्भूयास्तम्मे मे भूया-स्तमस्कं॑न्नम्[2]। भूयास्तमस्कं॑न्नमस्कं॑न्नम्भूयास्तम्भूयास्तमस्कं॑न्नमद्याद्यास्कं॑न्न-म्भूयास्तम्भूयास्तमस्कं॑न्नमद्य॥७॥

अस्कं॑न्नमद्याद्यास्कं॑न्नमस्कं॑न्नमद्य देवेभ्यो॑ देवेभ्योद्यास्कं॑न्नमस्कं॑न्नमद्य देवेभ्य॑ः। अद्य देवेभ्यो॑ देवेभ्योद्याद्य देवेभ्यऽ आज्ज्यमाज्ज्य॑न्देवेभ्योद्याद्य देवेभ्यऽ आज्ज्य॑म्। देवेभ्यऽ आज्ज्यमाज्ज्य॑न्देवेभ्यो॑ देवेभ्यऽ आज्ज्यꣳ सꣳ समाज्ज्य॑न्देवेभ्यो॑ देवेभ्यऽ आज्ज्यꣳ सम्। आज्ज्यꣳ सꣳ समाज्ज्यमाज्ज्यꣳ सम्भ्रि॑यासम्भ्रियासꣳ समाज्ज्यमाज्ज्यꣳ सम्भ्रि॑यासम्। सम्भ्रि॑यासम्भ्रियासꣳ सꣳ सम्भ्रि॑यासमङ्ग्रि॑णाङ्ग्रि॑णा ब्भ्रियासꣳ सꣳ सम्भ्रि॑यासमङ्ग्रि॑णा। भ्रियासमङ्ग्रि॑-णाङ्ग्रि॑णा ब्भ्रियासम्भ्रियासमङ्ग्रि॑णा व्विष्ण्णो व्विष्ण्णोङ्ग्रि॑णा ब्भ्रियासम्भ्रियासम-ङ्ग्रि॑णा व्विष्ण्णो। अङ्ग्रि॑णा व्विष्ण्णो व्विष्ण्णोङ्ग्रिणाङ्ग्रि॑णा व्विष्ण्णो मा मा व्विष्ण्णोङ्ग्रि-णाङ्ग्रि॑णा व्विष्ण्णो मा। व्विष्ण्णो मा मा व्वि॑ष्ण्णो व्विष्ण्णो मा त्वा॑ त्वा मा व्वि॑ष्ण्णो व्विष्ण्णो मा त्वा॑। व्विष्ण्णोऽ इति॑ विष्ण्णो। मा त्वा॑ त्वा मा मा त्वावाव॑ त्वा मा मा त्वाव॑। त्वावाव॑ त्वा त्वाव॑ क्क्रमिषङ्क्रमिषमव॑ त्वा त्वाव॑ क्क्रमिषम्। अव॑ क्क्रमि-षङ्क्रमिषमवाव॑ क्क्रमिषँव्वसुं॑मती॑व्वसुं॑मतीङ्क्रमिषमवाव॑ क्क्रमिषँव्वसुं॑मतीम्। क्रमिषँव्वसुं-मती॑व्वसुं॑मतीङ्क्रमिषङ्क्रमिषँव्वसुं॑मतीमग्ग्नेग्ग्ने व्वसुं॑मतीङ्क्रमिषङ्क्रमिषँव्वसुं॑मतीमग्ग्ने। व्वसुं॑मतीमग्ग्नेग्ग्ने व्वसुं॑मती॑व्वसुं॑मतीमग्ग्ने ते तेग्ग्ने व्वसुं॑मती॑व्वसुं॑मतीमग्ग्ने ते।[3] व्वसुंम-

---

1. वा.प्रा.१.८८. के अनुसार ऋकार सावग्रह पद के पूर्वपद के अन्त में आता है(समस्तपद के अन्त में नहीं आता है)।

2. वा. प्रा. २.३. के अनुसार यहाँ में पद अनुदात्त है।

3. वा.प्रा.२.५. के अनुसार यहाँ ते पद अनुदात्त है।

ती॒मिति॒ वसु॑ मतीम्। अ॒ग्ग्ने॒ ते॒ ते॒ग्ग्नेग्ग्ने॒ ते॒ च्छा॒याञ्छा॒यान्तेँग्ग्नेग्ग्ने ते च्छा॒याम्[1]। ते॒ च्छा॒याञ्छा॒यान्तेँ ते च्छा॒यामुपोप॑ च्छा॒यान्तेँ ते च्छा॒यामुप॑। छा॒यामुपोप॑ च्छा॒याञ्छा॒यामुप॑ स्त्थेष॑ꣳ स्थेष॒मुप॑ च्छा॒याञ्छा॒यामुप॑ स्त्थेषम्। उप॑ स्त्थेष॑ꣳ स्थेष॒मुपोप॑ स्त्थेषँ॒ब्विष्ण्णो॒र्ब्विष्ण्णो॑ स्त्थेष॒मुपोप॑ स्त्थेषँ॒ब्विष्ण्णो॑ः। स्थे॒षँ॒ब्विष्ण्णो॒र्ब्वि-ष्ण्णो॑ स्त्थेष॑ꣳ स्थेषँ॒ब्विष्ण्णो॒ स्त्थान॒ꣳ स्थानँ॒ब्विष्ण्णो॑ स्त्थेष॑ꣳ स्थेषँ॒ब्विष्ण्णो॒ स्त्थान॑म्। ब्विष्ण्णो॒ स्त्थान॒ꣳ स्थानँ॒ब्विष्ण्णो॒र्ब्विष्ण्णो॒ स्त्थान॑मस्यसि॒ स्त्थानँ॒ब्वि-ष्ण्णो॒र्ब्विष्ण्णो॒ स्त्थान॑मसि। स्थान॑मस्यसि॒ स्त्थान॒ꣳ स्थान॑मसी॒तऽ इ॒तो॒सि॒ स्त्थान॒ꣳ स्थान॑मसी॒तः। अ॒सी॒तऽ इ॒तो॒स्यसी॒तऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्र॑ऽ इ॒तो॒स्यसी॒तऽ इन्द्र॑ः। इ॒तऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्र॑ऽ इ॒तऽ इ॒तऽ इन्द्रो॑ ब्वी॒र्य्यँ॑ब्वी॒र्य्य॒मिन्द्र॑ऽ इ॒तऽ इ॒तऽ इन्द्रो॑ ब्वी॒र्य्य॑म्। इन्द्रो॑ ब्वी॒र्य्यँ॑ब्वी॒र्य्य॒मिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ ब्वी॒र्य्य॑मकृणोदकृणोद्वी॒र्य्य॒मिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ ब्वी॒र्य्य॑मकृणोत्। ब्वी॒र्य्य॑मकृणोदकृणोद्वी॒र्य्यँ॑ब्वी॒र्य्य॑मकृणोदू॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो॒कृणोद्वी॒र्य्यँ॑ब्वी॒-र्य्य॑मकृणोदू॒र्द्ध्वः। अ॒कृ॒णो॒दू॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो॒कृणोदकृणोदू॒र्द्ध्वो॒द्ध्व॒रो॒द्ध्व॒रऽ ऊ॒र्द्ध्वो॒कृणोदकृणो-दू॒र्द्ध्वो॒द्ध्व॒रः। ऊ॒र्द्ध्वो॒द्ध्व॒रो॒द्ध्व॒रऽ ऊ॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो॒द्ध्व॒रऽ आस्त्थो॑दस्त्था॒दाद्ध्व॒रऽ ऊ॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो॒द्ध्व॒रऽ आस्त्था॑त्। अ॒द्ध्व॒रऽ आस्त्था॑दस्त्था॒दाद्ध्व॒रो॒द्ध्व॒रऽ आस्त्था॑त्। आस्त्था॑त्। अ॒स्त्था॒दित्त्य॑स्त्थात्॥८॥

अग्ग्ने॒ ब्वेर्ब्वेरग्ग्नेग्ग्ने॒ ब्वेर्हो॒त्त्रꣳ हो॒त्त्रँब्वेरग्ग्नेग्ग्ने॒ ब्वेर्हो॒त्त्रम्। ब्वेर्हो॒त्त्रꣳ हो॒त्त्रँब्वे ब्वेर्हो॒त्त्रँब्वेर्ब्वेर्हो॒त्त्रँब्वेर्ब्वेर्हो॒त्त्रँब्वेः। हो॒त्त्रँब्वेर्ब्वेर्हो॒त्त्रꣳ हो॒त्त्रँब्वेर्दू॒त्त्य॒न्दू॒त्त्यँ॒ब्वेर्हो॒त्त्रꣳ हो॒त्त्रँब्वेर्दू॒त्त्य॒म्। ब्वेर्दू॒त्त्य॒न्दू॒त्त्यँ॒ब्वेर्ब्वेर्दू॒त्त्य॒मव॑तामव॑तान्दू॒त्त्यँ॒ब्वेर्ब्वेर्दू॒त्त्य॒मव॑ताम्। दू॒त्त्य॒मव॑ता॒मव॑तान्दू॒त्त्य॒-न्दू॒त्त्य॒मव॑ता॒न्त्वान्त्वामव॑तान्दू॒त्त्य॒न्दू॒त्त्य॒मव॑ता॒न्त्वाम्। अव॑ता॒न्त्वान्त्वामव॑ता॒म-व॑ता॒न्त्वान्द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी त्वामव॑ता॒मव॑ता॒न्त्वान्द्यावा॑पृथि॒वी। त्वान्द्या-

[1]. स्वरश्छकारे चकारेण सर्वत्र (वा. प्रा. ४.२५) इस सूत्र के अनुसार छकार बाद में होने पर स्वर सर्वत्र चकार से व्यवहित होता है।

वा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी त्वान्त्वान्द्यावा॑पृथि॒वीऽ अवाव॒ द्यावा॑पृथि॒वी त्वान्त्वान्द्या-
वा॑पृथि॒वीऽ अवं॑। द्यावा॑पृथि॒वीऽ अवाव॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वीऽ अव॒ त्वन्त्वमव॒
द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वीऽ अव॒ त्वम्। द्यावा॑पृथि॒वीऽ इति॒ द्यावा॑पृथि॒वी। अव॒
त्वन्त्वमवाव॒ त्वन्द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी त्वमवाव॒ त्वन्द्यावा॑पृथि॒वी। त्वन्द्या-
वा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी त्वन्त्वन्द्यावा॑पृथि॒वी स्वि॑ष्ट॒कृत्स्वि॑ष्ट॒कृद्द्यावा॑पृथि॒वी त्व-
न्त्वन्द्यावा॑पृथि॒वी स्वि॑ष्ट॒कृत्। द्यावा॑पृथि॒वी स्वि॑ष्ट॒कृत्स्वि॑ष्ट॒कृद्द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑-
पृथि॒वी स्वि॑ष्ट॒कृद्दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यः॑ स्विष्ट॒कृद्द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी स्वि॑ष्ट॒कृद्दे॒वे-
भ्यः॑। द्यावा॑पृथि॒वीऽ इति॒ द्यावा॑पृथि॒वी। स्वि॒ष्ट॒कृद्दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यः॑ स्वि॒ष्ट॒कृ-
त्स्वि॑ष्ट॒कृद्दे॒वेभ्य॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ दे॒वेभ्यः॑ स्विष्ट॒कृत्स्वि॑ष्ट॒कृद्दे॒वेभ्य॒ऽ इन्द्रः॑[1]।
स्वि॒ष्ट॒कृदिति॑ स्विष्ट॒ कृत्। दे॒वेभ्य॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ऽ इन्द्र॒ऽ
आज्ज्ये॒नाज्ज्ये॒नेन्द्रो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ऽ इन्द्र॒ऽ आज्ज्ये॑न। इन्द्र॒ऽ आज्ज्ये॒नाज्ज्ये॒ने-
न्द्र॒ऽ इन्द्र॒ऽ आज्ज्ये॑न ह॒विषा॑ ह॒विषाज्ज्ये॒नेन्द्र॒ऽ इन्द्र॒ऽ आज्ज्ये॑न ह॒विषा॑। आज्ज्ये॑न
ह॒विषा॑ ह॒विषाज्ज्ये॒नाज्ज्ये॑न ह॒विषा॑ भूद् भूद्ध॒विषाज्ज्ये॒नाज्ज्ये॑न ह॒विषा॑ भूत्।[2]
ह॒विषा॑ भूद् भूद्ध॒विषा॑ ह॒विषा॑ भू॒त्स्वाहा॒ स्वाहा॑ भूद्ध॒विषा॑ ह॒विषा॑ भू॒त्स्वाहा॑।
भू॒त्स्वाहा॒ स्वाहा॑ भूद् भू॒त्स्वाहा॒ सꣳ सꣳ स्वाहा॑ भूद् भू॒त्स्वाहा॒ सम्। स्वाहा॒
सꣳ सꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सञ्ज्योति॑षा॒ ज्योति॑षा॒ सꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सञ्ज्योति॑-
षा। सञ्ज्योति॑षा॒ ज्योति॑षा॒ सꣳ सञ्ज्योति॑षा॒ ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॑षा॒ सꣳ

---

[1]. देवेभ्यः इन्द्रः यहाँ पर कण्ठ्यपूर्वो यकारमरिफितः (वा. प्रा. ४.३८) इस सूत्र से देवेभ्यः का विसर्ग यकार हो गया। यवयोः पदान्तयोः स्वरमध्ये लोपः (वा. प्रा. ४.१२७) इस सूत्र से यकार का लोप हुआ। न परकालः पूर्वकाले पुनः (वा. प्रा. ३.४) इस सूत्र से यहाँ गुण सन्धि का निषेध हुआ।

[2]. भूत हविषा यहाँ ह्श्च तस्मात्पूर्वचतुर्थम्(वा.प्रा.४.१२४) के अनुसार हकार पूर्ववर्ती वर्ण का चतुर्थ होता है। वा.प्रा.४.१२०. के अनुसार तकार का दकार विहित है। वा.प्रा.३.३. के अनुसार सन्धिकार्य पदान्त तथा पदादि में होता है। ह्श्च तस्मात्पूर्वचतुर्थम् ज्यो.२११. में इसी सूत्र से दकार तथा धकार होना बताया गया है।

सञ्ज्योतिंषा ज्योतिंः। ज्योतिंषा ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिंषा ज्योतिंषा ज्योतिंः। ज्योतिरिति ज्योतिंः ॥९॥

मयीदमिदम्मयि मयीदमिन्द्रऽ इन्द्रंऽ इदम्मयि मयीदमिन्द्रंः। इदमिन्द्रऽ इन्द्रंऽ इदमिदमिन्द्रंऽ इन्द्रियमिंन्द्रियमिन्द्रंऽ इदमिदमिन्द्रंऽ इन्द्रियम्। इन्द्रंऽ इन्द्रियमिंन्द्रियमिन्द्रऽ इन्द्रंऽ इन्द्रियन्दंधातु दधात्विन्द्रियमिन्द्रऽ इन्द्रंऽ इन्द्रियन्दंधातु। इन्द्रियन्दंधातु दधात्विन्द्रियमिंन्द्रियन्दंधात्वस्म्मानस्म्मान्दंधात्विन्द्रियमिंन्द्रियन्दंधात्वस्म्मान्। दधात्वस्म्मानस्म्मान्दंधातु दधात्वस्म्मान्नायो रायोस्म्मान्दंधातु दधात्वस्म्मान्नायंः।[1] अस्म्मान्नायो रायोस्म्मानस्म्मान्नायों मघवांनो मघवांनो रायोस्म्मानस्म्मान्नायों मघवांनः। रायों मघवांनो मघवांनो रायो रायों मघवांनः सचन्ताꣳ सचन्ताम्मघवांनो रायो रायों मघवांनः सचन्ताम्।[2] मघवांनः सचन्ताꣳ सचन्ताम्मघवांनो मघवांनः सचन्तामस्म्माकमस्म्माकꣳ सचन्ताम्मघवांनो मघवांनः सचन्तामस्म्माकम्। मघवांनऽ इति मघ व्वांनः। सचन्तामस्म्माकमस्म्माकꣳ सचन्ताꣳ सचन्तामस्म्माकꣳ सन्तु सन्त्वस्म्माकꣳ सचन्ताꣳ सचन्तामस्म्माकꣳ सन्तु॥ अस्म्माकꣳ सन्तु सन्त्वस्म्माकमस्म्माकꣳ सन्त्वाशिषंऽ आशिषंः सन्त्वस्म्माकमस्म्माकꣳ सन्त्वाशिषंः। सन्त्वाशिषंऽ आशिषंः सन्तु सन्त्वाशिषंः सत्त्याः सत्त्याऽ आशिषंः सन्तु सन्त्वाशिषंः सत्त्याः। आशिषंः सत्त्याः सत्त्याऽ आशिषंऽ आशिषंः सत्त्या नों नः सत्त्याऽ आशिषंऽ आशिषंः सत्त्या नंः।[3] आशिषऽ इत्त्या शिषंः। सत्त्या नों नः सत्त्याः सत्त्या नंः सन्तु सन्तु नः सत्त्याः सत्त्या

[1]. वा.प्रा.२.४२. के अनुसार यहाँ रायः पद आद्युदात्त है।

[2]. मघवानः सचन्ताम् यहाँ वा.प्रा.४.११६. के अनुसार विसर्जनीय के द्वित्व का निषेध है।

[3]. सत्याः नः यहाँ लोपं धौ(वा.प्रा.४.३९) इश सूत्र से धि संज्ञक व्यञ्जन परे होने पर अरिफित कण्ठ्यपूर्व विसर्ग का लोप होता है। वा.प्रा.१.५३. के अनुसार नकार धिसंज्ञक है।

नः सन्तु। नः सन्तु सन्तु नो नः सन्त्वाशिषऽ आशिषः सन्तु नो नः सन्त्वाशिषः। सन्त्वाशिषऽ आशिषः सन्तु सन्त्वाशिषऽ उपहूतोपहूताशिषः सन्तु सन्त्वाशिषऽ उपहूता। आशिषऽ उपहूतोपहूताशिषऽ आशिषऽ उपहूता पृथिवी पृथिव्युपहूताशिषऽ आशिषऽ उपहूता पृथिवी। आशिषऽ इत्या शिषः। उपहूता पृथिवी पृथिव्युपहूतोपहूता पृथिवी माता माता पृथिव्युपहूतोपहूता पृथिवी माता। उपहूतेत्युप हूता। पृथिवी माता माता पृथिवी पृथिवी मातोपोप माता पृथिवी पृथिवी मातोप। मातोपोप माता मातोप माम्मामुप माता मातोप माम्। उप माम्मामुपोप माम्पृथिवी पृथिवी मामुपोप माम्पृथिवी। माम्पृथिवी पृथिवी माम्माम्पृथिवी माता माता पृथिवी माम्माम्पृथिवी माता। पृथिवी माता माता पृथिवी पृथिवी माता ह्वयताꣳ ह्वयताम्माता पृथिवी पृथिवी माता ह्वयताम्। माता ह्वयताꣳ ह्वयताम्माता माता ह्वयतामग्निरग्निर्ह्वयताम्माता माता ह्वयतामग्निः। ह्वयतामग्निरग्निर्ह्वयताꣳ ह्वयतामग्निराग्नींध्रादाग्नींध्रादग्निर्ह्वयताꣳ ह्वयतामग्निराग्नींध्रात्[1]। अग्निराग्नींध्रादाग्नींध्रादग्निरग्निराग्नींध्रात्स्वाहा स्वाहाग्नींध्रादग्निरग्निराग्नींध्रात्स्वाहा। आग्नींध्रात्स्वाहा स्वाहाग्नींध्रादाग्नींध्रात्स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१०॥

उपहूतो द्यौर्द्यौरुपहूतऽ उपहूतो द्यौष्पिता पिता द्यौरुपहूतऽ उपहूतो द्यौष्पिता।[2] उपहूतऽ इत्युप हूतः। द्यौष्पिता पिता द्यौर्द्यौष्पितोपोप पिता द्यौर्द्यौष्पितोप। पितोपोप पिता पितोप माम्मामुप पिता पितोप माम्। उप माम्मामुपोप मान्द्यौर्द्यौर्म्मामुपोप मान्द्यौः। मान्द्यौर्द्यौर्म्माम्मान्द्यौष्पिता पिता

---

1. ह्वयताꣳ ह्वयताम् यहाँ अनुस्वार से परे होने के कारण द्वितीय ह्वयताम् के वकार का द्वित्व नहीं होगा। परं तु रेफहकाराभ्याम् (वा. मा. ४.१०२) सूत्र की प्रवृत्ति नहीं होगी। इस सूत्र के भाष्यकार अनन्त ने स्वर परे रहने पर ही इस सूत्र से द्विरुक्ति होना बताया है। वा. मा. ८.२१.के अनुसार अनुस्वार स्वरों में परिगणित नहीं है। इसी प्रकार अग्निर्ह्वयताम् में भी वकार द्वित्व नहीं होगा।

2. द्यौः पिता यहाँ वा.प्रा.३.३४. के अनुसार विसर्जनीय षकार होता है।

द्यौर्म्माम्मान्द्यौष्ष्पिता। द्यौष्ष्पिता पिता द्यौर्द्यौष्ष्पिता ह्वयताᳪं ह्वयताम्पिता द्यौर्द्यौष्ष्पिता ह्वयताम्। पिता ह्वयताᳪं ह्वयताम्पिता पिता ह्वयतामग्निरग्निर्ह्वयताम्पिता पिता ह्वयतामग्निः। ह्वयतामग्निरग्निर्ह्वयताᳪं ह्वयतामग्निराग्नींद्धादाग्नींद्धादग्निर्ह्वयताᳪं ह्वयतामग्निराग्नींद्धात्। अग्निराग्नींद्धादाग्नींद्धादग्निरग्निराग्नींद्धात्त्स्वाहा स्वाहाग्नींद्धादग्निरग्निराग्नींद्धात्त्स्वाहा। आग्नींद्धात्त्स्वाहा स्वाहाग्नींद्धादाग्नींद्धात्त्स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ प्रतिं गृह्णामि गृह्णामि प्प्रति प्प्रतिं गृह्णाम्म्यग्ग्नेरग्ग्नेर्गृह्णामि प्प्रति प्प्रतिं गृह्णाम्म्यग्ग्नेः। गृह्णाम्म्यग्ग्नेरग्ग्नेर्गृह्णामि गृह्णाम्म्यग्ग्नेष्ट्वा त्वाग्ग्नेर्गृह्णामि गृह्णाम्म्यग्ग्नेष्ट्वा। अग्ग्नेष्ट्वा त्वाग्ग्नेरग्ग्नेष्ट्वास्स्येनास्स्येन त्वाग्ग्नेरग्ग्नेष्ट्वास्स्येन। त्वास्स्येनास्स्येन त्वा त्वास्स्येन प्प्र प्प्रास्स्येन त्वा त्वास्स्येन प्प्र। आस्स्येन प्प्र प्प्रास्स्येनास्स्येन प्प्राश्श्नाम्म्यश्श्नामि प्प्रास्स्येनास्स्येन प्प्राश्श्नामि। प्राश्श्नाम्म्यश्श्नामि प्प्र प्प्राश्श्नाम्म्येतमेतमश्श्नामि प्प्र प्प्राश्श्नाम्म्येतम्। अश्श्नाम्म्येतमेतमश्श्नाम्म्यश्श्नाम्म्येतन्ते तऽ एतमश्श्नाम्म्यश्श्नाम्म्येतन्ते॥११॥

एतन्ते तऽ एतमेतन्ते देव देव तऽ एतमेतन्ते देव। ते देव देव ते ते देव सवितः सवितर्द्देव ते ते देव सवितः। देव सवितः सवितर्द्देव देव सवितर्य्यज्ञᳪंय्यज्ञᳪं सवितर्द्देव देव सवितर्य्यज्ञम्[1]। सवितर्य्यज्ञᳪंय्यज्ञᳪं सवितः सवितर्य्यज्ञम्प्र प्प्र यज्ञᳪं सवितः सवितर्य्यज्ञम्प्र। यज्ञम्प्र प्प्र यज्ञᳪंय्यज्ञम्प्राहुराहुः प्प्र यज्ञᳪंय्यज्ञम्प्राहुः। प्राहुराहुः प्प्र प्प्राहुर्बृहस्स्पतये बृहस्स्पतयऽ आहुः प्प्र प्प्राहुर्बृहस्स्पतये।[2] आहुर्बृहस्स्पतये बृहस्स्पतयऽ आहुराहुर्बृहस्स्पतये ब्रह्मणे ब्रह्मणे बृहस्स्पतयऽ आहुराहुर्बृहस्स्पतये ब्रह्मणे। बृहस्स्पतये ब्रह्मणे ब्रह्मणे बृहस्स्पतये बृहस्स्पतये ब्रह्मणे तेन तेन ब्रह्मणे बृहस्स्पतये बृहस्स्पतये ब्रह्मणे तेन।

1. वा. प्रा. १.१६८. के अनुसार सवितः पद रिफित संज्ञक है।

ब्रह्मणे तेन तेनं ब्रह्मणें ब्रह्मणे तेनं यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञन्तेनं ब्रह्मणें ब्रह्मणे तेनं यज्ज्ञम्॥ तेनं यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञन्तेन तेनं यज्ज्ञमंवाव यज्ज्ञन्तेन तेनं यज्ज्ञमंव। यज्ज्ञमंवाव यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञमंव तेन तेनाव यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञमंव तेनं। अव तेन तेनांवाव तेनं यज्ज्ञपंतिँङ्यज्ज्ञपंतिन्तेनांवाव तेनं यज्ज्ञपंतिम्। तेनं यज्ज्ञपंतिँङ्यज्ज्ञपंतिन्तेन तेनं यज्ज्ञपंतिन्तेन तेनं यज्ज्ञपंतिन्तेन तेनं यज्ज्ञपंतिन्तेनं। यज्ज्ञपंतिन्तेन तेनं यज्ज्ञपंतिँङ्यज्ज्ञपंतिन्तेन माम्मान्तेनं यज्ज्ञपंतिँङ्यज्ज्ञपंतिन्तेन माम्। यज्ज्ञपंतिमितिं यज्ज्ञ पंतिम्। तेन माम्मान्तेन तेन मामंवाव मान्तेन तेन मामंव। मामंवाव माम्मामंव। अवेत्त्यंव॥१२॥

मनों जूतिर्ज्जूतिर्म्मनो मनों जूतिर्ज्जुंषताञ्जुषताञ्जूतिर्म्मनो मनों जूतिर्ज्जुंषताम्। जूतिर्ज्जुंषताञ्जुषताञ्जूतिर्ज्जूतिर्ज्जुंषतामाज्ज्यस्याज्ज्यंस्य जुषताञ्जूतिर्ज्जूतिर्ज्जुंषतामाज्ज्यंस्य। जुषतामाज्ज्यस्याज्ज्यंस्य जुषताञ्जुषतामाज्ज्यंस्य बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिराज्ज्यंस्य जुषताञ्जुषतामाज्ज्यंस्य बृहस्प्पतिं÷। आज्ज्यंस्य बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिराज्ज्यस्याज्ज्यंस्य बृहस्प्पतिंर्य्यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञम्बृहस्प्पतिराज्ज्यस्याज्ज्यंस्य बृहस्प्पतिंर्य्यज्ज्ञम्। बृहस्प्पतिंर्य्यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञम्बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिंर्य्यज्ज्ञमिममिमँङ्यज्ज्ञम्बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिंर्य्यज्ज्ञमिमम्। यज्ज्ञमिममिमँङ्यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञमिमन्तंनोतु तनोत्त्विमँङ्यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञमिमन्तंनोतु। इमन्तंनोतु तनोत्त्विममिमन्तंनोत्त्वरिंष्टमरिंष्टन्तनोत्त्विममिमन्तंनोत्त्वरिंष्टम्। तनोत्त्वरिंष्टमरिंष्टन्तनोतु तनोत्त्वरिंष्टँङ्यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञमरिंष्टन्तनोतु तनोत्त्वरिंष्टँङ्यज्ज्ञम्। अरिंष्टँङ्यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञमरिंष्टमरिंष्टँङ्यज्ज्ञꣳ सꣳ सँङ्यज्ज्ञमरिंष्टमरिंष्टँङ्यज्ज्ञꣳ सम्। यज्ज्ञꣳ सꣳ सँङ्यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञꣳ समिममिमꣳ सँङ्यज्ज्ञँङ्यज्ज्ञꣳ समिमम्। समिममिमꣳ सꣳ

---

[2]. आहुः बृहस्पतये यहाँ रेफं स्वरधौ(वा.प्रा.४.३७) से विसर्जनीय रेफ होता है। परं तु रेफहकाराभ्याम्(वा.प्रा.४.१०२) से बकार का द्वित्व प्राप्त है परन्तु ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११३) से द्वित्व का निषेध है।

समि॒मन्द॑धातु दधात्त्वि॒मꣳ सꣳ समि॒मन्द॑धातु। इ॒मन्द॑धातु दधात्त्वि॒ममि॒मन्द॑-धातु। द॒धा॒त्त्विति॑ दधातु॥ व्विश्वे॑ दे॒वासो॑ दे॒वासो॒ व्विश्वे॒ व्विश्वे॑ दे॒वास॑ऽ इ॒हेह दे॒वासो॒ व्विश्वे॒ व्विश्वे॑ दे॒वास॑ऽ इ॒ह। दे॒वास॑ऽ इ॒हेह दे॒वासो॑ दे॒वास॑ऽ इ॒ह मा॑दयन्ताम्मादयन्ता-मि॒ह दे॒वासो॑ दे॒वास॑ऽ इ॒ह मा॑दयन्ताम्। इ॒ह मा॑दयन्ताम्मादयन्तामि॒हेह मा॑दय-न्ता॒मो३मो३म्मा॑दयन्तामि॒हेह मा॑दयन्ता॒मो३म्। मा॒द॒य॒न्ता॒मो३मो३म्मा॑दयन्ता-म्मादयन्ता॒मो३म्प्र प्प्रो३म्मा॑दयन्ताम्मादयन्ता॒मो३म्प्र[1]। ओ३म्प्र प्प्रो३मो३म्प्र तिं॑ष्ठ तिष्ठ॒ प्प्रो३मो३म्प्र तिं॑ष्ठ। प्र तिं॑ष्ठ तिष्ठ॒ प्प्र प्प्र तिं॑ष्ठ। ति॒ष्ठेति॑ तिष्ठ॥१३॥

ए॒षा ते॑ तऽ ए॒षैषा ते॑ऽ अग्ग्नेग्ग्ने तऽ ए॒षैषा ते॑ऽ अग्ग्ने। ते॒ऽ अ॒ग्ग्ने॒ग्ग्ने॒ ते॒ ते॒ऽ अ॒ग्ग्ने॒ सु॒मित्त्सु॒मिद॑ग्ग्ने ते तेऽ अग्ग्ने सु॒मित्। अ॒ग्ग्ने॒ सु॒मित्त्सु॒मिद॑ग्ग्नेग्ग्ने सु॒मित्तया॒ तया॑ सु॒मिद॑ग्ग्नेग्ग्ने सु॒मित्तया॑। सु॒मित्तया॒ तया॑ सु॒मित्त्सु॒मित्तया॒ व्वर्द्ध॑स्व॒ व्वर्द्ध॑स्व॒ तया॑ सु॒मित्त्सु॒मित्तया॒ व्वर्द्ध॑स्व। सु॒मिदिति॑ सु॒म् इ॒त्। तया॒ व्वर्द्ध॑स्व॒ व्वर्द्ध॑स्व॒ तया॒ तया॒ व्वर्द्ध॑स्व च च॒ व्वर्द्ध॑स्व॒ तया॒ तया॒ व्वर्द्ध॑स्व च। व्वर्द्ध॑स्व च च॒ व्वर्द्ध॑स्व॒ व्वर्द्ध॑स्व॒ चा च॒ चा च॒ व्वर्द्ध॑स्व॒ व्वर्द्ध॑स्व॒ चा च॑। चा च॒ चा च॒ चा च॑ प्प्यायस्व प्प्यायस्व॒ चा च॒ चा च॑ प्प्यायस्व। आ च॑। च॒ प्प्या॒य॒स्व॒ प्प्या॒य॒स्व॒ च॒ च॒ प्प्या॒य॒स्व॒। प्या॒य॒स्वेति॑ प्प्यायस्व॥ व्व॒र्द्धि॒षी॒महि॑ च च व्वर्द्धि॒षी॒महि॑ व्वर्द्धि॒षी॒महि॑ च व्व॒यँव्व॒यञ्च॑ व्वर्द्धि॒षी॒महि॑ व्वर्द्धि॒षी॒महि॑ च व्व॒यम्। च॒ व्व॒यँव्व॒यञ्च॑ च व्व॒यमा च॒ चा व॒यञ्च॑ च व्व॒यमा च॑। व्व॒यमा च॒ चा व॒यँव्व॒यमा च॑ प्प्यासिषीमहि प्प्यासिषीमहि॒ चा व॒यँव्व॒यमा च॑ प्प्यासिषीमहि। आ च॑। च॒ प्प्या॒सि॒षी॒म॒हि॒ प्प्या॒सि॒षी॒म॒हि॒ च॒ च॒ प्प्या॒सि॒षी॒म॒हि॒। प्या॒सि॒षी॒म॒हीति॑

---

[1]. वा. प्रा. २.५१. के अनुसार प्रणव सर्वोदात्त एवं तीन मात्राओं का होता है। प्र ओ३म् की सन्धि में सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ(वा.प्रा.४.५८) इस सूत्र से अ परवर्ती ओ३ के साथ औ नहीं होगा। इस सम्बन्ध में ज्यो. वृ. पृ.२२९ का विशेष वचन इस प्रकार है- सपूर्वाकार ओङ्कारः प्रयात्योम्भावमत्र हि॥८॥ पूर्वेण अकारेण सहित ॐ शब्दो जटायाम् ओम्भावं प्रयाति। यथा- ओम्प्रप्पोमोम्प्र०(पद २।१३ सं.२।१३ जटा) अत्र ओमाङोश्च(पा.६।१।९५) इत्यनेन पररूपत्वम्।

प्प्यासिषीमहि॥ सुसुवाꣳसँव्वाजुजितँव्वाजुजितꣳ ससुवाꣳसꣳ ससुवाꣳसँव्वाजु-
जितम्। सुसूवाꣳसुमिति ससू व्वाꣳसम्। व्वाजुजितुमिति वाजु जितम्॥१४॥

अुग्ग्नीषोमयोरुज्जितिमुज्जितिमुग्ग्नीषोमयोरुग्ग्नीषोमयोरुज्जितिमन्न्वनूज्जि-
तिमुग्ग्नीषोमयोरुग्ग्नीषोमयोरुज्जितिमनु[1]। उज्जितिमन्न्वनूज्जितिमुज्जितिमनूदुद-
न्न्वनूज्जितिमुज्जितिमनूत्। उज्जितिमित्युत् जितिम्। अनूदुदन्न्वनूज्जेषञ्जेषमुद-
न्न्वनूज्जेषम्[2]। उज्जेषञ्जेषमुदुज्जेषँव्वाजस्य व्वाजस्य जेषमुदुज्जेषँव्वाजस्य। जेषँ-
व्वाजस्यु व्वाजस्य जेषञ्जेषँव्वाजस्य मा मा व्वाजस्य जेषञ्जेषँव्वाजस्य मा। व्वाजस्य
मा मा व्वाजस्यु व्वाजस्य मा प्प्रसुवेनं प्प्रसुवेनं मा व्वाजस्यु व्वाजस्य मा प्प्रसुवेनं।
मा प्प्रसुवेनं प्प्रसुवेनं मा मा प्प्रसुवेनु प्प्र प्प्र प्प्रसुवेनं मा मा प्प्रसुवेनु प्प्र। प्रसुवेनु
प्प्र प्प्र प्प्रसुवेनं प्प्रसुवेनु प्प्रोहाम्म्यूहामि प्प्र प्प्रसुवेनं प्प्रसुवेनु प्प्रोहामि। प्रसुवे-
नेति प्प्र सुवेनं। प्रोहाम्म्यूहामि प्प्र प्प्रोहाम्म्युग्ग्नीषोमावुग्ग्नीषोमाऽ ऊहामि प्प्र
प्प्रोहाम्म्युग्ग्नीषोमौ। ऊहाम्म्युग्ग्नीषोमावुग्ग्नीषोमाऽ ऊहाम्म्यूहाम्म्युग्ग्नीषोमौ
तन्तमुग्ग्नीषोमाऽ ऊहाम्म्यूहाम्म्युग्ग्नीषोमौ तम्॥ अुग्ग्नीषोमौ तन्तमुग्ग्नीषोमा-
वुग्ग्नीषोमौ तमपापु तमुग्ग्नीषोमावुग्ग्नीषोमौ तमपं। तमपापु तन्तमपं नुदतान्नुद-
तामपु तन्तमपं नुदताम्। अपं नुदतान्नुदतामपापं नुदताँव्वाजस्यु व्वाजस्य नुदता-
मपापं नुदताँव्वाजस्य। नुदताँव्वाजस्यु व्वाजस्य नुदतान्नुदताँव्वाजस्यैनमेनँव्वाजस्य
नुदतान्नुदताँव्वाजस्यैनम्। व्वाजस्यैनमेनँव्वाजस्यु व्वाजस्यैनम्प्रसुवेनं प्प्रसुवेनैनँ-
व्वाजस्यु व्वाजस्यैनम्प्रसुवेनं। एुनम्प्रसुवेनं प्प्रसुवेनैनमेनम्प्रसुवेनापापं प्प्रसुवेनै-
नमेनम्प्रसुवेनापं। प्रसुवेनापापं प्प्रसुवेनं प्प्रसुवेनापोहाम्म्यूहाम्म्यपं प्प्रसुवेनं
प्प्रसुवेनापोहामि। प्रसुवेनेति प्प्र सुवेनं। अपोहाम्म्यूहाम्म्यपापोहामीन्द्राग्ग्यो-

---

[1]. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि(वा.प्रा.२.४८) इस सूत्र के अनुसार आमन्त्रित न होने से अुग्नीषोमयोः यह पद द्विरुदात है।

[2]. वा. प्रा. ६.८. के अनुसार उज्जेषम् बाद में होने के कारण यहाँ अनु पद अनुदात नहीं है।

रिंन्द्राग्ग्योरूंहाम्म्यपापोंहामीन्द्राग्ग्योः। ऊहामीन्द्राग्ग्योरिंन्द्राग्ग्योरूंहाम्म्यूहामीन्द्राग्ग्योरिंन्द्राग्ग्नीऽ इंन्द्राग्ग्नीऽ इंन्द्राग्ग्योरूंहाम्म्यूहामीन्द्राग्ग्योरिंन्द्राग्ग्नी[1]॥ इन्द्राग्ग्योरिंन्द्राग्ग्नीऽ इंन्द्राग्ग्नीऽ इंन्द्राग्ग्योरिंन्द्राग्ग्योरिंन्द्राग्ग्नी व्वसुंब्भ्यो व्वसुंब्भ्यऽ इन्द्राग्ग्नीऽ इंन्द्राग्ग्योरिंन्द्राग्ग्योरिंन्द्राग्ग्नी व्वसुंब्भ्यः॥ इन्द्राग्ग्नी व्वसुंब्भ्यो व्वसुंब्भ्यऽ इन्द्राग्ग्नीऽ इंन्द्राग्ग्नी व्वसुंब्भ्यस्त्त्वा त्त्वा व्वसुंब्भ्यऽ इन्द्राग्ग्नीऽ इंन्द्राग्ग्नी व्वसुंब्भ्यस्त्त्वा। इन्द्राग्ग्नीऽ इतींन्द्राग्ग्नी॥१५॥

व्वसुंब्भ्यस्त्त्वा त्त्वा व्वसुंब्भ्यो व्वसुंब्भ्यस्त्त्वा रुद्द्रेब्भ्यों रुद्द्रेब्भ्यंस्त्त्वा व्वसुंब्भ्यो व्वसुंब्भ्यस्त्त्वा रुद्द्रेब्भ्यंः। व्वसुंब्भ्यऽ इति वसु भ्यः। त्त्वा रुद्द्रेब्भ्यों रुद्द्रेब्भ्यंस्त्त्वा त्त्वा रुद्द्रेब्भ्यंऽ आदित्त्येब्भ्यंऽ आदित्त्येब्भ्यों रुद्द्रेब्भ्यंस्त्त्वा त्त्वा रुद्द्रेब्भ्यंऽ आदित्त्येब्भ्यंः। रुद्द्रेब्भ्यंऽ आदित्त्येब्भ्यंऽ आदित्त्येब्भ्यों रुद्द्रेब्भ्यों रुद्द्रेब्भ्यंऽ आदित्त्येब्भ्यः सꣳ समांदित्त्येब्भ्यों रुद्द्रेब्भ्यों रुद्द्रेब्भ्यंऽ आदित्त्येब्भ्यः सम्। आदित्त्येब्भ्यः सꣳ समांदित्त्येब्भ्यंऽ आदित्त्येब्भ्यः सञ्ज्ञांनाथाञ्ज्ञानाथाꣳ समांदित्त्येब्भ्यंऽ आदित्त्येब्भ्यः सञ्ज्ञांनाथाम्। सञ्ज्ञांनाथाञ्ज्ञानाथाꣳ सꣳ संञ्ज्ञानाथान्द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी जानाथाꣳ सꣳ सञ्ज्ञांनाथान्द्यावापृथिवी। जानाथान्द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी जानाथाञ्ज्ञानाथान्द्यावापृथिवी मित्त्रावरुंणौ मित्त्रावरुंणौ द्यावापृथिवी जानाथाञ्ज्ञानाथान्द्यावापृथिवी मित्त्रावरुंणौ[2]। द्यावापृथिवी मित्त्रावरुंणौ मित्त्रावरुंणौ द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी मित्त्रावरुंणौ त्त्वा त्त्वा मित्त्रावरुंणौ द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी मित्त्रावरुंणौ त्त्वा। द्यावापृथिवीऽ इतिं द्यावापृथिवी। मित्त्रावरुंणौ त्त्वा त्त्वा मित्त्रावरुंणौ मित्त्रावरुंणौ त्त्वा व्वृष्ट्या व्वृष्ट्यां त्त्वा मित्त्रावरुंणौ मित्त्रावरुंणौ त्त्वा

1. वा. प्रा. ३.९२. के अनुसार इन्द्राग्नी का नकार प्रकृति भाव से रहता है। वा.प्रा.२.५५. के अनुसार इन्द्राग्न्योः तथा इन्द्राग्नी पद अन्तोदात हैं।

2. वा.प्रा.२.४८. के अनुसार यहाँ मित्रावरुणौ पद द्विरुदात है।

वृष्ट्यां। त्वा वृष्ट्या वृष्ट्यां त्वा त्वा वृष्ट्यांवतामवतांवृष्ट्यां त्वा त्वा वृष्ट्यांवताम्। वृष्ट्यांवतामवतांवृष्ट्या वृष्ट्यांवतांध्यन्तु ध्यन्त्ववतांवृष्ट्या वृष्ट्यांवतांध्यन्तु। अव-तांध्यन्तु ध्यन्त्ववतामवतांध्यन्तु व्वयो व्वयो ध्यन्त्ववतामवतांध्यन्तु व्वयः॥ ध्यन्तु व्वयो व्वयो ध्यन्तु ध्यन्तु व्वयोक्कमक्कंव्वयो ध्यन्तु ध्यन्तु व्वयोक्कम्[1]। व्वयोक्कमक्कंव्वयो व्वयोक्कꣳ रिहाणा रिहाणाऽ अक्कंव्वयो व्वयोक्कꣳ रिहाणाः। अक्कꣳ रिहाणा रिहा-णाऽ अक्कमक्कꣳ रिहाणा मरुताम्मरुताꣳ रिहाणाऽ अक्कमक्कꣳ रिहाणा मरुताम् । रिहाणा मरुताम्मरुताꣳ रिहाणा रिहाणा मरुताम्पृषतीः पृषतीर्म्मरुताꣳ रिहाणा रिहाणा मरुताम्पृषतीः। मरुताम्पृषतीः पृषतीर्म्मरुताम्मरुताम्पृषती-र्ग्गच्छ गच्छ पृषतीर्म्मरुताम्मरुताम्पृषतीर्ग्गच्छ। पृषतीर्ग्गच्छ गच्छ पृषतीः पृषतीर्ग्गच्छ व्वशा व्वशा गच्छ पृषतीः पृषतीर्ग्गच्छ व्वशा। गच्छ व्वशा व्वशा गच्छ गच्छ व्वशा पृश्निः पृश्निर्व्वशा गच्छ गच्छ व्वशा पृश्निः। व्वशा पृश्निः पृश्निर्व्वशा व्वशा पृश्निर्भूत्वा भूत्वा पृश्निर्व्वशा व्वशा पृश्निर्भूत्वा। पृश्निर्भूत्वा भूत्वा पृश्निः पृश्निर्भूत्वा दिवन्दिवम्भूत्वा पृश्निः पृश्निर्भूत्वा दिवम्। भूत्वा दिवन्दिवम्भूत्वा भूत्वा दिवङ्गच्छ गच्छ दिवम्भूत्वा भूत्वा दिवङ्गच्छ। दिवङ्गच्छ गच्छ दिवन्दिवङ्गच्छ ततस्ततो गच्छ दिवन्दिवङ्गच्छ ततः। गच्छ ततस्ततो गच्छ गच्छ ततो नो नस्ततो गच्छ गच्छ ततो नः[2]। ततो नो नस्ततस्ततो नो वृष्टिंवृष्टिन्नस्ततस्ततो नो वृष्टिम्। नो वृष्टिंवृष्टिन्नो नो वृष्टिमा वह व्वहा वृष्टिन्नो नो वृष्टिमा वह। वृष्टिमा वह व्वहा वृष्टिंवृष्टिमा वह। आ वह। व्वहेति वह॥ चक्षुष्पाऽ अंग्नेग्ने चक्षुःपाश्चक्षुष्पाऽ अंग्नेस्यस्यग्ने चक्षुःपाश्चक्षुष्पाऽ अंग्नेसि।

---

[1]. अनुदात्तमाख्यातमामन्त्रितवत् (वा. प्रा. ६.१) इस सूत्र के अनुसार संबोधन पद की भाँति क्रिया पद भी अनुदात्त होता है। जिन कारणों से संबोधन पद अनुदात्त होता है, उन्हीं कारणों से क्रिया पद भी अनुदात्त होता है। वा. प्रा (२.१७) के अनुसार संबोधन पद का आद्युदात्तत्व भी निर्देशित है। वही नियम यहाँ भी लगने पर ध्यन्तु पद आद्युदात्त हो जाएगा।

[2] . नो नौ मे मदर्थे त्रिष्वेकेषु(वा.प्रा.२.३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ नः पद अनुदात्त है।

चक्षुःपाऽ इति चक्षुः पाः। अग्नेस्यस्यग्नेग्नेसि चक्षुश्चक्षुरस्यग्नेग्नेसि चक्षुः। असि चक्षुश्चक्षुरस्यसि चक्षुर्म्मे मे चक्षुरस्यसि चक्षुर्म्मे। चक्षुर्म्मे मे चक्षुश्चक्षुर्म्मे पाहि पाहि मे चक्षुश्चक्षुर्म्मे पाहि। मे पाहि पाहि मे मे पाहि। पाहीति पाहि॥१६॥

यम्परिधिम्परिधिँय्यँय्यम्परिधिम्पर्य्यधत्थाः पर्य्यधत्थाः परिधिँय्यँय्यम्परिधिम्पर्य्यधत्थाः। परिधिम्पर्य्यधत्थाः पर्य्यधत्थाः परिधिम्परिधिम्पर्य्यधत्थाऽ अग्नेग्ने पर्य्यधत्थाः परिधिम्परिधिम्पर्य्यधत्थाऽ अग्ने। परिधिमिति परि धिम्। पर्य्यधत्थाऽ अग्नेग्ने पर्य्यधत्थाः पर्य्यधत्थाऽ अग्ने देव देवाग्ने पर्य्यधत्थाः पर्य्यधत्थाऽ अग्ने देव। पर्य्यधत्थाऽ इति परि अधत्थाः। अग्ने देव देवाग्नेग्ने देव पणिभिः पणिभिर्द्देवाग्नेग्ने देव पणिभिः। देव पणिभिः पणिभिर्द्देव देव पणिभिर्ग्गुह्यमानो गुह्यमानः पणिभिर्द्देव देव पणिभिर्ग्गुह्यमानः। पणिभिर्ग्गुह्यमानो गुह्यमानः पणिभिः पणिभिर्ग्गुह्यमानः। पणिभिरिति पणि भिः। गुह्यमानऽ इति गुह्यमानः॥ तन्ते ते तन्तन्तऽ एतमेतन्ते तन्तन्तऽ एतम्। तऽ एतमेतन्ते तऽ एतमन्वन्वेतन्ते तऽ एतमनु। एतमन्वन्वेतमेतमनु जोषञ्जोषमन्वेतमेतमनु जोषम्। अनु जोषञ्जोषमन्वनु जोषम्भरामि भरामि जोषमन्वनु जोषम्भरामि। जोषम्भरामि भरामि जोषञ्जोषम्भराम्म्येषऽ एष भरामि जोषञ्जोषम्भराम्म्येषः। भराम्म्येषऽ एष भरामि भराम्म्येष न नैष भरामि भराम्म्येष न[1]। एष न नैषऽ एष नेदिन्नैषऽ एष नेत्। नेदिन्न नेत्त्वत्त्वदिन्न नेत्त्वत्। इत्त्वत्त्वदिदित्त्वदपचेतयाताऽ अपचेतयातै त्वदिदित्त्वदपचेतयातै[2]। त्वदपचेतयाताऽ अपचेतयातै त्वत्त्वदपचेतयाताऽ

---

[1]. वा.प्रा.३.१७. के अनुसार व्यञ्जन परे होने के कारण एषः नः यहाँ एषः के विसर्जनीय का लोप होता है।

[2]. वा.प्रा.६.१७. के अनुसार यहाँ अपचेतयातै यह क्रियापद अपने प्रकृति स्वर से युक्त होता है।

अग्नेरग्नेरपचेतयातै त्वत्त्वदपचेतयाताऽ अग्नेः। अपचेतयाताऽ अग्नेरग्नेरप-चेतयाताऽ अपचेतयाताऽ अग्नेः प्रियम्प्रियमग्नेरपचेतयाताऽ अपचेतयाताऽ अग्नेः प्रियम्। अपचेतयाताऽ इत्यप चेतयातै। अग्नेः प्रियम्प्रियमग्नेरग्नेः प्रियम्पाथः पाथः प्रियमग्नेरग्नेः प्रियम्पाथः। प्रियम्पाथः पाथः प्रिय-म्प्रियम्पाथोप्प्यपि पाथः प्रियम्प्रियम्पाथोपि। पाथोप्प्यपि पाथः पाथोपीत-मितमपि पाथः पाथोपीतम्। अपीतमितमप्प्यपीतम्। इतमितीतम्॥१७॥

सꣳस्रवभागा स्त्थ स्त्थ सꣳस्रवभागाः सꣳस्रवभागा स्त्थेषेषा स्त्थ सꣳस्रवभागाः सꣳस्रवभागा स्त्थेषा[1]। सꣳस्रवभागाऽ इति सꣳस्रव भागाः। स्त्थेषेषा स्त्थ स्त्थेषा बृहन्तो बृहन्तऽ इषा स्त्थ स्त्थेषा बृहन्तः। इषा बृहन्तो बृहन्तऽ इषेषा बृहन्तः प्प्रस्त्तरेष्ठाः प्प्रस्त्तरेस्त्था बृहन्तऽ इषेषा बृहन्तः प्प्रस्त्त-रेष्ठाः। बृहन्तः प्प्रस्त्तरेष्ठाः प्प्रस्त्तरेस्त्था बृहन्तो बृहन्तः प्प्रस्त्तरेष्ठाः परिधेयाः परिधेयाः प्प्रस्त्तरेस्त्था बृहन्तो बृहन्तः प्प्रस्त्तरेष्ठाः परिधेयाः। प्रस्त्तरेष्ठाः परिधेयाः परिधेयाः प्प्रस्त्तरेस्त्थाः प्प्रस्त्तरेष्ठाः परिधेयाश्च च परिधेयाः प्प्रस्त्तरे-स्त्थाः प्प्रस्त्तरेष्ठाः परिधेयाश्च[2]। प्रस्त्तरेस्त्थाऽ इति प्प्रस्त्तरे स्थाः। परिधेयाश्च च परिधेयाः परिधेयाश्च देवा देवाश्च परिधेयाः परिधेयाश्च देवाः। परिधेयाऽ इति परि धेयाः। च देवा देवाश्च च देवाः। देवाऽ इति देवाः॥ इमाँव्वाचँव्वाचमिमामि-माँव्वाचमब्भ्युभि वाचमिमामिमाँव्वाचमभि। व्वाचमब्भ्युभि वाचँव्वाचमभि विश्श्वे व्विश्श्वेभि वाचँव्वाचमभि विश्श्वे। अभि विश्श्वे व्विश्श्वेब्भ्युभि विश्श्वे गृणन्तो गृणन्तो व्विश्श्वेब्भ्युभि विश्श्वे गृणन्तः। व्विश्श्वे गृणन्तो गृणन्तो व्विश्श्वे व्विश्श्वे गृणन्तऽ आसद्यासद्य गृणन्तो व्विश्श्वे व्विश्श्वे गृणन्तऽ आसद्य। गृणन्तऽ आसद्यासद्य गृणन्तो

1. अनुस्वारस्योपरिष्टात्संयोगो यदि दृश्यते। ह्रस्वं तं तु विजानीयात्सꣳस्रवभागास्येति निदर्शनम्॥ – पा. शि. २८.

2. वा.प्रा.२.१६. के अनुसार यहाँ च पद अनुदात्त है।

गृणन्तऽ आसद्यास्मिन्नस्मिन्नासद्यं गृणन्तौ गृणन्तऽ आसद्यास्मिन्। आसद्यास्मिन्नस्मिन्नासद्यासद्यास्मिन्बर्हिषि बर्हिष्ष्यस्मिन्नासद्यासद्यास्मिन्बर्हिषि। आसद्येत्या सद्यं। अस्मिन्बर्हिषि बर्हिष्ष्यस्मिन्नस्मिन्बर्हिषि मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वम्बर्हिष्ष्यस्मिन्नस्मिन्बर्हिषि मादयद्ध्वम्। बर्हिषि मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वम्बर्हिषि बर्हिषि मादयद्ध्वꣳ स्वाहा स्वाहा मादयद्ध्वम्बर्हिषि बर्हिषि मादयद्ध्वꣳ स्वाहा। मादयद्ध्वꣳ स्वाहा स्वाहा मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वꣳ स्वाहा व्वाड्वाट् स्वाहा मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वꣳ स्वाहा व्वाट्। स्वाहा व्वाड्वाट् स्वाहा स्वाहा व्वाट्। व्वाडिति वाट्॥१८॥

घृताचीं स्त्थ स्त्थो घृताचीं घृताचीं स्त्थो धुर्य्यौ धुर्य्यौ स्त्थो घृताचीं घृताचीं स्त्थो धुर्य्यौ। घृताचीऽ इति घृताची[1]। स्त्थो धुर्य्यौ धुर्य्यौ स्त्थ स्त्थो धुर्य्यौ पातम्पातन्धुर्य्यौ स्त्थ स्त्थो धुर्य्यौ पातम्। धुर्य्यौ पातम्पातन्धुर्य्यौ धुर्य्यौ पातꣳ सुम्म्ने सुम्म्ने पातन्धुर्य्यौ धुर्य्यौ पातꣳ सुम्म्ने। पातꣳ सुम्म्ने सुम्म्ने पातम्पातꣳ सुम्म्ने स्त्थं स्त्थः सुम्म्ने पातम्पातꣳ सुम्म्ने स्त्थं÷। सुम्म्ने स्त्थं स्त्थः सुम्म्ने सुम्म्ने स्त्थं÷ सुम्म्ने सुम्म्ने स्त्थं÷ सुम्म्ने सुम्म्ने स्त्थं÷ सुम्म्ने। सुम्म्नेऽ इति सुम्म्ने[2]। स्त्थः सुम्म्ने सुम्म्ने स्त्थं स्त्थः सुम्म्ने मां मा सुम्म्ने स्त्थं स्त्थः सुम्म्ने मां। सुम्म्ने मां मा सुम्म्ने सुम्म्ने मां धत्तन्धत्तम्मा सुम्म्ने सुम्म्ने मां धत्तम्। मा धत्तन्धत्तम्मा मा धत्तम्। धत्तमिति धत्तम्॥ यज्ज्ञ नमो नमो यज्ज्ञ यज्ज्ञ नमश्च च नमो यज्ज्ञ यज्ज्ञ नमश्च। नमश्च च नमो नमश्च ते ते च नमो नमश्च ते। च ते ते च च तऽ उपोप ते च च तऽ उप। तऽ उपोप ते तऽ उप च चोप ते तऽ उप च। उप च

---

1. घृताची यह पद द्विवचन होने के कारण यहाँ प्रगृह्य है। अतः यहाँ स्थितोपस्थित पाठ होता है। इसी अध्याय की छठीं कण्डिका में यह पद प्रगृह्य संज्ञक नहीं था। अतः वहाँ स्थितोपस्थित पाठ नहीं होता है।

2. इस कण्डिका में प्रथम सुम्ने पद द्विवचनान्त होने से प्रगृह्य है, द्वितीय सुम्ने पद सप्तम्यन्त है, अतः पहले सुम्ने पद का स्थितोपस्थित पाठ होता है. द्वितीय सुम्ने पद का स्थितोपस्थित पाठ नहीं होता है।

चोपोप च यज्ञस्य॑ यज्ञस्य चोपोप च यज्ञस्य॑। च यज्ञस्य॑ यज्ञस्य॑ च च यज्ञस्य॑ शिवे शिवे यज्ञस्य॑ च च यज्ञस्य॑ शिवे। यज्ञस्य॑ शिवे शिवे यज्ञस्य॑ यज्ञस्य॑ शिवे सः सः शिवे यज्ञस्य॑ यज्ञस्य॑ शिवे सम्। शिवे सः सः शिवे शिवे सन्तिं॑ष्ठस्व तिष्ठस्व सः शिवे शिवे सन्तिं॑ष्ठस्व। सन्तिं॑ष्ठस्व तिष्ठस्व सः सन्तिं॑ष्ठस्व स्विष्टे स्विष्टे तिष्ठस्व सः सन्तिं॑ष्ठस्व स्विष्टे। तिष्ठस्व स्विष्टे स्विष्टे तिष्ठस्व तिष्ठस्व स्विष्टे मे मे स्विष्टे तिष्ठस्व तिष्ठस्व स्विष्टे मे। स्विं॑ष्टे मे मे स्विष्टे स्विष्टे मे सः सम्मे स्विष्टे स्विष्टे मे सम्। स्विं॑ष्टऽ इति सु इं॑ष्टे। मे सः सम्मे॑ मे सन्तिं॑ष्ठस्व तिष्ठस्व सम्मे॑ मे सन्तिं॑ष्ठस्व। सन्तिं॑ष्ठस्व तिष्ठस्व सः सन्तिं॑ष्ठस्व। तिष्ठस्वेतिं तिष्ठस्व॥१९॥

अग्ग्नें॑दब्धायोदब्धायोग्ग्नेग्ग्नें॑दब्धायोशीतमाशितमादब्धायोग्ग्नेग्ग्नें॑दब्धायोशीतम[1]। अदब्धायोशीतमाशितमादब्धायोदब्धायोशीतम पाहि पाह्यशितमादब्धायोदब्धायोशीतम पाहि। अदब्धायोऽ इत्यं॑दब्ध आयो। अशीतम पाहि पाह्यशितमाशीतम पाहि मा॑ मा पाह्यशितमाशीतम पाहि मा॑। अशितमेत्यं॑शितम। पाहि मा॑ मा पाहि पाहि मा॑ दिद्योर्दिद्योम्मा॑ पाहि पाहि मा॑ दिद्योः। मा दिद्योर्दिद्योम्मा॑ मा दिद्योः प्प्रसिं॑त्त्यै प्प्रसिं॑त्त्यै दिद्योम्मा॑ मा दिद्योः प्प्रसिं॑त्त्यै। दिद्योः प्प्रसिं॑त्त्यै प्प्रसिं॑त्त्यै दिद्योर्दिद्योः प्प्रसिं॑त्त्यै दुरिं॑ष्ट्यै दुरिं॑ष्ट्यै प्प्रसिं॑त्त्यै दिद्योर्दिद्योः प्प्रसिं॑त्त्यै दुरिं॑ष्ट्यै। प्रसिं॑त्त्यै दुरिं॑ष्ट्यै दुरिं॑ष्ट्यै प्प्रसिं॑त्त्यै प्प्रसिं॑त्त्यै दुरिं॑ष्ट्यै दुरद्धन्न्यै दु॑रद्धन्न्यै दुरिं॑ष्ट्यै प्प्रसिं॑त्त्यै प्प्रसिं॑त्त्यै दुरिं॑ष्ट्यै दुरद्धन्न्यै। प्रसिं॑त्त्याऽ इति प्प्र सिं॑त्त्यै। दुरिं॑ष्ट्यै दुरद्धन्न्यै दु॑रद्धन्न्यै दुरिं॑ष्ट्यै दुरिं॑ष्ट्यै दुरद्धन्न्याऽ अं॑विषमं॑विषन्दु॑रद्धन्न्यै दुरिं॑ष्ट्यै दुरिं॑ष्ट्यै दुरद्धन्न्याऽ अं॑विषम्। दुरिं॑ष्ट्याऽ इति दुः इं॑ष्ट्यै। दुरद्धन्न्याऽ

[1]. वा.प्रा.३.१२९. के अनुसार अशितम इस पद में ह्रस्व स्वर(इ) दीर्घ हो गया है तथा वा.प्रा.५.३७. के अनुसार इस पद का पृथक्करण नहीं होता है।

अ॑वि॒षम॑वि॒षन्दु॑रद्म॒न्न्यै दु॑रद्म॒न्न्या॑ऽ अ॑वि॒षन्नो॑ नोवि॒षन्दु॑रद्म॒न्न्यै दु॑रद्म॒न्न्या॑ऽ अ॑वि॒षन्नं॑÷ । दु॒र॒द्म॒न्न्या॑ऽ इति॑ दुः॒ अ॒द्म॒न्न्यै । अ॒वि॒षन्नो॑ नोवि॒षम॑वि॒षन्नं॑÷ पि॒तुम्पि॒तुन्नो॑वि॒षम॑वि॒षन्नं॑÷ पि॒तुम् । न॒ः पि॒तुम्पि॒तुन्नो॑ नः पि॒तुङ्कृ॑णु कृणु पि॒तुन्नो॑ नः पि॒तुङ्कृ॑णु । पि॒तुङ्कृ॑णु कृणु पि॒तुम्पि॒तुङ्कृ॑णु सु॒षदा॑ सु॒सदा॑ कृणु पि॒तुम्पि॒तुङ्कृ॑णु सु॒षदा॑[1] । कृ॒णु सु॒षदा॑ सु॒सदा॑ कृणु कृणु सु॒षदा॒ योनौ॒ योनौ॑ सु॒सदा॑ कृणु कृणु सु॒षदा॒ योनौ॑ । सु॒षदा॒ योनौ॒ योनौ॑ सु॒सदा॑ सु॒षदा॒ योनौ॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ योनौ॑ सु॒सदा॑ सु॒षदा॒ योनौ॒ स्वाहा॑ । सु॒सदेति॑ सु॒ सदा॑ । योनौ॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ योनौ॒ योनौ॒ स्वाहा॒ व्वाड्वाट् स्वाहा॒ योनौ॒ योनौ॒ स्वाहा॒ व्वाट् । स्वाहा॒ व्वाड्वाट् स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वाड॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॒ व्वाट् स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वाड॒ग्ग्नये॑ । व्वाड॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॒ व्वाड्वाड॒ग्ग्नये॑ सँव्वे॒शप॑तये सँव्वे॒शप॑तये॒ग्ग्नये॒ व्वाड्वाड॒ग्ग्नये॑ सँव्वे॒शप॑तये । अ॒ग्ग्नये॑ सँव्वे॒शप॑तये सँव्वे॒शप॑तये॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ सँव्वे॒शप॑तये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ सँव्वे॒शप॑तये॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ सँव्वे॒शप॑तये॒ स्वाहा॑ । सँ॒व्वे॒शप॑तये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ सँव्वे॒शप॑तये सँव्वे॒शप॑तये॒ स्वाहा॒ सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै॒ स्वाहा॑ सँव्वे॒शप॑तये सँव्वे॒शप॑तये॒ स्वाहा॒ सर॑स्वत्यै । सँ॒व्वे॒शप॑तय॒ऽ इति॑ सँव्वे॒श प॑तये । स्वाहा॒ सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सर॑स्वत्यै यशोभ॒गिन्न्यै॑ यशोभ॒गिन्न्यै॒ सर॑स्वत्यै॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सर॑स्वत्यै यशोभ॒गिन्न्यै॑ । सर॑स्वत्यै यशोभ॒गिन्न्यै॑ यशोभ॒गिन्न्यै॒ सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै यशोभ॒गिन्न्यै॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ यशोभ॒गिन्न्यै॒ सर॑स्वत्यै सर॑स्वत्यै यशोभ॒गिन्न्यै॒ स्वाहा॑ । य॒शो॒भ॒गिन्न्यै॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ यशोभ॒गिन्न्यै॑ यशोभ॒गिन्न्यै॒ स्वाहा॑ । य॒शो॒भ॒गिन्न्या॒ऽ इति॑ यशः॒ भ॒गिन्न्यै॑ । स्वाहेति॒ स्वाहा॑ ॥२०॥

व्वे॒दो॒स्यसि व्वे॒दो व्वे॒दो॒सि॒ येन॒ येना॑सि व्वे॒दो व्वे॒दो॒सि॒ येन॑[2] । अ॒सि॒ येन॒ येना॑स्यसि॒ येन॒ त्वन्त्वँ॒य्येना॑स्यसि॒ येन॒ त्वम् । येन॒ त्वन्त्वँ॒य्येन॒ येन॒ त्वन्दे॑व देव॒ त्वँ-

[1]. वा.प्रा.३.५६. के अनुसार सुसदा इस पद में द्वितीय सकार का षकार विहित है।

[2]. या. शि. ७८. के अनुसार वे॒दो॒सि में अभिनिहित स्वर है।

ऽश्वेन॒ येन॒ त्वन्दे॑व। त्वन्दे॑व दे॒व॒ त्वन्त्वन्दे॑व व्वेद व्वेद दे॒व॒ त्वन्त्वन्दे॑व व्वेद। दे॒व॒ व्वे॒द॒ व्वे॒द॒ दे॒व॒ दे॒व॒ व्वे॒द॒ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ व्वेद देव देव व्वेद दे॒वेब्भ्य॑÷। व्वे॒द॒ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ व्वेद व्वेद दे॒वेब्भ्यो॑ व्वे॒दो व्वे॒दो दे॒वेब्भ्यो॑ व्वेद व्वेद दे॒वेब्भ्यो॑ व्वे॒द॒ः। दे॒वेब्भ्यो॑ व्वे॒दो व्वे॒दो दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ व्वे॒दोभ॒वोभ॑वो व्वे॒दो दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ व्वे॒दोभ॑व॒ः। व्वे॒दोभ॒वो-भ॑वो व्वे॒दो व्वे॒दोभ॑व॒स्तेन॒ तेनाभ॑वो व्वे॒दो व्वे॒दोभ॑व॒स्तेन॑। अभ॑व॒स्तेन॒ तेनाभ॒वोभ॑व॒-स्तेन॒ मह्य॒म्महय॒न्तेनाभ॒वोभ॑व॒स्तेन॒ मह्य॑म्। तेन॒ मह्य॒म्मह्य॒न्तेन॒ तेन॒ मह्यँ॑-व्वे॒दो व्वे॒दो मह्य॒न्तेन॒ तेन॒ मह्यँ॒व्वे॒द॒ः। मह्यँ॒व्वे॒दो व्वे॒दो मह्य॒म्मह्यँ॒व्वे॒दो भू॑या भूया व्वे॒दो मह्य॒म्मह्यँ॒व्वे॒दो भू॑या॒ः। व्वे॒दो भू॑या भूया व्वे॒दो व्वे॒दो भू॑या॒ः। भू॒या॒ऽ इति॑ भूया॒ः ॥ देवा॑ गातुविदो गातुवि॒दो॒ देवा॒ देवा॑ गातुविदो गा॒तुङ्गा॒तुङ्गा॑तुविदो॒ देवा॒ देवा॑ गातुविदो गा॒तुम्। गा॒तु॒वि॒दो॒ गा॒तुङ्गा॒तुङ्गा॑तुविदो गातुविदो गा॒तुँ॒व्वि॒त्त्वा व्वि॒त्त्वा गा॒तुङ्गा॑तुविदो गातुविदो गा॒तुँ॒व्वि॒त्त्वा। गा॒तु॒वि॒द॒ऽ इति॑ गातु व्विद॒ः। गा॒तुँ॒व्वि॒त्त्वा व्वि॒त्त्वा गा॒तुङ्गा॒तुँ॒व्वि॒त्त्वा गा॒तुङ्गा॒तुँ॒व्वि॒त्त्वा गा॒तुङ्गा॒तुँ॒व्वि॒त्त्वा गा॒तुम्। व्वि॒त्त्वा गा॒तुङ्गा॒तुँ॒-व्वि॒त्त्वा व्वि॒त्त्वा गा॒तुमि॑तेत गा॒तुँ॒व्वि॒त्त्वा व्वि॒त्त्वा गा॒तुमि॑त। गा॒तुमि॑तेत गा॒तुङ्गा॒तुमि॑त। इ॒तेती॑त॥ मन॑सस्प्पते पते॒ मन॑सो॒ मन॑सस्प्पतऽ इ॒ममि॒मम्प॑ते॒ मन॑सो॒ मन॑स-स्प्पतऽ इ॒मम्[1]। प॒त॒ऽ इ॒ममि॒मम्प॑ते पतऽ इ॒मन्दे॑व दे॒वे॒मम्प॑ते पतऽ इ॒मन्दे॑व। इ॒मन्दे॑व दे॒वे॒ममि॒मन्दे॑व य॒ज्ञँ॒य्य॒ज्ञन्दे॑वे॒ममि॒मन्दे॑व य॒ज्ञम्। दे॒व॒ य॒ज्ञँ॒य्य॒ज्ञ-न्दे॑व देव य॒ज्ञꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ य॒ज्ञन्दे॑व देव य॒ज्ञꣳ स्वाहा॑। य॒ज्ञꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ य॒ज्ञँ॒य्य॒ज्ञꣳ स्वाहा॒ व्वाते॒ व्वाते॒ स्वाहा॑ य॒ज्ञँ॒य्य॒ज्ञꣳ स्वाहा॒ व्वाते॑।

---

[1]. मनसः पते यहाँ पत्यौ तालव्यस्वरोदये(वा.प्रा.३.३५) तथा पदे च(वा.प्रा.३.३६) इन सूत्रों के अनुसार विसर्जनीय सकार होता है। संहिता, जटा, घन आदि में मनसस्प्पतऽइमम् पाठ आता है। यहाँ पत में तालव्यस्वर बाद में नहीं है, पद स्वरूप पते में ही तालव्य स्वर है। इससे सिद्ध होता है कि प्रातिशाख्य की प्रवृति पदों के आधार पर है।

स्वाहा॒ व्वाते॒ व्वाते॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वाते॑ धा धा॒ व्वाते॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वाते॑ धाः। व्वाते॑ धा धा॒ व्वाते॒ व्वाते॑ धाः। धा॒ऽ इति॑ धाः॥२१॥

सम्ब॒र्हिर्ब्ब॒र्हिः सꣳ सम्ब॒र्हिर॑ङ्क्ताम॒ङ्क्ताम्ब॒र्हिः सꣳ सम्ब॒र्हिर॑ङ्क्ताम्[1]। ब॒र्हिर॑ङ्क्ताम॒ङ्क्ताम्ब॒र्हिर्ब्ब॒र्हिर॑ङ्क्ताꣳ ह॒विषा॑ ह॒विषा॑ङ्क्ताम्ब॒र्हिर्ब्ब॒र्हिर॑ङ्क्ताꣳ ह॒विषा॑। अ॒ङ्क्ताꣳ ह॒विषा॑ ह॒विषा॑ङ्क्ताम॒ङ्क्ताꣳ ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ ह॒विषा॑ङ्क्ताम॒ङ्क्ताꣳ ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑। ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ ह॒विषा॑ ह॒विषा॑ घृ॒तेना॑दि॒त्यैरा॑दि॒त्यैर्घृ॒तेन॑ ह॒वि-षा॑ ह॒विषा॑ घृ॒तेना॑दि॒त्यैः। घृ॒तेना॑दि॒त्यैरा॑दि॒त्यैर्घृ॒तेन॑ घृ॒तेना॑दि॒त्यैर्व्वसु॑भि॒र्व्वसु॑भिरा-दि॒त्यैर्घृ॒तेन॑ घृ॒तेना॑दि॒त्यैर्व्वसु॑भिः। आ॒दि॒त्यैर्व्वसु॑भि॒र्व्वसु॑भिरादि॒त्यैरा॑दि॒त्यैर्व्वसु॑भिर्म्म॒-रुद्भि॑र्म्म॒रुद्भि॒र्व्वसु॑भिरादि॒त्यैरा॑दि॒त्यैर्व्वसु॑भिर्म्म॒रुद्भिः॑। व्वसु॑भिर्म्म॒रुद्भि॑र्म्म॒रुद्भि॒र्व्वसु॑-भि॒र्व्वसु॑भिर्म्म॒रुद्भि॒रिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ म॒रुद्भि॒र्व्वसु॑भि॒र्व्वसु॑भिर्म्म॒रुद्भि॒रिन्द्रः॑। व्वसु॑भि॒रिति॒ वसु॑ भिः। म॒रुद्भि॒रिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ म॒रुद्भि॑र्म्म॒रुद्भि॒रिन्द्रो॑ व्वि॒श्वदे॑वेभि॒र्व्वि॒श्वदे॑वेभि॒रिन्द्रो॑ म॒रुद्भि॑र्म्म॒रुद्भि॒रिन्द्रो॑ व्वि॒श्वदे॑वेभिः। म॒रुद्भि॒रिति॑ म॒रुत् भिः॑॥ इन्द्रो॑ व्वि॒श्वदे॑वेभि-र्व्वि॒श्वदे॑वेभि॒रिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ व्वि॒श्वदे॑वेभिरङ्क्ताम॒ङ्क्ताँव्वि॒श्वदे॑वेभि॒रिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ व्वि॒श्वदे॑वेभि-रङ्क्ताम्[2]। व्वि॒श्वदे॑वेभिरङ्क्ताम॒ङ्क्ताँव्वि॒श्वदे॑वेभि॒र्व्वि॒श्वदे॑वेभिरङ्क्तान्दि॒व्यन्दि॒व्यम॒ङ्क्ताँव्वि॒श्वदे॑-वेभि॒र्व्वि॒श्वदे॑वेभिरङ्क्तान्दि॒व्यम्। व्वि॒श्वदे॑वेभि॒रिति॑ वि॒श्व दे॑वेभिः। अ॒ङ्क्तान्दि॒व्यन्दि॒व्य-मङ्क्ताम॒ङ्क्तान्दि॒व्यन्नभो॒ नभो॑ दि॒व्यम॒ङ्क्ताम॒ङ्क्तान्दि॒व्यन्नभः॑। दि॒व्यन्नभो॒ नभो॑ दि॒व्य-न्दि॒व्यन्नभो॑ गच्छतु गच्छतु नभो॑ दि॒व्यन्दि॒व्यन्नभो॑ गच्छतु। नभो॑ गच्छतु गच्छतु नभो॒ नभो॑ गच्छतु॒ यद्यद् ग॑च्छतु नभो॒ नभो॑ गच्छतु॒ यत्। ग॒च्छ॒तु॒ यद्यद् ग॑च्छतु गच्छतु॒ यत्स्वाहा॒ स्वाहा॒ यद् ग॑च्छतु गच्छतु॒ यत्स्वाहा॑। यत्स्वाहा॒ स्वाहा॒ यद्यत्स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥२२॥

---

1. वा. प्रा. ६.३०. में निर्दिष्ट होने के कारण बर्हिरङ्क्ताम् यहाँ दो अनुनासिक (ङ) होंगे।

2. वा. प्रा. ६.३०. में निर्दिष्ट न होने के कारण विश्वदेवेभिरङ्क्ताम् यहाँ पर दो ङकार स्वीकार्य नहीं हैं।

कस्त्वां त्वा कः कस्त्वा वि वि त्वा कः कस्त्वा वि। त्वा वि वि त्वां त्वा वि मुंञ्चति मुञ्चति वि त्वां त्वा वि मुंञ्चति। वि मुंञ्चति मुञ्चति वि वि मुंञ्चति स स मुंञ्चति वि वि मुंञ्चति सः। मुञ्चति स स मुंञ्चति मुञ्चति स कस्म्मै कस्म्मै स मुंञ्चति मुञ्चति स कस्म्मैं। स कस्म्मै कस्म्मै स स कस्म्मै तस्म्मै तस्म्मै कस्म्मै स स कस्म्मै तस्म्मैं। कस्म्मै तस्म्मै तस्म्मै कस्म्मै कस्म्मै तस्म्मै पोषाय पोषाय तस्म्मै कस्म्मै कस्म्मै तस्म्मै पोषाय। तस्म्मै पोषाय पोषाय तस्म्मै तस्म्मै पोषाय रक्क्षंसाꣳ रक्क्षंसाम्पोषाय तस्म्मै तस्म्मै पोषाय रक्क्षंसाम्॥ पोषाय रक्क्षंसाꣳ रक्क्षंसाम्पोषाय पोषाय रक्क्षंसाम्भागो भागो रक्क्षंसाम्पोषाय पोषाय रक्क्षंसाम्भागः। रक्क्षंसाम्भागो भागो रक्क्षंसाꣳ रक्क्षंसाम्भागोस्यसि भागो रक्क्षंसाꣳ रक्क्षंसाम्भागोसि[1]। भागोस्यसि भागो भागोसि। असीत्त्यसि॥२३॥

सँव्वर्चसा व्वर्चसा सꣳ सँव्वर्चसा पयंसा पयंसा व्वर्चसा सꣳ सँव्वर्चसा पयंसा। व्वर्चसा पयंसा पयंसा व्वर्चसा व्वर्चसा पयंसा सꣳ सम्पयंसा व्वर्चसा व्वर्चसा पयंसा सम्। पयंसा सꣳ सम्पयंसा पयंसा सन्तनूभिंस्तनूभिः सम्पयंसा पयंसा सन्तनूभिंः। सन्तनूभिंस्तनूभिः सꣳ सन्तनूभिरगंन्मह्यगंन्महि तनूभिः सꣳ सन्तनूभिरगंन्महि । तनूभिरगंन्मह्यगंन्महि तनूभिंस्तनूभिरगंन्महि मनंसा मनसागंन्महि तनूभिंस्तनूभिरगंन्महि मनंसा। अगंन्महि मनंसा मनसागंन्मह्यगंन्महि मनंसा सꣳ सम्मनसागंन्मह्यगंन्महि मनंसा सम्। मनंसा सꣳ सम्मनंसा मनंसा सꣳ शिवेनं शिवेन सम्मनंसा मनंसा सꣳ शिवेनं। सꣳ शिवेनं शिवेन सꣳ सꣳ शिवेनं। शिवेनेतिं शिवेनं॥ त्वष्टां सुदत्रंः सुदत्रस्त्वष्टा त्वष्टां सुदत्रो वि वि सुदत्रस्त्वष्टा त्वष्टां सुदत्रो वि[2]। सुदत्रो वि वि सुदत्रंः सुदत्रो वि दंधातु दधातु वि सुदत्रंः सुदत्रो वि दंधातु। सुदत्रऽ इतिं सु दत्रंः। वि दंधातु

[1]. वा.प्रा.२.८. के अनुसार असि पद यहाँ अनुदात है।

दधातु व्वि वि दधातु रायो रायो दधातु व्वि वि दधातु रायः। दधातु रायो रायो दधातु दधातु रायोन्वनु रायो दधातु दधातु रायोनु। रायोन्वनु रायो रायोनु मार्ष्टु मार्ष्ट्वनु रायो रायोनु मार्ष्टु[1]। अनु मार्ष्टु मार्ष्ट्वन्वनु मार्ष्टु तन्वस्तन्वो मार्ष्ट्वन्वनु मार्ष्टु तन्वः। मार्ष्टु तन्वस्तन्वो मार्ष्टु मार्ष्टु तन्वो ग्घृतन्वो मार्ष्टु मार्ष्टु तन्वो ग्घृत्। तन्वो ग्घृतन्वस्तन्वो ग्घृद्विलिंष्टँद्विलिंष्टँग्घृतन्वस्तन्वो ग्घृद्विलिंष्टम्। ग्घृद्विलिंष्टँद्विलिंष्टँग्घृद्घृद्विलिंष्टम्। द्विलिंष्टमिति वि लिंष्टम्॥२४॥

दिवि व्विष्णुर्व्विष्णुर्दिवि दिवि व्विष्णुर्व्वि वि विष्णुर्दिवि दिवि व्विष्णुर्व्वि। व्विष्णुर्व्वि वि विष्णुर्व्विष्णुर्ध्यक्रꣳस्ताक्रꣳस्त व्वि विष्णुर्व्विष्णुर्ध्यक्रꣳस्त। ध्यक्रꣳस्ताक्रꣳस्त व्वि ध्यक्रꣳस्त जागतेन जागतेनाक्रꣳस्त व्वि ध्यक्रꣳस्त जागतेन। अक्रꣳस्त जागतेन जागतेनाक्रꣳस्ताक्रꣳस्त जागतेन च्छन्दसा च्छन्दसा जागतेनाक्रꣳस्ताक्रꣳस्त जागतेन च्छन्दसा[2]। जागतेन च्छन्दसा च्छन्दसा जागतेन जागतेन च्छन्दसा ततस्ततश्च्छन्दसा जागतेन जागतेन च्छन्दसा ततः। छन्दसा ततस्ततश्च्छन्दसा च्छन्दसा ततो निर्भक्तो निर्भक्तस्ततश्च्छन्दसा च्छन्दसा ततो निर्भक्तः। ततो निर्भक्तो निर्भक्तस्ततस्ततो निर्भक्तोन्तरिक्षेन्तरिक्षे निर्भक्तस्ततस्ततो निर्भक्तोन्तरिक्षे। निर्भक्तोन्तरिक्षेन्तरिक्षे निर्भक्तो निर्भक्तोन्तरिक्षे त्रैष्टुभेन त्रैस्तुभेनान्तरिक्षे निर्भक्तो निर्भक्तोन्तरिक्षे त्रैष्टुभेन। निर्भक्तऽ इति निः भक्तः। अन्तरिक्षे त्रैष्टुभेन त्रैस्तुभेनान्तरिक्षेन्तरिक्षे त्रैष्टुभेन पृथिव्याम्पृथिव्यान्त्रैस्तुभेनान्तरि-

---

2. सुदत्रः वि यहाँ सर्वो अःकार ओकारम्(वा.प्रा.४.४३) इस सूत्र से धिसंज्ञक व्यञ्जन(व) बाद में होने से सोपध विसर्जनीय ओकार होता है।

1. मार्ष्टु यहाँ पर स्वरपूर्व में न रहने के कारण ऊष्मान्तस्याभ्यश्च स्पर्शः (वा. प्रा. ४.१०३) प्रवृत्त नहीं होगा। परं तु रेफहकाराभ्याम् (वा. प्रा. ४.१०२) इस सूत्र से षकार का ही द्वित्व होगा।

2. छन्दसा छन्दसा तथा जागतेन छन्दसा यहाँ वा.प्रा.४.२५. के अनुसार छकार बाद में होने पर स्वर चकार से व्यवहित होता है।

क्षेन्तरिक्षे त्रैष्टुंभेन पृथिव्याम्। त्रैष्टुंभेन पृथिव्याम्पृथिव्यात्रैस्तुंभेन त्रैष्टुंभेन पृथिव्याङ्गायत्रेणं गायत्रेणं पृथिव्यान्त्रैस्तुंभेन त्रैष्टुंभेन पृथिव्याङ्गायत्रेणं। त्रैस्तुंभेनेति त्रैस्तुंभेन[1]। पृथिव्याङ्गायत्रेणं गायत्रेणं पृथिव्याम्पृथिव्याङ्गायत्रेणास्म्मादस्म्माद् गायत्रेणं पृथिव्याम्पृथिव्याङ्गायत्रेणास्म्मात्। गायत्रेणास्म्मादस्म्माद् गायत्रेणं गायत्रेणास्म्मादन्नादन्नादस्म्माद् गायत्रेणं गायत्रेणास्म्मादन्नात्। अस्म्मादन्नादन्नादस्म्मादस्म्मादन्नादस्याऽ अस्याऽ अन्नादस्म्मादस्म्मादन्नादस्यै। अन्नादस्याऽ अस्याऽ अन्नादन्नादस्यै प्प्रतिष्ठायांꣳ प्प्रतिस्त्थायांऽ अस्याऽ अन्नादन्नादस्यै प्प्रतिष्ठायांꣳ। अस्यै प्प्रतिष्ठायांꣳ प्प्रतिस्त्थायांऽ अस्याऽ अस्यै प्प्रतिष्ठायाऽ अगन्न्मागन्न्म प्प्रतिस्त्थायांऽ अस्याऽ अस्यै प्प्रतिष्ठायाऽ अगन्न्म। प्रतिष्ठायाऽ अगन्न्मागन्न्म प्प्रतिस्त्थायांꣳ प्प्रतिष्ठायाऽ अगन्न्म स्वः स्वरगन्न्म प्प्रतिस्त्थायांꣳ प्प्रतिष्ठायाऽ अगन्न्म स्वः। प्रतिस्त्थायाऽ इति प्प्रति स्थायांꣳ। अगन्न्म स्वः स्वरगन्न्मागन्न्म स्वꣳ सꣳ सꣳ स्वरगन्न्मागन्न्म स्वꣳ सम्। स्वꣳ सꣳ सꣳ स्वꣳ स्वꣳ सञ्ज्योतिषा ज्योतिषा सꣳ स्वꣳ स्वꣳ सञ्ज्योतिषा। स्वरिति स्वः। सञ्ज्योतिषा ज्योतिषा सꣳ सञ्ज्योतिषाभूमाभूम ज्योतिषा सꣳ सञ्ज्योतिषाभूम। ज्योतिषाभूमाभूम ज्योतिषा ज्योतिषाभूम। अभूमेत्त्यभूम॥२५॥

स्वयम्भूरस्यसि स्वयम्भूः स्वयम्भूरसि श्रेष्ठꣳ श्रेष्ठोसि स्वयम्भूः स्वयम्भूरसि श्रेष्ठः[2]। स्वयम्भूरिति स्वयम् भूः। असि श्रेष्ठꣳ श्रेष्ठोस्यसि श्रेष्ठो रश्म्मी रश्मिम्मः श्रेष्ठोस्यसि श्रेष्ठो रश्मिम्मः। श्रेष्ठो रश्म्मी रश्मिम्मः श्रेष्ठꣳ श्रेष्ठो रश्मिम्मर्व्वर्चोदा व्वर्चोदा रश्मिम्मः श्रेष्ठꣳ श्रेष्ठो रश्मिम्मर्व्वर्चोदाः। रश्मिम्मर्व्वर्चोदा व्वर्चोदा रश्म्मी रश्मिम्मर्व्वर्चोदाऽ अस्यसि व्वर्चोदा रश्म्मी रश्मिम्मर्व्वर्चोदाऽ असि। व्वर्चोदाऽ

---

1. वा. प्रा. ५.२९. के अनुसार यहाँ पृथक्करण नहीं होगा।

2. श्रेष्ठः श्रेष्ठः यहाँ वा.प्रा.४.१०७. के अनुसार विसर्जनीय से परे शकार का द्वित्व नहीं होता है।

अ॑स्यसि व्वर्चो॒दा व्व॑र्चो॒दाऽ अ॑सि व्वर्चो॒ व्वर्चो॑सि व्वर्चो॒दा व्व॑र्चो॒दाऽ अ॑सि॒ व्वर्च॑ः। व्वर्चो॒दाऽ इति॑ वर्च॒ः दाः। अ॒सि॒ व्वर्चो॒ व्वर्चो॑स्यसि॒ व्वर्चो॑ मे मे॒ व्वर्चो॑स्यसि॒ व्वर्चो॑ मे। व्वर्चो॑ मे मे॒ व्वर्चो॒ व्वर्चो॑ मे देहि देहि मे॒ व्वर्चो॒ व्वर्चो॑ मे देहि। मे॒ दे॒हि॒ दे॒हि॒ मे॒ मे॒ दे॒हि॒। दे॒हीति॑ देहि॥ सूर्य्य॑स्या॒वृत॑मा॒वृत॒ꣳ सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्या॒वृत॒मन्न्वन्न्वा॒वृत॒ꣳ सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्या॒वृत॒मनु॑। आ॒वृत॒मन्न्वन्न्वा॒वृत॑मा॒वृत॒मन्न्वा व॑र्त्ते व्वर्त्त॒ऽ आन्न्वा॒वृत॑मा॒वृत॒मन्न्वा व॑र्त्ते[1]। आ॒वृत॒मित्या॒ व्वृत॑म्। अन्न्वा व॑र्त्ते व्वर्त्त॒ऽ आन्न्वन्न्वा व॒र्त्तेग्ग्नेग्ग्ने॑ व्वर्त्त॒ऽ आन्न्वन्न्वा व॒र्त्तेग्ग्ने॑। आ व॑र्त्ते। व्व॒र्त्तेग्ग्नेग्ग्ने॑ व्वर्त्ते व्व॒र्त्तेग्ग्ने॑ गृहपते गृहप॒तेग्ग्ने॑ व्वर्त्ते व्व॒र्त्तेग्ग्ने॑ गृहपते॥२६॥

अग्ग्ने॑ गृहपते गृहप॒तेग्ग्नेग्ग्ने॑ गृहपते सुगृहप॒तिः सु॑गृहप॒तिर्गृ॑हप॒तेग्ग्नेग्ग्ने॑ गृहपते सुगृहप॒तिः। गृ॒ह॒प॒ते॒ सु॒गृ॒ह॒प॒तिः सु॑गृहप॒तिर्गृ॑हपते गृहपते सुगृहप॒तिस्त्वया॒ त्वया॑ सुगृहप॒तिर्गृ॑हपते गृहपते सुगृहप॒तिस्त्वया॑। गृ॒ह॒प॒त॒ऽ इति॑ गृह पते। सु॒गृ॒ह॒प॒तिस्त्वया॒ त्वया॑ सुगृहप॒तिः सु॑गृहप॒तिस्त्वया॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वया॑ सुगृहप॒तिः सु॑गृहप॒तिस्त्वया॑ग्ग्ने। सु॒गृ॒ह॒प॒तिरिति॑ सु गृहप॒तिः। त्वया॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वया॒ त्वया॑ग्ग्ने॒हम॒हम॑ग्ग्ने॒ त्वया॒ त्वया॑ग्ग्ने॒हम्। अ॒ग्ग्ने॒हम॒हम॑ग्ग्नेग्ग्ने॒हङ्गृ॒हप॑तिना गृ॒हप॑तिना॒हम॑ग्ग्नेग्ग्ने॒हङ्गृ॒हप॑तिना। अ॒हङ्गृ॒हप॑तिना गृ॒हप॑तिना॒हम॒हङ्गृ॒हप॑तिना भूयासम्भूयासङ्गृ॒हप॑तिना॒हम॒हङ्गृ॒हप॑तिना भूयासम्। गृ॒हप॑तिना भूयासम्भूयासङ्गृ॒हप॑तिना गृ॒हप॑तिना भूयासꣳ सुगृहप॒तिः सु॑गृहप॒तिर्भू॑यासङ्गृ॒हप॑तिना गृ॒हप॑तिना भूयासꣳ सुगृहप॒तिः। गृ॒हप॑ति॒नेति॑ गृ॒ह प॑तिना। भू॒या॒स॒ꣳ सु॒गृ॒ह॒प॒तिः सु॑गृहप॒तिर्भू॑यासम्भूयासꣳ सुगृहप॒तिस्त्वन्त्वꣳ सु॑गृहप॒तिर्भू॑यासम्भूयासꣳ सुगृहप॒तिस्त्वम्

[1]. वा. प्रा. ६.८. के अनुसार यहाँ अनु यह उपसर्ग अनुदात्त नहीं होगा। वा.प्रा.४.१८३. के अनुसार क्रम पाठ में दो पदों का समूह लिया जाता है परन्तु ४.१८४. के अनुसार अपृक्त(यहां आकार) बीच में आने पर तीन पदों को लिया जाता है, यही स्थिति जटा पाठ में होगी परन्तु घनपाठ में आकार मध्य में आने पर चार पदों को लिया जाता है। वा.प्रा.४.१८५. के अनुसार आकार के साथ उसके उत्तरवर्ती पद को दूसरी बार मिलाना चाहिए। यह स्थिति जटा, घन में समान होगी। वा.प्रा.१.१५१. के अनुसार यहाँ आकार अपृक्त संज्ञक है।

। सुगृहपतिस्त्वन्त्वꣳ सुगृहपतिः सुगृहपतिस्त्वम्मया मया त्वꣳ सुगृहपतिः सुगृहपतिस्त्वम्मया। सुगृहपतिरिति सु गृहपतिः। त्वम्मया मया त्वन्त्वम्मयाग्ग्नेग्ग्ने मया त्वन्त्वम्मयाग्ग्ने। मयाग्ग्नेग्ग्ने मया मयाग्ग्ने गृहपतिना गृहपतिनाग्ग्ने मया मयाग्ग्ने गृहपतिना। अग्ग्ने गृहपतिना गृहपतिनाग्ग्नेग्ग्ने गृहपतिना भूया भूया गृहपतिनाग्ग्नेग्ग्ने गृहपतिना भूयाः। गृहपतिना भूया भूया गृहपतिना गृहपतिना भूयाः। गृहपतिनेति गृह पतिना। भूयाऽ इति भूयाः॥ अस्त्थूरि णौ नावस्त्थूर्ब्बस्त्थूरि णौ गार्हपत्त्यानि गार्हपत्त्यानि नावस्त्थूर्ब्बस्त्थूरि णौ गार्हपत्त्यानि[1]। नौ गार्हपत्त्यानि गार्हपत्त्यानि नौ नौ गार्हपत्त्यानि सन्तु सन्तु गार्हपत्त्यानि नौ नौ गार्हपत्त्यानि सन्तु। गार्हपत्त्यानि सन्तु सन्तु गार्हपत्त्यानि गार्हपत्त्यानि सन्तु शतꣳ शतꣳ सन्तु गार्हपत्त्यानि गार्हपत्त्यानि सन्तु शतम्। गार्हपत्त्यानीति गार्ह पत्त्यानि। सन्तु शतꣳ शतꣳ सन्तु सन्तु शतꣳ हिमा हिमाः शतꣳ सन्तु सन्तु शतꣳ हिमाः। शतꣳ हिमा हिमाः शतꣳ शतꣳ हिमाऽ अचारिषमचारिषꣳ हिमाः शतꣳ शतꣳ हिमाऽ अचारिषम्। हिमाऽ अचारिषमचारिषꣳ हिमा हिमाऽ अचारिषन्ततदचारिषꣳ हिमा हिमाऽ अचारिषन्तत्॥ अचारिषन्ततदचारिषमचारिषन्तदशकमशकन्तदचारिषमचारिषन्तदशकम्। तदशकमशकन्ततदशकन्ततदशकन्ततदशकन्तत्। अशकन्ततदशकमशकन्तन्मे मे तदशकमशकन्तन्मे। तन्मे मे ततन्मेराद्ध्यराधि मे ततन्मेराधि। मेराद्ध्यराधि मे मेराधीदमिदमराधि मे मेराधीदम्। अराधीदमिदमराद्ध्यराधीदमहमहमिदमराद्ध्यराधीदमहम्। इदमहमहमिदमिदमहँव्यो व्योहमिदमिदमहँव्यः। अहँव्यो व्योहमहँव्यऽ एवैव व्योहमहँव्यऽ एव। व्यऽ एवैव व्यो व्यऽ एवास्म्म्यस्म्म्येव व्यो व्यऽ एवास्म्मि। एवास्म्म्यस्म्म्येवैवास्म्मि स सोस्म्म्ये-

[1]. अस्थूरि नौ यहाँ वा.प्रा.३.८६. के अनुसार नकार निपातन से णकार होता है।

वैवास्म्मि॒ सः॑। अस्म्मि॒ स सोस्म्म्यस्म्मि॒ सो॒स्म्म्यस्म्मि॒ सोस्म्म्यस्म्मि॒ सो॒स्म्मि। सोऽस्म्म्यस्म्मि॒ स सोऽस्म्मि। अ॒स्म्मीत्त्यऽस्म्मि॥२७॥

अ॒ग्ग्नये॑ कव्य॒वाह॑नाय कव्य॒वाह॑नाया॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ कव्य॒वाह॑नाय॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ कव्य॒वाह॑नाया॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ कव्य॒वाह॑नाय॒ स्वाहा॑[1]। क॒व्य॒वाह॑नाय॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ कव्य॒वाह॑नाय कव्य॒वाह॑नाय॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॑ कव्य॒वाह॑नाय कव्य॒वाह॑नाय॒ स्वाहा॒ सोमा॑य। क॒व्य॒वाह॑ना॒येति॑ कव्य॒ व्वाह॑नाय। स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य पितृ॒मते॑ पितृ॒मते॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य पितृ॒मते॑। सोमा॑य पितृ॒मते॑ पितृ॒मते॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य पितृ॒मते॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ पितृ॒मते॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य पितृ॒मते॒ स्वाहा॑। पि॒तृ॒मते॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ पितृ॒मते॑ पितृ॒मते॒ स्वाहा॑। पि॒तृ॒मत॒ऽ इति॑ पितृ॒ मते॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥ अप॑हता॒ऽ असु॑रा॒ऽ असु॑रा॒ऽ अप॑हता॒ऽ अप॑हता॒ऽ असु॑रा॒ रक्षा॑ꣳसि॒ रक्षा॒ꣳस्यसु॑रा॒ऽ अप॑हता॒ऽ अप॑हता॒ऽ असु॑रा॒ रक्षा॑ꣳसि। अप॑हता॒ऽ इत्त्यप॑ हताः॑। असु॑रा॒ रक्षा॑ꣳसि॒ रक्षा॒ꣳस्यसु॑रा॒ऽ असु॑रा॒ रक्षा॑ꣳसि व्वेदि॒षदो॑ व्वेदि॒सदो॒ रक्षा॒ꣳस्यसु॑रा॒ऽ असु॑रा॒ रक्षा॑ꣳसि व्वेदि॒षदः॑[2]। रक्षा॑ꣳसि व्वेदि॒षदो॑ व्वेदि॒सदो॒ रक्षा॑ꣳसि॒ रक्षा॑ꣳसि व्वेदि॒षदो॒ ये ये व्वे॑दि॒सदो॒ रक्षा॑ꣳसि॒ रक्षा॑ꣳसि व्वेदि॒षदो॒ ये। व्वे॒दि॒षदो॒ ये ये व्वे॑दि॒सदो॑ व्वेदि॒षदो॒ ये रू॒पाणि॑ रू॒पाणि॒ ये व्वे॑दि॒सदो॑ व्वेदि॒षदो॒ ये रू॒पाणि॑। व्वे॒दि॒सद॒ऽ इति॑ वेदि॒ सदः॑॥२८॥

ये रू॒पाणि॑ रू॒पाणि॒ ये ये रू॒पाणि॑ प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑नाः प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑ना रू॒पाणि॒ ये ये रू॒पाणि॑ प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑नाः। रू॒पाणि॑ प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑नाः प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑ना रू॒पाणि॑ रू॒पाणि॑ प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑ना॒ऽ असु॑रा॒ऽ असु॑राः प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑ना रू॒पाणि॑ रू॒पाणि॑

---

1. सर्व विश्व मानुषाशाः स्वाहा वाजः पयो नमः (वा. प्रा. २.३९) इस सूत्र के अनुसार स्वाहा॑ पद आद्युदात्त है।

2. वेदिसदः यहाँ भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) इस सूत्र से एक ही पद में भावी से परे स्थित सकार षकार होता है। अकण्ठ्यो भावी(वा.प्रा.१.४६) के अनुसार इ की भावी संज्ञा है।

प्प्रतिमुञ्चमानाऽ असुराः। प्रतिमुञ्चमानाऽ असुराऽ असुराः प्प्रतिमुञ्चमानाः प्प्रतिमुञ्चमानाऽ असुराः सन्तः सन्तोसुराः प्प्रतिमुञ्चमानाः प्प्रतिमुञ्चमानाऽ असुराः सन्तः। प्रतिमुञ्चमानाऽ इति प्प्रति मुञ्चमानाः। असुराः सन्तः सन्तोसुराऽ असुराः सन्तः स्वधया स्वधया सन्तोसुराऽ असुराः सन्तः स्वधया। सन्तः स्वधया स्वधया सन्तः सन्तः स्वधया चरन्ति चरन्ति स्वधया सन्तः सन्तः स्वधया चरन्ति। स्वधया चरन्ति चरन्ति स्वधया स्वधया चरन्ति। चरन्तीति चरन्ति॥ परापुरो निपुरो निपुरः परापुरः परापुरो निपुरो ये ये निपुरः परापुरः परापुरो निपुरो ये। परापुरऽ इति परा पुरः। निपुरो ये ये निपुरो निपुरो ये भरन्ति भरन्ति ये निपुरो निपुरो ये भरन्ति। निपुरऽ इति नि पुरः। ये भरन्ति भरन्ति ये ये भरन्त्यग्निरग्निर्भरन्ति ये ये भरन्त्यग्निः। भरन्त्यग्निरग्निर्भरन्ति भरन्त्यग्निष्टाँस्तानग्निर्भरन्ति भरन्त्यग्निष्टान्[1]। अग्निष्टाँस्तानग्निरग्निष्टाँल्लोकाल्लोकात्तानग्निरग्निष्टाँल्लोकात्[2]। ताँल्लोकाल्लोकात्ताँस्ताँल्लोकात्प्र प्प्र लोकात्ताँस्ताँल्लोकात्प्र। लोकात्प्र प्प्र लोकाल्लोकात्प्र णुदाति नुदाति प्प्र लोकाल्लोकात्प्र णुदाति। प्र णुदाति नुदाति प्प्र प्प्र णुदात्यस्म्मादस्म्मान्नुदाति प्प्र प्प्र णुदात्यस्म्मात्। नुदात्यस्म्मादस्म्मान्नुदाति नुदात्यस्म्मात्। अस्म्मादित्यस्म्मात्॥२९॥

अत्र पितरः पितरोत्रात्र पितरो मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वम्पितरोत्रात्र पितरो मादयद्ध्वम्। पितरो मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वम्पितरः पितरो मादयद्ध्वँ्यथाभागँ्यथाभागम्मादयद्ध्वम्पितरः पितरो मादयद्ध्वँ्यथाभागम्। मादयद्ध्वँ्यथाभागँ्यथाभाग-

---

[1]. अग्निस्तान् यहाँ वा.प्रा.३.७६. के अनुसार अग्निः के वाद एकाक्षर पद तान् परे होने से सकार षकार होता है। वा.प्रा.३.७९. के अनुसार षकारोत्तरवर्ती तकार टकार हो जाता है। १.९९-१०१ में तान् पद को एकाक्षर माना गया है। वा.प्रा.४.१०३. के अनुसार यहाँ टकार का द्वित्व होता है।

[2]. नुश्चानुनासिकम् (वा. प्रा. ४.१४) के अनुसार तान् लोकात् यहाँ पर नकार अनुनासिक लकार होता है।

म्मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वँऽयथाभागमा वृषायद्ध्वँवृषयद्ध्वमा यथाभागम्मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वँ-ऽयथाभागमा वृषायद्ध्वम्[1]। यथाभागमा वृषायद्ध्वँवृषयद्ध्वमा यथाभागँऽयथाभाग-मा वृषायद्ध्वम्। यथाभागमिति यथा भागम्। आ वृषायद्ध्वम्। वृषयद्ध्वमिति वृष यद्ध्वम्॥ अमीमदन्त पितरः पितरोमीमदन्तामीमदन्त पितरो यथाभागँऽयथा-भागम्पितरोमीमदन्तामीमदन्त पितरो यथाभागम्। पितरो यथाभागँऽयथाभाग-म्पितरः पितरो यथाभागमावृषायिषतावृषायिषता यथाभागम्पितरः पितरो यथाभागमावृषायिषत। यथाभागमावृषायिषतावृषायिषता यथाभागँऽयथाभाग-मावृषायिषत। यथाभागमिति यथा भागम्। आवृषायिषत। अवृषायिषतेत्य-वृषायिषत[2] ॥३०॥

नमो वो वो नमो नमो वः पितरः पितरो वो नमो नमो वः पितरः। वः पितरः पितरो वो वः पितरो रसाय रसाय पितरो वो वः पितरो रसाय। पितरो रसाय रसाय पितरः पितरो रसाय शोषाय शोषाय रसाय पितरः पितरो रसाय शोषाय। रसाय शोषाय शोषाय रसाय रसाय शोषाय जीवाय जीवाय शोषाय रसाय रसाय शोषाय जीवाय। शोषाय जीवाय जीवाय शोषाय शोषाय जीवाय स्वधायै स्वधायै जीवाय शोषाय शोषाय जीवाय स्वधायै। जीवाय स्वधायै स्वधायै जीवाय जीवाय स्वधायै घोराय घोराय स्वधायै जीवाय जीवाय स्वधायै घोराय। स्वधायै घोराय घोराय स्वधायै स्वधायै घोराय मन्यवे मन्यवे घोराय स्वधायै स्वधायै घोराय मन्यवे। घोराय मन्यवे मन्यवे घोराय घोराय मन्यवे नमो नमो मन्यवे घोराय घोराय मन्यवे नमः। मन्यवे नमो नमो मन्यवे

---

1. वृषयद्ध्वम् यहाँ वा.प्रा.३.९६. के अधिकार में पठित सूत्र ३.११२. के अनुसार यकार बाद में होने पर वृष का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है।

2. जनयत्या ओषधयोवृषायिषत नहि चनास्मभ्यमजावयो वलगम् (वा. प्रा. ५.३५) इस सूत्र के अनुसार अवृषायिषत इस पद का पृथकरण नहीं होता है।

मु॒न्यवे॒ नमो॑ वो वो॒ नमो॑ मु॒न्यवे॑ मु॒न्यवे॒ नमो॑ वः। नमो॑ वो वो॒ नमो॒ नमो॑ वः
पितरः पितरो वो॒ नमो॒ नमो॑ वः पितरः। व॒ः पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ वो॒ व॒ः पि॒त॒र॒ः
पित॑र॒ः पित॑रः पितरो वो वः पितर॒ः पित॑रः। पि॒त॒र॒ः पित॑र॒ः पित॑रः पितरः
पितर॒ः पित॑रो॒ नमो॒ नम॒ः पित॑रः पितरः पितर॒ः पित॑रो॒ नम॑ः। पित॑रो॒ नमो॒
नम॒ः पित॑र॒ः पित॑रो॒ नमो॑ वो वो॒ नम॒ः पित॑र॒ः पित॑रो॒ नमो॑ वः। नमो॑ वो वो॒ नमो॒
नमो॑ वो गृ॒हान्गृ॒हान्वो॒ नमो॒ नमो॑ वो गृ॒हान्। वो॒ गृ॒हान्गृ॒हान्वो॑ वो गृ॒हान्नो॑ नो
गृ॒हान्वो॑ वो गृ॒हान्न॑ः। गृ॒हान्नो॑ नो गृ॒हान्गृ॒हान्न॑ः पितरः पितरो नो गृ॒हान्गृ॒हा-
न्न॑ः पितरः। न॒ः पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ नो॒ न॒ः पि॒त॒रो॒ द॒त्त द॒त्त पि॒त॒रो॒ नो॒ न॒ः पि॒त॒रो॒
द॒त्त। पि॒त॒रो॒ द॒त्त द॒त्त पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ द॒त्त स॒तः स॒तो द॑त्त पितरः पितरो दत्त स॒तः।
द॒त्त स॒तः स॒तो द॑त्त दत्त स॒तो वो॑ वः स॒तो द॑त्त दत्त स॒तो व॑ः[1]। स॒तो वो॑ वः स॒तः
स॒तो व॑ः पितरः पितरो वः स॒तः स॒तो व॑ः पितरः। व॒ः पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ वो॒ व॒ः
पि॒त॒रो॒ दे॒ष्म्म॒ दे॒ष्म्म॒ पि॒त॒रो॒ वो॒ व॒ः पि॒त॒रो॒ दे॒ष्म्म॒। पि॒त॒रो॒ दे॒ष्म्म॒ दे॒ष्म्म॒ पि॒त॒र॒ः
पि॒त॒रो॒ दे॒ष्म्मै॒तदे॒तद्दे॑ष्म्म पितरः पितरो देष्म्मै॒तत्। दे॒ष्म्मै॒तदे॒तद्दे॑ष्म्म देष्म्मै॒तद्वो॑
वऽ ए॒तद्दे॑ष्म्म देष्म्मै॒तद्व॑ः। ए॒तद्वो॑ वऽ ए॒तदे॒तद्व॑ः पितरः पितरो वऽ ए॒तदे॒तद्व॑ः
पितरः। व॒ः पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ वो॒ व॒ः पि॒त॒रो॒ वासो॒ वास॑ः पितरो वो वः पितरो॒
वास॑ः[2]। पि॒त॒रो॒ वासो॒ वास॑ः पितरः पितरो॒ वास॒ऽ आ ध॑त्त ध॒त्ता वास॑ः पितरः
पितरो॒ वास॒ऽ आ ध॑त्त। वास॒ऽ आ ध॑त्त ध॒त्ता वासो॒ वास॒ऽ आ ध॑त्त पितरः पितरो
ध॒त्ता वासो॒ वास॒ऽ आ ध॑त्त पितरः ॥३१॥

आ ध॑त्त। ध॒त्त पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ ध॒त्त ध॒त्त पि॒त॒रो॒ गर्भ॒ङ्गर्भ॑म्पितरो धत्त धत्त
पितरो॒ गर्भ॑म्। पि॒त॒रो॒ गर्भ॒ङ्गर्भ॑म्पितरः पितरो॒ गर्भ॑ङ्कुमा॒रङ्कु॑मा॒रङ्गर्भ॑म्पितरः

---

1. सु॒तः व॒ः यहाँ उदात्ताच्चानुदात्तं स्वरितम् (वा.प्रा.४.१३७) से उदात्त से परवर्ती अनुदात्त स्वरित होता है।

2. वो वान्ते त्वदर्थे (वा. प्रा. २.५) इस सूत्र के अनुसार व॒ः पद यहाँ अनुदात्त है।

पितरो गर्ब्भङ्कुमारम्। गर्ब्भङ्कुमारङ्कुमारङ्गर्ब्भङ्गर्ब्भङ्कुमारम्पुष्कंरस्रजम्पुष्कंरस्रजङ्कुमारङ्गर्ब्भङ्गर्ब्भङ्कुमारम्पुष्कंरस्रजम्। कुमारम्पुष्कंरस्रजम्पुष्कंरस्रजङ्कुमारङ्कुमारम्पुष्कंरस्रजम्। पुष्कंरस्रजमिति पुष्कंर स्रजम्॥ यथेहेह यथा यथेह पुरुषः पुरुषऽ इह यथा यथेह पुरुषः[1]। इह पुरुषः पुरुषऽ इहेह पुरुषोसदसत्पुरुषऽ इहेह पुरुषोसंत्। पुरुषोसदसत्पुरुषः पुरुषोसंत्। असदित्यसंत्॥३२॥

ऊर्ज्जंवहंन्तीर्व्वहंन्तीरूर्ज्जमूर्ज्जंवहंन्तीरमृतंममृतंवहंन्तीरूर्ज्जमूर्ज्जंवहंन्तीरमृतंम्। वहंन्तीरमृतंममृतंवहंन्तीर्व्वहंन्तीरमृतंङ्घृतङ्घृतममृतंवहंन्तीर्व्वहंन्तीरमृतंङ्घृतम्। अमृतंङ्घृतङ्घृतममृतंममृतंङ्घृतम्पयः पयों घृतममृतंममृतंङ्घृतम्पयंः। घृतम्पयः पयों घृतङ्घृतम्पयंः कीलालंङ्कीलालम्पयों घृतङ्घृतम्पयंः कीलालंम्। पयंः कीलालंङ्कीलालम्पयः पयंः कीलालंम्परिस्रुतंम्परिस्रुतंङ्कीलालम्पयः पयंः कीलालंम्परिस्रुतंम्। कीलालंम्परिस्रुतंम्परिस्रुतंङ्कीलालंङ्कीलालंम्परिस्रुतंम्। परिस्रुतमितिं परि स्रुतंम्॥ स्वधा स्त्थं स्त्थ स्वधाः स्वधा स्त्थं तर्प्पयंत तर्प्पयंत स्त्थ स्वधाः स्वधा स्त्थं तर्प्पयंत[2]। स्थ तर्प्पयंत तर्प्पयंत स्त्थ स्त्थ तर्प्पयंत मे मे तर्प्पयंत स्त्थ स्त्थ तर्प्पयंत मे। तर्प्पयंत मे मे तर्प्पयंत तर्प्पयंत मे पितॄन्पितॄन्मे तर्प्पयंत तर्प्पयंत मे पितॄन्। मे पितॄन्पितॄन्मे मे पितॄन्। पितॄनितिं पितॄन्॥३३॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे द्वितीयोध्यायः॥

---

[1]. यथा गृभोभुवोऽग्निभ्यः(वा.प्रा.२.९) के अनुसार यथा पद गृभः, भुवः तथा अग्निः के बाद होने पर सर्वानुदात्त होता है। यहाँ उक्त परिस्थिति न होने से सर्वानुदात्त नहीं है।

[2]. स्वधाः स्थ यहाँ पर लुङ् मुदि जित्परे (वा. प्रा. ३.१३) इस सूत्र से विसर्ग का लोप होता है।

॥तृतीयोध्यायः॥

हरिः ॐ॥ सुमिधाग्निमुग्निꣳ सुमिधा सुमिधाग्निन्दुवस्यत दुवस्यताग्निꣳ सुमिधा सुमिधाग्निन्दुवस्यत[1]। सुमिधेति सुम् इधा। अग्निन्दुवस्यत दुवस्यताग्निमुग्निन्दुवस्यत घृतैर्घृतैर्दुवस्यताग्निमुग्निन्दुवस्यत घृतैः। दुवस्यत घृतैर्घृतैर्दुवस्यत दुवस्यत घृतैर्ब्बोधयत बोधयत घृतैर्दुवस्यत दुवस्यत घृतैर्ब्बोधयत। घृतैर्ब्बोधयत बोधयत घृतैर्घृतैर्ब्बोधयतातिथिमतिथिम्बोधयत घृतैर्घृतैर्ब्बोधयतातिथिम्। बोधयतातिथिमतिथिम्बोधयत बोधयतातिथिम्। अतिथिमित्त्यतिथिम्॥ आस्म्मिन्नस्म्मिन्नास्म्मिन्हव्या हव्यास्म्मिन्नास्म्मिन्हव्या। अस्म्मिन्हव्या हव्यास्म्मिन्नस्म्मिन्हव्या जुहोतन जुहोतन हव्यास्म्मिन्नस्म्मिन्हव्या जुहोतन। हव्या जुहोतन जुहोतन हव्या हव्या जुहोतन। जुहोतनेति जुहोतन॥१॥

सुसमिद्धाय शोचिषे शोचिषे सुसमिद्धाय सुसमिद्धाय शोचिषे घृतङ्घृतꣳ शोचिषे सुसमिद्धाय सुसमिद्धाय शोचिषे घृतम्। सुसमिद्धायेति सु समिद्धाय। शोचिषे घृतङ्घृतꣳ शोचिषे शोचिषे घृतन्तीव्रन्तीव्रङ्घृतꣳ शोचिषे शोचिषे घृतन्तीव्रम्। घृतन्तीव्रन्तीव्रङ्घृतङ्घृतन्तीव्रञ्जुहोतन जुहोतन तीव्रङ्घृतङ्घृतन्तीव्रञ्जुहोतन। तीव्रञ्जुहोतन जुहोतन तीव्रन्तीव्रञ्जुहोतन। जुहोतनेति जुहोतन॥ अग्नये जातवेदसे जातवेदसेग्ग्नयेग्ग्नये जातवेदसे। जातवेदसऽ इति जात ब्वेदसे॥२॥

तन्त्वा त्वा तन्तन्त्वा सुमिद्भिः सुमिद्भिस्त्वा तन्तन्त्वा सुमिद्भिः। त्वा सुमिद्भिः सुमिद्भिस्त्वा त्वा सुमिद्भिरङ्गिरोङ्गिरः सुमिद्भिस्त्वा त्वा सुमिद्भिरङ्गिरः। सुमिद्भिरङ्गिरोङ्गिरः सुमिद्भिः सुमिद्भिरङ्गिरो घृतेन घृतेनाङ्गिरः सुमिद्भिः सुमिद्भिरङ्गिरो घृतेन। सुमिद्भिरिति सुमित् भिः। अङ्गिरो घृतेन घृतेनाङ्गिरोङ्गिरो घृतेन ब्वर्द्धयामसि ब्वर्द्धयामसि घृतेनाङ्गिरोङ्गिरो घृतेन ब्वर्द्धयामसि। घृतेन ब्वर्द्धयामसि

[1]. अग्निम् यहाँ वा.प्रा.४.१०१. के अनुसार गकार का द्वित्व होता है।

व्वर्द्धयामसि घृतेन॑ घृतेन॑ व्वर्द्धयामसि। व्व॒र्द्ध॒या॒म॒सीति॑ वर्द्धयामसि॥ बृहच्छो॑च शोच बृहद् बृहच्छो॑चा यविष्ठ्य यविष्ठ्य शोच बृहद् बृहच्छो॑चा यविष्ठ्य[1]। शो॒चा॒ य॒वि॒ष्ठ्य॒ य॒वि॒ष्ठ्य॒ शो॒च॒ शो॒चा॒ य॒वि॒ष्ठ्य॒। य॒वि॒ष्ठ्येति॑ यविष्ठ्य॥३॥

उप॑ त्वा॒ त्वोपोप॑ त्वाग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वोपोप॑ त्वाग्ग्ने। त्वा॒ग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वा॒ त्वा॒ग्ग्ने॒ ह॒विष्म्म॑तीर्ह॒विष्म्म॑तीरग्ग्ने त्वा त्वाग्ग्ने ह॒विष्म्म॑तीः। अ॒ग्ग्ने॒ ह॒विष्म्म॑तीर्ह॒विष्म्म॑तीरग्ग्नेग्ग्ने ह॒विष्म्म॑तीर्घृ॒ताची॑र्घृ॒ताची॑र्ह॒विष्म्म॑तीरग्ग्नेग्ग्ने ह॒विष्म्म॑तीर्घृ॒ताचीः[2]। ह॒विष्म्म॑तीर्घृ॒ताची॑र्घृ॒ताची॑र्ह॒विष्म्म॑तीर्ह॒विष्म्म॑तीर्घृ॒ताची॑र्य्यन्तु यन्तु घृताची॑र्ह॒विष्म्म॑तीर्ह॒विष्म्म॑तीर्घृ॒ताची॑र्य्यन्तु। घृताची॑र्य्यन्तु यन्तु घृताची॑र्घृ॒ताची॑र्य्यन्तु हर्य्यत हर्य्यत यन्तु घृताची॑र्घृ॒ताची॑र्य्यन्तु हर्य्यत। य॒न्तु॒ ह॒र्य्य॒त॒ ह॒र्य्य॒त॒ य॒न्तु॒ य॒न्तु॒ ह॒र्य्य॒त॒। ह॒र्य्य॒तेति॑ हर्य्यत॥ जुषस्व॑ स॒मिध॑ः स॒मिधो॑ जुषस्व॑ जु॒षस्व॑ स॒मिधो॒ मम॒ मम॑ स॒मिधो॑ जु॒षस्व॑ जु॒षस्व॑ स॒मिधो॒ मम॑। स॒मिधो॒ मम॒ मम॑ स॒मिध॑ः स॒मिधो॒ मम॑। स॒मिध॒ऽ इति॑ स॒म् इध॑ः। ममेति॒ मम॑॥४॥

भूर्भुवो॒ भुवो॒ भूर्भूर्भुव॒ः स्व॒ः स्व॒र्भुवो॒ भूर्भूर्भुव॒ः स्व॒ः। भुव॒ः स्व॒ः स्व॒र्भुवो॒ भुव॒ः स्व॒र्द्यौरि॑व॒ द्यौरि॑व॒ स्व॒र्भुवो॒ भुव॒ः स्व॒र्द्यौरि॑व। स्व॒र्द्यौरि॑व॒ द्यौरि॑व॒ स्व॒ः स्व॒र्द्यौरि॑व भूम्म्ना भूम्म्ना द्यौरि॑व॒ स्व॒ः स्व॒र्द्यौरि॑व भूम्म्ना। द्यौरि॑व भूम्म्ना भूम्म्ना द्यौरि॑व॒ द्यौरि॑व भूम्म्ना पृ॑थि॒वीव॑ पृथि॒वीव॑ भूम्म्ना द्यौरि॑व॒ द्यौरि॑व भूम्म्ना पृ॑थि॒वीव॑। द्यौरि॒वेति॒ द्यौः इव॑। भूम्म्ना पृ॑थि॒वीव॑ पृथि॒वीव॑ भूम्म्ना भूम्म्ना पृ॑थि॒वीव॑ व्वरि॒म्म्णा व्व॑रि॒म्म्णा पृ॑थि॒वीव॑ भूम्म्ना भूम्म्ना पृ॑थि॒वीव॑ व्वरि॒म्म्णा। पृ॒थि॒वीव॑ व्वरि॒म्म्णा व्व॑रि॒म्म्णा पृ॑थि॒वीव॑ पृथि॒वीव॑ व्वरि॒म्म्णा। पृ॒थि॒वीवेति॑ पृथि॒वी इ॑व[3]।

---

[1]. शोच यविष्ठ्य यहाँ वा.प्रा.३.११२. के अनुसार शोच का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है।

[2]. हविष्म्मतीर्घृताचीः यहाँ पर परं तु रेफहकाराभ्याम् (वा. प्रा. ४.१०२) इस सूत्र से रेफ से परवर्ती घकार की द्विरुक्ति प्राप्त है परन्तु ऋवर्णे (वा. प्रा. ४.११३) से उसका निषेध है।

[3]. वा.प्रा.५.१८. के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

व्व॒रि॒म्म्णेति॑ वरि॒म्म्णा॥ तस्या॑स्ते ते॒ तस्या॒स्तस्या॑स्ते पृथिवि पृथिवि ते॒ तस्या॒-
स्तस्या॑स्ते पृथिवि। ते॒ पृ॒थि॒वि॒ पृ॒थि॒वि॒ ते॒ ते॒ पृ॒थि॒वि॒ दे॒व॒य॒ज॒नि॒ दे॒व॒य॒ज॒नि॒ पृ॒थि॒वि॒
ते॒ ते॒ पृ॒थि॒वि॒ दे॒व॒य॒ज॒नि॒। पृ॒थि॒वि॒ दे॒व॒य॒ज॒नि॒ दे॒व॒य॒ज॒नि॒ पृ॒थि॒वि॒ पृ॒थि॒वि॒ दे॒व॒य॒ज॒नि॒
पृ॒ष्ठे पृ॒ष्ठे दे॑वयजनि पृथिवि पृथिवि देवयजनि पृ॒ष्ठे। दे॒व॒य॒ज॒नि॒ पृ॒ष्ठे पृ॒ष्ठे दे॑वयजनि
देवयजनि पृ॒ष्ठे॒ग्ग्निम॒ग्ग्निम्पृ॒ष्ठे दे॑वयजनि देवयजनि पृ॒ष्ठे॒ग्ग्निम्। दे॒व॒य॒ज॒नीति॑ देव
यजनि। पृ॒ष्ठे॒ग्ग्निम॒ग्ग्निम्पृ॒ष्ठे पृ॒ष्ठे॒ग्ग्निम॑न्ना॒दम॑न्ना॒दम॒ग्ग्निम्पृ॒ष्ठे पृ॒ष्ठे॒ग्ग्निम॑न्ना॒दम्।
अ॒ग्ग्निम॑न्ना॒दम॑न्ना॒दम॒ग्ग्निम॒ग्ग्निम॑न्ना॒दम॒न्नाद्या॑या॒न्नाद्या॑यान्ना॒दम॒ग्ग्निम॒ग्ग्निम॑न्ना॒दम॒-
न्नाद्या॑य। अ॒न्ना॒दम॒न्नाद्या॑या॒न्नाद्या॑यान्ना॒दम॑न्ना॒दम॒न्नाद्या॒या द॑धे दध॒ऽ आन्नाद्या॑या-
न्ना॒दम॑न्ना॒दम॒न्नाद्या॒या द॑धे। अ॒न्ना॒दमित्य॑न्न अ॒दम्। अ॒न्नाद्या॒या द॑धे दध॒ऽ आन्ना-
द्या॑या॒न्नाद्या॒या द॑धे। अ॒न्नाद्या॒येत्य॑न्न॒ अद्या॑य। आ द॑धे। द॒ध॒ऽ इति॑ दधे॥५॥

आयम॒यमायङ्गौग्गौर॒यमायङ्गौः। अ॒यङ्गौग्गौर॒यम॒यङ्गौः पृश्श्नि॒ः पृश्श्नि॒-
ग्गौर॒यम॒यङ्गौः पृश्श्नि॑ः। गौः पृश्श्नि॒ः पृश्श्नि॒ग्गौग्गौः पृश्श्नि॑रक्क्रमीदक्क्रमी॒-
त्पृश्श्नि॒ग्गौग्गौः पृश्श्नि॑रक्क्रमीत्। पृश्श्नि॑रक्क्रमीदक्क्रमी॒त्पृश्श्नि॒ः पृश्श्नि॑रक्क्रमी॒दस॑द॒-
दस॑ददक्क्रमी॒त्पृश्श्नि॒ः पृश्श्नि॑रक्क्रमी॒दस॑दत्। अ॒क्क्रमी॒दस॑द॒दस॑ददक्क्रमीदक्क्रमी॒दस॑द-
न्मा॒तर॑म्मा॒तर॒मस॑ददक्क्रमीदक्क्रमी॒दस॑दन्मा॒तर॑म्। अस॑दन्मा॒तर॑म्मा॒तर॒मस॑द॒दस॑द-
न्मा॒तर॑म्पु॒रः पुरो मा॒तर॒मस॑द॒दस॑दन्मा॒तर॑म्पु॒रः। मा॒तर॑म्पु॒रः पुरो मा॒तर॑-
म्मा॒तर॑म्पु॒रः। पु॒रऽ इति॑ पु॒रः॥ पि॒तर॑ञ्च च पि॒तर॑म्पि॒तर॑ञ्च प्प्र॒यन्प्र॒यँश्च॑
पि॒तर॑म्पि॒तर॑ञ्च प्प्र॒यन्। च॒ प्प्र॒यन्प्र॒यँश्च॑ च प्प्र॒यन्त्स्व॒ः स्व॒ः प्प्र॒यँश्च॑ च
प्प्र॒यन्त्स्व॑ः। प्र॒यन्त्स्व॒ः स्व॒ः प्प्र॒यन्प्र॒यन्त्स्व॑ः। प्र॒यन्निति॑ प्प्र॒ यन्। स्व॒रिति॒
स्व॒ः॥६॥

अन्तश्चरति चरत्यन्तरन्तश्चरति रोचना रोचना चरत्यन्तरन्तश्चरति रोचना[1]। अन्तरित्यन्तः। चरति रोचना रोचना चरति चरति रोचनास्यास्य रोचना चरति चरति रोचनास्य। रोचनास्यास्य रोचना रोचनास्य प्राणात्प्राणादस्य रोचना रोचनास्य प्राणात्। अस्य प्राणात्प्राणादस्यास्य प्राणादपानत्यपानती प्राणादस्यास्य प्राणादपानती[2]। प्राणादपानत्यपानती प्राणात्प्राणादपानती। अपानतीत्यप अनती॥ व्यख्यदक्ख्यद्वि व्यक्ख्यन्महिषो महिषोक्ख्यद्वि व्यक्ख्यन्महिषः। अक्ख्यन्महिषो महिषोक्ख्यदक्ख्यन्महिषो दिवन्दिवम्महिषोक्ख्यदक्ख्यन्महिषो दिवम्। महिषो दिवन्दिवम्महिषो महिषो दिवम्। दिवमिति दिवम्॥७॥

त्रिꣳशद्धाम धाम त्रिꣳशत्त्रिꣳशद्धाम वि वि धाम त्रिꣳशत्त्रिꣳशद्धाम वि। धाम वि वि धाम धाम वि राजति राजति वि धाम धाम वि राजति। वि राजति राजति वि वि राजति वाग्ग्वाग्ग्राजति वि वि राजति वाक्[3]। राजति वाग्ग्वाग्ग्राजति राजति वाक्पतङ्गाय पतङ्गाय वाग्ग्राजति राजति वाक्पतङ्गाय। वाक्पतङ्गाय पतङ्गाय वाग्ग्वाक्पतङ्गाय धीयते धीयते पतङ्गाय वाग्ग्वाक्पतङ्गाय धीयते। पतङ्गाय धीयते धीयते पतङ्गाय पतङ्गाय धीयते। धीयतऽ इति धीयते॥ प्रति वस्तोर्वस्तोः प्रति प्रति वस्तोरहाह वस्तोः प्रति प्रति वस्तोरह। वस्तोरहाह वस्तोर्वस्तोरह द्युभिर्द्युभिरह वस्तोर्वस्तोरह द्युभिः। अह द्युभिर्द्युभिरहाह द्युभिः। द्युभिरिति द्यु भिः॥८॥

---

[1]. अन्तरनाद्युदात्तम्(वा.प्रा.१.१६२) इस सूत्र के अनुसार यहाँ आद्युदात्त न होने से अन्तः पद रिफित है।

[2]. वा. प्रा. २.६१ के अनुसार यहाँ अस्य पद अन्तोदात्त है।

[3]. वाक् राजति यहाँ स्पर्शोऽपञ्चमः स्वरधौ तृतीयम्(वा.प्रा.४.१२०) इस सूत्र से धि संज्ञक वर्ण(र) बाद में होने से अपञ्चम स्पर्श(क) तृतीय(ग) होता है।

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरग्निर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरग्निर्ज्योतिर्ज्योतिः। ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरग्निर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः। ज्योतिरग्निरग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा स्वाहाग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा[1]। अग्निः स्वाहा स्वाहाग्निरग्निः स्वाहा सूर्य्यः सूर्य्यः स्वाहाग्निरग्निः स्वाहा सूर्य्यः। स्वाहा सूर्य्यः सूर्य्यः स्वाहा स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिः। सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः। ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। सूर्य्यः स्वाहा स्वाहा सूर्य्यः सूर्य्यः स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ अग्निर्व्वर्चो व्वर्चोग्निरग्निर्व्वर्चो ज्योतिर्ज्योतिर्व्वर्चोग्निरग्निर्व्वर्चो ज्योतिः[2]। व्वर्चो ज्योतिर्ज्योतिर्व्वर्चो व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चो व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चो व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चः। ज्योतिर्व्वर्चो व्वर्चो ज्योतिर्ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा स्वाहा व्वर्चो ज्योतिर्ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा। व्वर्चः स्वाहा स्वाहा व्वर्चो व्वर्चः स्वाहा सूर्य्यः सूर्य्यः स्वाहा व्वर्चो व्वर्चः स्वाहा सूर्य्यः। स्वाहा सूर्य्यः सूर्य्यः स्वाहा स्वाहा सूर्य्यो व्वर्चो व्वर्चः सूर्य्यः स्वाहा स्वाहा सूर्य्यो व्वर्चः। सूर्य्यो व्वर्चो व्वर्चः सूर्य्यः सूर्य्यो व्वर्चो ज्योतिर्ज्योतिर्व्वर्चः सूर्य्यः सूर्य्यो व्वर्चो ज्योतिः। व्वर्चो ज्योतिर्ज्योतिर्व्वर्चो व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चो व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चो व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चः। ज्योतिर्व्वर्चो व्वर्चो ज्योतिर्ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा स्वाहा व्वर्चो

---

1. अविकारं शाकल्यः शषसेषु (वा. प्रा. ३.१०) विसर्ग से परे श, ष एवं स होने पर शाकल्याचार्य के अनुसार विसर्ग का विकार नहीं होता। प्रत्ययसवर्णं मुदि शाकटायनः (वा. प्रा. ३.९) इस सूत्र की प्रवृत्ति माध्यन्दिन शाखा के लिये नहीं है।

2. व्वर्चः यहाँ वा.प्रा.४.१०२. के अनुसार चकार का द्वित्व विहित है।

ज्योतिर्ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। वर्चः स्वाहा स्वाहा वर्चो वर्चः स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यः। सूर्य्यः सूर्य्यः सूर्य्यः सूर्य्यः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः। सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा स्वाहा ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा। ज्योतिः स्वाहा स्वाहा ज्योतिर्ज्योतिः स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥९॥

सजूर्देवेन देवेन सजूः सजूर्देवेन सवित्रा सवित्रा देवेन सजूः सजूर्देवेन सवित्रा। सजूरिति स जूः। देवेन सवित्रा सवित्रा देवेन देवेन सवित्रा सजूः सजूः सवित्रा देवेन देवेन सवित्रा सजूः। सवित्रा सजूः सजूः सवित्रा सवित्रा सजू रात्र्या रात्र्या सजूः सवित्रा सवित्रा सजू रात्र्या[1]। सजू रात्र्या रात्र्या सजूः सजू रात्र्येन्द्रवत्येन्द्रवत्या रात्र्या सजूः सजू रात्र्येन्द्रवत्या। सजूरिति स जूः। रात्र्येन्द्रवत्येन्द्रवत्या रात्र्या रात्र्येन्द्रवत्या। इन्द्रवत्येतीन्द्र वत्या॥ जुषाणोऽ अग्निरग्निर्ज्जुषाणो जुषाणोऽ अग्निर्वेतु वेत्वग्निर्ज्जुषाणो जुषाणोऽ अग्निर्वेतु। अग्निर्वेतु वेत्वग्निरग्निर्वेतु स्वाहा स्वाहा वेत्वग्निरग्निर्वेतु स्वाहा। वेतु स्वाहा स्वाहा वेतु वेतु स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ उषसा सूर्य्यः सूर्य्यऽ उषसोषसा सूर्य्यः॥ सूर्य्यऽ इति सूर्य्यः॥१०॥

उपप्प्रयन्तोऽ अद्ध्वरमद्ध्वरमुपप्प्रयन्तऽ उपप्प्रयन्तोऽ अद्ध्वरम्मन्त्रम्मन्त्रमद्ध्वरमुपप्प्रयन्तऽ उपप्प्रयन्तोऽ अद्ध्वरम्मन्त्रम्[2]। उपप्प्रयन्तऽ इत्युप प्रयन्तः। अद्ध्वरम्मन्त्रम्मन्त्रमद्ध्वरमद्ध्वरम्मन्त्रँवोचेम वोचेम मन्त्रमद्ध्वरमद्ध्वरम्मन्त्रँवोचेम। मन्त्रँ-

---

[1]. सजूः रात्र्या यहाँ भाष्युपधश्च रिह्विसर्जनीयः(वा.प्रा.४.३५) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत आये रेफे लुप्यते दीर्घं चोपधा(वा.प्रा.४.३६) इस सूत्र से विसर्जनीय का लोप होता है।

[2]. प्रकृतिभाव ऋक्षु (वा. प्रा. ४.८२) के अनुसार यहाँ उपप्रयन्तो का ओकार का प्रकृतिभाव से रहता है।

व्वोचेम व्वोचेम॒ मन्त्र॒म्मन्त्र॑ँव्वोचेमा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ व्वोचेम॒ मन्त्र॒म्मन्त्र॑ँव्वोचेमा॒ग्ग्नये॑। व्वो॒चे॒मा॒-ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ व्वोचेम व्वोचेमा॒ग्ग्नये॑। अ॒ग्ग्नय॒ऽ इत्त्य॒ग्ग्नये॑॥ आ॒रेऽ अ॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मेऽ आ॒रऽ आ॒रेऽ अ॒स्म्मे च॑ चा॒स्म्मेऽ आ॒रऽ आ॒रेऽ अ॒स्म्मे च॑। अ॒स्म्मे च॑ चा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे च॑ शृण्ण्व॒ते शृ॑ण्ण्व॒ते चा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे च॑ शृण्ण्व॒ते। अ॒स्म्मेऽ इत्त्य॒स्म्मे। च॒ शृ॒ण्ण्व॒ते शृ॑ण्ण्व॒ते च॑ च शृण्ण्व॒ते। शृ॒ण्ण्व॒तऽ इति॑ शृण्ण्व॒ते॥११॥

अ॒ग्ग्निर्म्मू॒र्द्धा मू॒र्द्धाग्ग्निर॒ग्ग्निर्म्मू॒र्द्धा दि॒वो दि॒वो मू॒र्द्धाग्ग्निर॒ग्ग्निर्म्मू॒र्द्धा दि॒वः। मू॒र्द्धा दि॒वो दि॒वो मू॒र्द्धा मू॒र्द्धा दि॒वः क॒कुत्त्क॒कुद्दि॒वो मू॒र्द्धा मू॒र्द्धा दि॒वः क॒कुत्। दि॒वः क॒कुत्त्क॒कुद्दि॒वो दि॒वः क॒कुत्त्पति॒ः पति॑ः क॒कुद्दि॒वो दि॒वः क॒कुत्त्पति॑ः। क॒कु॒-त्त्पति॒ः पति॑ः क॒कुत्त्क॒कुत्त्पति॑ः पृथि॒व्व्याः पृ॑थि॒व्व्याः पति॑ः क॒कुत्त्क॒कुत्त्पति॑ः पृथि॒व्व्याः। पति॑ः पृथि॒व्व्याः पृ॑थि॒व्व्याः पति॒ः पति॑ः पृथि॒व्व्याऽ अ॒यम॒यम्पृ॑थि॒व्व्याः पति॒ः पति॑ः पृथि॒व्व्याऽ अ॒यम्। पृ॒थि॒व्व्याऽ अ॒यम॒यम्पृ॑थि॒व्व्याः पृ॑थि॒व्व्याऽ अ॒यम्। अ॒यमित्त्य॒यम्॥ अ॒पाᳪं रेता॑ᳪंसि॒ रेता॑ᳪंस्य॒पाम॒पाᳪं रेता॑ᳪंसि जिन्न्वति जिन्न्वति॒ रेता॑ᳪंस्य॒पाम॒पाᳪं रेता॑ᳪंसि जिन्न्वति। रेता॑ᳪंसि जिन्न्वति जिन्न्वति॒ रेता॑ᳪंसि॒ रेता॑ᳪंसि जिन्न्वति। जि॒न्न्व॒तीति॑ जिन्न्वति॥१२॥

उ॒भा वाँ॑व्वामु॒भोभा वा॑मिन्द्राग्ग्नीऽ इन्द्राग्ग्नी वामु॒भोभा वा॑मिन्द्राग्ग्नी। व्वा॒मि॒न्द्रा॒ग्ग्नी॒ऽ इ॒न्द्रा॒ग्ग्नी॒ वाँ॑व्वामि॒न्द्रा॒ग्ग्नी॒ऽ आ॒हु॒वद्ध्यै॑ऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ इन्द्राग्ग्नी वाँ॑-व्वामिन्द्राग्ग्नीऽ आहु॒वद्ध्यै॑। इ॒न्द्रा॒ग्ग्नी॒ऽ आ॒हु॒वद्ध्या॑ऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ इन्द्राग्ग्नीऽ इन्द्रा-ग्ग्नीऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ उ॒भोभाहु॒वद्ध्या॑ऽ इन्द्राग्ग्नीऽ इन्द्राग्ग्नीऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ उ॒भा। इ॒न्द्रा॒ग्ग्नी॒ऽ इती॑न्द्राग्ग्नी। आ॒हु॒वद्ध्या॑ऽ उ॒भोभाहु॒वद्ध्या॑ऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ उ॒भा राध॑सो॒ राध॑सऽ उ॒भाहु॒वद्ध्या॑ऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ उ॒भा राध॑सः। आ॒हु॒वद्ध्या॒ऽ इत्त्या॑ हु॒वद्ध्यै॑।

उभा राधसो राधसऽ उभोभा राधसः सह सह राधसऽ उभोभा राधसः सह[1]। राधसः सह सह राधसो राधसः सह मादयद्ध्यै मादयद्ध्यै सह राधसो राधसः सह मादयद्ध्यै। सह मादयद्ध्यै मादयद्ध्यै सह सह मादयद्ध्यै। मादयद्ध्याऽ इति मादयद्ध्यै॥ उभा दातारौ दातारांऽ उभोभा दातारांविषामिषान्दातारांऽ उभोभा दातारांविषाम्। दातारांविषामिषान्दातारौ दातारांविषाꣳ रयीणाꣳ रयीणामिषा-न्दातारौ दातारांविषाꣳ रयीणाम्। इषाꣳ रयीणाꣳ रयीणामिषामिषाꣳ रयीणा-मुभोभा रयीणामिषामिषाꣳ रयीणामुभा। रयीणामुभोभा रयीणाꣳ रयीणामुभा व्वाजस्य व्वाजस्योभा रयीणाꣳ रयीणामुभा व्वाजस्य। उभा व्वाजस्य व्वाजस्यो-भोभा व्वाजस्य सातये सातये व्वाजस्योभोभा व्वाजस्य सातये। व्वाजस्य सातये सातये व्वाजस्य व्वाजस्य सातये हुवे हुवे सातये व्वाजस्य व्वाजस्य सातये हुवे। सातये हुवे हुवे सातये सातये हुवे वाँव्वाꣳ हुवे सातये सातये हुवे वाम्। हुवे वाँव्वाꣳ हुवे हुवे वाम्। व्वामिति वाम्॥१३॥

अयन्ते तेयमयन्ते योनिर्व्योनिस्तेयमयन्ते योनिः। ते योनिर्व्योनिस्ते ते योनिर्ऋत्त्वियऽ ऋत्त्वियो योनिस्ते ते योनिर्ऋत्त्वियः[2]। योनिर्ऋत्त्वियऽ ऋत्त्वि-यो योनिर्व्योनिर्ऋत्त्वियो यतो यतः ऋत्त्वियो योनिर्व्योनिर्ऋत्त्वियो यतः[3]। ऋत्त्वियो यतो यतऽ ऋत्त्वियऽ ऋत्त्वियो यतो जातो जातो यतऽ ऋत्त्वियऽ

[1]. विसर्जनीय व्यञ्जन में परिगणित है स्वरात्संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र (वा. प्रा. ४.१०१) इस सूत्र से प्राप्त विसर्ग के द्वित्व का निषेध विसर्जनीयः (वा. प्रा. ४.११६) इस सूत्र से होता है। वा. प्रा. १.१५९ के अनुसार उत्तर शास्त्र बलवान् होता है। वा.प्रा.३.१०. के अनुसार यहाँ विसर्जनीय का विकार नहीं होता है।

[2]. याज्ञवल्क्य शिक्षा में पाँच स्वरभक्तियों का उल्लेख है, उनमें रेफ एवं ऋकार के योग का वर्णन नहीं है, जबकि प्रतिज्ञासूत्र २. में यह निर्दिष्ट है। गोड़ संप्रदाय में संहिता में स्वरभक्ति के रूप में इसका उच्चारण किया जाता है। दाक्षिणात्य संप्रदाय के वैदिक महर्षि याज्ञवल्क्य के स्वरभक्ति विषयक उपदेश को संहिता में ग्रहण करते हैं। उनके पुत्र द्वारा उपदिष्ट विशिष्ट स्वरभक्ति को केवल ब्राह्मण में चरितार्थ करते हैं।

[3]. यतो गतौ(वा.प्रा.२.५८) इस सूत्र के अनुसार गति अर्थ का वाचक यतः पद अन्तोदात्त होता है, यहाँ गत्यर्थक न होने से यह पद अन्तोदात्त नहीं है।

ऋत्वियो यतो जातः। यतो जातो जातो यतो यतो जातोऽ अरोचथाऽ अरोचथा जातो यतो यतो जातोऽ अरोचथाः। जातोऽ अरोचथाऽ अरोचथा जातो जातोऽ अरोचथाः। अरोचथाऽ इत्यरोचथाः॥ तञ्जानञ्जानँस्तन्तञ्जानन्नग्ग्नेग्ग्ने जानँस्त-न्तञ्जानन्नग्ग्ने। जानन्नग्ग्नेग्ग्ने जानञ्जानन्नग्ग्नऽ आ रोह रोहाग्ग्ने जानञ्जानन्नग्ग्नऽ आ रोह। अग्ग्नऽ आ रोह रोहाग्ग्नेग्ग्नऽ आ रोहाथाथ रोहाग्ग्नेग्ग्नऽ आ रोहाथ। आ रोह। रोहाथाथ रोह रोहाथा नो नोथ रोह रोहाथा नः। अथा नो नोथाथा नो व्वर्द्धय व्वर्द्धय नोथाथा नो व्वर्द्धय। नो व्वर्द्धय व्वर्द्धय नो नो व्वर्द्धया रयिꣳ रयिँव्वर्द्धय नो नो व्वर्द्धया रयिम्। व्वर्द्धया रयिꣳ रयिँव्वर्द्धय व्वर्द्धया रयिम्। रयिमिति रयिम्॥१४॥

अयमिहेहायमयमिह प्प्रथमः प्प्रथमऽ इहायमयमिह प्प्रथमः। इह प्प्रथ-मः प्प्रथमऽ इहेह प्प्रथमो धायि धायि प्प्रथमऽ इहेह प्प्रथमो धायि। प्रथमो धायि धायि प्प्रथमः प्प्रथमो धायि धातृभिर्द्धातृभिर्द्धायि प्प्रथमः प्प्रथमो धायि धातृ-भिः। धायि धातृभिर्द्धातृभिर्द्धायि धायि धातृभिर्होता होता धातृभिर्द्धायि धायि धातृभिर्होता। धातृभिर्होता होता धातृभिर्द्धातृभिर्होता यजिष्ठो यजिष्ठो होता धातृभिर्द्धातृभिर्होता यजिष्ठः। धातृभिरिति धातृ भिः[1]। होता यजिष्ठो यजिष्ठो होता होता यजिष्ठोऽ अद्ध्वरेष्ष्वद्ध्वरेषु यजिष्ठो होता होता यजिष्ठोऽ अद्ध्वरेषु। यजिष्ठोऽ अद्ध्वरेष्ष्वद्ध्वरेषु यजिष्ठो यजिष्ठोऽ अद्ध्वरेष्ष्वीड्ड्यऽ ईड्ड्योद्ध्वरेषु यजिष्ठो यजिष्ठोऽ अद्ध्वरेष्ष्वीड्ड्यः। अद्ध्वरेष्ष्वीड्ड्यऽ ईड्ड्योद्ध्वरेष्ष्वद्ध्वरेष्ष्वीड्ड्यः। ईड्ड्यऽ इतीड्ड्यः॥ यमप्प्नवानोप्प्नवानो यँꣳयमप्प्नवानो भृगवो भृगवोप्प्नवानो यँꣳयमप्प्न-वानो भृगवः। अप्प्नवानो भृगवो भृगवोप्प्नवानोप्प्नवानो भृगवो व्विरुरुचुर्व्विरुरुचु-र्भृगवोप्प्नवानोप्प्नवानो भृगवो व्विरुरुचुः। भृगवो व्विरुरुचुर्व्विरुरुचुर्भृगवो भृगवो व्विरुरुचुर्व्वनेषु व्वनेषु व्विरुरुचुर्भृगवो भृगवो व्विरुरुचुर्व्वनेषु। व्विरुरुचुर्व्वनेषु व्वनेषु

[1]. वा.प्रा.१.८८. के अनुसार ऋकार तथा णकार सावग्रह पद के पूर्व-पद के अन्त में ही आते हैं।

व्विरुरुचुर्व्विरुरुचुर्व्वनेषु चित्रश्चित्रँव्वनेषु व्विरुरुचुर्व्विरुरुचुर्व्वनेषु चित्रम्। व्विरुरुचुरिति वि रुरुचुः। व्वनेषु चित्रश्चित्रँव्वनेषु व्वनेषु चित्रँव्विभ्भ्वँव्विभ्भ्वश्चित्रँव्वनेषु व्वनेषु चित्रँव्विभ्भ्वम्। चित्रँव्विभ्भ्वँव्विभ्भ्वश्चित्रश्चित्रँव्विभ्भ्वँव्विशेविंशे व्विशेविंशे व्विभ्भ्वश्चित्रश्चित्रँव्विभ्भ्वँव्विशेविंशे। व्विभ्भ्वँव्विशेविंशे व्विशेविंशे व्विभ्भ्वँव्विभ्भ्वँव्विशेविंशे। व्विभ्भ्वमिति वि भ्वम्। व्विशेविंशऽ इति विशे व्विंशे॥१५॥

अस्य प्प्रत्नाम्प्रत्नामस्यास्य प्प्रत्नामन्न्वनु प्प्रत्नामस्यास्य प्प्रत्नामनु[1]। प्रत्नामन्न्वनु प्प्रत्नाम्प्रत्नामनु द्युतन्द्युतमनु प्प्रत्नाम्प्रत्नामनु द्युतम्। अनु द्युतन्द्युतमन्न्वनु द्युतँ शुक्क्रँ शुक्क्रन्द्युतमन्न्वनु द्युतँ शुक्क्रम्। द्युतँ शुक्क्रँ शुक्क्रन्द्युतन्द्युतँ शुक्क्रन्दुदुहे दुदुहे शुक्क्रन्द्युतन्द्युतँ शुक्क्रन्दुदुहे। शुक्क्रन्दुदुहे दुदुहे शुक्क्रँ शुक्क्रन्दुदुहेऽ अह्रयोह्रयो दुदुहे शुक्क्रँ शुक्क्रन्दुदुहेऽ अह्रयः[2]। दुदुहेऽ अह्रयोह्रयो दुदुहे दुदुहेऽ अह्रयः। अह्रयऽ इत्यह्रयः॥ पयः सहस्रसाँ संहस्रसाम्पयः पयः सहस्रसामृषिमृषिँ सहस्रसाम्पयः पयः सहस्रसामृषिम्। सहस्रसामृषिमृषिँ सहस्रसाँ संहस्रसामृषिम्। सहस्रसामिति सहस्र साम्। ऋषिमित्यृषिम्॥१६॥

तनूपाऽ अंग्ग्नेग्ग्ने तनूपास्तनूपाऽ अंग्ग्नेस्यस्यग्ग्ने तनूपास्तनूपाऽ अंग्ग्नेसि। तनूपाऽ इति तनू पाः। अग्ग्नेस्यस्यग्ग्नेग्ग्नेसि तन्न्वन्तन्न्वमस्यग्ग्नेग्ग्नेसि तन्न्वम्[3]। असि तन्न्वन्तन्न्वमस्यसि तन्न्वम्मे मे तन्न्वमस्यसि तन्न्वम्मे। तन्न्वम्मे मे तन्न्वन्तन्न्वम्मे पाहि पाहि मे तन्न्वन्तन्न्वम्मे पाहि। मे पाहि पाहि मे मे पाह्यायुर्द्दाऽ

---

[1]. वा.प्रा.२.६२. के अनुसार यहाँ अस्य पद अन्तोदात्त है।

[2]. दुदुहे एवं अह्रयः तथा तत्सदृश स्थलों में दुदुर् हे एवं अर् ह्रयः ऐसा उच्चारण करने पर स्वरभक्ति अपरिहार्य होगी अर्थात् दुदुरेहे एवं अरेह्रयः यह उच्चारण होगा जो कि अविवक्षित है।

[3]. एकपदे नीचपूर्वः सयवो जात्य (वा. प्रा. १.१११) एक पद में यकार अथवा वकार से युक्त अनुदात्तपूर्व स्वरित जात्य कहलाता है। यहाँ तन्न्वम् में व का अकार जात्य स्वरित है।

आयुर्दाः पाहि मे मे पाह्यायुर्दाः। पाह्यायुर्दाऽ आयुर्दाः पाहि पाह्यायुर्दाऽ अंग्नेग्नऽ आयुर्दाः पाहि पाह्यायुर्दाऽ अंग्ने। आयुर्दाऽ अंग्नेग्नऽ आयुर्दाऽ आयुर्दाऽ अंग्नेस्यस्यग्नऽ आयुर्दाऽ आयुर्दाऽ अंग्नेसि। आयुर्दाऽ इत्यायुः दाः। अग्ने-स्यस्यग्नेग्नेस्यायुरायुरस्यग्नेग्नेस्यायुः। अस्यायुरायुरस्यस्यायुर्म्मे मऽ आयुर-स्यस्यायुर्म्मे। आयुर्म्मे मऽ आयुरायुर्म्मे देहि देहि मऽ आयुरायुर्म्मे देहि। मे देहि देहि मे मे देहि व्वर्चोदा व्वर्चोदा देहि मे मे देहि व्वर्चोदाः। देहि व्वर्चोदा व्वर्चोदा देहि देहि व्वर्चोदाऽ अंग्नेग्ने व्वर्चोदा देहि देहि व्वर्चोदाऽ अंग्ने। व्वर्चोदाऽ अंग्नेग्ने व्वर्चोदा व्वर्चोदाऽ अंग्नेस्यस्यग्ने व्वर्चोदा व्वर्चोदाऽ अंग्नेसि। व्वर्चोदाऽ इति वर्चः दाः। अग्नेस्यस्यग्नेग्नेसि व्वर्चो व्वर्चोस्यग्नेग्नेसि व्वर्चः। असि व्वर्चो व्वर्चोस्यसि व्वर्चो मे मे व्वर्चोस्यसि व्वर्चो मे। व्वर्चो मे मे व्वर्चो व्वर्चो मे देहि देहि मे व्वर्चो व्वर्चो मे देहि। मे देहि देहि मे मे देहि। देहीति देहि॥ अग्ने यद्यदग्नेग्ने यन्मे मे यदग्नेग्ने यन्मे। यन्मे मे यद्यन्मे तन्वास्तन्वा मे यद्यन्मे तन्वाः। मे तन्वास्तन्वा मे मे तन्वाऽ ऊनमूनन्तन्वा मे मे तन्वाऽ ऊनम्। तन्वाऽ ऊनमूनन्तन्वास्तन्वाऽ ऊनन्तत्त-दूनन्तन्वास्तन्वाऽ ऊनन्तत्। ऊनन्तत्तदूनमूनन्तन्मे मे तदूनमूनन्तन्मे। तन्मे मे तत्तन्मऽ आ पृण पृणा मे तत्तन्मऽ आ पृण। मऽ आ पृण पृणा मे मऽ आ पृण। आ पृण। पृणेति पृण॥१७॥

इन्धानास्त्वा त्वेन्धानाऽ इन्धानास्त्वा शतꣳ शतन्त्वेन्धानाऽ इन्धाना-स्त्वा शतम्। त्वा शतꣳ शतन्त्वा त्वा शतꣳ हिमा हिमाः शतन्त्वा त्वा शतꣳ हिमाः। शतꣳ हिमा हिमाः शतꣳ शतꣳ हिमा द्युमन्तन्द्युमन्तꣳ हिमाः शतꣳ शतꣳ हिमा द्युमन्तम्। हिमा द्युमन्तन्द्युमन्तꣳ हिमा हिमा द्युमन्तꣳ सꣳ सन्द्युमन्तꣳ हिमा हिमा द्युमन्तꣳ सम्। द्युमन्तꣳ सꣳ सन्द्युमन्तन्द्युमन्तꣳ

समि॑धीमहीधीमहि॒ सन्द्युमन्त॑न्द्युमन्त॒ꣳ समि॑धीमहि। द्युमन्त॒मिति॑ द्यु मन्त॑म्। समि॑धीमहीधीमहि॒ सꣳ समि॑धीमहि। इ॒धी॒म॒हीती॑धीमहि॥ व्वय॑स्वन्तो व्वयु॒स्कृ-त॑ꣳव्वय॒ःकृत॒ꣳव्वय॑स्वन्तो॒ व्वय॑स्वन्तो व्वयु॒स्कृत॒ꣳ सह॑स्वन्त॒ः सह॑स्वन्तो व्वय॒ःकृत॒ꣳव्व-य॑स्वन्तो॒ व्वय॑स्वन्तो व्वयु॒स्कृत॒ꣳ सह॑स्वन्तः[1]। व्व॒यु॒स्कृत॒ꣳ सह॑स्वन्त॒ः सह॑स्व-न्तो व्वय॒ःकृत॑ꣳव्वयु॒स्कृत॒ꣳ सह॑स्वन्तः सहु॒स्कृत॑ꣳ सह॒ःकृत॒ꣳ सह॑स्वन्तो व्वय॒ःकृत॑ꣳव्वयु॒स्कृत॒ꣳ सह॑स्वन्तः सहु॒स्कृत॑म्। व्व॒य॒ःकृत॒मिति॑ वय॒ः कृत॑म्। सह॑-स्वन्तः सहु॒स्कृत॑ꣳ सह॒ःकृत॒ꣳ सह॑स्वन्त॒ः सह॑स्वन्तः सहु॒स्कृत॑म्। स॒ह॒ःकृत॒-मिति॑ सह॒ः कृत॑म्॥ अग्ग्ने॑ सपत्न॒दम्भ॑नꣳ सपत्न॒दम्भ॑न॒मग्ग्नेग्ग्ने॑ सपत्न॒दम्भ॑न॒-मद॑ब्धा॒सोद॑ब्धासः सपत्न॒दम्भ॑न॒मग्ग्नेग्ग्ने॑ सपत्न॒दम्भ॑न॒मद॑ब्धासः। स॒प॒त्न॒दम्भ॑-न॒मद॑ब्धा॒सोद॑ब्धासः सपत्न॒दम्भ॑नꣳ सपत्न॒दम्भ॑न॒मद॑ब्धासो॒ऽ अदा॑ब्भ्यु॒मदा॑-ब्भ्यु॒मद॑ब्धासः सपत्न॒दम्भ॑नꣳ सपत्न॒दम्भ॑न॒मद॑ब्धासो॒ऽ अदा॑ब्भ्यम्। स॒प॒त्न॒द-म्भ॑न॒मिति॑ सपत्न॒ दम्भ॑नम्। अद॑ब्धासो॒ऽ अदा॑ब्भ्यमदा॑ब्भ्यमद॑ब्धा॒सोद॑ब्धासो॒ऽ अदा॑ब्भ्यम्[2]। अदा॑ब्भ्यु॒मित्यदा॑ब्भ्यम्॥ चित्रा॑वसो स्व॒स्ति स्व॒स्ति चित्र॑वसो॒ चित्रा॑वसो स्व॒स्ति ते॑ ते स्व॒स्ति चित्र॑वसो॒ चित्रा॑वसो स्व॒स्ति ते॑[3]। चित्र॑वसो॒ऽ इति॒ चित्र॑ व्वसो। स्व॒स्ति ते॑ ते स्व॒स्ति स्व॒स्ति ते॑ पा॒रम्पा॒रन्ते॑ स्व॒स्ति स्व॒स्ति ते॑ पा॒रम्। ते॒ पा॒रम्पा॒रन्ते॑ ते पा॒रम॑शीयाशीय पा॒रन्ते॑ ते पा॒रम॑शीय। पा॒रम॑शीयाशीय पा॒रम्पा॒रम॑शीय। अ॒शी॒येत्त्य॑शीय॥१८॥

सन्त्वन्त्वꣳ सꣳ सन्त्वम॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वꣳ सꣳ सन्त्वम॑ग्ग्ने। त्वम॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वन्त्वम॑ग्ग्ने॒ सूर्ब्ब॑स्य॒ सूर्ब्ब॑स्याग्ग्ने॒ त्वन्त्वम॑ग्ग्ने॒ सूर्ब्ब॑स्य। अ॒ग्ग्ने॒ सूर्ब्ब॑स्य॒

[1]. वा.प्रा.३.२१. के अधिकार में आये सूत्र समानपदे च(वा.प्रा.३.३०) के अनुसार वयःकृतम् यहाँ विसर्जनीय सकार हो गया है।

[2]. प्रतिषेधे नावग्रहः(वा.प्रा.५.२४) इस सूत्र के अनुसार निषेधार्थक नञ् के साथ समास होने पर अदब्धासः तथा अदाभ्यम् इन पदों का पृथक्करण नहीं होता है।

[3]. चित्रवसो यहाँ पर वा. प्रा. ३.९७ के अनुसार चित्र का अकार दीर्घ हो गया है।

सूर्य॑स्याग्नेग्ने॒ सूर्य॑स्य॒ वर्च॑सा॒ वर्च॑सा॒ सूर्य॑स्याग्नेग्ने॒ सूर्य॑स्य॒ वर्च॑सा। सूर्य॑स्य॒ वर्च॑सा॒ वर्च॑सा॒ सूर्य॑स्य॒ सूर्य॑स्य॒ वर्च॑सागथाऽ अगथा॒ वर्च॑सा॒ सूर्य॑स्य॒ सूर्य॑स्य॒ वर्च॑सागथाः। वर्च॑सागथाऽ अगथा॒ वर्च॑सा॒ वर्च॑सागथा॒ऽ ऋषी॑णा॒मृषी॑णामगथा॒ वर्च॑सा॒ वर्च॑सागथा॒ऽ ऋषी॑णाम्। अ॒ग॒था॒ऽ ऋषी॑णा॒मृषी॑णामगथाऽ अगथा॒ऽ ऋषी॑णाँ स्तु॒तेन॑ स्तु॒तेन॒ऽ ऋषी॑णामगथाऽ अगथा॒ऽ ऋषी॑णाँ स्तु॒तेन॑। ऋषी॑णाँ स्तु॒तेन॑ स्तु॒तेन॒ऽ ऋषी॑णा॒मृषी॑णाँ स्तु॒तेन॑। स्तु॒तेनेति॑ स्तु॒तेन॑॥ प्रि॒येण॒ धाम्ना॒ धाम्ना॑ प्रि॒येण॑ प्रि॒येण॒ धाम्ना॒ह॒म॒हन्धाम्ना॑ प्रि॒येण॑ प्रि॒येण॒ धाम्ना॒हम्। धाम्ना॒ह॒म॒हन्धाम्ना॒ धाम्ना॒हमायु॒षायु॑षा॒हन्धाम्ना॒ धाम्ना॒हमायु॑षा। अ॒हमायु॒षायु॑षा॒हम॒हमायु॑षा॒ वर्च॑सा॒ वर्च॒सायु॑षा॒हम॒हमायु॑षा॒ वर्च॑सा। आयु॑षा॒ वर्च॑सा॒ वर्च॒सायु॒षायु॑षा॒ वर्च॑सा प्र॒जया॑ प्र॒जया॒ वर्च॒सायु॒षायु॑षा॒ वर्च॑सा प्र॒जया॑। वर्च॑सा प्र॒जया॑ प्र॒जया॒ वर्च॑सा॒ वर्च॑सा प्र॒जया॑ रा॒यो रा॒यः प्र॒जया॒ वर्च॑सा॒ वर्च॑सा प्र॒जया॑ रा॒यः। प्र॒जया॑ रा॒यो रा॒यः प्र॒जया॑ प्र॒जया॑ रा॒यस्पोषे॑ण॒ पोषे॑ण रा॒यः प्र॒जया॑ प्र॒जया॑ रा॒यस्पोषे॑ण। प्र॒जयेति॑ प्र॒ जया॑। रा॒यस्पोषे॑ण॒ पोषे॑ण रा॒यो रा॒यस्पोषे॑ण ग्गिमषीय ग्गिमषीय॒ पोषे॑ण रा॒यो रा॒यस्पोषे॑ण ग्गिमषीय। पोषे॑ण ग्गिमषीय ग्गिमषीय॒ पोषे॑ण॒ पोषे॑ण ग्गिमषीय। ग्गि॒म॒षी॒येति॑ ग्गिमषीय॥१९॥

अन्ध॑ स्त्थ॒ स्त्थान्धोन्ध॒ स्त्थान्धोन्ध॒ स्त्थान्धोन्ध॒ स्त्थान्ध॑ः[1]। स्थान्धोन्ध॑ स्त्थ॒ स्त्थान्धो॑ वो॒ वोन्ध॑ स्त्थ॒ स्त्थान्धो॑ वः। अन्धो॑ वो॒ वोन्धोन्धो॑ वो भक्षीय भक्षीय॒ वोन्धोन्धो॑ वो भक्षीय। वो॒ भ॒क्षी॒य॒ भ॒क्षी॒य॒ वो॒ वो॒ भ॒क्षी॒य॒ म॒हो म॒हो॑ भक्षीय वो वो भक्षीय॒ मह॑ः। भ॒क्षी॒य॒ म॒हो म॒हो॑ भक्षीय भक्षीय॒ मह॑ स्त्थ स्त्थ॒ म॒हो॑ भक्षीय भक्षीय॒ मह॑ स्त्थ। मह॑ स्त्थ स्त्थ॒ म॒हो मह॑ स्त्थ॒ म॒हो मह॑ स्त्थ॒ म॒हो मह॑ स्त्थ॒ मह॑ः। स्त्थ॒ म॒हो मह॑ स्त्थ स्त्थ॒ म॒हो॑ वो वो॒ मह॑ स्त्थ

[1]. वा.प्रा.२.३४. के अनुसार यहाँ अन्धः पद आद्युदात्त है।

स्त्थ॒ महो॑ वः। महो॑ वो व॒ो मह॒ो महो॑ वो भक्षीय भक्षीय व॒ो मह॒ो महो॑ वो भक्षीय। व्व॒ो भ॒क्ष॒ीय॒ भ॒क्ष॒ीय॒ व॒ो व॒ो भ॒क्ष॒ीयोर्ज्ज॒ऽ ऊर्ज्जो॑ भक्षीय वो वो भक्ष॒ीयोर्ज्जं॑÷। भ॒क्ष॒ीयोर्ज्ज॒ऽ ऊर्ज्जो॑ भक्षीय भक्ष॒ीयोर्ज्जं॑ स्त्थ॒ स्त्थोर्ज्जो॑ भक्षीय भक्ष॒ीयोर्ज्जं॑ स्त्थ। ऊर्ज्जं॑ स्त्थ॒ स्त्थोर्ज्ज॒ऽ ऊर्ज्ज॒ स्त्थोर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒ꣳ स्थोर्ज्ज॒ऽ ऊर्ज्ज॒ स्त्थोर्ज्ज॑म्। स्थोर्ज्ज॒मूर्ज्जं॑ꣳ स्थ॒ स्त्थोर्ज्जँ॑व्वो व॒ऽ ऊर्ज्जं॑ꣳ स्थ॒ स्त्थोर्ज्जँ॑व्वः। ऊर्ज्जँ॑व्वो व॒ऽ ऊर्ज्ज॒मूर्ज्जँ॑व्वो भक्षीय भक्षीय व॒ऽ ऊर्ज्ज॒मूर्ज्जँ॑व्वो भक्षीय। व्व॒ो भ॒क्ष॒ीय॒ भ॒क्ष॒ीय॒ व॒ो व॒ो भ॒क्ष॒ीय॒ र॒ायो र॒ायो भ॑क्षीय वो वो भक्षीय र॒ायः। भ॒क्ष॒ीय॒ र॒ायो र॒ायो भ॑क्षीय भक्षीय र॒ायस्प्पोष॒ः पोषो॑ र॒ायो भ॑क्षीय भक्षीय र॒ायस्प्पोषं॑÷[1]। र॒ायस्प्पोष॒ः पोषो॑ र॒ायो र॒ायस्प्पोषं॑ स्त्थ स्त्थ॒ पोषो॑ र॒ायो र॒ायस्प्पोषं॑ स्त्थ। पोषं॑ स्त्थ स्त्थ॒ पोष॒ः पोषं॑ स्त्थ र॒ायो र॒ाय स्त्थ॒ पोष॒ः पोषं॑ स्त्थ र॒ायः। स्थ॒ र॒ायो र॒ाय स्त्थं॑ स्त्थ र॒ायस्प्पोष॒म्पोषं॑ꣳ र॒ाय स्त्थं॑ स्त्थ र॒ायस्प्पोषं॑म्। र॒ायस्प्पोष॒म्पोषं॑ꣳ र॒ायो र॒ायस्प्पोषँ॑व्वो व॒ः पोषं॑ꣳ र॒ायो र॒ायस्प्पोषँ॑व्वः। पोषँ॑व्वो व॒ः पोष॒म्पोषँ॑व्वो भक्षीय भक्षीय व॒ः पोष॒म्पोषँ॑व्वो भक्षीय। व्व॒ो भ॒क्ष॒ीय॒ भ॒क्ष॒ीय॒ व॒ो व॒ो भ॒क्ष॒ीय॒। भ॒क्ष॒ीयेति॑ भक्षीय॥२०॥

रेवं॑त॒ी रमं॑द्ध्वꣳ रमं॑द्ध्वꣳ रेवं॑त॒ी रेवं॑त॒ी रमं॑द्ध्वम॒स्स्मिन्न॒स्स्मिन्नमं॑द्ध्वꣳ रेवं॑त॒ी रेवं॑त॒ी रमं॑द्ध्वम॒स्स्मिन्। रमं॑द्ध्वम॒स्स्मिन्न॒स्स्मिन्नमं॑द्ध्वꣳ रमं॑द्ध्वम॒स्स्मिन्न्योन॒ौ य्योना॑व॒-स्स्मिन्नमं॑द्ध्वꣳ रमं॑द्ध्वम॒स्स्मिन्न्योनौ॑। अ॒स्स्मिन्न्योन॒ौ य्योना॑व॒स्स्मिन्न॒स्स्मिन्न्योनौ॑ ग॒ोष्ट्ठे ग॒ोस्त्थे य्योना॑व॒स्स्मिन्न॒स्स्मिन्न्योनौ॑ ग॒ोष्ट्ठे[2]। य्योनौ॑ ग॒ोष्ट्ठे ग॒ोस्त्थे य्योन॒ौ य्योनौ॑ ग॒ोष्ट्ठे ल॒ोके ल॒ोके ग॒ोस्त्थे य्योन॒ौ य्योनौ॑ ग॒ोष्ट्ठे ल॒ोके। ग॒ोष्ट्ठे ल॒ोके ल॒ोके ग॒ोस्त्थे ग॒ोष्ट्ठे ल॒ोके क्क्षये॒ क्क्षयें॑ ल॒ोके ग॒ोस्त्थे ग॒ोष्ट्ठे ल॒ोके क्क्षयें॑। ग॒ोस्त्थऽ इति॑ ग॒ो स्थे। ल॒ोके

---

1. रायः सहसः पोषपुत्रयोः (वा. प्रा. ३.२५) इस सूत्र के अनुसार रायः का विसर्जनीय सकार हो गया है।

2. दन्त्यस्य मूर्धन्यापत्तिर्नतिः (वा. प्रा. १.४२) दन्त्य वर्ण का मूर्धन्य होना नति है। यहाँ गोस्त्थे का गोष्टे हो गया है।

क्षये क्षयें लोके लोके क्षयें। क्षयऽ इति क्षयें॥ इहैवैवेहेहैव स्तं स्तैवेहेहैव स्तं। एव स्तं स्तैवैव स्त मा मा स्तैवैव स्त मा[1]। स्त मा मा स्तं स्त मापाप मा स्तं स्त मापं। मापाप मा मापं गात गाताप मा मापं गात। अपं गात गातापापं गात। गातेतिं गात॥२१॥

संहितास्यसि संहिता संहितासिं विश्वरूपी विंश्वरूप्प्यसि संहिता संहितासिं विश्वरूपी। संहितेतिं सम् हिता। असि विश्वरूपी विंश्वरूप्प्यस्यसि विश्वरूप्प्यूर्जोर्जा विंश्वरूप्प्यस्यसि विश्वरूप्प्यूर्जा। विश्वरूप्प्यूर्जोर्जा विंश्वरूपी विंश्वरूप्प्यूर्जा मां मोर्जा विंश्वरूपी विंश्वरूप्प्यूर्जा मां। विश्वरूपीतिं विश्व रूपी। ऊर्जा मां मोर्जोर्जा मा विंश विशा मोर्जोर्जा मा विंश। मा विंश विशा मा मा विंश गौपत्त्येनं गौपत्त्येनं विशा मा मा विंश गौपत्त्येनं। आ विंश। विश गौपत्त्येनं गौपत्त्येनं विश विश गौपत्त्येनं। गौपत्त्येनेतिं गौपत्त्येनं॥ उपं त्वा त्वोपोपं त्वाग्नेग्ने त्वोपोपं त्वाग्ने। त्वाग्नेग्ने त्वा त्वाग्ने दिवेदिंवे दिवेदिंवेग्ने त्वा त्वाग्ने दिवेदिंवे। अग्ने दिवेदिंवे दिवेदिंवेग्नेग्ने दिवेदिंवे दोषांवस्तर्द्दोषांवस्तर्द्दिवेदिंवेग्नेग्ने दिवेदिंवे दोषांवस्तः। दिवेदिंवे दोषांवस्तर्द्दोषांवस्तर्द्दिवेदिंवे दिवेदिंवे दोषांवस्तर्द्धिया धिया दोषांवस्तर्द्दिवेदिंवे दिवेदिंवे दोषांवस्तर्द्धिया। दिवेदिंवऽ इतिं दिवे दिंवे। दोषांवस्तर्द्धिया धिया दोषांवस्तर्द्दोषांवस्तर्द्धिया वयँवयन्धिया दोषांवस्तर्द्दोषांवस्तर्द्धिया वयम्। दोषांवस्तरिति दोषां वस्तः[2]। धिया वयँवयन्धिया धिया वयम्। वयमितिं वयम्॥ नमो भरंन्तो भरंन्तो नमो नमो भरंन्तऽ एमंसीमस्या भरंन्तो नमो नमो भरंन्तऽ एमंसि। भरंन्तऽ एमंसीमस्या भरंन्तो भरंन्तऽ एमंसि। एमंसि। इमसीतींमसि॥२२॥

---

[1]. वा.प्रा.२.४. में उत्तम पुरुष के अर्थ में विद्यमान मा पद अनुदात्त बताया गया है, यहाँ निषेधार्थक होने से यह पद अनुदात्त नहीं है।

[2]. स्तोतर्वस्तः सनुतरभार्वार्द्धाः (वा. प्रा. १.१६५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ वस्तः रिफित है।

राज॑न्तमध्व॒राणा॑मध्व॒राणा॒ꣳ राज॑न्त॒ꣳ राज॑न्तमध्व॒राणा॑ङ्गो॒पाङ्गो॒पाम॑ध्व॒रा-
णा॒ꣳ राज॑न्त॒ꣳ राज॑न्तमध्व॒राणा॑ङ्गो॒पाम्। अ॒ध्व॒राणा॑ङ्गो॒पाङ्गो॒पाम॑ध्व॒राणा॑मध्व॒राणा॑-
ङ्गो॒पामृ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्य॑ गो॒पाम॑ध्व॒राणा॑मध्व॒राणा॑ङ्गो॒पामृ॒तस्य॑। गो॒पामृ॒तस्य॑ऽ ऋ॒त-
स्य॑ गो॒पाङ्गो॒पामृ॒तस्य॒ दीदि॑वि॒न्दीदि॑विमृ॒तस्य॑ गो॒पाङ्गो॒पामृ॒तस्य॒ दीदि॑विम्। ऋ॒त-
स्य॒ दीदि॑वि॒न्दीदि॑विमृ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्य॒ दीदि॑विम्। दीदि॑वि॒मिति॒ दीदि॑विम्॥ व्वर्द्ध॑मा-
न॒ꣳ स्वे स्वे व्वर्द्ध॑मानँ॒व्वर्द्ध॑मान॒ꣳ स्वे दमे॒ दमे॒ स्वे व्वर्द्ध॑मानँ॒व्वर्द्ध॑मान॒ꣳ स्वे दमे॑। स्वे
दमे॒ दमे॒ स्वे स्वे दमे॑। दम॒ऽ इति॒ दमे॑॥२३॥

स नो॑ न॒ः स स नः॑ पि॒तेव॑ पि॒तेव॑ न॒ः स स नः॑ पि॒तेव॑। न॒ः पि॒तेव॑ पि॒तेव॑
नो नः पि॒तेव॑ सू॒नवे॑ सू॒नवे॑ पि॒तेव॑ नो नः पि॒तेव॑ सू॒नवे॑। पि॒तेव॑ सू॒नवे॑ सू॒नवे॑ पि॒तेव॑
पि॒तेव॑ सू॒नवेग्ग्नेग्ग्ने॑ सू॒नवे॑ पि॒तेव॑ पि॒तेव॑ सू॒नवेग्ग्ने॑[1]। पि॒तेवेति॑ पि॒ता इ॑व।
सू॒नवेग्ग्नेग्ग्ने॑ सू॒नवे॑ सू॒नवेग्ग्ने॑ सूपाय॒नः सू॑पाय॒नोग्ग्ने॑ सू॒नवे॑ सू॒नवेग्ग्ने॑ सूपाय॒नः।
अग्ग्ने॑ सूपाय॒नः सू॑पाय॒नोग्ग्नेग्ग्ने॑ सूपाय॒नो भ॑व भव सूपाय॒नोग्ग्नेग्ग्ने॑ सूपाय॒नो भ॑व।
सू॒पा॒य॒नो भ॑व भव सूपाय॒नः सू॑पाय॒नो भ॑व। सू॒पा॒य॒नऽ इति॑ सु उपाय॒नः। भ॒वेति॑
भव॥ सच॑स्वा नो न॒ः सच॑स्व॒ सच॑स्वा नः स्व॒स्तये॑ स्व॒स्तये॑ न॒ः सच॑स्व॒
सच॑स्वा नः स्व॒स्तये॑।[2] न॒ः स्व॒स्तये॑ स्व॒स्तये॑ नो नः स्व॒स्तये॑। स्व॒स्तय॒ऽ इति॑
स्व॒स्तये॑॥२४॥

अग्ग्ने॒ त्वन्त्वमग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वन्नो॑ न॒स्त्वमग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वन्नः॑। त्वन्नो॑ न॒स्त्वन्त्वन्नो॒ऽ
अन्त॒मोन्त॑मो न॒स्त्वन्त्वन्नो॒ऽ अन्त॑मः। नो॒ऽ अन्त॒मोन्त॑मो नो नो॒ऽ अन्त॑मऽ
उ॒तोतान्त॑मो नो नो॒ऽ अन्त॑मऽ उ॒त। अन्त॑मऽ उ॒तोता॒न्त॒मोन्त॑मऽ उ॒त त्रा॒ता
त्रा॒तोता॒न्त॒मोन्त॑मऽ उ॒त त्रा॒ता। उ॒त त्रा॒ता त्रा॒तोतोत त्रा॒ता शि॒वः शि॒वस्त्रा॒तोतो-

---

1. वा.प्रा.४.६५. के अनुसार सूनवे अग्ने यहाँ एकार से परवर्ती अकार का अभिनिधान होता है।

2. सचस्व नः यहाँ वा.प्रा.३.१०७. के अनुसार नकार परे रहने पर पूर्वपद के अन्तिम स्वर का दीर्घ होता है।

त त्राता शिवः। त्राता शिवः शिवस्त्राता त्राता शिवो भव भव शिवस्त्राता त्राता शिवो भव। शिवो भव भव शिवः शिवो भवा वरूत्थ्यो वरूत्थ्यो भव शिवः शिवो भवा वरूत्थ्यः। भवा वरूत्थ्यो वरूत्थ्यो भव भवा वरूत्थ्यः। वरूत्थ्यऽ इति वरूत्थ्यः॥ वसुरग्निरग्निर्वसुर्वसुरग्निर्वसुश्रवा वसुश्रवाऽ अग्निर्वसुर्वसुरग्निर्वसुश्रवाः। अग्निर्वसुश्रवा वसुश्रवाऽ अग्निरग्निर्वसुश्रवाऽ अच्छाच्छ वसुश्रवाऽ अग्निरग्निर्वसुश्रवाऽ अच्छं। वसुश्रवाऽ अच्छाच्छ वसुश्रवा वसुश्रवाऽ अच्छा नक्षि नक्ष्यच्छ वसुश्रवा वसुश्रवाऽ अच्छा नक्षि[1]। वसुश्रवाऽ इति वसु श्रवाः। अच्छा नक्षि नक्ष्यच्छाच्छा नक्षि द्युमत्तमन्द्युमत्तमन्नक्ष्यच्छाच्छा नक्षि द्युमत्तमम्। नक्षि द्युमत्तमन्द्युमत्तमन्नक्षि नक्षि द्युमत्तमꣳ रयिꣳ रयिन्द्युमत्तमन्नक्षि नक्षि द्युमत्तमꣳ रयिम्। द्युमत्तमꣳ रयिꣳ रयिन्द्युमत्तमन्द्युमत्तमꣳ रयिन्दा दा रयिन्द्युमत्तमन्द्युमत्तमꣳ रयिन्दाः। द्युमत्तममिति द्युमत् तमम्। रयिन्दा दा रयिꣳ रयिन्दाः। दाऽ इति दाः॥२५॥

तन्त्वा त्वा तन्तन्त्वा शोचिष्ठ शोचिष्ठ त्वा तन्तन्त्वा शोचिष्ठ। त्वा शोचिष्ठ शोचिष्ठ त्वा त्वा शोचिष्ठ दीदिवो दीदिवः शोचिष्ठ त्वा त्वा शोचिष्ठ दीदिवः। शोचिष्ठ दीदिवो दीदिवः शोचिष्ठ शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय सुम्नाय दीदिवः शोचिष्ठ शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय। दीदिवः सुम्नाय सुम्नाय दीदिवो दीदिवः सुम्नाय नूनन्नूनꣳ सुम्नाय दीदिवो दीदिवः सुम्नाय नूनम्। दीदिवऽ इति दीदि वः। सुम्नाय नूनन्नूनꣳ सुम्नाय सुम्नाय नूनमीमहऽ ईमहे नूनꣳ सुम्नाय सुम्नाय नूनमीमहे। नूनमीमहऽ ईमहे नूनन्नूनमीमहे सखिभ्यः सखिभ्यऽ ईमहे नूनन्नूनमीमहे सखिभ्यः। ईमहे सखिभ्यः सखिभ्यऽ ईमहऽ ईमहे सखिभ्यः। सखिभ्यऽ इति सखि भ्यः॥ स नो नः स स नो बोधि बोधि

[1]. एवाच्छचकृमाथ (वा. प्रा. ३.१२४) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अच्छ का अन्तिम स्वर दीर्घ हो गया है।

न॒ः स स नो॑ बोधि। नो॒ बो॒धि॒ बो॒धि॒ नो॒ नो॒ बो॒धि॒ श्रु॒धि श्रु॒धि बो॑धि नो नो बोधि श्रु॒धि। बो॒धि॒ श्रु॒धि श्रु॒धि बो॑धि बोधि श्रु॒धी ह॒व॒ः हव॑ꣳ श्रु॒धि बो॑धि बोधि श्रु॒धी हव॑म्[1]। श्रु॒धी ह॒व॒ः हव॑ꣳ श्रु॒धि श्रु॒धी हव॑मुरु॒ष्ष्योरु॒ष्ष्य हव॑ꣳ श्रु॒धि श्रु॒धी हव॑-मुरु॒ष्ष्य। हव॑मुरु॒ष्ष्योरु॒ष्ष्य ह॒व॒ः हव॑मुरु॒ष्ष्या णो॑ नऽ उरु॒ष्ष्य ह॒व॒ः हव॑मुरु॒-ष्ष्या णं॑ः[2]। उ॒रु॒ष्ष्या णो॑ नऽ उरु॒ष्ष्योरु॒ष्ष्या णो॑ऽ अघायु॒तो॒घयु॒तो नं॑ऽ उरु॒-ष्ष्योरु॒ष्ष्या णो॑ऽ अघायु॒तः। नो॒ऽ अ॒घा॒यु॒तो॒घयु॒तो नो॑ नोऽ अघायु॒तः सं॑मस्स्मा-त्समस्स्मादघयु॒तो नो॑ नोऽ अघायु॒तः सं॑मस्स्मात्। अ॒घा॒यु॒तः सं॑मस्स्मात्सम-स्स्मादघयु॒तो॒घायु॒तः सं॑मस्स्मात्। अ॒घ॒यु॒तऽ इत्यं॑घ॒ यु॒तः[3]। स॒म॒स्स्मा॒दिति॑ समस्स्मात्॥२६॥

इडु॒ऽ एही॒ह्येडु॒ऽ इडु॒ऽ एह्यदि॒तेदिं॑तऽ इ॒ह्येडु॒ऽ इडु॒ऽ एह्यदिं॑ते[4]। एहिं॑। इ॒ह्यदि॒तेदिं॑तऽ इही॒ह्यदिं॑तु॒ऽ एही॒ह्यादिं॑तऽ इही॒ह्यदिं॑तु॒ऽ एहिं॑। अदिं॑तु॒ऽ एही॒ह्या-दि॒तेदिं॑तु॒ऽ एहि॒ काम्म्या॒ः काम्म्यां॑ऽ इ॒ह्यादि॒तेदिं॑तु॒ऽ एहि॒ काम्म्यां॑ः। एहिं॑। इ॒हि॒ काम्म्या॒ः काम्म्यां॑ऽ इहीहि॒ काम्म्या॒ऽ एते॒ता काम्म्यां॑ऽ इहीहि॒ काम्म्या॒ऽ एतं॑। काम्म्या॒ऽ एते॒ता काम्म्या॒ः काम्म्या॒ऽ एतं॑। एतं॑। इ॒तेतीं॑त॥ मयिं॑ वो वो॒ मयि॒ मयिं॑ वः कामधरं॑णङ्काम॒धरं॑णँव्वो मयि॒ मयिं॑ वः काम॒धरं॑णम्। व्व॒ः का॒म॒धरं॑णङ्का-म॒धरं॑णँव्वो वः काम॒धरं॑णम्भूयाद् भूयात्काम॒धरं॑णँव्वो वः काम॒धरं॑णम्भूयात्।

---

1. श्रुधि हवम् यहाँ वा.३.१२९. के अनुसार दीर्घ होकर श्रुधी हवम् होता है।

2. वा. प्रा. ३.१०७ के अनुसार यहाँ उरुष्य का अन्तिम स्वर दीर्घ हो गया है। वा. प्रा. ३.८६. के अनुसार नः का नकार णकार हो गया है।

3. वा.प्रा.५.१०. के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

4. एकान्तरादपि(वा.प्रा.६.१३) एक पद से व्यवहित भी सम्बोधन पद से परवर्ती क्रियापद अपने प्रकृति स्वर से युक्त होता है। सूत्रोक्त अपि पद से विकल्प कहा गया है- जैसे इडै आ इहि। यहाँ क्रियापद अपने प्रकृति स्वर से युक्त नहीं है।

कामधरणम्भूयाद् भूयात्कामधरणङ्कामधरणम्भूयात्। कामधरणमिति काम धरणम्। भूयादिति भूयात्॥२७॥

सोमानꣳ स्वरणꣳ स्वरणꣳ सोमानꣳ सोमानꣳ स्वरणङ्कृणुहि कृणुहि स्वरणꣳ सोमानꣳ सोमानꣳ स्वरणङ्कृणुहि। स्वरणङ्कृणुहि कृणुहि स्वरणꣳ स्वरणङ्कृणुहि ब्रह्मणो ब्रह्मणः कृणुहि स्वरणꣳ स्वरणङ्कृणुहि ब्रह्मणः। कृणुहि ब्रह्मणो ब्रह्मणः कृणुहि कृणुहि ब्रह्मणस्प्पते पते ब्रह्मणः कृणुहि कृणुहि ब्रह्मणस्प्पते। ब्रह्मणस्प्पते पते ब्रह्मणो ब्रह्मणस्प्पते। पतऽ इति पते॥ कक्षीवन्तँय्यो यः कक्षीवन्तङ्कक्षीवन्तँय्यऽ औशिजऽ औशिजो यः कक्षीवन्तङ्कक्षीवन्तँय्यऽ औशिजः। यऽ औशिजऽ औशिजो यो यऽ औशिजः। औशिजऽ इत्यौशिजः॥२८॥

यो रेवान्न्रेवान्न्यो यो रेवान्न्यो यो रेवान्न्यो यो रेवान्न्यः। रेवान्न्यो यो रेवान्न्रेवान्न्योऽ अमीवहामीवहा यो रेवान्न्रेवान्न्योऽ अमीवहा[1]। योऽ अमीवहामीवहा यो योऽ अमीवहा व्वसुविद्वसुविदमीवहा यो योऽ अमीवहा व्वसुवित्। अमीवहा व्वसुविद्वसुविदमीवहामीवहा व्वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः पुष्टिवर्द्धनो व्वसुविदमीवहामीवहा व्वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः। अमीवहेत्यमीव हा। व्वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः पुष्टिवर्द्धनो व्वसुविद्वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः। व्वसुविदिति वसु व्वित्। पुष्टिवर्द्धनऽ इति पुष्टि व्वर्द्धनः॥ स नो नः स स नः सिषक्तु सिसक्तु नः स स नः सिषक्तु। नः सिषक्तु सिसक्तु नो नः सिषक्तु यो यः सिंसक्तु नो नः सिषक्तु यः। सिषक्तु यो यः सिंसक्तु सिषक्तु यस्तुरस्तुरो यः सिंसक्तु सिषक्तु यस्तुरः। सिसक्त्विति सिसक्तु। यस्तुरस्तुरो यो यस्तुरः। तुरऽ इति तुरः॥२९॥

---

1. वा.प्रा.४.८२. के अनुसार यः अमीवहा यहाँ विसर्ग से सम्बन्धित ओकार प्रकृति भाव से रहता है।

मा नो नो मा मा नः शꣳसः शꣳसो नो मा मा नः शꣳसः। नः शꣳसः शꣳसो नो नः शꣳसोऽ अररुषोररुषः शꣳसो नो नः शꣳसोऽ अररुषः। शꣳसोऽ अररुषोररुषः शꣳसः शꣳसोऽ अररुषो धूर्तिर्द्धूर्तिरररुषः शꣳसः शꣳसोऽ अररुषो धूर्त्तिः। अररुषो धूर्त्तिर्द्धूर्त्तिरररुषोररुषो धूर्त्तिः प्प्रणक्प्रणंग्ग्धूर्त्तिरररुषोररुषो धूर्त्तिः प्प्रणक्। धूर्त्तिः प्प्रणक्प्रणंग्ग्धूर्त्तिर्द्धूर्त्तिः प्प्रणङ्क्मर्त्त्यस्य मर्त्त्यस्य प्प्रणंग्ग्धूर्त्तिर्द्धूर्त्तिः प्प्रणङ्क्मर्त्त्यस्य। प्रणङ्क्मर्त्त्यस्य मर्त्त्यस्य प्प्रणक्प्रणङ्क्मर्त्त्यस्य। मर्त्त्यस्येति मर्त्त्यस्य॥ रक्षा णो नो रक्ष रक्षा णो ब्रह्मणो ब्रह्मणो नो रक्ष रक्षा णो ब्रह्मणः[1]। नो ब्रह्मणो ब्रह्मणो नो नो ब्रह्मणस्प्पते पते ब्रह्मणो नो नो ब्रह्मणस्प्पते। ब्रह्मणस्प्पते पते ब्रह्मणो ब्रह्मणस्प्पते। पतऽ इति पते॥३०॥

महि त्रीणात्त्रीणाम्महि महि त्रीणामवोवस्त्रीणाम्महि महि त्रीणामवः। त्रीणामवोवस्त्रीणात्त्रीणामवोस्त्वस्त्ववस्त्रीणात्त्रीणामवोस्तु[2]। अवोस्त्वस्त्ववोवोस्तु द्युक्षन्द्युक्षमस्त्ववोवोस्तु द्युक्षम्। अस्तु द्युक्षन्द्युक्षमस्त्वस्तु द्युक्षम्मित्रस्य मित्रस्य द्युक्षमस्त्वस्तु द्युक्षम्मित्रस्य। द्युक्षम्मित्रस्य मित्रस्य द्युक्षन्द्युक्षम्मित्रस्योर्व्वम्म्णोर्व्वम्म्णो मित्रस्य द्युक्षन्द्युक्षम्मित्रस्योर्व्वम्म्णः। मित्रस्योर्व्वम्म्णोर्व्वम्म्णो मित्रस्य मित्रस्योर्व्वम्म्णः। अर्व्वम्म्णऽ इत्यर्व्वम्म्णः॥ दुराधर्षंव्वरुणस्य व्वरुणस्य दुराधर्षन्दुराधर्षंव्वरुणस्य। दुराधर्षमिति दुः आधर्षम्। व्वरुणस्येति वरुणस्य॥३१॥

नहि तेषान्तेषान्नहि नहि तेषाममामा तेषान्नहि नहि तेषाममा। तेषाममामा तेषान्तेषाममा चन चनामा तेषान्तेषाममा चन। अमा चन चनामामा चन

[1]. वा.प्रा.३.१०७. के अनुसार यहाँ रक्ष के अन्तिम स्वर का दीर्घ हो गया है तथा वा.प्रा.३.८६. के अनुसार नः के नकार का निपातन (औत्सर्गिक णत्व) से णकार हो गया है।

[2]. वा. प्रा. ४.७६ के अनुसार अवः अस्तु यहाँ पर अस्तु इस पद के अकार का अभिनिधान हो गया है।

न न च॒नामामा च॒न न। च॒न न न च॒न च॒न नाद्ध्र॒स्वर्द्धसु॒ न च॒न च॒न नार्द्धसु। नाद्ध्र॒स्वर्द्धसु॒ न नार्द्धसु ब्वा॒र॒णेषु॑ ब्वा॒र॒णेष्ष्वर्द्धसु॒ न नार्द्धसु ब्वा॒र॒णेषु॑। अर्द्धसु ब्वा॒र॒णेषु॑ ब्वा॒र॒णेष्ष्वद्ध्र॒स्वर्द्धसु ब्वा॒र॒णेषु॑। अद्ध्र॒स्वित्त्यर्द्ध सु। ब्वा॒र॒णेष्ष्विति॑ वा॒र॒णेषु॑॥ ईशे॑ रि॒पू रि॒पुरीश॒ऽ ईशे॑ रि॒पु॒रघशं॑ऽसो॒घशं॑ऽसो रि॒पुरीश॒ऽ ईशे॑ रि॒पु॒रघशं॑ऽस॒ः[1]। रि॒पु॒रघ-शं॑ऽसो॒घशं॑ऽसो रि॒पू रि॒पु॒रघशं॑ऽस॒ः। अ॒घशं॑ऽस॒ऽ इत्त्य॒घ शं॑ऽस॒ः॥३२॥

ते हि हि ते ते हि पु॒त्रासः॑ पु॒त्रासो॒ हि ते ते हि पु॒त्रासः॑। हि पु॒त्रासः॑ पु॒त्रासो॒ हि हि पु॒त्रासो॒ऽ अदि॑ते॒रदि॑तेः पु॒त्रासो॒ हि हि पु॒त्रासो॒ऽ अदि॑तेः। पु॒त्रासो॒ऽ अदि॑ते॒रदि॑तेः पु॒त्रासः॑ पु॒त्रासो॒ऽ अदि॑ते॒ः प्प्र प्प्रादि॑तेः पु॒त्रासः॑ पु॒त्रासो॒ऽ अदि॑ते॒ः प्प्र। अदि॑ते॒ः प्प्र प्प्रादि॑ते॒रदि॑ते॒ः प्प्र जी॒वसे॑ जी॒वसे॒ प्प्रादि॑ते॒रदि॑ते॒ः प्प्र जी॒वसे॑। प्र जी॒वसे॑ जी॒वसे॒ प्प्र प्प्र जी॒वसे॒ मर्त्त्या॑य॒ मर्त्त्या॑य जी॒वसे॒ प्प्र प्प्र जी॒वसे॒ मर्त्त्या॑य। जी॒वसे॒ मर्त्त्या॑य॒ मर्त्त्या॑य जी॒वसे॑ जी॒वसे॒ मर्त्त्या॑य। मर्त्त्या॒येति॒ मर्त्त्या॑य॥ ज्योति॒-र्य्यच्छ॑न्ति॒ यच्छ॑न्ति॒ ज्योति॒र्ज्ज्योति॒र्य्यच्छ॒न्त्यज॑स्र॒मज॑स्र॒ꣳ॑य्यच्छ॑न्ति॒ ज्योति॒-र्ज्ज्योति॒र्य्यच्छ॒न्त्यज॑स्रम्। यच्छ॒न्त्यज॑स्र॒मज॑स्र॒ꣳ॑य्यच्छ॑न्ति॒ यच्छ॒न्त्यज॑स्रम्। अज॑स्र॒मित्त्यज॑स्रम्॥३३॥

क॒दा च॒न च॒न क॒दा क॒दा च॒न स्त॒री स्त॒रीश्च॒न क॒दा क॒दा च॒न स्त॒रीः[2]। च॒न स्त॒री स्त॒रीश्च॒न च॒न स्त॒रीर॑स्स्यसि स्त॒रीश्च॒न च॒न स्त॒रीर॑सि। स्त॒रीर॑स्स्यसि स्त॒री स्त॒रीर॑सि॒ न नासि॑ स्त॒री स्त॒रीर॑सि॒ न। अ॒सि॒ न नास्स्य॑सि॒ नेन्द्रे॑न्द्र॒ नास्स्य॑सि॒ नेन्द्र॑। नेन्द्रे॑न्द्र॒ न नेन्द्र॑ सश्च॒सि सश्च॒सीन्द्र॒ न नेन्द्र॑ सश्च॒सि। इ॒न्द्र॒ स॒श्च॒सि॒ स॒श्च॒सी॒न्द्रे॒न्द्र॒ स॒श्च॒सि॒ दा॒शुषे॑ दा॒शुषे॑ सश्चसीन्द्रेन्द्र सश्चसि दा॒शुषे॑। स॒श्च॒सि॒ दा॒शुषे॑

1. रिपुः ईशे तथा रिपुः अघशंसः दोनों स्थलों में रेफं स्वरधौ (वा.प्रा.४.३७) इस सूत्र से विसर्ग रेफ होता है। र एफेन(वा.प्रा.१.३९) इस सूत्र के अनुसार र एफ के द्वारा निर्दिष्ट होता है।

2. कदा नरिष्येम पूर्वम्(वा.प्रा.२.२३) न रिष्येम पूर्व में होने पर कदा पद आद्युदात्त होता है। यहाँ उक्त स्थिति न होने से कदा आद्युदात्त नहीं है।

दा॒शुषे॑ स॒श्चसि सश्चसि दा॒शुषे॑। दा॒शुष॒ऽ इति॑ दा॒शुषे॑॥ उपो॒पेदिदुपो॒पोपो॒पेन्नु न्विदुपो॒पोपो॒पेन्नु। उपो॒पेत्युप॑ उप[1]। इन्नु न्विदिन्नु म॑घवन्नमघव॒न्विदिन्नु म॑घवन्। नु म॑घवन्नमघव॒न्नु नु म॑घव॒न्भूयो॒ भूयो॑ मघव॒न्नु नु म॑घव॒न्भूय॑ः । म॒घ॒व॒न्भूयो॒ भूयो॑ मघवन्नमघव॒न्भूय॒ऽ इदिद् भूयो॑ मघवन्नमघव॒न्भूय॒ऽ इत्। म॒घ॒व॒न्निति॑ मघ व्वन्। भूय॒ऽ इदिद् भूयो॒ भूय॒ऽ इन्नु न्विद् भूयो॒ भूय॒ऽ इन्नु। इन्नु न्विदिन्नु ते॑ ते॒ न्विदिन्नु ते॑। नु ते॑ ते॒ नु नु ते॒ दान॒न्दान॑न्ते॒ नु नु ते॒ दान॑म्। ते॒ दान॒न्दान॑न्ते ते॒ दान॑न्दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॒ दान॑न्ते ते॒ दान॑न्दे॒वस्य॑। दान॑न्दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॒ दान॒न्दान॑न्दे॒वस्य॑ पृच्च्यते पृच्च्यते दे॒वस्य॒ दान॒न्दान॑न्दे॒वस्य॑ पृच्च्यते। दे॒वस्य॑ पृच्च्यते पृच्च्यते दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ पृच्च्यते। पृ॒च्च्य॒त॒ऽ इति॑ पृच्च्यते॥३४॥

तत्स॑वि॒तुः स॑वि॒तुस्तत्तत्स॑वि॒तुर्व्वरे॑ण्यँव्वरे॑ण्यꣳ सवि॒तुस्तत्तत्स॑वि॒तुर्व्वरे॑-ण्यम्। स॒वि॒तुर्व्वरे॑ण्यँव्वरे॑ण्यꣳ सवि॒तुः स॑वि॒तुर्व्वरे॑ण्य॒म्भर्ग्गो॒ भर्ग्गो॒ व्वरे॑ण्यꣳ सवि॒तुः स॑वि॒तुर्व्वरे॑ण्य॒म्भर्ग्ग॑ः। व्वरे॑ण्य॒म्भर्ग्गो॒ भर्ग्गो॒ व्वरे॑ण्यँव्वरे॑ण्य॒म्भर्ग्गो॑ दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॒ भर्ग्गो॒ व्वरे॑ण्यँव्वरे॑ण्य॒म्भर्ग्गो॑ दे॒वस्य॑। भर्ग्गो॑ दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॒ भर्ग्गो॒ भर्ग्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि धीमहि दे॒वस्य॒ भर्ग्गो॒ भर्ग्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। दे॒वस्य॑ धीमहि धीमहि दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धी॒म॒हीति॑ धीमहि॥ धियो॒ यो यो धियो॒ धियो॒ यो नो॑ नो॒ यो धियो॒ धियो॒ यो न॑ः। यो नो॑ नो॒ यो यो न॑ः प्प्रचो॒दया॑त्प्रचो॒दया॑न्नो॒ यो यो न॑ः प्प्रचो॒दया॑त्। न॒ः प्प्र॒चो॒दया॑त्प्रचो॒दया॑न्नो नः प्प्रचो॒दया॑त्। प्र॒चो॒दया॒दिति॑ प्प्र चो॒दया॑त्॥३५॥

---

[1]. आम्रेडिते चोत्तरः (वा. प्रा. ६.३) उपसर्ग की द्विरुक्ति होने पर परवर्ती उपसर्ग अनुदात्त होता है।

परिं ते ते परि परिं ते दूडभों दुर्दभंस्ते परि परिं ते दूडभंः[1]। ते दूडभों दुर्दभंस्ते ते दूडभो रथो रथों दुर्दभंस्ते ते दूडभो रथंः। दूडथो रथो रथों दुर्दभों दूडभो रथोस्म्मानस्म्मान्नथों दुर्दभों दूडभो रथोस्म्मान्। दुर्दभऽ इतिं दुः दभंः। रथोस्म्मानस्म्मान्नथो रथोस्म्मारँ॥ऽ अंश्नोत्वश्नोत्वस्म्मान्नथो रथोस्म्मारँ॥ऽ अंश्नोतु[2]। अस्म्मारँ॥ऽ अंश्नोत्वश्नोत्वस्म्मानस्म्मारँ॥ऽ अंश्नोतु व्विश्वतों व्विश्वतोंश्नोत्वस्म्मानस्म्मारँ॥ऽ अंश्नोतु व्विश्वतंः। अश्नोतु व्विश्वतों व्विश्वतों-श्नोत्वश्नोतु व्विश्वतंः। व्विश्वतऽ इतिं विश्वतंः॥ येन रक्क्षंसि रक्क्षंसि येन येन रक्क्षंसि दाशुषों दाशुषो रक्क्षंसि येन येन रक्क्षंसि दाशुषंः। रक्क्षंसि दाशुषों दाशुषो रक्क्षंसि रक्क्षंसि दाशुषंः। दाशुषऽ इतिं दाशुषंः॥३६॥ शतम्॥१००॥

स्वंः सुप्प्रजाः सुंप्प्रजाः स्वः स्वः सुप्प्रजाः प्प्रजाभिंः प्प्रजाभिंः सुप्प्रजाः स्वः स्वः सुप्प्रजाः प्प्रजाभिंः। स्वरिति स्वः। सुप्प्रजाः प्प्रजाभिंः प्प्रजाभिंः सुप्प्रजाः सुंप्प्रजाः प्प्रजाभिंः स्याꣳ स्याम्प्रजाभिंः सुप्प्रजाः सुंप्प्रजाः प्प्रजाभिंः स्याम्। सुप्प्रजाऽ इतिं सु प्रजाः[3]। प्रजाभिंः स्याꣳ स्याम्प्रजाभिंः प्प्रजाभिंः स्याꣳ सुवीरंः सुवीरंः स्याम्प्रजाभिंः प्प्रजाभिंः स्याꣳ सुवीरंः। प्रजाभिरितिं प्प्र जाभिंः। स्याꣳ सुवीरंः सुवीरंः स्याꣳ स्याꣳ सुवीरों व्वीरैर्व्वीरैः सुवीरंः स्याꣳ स्याꣳ सुवीरों व्वीरैः। सुवीरों व्वीरैर्व्वीरैः सुवीरंः सुवीरों व्वीरैः सुपोषंः सुपोषों व्वीरैः सुवीरंः सुवीरों व्वीरैः सुपोषंः। सुवीरऽ इतिं सु व्वीरंः। व्वीरैः सुपोषंः सुपोषों व्वीरैर्व्वीरैः सुपोषः पोषैः पोषैः

[1]. उकारं दुर्दे (वा. प्रा. ३.४२) इस सूत्र के अनुसार दुः के विसर्जनीय का उकार हो गया है, दीर्घ होने पर उकार दीर्घ हो गया। परवर्ती दकार मूर्धन्य हो गया।

[2]. अस्म्मान् अश्नोतु यहाँ आकारोपधो यकारम्(वा.प्रा.३.१४२) के अनुसार नकार यकार होता है तथा उपधा का अनुनासिक होता है। यवयोः पदान्तयोः स्वरमध्ये लोपः(वा.प्रा.४.१२७) से यकार का लोप, न परकालः पूर्वकाले पुनः(वा.प्रा.३.४) से सन्धि का निषेध होने पर अस्म्मारँ॥ऽ अश्नोतु होता है।

[3]. बहुप्रकृतावागन्तुना पर्वणा (वा. प्रा. ५.७) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण हुआ है।

सुपोषौं व्वीरैर्व्वीरैः सुपोषः पोषैः। सुपोषः पोषैः पोषैः सुपोषं÷ सुपोषः पोषैः। सुपोषऽ इति सु पोषं÷। पोषैरिति पोषैः॥ नर्य्यं प्प्रजाम्प्रजान्नर्य्यं नर्य्यं प्प्रजाम्मे मे प्प्रजान्नर्य्यं नर्य्यं प्प्रजाम्मे[1]। प्रजाम्मे मे प्प्रजाम्प्रजाम्मे पाहि पाहि मे प्प्रजाम्प्रजाम्मे पाहि। प्रजामिति प्र जाम्। मे पाहि पाहि मे मे पाहि शꣳस्य शꣳस्यं पाहि मे मे पाहि शꣳस्यं। पाहि शꣳस्य शꣳस्यं पाहि पाहि शꣳस्यं पशून्पशूञ्छꣳस्यं पाहि पाहि शꣳस्यं पशून्। शꣳस्यं पशून्पशूञ्छꣳस्य शꣳस्यं पशूनथर्व्वाथर्व्व पशूञ्छꣳस्य शꣳस्यं पशूनथर्व्व। पशूनथर्व्वाथर्व्व पशून्पशूनथर्व्व पितुम्पितुमथर्व्व पशून्पशूनथर्व्व पितुम्। अथर्व्व पितुम्पितुमथर्व्वाथर्व्व पितुम्। पितुमिति पितुम्॥३७॥

आगन्मागन्मागन्म व्विश्ववेदसँव्विश्ववेदसमगन्मागन्म व्विश्ववेदसम्। अगन्म व्विश्ववेदसँव्विश्ववेदसमगन्मागन्म व्विश्ववेदसमस्म्मभ्यमस्म्मभ्यँव्विश्व-वेदसमगन्मागन्म व्विश्ववेदसमस्म्मभ्यम्। व्विश्ववेदसमस्म्मभ्यमस्म्मभ्यँव्वि-श्ववेदसँव्विश्ववेदसमस्म्मभ्यँव्वसुवित्तमँव्वसुवित्तममस्म्मभ्यँव्विश्ववेदसँव्विश्ववेदस-मस्म्मभ्यँव्वसुवित्तमम्। व्विश्ववेदसमिति विश्व व्वेदसम्। अस्म्मभ्यँव्वसुवित्तमँ-व्वसुवित्तममस्म्मभ्यमस्म्मभ्यँव्वसुवित्तमम्। व्वसुवित्तममिति वसुवित् तमम्॥ अग्ग्ने सम्म्राट्ट् सम्म्राडग्ग्नेग्ग्ने सम्म्राडब्भ्युभि सम्म्राडग्ग्नेग्ग्ने सम्म्राडभि[2]। स-म्म्राडब्भ्युभि सम्म्राट्ट् सम्म्राडभि द्युम्म्नन्द्युम्म्नमभि सम्म्राट्ट् सम्म्राडभि द्युम्म्नम्। सम्म्राडिति सम् राट्। अभि द्युम्म्नन्द्युम्म्नमब्भ्युभि द्युम्म्नमब्भ्युभि द्युम्म्नमब्भ्युभि द्युम्म्नमभि। द्युम्म्नमब्भ्युभि द्युम्म्नन्द्युम्म्नमभि सहः सहोभि द्युम्म्नन्द्युम्म्नमभि

1. नो नौ मे मदर्थे त्रिष्वेकेषु(वा.प्रा.२.३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ मे पद अनुदात्त है।

2. प्रकृत्या सम्राट् साम्राजि (वा. प्रा. ४.६) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार सम्राट् पद में मकार प्रकृति भाव से है। यह सूत्र अनुस्वारं शेष्मसु मकारः (वा. प्रा. ४.१) का अपवाद है, अतः सꣳराट् ऐसा नहीं होगा।

सहः। अभि सहः सहोऽभ्युभि सहऽ आ यच्छस्व यच्छस्वा सहोऽभ्युभि सहऽ आ यच्छस्व। सहऽ आ यच्छस्व यच्छस्वा सहः सहऽ आ यच्छस्व। आ यच्छस्व। यच्छस्वेति यच्छस्व॥३८॥

अयमग्निरग्निरयमयमग्निर्गृहपतिर्गृहपतिरग्निरयमयमग्निर्गृहपतिः। अग्निर्गृहपतिर्गृहपतिरग्निरग्निर्गृहपतिर्ग्गार्हपत्त्यो गार्हपत्त्यो गृहपतिरग्निरग्नि-र्गृहपतिर्ग्गार्हपत्त्यः। गृहपतिर्ग्गार्हपत्त्यो गार्हपत्त्यो गृहपतिर्गृहपतिर्ग्गार्हपत्त्यः प्प्रजायाः प्प्रजाया गार्हपत्त्यो गृहपतिर्गृहपतिर्ग्गार्हपत्त्यः प्प्रजायाः। गृहपति-रिति गृह पतिः। गार्हपत्त्यः प्प्रजायाः प्प्रजाया गार्हपत्त्यो गार्हपत्त्यः प्प्रजायां ब्वसुवित्तमो ब्वसुवित्तमः प्प्रजाया गार्हपत्त्यो गार्हपत्त्यः प्प्रजायां ब्वसुवित्तमः। गार्हपत्त्यऽ इति गार्ह पत्त्यः। प्रजायां ब्वसुवित्तमो ब्वसुवित्तमः प्प्रजायाः प्प्रजायां ब्वसुवित्तमः। प्रजायाऽ इति प्प्र जायाः। ब्वसुवित्तमऽ इति वसुवित् तमः॥ अग्ग्ने गृहपते गृहपतेग्ग्नेग्ग्ने गृहपते पुरीष्ष्यः पुरीष्ष्यो गृहपतेग्ग्नेग्ग्ने गृहपते पुरीष्ष्यः। गृहपते पुरीष्ष्यः पुरीष्ष्यो गृहपते गृहपते पुरीष्ष्यो रयिमान्न्रयिमान्त्पुरीष्ष्यो गृहपते गृहपते पुरीष्ष्यो रयिमान्। गृहपतऽ इति गृह पते॥ पुरीष्ष्यो रयिमान्न्रयिमान्त्पुरीष्ष्यः पुरीष्ष्यो रयिमान्त्पुष्ट्टिवर्द्धनः पुष्ट्टिवर्द्धनो रयिमान्त्पुरीष्ष्यः पुरीष्ष्यो रयिमान्त्पुष्ट्टिवर्द्धनः। रयिमान्त्पुष्ट्टिवर्द्धनः पुष्ट्टिवर्द्धनो रयिमान्न्रयिमान्त्पुष्ट्टिवर्द्धनः। रयिमानिति रयि मान्। पुष्ट्टिवर्द्धनऽ इति पुष्ट्टि ब्वर्द्धनः॥ अग्ग्ने पुरीष्ष्य पुरीष्ष्याग्ग्नेग्ग्ने पुरीष्ष्य। पुरीष्ष्येति पुरीष्ष्य॥३९॥

गृहा मा मा गृहा गृहा मा बिभीत बिभीत मा गृहा गृहा मा बिभीत[1]। मा बिभीत बिभीत मा मा बिभीत मा मा बिभीत मा मा बिभीत मा। बिभीत मा मा

[1]. मा.म.प्र.शि.३. के अनुसार बिभीत पद में पवर्गीय बकार है।

बिभीत बिभीत मा वेपद्धँव्वेपद्धम्मा बिभीत बिभीत मा वेपद्धम्[1]। मा वेपद्धँव्वेपद्धम्मा मा वेपद्धमूर्ज्जमूर्ज्जँव्वेपद्धम्मा मा वेपद्धमूर्ज्जम्। व्वेपद्धमूर्ज्जमूर्ज्जँव्वेपद्धँव्वेपद्धमूर्ज्जम्बिब्भ्रतो बिब्भ्रतऽ ऊर्ज्जँव्वेपद्धँव्वेपद्धमूर्ज्जम्बिब्भ्रतः। ऊर्ज्जम्बिब्भ्रतो बिब्भ्रतऽ ऊर्ज्जमूर्ज्जम्बिब्भ्रतऽ एमसीमस्या बिब्भ्रतऽ ऊर्ज्जमूर्ज्जम्बिब्भ्रतऽ एमसि। बिब्भ्रतऽ एमसीमस्या बिब्भ्रतो बिब्भ्रतऽ एमसि। एमसि। इमसीतीमसि॥ ऊर्ज्जम्बिब्भ्रद् बिब्भ्रदूर्ज्जमूर्ज्जम्बिब्भ्रद्द्वो वो बिब्भ्रदूर्ज्जमूर्ज्जम्बिब्भ्रद्द्वः। बिब्भ्रद्द्वो वो बिब्भ्रद् बिब्भ्रद्द्वः सुमनाः सुमना वो बिब्भ्रद् बिब्भ्रद्द्वः सुमनाः। व्वः सुमनाः सुमना वो वः सुमनाः सुमेधाः सुमेधाः सुमना वो वः सुमनाः सुमेधाः। सुमनाः सुमेधाः सुमेधाः सुमनाः सुमनाः सुमेधा गृहान्गृहान्त्सुमेधाः सुमनाः सुमनाः सुमेधा गृहान्[2]। सुमनाऽ इति सु मनाः। सुमेधा गृहान्गृहान्त्सुमेधाः सुमेधा गृहानैम्म्येम्म्या गृहान्त्सुमेधाः सुमेधा गृहानैमि। सुमेधाऽ इति सु मेधाः। गृहानैम्म्येम्म्या गृहान्गृहानैमि मनसा मनसैम्म्या गृहान्गृहानैमि मनसा। ऐमि। एमि मनसा मनसैम्म्येमि मनसा मोदमानो मोदमानो मनसैम्म्येमि मनसा मोदमानः। मनसा मोदमानो मोदमानो मनसा मनसा मोदमानः। मोदमानऽ इति मोदमानः॥४०॥

य्येषामद्ध्येत्यद्ध्येति य्येषाँय्येषामद्ध्येति प्प्रवसन्प्रवसन्नद्ध्येति य्येषाँय्येषामद्ध्येति प्प्रवसन्। अद्ध्येति प्प्रवसन्प्रवसन्नद्ध्येत्यद्ध्येति प्प्रवसन्न्येषु य्येषु प्प्रवसन्नद्ध्येत्यद्ध्येति प्प्रवसन्न्येषु। अद्ध्येतीत्यधि एति। प्रवसन्न्येषु य्येषु प्प्रवसन्प्रवसन्न्येषु सौमनसः सौमनसो य्येषु प्प्रवसन्प्रवसन्न्येषु सौमनसः। प्रवसन्निति प्प्र व्वसन्।

---

1. अय मा –स –न –शब्देभ्यो विभाषाम्रेडिते यवौ (या. शि. १५७) इस वचन के अनुसार व्यवस्थित विकल्प होने से वेपद्धम् के वकार का पदादि होने पर भी गुरुत्व नहीं होगा।

2. वा.प्रा.३.८९. के अनुसार यहाँ पदान्त नकार प्रकृतिभाव से रहता है।

येषु॑ सौमन॒सः सौ॑मन॒सो ये॒षु॒ ये॑षु सौमन॒सो ब॒हुर्ब॒हुः सौ॑मन॒सो ये॒षु॒ ये॑षु सौमन॒सो ब॒हुः। सौ॒म॒न॒सो ब॒हुर्ब॒हुः सौ॑मन॒सः सौ॑मन॒सो ब॒हुः। ब॒हुरिति॑ ब॒हुः॥ गृ॒हानुपोप॑ गृ॒हान्गृ॒हानुप॑ ह्वयामहे ह्वयामह॒ऽ उप॑ गृ॒हान्गृ॒हानुप॑ ह्वयामहे। उप॑ ह्वयामहे ह्वयामह॒ऽ उपोप॑ ह्वयामहे॒ ते ते ह्व॑यामह॒ऽ उपोप॑ ह्वयामहे॒ ते। ह्व॒या॒म॒हे॒ ते ते ह्व॑यामहे ह्वयामहे॒ ते नो॑ न॒स्ते ह्व॑यामहे ह्वयामहे॒ ते न॑ः[1]। ते नो॑ न॒स्ते ते नो॑ जानन्तु जानन्तु न॒स्ते ते नो॑ जानन्तु। नो॒ जा॒न॒न्तु॒ जा॒न॒न्तु॒ नो॒ नो॒ जा॒न॒न्तु॒ जा॒न॒तो जा॑न॒तो जा॑नन्तु नो नो जानन्तु जान॒तः। जा॒न॒न्तु॒ जा॒न॒तो जा॑न॒तो जा॑नन्तु जानन्तु जान॒तः। जा॒न॒तऽ इति॑ जान॒तः॥४१॥

उप॑हूताऽ इ॒हेहोप॑हूता॒ऽ उप॑हूताऽ इ॒ह गावो॒ गाव॑ऽ इ॒होप॑हूता॒ऽ उप॑हूताऽ इ॒ह गाव॑ः। उप॑हूता॒ऽ इत्युप॑ हूताः। इ॒ह गावो॒ गाव॑ऽ इ॒हेह गाव॒ऽ उप॑हूता॒ऽ उप॑हूता॒ गाव॑ऽ इ॒हेह गाव॒ऽ उप॑हूताः। गाव॒ऽ उप॑हूता॒ऽ उप॑हूता॒ गावो॒ गाव॒ऽ उप॑हूताऽ अ॒जा॒वयो॑जा॒वय॒ऽ उप॑हूता॒ गावो॒ गाव॒ऽ उप॑हूताऽ अ॒जा॒वय॑ः। उप॑हूताऽ अ॒जा॒वयो॑जा॒वय॒ऽ उप॑हूता॒ऽ उप॑हूताऽ अ॒जा॒वय॑ः। उप॑हूता॒ऽ इत्युप॑ हूताः। अ॒जा॒वय॒ऽ इत्य॑जा॒वय॑ः[2]॥ अथो॒ऽ अन्न॑स्या॒न्न॑स्याथो॒ऽ अथो॒ऽ अन्न॑स्य की॒लाल॑ः की॒लालो॒न्न॑स्याथो॒ऽ अथो॒ऽ अन्न॑स्य की॒लाल॑ः। अथो॒ऽ इत्यथो॑। अन्न॑स्य की॒लाल॑ः की॒लालो॒न्न॑स्या॒न्न॑स्य की॒लाल॒ऽ उप॑हूत॒ऽ उप॑हूतः की॒लालो॒न्न॑स्या॒न्न॑स्य की॒लाल॒ऽ उप॑हूतः। की॒लाल॒ऽ उप॑हूत॒ऽ उप॑हूतः की॒लाल॑ः की॒लाल॒ऽ उप॑हूतो गृ॒हेषु॑ गृ॒हेषूप॑हूतः की॒लाल॑ः की॒लाल॒ऽ उप॑हूतो गृ॒हेषु॑। उप॑हूतो गृ॒हेषु॑ गृ॒हेषूप॑हूत॒ऽ उप॑हूतो गृ॒हेषु॒ नो नो गृ॒हेषूप॑हूत॒ऽ उप॑हूतो गृ॒हेषु॒ नः। उप॑हूत॒ऽ इत्युप॑ हूतः। गृ॒हेषु॒ नो नो गृ॒हेषु॑ गृ॒हेषु॒ नः। न॒ऽ इति॑ नः॥ क्षेमा॑य वो व॒ः

[1]. स्वर पूर्व में न होने से सन्धि के प्रारम्भ में ह्वयामहे पद में वकार का द्वित्व नहीं होगा।

[2]. जनयत्या ओषधयोवृषायिषत नहि चनास्मभ्यमजावयो वलगम् (वा. प्रा. ५.३५) इस सूत्र से यहाँ पृथक्करण विहित नहीं है।

क्षेमा॑य क्षेमा॑य वः शान्त्यै॑ शान्त्यै॑ वः क्षेमा॑य क्षेमा॑य वः शान्त्यै॑। ब्वः शान्त्यै॑ शान्त्यै॑ वो वः शान्त्यै॑ प्प्र प्प्र शान्त्यै॑ वो वः शान्त्यै॑ प्प्र। शान्त्यै॑ प्प्र प्प्र शान्त्यै॑ शान्त्यै॑ प्प्र प॑द्ये पद्ये॑ प्प्र शान्त्यै॑ शान्त्यै॑ प्प्र प॑द्ये। प्र प॑द्ये पद्ये॑ प्प्र प्प्र प॑द्ये शि॒वꣳ शि॒वम्प॑द्ये॒ प्प्र प्प्र प॑द्ये शि॒वम्। पद्ये॑ शि॒वꣳ शि॒वम्प॑द्ये पद्ये शि॒वꣳ श॒ग्ग्मꣳ श॒ग्ग्मꣳ शि॒वम्प॑द्ये पद्ये शि॒वꣳ श॒ग्ग्मम्। शि॒वꣳ श॒ग्ग्मꣳ श॒ग्ग्मꣳ शि॒वꣳ शि॒वꣳ श॒ग्ग्मꣳ शँ॒ख्योः शँ॒ख्योः श॒ग्ग्मꣳ शि॒वꣳ शि॒वꣳ श॒ग्ग्मꣳ शँ॒ख्योः। श॒ग्ग्मꣳ शँ॒ख्योः शँ॒ख्योः श॒ग्ग्मꣳ श॒ग्ग्मꣳ शँ॒ख्योः शँ॒ख्योः शँ॒ख्योः शँ॒ख्योः श॒ग्ग्मꣳ श॒ग्ग्मꣳ शँ॒ख्योः शँ॒ख्योः। शँ॒ख्योः शँ॒ख्योः शँ॒ख्योः शँ॒ख्योः शँ॒ख्योः शँ॒ख्योः। शँ॒ख्योरिति॑ श॒म् ख्योः। शँ॒ख्योरिति॑ श॒म् ख्योः ॥४२॥

प्र॒घा॒सिनो॑ हवामहे हवामहे प्प्रघा॒सिन॑ः प्प्रघा॒सिनो॑ हवामहे म॒रुतो॑ म॒रुतो॑ हवामहे प्प्रघा॒सिन॑ः प्प्रघा॒सिनो॑ हवामहे म॒रुत॑ः। प्र॒घा॒सिन॒ऽ इति॑ प्प्र घा॒सिन॑ः। ह॒वा॒म॒हे॒ म॒रुतो॑ म॒रुतो॑ हवामहे हवामहे म॒रुत॑श्च च म॒रुतो॑ हवामहे हवामहे म॒रुत॑श्च। म॒रुत॑श्च च म॒रुतो॑ म॒रुत॑श्च रि॒शाद॑सो रि॒शाद॑सश्च म॒रुतो॑ म॒रुत॑श्च रि॒शाद॑सः। च॒ रि॒शाद॑सो रि॒शाद॑सश्च च रि॒शाद॑सः। रि॒शाद॑स॒ऽ इति॑ रि॒शाद॑सः॥ क॒र॒म्भेण॑ स॒जोष॑सः स॒जोष॑सः कर॒म्भेण॑ कर॒म्भेण॑ स॒जोष॑सः। स॒जोष॑स॒ऽ इति॑ स॒ जोष॑सः ॥४३॥

यद् ग्रामे॒ ग्ग्रामे॒ यद्यद् ग्रामेर॒ण्ण्येर॑ण्ण्ये॒ ग्ग्रामे॒ यद्यद् ग्रामेर॑ण्ण्ये[1]। ग्रामेर॒-ण्ण्येर॑ण्ण्ये॒ ग्ग्रामे॒ ग्ग्रामेर॑ण्ण्ये स॒भाया॑ꣳ स॒भाया॒मर॑ण्ण्ये॒ ग्ग्रामे॒ ग्ग्रामेर॑ण्ण्ये स॒भाया॑म्। अर॑ण्ण्ये स॒भाया॑ꣳ स॒भाया॒मर॒ण्ण्येर॑ण्ण्ये स॒भाया॑मिन्द्रि॒यऽ इ॑न्द्रि॒ये स॒भाया॒मर॒ण्ण्येर॑ण्ण्ये स॒भाया॑मिन्द्रि॒ये। स॒भाया॑मिन्द्रि॒यऽ इ॑न्द्रि॒ये स॒भाया॑ꣳ

[1]. संहिता में इस मन्त्र में यत् पद पाँच बार आता है, वा.प्रा.४.१७७. के अनुसार प्रथम यत् को छोड़कर अन्य सभी की पुनरुक्ति में सङ्क्रम होता है।

सुभायांमिन्द्रिये। इन्द्रियऽ इतींन्द्रिये॥ एनंश्चकृम चंकृमैनऽ एनंश्चकृमा ब्वयँ-ब्वयञ्चंकृमैनऽ एनंश्चकृमा ब्वयम्। चकृमा ब्वयँब्वयञ्चंकृम चंकृमा ब्वयमिदमिदंब्वय-ञ्चंकृम चंकृमा ब्वयमिदम्। ब्वयमिदमिदंब्वयँब्वयमिदन्तत्तदिदंब्वयँब्वयमिदन्तत्। इदन्तत्तदिदमिदन्तदवाव तदिदमिदन्तदवं। तदवाव तत्तदवं यजामहे यजामहेव तत्तदवं यजामहे। अवं यजामहे यजामहेवावं यजामहे स्वाहा स्वाहां यजामहे-वावं यजामहे स्वाहां। यजामहे स्वाहा स्वाहां यजामहे यजामहे स्वाहां। स्वाहेति स्वाहां॥४४॥

मो षू णों नः सु मो मो षू णंऽ इन्द्रेन्द्र नः सु मो मो षू णंऽ इन्द्र[1]। मोऽ इति मो। सु नंः। नऽ इन्द्रेन्द्र नो नऽ इन्द्रात्रात्रेंन्द्र नो नऽ इन्द्रात्रं। इन्द्रात्रात्रें-न्द्रेन्द्रात्रं पृत्सु पृत्स्वत्रेंन्द्रेन्द्रात्रं पृत्सु। अत्रं पृत्सु पृत्स्वत्रात्रं पृत्सु देवैर्देवैः पृत्स्वत्रात्रं पृत्सु देवैः। पृत्सु देवैर्देवैः पृत्सु पृत्सु देवैरस्त्यस्तिं देवैः पृत्सु पृत्सु देवैरस्तिं। पृत्स्विति पृत् सु। देवैरस्त्यस्तिं देवैर्देवैरस्ति हि ह्यस्तिं देवैर्देवैरस्ति हि। अस्ति हि ह्यस्त्यस्ति हि ष्मं स्मम ह्यस्त्यस्ति हि ष्मं। हि ष्मं स्मम हि हि ष्मां ते ते स्मम हि हि ष्मां ते। स्मा ते ते स्मम स्मा ते शुष्मिमञ्छुष्मिमँस्ते स्मम स्मा ते शुष्मिन्। ते शुष्मिमञ्छुष्मिमँस्ते ते शुष्मिन्नवयाऽ अंवयाः शुंष्मिमँस्ते ते शुष्मिन्नवयाः। शुष्मिन्नवयाऽ अंवयाः शुंष्मिमञ्छुष्मिन्नवयाः। अवयाऽ इत्यंव याः॥ महश्चिंचिन्महो महश्चिद्यस्य यस्यं चिन्महो महश्चि-द्यस्यं। चिद्यस्य यस्यं चिच्चिद्यस्यं मीढुषों मीढुषो यस्यं चिच्चिद्यस्यं मीढुषंः[2]।

[1]. मोषूणाभीषुणी च (वा. प्रा. ४.१८६) इस सूत्र के अनुसार यहाँ क्रमपाठ में तीन पदों का क्रमवर्ग होता है। जटापाठ में भी तीन पदों का ही पाठ होता है। घनपाठ में चार पद ग्रहण किये जाते हैं। वा.प्रा.३.६१. के अनुसार यहाँ ओकार से परवर्ती सकार षकार होता है। वा.प्रा.३.१०७. के अनुसार मकार बाद में होने से षु का स्वर दीर्घ होता है। वा.प्रा.३.८६. के अनुसार नकार निपातन से णकार होता है।

[2]. वा. प्रा. ८.३९. के अनुसार माध्यन्दिन शाखा में ळकार एवं ळहकार नहीं हैं अतः मीढुषः ऐसा उच्चारण ही विहित है।

यस्य॑ मी॒ढुषो॑ मी॒ढुषो॒ यस्य॒ यस्य॑ मी॒ढुषो॑ य॒ह्व्या य॒ह्व्या मी॒ढुषो॒ यस्य॒ यस्य॑ मी॒ढुषो॑ य॒ह्व्या। मी॒ढुषो॑ य॒ह्व्या य॒ह्व्या मी॒ढुषो॑ मी॒ढुषो॑ य॒ह्व्या ह॒विष्म्म॑तो ह॒विष्म्म॑तो य॒ह्व्या मी॒ढुषो॑ मी॒ढुषो॑ य॒ह्व्या ह॒विष्म्म॑तः[1]। य॒ह्व्या ह॒विष्म्म॑तो ह॒विष्म्म॑तो य॒ह्व्या य॒ह्व्या ह॒विष्म्म॑तो म॒रुतो॑ म॒रुतो॑ ह॒विष्म्म॑तो य॒ह्व्या य॒ह्व्या ह॒विष्म्म॑तो म॒रुत॑÷। ह॒विष्म्म॑तो म॒रुतो॑ म॒रुतो॑ ह॒विष्म्म॑तो ह॒विष्म्म॑तो म॒रुतो॒ ब्वन्द॑ते॒ ब्वन्द॑ते म॒रुतो॑ ह॒विष्म्म॑तो ह॒विष्म्म॑तो म॒रुतो॒ ब्वन्द॑ते। म॒रुतो॒ ब्वन्द॑ते॒ ब्वन्द॑ते म॒रुतो॑ म॒रुतो॒ ब्वन्द॑ते॒ गीर्ग्गीर्ब्वन्द॑ते म॒रुतो॑ म॒रुतो॒ ब्वन्द॑ते॒ गीः। ब्वन्द॑ते॒ गीर्ग्गीर्ब्वन्द॑ते॒ ब्वन्द॑ते॒ गीः। गीरिति॒ गीः॥४५॥

अ॒क्क्रन्त्कर्म्म॒ कर्म्मा॒क्क्रन्न॒क्क्रन्त्कर्म्म॑ कर्म्म॒कृत॑÷ कर्म्म॒कृत॒ः कर्म्मा॒क्क्रन्न॒क्क्र॒न्त्कर्म्म॑ कर्म्म॒कृत॑÷। कर्म्म॑ कर्म्म॒कृत॑÷ कर्म्म॒कृत॒ः कर्म्म॒ कर्म्म॑ कर्म्म॒कृत॑÷ स॒ह स॒ह क॑र्म्म॒कृत॒ः कर्म्म॒ कर्म्म॑ कर्म्म॒कृत॑÷ स॒ह। क॒र्म्म॒कृत॑÷ स॒ह स॒ह क॑र्म्म॒कृत॑÷ कर्म्म॒कृत॑÷ स॒ह ब्वा॒चा ब्वा॒चा स॒ह क॑र्म्म॒कृत॑÷ कर्म्म॒कृत॑÷ स॒ह ब्वा॒चा। क॒र्म्म॒कृत॒ऽ इति॑ कर्म्म॒ कृत॑÷। स॒ह ब्वा॒चा ब्वा॒चा स॒ह स॒ह ब्वा॒चा म॑यो॒भुवा॑ मयो॒भुवा॑ ब्वा॒चा स॒ह स॒ह ब्वा॒चा म॑यो॒भुवा॑। ब्वा॒चा म॑यो॒भुवा॑ मयो॒भुवा॑ ब्वा॒चा ब्वा॒चा म॑यो॒भुवा॑। म॒यो॒भुवेति॑ मय॒ः भुवा॑॥ दे॒वेब्भ्य॒ः कर्म्म॒ कर्म्म॑ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॒ः कर्म्म॑ कृ॒त्त्वा कृ॒त्त्वा कर्म्म॑ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॒ः कर्म्म॑ कृ॒त्त्वा। कर्म्म॑ कृ॒त्त्वा कृ॒त्त्वा कर्म्म॒ कर्म्म॑ कृ॒त्त्वास्त॒मस्त॑ङ्कृ॒त्त्वा कर्म्म॒ कर्म्म॑ कृ॒त्त्वास्त॑म्। कृ॒त्त्वास्त॒मस्त॑ङ्कृ॒त्त्वा कृ॒त्त्वास्त॒म्प्र प्प्रास्त॑ङ्कृ॒त्त्वा कृ॒त्त्वास्त॒म्प्र। अस्त॒म्प्र प्प्रास्त॒मस्त॒म्प्रेतै॑त॒ प्प्रास्त॒मस्त॒म्प्रेत॑। प्रेतै॑त॒ प्प्र प्प्रेत॑ सचाभुव॒ः सचाभुव॒ऽ इत॒ प्प्र प्प्रेत॑ सचाभुव॒ः। इ॒त॒ स॒चा॒भु॒व॒ः स॒चा॒भु॒व॒ऽ इ॒ते॒त॒ स॒चा॒भु॒व॒ः। स॒चा॒भु॒व॒ऽ इति॑ सचा भुव॒ः॥४६॥

---

[1]. हविष्म्मतः यहाँ वा.प्रा.४.१०१. के द्वारा षकार का द्वित्व प्राप्त है परन्तु ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) के द्वारा मकार का ही द्वित्व होता है। विप्रतिषेध उत्तरं बलवदलोपे(वा.प्रा.१.१५९) के अनुसार उत्तरवर्ती सूत्र बलवान् होता है।

अवंभृथ निचुम्पुण निचुम्पुणावंभृथावंभृथ निचुम्पुण निचेरुन्निंचेरुन्निंचुम्पुणावंभृथावंभृथ निचुम्पुण निचेरुः। अवंभृथेत्यवं भृथ। निचुम्पुण निचेरुन्निंचेरुन्निंचुम्पुण निचुम्पुण निचेरुरंस्यसि निचेरुन्निंचुम्पुण निचुम्पुण निचेरुरंसि। निचुम्पुणेतिं नि चुम्पुण। निचेरुरंस्यसि निचेरुन्निंचेरुरंसि निचुम्पुणो निंचुम्पुणोसि निचेरुन्निंचेरुरंसि निचुम्पुणः। निचेरुरितिं नि चेरुः। असि निचुम्पुणो निंचुम्पुणोस्यसि निचुम्पुणः। निचुम्पुणऽ इतिं नि चुम्पुणः॥ अवं देवैर्देवैरवावं देवैर्देवकृंतन्देवकृंतन्देवैरवावं देवैर्देवकृंतम्। देवैर्देवकृंतन्देवकृंतन्देवैर्देवैर्देवकृंतमेनऽ एनों देवकृंतन्देवैर्देवैर्देवकृंतमेनंः[1]। देवकृंतमेनऽ एनों देवकृंतन्देवकृंतमेनोंयासिषमयासिषमेनों देवकृंतन्देवकृंतमेनोंयासिषम्[2]। देवकृंतमितिं देव कृंतम्। एनोंयासिषमयासिषमेनऽ एनोंयासिषमवावांयासिषमेनऽ एनोंयासिषमवं। अयासिषमवावांयासिषमयासिषमव मर्त्यैर्म्मर्त्यैरवांयासिषमयासिषमव मर्त्यैः। अव मर्त्यैर्म्मर्त्यैरवाव मर्त्यैर्म्मर्त्यंकृतम्मत्र्यंकृतम्मर्त्यैरवाव मर्त्यैर्म्मर्त्यंकृतम्। मर्त्यैर्म्मर्त्यंकृतम्मर्त्यंकृतम्मर्त्यैर्म्मर्त्यैर्म्मर्त्यंकृतम्पुरुराव्ण्णंः पुरुराव्ण्णो मर्त्यंकृतम्मर्त्यैर्म्मर्त्यैर्म्मर्त्यंकृतम्पुरुराव्ण्णंः। मर्त्यंकृतम्पुरुराव्ण्णंः पुरुराव्ण्णो मर्त्यंकृतम्मर्त्यंकृतम्पुरुराव्ण्णों देव देव पुरुराव्ण्णो मर्त्यंकृतम्मर्त्यंकृतम्पुरुराव्ण्णों देव। मर्त्यंकृतमिति मर्त्यं कृतम्। पुरुराव्ण्णों देव देव पुरुराव्ण्णंः पुरुराव्ण्णों देव रिषो रिषो देंव पुरुराव्ण्णंः पुरुराव्ण्णों देव रिषः। पुरुराव्ण्णऽ इतिं पुरु राव्ण्णंः। देव रिषो रिषो देंव देव रिषस्प्पांहि पाहि रिषो देंव देव रिषस्प्पांहि[3]। रिषस्प्पांहि पाहि रिषो रिषस्प्पांहि। पाहीतिं पाहि॥४७॥

---

1. एनोऽपापे (वा. प्रा. २.१३) इस सूत्र के अनुसार एनः पद पाप का वाचक न होने पर अनुदात होता है। यहाँ पाप का वाचक होने से आद्युदात है।

2. एनोयासिषम् यहाँ व्यपरे च(वा.प्रा.४.७४) इस सूत्र से अकार का अभिनिधान हो गया।

3. रिषः पाहि यहाँ अध्वनो रजसो रिषः स्पृशस्पातौ(वा.प्रा.३.२८) इस सूत्र से विसर्जनीय सकार हो जाता है।

पू॒र्ण्णा द॑र्व्वि दर्व्वि पू॒र्ण्णा पू॒र्ण्णा द॑र्व्वि॒ परा॒ परा॑ दर्व्वि पू॒र्ण्णा पू॒र्ण्णा द॑र्व्वि॒ परा॑[1]। द॒र्व्वि॒ परा॒ परा॑ दर्व्वि दर्व्वि॒ परा॑ पत पत॒ परा॑ दर्व्वि दर्व्वि॒ परा॑ पत। परा॑ पत पत॒ परा॒ परा॑ पत॒ सुपू॑र्ण्णा॒ सुपू॑र्ण्णा पत॒ परा॒ परा॑ पत॒ सुपू॑र्ण्णा। प॒त॒ सुपू॑र्ण्णा॒ सुपू॑र्ण्णा पत पत॒ सुपू॑र्ण्णा॒ पुन॒ꣳ पुन॒ꣳ सुपू॑र्ण्णा पत पत॒ सुपू॑र्ण्णा॒ पुन॑ः। सुपू॑र्ण्णा॒ पुन॒ꣳ पुन॒ꣳ सुपू॑र्ण्णा॒ सुपू॑र्ण्णा॒ पुन॒रा प॑त प॒ता पुन॒ꣳ सुपू॑र्ण्णा॒ सुपू॑र्ण्णा॒ पुन॒रा प॑त। सुपू॒र्ण्णेति॒ सु पू॑र्ण्णा। पुन॒रा प॑त प॒ता पुन॒ꣳ पुन॒रा प॑त। आ प॑त। प॒तेति॑ पत॥ व्व॒स्नेव॒ व्वि वि व॒स्नेव॑ व्व॒स्नेव॒ व्वि क्क्री॑णावहै क्क्रीणावहै॒ व्वि व॒स्नेव॑ व्व॒स्नेव॒ व्वि क्क्री॑णावहै। व्व॒स्नेवेति॑ व॒स्ना इ॑व। व्वि क्क्री॑णावहै क्क्रीणावहै॒ व्वि वि क्क्री॑णावहा॒ऽ इष॒मिष॑ङ्क्रीणावहै॒ व्वि वि क्क्री॑णावहा॒ऽ इष॑म्। क्री॒णा॒व॒हा॒ऽ इष॒मिष॑ङ्क्रीणावहै क्क्रीणावहा॒ऽ इष॒मूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मिष॑-ङ्क्रीणावहै क्क्रीणावहा॒ऽ इष॒मूर्ज्ज॑म्। इष॒मूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मिष॒मिष॒मूर्ज्ज॑ꣳ शतक्क्रतो शत-क्क्रत॒ऽ ऊर्ज्ज॒मिष॒मिष॒मूर्ज्ज॑ꣳ शतक्क्रतो। ऊर्ज्ज॑ꣳ शतक्क्रतो शतक्क्रत॒ऽ ऊर्ज्ज॒मूर्ज्ज॑ꣳ शतक्क्रतो। श॒त॒क्क्र॒तो॒ऽ इति॑ शत क्क्रतो॥४८॥

दे॒हि मे॑ मे दे॒हि दे॒हि मे॒ ददा॑मि॒ ददा॑मि मे दे॒हि दे॒हि मे॒ ददा॑मि। मे॒ ददा॑मि॒ ददा॑मि मे मे॒ ददा॑मि ते ते॒ ददा॑मि मे मे॒ ददा॑मि ते। ददा॑मि ते ते॒ ददा॑मि॒ ददा॑मि ते॒ नि नि ते॒ ददा॑मि॒ ददा॑मि ते॒ नि। ते॒ नि नि ते॑ ते॒ नि मे॑ मे॒ नि ते॑ ते॒ नि मे॑[2]। नि मे॑ मे॒ नि नि मे॑ धेहि धेहि मे॒ नि नि मे॑ धेहि। मे॒ धे॒हि॒ धे॒हि॒ मे॒ मे॒ धे॒हि॒ नि नि धे॑हि मे मे धेहि॒ नि। धे॒हि॒ नि नि धे॑हि धेहि॒ नि ते॑ ते॒ नि धे॑हि धेहि॒ नि ते॑। नि ते॑ ते॒ नि नि ते॑ दधे दधे ते॒ नि नि ते॑ दधे। ते॒ द॒धे॒ द॒धे॒ ते॒ ते॒ द॒धे॒। द॒ध॒ऽ इति॑ दधे॥ नि॒हार॑ञ्च च नि॒हार॑न्नि॒हार॑ञ्च॒ हरा॑सि॒ हरा॑सि च नि॒हार॑न्नि॒हार॑ञ्च॒ हरा॑सि। नि॒हार॒मिति॑ नि॒ हार॑म्। च॒ हरा॑सि॒ हरा॑सि च च॒ हरा॑सि मे मे॒ हरा॑सि च च॒ हरा॑सि मे। हरा॑सि मे मे॒ हरा॑सि॒

[1]. वा.प्रा.३.८४. के अनुसार पूर्णा पद में नकार णकार हो गया है।

[2]. वो वान्ते त्वदर्थे (वा. प्रा. २.५) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार यहाँ ते पद अनुदात है।

हरासि मे निहारन्निहारम्मे हरासि हरासि मे निहारम्। मे निहारन्निहारम्मे मे निहारन्नि नि निहारम्मे मे निहारन्नि। निहारन्नि नि निहारन्निहारन्नि हराणि हरा-णि नि निहारन्निहारन्नि हराणि। निहारमिति नि हारम्। नि हराणि हराणि नि नि हराणि ते ते हराणि नि नि हराणि ते। हराणि ते ते हराणि हराणि ते स्वाहा स्वाहा ते हराणि हराणि ते स्वाहा। ते स्वाहा स्वाहा ते ते स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥४९॥

अक्क्षन्नमीमदन्तामीमदन्ताक्क्षन्नक्क्षन्नमीमदन्त हि ह्यमीमदन्ताक्क्षन्न-क्क्षन्नमीमदन्त हि। अमीमदन्त हि ह्यमीमदन्तामीमदन्त ह्यवाव ह्यमीमद-न्तामीमदन्त ह्यव। ह्यवाव हि ह्यव प्प्रियाः प्प्रियाऽ अव हि ह्यव प्प्रियाः[1]। अव प्प्रियाः प्प्रियाऽ अवाव प्प्रियाऽ अधूषताधूषत प्प्रियाऽ अवाव प्प्रियाऽ अधूषत। प्रियाऽ अधूषताधूषत प्प्रियाः प्प्रियाऽ अधूषत। अधूषतेत्त्यधूषत॥ अस्तोषत स्वभानवः स्वभानवोस्तोषतास्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा व्विप्प्राः स्वभानवोस्तोषतास्तोषत स्वभानवो व्विप्प्राः। स्वभानवो व्विप्प्रा व्विप्प्राः स्वभा-नवः स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठया नविष्ठया व्विप्प्राः स्वभानवः स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठया। स्वभानवऽ इति स्व भानवः। व्विप्प्रा नविष्ठया नविष्ठया व्विप्प्रा व्विप्प्रा नविष्ठया मती मती नविष्ठया व्विप्प्रा व्विप्प्रा नविष्ठया मती। नविष्ठया मती मती नविष्ठया नविष्ठया मती य्योज य्योज मती नविष्ठया नविष्ठया मती य्योज। मती य्योज य्योज मती मती य्योजा नु नु य्योज मती मती य्योजा नु। य्योजा नु नु य्योज य्योजा न्विन्द्रेन्द्र नु य्योज य्योजा न्विन्द्र[2]। न्विन्द्रेन्द्र नु न्विन्द्र ते तऽ इन्द्र नु

1. ह्यव यहाँ सन्धि के प्रारम्भ में स्वरपूर्व में न होने से यकार का द्वित्व नहीं होगा।

2. नु इन्द्र यहाँ अपृक्त न होने से उ(नु) प्रकृतिभाव से नहीं रहेगा। वा.प्रा.१.९५. के अनुसार स्वतन्त्र पद होने पर उकार प्रगृह्य होता है।

न्विन्द्र ते। इन्द्र ते तऽ इन्द्रेन्द्र ते हरी हरीं तऽ इन्द्रेन्द्र ते हरीं। ते हरी हरीं ते ते हरीं। हरीऽ इति हरीं॥५०॥

सुसन्दृशन्त्वा त्वा सुसन्दृशंꣳ सुसन्दृशन्त्वा व्वयँव्वयन्त्वा सुसन्दृशंꣳ सुसन्दृशन्त्वा व्वयम्। सुसन्दृशमितिं सु सन्दृशंम्। त्वा व्वयँव्वयन्त्वा त्वा व्वयम्मघवन्नमघवन्व्वयन्त्वा त्वा व्वयम्मघवन्। व्वयम्मघवन्नमघवन्व्वयँव्वयम्मघवन्वन्दिषीमहिं व्वन्दिषीमहि मघवन्व्वयँव्वयम्मघवन्वन्दिषीमहिं। मघवन्वन्दिषीमहिं व्वन्दिषीमहि मघवन्नमघवन्वन्दिषीमहिं। मघवन्निति मघ व्वन्। व्वन्दिषीमहीतिं वन्दिषीमहिं॥ प्र नूनन्नूनम्प्र प्प्र नूनम्पूर्णवंन्धुरꣳ पूर्णवन्धुरो नूनम्प्र प्प्र नूनम्पूर्णवंन्धुरꣳ[1]। नूनम्पूर्णवंन्धुरꣳ पूर्णवंन्धुरो नूनन्नूनम्पूर्णवंन्धुर स्तुत स्तुतꣳ पूर्णवंन्धुरो नूनन्नूनम्पूर्णवंन्धुर स्तुतꣳ। पूर्णवंन्धुर स्तुत स्तुतꣳ पूर्णवंन्धुरꣳ पूर्णवंन्धुर स्तुतो य्यासि य्यासि स्तुतꣳ पूर्णवंन्धुरꣳ पूर्णवंन्धुर स्तुतो य्यासि। पूर्णवंन्धुरऽ इतिं पूर्ण व्वंन्धुरꣳ। स्तुतो य्यासि य्यासि स्तुत स्तुतो य्यासि व्वशान्वशान्यासि स्तुत स्तुतो य्यासि व्वशान्। य्यासि व्वशान्वशान्यासि य्यासि व्वशाँ२ँ॥ऽ अन्वनु वशान्यासि य्यासि व्वशाँ२ँ॥ऽ अनुं। व्वशाँ२ँ॥ऽ अन्वनु वशान्वशाँ२ँ॥ऽ अनुं। अन्वित्यनुं॥५१॥

मनो नु नु मनो मनो न्वा ह्वामहे ह्वामहऽ आ नु मनो मनो न्वा ह्वामहे। न्वा ह्वामहे ह्वामहऽ आ नु न्वा ह्वामहे नाराशꣳसेनं नाराशꣳसेनं ह्वामहऽ आ नु न्वा ह्वामहे नाराशꣳसेनं। आ ह्वामहे। ह्वामहे नाराशꣳसेनं नाराशꣳसेनं ह्वामहे

[1]. पूर्णबन्धुरः इस पद के वकार को माण्डव्यमहर्षिप्रणीता शिक्षा में पवर्गीय नहीं माना है। अमोघानन्दिनी शिक्षा के अनुसार – प्रथमाक्षरं न वर्जीत द्वितीयं परिवर्जयेत्। एवं बह्वीस्तथा बाह्वोः पूर्णबन्धुं परित्यजेत्॥ श्लोक ६ ।

यहां भाष्यकार उव्वट बन्धुरशब्दो रथनीडवचनः एवं महीधर रथनीडवाची कह रहे हैं। त्रिबन्धुरः वा. सं.२८ -१९ इसके भाष्य में उव्वट सारथिस्थानवचनः कहते हैं, जबकि महीधर ने त्रीणि बन्धुराणि ऋग्यजुः सामलक्षणानि बन्धनानि कहा है। ऋग्वेद ८.५.२८. में हिरण्यवन्धुरम् पद आया है तथा ऋग्वेद ४.४६४. में भी यही पद आया है। श.ब्रा.२.६.१.३८ में पूर्णबन्धुरः पाठ है। ऋग्वेद ९.६२.१७ में त्रिबन्धुरे पाठ है।

ह्वामहे नाराशꣳसेन स्तोमेन स्तोमेन नाराशꣳसेन ह्वामहे ह्वामहे नाराशꣳसेन स्तोमेन। नाराशꣳसेन स्तोमेन स्तोमेन नाराशꣳसेन नाराशꣳसेन स्तोमेन। स्तोमेनेति स्तोमेन॥ पितॄणाञ्च च पितॄणाम्पितॄणाञ्च मन्मभिर्म्मन्मभिश्च पितॄणाम्पितॄणाञ्च मन्मभिः। च मन्मभिर्म्मन्मभिश्च च मन्मभिः। मन्मभिरिति मन्म भिः॥५२॥

आ नो नऽ आ नऽ एत्त्वेतु नऽ आ नऽ एतु[1]। नऽ एत्त्वेतु नो नऽ एतु मनो मनऽ एतु नो नऽ एतु मनः। एतु मनो मनऽ एत्त्वेतु मनः पुनः पुनर्म्मनऽ एत्त्वेतु मनः पुनः। मनः पुनः पुनर्म्मनो मनः पुनः क्रत्त्वे क्रत्त्वे पुनर्म्मनो मनः पुनः क्रत्त्वे। पुनः क्रत्त्वे क्रत्त्वे पुनः पुनः क्रत्त्वे दक्षाय दक्षाय क्रत्त्वे पुनः पुनः क्रत्त्वे दक्षाय। पुनरिति पुनः[2]। क्रत्त्वे दक्षाय दक्षाय क्रत्त्वे क्रत्त्वे दक्षाय जीवसे जीवसे दक्षाय क्रत्त्वे क्रत्त्वे दक्षाय जीवसे। दक्षाय जीवसे जीवसे दक्षाय दक्षाय जीवसे। जीवसऽ इति जीवसे॥ ज्योक्च च ज्योग्ग्ज्योक्च सूर्य्यꣳ सूर्य्यञ्च ज्योग्ग्ज्योक्च सूर्य्यम्। च सूर्य्यꣳ सूर्य्यञ्च च सूर्य्यन्दृशे दृशे सूर्य्यञ्च च सूर्य्यन्दृशे। सूर्य्यन्दृशे दृशे सूर्य्यꣳ सूर्य्यन्दृशे। दृशऽ इति दृशे॥५३॥

पुनर्न्नो नः पुनः पुनर्न्नः पितरः पितरो नः पुनः पुनर्न्नः पितरः। नः पितरः पितरो नो नः पितरो मनो मनः पितरो नो नः पितरो मनः। पितरो मनो मनः पितरः पितरो मनो ददातु ददातु मनः पितरः पितरो मनो ददातु।

---

[1]. अपृक्तमध्यानि त्रीणि स त्रिक्रमः (वा. प्रा. ४.१८४) इस सूत्र में क्रमपाठ के अन्तर्गत मध्य में अपृक्तसंज्ञक पद आने पर त्रिक्रम (तीन पदों के क्रम) का विधान है। कण्डिका के प्रारम्भ में अथवा अन्त में आ पद आने पर यह नियम चरितार्थ नहीं होगा। जहाँ – जहाँ क्रम एवं जटा में त्रिक्रम का विधान माना जाता है, वहाँ – वहाँ घन में यह चतुष्क्रम होता है।

[2]. रिफितं च संहितायामनिरुक्तम्(वा.प्रा.४.१९) इस सूत्र के अनुसार संहिता में जिसका रेफस्वरूप स्पष्ट नहीं हो, उस रिफित पद को इति से व्यवहित किया जाता है। वा.प्रा.१.१६८) के अनुसार पुनः पद का विसर्जनीय रिफित संज्ञक है।

मनो ददातु ददातु मनो मनो ददातु दैव्यो दैव्यो ददातु मनो मनो ददातु दैव्यः। ददातु दैव्यो दैव्यो ददातु ददातु दैव्यो जनो जनो दैव्यो ददातु ददातु दैव्यो जनः। दैव्यो जनो जनो दैव्यो दैव्यो जनः। जनऽ इति जनः॥ जीवँव्वातँव्वातञ्जीवञ्जी-वँव्वातꣳ सचेमहि सचेमहि व्वातञ्जीवञ्जीवँव्वातꣳ सचेमहि। व्वातꣳ सचेमहि सचेमहि व्वातँव्वातꣳ सचेमहि। सचेमहीति सचेमहि॥५४॥

व्वयꣳ सोम सोम व्वयँव्वयꣳ सोम व्व्रते व्व्रते सोम व्वयँव्वयꣳ सोम व्व्रते। सोम व्व्रते व्व्रते सोम सोम व्व्रते तव तव व्व्रते सोम सोम व्व्रते तव। व्व्रते तव तव व्व्रते व्व्रते तव मनो मनस्तव व्व्रते व्व्रते तव मनः। तव मनो मनस्तव तव मनस्तनूषु तनूषु मनस्तव तव मनस्तनूषु। मनस्तनूषु तनूषु मनो मनस्तनूषु बिब्भ्रतो बिब्भ्रत-स्तनूषु मनो मनस्तनूषु बिब्भ्रतः। तनूषु बिब्भ्रतो बिब्भ्रतस्तनूषु तनूषु बिब्भ्रतः। बिब्भ्रतऽ इति बिब्भ्रतः॥ प्रजावन्तः सचेमहि सचेमहि प्प्रजावन्तः प्प्रजाव-न्तः सचेमहि। प्रजावन्तऽ इति प्प्रजा व्वन्तः[1]। सचेमहीति सचेमहि॥५५॥

एष ते तऽ एषऽ एष ते रुद्र रुद्र तऽ एषऽ एष ते रुद्र[2]। ते रुद्र रुद्र ते ते रुद्र भागो भागो रुद्र ते ते रुद्र भागः। रुद्र भागो भागो रुद्र रुद्र भागः सह सह भागो रुद्र रुद्र भागः सह। भागः सह सह भागो भागः सह स्वस्रा स्वस्रा सह भागो भागः सह स्वस्रा। सह स्वस्रा स्वस्रा सह सह स्वस्राम्बिकयाम्बिकया स्वस्रा सह सह स्वस्राम्बिकया। स्वस्राम्बिकयाम्बिकया स्वस्रा स्वस्राम्बिकया तन्तमम्बिकया स्वस्रा स्वस्राम्बिकया तम्। अम्बिकया तन्तमम्बिकयाम्बिकया तञ्जुषस्व जुषस्व तमम्बिकयाम्बिकया तञ्जुषस्व। तञ्जुषस्व जुषस्व तन्तञ्जुषस्व स्वाहा स्वाहा जुषस्व तन्तञ्जुषस्व स्वाहा। जुषस्व स्वाहा स्वाहा जुषस्व जुषस्व

1. वा.प्रा.५.७. के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

2. स्य एष च (वा. प्रा. ३.१७) व्यञ्जन परे होने पर स्य एवं एषः का विसर्जनीय लुप्त हो जाता है।

स्वाहा॒खुरा॒खुः स्वाहा॑ जुषस्व जुषस्व॒ स्वाहा॒खुः। स्वाहा॒खुरा॒खुः स्वाहा॒ स्वाहा॒खुस्त्तैं तऽ आ॒खुः स्वाहा॒ स्वाहा॒खुस्त्तैं। आ॒खुस्त्तैं तऽ आ॒खुरा॒खुस्त्तैं प॒शुः प॒शुस्त्तं॑ऽ आ॒खुरा॒खुस्त्तैं प॒शुः। ते॒ प॒शुः प॒शुस्त्तैं ते प॒शुः। प॒शुरिति॑ प॒शुः ॥५६॥

अव॑ रु॒द्रꣳ रु॒द्रमवाव॑ रु॒द्रमं॑दीमह्यदीमहि रु॒द्रमवाव॑ रु॒द्रमं॑दीमहि। रु॒द्रमं॑दीमह्यदीमहि रु॒द्रꣳ रु॒द्रमं॑दीम॒ह्यवावा॑दीमहि रु॒द्रꣳ रु॒द्रमं॑दीम॒ह्यव॑। अ॒दी॒म॒ह्यवावा॑दीमह्यदीम॒ह्यव॑ दे॒वन्दे॒वमवा॑दीमह्यदीम॒ह्यव॑ दे॒वम्। अव॑ दे॒वन्दे॒वमवाव॑ दे॒वन्त्र्यं॑म्बक॒न्त्र्य॒म्बकन्दे॒वमवाव॑ दे॒वन्त्र्यं॑म्बकम्। दे॒वन्त्र्यं॑म्बक॒न्त्र्य॒म्बकन्दे॒वन्दे॒वन्त्र्यं॑म्बकम्। त्र्यं॑म्बक॒मिति॒ त्रि अं॑म्बकम्॥ यथा॑ नो नो॒ यथा॒ यथा॑ नो॒ व्वस्यं॑सो॒ व्वस्यं॑सो नो॒ यथा॒ यथा॑ नो॒ व्वस्यं॑सᳵ। नो॒ व्वस्यं॑सो॒ व्वस्यं॑सो नो नो॒ व्वस्यं॑स॒स्कर॒त्कर॒द्व्वस्यं॑सो नो नो॒ व्वस्यं॑स॒स्करं॑त्[1]। व्वस्यं॑स॒स्कर॒त्कर॒द्व्वस्यं॑सो॒ व्वस्यं॑स॒स्कर॒च्छ्रेयं॑स॒ᳵ श्रेयं॑स॒ᳵ कर॒द्व्वस्यं॑सो॒ व्वस्यं॑स॒स्कर॒च्छ्रेयं॑सᳵ[2]। कर॒च्छ्रेयं॑स॒ᳵ श्रेयं॑स॒ᳵ कर॒त्कर॒च्छ्रेयं॑सो व्यवसा॒यया॑द्व्यवसा॒यया॒च्छ्रेयं॑स॒ᳵ कर॒त्कर॒च्छ्रेयं॑सो व्यवसा॒यया॑त्। श्रेयं॑सो व्यवसा॒यया॑द्व्यवसा॒यया॒च्छ्रेयं॑स॒ᳵ श्रेयं॑सो व्यवसा॒यया॑त्। व्य॒व॒सा॒यया॒दिति॑ वि अवसा॒यया॑त्॥५७॥

भे॒ष॒जमं॑स्यसि भेष॒जम्भैं॑ष॒जमं॑सि भेष॒जम्भैं॑ष॒जमं॑सि भेष॒जम्भैं॑ष॒जमं॑सि भेष॒जम्। अ॒सि॒ भे॒ष॒जम्भैं॑ष॒जमं॑स्यसि भेष॒जङ्गवे॒ गवैं॑ भेष॒जमं॑स्यसि भेष॒जङ्गवैं॑। भे॒ष॒जङ्गवे॒ गवैं॑ भेष॒जम्भैं॑ष॒जङ्गवेश्वा॒यायाश्वा॑य॒ गवैं॑ भेष॒जम्भैं॑ष॒जङ्गवेश्वा॑य[3]। गवेश्वा॒यायाश्वा॑य॒ गवे॒ गवेश्वा॑य॒ पुरुं॑षाय॒ पुरुं॑षा॒यायाश्वा॑य॒ गवे॒ गवेश्वा॑य॒ पुरुं॑षाय। अश्वा॑य॒

---

1. वस्यसः करत् यहाँ कविष्करत्कृधिषु(वा.प्रा.३.३२) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय सकार हो जाता है।

2. श्रेयसः करत् इस व्युत्क्रम पाठ में विसर्ग का सकार नहीं होगा। प्रकृत्या कखयोः पफयोश्च(वा.प्रा.३.११) इस सूत्र के अनुसार विसर्ग प्रकृतिभाव से रहेगा। जिह्वामूलीयोपध्मानीयौ शाकटायनः(वा.प्रा.३.१२) यह मत माध्यन्दिन शाखा के लिये नहीं है। ज्यो.पृ.२२४ में ऐसे स्थलों में वा.प्रा.३.११. की चरितार्थता को स्पष्ट किया गया है।

3. वा. प्रा. ४.७५. के अनुसार यहाँ गवे से परवर्ती अकार अभिनिधान को प्राप्त करता है।

पुरु॑षाय॒ पुरु॑षा॒याश्वा॒याश्वा॑य॒ पुरु॑षाय भेष॒जम्भे॑ष॒जम्पुरु॑षा॒याश्वा॒याश्वा॑य॒ पुरु॑षाय भेष॒जम्। पुरु॑षाय भेष॒जम्भे॑ष॒जम्पुरु॑षाय॒ पुरु॑षाय भेष॒जम्। भे॒ष॒जमिति॑ भेष॒जम् ॥ सु॒खम्मे॒षाय॑ मे॒षाय॑ सु॒खꣳ सु॒खम्मे॒षाय॑ मे॒ष्ष्यै मे॒ष्ष्यै मे॒षाय॑ सु॒खꣳ सु॒खम्मे॒षाय॑ मे॒ष्ष्यै। सु॒खमिति॑ सु॒ खम्। मे॒षाय॑ मे॒ष्ष्यै मे॒ष्ष्यै मे॒षाय॑ मे॒षाय॑ मे॒ष्ष्यै। मे॒ष्ष्याऽ इति॑ मे॒ष्ष्यै ॥५८॥

त्र्यम्ब॑कँ॒ᳺयजामहे यजाम॒हे त्र्य॒म्बक॒न्त्र्य॒म्बकँ॒ᳺयजामहे सु॒ग॒न्धिꣳ सु॑ग॒न्धिँ॒ᳺय॑जामहे॒ त्र्य॒म्बक॒न्त्र्य॒म्बकँ॒ᳺयजामहे सु॒ग॒न्धिम्। त्र्य॑म्बक॒मिति॒ त्रि अ॑म्बकम्। य॒जा॒म॒हे॒ सु॒ग॒न्धिꣳ सु॑ग॒न्धिँ॒ᳺय॑जामहे यजामहे सु॒ग॒न्धिम्पु॑ष्टि॒वर्द्ध॑न-म्पुष्टि॒वर्द्ध॑नꣳ सु॒ग॒न्धिँ॒ᳺय॑जामहे यजामहे सु॒ग॒न्धिम्पु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नम्। सु॒ग॒न्धिम्पु॑ष्टि॒व-र्द्ध॑नम्पुष्टि॒वर्द्ध॑नꣳ सु॒ग॒न्धिꣳ सु॑ग॒न्धिम्पु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नम्। सु॒ग॒न्धिमिति॑ सु॒ ग॒न्धिम्। पु॒ष्टि॒वर्द्ध॑न॒मिति॑ पुष्टि॒ व्वर्द्ध॑नम्॥ उ॒र्व्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑ना॒द् बन्ध॑नादुर्व्वा॒रु॒कमि॑वोर्व्वा॒रु॒-कमि॑व॒ बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्मृ॒त्योर्ब्बन्ध॑नादुर्व्वा॒रु॒कमि॑वोर्व्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नान्मृ॒त्योः। उ॒र्व्वा॒रु॒कमि॒वेत्यु॑र्व्वा॒रु॒कम् इ॑व। बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्मृ॒त्योर्ब्बन्ध॑ना॒द् बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्म्मु॑-क्षीय मुक्षीय मृ॒त्योर्ब्बन्ध॑ना॒द् बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्म्मु॑क्षीय[1]। मृ॒त्योर्म्मु॑क्षीय मुक्षीय मृ॒त्योर्मृ॒त्योर्म्मु॑क्षीय॒ मा मा मु॑क्षीय मृ॒त्योर्मृ॒त्योर्म्मु॑क्षीय॒ मा। मु॒क्षी॒य॒ मा मा मु॑क्षीय मुक्षीय॒ मामृता॑द॒मृता॒न्मा मु॑क्षीय मुक्षीय॒ मामृता॑त्। मामृता॑द॒मृता॒न्मा मामृता॑त्। अ॒मृता॒दित्य॒मृता॑त्॥ प॒ति॒वेद॑नमि॒तऽ इ॒तः पति॒-वेद॑नम्पति॒वेद॑नमि॒तो मु॑क्षीय मुक्षीये॒तः पति॒वेद॑नम्पति॒वेद॑नमि॒तो मु॑क्षीय। प॒ति॒वेद॑न॒मिति॑ पति॒ व्वेद॑नम्॥ इ॒तो मु॑क्षीय मुक्षीये॒तऽ इ॒तो मु॑क्षीय॒ मा मा

[1]. मृत्योर्मृत्योः यहाँ परं तु रेफहकाराभ्याम्(वा.प्रा.४.१०२) से रेफोत्तरवर्ती मकार के द्वित्व की प्राप्ति का निषेध ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११३) से होता है।

मुंक्षीयेतऽ इतो मुंक्षीय मा। मुक्षीय मा मा मुंक्षीय मुक्षीय मामुतोमुतो मा मुंक्षीय मुक्षीय मामुतंः। मामुतोमुतो मा मामुतंः। अमुतऽ इत्यमुतंः॥५९॥

एतत्ते तऽ एतदेतत्ते रुद्र रुद्र तऽ एतदेतत्ते रुद्र। ते रुद्र रुद्र ते ते रुद्रावसमं-वसङ्‌ रुंद्र ते ते रुद्रावसम्। रुद्रावसमंवसङ्‌ रुंद्र रुद्रावसन्तेन तेनांवसङ्‌ रुंद्र रुद्रावसन्तेनं। अवसन्तेन तेनांवसमंवसन्तेनं पुरः परस्तेनांवसमंवसन्तेनं पुरः। तेनं पुरः परस्तेन तेनं पुरो मूजंवतो मूजंवतः परस्तेन तेनं पुरो मूजंवतः। पुरो मूजंवतो मूजंवतः पुरः पुरो मूजंवतोत्यति मूजंवतः पुरः पुरो मूजंवतोतिं। मूजंवतोत्यति मूजंवतो मूजंवतोतींहीह्यति मूजंवतो मूजंवतोतींहि। मूजंवतऽ इति मूज व्रतः। अतींहीह्यत्यतींहि। इहीतींहि॥ अवंततधन्वा पिनांकावसः पिनांकावसोवंततधन्वावंततधन्वा पिनांकावसः कृत्तिंवासाः कृत्तिंवासाः पिनां-कावसोवंततधन्वावंततधन्वा पिनांकावसः कृत्तिंवासाः। अवंततधन्वेत्यवंतत धन्वा। पिनांकावसः कृत्तिंवासाः कृत्तिंवासाः पिनांकावसः पिनांकावसः कृत्तिंवासाऽ अहिंङ्सन्नहिंङ्सन्कृत्तिंवासाः पिनांकावसः पिनांकावसः कृत्तिंवा-साऽ अहिंङ्सन्। पिनांकावसऽ इति पिनांक अवसः। कृत्तिंवासाऽ अहिंङ्सन्न-हिंङ्सन्कृत्तिंवासाः कृत्तिंवासाऽ अहिंङ्सन्नो नोहिंङ्सन्कृत्तिंवासाः कृत्तिंवासाऽ अहिंङ्सन्नः। कृत्तिंवासाऽ इति कृत्तिं व्वासाः। अहिंङ्सन्नो नोहिंङ्सन्नहिंङ्सन्नः शिवः शिवो नोहिंङ्सन्नहिंङ्सन्नः शिवः। नः शिवः शिवो नों नः शिवोत्यतिं शिवो नों नः शिवोतिं[1]। शिवोत्यतिं शिवः शिवोतींहीह्यतिं शिवः शिवोतींहि। अतींहीह्यत्यतींहि। इहीतींहि॥६०॥

[1]. वा. प्रा. ४.६५. के अनुसार यहाँ शिवः से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है।

त्र्यायुषञ्जमदंग्नेर्ज्जमदंग्नेस्त्र्यायुषन्त्र्यांयुषञ्जमदंग्नेः कुश्श्यपंस्य कुश्श्यपंस्य जमदंग्नेस्त्र्यायुषन्त्र्यांयुषञ्जमदंग्नेः कुश्श्यपंस्य[2]। त्र्यायुषमितिं त्रि आयुषम्। जमदंग्नेः कुश्श्यपंस्य कुश्श्यपंस्य जमदंग्नेर्ज्जमदंग्नेः कुश्श्यपंस्य त्र्यायुषन्त्र्यांयुषङ्कुश्श्यपंस्य जमदंग्नेर्ज्जमदंग्नेः कुश्श्यपंस्य त्र्यायुषम्। जमदंग्नेरितिं जमत् अंग्नेः। कुश्श्यपंस्य त्र्यायुषन्त्र्यांयुषङ्कुश्श्यपंस्य कुश्श्यपंस्य त्र्यायुषम्। त्र्यायुषमितिं त्रि आयुषम्॥ यद्देवेषुं देवेषु यद्यद्देवेषुं त्र्यायुषन्त्र्यांयुषन्देवेषु यद्यद्देवेषुं त्र्यायुषम्। देवेषुं त्र्यायुषन्त्र्यांयुषन्देवेषुं देवेषुं त्र्यायुषन्तत्तत्र्यांयुषन्देवेषुं देवेषुं त्र्यायुषन्तत्। त्र्यायुषन्तत्तत्र्यांयुषन्त्र्यांयुषन्तन्नों नुस्तत्र्यांयुषन्त्र्यांयुषन्तन्नंः। त्र्यायुषमितिं त्रि आयुषम्। तन्नों नुस्ततन्नोंऽ अस्त्वस्तु नुस्ततन्नोंऽ अस्तु। नोऽ अस्त्वस्तु नो नोऽ अस्तु त्र्यायुषन्त्र्यांयुषमंस्तु नो नोऽ अस्तु त्र्यायुषम्। अस्तु त्र्यायुषन्त्र्यांयुषमंस्त्वस्तु त्र्यायुषम्। त्र्यायुषमितिं त्रि आयुषम्॥६१॥

शिवो नाम नामं शिवः शिवो नामांस्यसि नामं शिवः शिवो नामांसि। नामांस्यसि नाम नामांसि स्वधिंतिः स्वधिंतिरसि नाम नामांसि स्वधिंतिः। असि स्वधिंतिः स्वधिंतिरस्यसि स्वधिंतिस्ते ते स्वधिंतिरस्यसि स्वधिंतिस्ते। स्वधिंतिस्ते ते स्वधिंतिः स्वधिंतिस्ते पिता पिता ते स्वधिंतिः स्वधिंतिस्ते पिता। स्वधिंतिरिति स्व धिंतिः। ते पिता पिता तें ते पिता नमो नमंः पिता तें ते पिता नमंः। पिता नमो नमंः पिता पिता नमंस्ते ते नमंः पिता पिता नमंस्ते[2]। नमंस्ते ते नमो नमंस्तेऽ अस्त्वस्तु ते नमो नमंस्तेऽ अस्तु। तेऽ

---

[2]. स्वरपूर्वाश्च शचजाः समानपदे द्विरुक्ताः(वा.प्रा.४.१५८) इस सूत्र के अनुसार कश्श्यपस्य पद में शकार के द्विरुच्चारण के अनन्तर एक ही यकार होगा।

[2]. तथयोः सम् (वा. प्रा. ३.८) तकार एवं थकार परे रहते विसर्जनीय सकार हो जाता है।

अस्त्वस्तु ते तेऽ अस्तु मा मास्तुं ते तेऽ अस्तु मा। अस्तु मा मास्त्वंस्तु मा मां मा मास्त्वंस्तु मा मां। मा मां मा मा मा मां हिꣳसीर्हिꣳसीर्म्मा मा मा मां हिꣳसीः[1]। मा हिꣳसीर्हिꣳसीर्म्मा मा हिꣳसीः। हिꣳसीरिति हिꣳसीः॥ नि वंर्त्तयामि व्वर्त्तयामि नि नि वंर्त्तयाम्म्यायुंषऽ आयुंषे व्वर्त्तयामि नि नि वंर्त्तयाम्म्या-युंषे। व्वर्त्तयाम्म्यायुंषऽ आयुंषे व्वर्त्तयामि व्वर्त्तयाम्म्यायुंषेन्नाद्यांयान्नाद्यायायुंषे व्वर्त्तयामि व्वर्त्तयाम्म्यायुंषेन्नाद्यांय। आयुंषेन्नाद्यांयान्नाद्यायायुंषऽ आयुंषेन्नाद्यांय प्प्रजननाय प्प्रजननायान्नाद्यायायुंषऽ आयुंषेन्नाद्यांय प्प्रजननाय। अन्नाद्यांय प्प्रजननाय प्प्रजननायान्नाद्यांयान्नाद्यांय प्प्रजननाय रायो रायः प्प्रजननायान्ना-द्यांयान्नाद्यांय प्प्रजननाय रायः। अन्नाद्यायेत्यंन्न अद्यांय। प्रजननाय रायो रायः प्प्रजननाय प्प्रजननाय रायस्प्पोषांय पोषांय रायः प्प्रजननाय प्प्रजननाय रायस्प्पोषांय। प्रजननायेति प्प्र जननाय। रायस्प्पोषांय पोषांय रायो रायस्प्पोषांय सुप्प्रजास्त्वायं सुप्प्रजास्त्वाय पोषांय रायो रायस्प्पोषांय सुप्प्रजास्त्वायं। पोषांय सुप्प्रजास्त्वायं सुप्प्रजास्त्वाय पोषांय पोषांय सुप्प्रजास्त्वायं सुवीर्य्यांय सुवीर्य्यांय सुप्प्रजास्त्वाय पोषांय पोषांय सुप्प्रजास्त्वायं सुवीर्य्यांय[2]। सुप्प्रजास्त्वायं सुवीर्य्यांय सुवीर्य्यांय सुप्प्रजास्त्वायं सुप्प्रजास्त्वायं सुवीर्य्यांय। सुप्प्रजास्त्वायेति सुप्प्रजाः त्वायं। सुवीर्य्यायेति सु व्वीर्य्यांय॥६२॥

॥ इति माध्यन्दिनीयघनपाठे तृतीयोध्यायः॥

[1]. वा.प्रा.३.८१. के अनुसार हिꣳसीः इस पद में सकार प्रकृतिभाव से रहता है।

[2]. पादादौ च पदादौ च सँय्योगावग्रहेषु च। जः शब्द इति विज्ञेयो योऽन्यः स य इति स्मृतः॥ - या. शि. १५०

॥चतुर्थोध्यायः॥

हरिः ॐ॥ एदमिदमेदमगन्मागन्मेदमेदमगन्म[1]। इदमगन्मागन्मेदमिदमगन्म देवयजनन्देवयजनमगन्मेदमिदमगन्म देवयजनम्। अगन्म देवयजनन्देवयजनमगन्मागन्म देवयजनम्पृथिव्याः पृथिव्या देवयजनमगन्मागन्म देवयजनम्पृथिव्याः। देवयजनम्पृथिव्याः पृथिव्या देवयजनन्देवयजनम्पृथिव्या यत्र यत्र पृथिव्या देवयजनन्देवयजनम्पृथिव्या यत्र। देवयजनमिति देव यजनम्। पृथिव्या यत्र यत्र पृथिव्याः पृथिव्या यत्र देवासो देवासो यत्र पृथिव्याः पृथिव्या यत्र देवासः। यत्र देवासो देवासो यत्र यत्र देवासोऽ अजुषन्ताजुषन्त देवासो यत्र यत्र देवासोऽ अजुषन्त[2]। देवासोऽ अजुषन्ताजुषन्त देवासो देवासोऽ अजुषन्त व्विश्वे व्विश्वेजुषन्त देवासो देवासोऽ अजुषन्त व्विश्वे। अजुषन्त व्विश्वे व्विश्वेजुषन्ताजुषन्त व्विश्वे। व्विश्वऽ इति विश्वे॥ ऋक्क्सामाभ्याꣳ सन्तरन्तः सन्तरन्तऽ ऋक्क्सामाभ्यामृक्क्सामाभ्याꣳ सन्तरन्तो यजुर्भिर्य्यजुर्भिः सन्तरन्तऽ ऋक्क्सामाभ्यामृक्क्सामाभ्याꣳ सन्तरन्तो यजुर्भिः। ऋक्क्सामाभ्यामित्यृक् सामाभ्याम्। सन्तरन्तो यजुर्भिर्य्यजुर्भिः सन्तरन्तः सन्तरन्तो यजुर्भी रायो रायो यजुर्भिः सन्तरन्तः सन्तरन्तो यजुर्भी रायः। सन्तरन्तऽ इति सम् तरन्तः। यजुर्भी रायो रायो यजुर्भिर्य्यजुर्भी रायस्प्पोषेण पोषेण रायो यजुर्भिर्य्यजुर्भी रायस्प्पोषेण। यजुर्भिरिति यजुः भिः। रायस्प्पोषेण पोषेण रायो रायस्प्पोषेण सꣳ सम्पोषेण रायो रायस्प्पोषेण सम्। पोषेण सꣳ सम्पोषेण पोषेण समिषेषा सम्पोषेण पोषेण समिषा। समिषेषा सꣳ समिषा मदेम मदेमेषा

---

1. वा.प्रा.४.१८२. में क्रमपाठ में अपृक्त पद(आ) मध्य में आने पर त्रिक्रम का विधान है, मन्त्र के आदि में तो दो पदों का ही क्रम होगा, यही स्थिति जटा में होगी, घन में तीन पदों का क्रम होगा- आ+इदम्+अगन्म।

2. वा.प्रा.४.८५. के अनुसार देवासः से सम्बन्धित ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

सꣳ समिषा मंदेम। इषा मंदेम मदेमेषेषा मंदेम। मदेमेतिं मदेम॥ इमाऽ आपऽ आपंऽ इमाऽ इमाऽ आपः शꣳ शमापंऽ इमाऽ इमाऽ आपः शम्। आपः शꣳ शमापऽ आपः शमुं मे मऽ उ शमापऽ आपः शमुं मे। शमुं मे मऽ उ शꣳ शमुं मे सन्तु सन्तु मऽ उ शꣳ शमुं मे सन्तु। ॐऽ इत्यूँ। मे सन्तु सन्तु मे मे सन्तु देवीर्देवीः संन्तु मे मे सन्तु देवीः। सन्तु देवीर्देवीः संन्तु सन्तु देवीरोषंधऽ ओषंधे देवीः संन्तु सन्तु देवीरोषंधे। देवीरोषंधऽ ओषंधे देवीर्देवीरोषंधे त्रायंस्व त्रायस्वौ-षंधे देवीर्देवीरोषंधे त्रायंस्व। ओषंधे त्रायंस्व त्रायस्वौषंधऽ ओषंधे त्रायंस्व स्वधिंते स्वधिंते त्रायस्वौषंधऽ ओषंधे त्रायंस्व स्वधिंते। त्रायंस्व स्वधिंते स्वधिंते त्रायंस्व त्रायंस्व स्वधिंते मा मा स्वधिंते त्रायंस्व त्रायंस्व स्वधिंते मा[1]। स्वधिंते मा मा स्वधिंते स्वधिंते मैनंमेनम्मा स्वधिंते स्वधिंते मैनंम्। स्वधिंतऽ इति स्व धिंते। मैनंमेनम्मा मैनंꣳ हिꣳसीर्हिꣳसीरेनम्मा मैनंꣳ हिꣳसीः। एनꣳ हिꣳसीर्हिꣳ-सीरेनमेनꣳ हिꣳसीः। हिꣳसीरितिं हिꣳसीः॥१॥

आपोंऽ अस्म्मानस्म्मानापऽ आपोंऽ अस्म्मान्मातरों मातरोस्म्मानापऽ आपोंऽ अस्म्मान्मातरंः[2]। अस्म्मान्मातरों मातरोस्म्मानस्म्मान्मातरंः शु-न्धयन्तु शुन्धयन्तु मातरोस्म्मानस्म्मान्मातरंः शुन्धयन्तु। मातरंः शुन्धयन्तु शुन्धयन्तु मातरों मातरंः शुन्धयन्तु घृतेनं घृतेनं शुन्धयन्तु मातरों मातरंः शुन्धयन्तु घृतेनं। शुन्धयन्तु घृतेनं घृतेनं शुन्धयन्तु शुन्धयन्तु घृतेनं नो नो घृतेनं शुन्धयन्तु शुन्धयन्तु घृतेनं नः। घृतेनं नो नो घृतेनं घृतेनं नो घृतप्प्वो घृतप्प्वो नो घृतेनं घृतेनं नो घृतप्प्वः। नो घृतप्प्वो घृतप्प्वो नो नो घृतप्प्वः पुनन्तु पुनन्तु घृतप्प्वो नो नो घृतप्प्वः पुनन्तु। घृतप्प्वः पुनन्तु पुनन्तु

1. वा. प्रा. २.४. के अनुसार उत्तम पुरुष के अर्थ में विद्यमान मा पद ही अनुदात होता है। यहाँ निषेधार्थक होने से मा पद उदात है।

2. वा.प्रा.४.८५. के अनुसार आपो अस्मान् यहाँ ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

घृतप्प्वो घृतप्प्वः पुनन्तु। घृतप्प्वऽ इति घृत प्वः। पुनन्त्विति पुनन्तु॥ विश्वऽ हि हि विश्वँविश्वऽ हि रिप्रऽ रिप्रऽ हि विश्वँविश्वऽ हि रिप्रम्। हि रिप्रऽ रिप्रऽ हि हि रिप्रम्प्रवहन्ति प्रवहन्ति रिप्रऽ हि हि रिप्रम्प्रवहन्ति। रिप्रम्प्रवहन्ति प्रवहन्ति रिप्रऽ रिप्रम्प्रवहन्ति देवीर्देवीः प्रवहन्ति रिप्रऽ रिप्रम्प्रवहन्ति देवीः। प्रवहन्ति देवीर्देवीः प्रवहन्ति प्रवहन्ति देवीरुदुद्देवीः प्रवहन्ति प्रवहन्ति देवीरुत्। प्रवहन्तीति प्र वहन्ति। देवीरुदुद्दे-वीर्देवीरुदिदिदुद्देवीर्देवीरुदित्। उदिदिदुदुदिदाभ्यऽ आभ्यऽ इदुदुदिदाभ्यः। इदाभ्यऽ आभ्यऽ इदिदाभ्यः शुचिः शुचिराभ्यऽ इदिदाभ्यः शुचिः। आभ्यः शुचिः शुचिराभ्यऽ आभ्यः शुचिरा पूतः पूतऽ आ शुचिराभ्यऽ आभ्यः शुचिरा पूतः। शुचिरा पूतः पूतऽ आ शुचिः शुचिरा पूतऽ एम्म्येमि पूतऽ आ शुचिः शुचिरा पूतऽ एमि। आ पूतः[1]। पूतऽ एम्म्येमि पूतः पूतऽ एमि। एमीत्येमि॥ दीक्षातपसोस्तनूस्तनूर्दीक्षातपसोर्दीक्षातपसोस्तनूरस्यसि तनूर्दीक्षातपसोर्दीक्षातपसोस्तनूरसि[2]। तनूरस्यसि तनूस्तनूरसि तान्तामसि तनूस्तनूरसि ताम्। असि तान्तामस्यसि तान्त्वा त्वा तामस्यसि तान्त्वा। तान्त्वा त्वा तान्तान्त्वा शिवाँ शिवान्त्वा तान्तान्त्वा शिवाम्। त्वा शिवाँ शिवान्त्वा त्वा शिवाँ शग्ग्माँ शग्ग्माँ शिवान्त्वा त्वा शिवाँ शग्ग्माम्। शिवाँ शग्ग्माँ शग्ग्माँ शिवाँ शिवाँ शग्ग्माम्परि परि शग्ग्माँ शिवाँ शिवाँ शग्ग्माम्परि। शग्ग्माम्परि परि शग्ग्माँ शग्ग्माम्परि दधे दधे परि शग्ग्माँ शग्ग्माम्परि दधे। परि दधे दधे परि परि दधे भद्रम्भद्रन्दधे परि परि दधे

---

[1]. आ पूतजातयोः (वा. प्रा. ६.६) पूत पद एवं जात पद परे होने पर आ उपसर्ग अनुदात नहीं होता है।

[2]. वा.प्रा.२.४८. के अनुसार सम्बोधन न होने पर देवताद्वन्द्व द्विरुदात होते हैं, यहाँ दीक्षातपसोः पद देवताद्वन्द्वात्मक नहीं है, अतः द्विरुदात नहीं होगा।

भद्रम्। दधे भद्रम्भद्रन्दंधे दधे भद्रँव्वर्णँव्वर्णंम्भद्रन्दंधे दधे भद्रँव्वर्णंम्। भद्रँव्वर्णं-व्वर्णंम्भद्रम्भद्रँव्वर्णम्पुष्यन्पुष्यन्व्वर्णंम्भद्रम्भद्रँव्वर्णम्पुष्यंन्। व्वर्णम्पुष्य-न्पुष्यन्व्वर्णँव्वर्णम्पुष्यंन्। पुष्यन्निति पुष्यंन्॥२॥

वृत्रस्यांस्यसि वृत्रस्यं वृत्रस्यांसि कुनीनंकः कुनीनंकोसि वृत्रस्यं वृत्र-स्यांसि कुनीनंकः। असि कुनीनंकः कुनीनंकोस्यसि कुनीनंकश्चक्षुर्दाश्चंक्षु-र्दाः कुनीनंकोस्यसि कुनीनंकश्चक्षुर्दाः[1]। कुनीनंकश्चक्षुर्दाश्चंक्षुर्दाः कुनी-नंकः कुनीनंकश्चक्षुर्दाऽ अंस्यसि चक्षुर्दाः कुनीनंकः कुनीनंकश्चक्षुर्दाऽ अंसि। चक्षुर्दाऽ अंस्यसि चक्षुर्दाश्चंक्षुर्दाऽ अंसि चक्षुश्चक्षुंरसि चक्षुर्दाश्चं-क्षुर्दाऽ अंसि चक्षुंः। चक्षुर्दाऽ इतिं चक्षुः दाः। असि चक्षुश्चक्षुंरस्यसि चक्षुंर्म्मे मे चक्षुंरस्यसि चक्षुंर्म्मे। चक्षुंर्म्मे मे चक्षुश्चक्षुंर्म्मे देहि देहि मे चक्षुश्चक्षुंर्म्मे देहि। मे देहि देहि मे मे देहि। देहीतिं देहि॥३॥

चित्पतिंर्म्मा मा चित्पतिंश्चित्पतिंर्म्मा पुनातु पुनातु मा चित्पतिंश्चित्प-तिंर्म्मा पुनातु। चित्पतिरितिं चित् पतिंः। मा पुनातु पुनातु मा मा पुनातु व्वाक्पतिंर्व्वाक्पतिंः पुनातु मा मा पुनातु व्वाक्पतिंः। पुनातु व्वाक्पतिंर्व्वाक्पतिंः पुनातु पुनातु व्वाक्पतिंर्द्देवो देवो व्वाक्पतिंः पुनातु पुनातु व्वाक्पतिंर्द्देवः। व्वाक्पतिं-र्द्देवो देवो व्वाक्पतिंर्व्वाक्पतिंर्द्देवः संविता संविता देवो व्वाक्पतिंर्व्वाक्पतिंर्द्देवः संविता। व्वाक्पतिरितिं वाक् पतिंः। देवः संविता संविता देवो देवः संविता। सवितेतिं सविता॥ तस्यं ते ते तस्य तस्यं ते पवित्रपते पवित्रपते ते तस्य तस्यं ते पवित्र-पते। ते पवित्रपते पवित्रपते ते ते पवित्रपते पवित्रंपूतस्य पवित्रंपूतस्य पवित्रपते

[1]. विसर्जनीयः(वा.प्रा.३.६) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र चछयोः शम्(वा.प्रा.३.७) के अनुसार कनीनकः चक्षुर्दाः यहाँ विसर्ग शकार होता है।

ते ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य[1]। पवित्रपते पवित्रपूतस्य पवित्रपूतस्य पवित्रपते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामो यत्कामः पवित्रपूतस्य पवित्रपते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः। पवित्रपतऽ इति पवित्र पते। पवित्रपूतस्य यत्कामो यत्कामः पवित्रपूतस्य पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने पुने यत्कामः पवित्रपूतस्य पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने। पवित्रपूतस्येति पवित्र पूतस्य। यत्कामः पुने पुने यत्कामो यत्कामः पुने ततत्पुने यत्कामो यत्कामः पुने तत्। यत्कामऽ इति यत् कामः। पुने ततत्पुने पुने तच्छकेयछ शकेयन्तत्पुने पुने तच्छकेयम्[2]। तच्छकेयछ शकेयन्ततच्छकेयम्। शकेयमिति शकेयम्॥४॥

आ वो वऽ आ वो देवासो देवासो वऽ आ वो देवासः। वो देवासो देवासो वो वो देवासऽ ईमहऽ ईमहे देवासो वो वो देवासऽ ईमहे। देवासऽ ईमहऽ ईमहे देवासो देवासऽ ईमहे वामँवाममीमहे देवासो देवासऽ ईमहे वामम्। ईमहे वामँ-वाममीमहऽ ईमहे वामम्प्रयति प्प्रयति वाममीमहऽ ईमहे वामम्प्रयति। वामम्प्र-यति प्प्रयति वामँवामम्प्रयत्त्यद्धरे द्धरे प्प्रयति वामँवामम्प्रयत्त्यद्धरे। प्रयत्त्यद्धरे-द्धरे प्प्रयति प्प्रयत्त्यद्धरे। प्रयतीति प्प्र यति। अद्धरऽ इत्त्यद्धरे॥ आ वो वऽ आ वो देवासो देवासो वऽ आ वो देवासः। वो देवासो देवासो वो वो देवासऽ आशिषऽ आशिषो देवासो वो वो देवासऽ आशिषः[3]। देवासऽ आशिषऽ आशिषो देवासो देवासऽ आशिषो यज्ज्ञियासो यज्ज्ञियासऽ आशिषो देवासो देवासऽ आशिषो यज्ज्ञियासः। आशिषो यज्ज्ञियासो यज्ज्ञियासऽ आशिषऽ आशिषो यज्ज्ञियासो हवामहे हवामहे यज्ज्ञियासऽ आशिषऽ आशिषो यज्ज्ञियासो हवामहे। आशिषऽ

---

1. वा. प्रा. २.१९. के अनुसार पवित्रपते पवित्रपूतस्य यहाँ एक पद के समान स्वर नहीं है।

2. तत् शकेयम् यहाँ शकारे च(वा.प्रा.४.९७) इस सूत्र से तकार चकार तथा परश्चास्पर्शपरश्छम्(वा.प्रा.४.९८) से शकार छकार होता है।

3. वो वान्ते त्वदर्थे (वा. प्रा. २.५) युष्मदर्थ में वर्तमान वः पद अनुदात्त होता है।

इत्या॒ शिषः॑। य॒ज्ञिया॑सो हवामहे हवामहे य॒ज्ञिया॑सो य॒ज्ञिया॑सो हवामहे। ह॒वा॒म॒ह॒ऽ इति॑ हवामहे॥५॥

स्वाहा॑ य॒ज्ञँय्य॒ज्ञꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ य॒ज्ञम्मन॑सो॒ मन॑सो य॒ज्ञꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ य॒ज्ञम्मन॑सः। य॒ज्ञम्मन॑सो॒ मन॑सो य॒ज्ञँय्य॒ज्ञम्मन॑सऽ उ॒रोरु॒रोर्म्मन॑सो य॒ज्ञँय्य॒ज्ञम्मन॑सऽ उ॒रोः। मन॑सऽ उ॒रोरु॒रोर्म्मन॑सो॒ मन॑सऽ उ॒रोर॒न्तरि॑क्षाद॒न्तरि॑क्षादु॒रोर्म्मन॑सो॒ मन॑सऽ उ॒रोर॒न्तरि॑क्षात्। उ॒रोर॒न्तरि॑क्षाद॒न्तरि॑क्षादु॒रोरु॒रोर॒न्तरि॑क्षा॒द्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒न्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑म॒न्तरि॑क्षादु॒रोरु॒रोर॒न्तरि॑क्षा॒द्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑म्[1]। अ॒न्तरि॑क्षा॒द्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒न्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑म॒न्तरि॑क्षाद॒न्तरि॑क्षा॒द्द्यावा॑पृथि॒वीभ्याँ॒व्वाता॒द्वाता॒द्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑म॒न्तरि॑क्षाद॒न्तरि॑क्षा॒द्द्यावा॑पृथि॒वीभ्याँ॒व्वाता॑त्। द्यावा॑पृथि॒वीभ्याँ॒व्वाता॒द्वाता॒द्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒न्द्यावा॑पृथि॒वीभ्याँ॒व्वाता॒दा र॑भे रभ॒ऽ आ वाता॒द्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒न्द्यावा॑पृथि॒वीभ्याँ॒व्वाता॒दा र॑भे। व्वाता॒दा र॑भे रभ॒ऽ आ वाता॒द्वाता॒दा र॑भे॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ रभ॒ऽ आ वाता॒द्वाता॒दा र॑भे॒ स्वाहा॑। आ र॑भे। र॒भे॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ रभे रभे॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥६॥

आकू॑त्यै प्प्र॒युजे॑ प्प्र॒युज॒ऽ आकू॑त्या॒ऽ आकू॑त्यै प्प्र॒युजे॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ प्प्र॒युज॒ऽ आकू॑त्या॒ऽ आकू॑त्यै प्प्र॒युजे॒ग्ग्नये॑। आकू॑त्या॒ऽ इत्या कू॑त्यै। प्र॒युजे॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ प्प्र॒युजे॑ प्प्र॒युजे॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्ग्नये॑ प्प्र॒युजे॑ प्प्र॒युजे॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॑। प्र॒युज॒ऽ इति॑ प्प्र॒ युजे॑। अ॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॑ मे॒धायै॑ मे॒धायै॒ स्वाहा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॑ मे॒धायै॑। स्वाहा॑ मे॒धायै॑ मे॒धायै॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ मे॒धायै॒ मन॑से॒ मन॑से मे॒धायै॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ मे॒धायै॒ मन॑से। मे॒धायै॒ मन॑से॒ मन॑से मे॒धायै॑ मे॒धायै॒ मन॑से दी॒क्षायै॑ दी॒क्षायै॒ मन॑से मे॒धायै॑ मे॒धायै॒ मन॑से दी॒क्षायै॑। मन॑से दी॒क्षायै॑ दी॒क्षायै॒ मन॑से॒

1. वा.प्रा.२.४७. के अनुसार द्यावापृथिवी पद द्विरुदात्त है।

मन॑से दी॒क्षायै॒ तप॑से॒ तप॑से दी॒क्षायै॒ मन॑से॒ मन॑से दी॒क्षायै॒ तप॑से। दी॒क्षायै॒ तप॑से॒ तप॑से दी॒क्षायै॑ दी॒क्षायै॒ तप॑से॒ सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै॒ तप॑से दी॒क्षायै॑ दी॒क्षायै॒ तप॑से॒ सर॑स्वत्यै। तप॑से॒ सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै॒ तप॑से॒ तप॑से॒ सर॑स्वत्यै पू॒ष्णे पू॒ष्णे सर॑स्वत्यै॒ तप॑से॒ तप॑से सर॑स्वत्यै पू॒ष्णे। सर॑स्वत्यै पू॒ष्णे पू॒ष्णे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै पू॒ष्णे॒ग्ग्नये॒ग्ग्नयै॑ पू॒ष्णे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै पू॒ष्णे॒ग्ग्नयै॑[1]। पू॒ष्णे॒ग्ग्नये॒ग्ग्नयै॑ पू॒ष्णे पू॒ष्णे॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्ग्नयै॑ पू॒ष्णे पू॒ष्णे॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॑। अ॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥ आपो॑ देवीर्द्देवी॒राप॒ऽ आपो॑ देवीर्बृहतीर्बृहतीर्द्देवी॒राप॒ऽ आपो॑ देवीर्बृहतीः। दे॒वी॒र्बृ॒ह॒तीर्बृ॒ह॒ती॒र्द्दे॒वी॒र्द्दे॒वी॒र्बृ॒ह॒ती॒र्व्विश्श्व॒श॒म्भु॒वो॒ व्विश्श्व॒श॒म्भु॒वो॒ बृ॒ह॒ती॒र्द्दे॒वी॒र्द्दे॒वी॒र्बृ॒ह॒ती॒र्व्विश्श्व॒श॒म्भु॒वः। बृ॒ह॒ती॒र्व्विश्श्व॒श॒म्भु॒वो॒ व्विश्श्व॒श॒म्भु॒वो॒ बृ॒ह॒ती॒र्बृ॒ह॒ती॒र्व्विश्श्व॒श॒म्भु॒वो॒ द्यावा॑पृथिवी॒ द्यावा॑पृथिवी व्विश्श्वशम्भुवो बृहतीर्बृहतीर्व्विश्श्वशम्भुवो॒ द्यावा॑पृथिवी। व्विश्श्व॒श॒म्भु॒वो॒ द्यावा॑पृथिवी॒ द्यावा॑पृथिवी व्विश्श्वशम्भुवो व्विश्श्वशम्भुवो॒ द्यावा॑पृथिवी॒ऽ उर॒ऽ उरो॒ द्यावा॑पृथिवी व्विश्श्वशम्भुवो व्विश्श्वशम्भुवो॒ द्यावा॑पृथिवी॒ऽ उरो॑। व्विश्श्व॒श॒म्भु॒व॒ऽ इति॑ विश्श्व शम्भुवः। द्यावा॑पृथिवी॒ऽ उर॒ऽ उरो॒ द्यावा॑पृथिवी॒ द्यावा॑पृथिवी॒ऽ उरो॑ऽ अन्तरिक्षान्तरि॒क्षोरो॒ द्यावा॑पृथिवी॒ द्यावा॑पृथिवी॒ऽ उरो॑ऽ अन्तरिक्ष। द्यावा॑पृथिवी॒ऽ इति॒ द्यावा॑पृथिवी। उरो॑ऽ अन्तरिक्षान्तरि॒क्षोर॒ऽ उरो॑ऽ अन्तरिक्ष। उरो॒ऽ इत्युरो॑। अ॒न्त॒रि॒क्षेत्य॑न्तरिक्ष॥ बृह॒स्प्पत॑ये ह॒विषा॑ ह॒विषा॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये ह॒विषा॑ व्विधेम व्विधेम ह॒विषा॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये ह॒विषा॑ व्विधेम। ह॒विषा॑ व्विधेम व्विधेम ह॒विषा॑ ह॒विषा॑ व्वि॒धे॒म॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ व्विधेम ह॒विषा॑ ह॒विषा॑ व्विधेम॒ स्वाहा॑। व्वि॒धे॒म॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ व्विधेम व्विधेम॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥७॥

1. पू॒ष्णे॒ग्ग्नयै॑ यहाँ पर वा.प्रा.१.१२४. के अनुसार उदात ग्न बाद में होने पर हाथ को अनुदात्तवत् ले जाकर फिर प्रकृष्ट रूप से नीचे ले जाते हैं।

व्विश्श्वो॑ दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॒ व्विश्श्वो॒ व्विश्श्वो॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुर्न्ने॒तुर्दे॒वस्य॒ व्विश्श्वो॒ व्विश्श्वो॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुः। दे॒वस्य॑ ने॒तुर्न्ने॒तुर्दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुर्म्मर्त्तो॒ मर्त्तो॑ ने॒तुर्दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुर्म्मर्त्तः॑। ने॒तुर्म्मर्त्तो॒ मर्त्तो॑ ने॒तुर्न्ने॒तुर्म्मर्त्तो॑ ब्बुरीत ब्बुरीत॒ मर्त्तो॑ ने॒तुर्न्ने॒तुर्म्मर्त्तो॑ ब्बुरीत[1]। मर्त्तो॑ ब्बुरीत ब्बुरीत॒ मर्त्तो॒ मर्त्तो॑ ब्बुरीत स॒क्ख्यꣳ स॒क्ख्यँ॑ब्बुरीत॒ मर्त्तो॒ मर्त्तो॑ ब्बुरीत स॒क्ख्यम्। ब्बु॒री॒त॒ स॒क्ख्यꣳ स॒क्ख्यँ॑ब्बुरीत ब्बुरीत स॒क्ख्यम्। स॒क्ख्यमिति॑ स॒क्ख्यम्॥ व्विश्श्वो॑ रा॒ये रा॒ये व्विश्श्वो॒ व्विश्श्वो॑ रा॒यऽ इ॑षुद्ध्यतीषुद्ध्यति रा॒ये व्विश्श्वो॒ व्विश्श्वो॑ रा॒यऽ इ॑षुद्ध्यति। रा॒यऽ इ॑षुद्ध्यतीषुद्ध्यति रा॒ये रा॒यऽ इ॑षुद्ध्यति द्यु॒म्नन्द्यु॒म्नमि॑षुद्ध्यति रा॒ये रा॒यऽ इ॑षुद्ध्यति द्यु॒म्नम्। इ॒षु॒द्ध्य॒ति॒ द्यु॒म्नन्द्यु॒म्नमि॑षुद्ध्यतीषुद्ध्यति द्यु॒म्नँ॑ब्वृणीत ब्वृणीत द्यु॒म्नमि॑षुद्ध्यतीषुद्ध्यति द्यु॒म्नँ॑ब्वृणीत। द्यु॒म्नँ॑ब्वृणीत ब्वृणीत द्यु॒म्नन्द्यु॒म्नँ॑ब्वृणीत पु॒ष्ष्यसे॑ पु॒ष्ष्यसे॑ ब्वृणीत द्यु॒म्नन्द्यु॒म्नँ॑ब्वृणीत पु॒ष्ष्यसे॑। ब्वृ॒णी॒त॒ पु॒ष्ष्यसे॑ पु॒ष्ष्यसे॑ ब्वृणीत ब्वृणीत पु॒ष्ष्यसे॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ पु॒ष्ष्यसे॑ ब्वृणीत ब्वृणीत पु॒ष्ष्यसे॒ स्वाहा॑। पु॒ष्ष्यसे॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ पु॒ष्ष्यसे॑ पु॒ष्ष्यसे॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥८॥

ऋक्क्सा॒मयोः॒ शिल्प्पे॒ शिल्प्पे॑ऽ ऋक्क्सा॒मयो॑र्ऋक्क्सा॒मयोः॒ शिल्प्पे॑ स्त्थ स्त्थ॒ः शिल्प्पे॑ऽ ऋक्क्सा॒मयो॑र्ऋक्क्सा॒मयोः॒ शिल्प्पे॑ स्त्थः[2]। ऋक्क्सा॒मयो॒रित्त्यृ॑क् सा॒मयोः॑। शिल्प्पे॑ स्त्थ स्त्थ॒ः शिल्प्पे॒ शिल्प्पे॑ स्त्थ॒स्त्ते ते स्त्थ॒ः शिल्प्पे॒ शिल्प्पे॑ स्त्थ॒स्त्ते। शिल्प्पे॒ऽ इति॒ शिल्प्पे॑। स्त्थ॒स्त्ते ते स्त्थ॑ स्त्थ॒स्त्ते वाँ॑ब्वा॒न्ते स्त्थ॑ स्त्थ॒स्त्ते वा॑म्। ते वाँ॑ब्वा॒न्ते ते वा॒मा र॑भे रभ॒ऽ आ वा॒न्ते ते वा॒मा र॑भे। तेऽ इति॒ ते। ब्वा॒मा र॑भे रभ॒ऽ आ वाँ॑ब्वा॒मा र॑भे॒ ते ते र॑भ॒ऽ आ वाँ॑ब्वा॒मा र॑भे॒ ते। आ र॑भे। र॒भे॒ ते ते र॑भे

---

[1]. मर्त्तो वुरीत मर्त्तेष्वग्निः परो मर्त्तस्ते मर्त्त इति च (वा. प्रा. ४.१६२) इस सूत्र के अनुसार यहाँ मर्त्त पद यकारसहित नहीं है।

[2]. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि (वा. प्रा. २.४८) सम्बोधन न होने पर देवताद्वन्द्व द्विरुदात्त होते हैं। ऋक्क्साम॒यो॑ यह देवताद्वन्द्व नहीं है, अतः यह पद द्विरुदात्त नहीं है।

रभे॒ ते मा॑ मा॒ ते र॑भे रभे॒ ते मा॑। ते मा॑ मा॒ ते ते मा॑ पातम्पातम्मा॒ ते ते मा॑ पातम्। तेऽ इति॒ ते। मा॒ पा॒त॒म्पा॒त॒म्मा॒ मा॒ पा॒त॒मास्यास्या पा॑तम्मा मा पात॒मास्य। पा॒त॒मास्यास्या पा॑तम्पात॒मास्य य॒ज्ञस्य॑ य॒ज्ञस्या॒स्या पा॑तम्पात॒मास्य य॒ज्ञस्य॑। आस्य। अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ य॒ज्ञस्या॒स्यास्य य॒ज्ञस्यो॒दृचं॑ऽ उ॒दृचौ॑ य॒ज्ञस्या॒स्यास्य य॒ज्ञस्यो॒दृचं॑÷।[1] य॒ज्ञस्यो॒दृचं॑ऽ उ॒दृचौ॑ य॒ज्ञस्य॑ य॒ज्ञस्यो॒दृचं॑÷। उ॒दृच॒ऽ इत्यु॒त् ऋचं॑÷॥ शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑सि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑सि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑सि॒ शर्म्म॑। अ॒सि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॑ मे मे॒ शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॑ मे। शर्म्म॑ मे मे॒ शर्म्म॒ शर्म्म॑ मे यच्छ यच्छ मे॒ शर्म्म॒ शर्म्म॑ मे यच्छ। मे॒ य॒च्छ॒ य॒च्छ॒ मे॒ मे॒ य॒च्छ॒। य॒च्छेति॑ यच्छ॥९॥

ऊर्ग्गा॑स्यस्यू॒र्ग्गूर्ग्गा॑स्याङ्गिर॒स्या॒ङ्गिर॒स्यु॒स्यूर्ग्गूर्ग्गा॑स्याङ्गिर॒सी। अ॒स्या॒ङ्गिर॒स्या॒ङ्गिर॒स्य॒स्यस्याङ्गिर॒स्यूर्ण्णा॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ण्णा॑म्म्रदाऽ आङ्गिर॒स्य॒स्यस्याङ्गिर॒स्यूर्ण्णा॑म्म्रदाः। आ॒ङ्गि॒र॒स्यूर्ण्णा॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ण्णा॑म्म्रदाऽ आङ्गिर॒स्या॒ङ्गिर॒स्यूर्ण्णा॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ज्ज॒मू॒र्ज्ज॒मूर्ण्णा॑म्म्रदाऽ आङ्गिर॒स्या॒ङ्गिर॒स्यूर्ण्णा॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ज्ज॑म्। ऊर्ण्णा॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मूर्ण्णा॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ण्णा॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ज्ज॒म्मयि॒ मय्यू॒र्ज्ज॒मूर्ण्णा॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ण्णा॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ज्ज॒म्मयि॑। ऊर्ण्णा॑म्म्रदा॒ऽ इत्यू॑र्ण्ण॑ म्रदाः। ऊर्ज्ज॒म्मयि॒ मय्यूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒म्मयि॑ धेहि धेहि॒ मय्यूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒म्मयि॑ धेहि। मयि॑ धेहि धेहि॒ मयि॒ मयि॑ धेहि। धे॒हीति॑ धेहि॥ सोम॑स्य नी॒विर्न्नी॒विः सोम॑स्य॒ सोम॑स्य नी॒विर॑स्यसि नी॒विः सोम॑स्य॒ सोम॑स्य नी॒विर॑सि। नी॒विर॑स्यसि नी॒विर्न्नी॒विर॑सि॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॑रसि नी॒विर्न्नी॒विर॑सि॒ व्विष्ण्णोः॑। अ॒सि॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॑रस्यसि॒ व्विष्ण्णो॒ः शर्म्म॒ शर्म्म॒ व्विष्ण्णो॑रस्यसि॒ व्विष्ण्णो॒ः शर्म्म॑। व्विष्ण्णो॒ः शर्म्म॒ शर्म्म॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॒ः शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॒ः शर्म्मा॑सि। शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑सि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑सि॒

[1]. वा.प्रा.२.६२. के अनुसार यज्ञस्य बाद में होने से अस्य पद अन्तोदात्त होता है।

शर्म॒ शर्म्मा॑सि॒ शर्म्मं॑। अ॒सि॒ शर्म॒ शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य॒ शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म॒ यज॑मानस्य। शर्म॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य॒ शर्म॒ शर्म॒ यज॑माने॒स्येन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ यज॑मानस्य॒ शर्म॒ शर्म॒ यज॑मान॒स्येन्द्र॑स्य। यज॑मान॒-स्येन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मान॒स्येन्द्र॑स्य॒ योनि॒र्य्योनि॒रिन्द्र॑स्य॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मान॒स्येन्द्र॑स्य॒ योनिः॑। इन्द्र॑स्य॒ योनि॒र्य्योनि॒रिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ योनि॑रस्यसि॒ योनि॒रिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ योनि॑रसि। योनि॑रस्यसि॒ योनि॒र्य्योनि॑रसि सुस॒स्याः सु॑स॒स्याऽ अ॑सि॒ योनि॒र्य्योनि॑रसि सुस॒स्याः। अ॒सि॒ सुस॒स्याः सु॑स॒स्याऽ अ॑स्यसि सुस॒स्याः कृ॒षीः कृ॒षीः सु॑स॒स्याऽ अ॑स्यसि सुस॒स्याः कृ॒षीः। सुस॒स्याः कृ॒षीः कृ॒षीः सु॑स॒स्याः सु॑स॒स्याः कृ॒षीस्कृ॑धि कृधि कृ॒षीः सु॑स॒स्याः सु॑स॒स्याः कृ॒षीस्कृ॑धि[1]। सुस॒स्याऽ इति॑ सु स॒स्याः। कृ॒षीस्कृ॑धि कृधि कृ॒षीः कृ॒षीस्कृ॑धि। कृधीति॑ कृधि॥ उच्छ्र॑यस्व श्श्रय॒स्वोदुच्छ्र॑यस्व व्वनस्प्पते व्वनस्प्पते श्श्रय॒स्वो-दुच्छ्र॑यस्व व्वनस्प्पते। श्श्र॒य॒स्व॒ व्व॒न॒स्प्प॒ते॒ व्व॒न॒स्प्प॒ते॒ श्श्र॒य॒स्व॒ श्श्र॒य॒स्व॒ व्व॒न॒स्प्प॒त॒ऽ ऊ॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो व्व॑नस्प्पते श्श्रयस्व श्श्रयस्व व्वनस्प्पतऽ ऊ॒र्द्ध्वः। व्व॒न॒स्प्प॒त॒ऽ ऊ॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो व्व॑नस्प्पते व्वनस्प्पतऽ ऊ॒र्द्ध्वो मा॑ मो॒र्द्ध्वो व्व॑नस्प्पते व्वनस्प्पतऽ ऊ॒र्द्ध्वो मा॑। ऊ॒र्द्ध्वो मा॑ मो॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो मा॑ पाहि पाहि मो॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो मा॑ पाहि। मा॒ पा॒हि॒ पा॒हि॒ मा॒ मा॒ पा॒ह्यꣳह॒सोꣳह॑सः पाहि मा मा पा॒ह्यꣳह॑सः। पा॒ह्यꣳह॒सोꣳह॑सः पाहि पा॒ह्यꣳह॑सः। अꣳह॑स॒ऽ इत्यꣳह॑सः॥१०॥

व्व्रतङ्कृ॑णुत कृणुत व्व्र॒तँव्व्र॒तङ्कृ॑णुत व्व्र॒तँव्व्र॒तङ्कृ॑णुत व्व्र॒तँव्व्र॒तङ्कृ॑णुत व्व्रतम्। कृ॒णु॒त॒ व्व्र॒तँव्व्र॒तङ्कृ॑णुत कृणुत व्व्रतङ्कृ॑णुत कृणुत व्व्रतङ्कृ॑णुत कृणुत व्व्रतङ्कृ॑णुत। व्व्रतङ्कृ॑णुत कृणु-त व्व्र॒तँव्व्र॒तङ्कृ॑णुता॒ग्ग्निर॒ग्ग्निः कृ॑णुत व्व्र॒तँव्व्र॒तङ्कृ॑णुता॒ग्ग्निः। कृ॒णु॒ता॒ग्ग्निर॒ग्ग्निः कृ॑णुत

---

[1]. भाव्युपधः षत्वमेति वर्जयित्वा कृषीस्कृधिम्।-व.र.प्र.शि.११९. कृषीश्च कृधौ सकारम् (वा. प्रा. ३.३३) कृधि बाद में रहने पर कृषीः पद का विसर्जनीय सकार हो जाता है।

कृणुता॒ग्निर्ब्ब्रह्म॒ ब्रह्मा॒ग्निः॑ कृ॑णुत कृणुता॒ग्निर्ब्ब्रह्म॑। अ॒ग्निर्ब्ब्रह्म॒ ब्रह्मा॒ग्निर॒ग्निर्ब्ब्र॒-ह्मा॒ग्निर॒ग्निर्ब्ब्रह्मा॒ग्निर॒ग्निर्ब्ब्रह्मा॒ग्निः॑। ब्रह्मा॒ग्निर॒ग्निर्ब्ब्रह्म॒ ब्रह्मा॒ग्निर्य्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञो॒-ग्निर्ब्ब्रह्म॒ ब्रह्मा॒ग्निर्य्य॒ज्ज्ञः॑। अ॒ग्निर्य्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञो॒ग्निर॒ग्निर्य्य॒ज्ज्ञो व्व॒न॒स्प्पति॒र्व्व॒न॒-स्प्पति॑र्य्य॒ज्ज्ञो॒ग्निर॒ग्निर्य्य॒ज्ज्ञो व्व॒न॒स्प्पति॑ः[1]। य॒ज्ज्ञो व्व॒न॒स्प्पति॒र्व्व॒न॒स्प्पति॑र्य्य॒-ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञो व्व॒न॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ज्ञियो॑ य॒ज्ज्ञियो॒ व्व॒न॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञो व्व॒न॒स्प्पति॑-र्य्य॒ज्ज्ञिय॑ः। व्व॒न॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ज्ञियो॑ य॒ज्ज्ञियो॒ व्व॒न॒स्प्पति॒र्व्व॒न॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ज्ञिय॑ः। य॒ज्ज्ञिय॒ऽ इति॑ य॒ज्ज्ञिय॑ः॥ दैवी॒न्धिय॒न्धिय॒न्दैवी॒न्दैवी॒न्धिय॑म्मनामहे मनामहे॒ धिय॒न्दैवी॒न्दैवी॒न्धिय॑म्मनामहे। धिय॑म्मनामहे मनामहे॒ धिय॒न्धिय॑म्मनामहे सुमृडी॒काꣳ सु॑मृडी॒काम्म॑नामहे॒ धिय॒न्धिय॑म्मनामहे सुमृडी॒काम्। म॒ना॒म॒हे॒ सु॒मृ॒डी॒काꣳ सु॑मृडी॒काम्म॑नामहे मनामहे सुमृडी॒काम॒भिष्ट॑ये॒भिष्ट॑ये सुमृडी॒का-म्म॑नामहे मनामहे सुमृडी॒काम॒भिष्ट॑ये। सु॒मृ॒डी॒काम॒भिष्ट॑ये॒भिष्ट॑ये सुमृडी॒काꣳ सु॑मृडी॒काम॒भिष्ट॑ये व्व॒र्चो॒धाँव्व॑र्चो॒धाम॒भिष्ट॑ये सुमृडी॒काꣳ सु॑मृडी॒काम॒भिष्ट॑ये व्व॒र्चो॒धाम्। सु॒मृ॒डी॒कामिति॑ सु मृडी॒काम्। अ॒भिष्ट॑ये व्व॒र्चो॒धाँव्व॑र्चो॒धाम॒भिष्ट॑ये॒भिष्ट॑ये व्व॒र्चो॒धाँय्य॒ज्ज्ञवा॑हसँय्य॒ज्ज्ञवा॑हसँव्व॒र्चो॒धाम॒भिष्ट॑ये॒भिष्ट॑ये व्व॒र्चो॒धाँय्य॒ज्ज्ञवा॑हसम्। व्व॒र्चो॒धाँय्य॒ज्ज्ञवा॑हसँय्य॒ज्ज्ञवा॑हसँव्व॒र्चो॒धाँव्व॑र्चो॒धाँय्य॒ज्ज्ञवा॑हसꣳ सुती॒र्त्था सु॑ती॒र्त्था य॒ज्ज्ञवा॑हसँव्व॒र्चो॒धाँव्व॑र्चो॒धाँय्य॒ज्ज्ञवा॑हसꣳ सुती॒र्त्था। व्व॒र्चो॒धामिति॑ वर्च॒ः धाम्। य॒ज्ज्ञवा॑हसꣳ सुती॒र्त्था सु॑ती॒र्त्था य॒ज्ज्ञवा॑हसँय्य॒ज्ज्ञवा॑हसꣳ सुती॒र्त्था नो॑ नः सुती॒र्त्था य॒ज्ज्ञवा॑हसँय्य॒ज्ज्ञवा॑हसꣳ सुती॒र्त्था न॑ः। य॒ज्ज्ञवा॑ह॒समिति॑ य॒ज्ज्ञ व्वा॑हसम्। सु॒ती॒र्त्था नो॑ नः सुती॒र्त्था सु॑ती॒र्त्था नो॑ऽ असदसन्नः सुती॒र्त्था सु॑ती॒र्त्था

[1]. वा. प्रा. २.४७. के अनुसार वनु॒स्प्पति॑ः पद द्विरुदात्त है। वा.प्रा.३.५०. के अनुसार पति शब्द बाद में होने पर वन शब्द सकार से व्यवहित होता है। वा.प्रा.५.३७. के अनुसार वनस्पतिः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

नोऽ असत्[1]। सुतीर्र्थेति सु तीर्त्था। नोऽ असदसन्नो नोऽ असद्वशे व्रशेंसन्नो नोऽ असद्वशें। असद्वशे व्रशेंसदसद्वशें। व्रशऽ इति वशें॥ ये देवा देवा ये ये देवा मनोंजाता मनोंजाता देवा ये ये देवा मनोंजाताः। देवा मनोंजाता मनोंजाता देवा देवा मनोंजाता मनोयुजों मनोयुजो मनोंजाता देवा देवा मनोंजाता मनोयु- जंः। मनोंजाता मनोयुजों मनोयुजो मनोंजाता मनोंजाता मनोयुजो दक्षक्रंक्र- तवो दक्षक्रंक्रतवो मनोयुजो मनोंजाता मनोंजाता मनोयुजो दक्षक्रंक्रतवः। मनोंजाताऽ इति मनंः जाताः[2]। मनोयुजो दक्षक्रंक्रतवो दक्षक्रंक्रतवो मनोयुजों मनोयुजो दक्षक्रंक्रतवस्ते ते दक्षक्रंक्रतवो मनोयुजों मनोयुजो दक्षक्रंक्रतवस्ते। मनोयुजऽ इतिं मनः युजंः। दक्षक्रंक्रतवस्ते ते दक्षक्रंक्रतवो दक्षक्रंक्रतवस्ते नों नस्ते दक्षक्रंक्रतवो दक्षक्रंक्रतवस्ते नंः। दक्षक्रंक्रतवऽ इति दक्षं क्रतवः। ते नों नस्ते ते नोंवन्त्ववन्तु नस्ते ते नोंवन्तु[3]। नोवन्त्ववन्तु नो नोवन्तु ते तेंवन्तु नो नोवन्तु ते। अवन्तु ते तेंवन्त्ववन्तु ते नों नस्तेवन्त्ववन्तु ते नंः। ते नों नस्ते ते नंः पान्तु पान्तु नस्ते ते नंः पान्तु। नः पान्तु पान्तु नो नः पान्तु तेभ्यस्तेभ्यंः पान्तु नो नः पान्तु तेभ्यंः। पान्तु तेभ्यस्तेभ्यंः पान्तु पान्तु तेभ्यः स्वाहा स्वाहा तेभ्यंः पान्तु पान्तु तेभ्यः स्वाहां। तेभ्यः स्वाहा स्वाहा तेभ्यस्तेभ्यः स्वाहां। स्वाहेति स्वाहां॥११॥

श्वात्राः पीताः पीताः श्वात्राः श्वात्राः पीता भंवत भवत पीताः श्वात्राः श्वात्राः पीता भंवत। पीता भंवत भवत पीताः पीता भंवत यूयँयूयम्भंवत पीताः पीता भंवत यूयम्। भवत यूयँयूयम्भंवत भवत यूयमापऽ आपो यूय-

---

[1]. नो असत् यहाँ ओकार का प्रकृतिभाव अन्वेषणीय है।

[2]. मनोजाताः यहाँ पर अवग्रहः पदान्तवत् (वा. प्रा. १.१५३) इस सूत्र के अनुसार सावग्रह पद का पूर्वपद मनः पदान्त के समान कार्य को प्राप्त करता है अतः विसर्जनीय में तर्जनी एवं कनिष्ठिका का प्रदर्शन होगा।

[3]. वा.प्रा.४.७४. के अनुसार यहाँ अवन्तु के अकार का अभिनिधान होता है।

म्भवत भवत यूयमापः। यूयमापऽ आपो यूयँय्यूयमापोऽ अस्म्माकमस्म्माकमापो यूयँय्यूयमापोऽ अस्म्माकम्। आपोऽ अस्म्माकमस्म्माकमापऽ आपोऽ अस्म्माकमन्तरन्तरस्म्माकमापऽ आपोऽ अस्म्माकमन्तः। अस्म्माकमन्तरन्तरस्म्माकमस्म्माकमन्तरुदरंऽ उदरेन्तरस्म्माकमस्म्माकमन्तरुदरे। अन्तरुदरंऽ उदरेन्तरन्तरुदरे सुशेवाः सुशेवाऽ उदरेन्तरन्तरुदरे सुशेवाः। उदरे सुशेवाः सुशेवाऽ उदरंऽ उदरे सुशेवाः। सुशेवाऽ इति सु शेवाः॥ ताऽ अस्म्मभ्भ्यंमस्म्मभ्भ्यन्तास्ताऽ अस्म्मभ्भ्यंमयक्ष्माऽ अयक्ष्माऽ अस्म्मभ्भ्यन्तास्ताऽ अस्म्मभ्भ्यंमयक्ष्माः[1]। अस्म्मभ्भ्यंमयक्ष्माऽ अयक्ष्माऽ अस्म्मभ्भ्यंमस्म्मभ्भ्यंमयक्ष्माऽ अनमीवाऽ अनमीवाऽ अयक्ष्माऽ अस्म्मभ्भ्यंमस्म्मभ्भ्यंमयक्ष्माऽ अनमीवाः। अयक्ष्माऽ अनमीवाऽ अनमीवाऽ अयक्ष्माऽ अयक्ष्माऽ अनमीवाऽ अनागसोनागसोनमीवाऽ अयक्ष्माऽ अयक्ष्माऽ अनमीवाऽ अनागसः। अनमीवाऽ अनागसोनागसोनमीवाऽ अनमीवाऽ अनागसः स्वदन्तु स्वदन्त्वनागसोनमीवाऽ अनमीवाऽ अनागसः स्वदन्तु। अनागसः स्वदन्तु स्वदन्त्वनागसोनागसः स्वदन्तु देवीर्द्देवीः स्वदन्त्वनागसोनागसः स्वदन्तु देवीः। स्वदन्तु देवीर्द्देवीः स्वदन्तु स्वदन्तु देवीरमृताऽ अमृता देवीः स्वदन्तु स्वदन्तु देवीरमृताः। देवीरमृताऽ अमृता देवीर्द्देवीरमृताऽ ऋतावृधऽ ऋतवृधोमृता देवीर्द्देवीरमृताऽ ऋतावृधः[2]। अमृताऽ ऋतावृधऽ ऋतवृधोमृताऽ अमृताऽ ऋतावृधः। ऋतवृधऽ इत्यृत वृधः॥१२॥

---

[1]. अयक्ष्माः यहाँ यैस्तु परं तैर्न पूर्वम् (वा. प्रा. ४.१०५) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार मकार का द्वित्व नहीं होगा। यत्र चोभयतः स्पर्शैः सँय्युक्ताः शषसाः सहाः (सह?)। तत्र नाद्यः क्रमो ज्ञेयो नापरो बोधितो बुधैः॥ - व. शि. १५७ -१५८.

[2]. दीर्घम्(वा.प्रा.३.९६) के अधिकार में पढ़े गये सूत्र वा.प्रा.३.९७. के अनुसार ऋतवृधः पद में वकार परे होने से ऋत का अन्तिम ह्रस्व स्वर दीर्घ होकर ऋतावृधः होता है।

इयन्ते तऽ इयमियन्ते यज्ञिया यज्ञिया तऽ इयमियन्ते यज्ञिया। ते यज्ञिया यज्ञिया ते ते यज्ञिया तनूस्तनूर्य्यज्ञिया ते ते यज्ञिया तनूः। यज्ञिया तनूस्तनूर्य्यज्ञिया यज्ञिया तनूरपोपस्तनूर्य्यज्ञिया यज्ञिया तनूरपः। तनूरपोपस्तनूस्तनूरपो मुञ्चामि मुञ्चाम्म्यपस्तनूस्तनूरपो मुञ्चामि। अपो मुञ्चामि मुञ्चाम्म्यपोपो मुञ्चामि न न मुञ्चाम्म्यपोपो मुञ्चामि न। मुञ्चामि न न मुञ्चामि मुञ्चामि न प्प्रजाम्प्रजान्न मुञ्चामि मुञ्चामि न प्प्रजाम्। न प्प्रजाम्प्रजान्न न प्प्रजाम्। प्रजामिति प्र जाम्॥ अꣳहोमुचः स्वाहाकृताः स्वाहाकृताऽ अꣳहोमुचोꣳहोमुचः स्वाहाकृताः पृथिवीम्पृथिवीꣳ स्वाहाकृताऽ अꣳहोमुचोꣳ होमुचः स्वाहाकृताः पृथिवीम्। अꣳहोमुचऽ इत्यꣳहः मुचः। स्वाहाकृताः पृथिवीम्पृथिवीꣳ स्वाहाकृताः स्वाहाकृताः पृथिवीमा विशत व्विशता पृथिवीꣳ स्वाहाकृताः स्वाहाकृताः पृथिवीमा विशत। स्वाहाकृताऽ इति स्वाहा कृताः। पृथिवीमा विशत व्विशता पृथिवीम्पृथिवीमा विशत पृथिव्व्या पृथिव्व्या व्विशता पृथिवीम्पृथिवीमा विशत पृथिव्व्या। आ विशत। व्विशत पृथिव्व्या पृथिव्व्या व्विशत व्विशत पृथिव्व्या सꣳ सम्पृथिव्व्या व्विशत व्विशत पृथिव्व्या सम्। पृथिव्व्या सꣳ सम्पृथिव्व्या पृथिव्व्या सम्भव भव सम्पृथिव्व्या पृथिव्व्या सम्भव[1]। सम्भव भव सꣳ सम्भव। भवेति भव॥१३॥

अग्ग्ने त्वन्त्वमग्ग्नेग्ग्ने त्वꣳ सु सु त्वमग्ग्नेग्ग्ने त्वꣳ सु। त्वꣳ सु सु त्वन्त्वꣳ सु जागृहि जागृहि सु त्वन्त्वꣳ सु जागृहि। सु जागृहि जागृहि सु सु जागृहि व्वयँव्वयञ्जागृहि सु सु जागृहि व्वयम्। जागृहि व्वयँव्वयञ्जागृहि जागृहि व्वयꣳ सु सु वयञ्जागृहि जागृहि व्वयꣳ सु। व्वयꣳ सु सु वयँव्वयꣳ सु मन्दिषीमहि मन्दिषीमहि सु वयँव्वयꣳ सु मन्दिषीमहि। सु मन्दिषीमहि मन्दिषीमहि सु सु

[1]. वा.प्रा.४.२८. के अनुसार सम्भव बाद में होने से यहाँ पृथिव्या पद स्वरान्त है।

मन्दिषीमहि। मुन्दिषीमहीति मन्दिषीमहि॥ रक्षा णो नो रक्ष रक्षा णोऽ अप्प्रयुच्छन्नप्प्रयुच्छन्नो रक्ष रक्षा णोऽ अप्प्रयुच्छन्। नोऽ अप्प्रयुच्छन्नप्प्रयुच्छन्नो नोऽ अप्प्रयुच्छन्प्रबुधे प्प्रबुधेप्प्रयुच्छन्नो नोऽ अप्प्रयुच्छन्प्रबुधे। अप्प्रयुच्छन्प्रबुधे प्प्रबुधेप्प्रयुच्छन्नप्प्रयुच्छन्प्रबुधे नो नः प्प्रबुधेप्प्रयुच्छन्नप्प्रयुच्छन्प्रबुधे नः। अप्प्रयुच्छन्नित्यप्प्र युच्छन्। प्रबुधे नो नः प्प्रबुधे प्प्रबुधे नः पुनः पुनर्न्नः प्प्रबुधे प्प्रबुधे नः पुनः। प्रबुधऽ इति प्प्र बुधे। नः पुनः पुनर्न्नो नः पुनस्कृधि कृधि पुनर्न्नो नः पुनस्कृधि। पुनस्कृधि कृधि पुनः पुनस्कृधि[1]। पुनरिति पुनः। कृधीति कृधि॥१४॥

पुनर्म्मनो मनः पुनः पुनर्म्मनः पुनः पुनर्म्मनः पुनः पुनर्म्मनः पुनः। मनः पुनः पुनर्म्मनो मनः पुनरायुरायुः पुनर्म्मनो मनः पुनरायुः। पुनरायुरायुः पुनः पुनरायुर्म्मे मऽ आयुः पुनः पुनरायुर्म्मे। आयुर्म्मे मऽ आयुरायुर्म्मऽ आगन्नगन्ना मऽ आयुरायुर्म्मऽ आगन्। मऽ आगन्नगन्ना मे मऽ आगन्पुनः पुनरगन्ना मे मऽ आगन्पुनः। आगन्। अगन्पुनः पुनरगन्नगन्पुनः प्राणः प्प्राणः पुनरगन्नगन्पुनः प्प्राणः। पुनः प्प्राणः प्प्राणः पुनः पुनः प्प्राणः पुनः पुनः प्प्राणः पुनः पुनः प्प्राणः पुनः। पुनरिति पुनः। प्राणः पुनः पुनः प्प्राणः प्प्राणः पुनरात्मात्मा पुनः प्प्राणः प्प्राणः पुनरात्मा। पुनरात्मात्मा पुनः पुनरात्मा मे मऽ आत्मा पुनः पुनरात्मा मे। आत्मा मे मऽ आत्मात्मा मऽ आगन्नगन्ना मेऽ आत्मात्मा मऽ आगन्। मऽ आगन्नगन्ना मे मऽ आगन्पुनः पुनरगन्ना मे मऽ आगन्पुनः। आगन्। अगन्पुनः पुनरगन्नगन्पुनश्चक्षुश्चक्षुः पुनरगन्नगन्पुनश्चक्षुः। पुनश्चक्षुश्चक्षुः पुनः पुनश्चक्षुः पुनः पुनश्चक्षुः पुनः पुनश्चक्षुः पुनः। पुनरिति पुनः। चक्षुः पुनः

[1]. कविष्करत्कृधिपु(वा.प्रा.३.३२) इस सूत्र के अनुसार कृधि बाद में रहने पर पूर्ववर्ती पद का विसर्जनीय सकार हो जाता है।

पुनश्चक्षुश्चक्षुः पुनः श्रोत्रꣳ श्रोत्रम्पुनश्चक्षुश्चक्षुः पुनः श्रोत्रम्। पुनः श्रोत्रꣳ श्रोत्रम्पुनः पुनः श्रोत्रम्मे मे श्रोत्रम्पुनः पुनः श्रोत्रम्मे। पुनरिति पुनः। श्रोत्रम्मे मे श्रोत्रꣳ श्रोत्रम्मऽ आगन्नगन्ना मे श्रोत्रꣳ श्रोत्रम्मऽ आगन्। मऽ आगन्नगन्ना मे मऽ आगन्। आगन्। अगन्नित्यगन्॥ वैश्वानरोऽ अदब्धोदब्धो वैश्वानरो वैश्वानरोऽ अदब्धस्तनूपास्तनूपाऽ अदब्धो वैश्वानरो वैश्वानरोऽ अदब्धस्तनूपाः[1]। अदब्धस्तनूपास्तनूपाऽ अदब्धोदब्धस्तनूपाऽ अग्निरग्नि-स्तनूपाऽ अदब्धोदब्धस्तनूपाऽ अग्निः। तनूपाऽ अग्निरग्निस्तनूपास्तनूपाऽ अग्निर्नो नोग्निस्तनूपास्तनूपाऽ अग्निर्नः। तनूपाऽ इति तनू पाः। अग्निर्नो नोग्निरग्निर्नः पातु पातु नोग्निरग्निर्नः पातु। नः पातु पातु नो नः पातु दुरितादुरितात्पातु नो नः पातु दुरितात्। पातु दुरितादुरितात्पातु पातु दुरितादवद्यादवद्यादुरितात्पातु पातु दुरितादवद्यात्। दुरितादवद्यादवद्यादुरिता-दुरितादवद्यात्। दुरितादिति दुः इतात्। अवद्यादित्यवद्यात्॥१५॥

त्वमग्नेग्ने त्वन्त्वमग्ने व्रतपा व्रतपाऽ अग्ने त्वन्त्वमग्ने व्रतपाः। अग्ने व्रतपा व्रतपाऽ अग्नेग्ने व्रतपाऽ अस्यसि व्रतपाऽ अग्नेग्ने व्रतपाऽ असि। व्रतपाऽ अस्यसि व्रतपा व्रतपाऽ असि देवो देवोसि व्रतपा व्रतपाऽ असि देवः। व्रतपाऽ इति व्रत पाः। असि देवो देवोस्यसि देवऽ आ मर्त्येषु मर्त्येष्वा देवोस्यसि देवऽ आ मर्त्येषु। देवऽ आ मर्त्येषु मर्त्येष्वा देवो देवऽ आ मर्त्येष्वा मर्त्येष्वा देवो देवऽ आ मर्त्येष्वा[2]। आ मर्त्येषु। मर्त्येष्वा मर्त्येषु मर्त्येष्वा। एत्या॥ त्वँय्यज्ञेषु यज्ञेषु त्वन्त्वँय्यज्ञेष्वीड्यऽ ईड्यो यज्ञेषु त्वन्त्वँय्यज्ञेष्वीड्यः। यज्ञे-

[1]. वा. प्रा. ४.८५. के अनुसार वैश्वानरो अदब्धः में ओकार प्रकृति भाव से रहता है।

[2]. कण्डिका अथवा अर्धर्च के अन्त में आ (अपृक्त पद) आने पर तीन पदों का समूह गृहीत होता है, इस सन्धि में मर्त्येषु के पहले आ(अपृक्त पद) आया है, अतः यहाँ उसके कारण चार पदों का समूह सन्धिकार्य हेतु लिया जाता है।

ष्वीङ्खय॒ऽ ईङ्खयो॑ य॒ज्ञेषु॑ य॒ज्ञेष्वीङ्खय॑ः । ईङ्खय॒ऽ इतीङ्खय॑ः ॥ रास्स्वेय॒दिय॒द्रास्स्व॒ रास्स्वेय॑त्सोम सो॒मेय॒द्रास्स्व॒ रास्स्वेय॑त्सोम[1] । इय॑त्सोम सो॒मेय॒दिय॑त्सो॒मा भूयो॒ भूय॒ऽ आ सो॒मेय॒दिय॑त्सो॒मा भूय॑ः । सो॒मा भूयो॒ भूय॒ऽ आ सो॑म सो॒मा भूयो॑ भर भर॒ भूय॒ऽ आ सो॑म सो॒मा भूयो॑ भर । आ भूय॑ः । भूयो॑ भर भर॒ भूयो॒ भूयो॑ भर दे॒वो दे॒वो भ॑र॒ भूयो॒ भूयो॑ भर दे॒वः । भ॒र॒ दे॒वो दे॒वो भ॑र भर दे॒वो नो॑ नो दे॒वो भ॑र भर दे॒वो न॑ः । दे॒वो नो॑ नो दे॒वो दे॒वो न॑ः सवि॒ता स॑वि॒ता नो॑ दे॒वो दे॒वो न॑ः सवि॒ता[2] । न॒ः स॒वि॒ता स॑वि॒ता नो॑ नः सवि॒ता व्वसो॒र्व्वसो॑ः सवि॒ता नो॑ नः सवि॒ता व्वसो॑ः । स॒वि॒ता व्वसो॒र्व्वसो॑ः सवि॒ता स॑वि॒ता व्वसो॑र्द्दा॒ता दा॒ता व्वसो॑ः सवि॒ता स॑वि॒ता व्वसो॑र्द्दा॒ता । व्वसो॑र्द्दा॒ता दा॒ता व्वसो॒र्व्वसो॑र्द्दा॒ता व्वसु॒ व्वसु॑ दा॒ता व्वसो॒र्व्वसो॑र्द्दा॒ता व्वसु॑ । दा॒ता व्वसु॒ व्वसु॑ दा॒ता दा॒ता व्वस्व॑दादद॒द्व्वसु॑ दा॒ता दा॒ता व्वस्व॑दात् । व्वस्व॑दादद॒द्व्वसु॒ व्वस्व॑दात् । अ॒दा॒दित्त्य॑दात् ॥१६॥

ए॒षा ते॑ तऽ ए॒षैषा ते॑ शुक्र शुक्र तऽ ए॒षैषा ते॑ शुक्र । ते॒ शु॒क्र॒ शु॒क्र॒ ते॒ ते॒ शु॒क्र॒ त॒नूस्त॒नूः शु॑क्र ते ते शुक्र त॒नूः । शु॒क्र॒ त॒नूस्त॒नूः शु॑क्र शुक्र त॒नू॒रेतदे॒तत्त॒नूः शु॑क्र शुक्र त॒नू॒रेतत् । त॒नू॒रेतदे॒तत्त॒नूस्त॒नू॒रेतद्व्वर्चो॒ व्वर्च॑ऽ ए॒तत्त॒नूस्त॒नू॒रेतद्व्वर्च॑ः । ए॒तद्व्वर्चो॒ व्वर्च॑ऽ ए॒तदे॒तद्व्वर्च॒स्तया॒ तया॒ व्वर्च॑ऽ ए॒तदे॒तद्व्वर्च॒स्तया॑ । व्वर्च॒स्तया॒ तया॒ व्वर्चो॒ व्वर्च॒स्तया॒ सꣳ सन्तया॒ व्वर्चो॒ व्वर्च॒स्तया॒ सम् । तया॒ सꣳ सन्तया॒ तया॒ सम्भ॑व भव॒ सन्तया॒ तया॒ सम्भ॑व । सम्भ॑व भव॒ सꣳ सम्भ॑व॒ ब्भ्राज॒म्भ्राज॑म्भव॒ सꣳ सम्भ॑व॒ ब्भ्राज॑म् । भ॒व॒ ब्भ्राज॒म्भ्राज॑म्भव भव॒ ब्भ्राज॑ङ्गच्छ गच्छ॒ ब्भ्राज॑म्भव भव॒ ब्भ्राज॑ङ्गच्छ । भ्राज॑ङ्गच्छ गच्छ॒ ब्भ्राज॒म्भ्राज॑ङ्गच्छ । ग॒च्छेति॑ गच्छ ॥ जूर॑स्यसि॒

---

[1]. द्विसकारं शास्स्व रास्स्वेति (वा. प्रा. ४.१४७) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार यहाँ रास्स्व पद में दो सकार हैं।

[2]. नः सविता यहाँ अविकारं शाकल्यः शषसेषु(वा.प्रा.३.१०) इस सूत्र के अनुसार शकार बाद में रहने पर विसर्जनीय विकार को नहीं प्राप्त होता है। प्रत्ययसवर्णं मुदि शाकटायनः(वा.प्रा.३.९) यह शाकटायन के मत से परसवर्ण का विधान माध्यन्दिन शाखा के लिये नहीं है।

जूर्ज्जूर्रसि धृता धृतासि जूर्ज्जूर्रसि धृता। असि धृता धृतास्यसि धृता मनसा मनसा धृतास्यसि धृता मनसा। धृता मनसा मनसा धृता धृता मनसा जुष्टा जुष्टा मनसा धृता धृता मनसा जुष्टा। मनसा जुष्टा जुष्टा मनसा मनसा जुष्टा विष्णवे विष्णवे जुष्टा मनसा मनसा जुष्टा विष्णवे। जुष्टा विष्णवे विष्णवे जुष्टा जुष्टा विष्णवे। विष्णवऽ इति विष्णवे॥१७॥

तस्यास्ते ते तस्यास्तस्यास्ते सत्यसवसः सत्यसवसस्ते तस्यास्तस्यास्ते सत्यसवसः। ते सत्यसवसः सत्यसवसस्ते ते सत्यसवसः प्प्रसवे प्प्रसवे सत्यसवसस्ते ते सत्यसवसः प्प्रसवे। सत्यसवसः प्प्रसवे प्प्रसवे सत्यसवसः सत्यसवसः प्प्रसवे तन्न्वस्तन्न्वः प्प्रसवे सत्यसवसः सत्यसवसः प्प्रसवे तन्न्वः। सत्यसवसऽ इति सत्य सवसः। प्रसवे तन्न्वस्तन्न्वः प्प्रसवे प्प्रसवे तन्न्वो यज्ञँय्यज्ञन्तन्न्वः प्प्रसवे प्प्रसवे तन्न्वो यज्ञम्। प्रसवऽ इति प्प्र सवे। तन्न्वो यज्ञँय्यज्ञन्तन्न्वस्तन्न्वो यज्ञमशीयाशीय यज्ञन्तन्न्वस्तन्न्वो यज्ञमशीय। यज्ञमशीयाशीय यज्ञँय्यज्ञमशीय स्वाहा स्वाहाशीय यज्ञँय्यज्ञमशीय स्वाहा। अशीय स्वाहा स्वाहाशीयाशीय स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ शुक्क्रमस्यसि शुक्क्रꣳ शुक्क्रमसि चन्द्रश्चन्द्रमसि शुक्क्रꣳ शुक्क्रमसि चन्द्रम्। असि चन्द्रश्चन्द्रमस्यसि चन्द्रममृतममृतञ्चन्द्रमस्यसि चन्द्रममृतम्[1]। चन्द्रममृतममृतञ्चन्द्रश्चन्द्रममृतँव्वैश्श्वदेवँव्वैश्श्वदेवममृतञ्चन्द्रश्चन्द्रममृतँव्वैश्श्वदेवम्। अमृतँव्वैश्श्वदेवँव्वैश्श्वदेवममृतममृतँव्वैश्श्वदेवम्। व्वैश्श्वदेवमिति वैश्श्व देवम्॥१८॥

---

[1]. संहिता में इस मन्त्र में असि पद चार बार आया है। वा.प्रा.४.१७७. के अनुसार प्रथमभिन्न अन्य असि की आवृति में सङ्क्रम होता है।

चिन्मना मना चिच्चिन्मना धीर्द्धीर्म्मना चिच्चिन्मना धीः[1]। मना धीर्द्धीर्म्मना मना धीर्द्दक्षिणा दक्षिणा धीर्म्मना मना धीर्द्दक्षिणा। धीर्द्दक्षिणा दक्षिणा धीर्द्धीर्द्दक्षिणा क्क्षत्रियां क्क्षत्रिया दक्षिणा धीर्द्धीर्द्दक्षिणा क्क्षत्रियां। दक्षिणा क्क्षत्रियां क्क्षत्रिया दक्षिणा दक्षिणा क्क्षत्रियां यज्ञियां यज्ञियां क्क्षत्रिया दक्षिणा दक्षिणा क्क्षत्रियां यज्ञियां। क्षत्रियां यज्ञियां यज्ञियां क्क्षत्रियां क्क्षत्रियां यज्ञियादितिरदितिर्य्यज्ञियां क्क्षत्रियां क्क्षत्रियां यज्ञियादितिः। यज्ञियादितिरदितिर्य्यज्ञियां यज्ञियादितिरुभयतःशीर्ष्ण्युभयतःशीर्ष्ण्यदितिर्य्यज्ञियां यज्ञियादितिरुभयतःशीर्ष्णी[2]। अदितिरुभयतःशीर्ष्ण्युभयतःशीर्ष्ण्यदितिरदितिरुभयतःशीर्ष्णी। उभयतःशीर्ष्णीत्युभयतः शीर्ष्णी॥ सा नो नः सा सा नः सुप्राची सुप्राची नः सा सा नः सुप्राची। नः सुप्राची सुप्राची नो नः सुप्राची सुप्रतीची सुप्रतीची सुप्राची नो नः सुप्राची सुप्रतीची। सुप्राची सुप्रतीची सुप्रतीची सुप्राची सुप्राची सुप्रतीच्येद्ध्येधि सुप्रतीची सुप्राची सुप्राची सुप्रतीच्येधि। सुप्राचीति सु प्राची। सुप्रतीच्येद्ध्येधि सुप्रतीची सुप्रतीच्येधि मित्रो मित्रऽ एधि सुप्रतीची सुप्रतीच्येधि मित्रः। सुप्रतीचीति सु प्रतीची। एधि मित्रो मित्रऽ एद्ध्येधि मित्रस्त्वां त्वा मित्रऽ एद्ध्येधि मित्रस्त्वां। मित्रस्त्वां त्वा मित्रो मित्रस्त्वां पदि पदि त्वां मित्रो मित्रस्त्वां पदि। त्वा पदि पदि त्वां त्वा पदि बंद्धीताम्बद्धीताम्पदि त्वां त्वा पदि बंद्धीताम्। पदि बंद्धीताम्बद्धीताम्पदि पदि बंद्धीताम्पूषा पूषा बंद्धीताम्पदि पदि बंद्धीताम्पूषा। बद्धीताम्पूषा पूषा बंद्धीताम्बद्धीताम्पूषाद्ध्वनोर्द्धनः पूषा

[1].शु.य. के भाष्यकार उव्वट तथा महीधर ने मना पद न मानकर मनः पद माना है। वा.प्रा. में भाष्यकार उव्वट ने २.१६. के भाष्य में उदाहरण के रूप में भी चिदसि मनोसि लिखा है।

[2]. अविकारं च शाकल्यो मन्यते शषसेषु च – व. शि. – १२०.

बर्द्धीताम्बर्द्धीताम्पूषाद्र्धनः। पूषाद्र्धनोर्द्धनः पूषा पूषाद्र्धनस्पातु पात्वद्र्धनः पूषा पूषाद्र्धनस्पातु[1]। अर्द्धनस्पातु पात्वर्द्धनोर्द्धनस्पात्विन्द्रायेन्द्राय पात्वर्द्धनोर्द्ध-नस्पात्विन्द्राय। पात्विन्द्रायेन्द्राय पातु पात्विन्द्रायाद्ध्यक्षायाद्ध्यक्षायेन्द्राय पातु पात्विन्द्रायाद्ध्यक्षाय[2]। इन्द्रायाद्ध्यक्षायाद्ध्यक्षायेन्द्रायेन्द्रायाद्ध्य-क्षाय। अद्ध्यक्षायेत्यधि अक्षाय॥१९॥

अनु त्वा त्वान्वनु त्वा माता माता त्वान्वनु त्वा माता। त्वा माता माता त्वा त्वा माता मन्न्यताम्मन्न्यताम्माता त्वा त्वा माता मन्न्यताम्। माता मन्न्य-ताम्मन्न्यताम्माता माता मन्न्यताम्पिता पिता मन्न्यताम्माता माता मन्न्यताम्पि-ता। मन्न्यताम्पिता पिता मन्न्यताम्मन्न्यताम्पिता ब्भ्राता ब्भ्राता पिता मन्न्यता-म्मन्न्यताम्पिता ब्भ्राता। पिता ब्भ्राता ब्भ्राता पिता पिता ब्भ्राता सगर्ब्भ्यः सग-र्ब्भ्यो ब्भ्राता पिता पिता ब्भ्राता सगर्ब्भ्यः। भ्राता सगर्ब्भ्यः सगर्ब्भ्यो ब्भ्राता ब्भ्राता सगर्ब्भ्यः सखा सखा सगर्ब्भ्यो ब्भ्राता ब्भ्राता सगर्ब्भ्यः सखा। सग-र्ब्भ्यः सखा सखा सगर्ब्भ्यः सगर्ब्भ्यः सखा सयूत्थ्यः सयूत्थ्यः सखा सग-र्ब्भ्यः सगर्ब्भ्यः सखा सयूत्थ्यः। सगर्ब्भ्यऽ इति स गर्ब्भ्यः। सखा सयूत्थ्यः सयूत्थ्यः सखा सखा सयूत्थ्यः। सयूत्थ्यऽ इति स यूत्थ्यः॥ सा देवि देवि सा सा देवि देवन्देवन्देवि सा सा देवि देवम्। देवि देवन्देवन्देवि देवि देवमच्छाच्छ देवन्देवि देवि देवमच्छ। देवमच्छाच्छ देवन्देवमच्छेहीह्यच्छ देवन्देवमच्छेहि। अच्छेहीह्यच्छाच्छेहीन्द्रायेन्द्रायेह्यच्छाच्छेहीन्द्राय। इहीन्द्रायेन्द्रायेहीहीन्द्राय सोमꣳ सोममिन्द्रायेहीहीन्द्राय सोमम्। इन्द्राय सोमꣳ सोममिन्द्रायेन्द्राय

---

1. अध्वनो रजसो रिषः स्पृशस्पातौ (वा. प्रा. ३.२८) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार अर्द्धनः पातु यहाँ पर विसर्जनीय सकार हो गया है।

2. चिदसि प्रथमा ज्ञेया अर्म्मेभ्योऽथ पराभवेत्। ध्यक्षा ध्यक्षान्तयोः सम्यगुभयोः कण्डिकाद्वयी॥-पा.शि.२२.

उक्त श्लोक में ध्यक्ष तथा ध्याक्षान्तयोः के स्थान में ध्यक्ष्यान्तयोः पाठ उचित है।

सोम॑ꣳ रु॒द्रो रु॒द्रः सोम॒मिन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ सोम॑ꣳ रु॒द्रः। सोम॑ꣳ रु॒द्रो रु॒द्रः सोम॒ꣳ सोम॑ꣳ रु॒द्रस्त्वा॑ त्वा रु॒द्रः सोम॒ꣳ सोम॑ꣳ रु॒द्रस्त्वा॑[1]। रु॒द्रस्त्वा॑ त्वा रु॒द्रो रु॒द्रस्त्वा व॑र्त्तयतु ब्वर्त्तय॒त्वा त्वा॑ रु॒द्रो रु॒द्रस्त्वा व॑र्त्तयतु। त्वा व॑र्त्तयतु ब्वर्त्तय॒त्वा त्वा॒ त्वा व॑र्त्तयतु स्व॒स्ति स्व॒स्ति ब्व॑र्त्तय॒त्वा त्वा॒ त्वा व॑र्त्तयतु स्व॒स्ति। आ व॑र्त्तयतु। ब्व॒र्त्त॒य॒तु स्व॒स्ति स्व॒स्ति ब्व॑र्त्तयतु ब्वर्त्तयतु स्व॒स्ति सोम॑सखा॒ सोम॑सखा स्व॒स्ति ब्व॑र्त्तयतु ब्वर्त्तयतु स्व॒स्ति सोम॑सखा। स्व॒स्ति सोम॑सखा॒ सोम॑सखा स्व॒स्ति स्व॒स्ति सोम॑सखा॒ पुन॒ः पुन॒ः सोम॑सखा स्व॒स्ति स्व॒स्ति सोम॑सखा॒ पुन॑ः। सोम॑सखा॒ पुन॒ः पुन॒ः सोम॑सखा॒ सोम॑सखा॒ पुन॒रेही॒ह्या पुन॒ः सोम॑सखा॒ सोम॑सखा॒ पुन॒रेहि॑। सोम॑स॒खेति॒ सोम॑ सखा। पुन॒रेही॒ह्या पुन॒ः पुन॒रेहि॑। एहि॑। इ॒हीती॑हि॥२०॥

ब्वस्व्य॑स्यसि॒ ब्वस्वी॒ ब्वस्व्य॒स्यदि॑ति॒रदि॑तिरसि॒ ब्वस्वी॒ ब्वस्व्य॒स्यदि॑तिः। अ॒स्यदि॑ति॒रदि॑तिरस्य॒स्यदि॑तिरादि॒त्यादि॒त्यादि॑ति॒रस्य॒स्यदि॑तिरादि॒त्या। अदि॑ति-रादि॒त्यादि॒त्यादि॑ति॒रदि॑तिरादि॒त्या रु॒द्रा रु॒द्रादि॒त्यादि॑ति॒रदि॑तिरादि॒त्या रु॒द्रा। आ॒दि॒त्या रु॒द्रा रु॒द्रादि॒त्यादि॒त्या रु॒द्रा च॒न्द्रा च॒न्द्रा रु॒द्रादि॒त्यादि॒त्या रु॒द्रा च॒न्द्रा। रु॒द्रा च॒न्द्रा च॒न्द्रा रु॒द्रा रु॒द्रा च॒न्द्रा। च॒न्द्रेति॑ च॒न्द्रा॥ बृह॒स्प्पति॑ष्ट्वा त्वा॒ बृह॒स्प्प-ति॒र्बृह॒स्प्पति॑ष्ट्वा सु॒म्म्ने सु॒म्म्ने त्वा॒ बृह॒स्प्पति॒र्बृह॒स्प्पति॑ष्ट्वा सु॒म्म्ने[2]। त्वा॒ सु॒म्म्ने सु॒म्म्ने त्वा॑ त्वा सु॒म्म्ने र॑म्म्णातु रम्म्णातु सु॒म्म्ने त्वा॑ त्वा सु॒म्म्ने र॑म्म्णातु। सु॒म्म्ने र॑म्म्णातु रम्म्णातु सु॒म्म्ने सु॒म्म्ने र॑म्म्णातु रु॒द्रो रु॒द्रो र॑म्म्णातु सु॒म्म्ने सु॒म्म्ने र॑म्म्णातु रु॒द्रः। र॒म्म्णा॒तु रु॒द्रो रु॒द्रो र॑म्म्णातु रम्म्णातु रु॒द्रो ब्वसु॑भि॒र्ब्वसु॑भी रु॒द्रो र॑म्म्णातु रम्म्णातु रु॒द्रो ब्वसु॑भिः। रु॒द्रो ब्वसु॑भि॒र्ब्वसु॑भी रु॒द्रो रु॒द्रो ब्वसु॑भि॒रा च॑क्रे चक्र॒ऽ आ वसु॑भी रु॒द्रो

1. त्वा च(वा.प्रा.२.६) मध्यम पुरुष के अर्थ का वोधक त्वा पद अनुदात्त होता है।

2. बृहस्प्पतिः त्वा यहाँ सकारपरे च (वा. प्रा. ३.७७) के अनुसार विसर्जनीय सकार षकार हो जाता है।

रुद्रो व्वसुंभिरा चंके। व्वसुंभिरा चंके चकुऽ आ वसुंभिर्व्वसुंभिरा चंके। व्वसुंभिरिति वसुं भिः। आ चंके। चकुऽ इतिं चके॥२१॥

अदिंत्यास्त्वा त्वादिंत्याऽ अदिंत्यास्त्वा मूर्द्धन्मूर्द्धंस्त्वादिंत्याऽ अदिंत्यास्त्वा मूर्द्धन्। त्वा मूर्द्धन्मूर्द्धंस्त्वां त्वा मूर्द्धन्ना जिंघर्म्मि जिघम्म्र्या मूर्द्धंस्त्वां त्वा मूर्द्धन्ना जिंघर्म्मि। मूर्द्धन्ना जिंघर्म्मि जिघम्म्र्या मूर्द्धन्मूर्द्धन्ना जिंघर्म्मि देवयजंने देवयजंने जिघम्म्र्या मूर्द्धन्मूर्द्धन्ना जिंघर्म्मि देवयजंने। आ जिंघर्म्मि। जिघर्म्मि देवयजंने देवयजंने जिघर्म्मि जिघर्म्मि देवयजंने पृथिव्याः पृंथिव्या देंवयजंने जिघर्म्मि जिघर्म्मि देवयजंने पृथिव्याः। देवयजंने पृथिव्याः पृंथिव्या देंवयजंने देवयजंने पृथिव्याऽ इडांयाऽ इडांयाः पृथिव्या देंवयजंने देवयजंने पृथिव्याऽ इडांयाः। देवयजंनुऽ इतिं देव यजंने। पृथिव्याऽ इडांयाऽ इडांयाः पृथिव्याः पृंथिव्याऽ इडांयास्प्पदम्पदमिडांयाः पृथिव्याः पृंथिव्याऽ इडांयास्प्पदम्[1]। इडांयास्प्पदम्पदमिडांयाऽ इडांयास्प्पदमंस्यसि पदमिडांयाऽ इडांयास्प्पदमंसि। पदमंस्यसि पदम्पदमंसि घृतवंद् घृतवंदसि पदम्पदमंसि घृतवंत्। असि घृतवंद् घृतवंदस्यसि घृतवत्स्वाहा स्वाहां घृतवंदस्यसि घृतवत्स्वाहां। घृतवत्स्वाहा स्वाहां घृतवंद् घृतवत्स्वाहां। घृतवदितिं घृत व्वंत्। स्वाहेति स्वाहां॥ अस्म्मे रंमस्व रमस्वास्म्मेऽ अस्म्मे रंमस्वास्म्मेऽ अस्म्मे रंमस्वास्म्मेऽ अस्म्मे रंमस्वास्म्मे[2]। अस्म्मेऽ इत्यस्म्मे। रमस्वास्म्मेऽ अस्म्मे रंमस्व रमस्वास्म्मे तें तेस्म्मे रंमस्व रमस्वास्म्मे तें। अस्म्मे तें तेस्म्मेऽ अस्म्मे ते बन्धुर्ब्बन्धुंस्त्तेस्म्मेऽ अस्म्मे ते बन्धुंः। अस्म्मेऽ इत्यस्म्मे। ते बन्धुर्ब्बन्धुंस्त्ते ते बन्धुस्त्त्वे त्वे बन्धुंस्त्ते ते बन्धुस्त्त्वे। बन्धुस्त्त्वे त्वे बन्धुर्ब्बन्धुस्त्त्वे रायो रायस्त्त्वे बन्धुर्ब्बन्धुस्त्त्वे रायंः। त्वे

---

[1].वा.प्रा.३.२३. के अनुसार इडायाः इस पद का विसर्जनीय सकार होता है।

[2].चमू अस्मे त्वे (वा. प्रा. १.९६) सूत्रोक्त तीनों पद प्रगृह्य होते हैं।

रायो रायस्त्वे त्वे रायो मे मे रायस्त्वे त्वे रायो मे। त्वेऽ इति त्वे। रायो मे मे रायो रायो मे रायो रायो मे रायो रायो मे राय॑ः। मे रायो रायो मे मे रायो मा मा रायो मे मे रायो मा। मेऽ इति मे[1]। रायो मा मा रायो रायो मा व्वयँव्वयम्मा रायो रायो मा व्वयम्। मा व्वयँव्वयम्मा मा व्वयꣳ रायो रायो व्वयम्मा मा व्वयꣳ रायः। व्वयꣳ रायो रायो व्वयँव्वयꣳ रायस्प्पोषे॑ण पोषे॑ण रायो व्वयँव्वयꣳ रायस्प्पोषे॑ण। रायस्प्पोषे॑ण पोषे॑ण रायो रायस्प्पोषे॑ण व्वि वि पोषे॑ण रायो रायस्प्पोषे॑ण व्वि। पोषे॑ण व्वि वि पोषे॑ण पोषे॑ण व्वि यौष्म्म यौष्म्म व्वि पोषे॑ण पोषे॑ण व्वि यौष्म्म। व्वि यौष्म्म यौष्म्म व्वि वि यौष्म्म तोतस्तोतो॑ यौष्म्म व्वि वि यौष्म्म तोत॑ः। यौष्म्म तोतस्तोतो॑ यौष्म्म यौष्म्म तोतो रायो रायस्तोतो॑ यौष्म्म यौष्म्म तोतो राय॑ः। तोतो रायो रायस्तोतस्तोतो राय॑ः। रायऽ इति राय॑ः॥२२॥

सम॑क्ख्येक्ख्ये सꣳ सम॑क्ख्ये देव्या देव्याक्ख्ये सꣳ सम॑क्ख्ये देव्या। अक्ख्ये देव्या देव्याक्ख्ये॑क्ख्ये देव्या धिया धिया देव्याक्ख्ये॑क्ख्ये देव्या धिया। देव्या धिया धिया देव्या देव्या धिया सꣳ सन्धिया देव्या देव्या धिया सम्। धिया सꣳ सन्धिया धिया सन्दक्क्षि॑णया दक्क्षि॑णया सन्धिया धिया सन्दक्क्षि॑णया। सन्दक्क्षि॑णया दक्क्षि॑णया सꣳ सन्दक्क्षि॑णयोरुच॑क्क्षसोरुच॑क्क्षसा दक्क्षि॑णया सꣳ सन्दक्क्षि॑णयोरुच॑क्क्षसा। दक्क्षि॑णयोरुच॑क्क्षसोरुच॑क्क्षसा दक्क्षि॑णया दक्क्षि॑णयोरुच॑क्क्षसा। उरुच॑क्क्षसेत्युरु च॑क्क्षसा॥ मा मे॑ मे मा मा मऽ आयुरा-युर्म्मे मा मा मऽ आयु॑ः। मऽ आयुरायु॑र्म्मे मऽ आयुः प्प्र प्प्रायु॑र्म्मे मऽ आयुः प्प्र। आयुः प्प्र प्प्रायुरायुः प्प्र मौ॑षीर्म्मोषीः प्प्रायुरायुः प्प्र मौ॑षीः। प्र मौ॑षीर्म्मो-षीः प्प्र प्प्र मौ॑षीर्म्मो मो मौ॑षीः प्प्र प्प्र मौ॑षीर्म्मो। मोषीर्म्मो मो मौ॑षीर्म्मोषी-

[1]प्रगृह्यं स्वरे(वा.प्रा.४.८८) के अनुसार स्वर बाद में होने पर प्रगृह्य पद प्रकृतिभाव से रहता है। मे उदात्तम् (वा.प्रा.१.९७) इस सूत्र में उदात्त मे पद को प्रगृह्य कहा गया है।

म्र्मोऽ अहमहम्मो मोंषीम्र्मोषीम्र्मोऽ अहम्[1]। मोऽ अहमहम्मो मोऽ अहन्तव तवाहम्मो मोऽ अहन्तवं। मोऽ इति मो। अहन्तव तवाहमहन्तवं ब्वीरँब्वीरन्तवाह-महन्तवं ब्वीरम्। तवं ब्वीरँब्वीरन्तव तवं ब्वीरँब्विंदेय ब्विदेय ब्वीरन्तव तवं ब्वीरँब्विंदेय। ब्वीरँब्विंदेय ब्विदेय ब्वीरँब्वीरँब्विंदेय तव तवं ब्विदेय ब्वीरँब्वीरँब्विंदेय तवं। ब्विदेय तव तवं ब्विदेय ब्विदेय तवं देवि देवि तवं ब्विदेय ब्विदेय तवं देवि। तवं देवि देवि तव तवं देवि सन्दृशिं सन्दृशिं देवि तव तवं देवि सन्दृशिं। देवि सन्दृशिं सन्दृशिं देवि देवि सन्दृशिं। सन्दृशीतिं सम् दृशिं॥२३॥

एष तें तऽ एषऽ एष तें गायत्रो गांयत्रस्त्तंऽ एषऽ एष तें गायत्रः। ते गायत्रो गांयत्रस्त्तें ते गायत्रो भागो भागो गांयत्रस्त्तें ते गायत्रो भागः। गायत्रो भागो भागो गांयत्रो गांयत्रो भागऽ इतीतिं भागो गांयत्रो गांयत्रो भागऽ इतिं। भागऽ इतीतिं भागो भागऽ इतिं मे मऽ इतिं भागो भागऽ इतिं मे। इतिं मे मऽ इतीतिं मे सोमांय सोमांय मऽ इतीतिं मे सोमांय। मे सोमांय सोमांय मे मे सोमांय ब्रूताद् ब्रूतात्सोमांय मे मे सोमांय ब्रूतात्। सोमांय ब्रूताद् ब्रूतात्सोमांय सोमांय ब्रूतात्रैष्टुंभस्त्रैस्तुंभो ब्रूतात्सोमांय सोमांय ब्रूतात्रैष्टुंभः। ब्रूतात्रैष्टुंभस्त्रै-स्तुंभो ब्रूताद् ब्रूतात्रैष्टुंभो जागंतो जागंतस्त्रैस्तुंभो ब्रूताद् ब्रूतात्रैष्टुंभो जागंतः। त्रैष्टुंभो जागंतो जागंतस्त्रैस्तुंभस्त्रैष्टुंभो जागंतश्च्छन्दोनामानांञ्छन्दोनामाना-ञ्जागंतस्त्रैस्तुंभस्त्रैष्टुंभो जागंतश्च्छन्दोनामानांम्। त्रैस्तुंभऽ इति त्रैस्तुंभः[2]। जागंतश्च्छन्दोनामानांञ्छन्दोनामानाञ्जागंतो जागंतश्च्छन्दोनामानाँ सा-म्म्राज्यं साम्म्राज्यञ्छन्दोनामानाञ्जागंतो जागंतश्च्छन्दोनामानाँ साम्म्रा-

[1]. मो अहम् यहाँ वा.प्रा.४.८८. के अनुसार स्वर बाद में होने पर प्रगृह्य पद प्रकृतिभाव से रहता है। वा.प्रा.१.९२. के अनुवर्तन में आये सूत्र ओकारश्च पदान्तेऽनवग्रहः (वा.प्रा.१.९४) के अनुसार मो पद में ओकार प्रगृह्यसंज्ञक है।

[2]. तद्धिते चैकाक्षरवृद्धावनिहिते (वा. प्रा. ५.२९) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण नहीं होता है।

ज्यम्[1]। छन्दोनामानाꣳ साम्म्राज्ज्यꣳ साम्म्राज्ज्यञ्छन्दोनामानाञ्छन्दोनामानाꣳ साम्म्राज्ज्यङ्गच्छ गच्छ साम्म्राज्ज्यञ्छन्दोनामानाञ्छन्दोनामानाꣳ साम्म्राज्ज्यङ्गच्छ। छन्दोनामानामिति च्छन्दः नामानाम्। साम्म्राज्ज्यङ्गच्छ गच्छ साम्म्राज्ज्यꣳ साम्म्राज्ज्यङ्गच्छास्म्माकऽ आस्म्माको गच्छ साम्म्राज्ज्यꣳ साम्म्राज्ज्यङ्गच्छास्म्माकः। साम्म्राज्ज्यमिति साम् राज्ज्यम्। गच्छास्म्माकऽ आस्म्माको गच्छ गच्छास्म्माकोस्यस्यास्म्माको गच्छ गच्छास्म्माकोसि। आस्म्माकोस्यस्यास्म्माकऽ आस्म्माकोसि शुक्रः शुक्रोस्यास्म्माकऽ आस्म्माकोसि शुक्रः। असि शुक्रः शुक्रोस्यसि शुक्रस्तें ते शुक्रोस्यसि शुक्रस्तें। शुक्रस्ते ते शुक्रः शुक्रस्ते ग्ग्रह्ल्यो ग्ग्रह्ल्यस्ते शुक्रः शुक्रस्ते ग्ग्रह्ल्यः। ते ग्ग्रह्ल्यो ग्ग्रह्ल्यस्ते ते ग्ग्रह्ल्यों व्विचितो व्विचितो ग्ग्रह्ल्यस्ते ते ग्ग्रह्ल्यों व्विचितः। ग्रह्ल्यों व्विचितों व्विचितो ग्ग्रह्ल्यो ग्ग्रह्ल्यों व्विचितस्त्वा त्वा व्विचितो ग्ग्रह्ल्यो ग्ग्रह्ल्यों व्विचितस्त्वा। व्विचितस्त्वा त्वा व्विचितों व्विचितस्त्वा व्वि वि त्वां व्विचितों व्विचितस्त्वा व्वि। व्विचितऽ इति वि चितः। त्वा व्वि वि त्वां त्वा व्वि चिन्न्वन्तु चिन्न्वन्तु व्वि त्वां त्वा व्वि चिन्न्वन्तु। व्वि चिन्न्वन्तु चिन्न्वन्तु व्वि वि चिन्न्वन्तु। चिन्न्वन्त्विति चिन्न्वन्तु॥२४॥

अभि त्यन्त्यमब्भ्यभि त्यन्देवन्देवन्त्यमब्भ्यभि त्यन्देवम्[2]। त्यन्देवन्देवन्त्यन्त्यन्देवꣳ सवितारꣳ सवितारन्देवन्त्यन्त्यन्देवꣳ सवितारम्। देवꣳ सवितारꣳ सवितारन्देवन्देवꣳ सवितारमोण्ण्योरोण्ण्योः सवितारन्देवन्देवꣳ सवितारमोण्ण्योः[3]। सवितारमोण्ण्योरोण्ण्योः सवितारꣳ सवितारमोण्ण्योः कविक्क्रतुङ्कविक्क्रतुमोण्ण्योः सवितारꣳ सवितारमोण्ण्योः कविक्क्रतुम्। ओण्ण्योः

---

[1]. प्रकृत्या सम्राड्वाम्राजि(वा.प्रा.४.६) इस सूत्र के अनुसार साम्राज्यम् पद में मकार प्रकृतिभाव से रहता है, अतः साꣳराज्यम् ऐसा पाठ नहीं होगा।

[2].वा.प्रा.६.२५. के अधिकार में पढ़े गये सूत्र ६.२६. के अनुसार अभित्यम् यहाँ दो स्पर्श(तकार) होंगे।

[3]. स्येति ण्यत्वं च (वा. प्रा. ४.१५७) इस सूत्र के अनुसार ओण्योः यहां पर एक यकार है।

कुविक्क्रंतुङ्कविक्क्रंतुमोण्ण्योरोण्ण्योः कुविक्क्रंतुमर्चाम्म्यर्चामि कुविक्क्रंतुमोण्ण्योरो-ण्ण्योः कुविक्क्रंतुमर्चामि। कुविक्क्रंतुमर्चाम्म्यर्चामि कुविक्क्रंतुङ्कविक्क्रंतुमर्चामि सुत्यसंवꣳ सुत्यसंवमर्चामि कुविक्क्रंतुङ्कविक्क्रंतुमर्चामि सुत्यसंवम्। कुविक्क्रंतुमितिं कुवि क्क्रंतुम्। अर्चामि सुत्यसंवꣳ सुत्यसंवमर्चाम्म्यर्चामि सुत्यसंवꣳ रत्त्नुधाꣳ रत्त्नुधाꣳ सुत्यसंवमर्चाम्म्यर्चामि सुत्यसंवꣳ रत्त्नुधाम्। सुत्यसंवꣳ रत्त्नुधाꣳ रत्त्नुधाꣳ सुत्यसंवꣳ सुत्यसंवꣳ रत्त्नुधामुब्भ्युभि रत्त्नुधाꣳ सुत्यसंवꣳ सुत्यसं-वꣳ रत्त्नुधामुभि। सुत्यसंवुमितिं सुत्य संवम्। रत्त्नुधामुब्भ्युभि रत्त्नुधाꣳ रत्त्नु-धामुभि प्प्रियम्प्रियमुभि रत्त्नुधाꣳ रत्त्नुधामुभि प्प्रियम्। रत्त्नुधामितिं रत्त्नु धाम्। अुभि प्प्रियम्प्रियमुब्भ्युभि प्प्रियम्मुतिम्मुतिम्प्रियमुब्भ्युभि प्प्रियम्मुतिम्। प्प्रियम्मुतिम्मुतिम्प्रियम्प्रियम्मुतिङ्कविङ्कविम्मुतिम्प्रियम्प्रियम्मुतिङ्कविम्। मुतिङ्क-विङ्कविम्मुतिम्मुतिङ्कविम्। कुविमितिं कुविम्॥ ऊर्द्ध्वा यस्यु यस्योर्द्ध्वोर्द्ध्वा यस्या-मतिंरमतिुर्व्यस्योर्द्ध्वोर्द्ध्वा यस्यामतिंः। यस्यामतिंरमतिुर्व्यस्यु यस्यामतिुर्ब्भा भाऽ अुमतिुर्व्यस्यु यस्यामतिुर्ब्भाः। अुमतिुर्ब्भा भाऽ अुमतिंरमतिुर्ब्भाऽ अदिंद्युतुदर्दि-द्युतुद् भाऽ अुमतिंरमतिुर्ब्भाऽ अदिंद्युतत्। भाऽ अदिंद्युतुदर्दिद्युतुद् भा भाऽ अदिं-द्युतुत्सवींमनि सवींमुन्न्यदिंद्युतुद् भा भाऽ अदिंद्युतुत्सवींमनि। अदिंद्युतुत्सवींमनि सवींमुन्न्यदिंद्युतुदर्दिद्युतुत्सवींमनि हिरंण्ण्यपाणिर्हिरंण्ण्यपाणिः सवींमुन्न्यदिंद्युतु-दर्दिद्युतुत्सवींमनि हिरंण्ण्यपाणिः। सवींमनि हिरंण्ण्यपाणिर्हिरंण्ण्यपाणिः सवीं-मनि सवींमनि हिरंण्ण्यपाणिरमिमीतामिमीतु हिरंण्ण्यपाणिः सवींमनि सवींमनि हिरंण्ण्यपाणिरमिमीत। हिरंण्ण्यपाणिरमिमीतामिमीतु हिरंण्ण्यपाणिर्हिरंण्ण्यपा-णिरमिमीत सुक्क्रतुंः सुक्क्रतुंरमिमीतु हिरंण्ण्यपाणिर्हिरंण्ण्यपाणिरमिमीत सुक्क्रतुंः। हिरंण्ण्यपाणिरितिु हिरंण्ण्य पाणिः। अुमिमीतु सुक्क्रतुंः सुक्क्रतुंरमिमीतामिमीत

सुक्रतुं÷ कृपा कृपा सुक्रतुंरमिमीतामिमीत सुक्रतुं÷ कृपा। सुक्रतुं÷ कृपा कृपा सुक्रतुं÷ सुक्रतुं÷ कृपा स्व॒ स्व॒÷ कृपा सुक्रतुं÷ सुक्रतुं÷ कृपा स्वं÷। सुक्रतु-रितिं सु क्रतुं÷। कृपा स्व॒ स्व॒÷ कृपा कृपा स्वं÷। स्वरिति स्व॒÷[1]॥ प्रजाभ्यंस्त्वा त्वा प्प्रजाभ्यं÷ प्प्रजाभ्यंस्त्वा प्प्रजा॰ प्प्रजास्त्वां प्प्रजाभ्यं÷ प्प्रजाभ्यंस्त्वा प्प्रजा॰। प्रजाभ्यऽ इतिं प्प्र जाभ्यं÷। त्वा प्प्रजा॰ प्प्रजास्त्वां त्वा प्प्रजास्त्वां त्वा प्प्रजास्त्वां त्वा प्प्रजास्त्वां। प्रजास्त्वां त्वा प्प्रजा॰ प्प्रजा-स्त्वांनुप्प्राणंन्त्वनुप्प्राणंन्तु त्वा प्प्रजा॰ प्प्रजास्त्वांनुप्प्राणंन्तु। प्रजाऽ इतिं प्प्र जा॰। त्वानुप्प्राणंन्त्वनुप्प्राणंन्तु त्वा त्वानुप्प्राणंन्तु प्प्रजा॰ प्प्रजाऽ अंनुप्प्राणंन्तु त्वा त्वानुप्प्राणंन्तु प्प्रजा॰। अनुप्प्राणंन्तु प्प्रजा॰ प्प्रजाऽ अंनुप्प्राणंन्त्वनुप्प्राणं-न्तु प्प्रजास्त्वन्त्वम्प्रजाऽ अंनुप्प्राणंन्त्वनुप्प्राणंन्तु प्प्रजास्त्वम्। अनुप्प्राण-न्त्वित्यंनु प्राणंन्तु। प्रजास्त्वन्त्वम्प्रजा॰ प्प्रजास्त्वमंनुप्प्राणिंह्यनुप्प्राणिंहि त्वम्प्रजा॰ प्प्रजास्त्वमंनुप्प्राणिंहि। प्रजाऽ इतिं प्प्र जा॰। त्वमंनुप्प्राणिंह्यनु-प्प्राणिंहि त्वन्त्वमंनुप्प्राणिंहि। अनुप्प्राणिहीत्यंनु प्राणिंहि॥२५॥

शुक्रन्त्वां त्वा शुक्र॒ शुक्रन्त्वां शुक्रेणं शुक्रेणं त्वा शुक्र॒ शुक्रन्त्वां शुक्रेणं। त्वा शुक्रेणं शुक्रेणं त्वा त्वा शुक्रेणं क्रीणामि क्रीणामि शुक्रेणं त्वा त्वा शुक्रेणं क्रीणामि। शुक्रेणं क्रीणामि क्रीणामि शुक्रेणं शुक्रेणं क्रीणामि चन्द्रश्चन्द्र-क्क्रींणामि शुक्रेणं शुक्रेणं क्रीणामि चन्द्रम्। क्रीणामि चन्द्रश्चन्द्रक्क्रींणामि क्रीणामि चन्द्रश्चन्द्रेणं चन्द्रेणं चन्द्रक्क्रींणामि क्रीणामि चन्द्रश्चन्द्रेणं। चन्द्रश्चन्द्रेणं चन्द्रेणं चन्द्रश्चन्द्रश्चन्द्रेणामृतंममृतंश्चन्द्रेणं चन्द्रश्चन्द्रश्चन्द्रेणामृतम्। चन्द्रेणामृतंममृतं-श्चन्द्रेणं चन्द्रेणामृतंममृतेंनामृतेंनामृतंश्चन्द्रेणं चन्द्रेणामृतंममृतेंन। अमृतंममृतें-

---

[1]. स्वः पदमनरणे (वा. प्रा. १.१६६) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार यहाँ स्वः पद रिफित संज्ञक है। अतः स्वरिति स्वः ऐसा स्थितोपस्थित पाठ होगा। रिफितं च संहितायामनिरुक्तम्(वा.प्रा.४.१९)।

नामृतेंनामृतंममृतंममृतेंन। अमृतेनेत्त्यमृतेंन॥ सुग्ग्मे तें ते सुग्ग्मे सुग्ग्मे ते गोग्ग्गोंस्तें सुग्ग्मे सुग्ग्मे ते गोः[1]। ते गोग्ग्गोंस्तें ते गोरुस्म्मेऽ अस्म्मे गोस्तें ते गोरुस्म्मे। गोरुस्म्मेऽ अस्म्मे गोग्ग्गोंरुस्म्मे तें तेस्म्मे गोग्ग्गोंरुस्म्मे तें। अस्म्मे तें तेस्म्मेऽ अस्म्मे तें चन्द्राणिं चन्द्राणिं तेस्म्मेऽ अस्म्मे तें चन्द्राणिं। अस्म्मेऽ इत्त्युस्म्मे। ते चन्द्राणिं चन्द्राणिं ते ते चन्द्राणि तपंसुस्त्तपंसश्चन्द्राणिं ते ते चन्द्राणि तपंसः। चन्द्राणि तपंसुस्त्तपंसश्चन्द्राणिं चन्द्राणि तपंसस्त्तनूस्त्तनूस्त-पंसश्चन्द्राणिं चन्द्राणि तपंसस्त्तनूः। तपंसस्त्तनूस्त्तनूस्त्तपंसुस्त्तपंसस्त्तनूरंस्यसि तनूस्त्तपंसुस्त्तपंसस्त्तनूरंसि। तनूरंस्यसि तनूस्त्तनूरंसि प्प्रजापंतेः प्प्रजापंतेरसि तनूस्त्तनूरंसि प्प्रजापंतेः। असि प्प्रजापंतेः प्प्रजापंतेरस्स्यसि प्प्रजापंतेर्व्वर्ण्णो व्वर्ण्णः प्प्रजापंतेरस्स्यसि प्प्रजापंतेर्व्वर्ण्णः[2]। प्रजापंतेर्व्वर्ण्णो व्वर्ण्णः प्प्रजापंतेः प्प्रजापंतेर्व्वर्ण्णः परमेणं परमेण व्वर्ण्णः प्प्रजापंतेः प्प्रजापंतेर्व्वर्ण्णः परमेणं।[3] प्रजापंतेरितिं प्प्रजा पंतेः। व्वर्ण्णः परमेणं परमेण व्वर्ण्णो व्वर्ण्णः परमेणं पशुनां पशुनां परमेण व्वर्ण्णो व्वर्ण्णः परमेणं पशुनां। परमेणं पशुनां पशुनां परमेणं परमेणं पशुनां क्क्रीयसे क्क्रीयसे पशुनां परमेणं परमेणं पशुनां क्क्रीयसे। पशुनां क्क्रीयसे क्क्रीयसे पशुनां पशुनां क्क्रीयसे सहस्रपोषꣳ संहस्रपोषङ्क्रींयसे पशुनां पशुनां क्क्रीयसे सहस्रपोषम्। क्क्रीयसे सहस्रपोषꣳ संहस्रपोषङ्क्रींयसे क्क्रीयसे सहस्रपोषम्पुंषेयम्पुषेयꣳ सहस्रपोषङ्क्रींयसे क्क्रीयसे सहस्रपोषम्पुंषेयम्। सहस्रपो-षम्पुंषेयम्पुषेयꣳ सहस्रपोषꣳ संहस्रपोषम्पुंषेयम्। सहस्रपोषमितिं सहस्र पोषम्। पुषेयमितिं पुषेयम्॥२६॥

---

[1].वा.प्रा.२.५. के अनुसार युष्मदर्थ में होने से यहाँ ते पद अनुदात है।

[2]. असि (वा. प्रा. २.८) इस सूत्र के अनुसार असि पद यहाँ अनुदात है।

[3].प्रकृत्या कख्योः पफयोश्च(वा.प्रा.३.११) क,ख,प तथा फ बाद में होने पर विसर्जनीय प्रकृतिभाव से रहता है।

मि॒त्रो नो॑ नो मि॒त्रो मि॒त्रो न॒ऽ एही॒ह्या नो॑ मि॒त्रो मि॒त्रो न॒ऽ एहि॑। न॒ऽ
एही॒ह्या नो॑ न॒ऽ एहि॒ सुमि॑त्रध॒ः सुमि॑त्रधऽ इ॒ह्या नो॑ न॒ऽ एहि॒ सुमि॑त्रधः। एहि॑।
इ॒हि॒ सुमि॑त्रध॒ः सुमि॑त्रधऽ इहीहि॒ सुमि॑त्रध॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ सुमि॑त्रधऽ इहीहि॒
सुमि॑त्रध॒ऽ इन्द्र॑स्य। सुमि॑त्रध॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ सुमि॑त्रध॒ः सुमि॑त्रध॒ऽ इन्द्र॑स्यो॒रुमू॒-
रुमिन्द्र॑स्य॒ सुमि॑त्रध॒ः सुमि॑त्रध॒ऽ इन्द्र॑स्यो॒रुम्। सुमि॑त्रध॒ऽ इति॒ सु मि॑त्रधः।
इन्द्र॑स्यो॒रुमू॒रुमिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्यो॒रुमा वि॑श व्वि॒शोरुमिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्यो॒रुमा वि॑श। ऊ॒रु-
मा वि॑श व्वि॒शोरुमू॒रुमा वि॑श॒ दक्षि॑ण॒न्दक्षि॑णँव्वि॒शोरुमू॒रुमा वि॑श॒ दक्षि॑णम्।
आ वि॑श। व्वि॒श॒ दक्षि॑ण॒न्दक्षि॑णँव्विश व्विश॒ दक्षि॑णमु॒शन्नु॒शन्दक्षि॑णँव्विश व्विश॒
दक्षि॑णमु॒शन्। दक्षि॑णमु॒शन्नु॒शन्दक्षि॑ण॒न्दक्षि॑णमु॒शन्नु॒शन्त॑मु॒शन्त॑मु॒शन्द-
क्षि॑ण॒न्दक्षि॑णमु॒शन्नु॒शन्त॑म्[1]। उ॒शन्नु॒शन्त॑मु॒शन्त॑मु॒शन्नु॒शन्नु॒शन्त॑ꣳ स्यो॒नः
स्यो॒नऽ उ॒शन्त॑मु॒शन्नु॒शन्नु॒शन्त॑ꣳ स्यो॒नः। उ॒शन्त॑ꣳ स्यो॒नः स्यो॒नऽ उ॒शन्त॑मु॒-
शन्त॑ꣳ स्यो॒नः स्यो॒नꣳ स्यो॒नꣳ स्यो॒नऽ उ॒शन्त॑मु॒शन्त॑ꣳ स्यो॒नः स्यो॒नम्।
स्यो॒नः स्यो॒नꣳ स्यो॒नꣳ स्यो॒नः स्यो॒नः स्यो॒नम्। स्यो॒नमिति॑ स्यो॒नम्॥ स्वा-
न॒ ब्भ्राज॒ ब्भ्राज॒ स्वान॒ स्वान॒ ब्भ्राजाङ्घा॒रेङ्घा॑रे॒ ब्भ्राज॒ स्वान॒ स्वान॒ ब्भ्राजाङ्घा॑रे[2]।
भ्राजाङ्घा॒रेङ्घा॑रे॒ ब्भ्राज॒ ब्भ्राजाङ्घा॑रे॒ बम्भा॑रे॒ बम्भा॒रेङ्घा॑रे॒ ब्भ्राज॒ ब्भ्राजाङ्घा॑रे॒ बम्भा॑रे।
अङ्घा॑रे॒ बम्भा॑रे॒ बम्भा॒रेङ्घा॒रेङ्घा॑रे॒ बम्भा॑रे॒ हस्त॒ हस्त॒ बम्भा॒रेङ्घा॒रेङ्घा॑रे॒ बम्भा॑रे॒ हस्त॑।
बम्भा॑रे॒ हस्त॒ हस्त॒ बम्भा॑रे॒ बम्भा॑रे॒ हस्त॒ सुह॑स्त॒ सुह॑स्त॒ हस्त॒ बम्भा॑रे॒ बम्भा॑रे॒
हस्त॒ सुह॑स्त। हस्त॒ सुह॑स्त॒ सुह॑स्त॒ हस्त॒ हस्त॒ सुह॑स्त॒ कृशा॑नो॒ कृशा॑नो॒ सुह॑स्त॒
हस्त॒ हस्त॒ सुह॑स्त॒ कृशा॑नो। सुह॑स्त॒ कृशा॑नो॒ कृशा॑नो॒ सुह॑स्त॒ सुह॑स्त॒
कृशा॑नवे॒तऽ ए॒ते कृशा॑नो॒ सुह॑स्त॒ सुह॑स्त॒ कृशा॑नवे॒ते। सुह॒स्तेति॒ सु ह॑स्त।

---

1. उशन् उशन्तम् यहाँ ङ्णो चेद्ध्रस्वपूर्वौ स्वरे पदान्तौ (वा.प्रा.४.१०८) इस सूत्र के अनुसार पदान्त नकार का द्वित्व होता है।

2. वा. प्रा. २.२१. के अनुसार स्वान॑ पद से परवर्ती छः पद आद्युदात्त होते हैं।

कृशानवेतऽ एते कृशानो कृशानवेते वो वऽ एते कृशानो कृशानवेते वः। कृशानोऽ इति कृशानो। एते वो वऽ एतऽ एते वः सोमक्रयणाः सोमक्रयणा वऽ एतऽ एते वः सोमक्रयणाः। वः सोमक्रयणाः सोमक्रयणा वो वः सोमक्रयणास्ताँस्तान्त्सोमक्रयणा वो वः सोमक्रयणास्तान्। सोमक्रयणास्ताँस्तान्त्सोमक्रयणाः सोमक्रयणास्तान्नक्षध्वं रक्षध्वन्तान्त्सोमक्रयणाः सोमक्रयणास्तान्नक्षध्वम्। सोमक्रयणाऽ इति सोम क्रयणाः। तान्नक्षध्वं रक्षध्वन्ताँस्तान्नक्षध्वम्मा मा रक्षध्वन्ताँस्तान्नक्षध्वम्मा। रक्षध्वम्मा मा रक्षध्वं रक्षध्वम्मा वो वो मा रक्षध्वं रक्षध्वम्मा वः। मा वो वो मा मा वो दभन्दभन्वो मा मा वो दभन्। वो दभन्दभन्वो वो दभन्। दभन्निति दभन्॥२७॥

परि मा मा परि परि माग्नेग्ने मा परि परि माग्ने। माग्नेग्ने मा माग्ने दुश्चरितादुश्चरितादग्ने मा माग्ने दुश्चरितात्। अग्ने दुश्चरितादुश्चरितादग्नेग्ने दुश्चरिताद् बाधस्व बाधस्व दुश्चरितादग्नेग्ने दुश्चरिताद् बाधस्व। दुश्चरिताद् बाधस्व बाधस्व दुश्चरितादुश्चरिताद् बाधस्वा मा मा बाधस्व दुश्चरितादुश्चरिताद् बाधस्वा मा[1]। दुश्चरितादिति दुः चरितात्। बाधस्वा मा मा बाधस्व बाधस्वा मा सुचरिते सुचरिते मा बाधस्व बाधस्वा मा सुचरिते। आ मा। मा सुचरिते सुचरिते मा मा सुचरिते भज भज सुचरिते मा मा सुचरिते भज। सुचरिते भज भज सुचरिते सुचरिते भज। सुचरितऽ इति सु चरिते। भजेति भज॥ उदायुषायुषोदुदायुषा स्वायुषा स्वायुषायुषोदुदायुषा स्वायुषा। आयुषा स्वायुषा स्वायुषायुषायुषा स्वायुषोदुत्स्वायुषायुषायुषा स्वायुषोत्। स्वायुषोदुत्स्वायुषा स्वायुषोदस्थामस्थामुत्स्वायुषा स्वायुषोदस्थाम्। स्वायुषेति सु आयुषा। उदस्थामस्थामुदुदस्थाममृताननमृतानस्थामुदुदस्थाममृतान्। अस्थाममृ-

[1]. बाधस्व आ यहाँ वा.प्रा.४.१३४. के अनुसार उदात्त वाला एकीभाव उदात्त होता है।

तान्मृतानस्त्थामस्त्थाममृतारँ ॥ऽ अन्वन्वमृतानस्त्थामस्त्थाममृतारँ ॥ऽ अनु। अमृतारँ ॥ऽ अन्वन्वमृतानमृतारँ ॥ऽ अनु[1] । अन्वित्यनु ॥२८॥

प्रति पन्थाम्पन्थाम्प्रति प्प्रति पन्थामपद्महृप्रपद्महि पन्थाम्प्रति प्प्रति पन्थामपद्महि। पन्थामपद्महृप्रपद्महि पन्थाम्पन्थामपद्महि स्वस्तिगाꣳ स्वस्तिगामपद्महि पन्थाम्पन्थामपद्महि स्वस्तिगाम्। अपद्महि स्वस्तिगाꣳ स्वस्तिगामपद्महृप्रपद्महि स्वस्तिगामनेहसमनेहसꣳ स्वस्तिगामपद्महृप्रपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् । स्वस्तिगामनेहसमनेहसꣳ स्वस्तिगाꣳ स्वस्तिगामनेहसम्। स्वस्तिगामिति स्वस्ति गाम्। अनेहसमित्यनेहसम्॥ येन विश्वा विश्वा येन येन विश्वाः परि परि विश्वा येन येन विश्वाः परि। विश्वाः परि परि विश्वा विश्वाः परि द्विषो द्विषः परि विश्वा विश्वाः परि द्विषः। परि द्विषो द्विषः परि परि द्विषो वृणक्ति वृणक्ति द्विषः परि परि द्विषो वृणक्ति। द्विषो वृणक्ति वृणक्ति द्विषो द्विषो वृणक्ति विन्दते विन्दते वृणक्ति द्विषो द्विषो वृणक्ति विन्दते। वृणक्ति विन्दते विन्दते वृणक्ति वृणक्ति विन्दते वसु वसु विन्दते वृणक्ति वृणक्ति विन्दते वसु। विन्दते वसु वसु विन्दते विन्दते वसु। वस्विति वसु[2] ॥२९॥

अदित्यास्त्वक्त्वगदित्याऽ अदित्यास्त्वगस्यसि त्वगदित्याऽ अदित्यास्त्वगसि। त्वगस्यसि त्वक्त्वगस्यदित्याऽ अदित्याऽ असि त्वक्त्वगस्यदित्यै। अस्यदित्याऽ अदित्याऽ अस्यस्यदित्यै सदः सदोदित्याऽ अस्यस्यदित्यै सदः। अदित्यै सदः सदोदित्याऽ अदित्यै सदऽ आ सीद सीदा सदोदित्याऽ अदित्यै सदऽ आ सीद। सदऽ आ सीद सीदा सदः सदऽ आ सीद। आ सीद। सीदेति सीद॥ अस्तभ्नाद्यान्द्यामस्तभ्नादस्तभ्नाद्यां वृषभो वृषभो द्यामस्तभ्नादस्तभ्ना-

---

1. यथा सौराष्ट्रिका नारी अरॅऽ इत्यभिभाषते। एवं रङ्गः प्रयोक्तव्यो ङकारेण विवर्जितः॥ -या. शि. १९०.

2. अवसाने च (वा. प्रा. ४.१९६) अवसान में स्थित पद का स्थितोपस्थित पाठ होता है।

द्याँवृ॒ष॒भः॑। द्याँवृ॒ष॒भो वृ॒ष॒भो द्यान्द्याँवृ॒ष॒भोऽ अ॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षँवृ॒ष॒भो द्यान्द्याँ-वृ॒ष॒भोऽ अ॒न्तरि॑क्षम्। वृ॒ष॒भोऽ अ॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षँवृ॒ष॒भो वृ॒ष॒भोऽ अ॒न्तरि॑क्ष॒-ममि॑मी॒ताममि॑मीता॒न्तरि॑क्षँवृ॒ष॒भो वृ॒ष॒भोऽ अ॒न्तरि॑क्ष॒ममि॑मीत। अ॒न्तरि॑क्ष॒म-मि॑मी॒ताममि॑मीता॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्ष॒ममि॑मीत वरि॒माणँवरि॒माण॒ममि॑मीता॒न्तरि॑-क्षम॒न्तरि॑क्ष॒ममि॑मीत वरि॒माण॑म्। अमि॑मीत वरि॒माणँवरि॒माण॒ममि॑मी॒ता-मि॑मीत वरि॒माण॑म्पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्या वरि॒माण॒ममि॑मी॒ताममि॑मीत वरि॒माण॑म्पृथि॒-व्याः। वरि॒माण॑म्पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्या वरि॒माणँवरि॒माण॑म्पृथि॒व्याः। पृथि॒व्याऽ इति॑ पृथि॒व्याः॥ आसी॑ददसीद॒दासी॑द॒द्विश्वा॒ विश्वा॑सीद॒दासी॑द॒द्विश्वा॑[1]। अ॒सी॒द्विश्वा॒ विश्वा॑सीददसीद॒द्विश्वा॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॑सीददसीद॒द्विश्वा॒ भुव॑नानि। विश्वा॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॒ विश्वा॒ भुव॑नानि स॒म्म्राट्ट् स॒म्म्राड्ड् भुव॑नानि॒ विश्वा॒ विश्वा॒ भुव॑नानि स॒म्म्राट्। भुव॑नानि स॒म्म्राट्ट् स॒म्म्राड्ड् भुव॑नानि॒ भुव॑नानि स॒म्म्राड्विश्वा॒ विश्वा॑ स॒म्म्राड्ड् भुव॑नानि॒ भुव॑नानि स॒म्म्राड्विश्वा॑। स॒म्म्राड्विश्वा॒ विश्वा॑ स॒म्म्राट्ट् स॒म्म्राड्विश्वेदि॒द्विश्वा॑ स॒म्म्राट्ट् स॒म्म्राड्विश्वेत्। स॒म्म्राडिति॑ स॒म् राट्। विश्वेदि॒द्विश्वा॒ विश्वेत्तानि॒ तानी॒द्विश्वा॒ विश्वेत्तानि॑। इत्तानि॒ तानीदि॒त्तानि॒ वरु॑णस्य॒ वरु॑णस्य॒ तानीदि॒त्तानि॒ वरु॑णस्य। तानि॒ वरु॑णस्य॒ वरु॑णस्य॒ तानि॒ तानि॒ वरु॑णस्य व्र॒तानि॑ व्र॒तानि॒ वरु॑णस्य॒ तानि॒ तानि॒ वरु॑णस्य व्र॒तानि॑। वरु॑णस्य व्र॒तानि॑ व्र॒तानि॒ वरु॑णस्य॒ वरु॑णस्य व्र॒तानि॑। व्र॒तानीति॑ व्र॒तानि॑॥३०॥

वने॑षु॒ वि वि वने॑षु॒ वने॑षु॒ व्य॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षँवि वने॑षु॒ वने॑षु॒ व्य॒न्तरि॑-क्षम्[2]। व्य॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षँवि व्य॒न्तरि॑क्षन्ततान ततान॒न्तरि॑क्षँवि

---

[1].वा.प्रा.४.२७. में उल्लिखित न होने से यहाँ विश्वा पद ऊष्मान्त नहीं है।

[2].वि अन्तरिक्षम् यहाँ स्वरे भाव्यन्तस्थाम्(वा.प्रा.४.४७) इस सूत्र से इकार का अन्तस्थ निर्दिष्ट है। विकारी यथासन्नम्(वा.प्रा.१.१४२) यह सूत्र विकारी इ उच्चारणस्थान की दृष्टि से समीपवर्ती वर्ण को प्राप्त करता है, कहता है। तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य(वा.प्रा.१.१३४) यह सूत्र सप्तमी के द्वारा निर्दिष्ट होने पर विधीयमान कार्य वर्णान्तराव्यवहित पूर्व को कहता है।

द्यन्तरिक्षन्ततान। अन्तरिक्षन्ततान ततानान्तरिक्षमन्तरिक्षन्ततान् ब्वाजँब्वाजन्ततानान्तरिक्षमन्तरिक्षन्ततान् ब्वाजम्। ततान् ब्वाजँब्वाजन्ततान ततान् ब्वाजमर्ब्वत्स्वर्ब्वत्सु ब्वाजन्ततान ततान् ब्वाजमर्ब्वत्सु। ब्वाजमर्ब्वत्स्वर्ब्वत्सु ब्वाजँब्वाजमर्ब्वत्सु पयः पयोर्ब्वत्सु ब्वाजँब्वाजमर्ब्वत्सु पयः। अर्ब्वत्सु पयः पयोर्ब्व-त्स्वर्ब्वत्सु पयऽ उस्रियासूस्रियासु पयोर्ब्वत्स्वर्ब्वत्सु पयऽ उस्रियासु। अर्ब्वत्स्विव-त्यर्ब्वत् सु। पयऽ उस्रियासूस्रियासु पयः पयऽ उस्रियासु। उस्रियास्वित्युस्रियासु ॥ हृत्सु क्रतुङ्क्रतुꣳ हृत्सु हृत्सु क्रतुँब्वरुणो ब्वरुणः क्रतुꣳ हृत्सु हृत्सु क्रतुँब्वरुणः। हृत्स्विति हृत् सु[1]। क्रतुँब्वरुणो ब्वरुणः क्रतुङ्क्रतुँब्वरुणो ब्विक्षु ब्विक्षु ब्वरुणः क्रतुङ्क्रतुँब्वरुणो ब्विक्षु। ब्वरुणो ब्विक्षु ब्विक्षु ब्वरुणो ब्वरुणो ब्विक्ष्वग्निमग्निँब्विक्षु ब्वरुणो ब्वरुणो ब्विक्ष्वग्निम्। ब्विक्ष्वग्निमग्निँब्विक्षु ब्विक्ष्वग्निन्दिवि दिव्यग्निँ-ब्विक्षु ब्विक्ष्वग्निन्दिवि। अग्निन्दिवि दिव्यग्निमग्निन्दिवि सूर्य्यꣳ सूर्य्यन्दि-व्यग्निमग्निन्दिवि सूर्य्यम्। दिवि सूर्य्यꣳ सूर्य्यन्दिवि दिवि सूर्य्यमदधाददधात्सू-र्य्यन्दिवि दिवि सूर्य्यमदधात्। सूर्य्यमदधाददधात्सूर्य्यꣳ सूर्य्यमदधात्सोमꣳ सोममदधात्सूर्य्यꣳ सूर्य्यमदधात्सोमम्। अदधात्सोमꣳ सोममदधाददधात्सो-ममद्रावद्रौ सोममदधाददधात्सोममद्रौ। सोममद्रावद्रौ सोमꣳ सोममद्रौ। अद्रावित्यद्रौ॥३१॥

सूर्य्यस्य चक्षुश्चक्षुः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य चक्षुरा रोह रोहा चक्षुः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य चक्षुरा रोह। चक्षुरा रोह रोहा चक्षुश्चक्षुरा रोहाग्नेरग्ने रोहा चक्षुश्चक्षुरा रोहाग्नेः। आ रोह। रोहाग्नेरग्ने रोह रोहाग्नेरक्ष्णोक्ष्णोग्ने

पदान्तपदाद्योः सन्धिः(वा.प्रा.३.३) से सन्धिकार्य पदान्त तथा पदादि में होना कहा गया है। उदात्तस्यान्तस्थीभावे स्वरितं परमनुदात्तम्(वा.प्रा.४.४९) इस सूत्र से परवर्ती अनुदात्त का स्वरित स्वर कहा गया है। युवर्णौ यवौ क्षैप्रः(वा.प्रा) इस सूत्र से क्षैप्रसंज्ञक स्वरित का विधान किया गया है।

[1]. स्विति चानतौ (वा. प्रा. ५.१४) इस सूत्र के अनुसार हृत्सु पद में पृथक्करण हुआ है।

रोह रोहाग्ग्नेरक्ष्णः[1]। अग्ग्नेरक्ष्णोक्ष्णोग्ग्नेरग्ग्नेरक्ष्णः कनीनकङ्कनीनकमक्ष्णो-ग्ग्नेरग्ग्नेरक्ष्णः कनीनकम्। अक्ष्णः कनीनकङ्कनीनकमक्ष्णोक्ष्णः कनीनकम्। कनीनकमिति कनीनकम्॥ यत्रैतशेभिरेतशेभिर्य्यत्र यत्रैतशेभिरीयसऽ ईयसऽ एतशेभिर्य्यत्र यत्रैतशेभिरीयसे। एतशेभिरीयसऽ ईयसऽ एतशेभिरेतशेभिरीयसे बभ्राजमानो बभ्राजमानऽ ईयसऽ एतशेभिरेतशेभिरीयसे बभ्राजमानः। ईयसे बभ्राजमानो बभ्राजमानऽ ईयसऽ ईयसे बभ्राजमानो विपश्चिता विपश्चिता बभ्राज-मानऽ ईयसऽ ईयसे बभ्राजमानो विपश्चिता। भ्राजमानो विपश्चिता विपश्चिता बभ्राजमानो बभ्राजमानो विपश्चिता। विपश्चितेति विपः चिता॥३२॥

उस्रावेतमितमोस्राऽ उस्रावेतन्धूर्षाहौ धूःसहावितमोस्राऽ उस्रावेतन्धूर्षा-हौ[2]। एतम्। इतन्धूर्षाहौ धूःसहावितमितन्धूर्षाहौ युज्येथाँ॒ऽयुज्येथान्धूःस-हावितमितन्धूर्षाहौ युज्येथाम्। धूर्षाहौ युज्येथाँ॒ऽयुज्येथान्धूःसहौ धूर्षाहौ यु-ज्येथामनश्रूऽ अनश्रू युज्येथान्धूःसहौ धूर्षाहौ युज्येथामनश्रू। धूःसहाविति धूः सहौ। युज्येथामनश्रूऽ अनश्रू युज्येथाँ॒ऽयुज्येथामनश्रूऽ अवीरहणाववीरह-नावनश्रू युज्येथाँ॒ऽयुज्येथामनश्रूऽ अवीरहणौ। अनश्रूऽ अवीरहणाववीरहनाव-नश्रूऽ अनश्रूऽ अवीरहणौ ब्रह्मचोदनौ ब्रह्मचोदनाववीरहनावनश्रूऽ अनश्रूऽ अवीरहणौ ब्रह्मचोदनौ। अनश्रूऽ इत्यनश्रू। अवीरहणौ ब्रह्मचोदनौ ब्रह्मचोदनाव-वीरहनाववीरहणौ ब्रह्मचोदनौ। अवीरहनावित्यवीर हनौ। ब्रह्मचोदनाविति ब्रह्म चोदनौ॥ स्वस्ति यजमानस्य यजमानस्य स्वस्ति स्वस्ति यजमानस्य गृहा-न्गृहान्यजमानस्य स्वस्ति स्वस्ति यजमानस्य गृहान्। यजमानस्य गृहान्गृ-

---

[1]. अक्ष्णः यहाँ यैस्तु परं तैर्न पूर्वम्(वा.प्रा.४.१०५) इस सूत्र से ककार की द्विरुक्ति तथा नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः(वा.प्रा.४.१०६) इस सूत्र से णकार की द्विरुक्ति का अभाव होगा।

[2]. स्वर्धूः सांसहयोः (वा. प्रा. ३.४१) इस सूत्र के अनुसार धूः सहौ यहाँ धूः का विसर्जनीय रेफ एवं परवर्ती सकार षकार हो गया है। वा.प्रा.३.१२२. के अनुसार धूः से परे सह का अकार दीर्घ होता है।

हान्यजंमानस्य यजंमानस्य गृहान्गंच्छतङ्गच्छतङ्गृहान्यजंमानस्य यजंमानस्य गृहान्गंच्छतम्[1]। गृहान्गंच्छतङ्गच्छतङ्गृहान्गृहान्गंच्छतम्। गच्छतमिति गच्छतम्॥२३॥

भद्रो में मे भद्रो भद्रो मेंस्यसि मे भद्रो भद्रो मेंसि। मेस्यसि मे मेसि प्र प्रासिं मे मेसि प्र। असि प्र प्रास्यंसि प्र च्यंवस्व च्यवस्व प्रास्यंसि प्र च्यंवस्व। प्र च्यंवस्व च्यवस्व प्र प्र च्यंवस्व भुवो भुवश्च्यवस्व प्र प्र च्यंवस्व भुवः। च्यवस्व भुवो भुवश्च्यवस्व च्यवस्व भुवस्पते पते भुवश्च्यवस्व च्यवस्व भुवस्पते। भुवस्पते पते भुवो भुवस्पते विश्वांनि विश्वांनि पते भुवो भुवस्पते विश्वांनि। पते विश्वांनि विश्वांनि पते पते विश्वांन्यभ्यभि विश्वांनि पते पते विश्वांन्यभि। विश्वांन्यभ्यभि विश्वांनि विश्वांन्यभि धामांनि धामांन्यभि विश्वांनि विश्वांन्यभि धामांभि। अभि धामांनि धामांन्यभ्यभि धामांनि। धामानीति धामांनि॥ मा त्वां त्वा मा मा त्वां परिपरिणंः परिपरिणंस्त्वा मा मा त्वां परिपरिणंः। त्वा परिपरिणंः परिपरिणंस्त्वा त्वा परिपरिणों विदन्विद-न्परिपरिणंस्त्वा त्वा परिपरिणों विदन्। परिपरिणों विदन्विदन्परिपरिणंः परिपरिणों विदन्परिपन्थिनंः परिपन्थिनों विदन्परिपरिणंः परिपरिणों विदन्प-रिपन्थिनंः । परिपरिणऽ इतिं परि परिणंः। विदन्परिपन्थिनंः परिपन्थिनों विदन्विदन्परिपन्थिनो वृका वृकाः परिपन्थिनों विदन्विदन्परिपन्थिनो वृकाः। परिपन्थिनो वृका वृकाः परिपन्थिनंः परिपन्थिनो वृकाऽ अघायवोंघयवो वृकाः परिपन्थिनंः परिपन्थिनो वृकाऽ अघायवंः। परिपन्थिनऽ इतिं परि पन्थिनंः॥ वृकाऽ अघायवोंघयवो वृका वृकाऽ अघायवंः। अघयवऽ इत्यंघ यवंः॥ श्येनो

[1].वा.प्रा.४.२५. के अनुसार छकार बाद में होने पर स्वर चकार से व्यवहित होता है।

भू॒त्वा भू॒त्वा श्श्ये॒नः॒ श्ये॒नो भू॒त्वा प॒रा॒ परा॑ भू॒त्वा श्श्ये॒नः॒ श्ये॒नो भू॒त्वा परा॑[1]। भू॒त्वा प॒रा॒ परा॑ भू॒त्वा भू॒त्वा परा॑ पत प॒त॒ परा॑ भू॒त्वा भू॒त्वा परा॑ पत। परा॑ पत प॒त॒ प॒रा॒ परा॑ प॒त॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य प॒त॒ प॒रा॒ परा॑ प॒त॒ यज॑मानस्य। प॒त॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य पत प॒त॒ यज॑मानस्य गृ॒हान्गृ॒हान्यज॑मानस्य पत प॒त॒ यज॑मानस्य गृ॒हान्। यज॑मानस्य गृ॒हान्गृ॒हान्यज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य गृ॒हान्ग॑च्छ गच्छ गृ॒हान्यज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य गृ॒हान्ग॑च्छ। गृ॒हान्ग॑च्छ गच्छ गृ॒हान्गृ॒हान्ग॑च्छ॒ तत्तद् ग॑च्छ गृ॒हान्गृ॒हान्ग॑च्छ॒ तत्। ग॒च्छ॒ तत्तद् ग॑च्छ गच्छ॒ तन्नौ॑ नौ॒ तद् ग॑च्छ गच्छ॒ तन्नौ॑। तन्नौ॑ नौ॒ तत्तन्नौ॑ सँस्कृ॒तꣳ सँस्कृ॒तन्नौ॒ तत्तन्नौ॑ सँस्कृ॒तम्। नौ॒ सँ॒स्कृ॒तꣳ सँस्कृ॒तन्नौ॑ नौ सँस्कृ॒तम्। सँ॒स्कृ॒तमिति॑ सँस्कृतम्[2] ॥३४॥

नमो॑ मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ नमो॒ नमो॑ मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य॒ वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॒ नमो॒ नमो॑ मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य। मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य॒ वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य॒ चक्ष॑से॒ चक्ष॑से॒ वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य॒ चक्ष॑से। वरु॑णस्य॒ चक्ष॑से॒ चक्ष॑से॒ वरु॑णस्य॒ वरु॑णस्य॒ चक्ष॑से म॒हो म॒हश्चक्ष॑से॒ वरु॑णस्य॒ वरु॑णस्य॒ चक्ष॑से म॒हः। चक्ष॑से म॒हो म॒हश्चक्ष॑से॒ चक्ष॑से म॒हो दे॒वाय॑ दे॒वाय॑ म॒हश्चक्ष॑से॒ चक्ष॑से म॒हो दे॒वाय॑। म॒हो दे॒वाय॑ दे॒वाय॑ म॒हो म॒हो दे॒वाय॒ तत्तद्दे॒वाय॑ म॒हो म॒हो दे॒वाय॒ तत्। दे॒वाय॒ तत्तद्दे॒वाय॑ दे॒वाय॒ तदृ॒तमृ॒तन्तद्दे॒वाय॑ दे॒वाय॒ तदृ॒तम्। तदृ॒तमृ॒तन्तत्तदृ॒तꣳ स॑पर्य्यत सपर्य्यतऽ ऋ॒तन्तत्तदृ॒तꣳ स॑पर्य्यत। ऋ॒तꣳ स॑पर्य्यत सपर्य्यतऽ ऋ॒तमृ॒तꣳ स॑पर्य्यत। स॒प॒र्य्य॒तेति॑ सपर्य्यत॥ दू॒रे॒दृशे॑ दे॒वजा॑ताय दे॒वजा॑ता-

---

[1]. वा. प्रा. ४.१५५. के अनुसार श्येनः पद में एक यकार है।

[2].वा.प्रा.५.४३. के अनुसार सँस्कृतम् पद में उपधाभूत स्वर के अनुनासिक होने से इसका पृथक्करण नहीं होता है। वा.प्रा.५.४४. में काण्वों के मत का उल्लेख करते हुये अनुस्वार का आगम होने से इस पद में पृथक्करण नहीं माना गया है।

य दूरेदृशे दूरेदृशे देवजाताय केतवे केतवे देवजाताय दूरेदृशे दूरेदृशे देवजाताय केतवे। दूरेदृशऽ इति दूरे दृशे। देवजाताय केतवे केतवे देवजाताय देवजाताय केतवे दिवो दिवः केतवे देवजाताय देवजाताय केतवे दिवः। देवजातायेति देव जाताय। केतवे दिवो दिवः केतवे केतवे दिवस्प्पुत्राय पुत्राय दिवः केतवे केतवे दिवस्प्पुत्राय[1]। दिवस्प्पुत्राय पुत्राय दिवो दिवस्प्पुत्राय सूर्य्याय सूर्य्याय पुत्राय दिवो दिवस्प्पुत्राय सूर्य्याय। पुत्राय सूर्य्याय सूर्य्याय पुत्राय पुत्राय सूर्य्याय शꣳसत शꣳसत सूर्य्याय पुत्राय पुत्राय सूर्य्याय शꣳसत। सूर्य्याय शꣳसत शꣳसत सूर्य्याय सूर्य्याय शꣳसत। शꣳसतेति शꣳसत॥३५॥

व्वरुणस्योत्तम्भनमुत्तम्भनँव्वरुणस्य व्वरुणस्योत्तम्भनमस्यस्युत्तम्भनँ-व्वरुणस्य व्वरुणस्योत्तम्भनमसि[2]। उत्तम्भनमस्यस्युत्तम्भनमुत्तम्भनमसि स्कम्भसर्ज्जनी स्कम्भसर्ज्जनीऽ अस्युत्तम्भनमुत्तम्भनमसि स्कम्भसर्ज्जनी। असि स्कम्भसर्ज्जनी स्कम्भसर्ज्जनीऽ अस्यसि स्कम्भसर्ज्जनी स्त्थ स्त्थ स्कम्भसर्ज्जनीऽ अस्यसि स्कम्भसर्ज्जनी स्त्थः। स्कम्भसर्ज्जनी स्त्थ स्त्थ स्कम्भसर्ज्जनी स्कम्भसर्ज्जनी स्त्थऽ ऋतसदन्यृतसदनी स्त्थ स्कम्भसर्ज्जनी स्कम्भसर्ज्जनी स्त्थऽ ऋतसदनी। स्कम्भसर्ज्जनीऽ इति स्कम्भ सर्ज्जनी। स्त्थऽ ऋतसदन्यृतसदनी स्त्थ स्त्थऽ ऋतसदन्यृतसदनमृतसदनमृतसदनी स्त्थ स्त्थऽ ऋतसदन्यृतसदनम्। ऋतसदन्यृतसदनमृतसदनमृतसदन्यृतसदन्यृतसदनमा सीद सीदऽ ऋतसदनमृतसदन्यृतसदन्यृतसदन सीद। ऋतसदनीत्यृत सदनी। ऋत

[1].वा.मा.३.२४. के अनुसार यहाँ दिवः का विसर्जनीय सकार हो गया है।

[2]. वा. मा. ५.३८. के अनुसार उत्तम्भनम् पद का पृथक्करण नहीं होता है एवं वा. मा. ६.२९. के अनुसार इस पद में तीन स्पर्श (त) होते हैं।

सदनमा सीद सीदऽ ऋतसदनमृतसदनमा सीद। ऋतसदनमित्यृत सदनम्। आ सीद। सीदेति सीद॥३६॥

या ते ते या या ते धामानि धामानि ते या या ते धामानि। ते धामानि धामानि ते ते धामानि हविषा हविषा धामानि ते ते धामानि हविषा। धामानि हविषा हविषा धामानि धामानि हविषा यजन्ति यजन्ति हविषा धामानि धामानि हविषा यजन्ति। हविषा यजन्ति यजन्ति हविषा हविषा यजन्ति ता ता यजन्ति हविषा हविषा यजन्ति ता। यजन्ति ता ता यजन्ति यजन्ति ता तें ते ता यजन्ति यजन्ति ता तें[1]। ता तें ते ता ता ते व्विश्वा व्विश्वा ते ता ता ते व्विश्वा। ते व्विश्वा व्विश्वा ते ते व्विश्वा परिभूः परिभूर्व्विश्वा ते ते व्विश्वा परिभूः। व्विश्वा परिभूः परिभूर्व्विश्वा व्विश्वा परिभूरस्त्वस्तु परिभूर्व्विश्वा व्विश्वा परिभूरस्तु। परिभूरस्त्वस्तु परिभूः परिभूरस्तु यज्ज्ञँय्यज्ज्ञमस्तु परिभूः परिभूरस्तु यज्ज्ञम्। परिभूरिति परि भूः। अस्तु यज्ज्ञँय्यज्ज्ञमस्त्वस्तु यज्ज्ञम्। यज्ज्ञमिति यज्ज्ञम्॥ गयस्फानः प्प्रतरणः प्प्रतरणो गयस्फानो गयस्फानः प्प्रतरणः सुवीरः सुवीरः प्प्रतरणो गयस्फानो गयस्फानः प्प्रतरणः सुवीरः। गयस्फानऽ इति गय स्फानः। प्रतरणः सुवीरः सुवीरः प्प्रतरणः प्प्रतरणः सुवीरोवीरहावीरहा सुवीरः प्प्रतरणः प्प्रतरणः सुवीरोवीरहा। प्रतरणऽ इति प्प्र तरणः। सुवीरोवीरहावीरहा सुवीरः सुवीरोवीरहा प्प्र प्प्रावीरहा सुवीरः सुवीरोवीरहा प्प्र। सुवीरऽ इति सु व्वीरः। अवीरहा प्प्र प्प्रावीरहावीरहा प्प्र चर चर प्प्रावीरहावीरहा प्प्र चर। अवीरहेत्यवीर हा। प्र चर चर प्प्र प्प्र चरा सोम सोम चर प्प्र प्प्र चरा सोम[2]। चरा सोम सोम चर चरा सोम दुर्य्यान्दुर्य्यान्त्सोम

---

[1]. वा. प्रा. ४.३१. के अनुसार यहाँ ता पद स्वरान्त है।

[2].वा.प्रा.३.१२९. के अनुसार चर सोम यहां ह्रस्व स्वर दीर्घ होकर चरा सोम होता है।

चर चरा सोम॒ दुर्व्वान्। सो॒म॒ दुर्व्वा॒न्दुर्व्वांन्त्सोम सोम॒ दुर्व्वान्। दुर्व्वा॒निति॒ दुर्व्वान्॥३७॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे चतुर्थोऽध्यायः॥

॥पञ्चमोध्यायः॥

हरिः॑ ॐ॥ अ॒ग्नेस्त॒नूस्त॒नूर॒ग्नेर॒ग्नेस्त॒नूर॑स्यसि त॒नूर॒ग्नेर॒ग्नेस्त॒नूर॑सि। त॒नूर॑स्यसि त॒नूस्त॒नूर॑सि॒ व्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वेसि त॒नूस्त॒नूर॑सि॒ व्विष्ण॑वे। अ॒सि॒ व्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वेस्यसि॒ व्विष्ण॑वे त्वा त्वा॒ व्विष्ण॑वेस्यसि॒ व्विष्ण॑वे त्वा। व्विष्ण॑वे त्वा त्वा॒ व्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वे त्वा॒ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य त्वा॒ व्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वे त्वा॒ सोम॑स्य । त्वा॒ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य त्वा त्वा॒ सोम॒स्याति॑थे॒रति॑थेः सोम॑स्य त्वा त्वा॒ सोम॒स्याति॑थेः। सोम॒स्याति॑थे॒रति॑थेः सोम॑स्य॒ सोम॒स्याति॑थेरा-ति॒त्थ्यमा॑ति॒त्थ्यमति॑थेः सोम॑स्य॒ सोम॒स्याति॑थेराति॒त्थ्यम्। अति॑थेराति॒त्थ्य-मा॑ति॒त्थ्यमति॑थे॒रति॑थेराति॒त्थ्यꣳ श्ये॒नाय॑ श्श्ये॒नाया॑ति॒त्थ्यमति॑थे॒रति॑थेराति॒त्थ्यꣳ श्ये॒नाय॑[1]। आ॒ति॒त्थ्यꣳ श्ये॒नाय॑ श्श्ये॒नाया॑ति॒त्थ्यमा॑ति॒त्थ्यꣳ श्ये॒नाय॑ सोम॒भृते॑ सोम॒भृते॑ श्श्ये॒नाया॑ति॒त्थ्यमा॑ति॒त्थ्यꣳ श्ये॒नाय॑ सोम॒भृते॑। श्ये॒नाय॑ सोम॒भृते॑ सोम॒भृते॑ श्श्ये॒नाय॑ श्श्ये॒नाय॑ सोम॒भृते॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ सोम॒भृते॑ श्श्ये॒नाय॑ श्श्ये॒नाय॑ सोम॒भृते॒ग्ग्नये॑। सो॒म॒भृ॒ते॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ सोम॒भृते॑ सोम॒भृते॒ग्ग्नये॑ रायस्प्पोष॒दे रा॑यस्प्पो-ष॒दे॒ग्ग्नये॑ सोम॒भृते॑ सोम॒भृते॒ग्ग्नये॑ रायस्प्पोष॒दे। सो॒म॒भृ॒त॒ऽ इति॑ सोम॒ भृते॑। अ॒ग्ग्नये॑ रायस्प्पोष॒दे रा॑यस्प्पोष॒दे॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ रायस्प्पोष॒दे। रा॒य॒स्प्पो॒ष॒दऽ इति॑ रायस्प्पोष॒ दे॥१॥

अ॒ग्नेर्ज्ज॒नित्र॑ञ्ज॒नित्र॑म॒ग्नेर॒ग्नेर्ज्ज॒नित्र॑मस्यसि ज॒नित्र॑म॒ग्नेर॒ग्नेर्ज्ज॒नित्र॑मसि। ज॒नित्र॑मस्यसि ज॒नित्र॑ञ्ज॒नित्र॑मसि॒ व्वृष॑णौ॒ व्वृष॑णावसि ज॒नित्र॑ञ्ज॒नित्र॑मसि॒ व्वृष॑णौ। अ॒सि॒ व्वृष॑णौ॒ व्वृष॑णावस्यसि॒ व्वृष॑णौ स्त्थ स्त्थो॒ व्वृष॑णावस्यसि॒ व्वृष॑णौ स्त्थः। व्वृष॑णौ स्त्थ स्त्थो॒ व्वृष॑णौ॒ व्वृष॑णौ स्त्थऽ उ॒र्व्वश्श्यु॒र्व्वशी॑ स्त्थो॒ व्वृष॑णौ॒ व्वृष॑णौ स्त्थऽ उ॒र्व्वशी॑।

---

[1]. आतित्थ्यꣳ श्येनाय यहाँ (वा.प्रा.४.१०१) से शकार की द्विरुक्ति नहीं होती है वा.प्रा. ८.२१. में अनुसार व्यञ्जनों में परिगणित होने से स्वर के बाद शकार नहीं आ रहा है अतः द्विरुक्ति नहीं होगी।

स्थ॒ऽ उ॒र्व्वश्श्यु॒र्व्वशीं स्त्थ स्त्थऽ उ॒र्व्वश्श्या॒यु॒रा॒यु॒रु॒र्व्वशीं स्त्थ स्त्थऽ उ॒र्व्वश्श्या॒यु॒ः[1]। उ॒र्व्वश्श्या॒यु॒रा॒यु॒रु॒र्व्वश्श्यु॒र्व्वश्श्या॒यु॒ः पु॑रू॒रवा॑ः पुरू॒रवा॑ऽ आ॒युरु॒र्व्वश्श्यु॒र्व्वश्श्या॒यु॒ः पु॑रू॒रवा॑ः। आ॒यु॒ः पु॑रू॒रवा॑ः पुरू॒रवा॑ऽ आ॒यु॒रा॒यु॒ः पु॑रू॒रवा॑ मन्थामि मन्थामि पुरू॒रवा॑ऽ आ॒यु॒रा॒यु॒ः पु॑रू॒रवा॑ मन्थामि। पु॒रू॒रवा॑ मन्थामि मन्थामि पु॒रू॒रवा॑ः पु॒रू॒रवा॑ मन्थामि॥ म॒न्था॒मीतिं मन्थामि॥२॥

भवं॑तन्नो नो॒ भवं॑त॒म्भवं॑तन्न॒ः सम॑नसौ॒ सम॑नसौ नो॒ भवं॑त॒म्भवं॑तन्न॒ः सम॑नसौ[2]। न॒ः सम॑नसौ॒ सम॑नसौ नो न॒ः सम॑नसौ॒ सचे॑तसौ॒ सचे॑तसौ॒ सम॑नसौ नो न॒ः सम॑नसौ॒ सचे॑तसौ। सम॑नसौ॒ सचे॑तसौ॒ सचे॑तसौ॒ सम॑नसौ॒ सम॑नसौ॒ सचे॑तसावरे॒पसा॑वरे॒पसौ॒ सचे॑तसौ॒ सम॑नसौ॒ सम॑नसौ॒ सचे॑तसावरे॒पसौ॑। सम॑नसा॒विति॒ स म॑नसौ। सचे॑तसावरे॒पसा॑वरे॒पसौ॒ सचे॑तसौ॒ सचे॑तसावरे॒पसौ॑। सचे॑तसा॒विति॒ स चे॑तसौ। अ॒रे॒पसा॒वित्य॑रे॒पसौ॑॥ मा य॒ज्ञँ᳖ य॒ज्ञम्मा मा य॒ज्ञꣳ हिꣳसिष्टꣳ हिꣳसिष्टँ᳖य॒ज्ञम्मा मा य॒ज्ञꣳ हिꣳसिष्टम्। य॒ज्ञꣳ हिꣳसिष्टꣳ हिꣳसिष्टँ᳖य॒ज्ञँ᳖य॒ज्ञꣳ हिꣳसिष्ट॒म्मा मा हिꣳसिष्टँ᳖य॒ज्ञँ᳖य॒ज्ञꣳ हिꣳसिष्ट॒म्मा। हि॒ꣳसि॒ष्ट॒म्मा मा हिꣳसिष्टꣳ हिꣳसिष्ट॒म्मा य॒ज्ञप॑तिँ᳖य॒ज्ञप॑ति॒म्मा हिꣳसिष्टꣳ हिꣳसिष्ट॒म्मा य॒ज्ञप॑तिम्। मा य॒ज्ञप॑तिँ᳖य॒ज्ञप॑ति॒म्मा मा य॒ज्ञप॑तिञ्जातवेदसौ जातवेदसौ य॒ज्ञप॑ति॒म्मा मा य॒ज्ञप॑तिञ्जातवेदसौ। य॒ज्ञप॑तिञ्जातवेदसौ जातवेदसौ य॒ज्ञप॑तिँ᳖य॒ज्ञप॑तिञ्जातवेदसौ शि॒वौ शि॒वौ जा॑तवेदसौ य॒ज्ञप॑तिँ᳖य॒ज्ञप॑तिञ्जातवेदसौ शि॒वौ। य॒ज्ञप॑ति॒मितिं य॒ज्ञ प॑तिम्। जा॒त॒वे॒द॒सौ॒ शि॒वौ शि॒वौ जा॑तवेदसौ जातवेदसौ शि॒वौ भं॑वत॒म्भवतꣳ शि॒वौ जा॑तवेदसौ जातवेदसौ शि॒वौ भं॑वतम्। जा॒त॒वे॒द॒सा॒वितिं जात ब्वेदसौ। शि॒वौ भं॑वत॒म्भवतꣳ शि॒वौ शि॒वौ

---

1. आयुरर्यमोर्वश्यस्तिभ्यः (वा. प्रा. २.६०) इस सूत्र के अनुसार यहाँ उर्वशी से परवर्ती आयुः पद अन्तोदात्त है।

2. मकारः प्रत्यये स्पर्शे भवेत्तद्वर्गपञ्चमः – व. शि. १४६। भवतम् एवं नः की सन्धि होने पर मकार नकार हो जायगा।

भवतमद्याद्य भवतꣳ शिवौ शिवौ भवतमद्य। भवतमद्याद्य भवतम्भवतमद्य नो नोद्य भवतम्भवतमद्य नः[1]। अद्य नो नोद्याद्य नः। नऽ इति नः॥३॥

अग्नावग्निरग्निरग्नावग्नावग्निश्चरति चरत्यग्निरग्नावग्नावग्निश्चरति। अग्निश्चरति चरत्यग्निरग्निश्चरति प्प्रविष्टः प्प्रविष्टश्चरत्यग्निरग्निश्चरति प्प्रविष्टः। चरति प्प्रविष्टः प्प्रविष्टश्चरति चरति प्प्रविष्टऽ ऋषीणामृषीणाम्प्रविष्टश्चरति चरति प्प्रविष्टऽ ऋषीणाम्। प्रविष्टऽ ऋषीणामृषीणाम्प्रविष्टः प्प्रविष्टऽ ऋषीणाम्पुत्रः पुत्रऽ ऋषीणाम्प्रविष्टः प्प्रविष्टऽ ऋषीणाम्पुत्रः। प्रविष्टऽ इति प्प्र विष्टः। ऋषीणाम्पुत्रः पुत्रऽ ऋषीणामृषीणाम्पुत्रोऽ अभिशस्तिपावाभिशस्तिपावा पुत्रऽ ऋषीणामृषीणाम्पुत्रोऽ अभिशस्तिपावा। पुत्रोऽ अभिशस्तिपावाभिशस्तिपावा पुत्रः पुत्रोऽ अभिशस्तिपावा। अभिशस्तिपावेत्यभिशस्ति पावा॥ स नो नः स स नः स्योनः स्योनो नः स स नः स्योनः। नः स्योनः स्योनो नो नः स्योनः सुयजा सुयजा स्योनो नो नः स्योनः सुयजा। स्योनः सुयजा सुयजा स्योनः स्योनः सुयजा यज यज सुयजा स्योनः स्योनः सुयजा यज। सुयजा यज यज सुयजा सुयजा यजेहेह यज सुयजा सुयजा यजेह। सुयजेति सु यजा। यजेहेह यज यजेह देवेभ्यो देवेभ्यऽ इह यज यजेह देवेभ्यः। इह देवेभ्यो देवेभ्यऽ इहेह देवेभ्यो हव्यꣳ हव्यन्देवेभ्यऽ इहेह देवेभ्यो हव्यम्। देवेभ्यो हव्यꣳ हव्यन्देवेभ्यो देवेभ्यो हव्यꣳ सदꣳ सदꣳ हव्यन्देवेभ्यो देवेभ्यो हव्यꣳ सदम्। हव्यꣳ सदꣳ सदꣳ हव्यꣳ हव्यꣳ सदमप्प्रयुच्छन्नप्प्रयुच्छन्त्सदꣳ हव्यꣳ हव्यꣳ सदमप्प्रयुच्छन्। सदमप्प्रयुच्छन्नप्प्रयुच्छन्त्सदꣳ सदमप्प्रयुच्छन्त्स्वाहा स्वाहाप्प्रयुच्छन्त्सदꣳ सदमप्प्रयुच्छन्त्स्वाहा। अप्प्रयुच्छ-

[1].वा.प्रा.३.११४. के अनुसार यहाँ अद्य के अन्तिम अकार का दीर्घ नहीं होता है। (अद्य के बाद तम्, हकार, चकार, भवत, वृणीमहे तथा देव बाद में होने पर दीर्घ होता है)।

न्त्स्वाहा॒ स्वाहाप्प्रंयुच्छ॒न्नप्प्रंयुच्छ॒न्त्स्वाहा॑। अप्प्रंयुच्छ॒न्नित्यप्प्रं युच्छन्। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥४॥

आप॑तये त्वा॒ त्वाप॑तय॒ऽ आप॑तये त्वा॒ परि॑पतये॒ परि॑पतये॒ त्वाप॑तय॒ऽ आप॑तये त्वा॒ परि॑पतये। आप॑तय॒ऽ इत्त्या प॑तये। त्वा॒ परि॑पतये॒ परि॑पतये त्वा त्वा॒ परि॑पतये गृह्णामि गृह्णामि॒ परि॑पतये त्वा त्वा॒ परि॑पतये गृह्णामि। परि॑पतये गृह्णामि गृह्णामि॒ परि॑पतये॒ परि॑पतये गृह्णामि॒ तनू॒नप्प्त्रे॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ गृह्णामि॒ परि॑पतये॒ परि॑पतये गृह्णामि॒ तनू॒नप्प्त्रे॑[1]। परि॑पतय॒ऽ इति॒ परि॑ पतये। गृह्णामि॒ तनू॒नप्प्त्रे॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ गृह्णामि गृह्णामि॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ शाक्क्व॒राय॑ शाक्क्व॒राय॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ गृह्णामि गृह्णामि॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ शाक्क्व॒राय॑। तनू॒नप्प्त्रे॑ शाक्क्व॒राय॑ शाक्क्व॒राय॒ तनू॒नप्प्त्रे॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ शाक्क्व॒राय॒ शक्क्व॑ने॒ शक्क्व॑ने शाक्क्व॒राय॒ तनू॒नप्प्त्रे॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ शाक्क्व॒राय॒ शक्क्व॑ने। तनू॒नप्प्त्र॒ऽ इति॒ तनू॒ नप्प्त्रे॑[2]। शा॒क्क्व॒राय॒ शक्क्व॑ने॒ शक्क्व॑ने शाक्क्व॒राय॑ शाक्क्व॒राय॒ शक्क्व॑न॒ऽ ओजि॑ष्ठा॒यौजि॑ष्ठाय॒ शक्क्व॑ने शाक्क्व॒राय॑ शाक्क्व॒राय॒ शक्क्व॑न॒ऽ ओजि॑ष्ठाय। शक्क्व॑न॒ऽ ओजि॑ष्ठा॒यौजि॑ष्ठाय॒ शक्क्व॑ने॒ शक्क्व॑न॒ऽ ओजि॑ष्ठाय। ओजि॑ष्ठा॒येत्योजि॑ष्ठाय॥ अना॑धृष्टमस्य॒स्यना॑धृष्ट॒मना॑धृष्टमस्यनाधृ॒ष्ष्यम॑नाधृ॒ष्ष्यम॒स्य-ना॑धृष्ट॒मना॑धृष्टमस्यनाधृ॒ष्ष्यम्। अ॒स्य॒ना॒धृ॒ष्ष्यम॑नाधृ॒ष्ष्यम॑स्यस्यनाधृ॒ष्ष्यन्दे॒वा-ना॑न्दे॒वाना॑मनाधृ॒ष्ष्यम॑स्यस्यनाधृ॒ष्ष्यन्दे॒वाना॑म्। अ॒ना॒धृ॒ष्ष्यन्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॑म-नाधृ॒ष्ष्यम॑नाधृ॒ष्ष्यन्दे॒वाना॒मोज॒ऽ ओजो॑ दे॒वाना॑मनाधृ॒ष्ष्यम॑नाधृ॒ष्ष्यन्दे॒वाना॒मो-जः॑। दे॒वाना॒मोज॒ऽ ओजो॑ दे॒वाना॑न्दे॒वाना॒मोजोन॑भिश॒स्त्यन॑भिश॒स्त्योजो॑ दे॒वा-ना॑न्दे॒वाना॒मोजोन॑भिशस्ति[3]। ओजोन॑भिश॒स्त्यन॑भिश॒स्त्योज॒ऽ ओजोन॑भिश-

---

1. वा. प्रा. २.४७. के अनुसार तनू॒नप्प्त्रे॑ पद द्विरुदात है।

2. उदाद्यन्तो न्यवग्रहस्ताथाभाव्यः(वा.प्रा.१.१२०) इस सूत्र के अनुसार ताथाभाव्य नामक स्वरित का आठवाँ भेद कहा गया है। माध्यन्दिन शाखा में इसे कम्प माना गया है, अतः माध्यन्दिन शाखा में स्वरित के सात भेद ही माने जाते हैं।

3. वा.प्रा.४.८०. के अनुसार ओजः अनभिशस्ति यहाँ अकार का अभिनिधान होता है।

स्त्यभिशस्ति॒पाऽ अ॑भिशस्ति॒पाऽ अन॑भिश॒स्त्योज॒ऽ ओजोन॑भिशस्त्यभिशस्ति॒-पाः॑। अन॑भिशस्त्यभिशस्ति॒पाऽ अ॑भिशस्ति॒पाऽ अन॑भिश॒स्त्यन॑भिशस्त्यभिश-स्ति॒पाऽ अ॑नभिशस्ते॒न्यम॑नभिशस्ते॒न्यम॑भिशस्ति॒पाऽ अन॑भिश॒स्त्यन॑भिश-स्त्यभिशस्ति॒पाऽ अ॑नभिशस्ते॒न्यम्। अन॑भिश॒स्तीत्यन॑भि शस्ति। अ॒भि॒श॒स्ति॒-पाऽ अ॑नभिशस्ते॒न्यम॑नभिशस्ते॒न्यम॑भिशस्ति॒पाऽ अ॑भिशस्ति॒पाऽ अ॑नभिशस्ते॒-न्यमञ्ज॒साञ्ज॑सानभिशस्ते॒न्यम॑भिशस्ति॒पाऽ अ॑भिशस्ति॒पाऽ अ॑नभिशस्ते॒न्यमञ्ज॑-सा। अ॒भि॒श॒स्ति॒पाऽ इत्य॑भिशस्ति॒ पाः॑। अ॒न॒भि॒श॒स्ते॒न्यमञ्ज॒साञ्ज॑सानभिशस्ते॒-न्यम॑नभिशस्ते॒न्यमञ्ज॑सा स॒त्यꣳ स॒त्यमञ्ज॑सानभिशस्ते॒न्यम॑नभिशस्ते॒न्यमञ्ज॑-सा स॒त्यम्। अ॒न॒भि॒श॒स्ते॒न्यमित्य॑नभि शस्ते॒न्यम्। अञ्ज॑सा स॒त्यꣳ स॒त्यमञ्ज॒-साञ्ज॑सा स॒त्यमुपोप॑ स॒त्यमञ्ज॒साञ्ज॑सा स॒त्यमुप॑। स॒त्यमुपोप॑ स॒त्यꣳ स॒त्यमुप॑ गेषङ्गे॒षमुप॑ स॒त्यꣳ स॒त्यमुप॑ गेषम्। उप॑ गेषङ्गे॒षमुपोप॑ गेषꣳ स्वि॒ते स्वि॒ते गे॑षमुपोप॑ गेषꣳ स्वि॒ते। गे॒ष॒ꣳ स्वि॒ते स्वि॒ते गे॑षङ्गे॒षꣳ स्वि॒ते मा॑ मा स्वि॒ते गे॑षङ्गे॒षꣳ स्वि॒ते मा॑। स्वि॒ते मा॑ मा स्वि॒ते स्वि॒ते मा॑ धा धा मा स्वि॒ते स्वि॒ते मा॑ धाः। स्वि॒तऽ इति॑ सु इ॒ते। मा॒ धा॒ धा॒ मा॒ मा॒ धा॒ः। धा॒ऽ इति॑ धाः॥५॥

अग्ने॑ व्रतपा व्रतपा॒ऽ अग्ने॒ऽग्ने॑ व्रतपा॒स्त्वे त्वे व्र॑तपा॒ऽ अग्ने॒ऽग्ने॑ व्रतपा॒स्त्वे। व्र॒त॒पा॒स्त्वे त्वे व्र॑तपा व्रतपा॒स्त्वे व्र॑तपा व्रतपा॒स्त्वे व्र॑तपा व्रतपा॒स्त्वे व्र॑तपाः। व्र॒त॒-पा॒ऽ इति॑ व्रत पाः। त्वे व्र॑तपा व्रतपा॒स्त्वे त्वे व्र॑तपा॒ या या व्र॑तपा॒स्त्वे त्वे व्र॑तपा॒ या। त्वेऽ इति॒ त्वे[1]। व्र॒त॒पा॒ या या व्र॑तपा व्रतपा॒ या तव॒ तव॒ या व्र॑तपा व्रतपा॒ या तव॑। व्र॒त॒पा॒ऽ इति॑ व्रत पाः। या तव॒ तव॒ या या तव॑ त॒नूस्त॒नूस्तव॒ या या तव॑ त॒नूः। तव॑ त॒नूस्त॒नूस्तव॒ तव॑ त॒नूरि॒यमि॒यन्त॒नूस्तव॒ तव॑ त॒नूरि॒यम्। त॒नूरि॒यमि॒-यन्त॒नूस्त॒नूरि॒यꣳ सा सेयन्त॒नूस्त॒नूरि॒यꣳ सा। इ॒यꣳ सा सेयमि॒यꣳ सा मयि॒

[1]. चमू अस्मे त्वे (वा. मा. १.९६) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार त्वे पद प्रगृह्यसंज्ञक है।

मयि सेयमियꣳ सा मयि। सा मयि मयि सा सा मयि यो यो मयि सा सा मयि यो[1]। मयि यो यो मयि मयि यो मम मम यो मयि मयि यो मम। यो मम मम यो यो मम तनूस्तनूर्म्मम यो यो मम तनूः। योऽ इति यो। मम तनूस्तनूर्म्मम मम तनूरेषैषा तनूर्म्मम मम तनूरेषा। तनूरेषैषा तनूस्तनूरेषा सा सैषा तनूस्तनूरेषा सा। एषा सा सैषैषा सा त्वयि त्वयि सैषैषा सा त्वयि। सा त्वयि त्वयि सा सा त्वयि। त्वयीति त्वयि॥ सह नौ नौ सह सह नौ व्रतपते व्रतपते नौ सह सह नौ व्रतपते। नौ व्रतपते व्रतपते नौ नौ व्रतपते व्रतानि व्रतानि व्रतपते नौ नौ व्रतपते व्रतानि। व्रतपते व्रतानि व्रतानि व्रतपते व्रतपते व्रतान्यन्वनु व्रतानि व्रतपते व्रतपते व्रतान्यनु। व्रतपतऽ इति व्रत पते। व्रतान्यन्वनु व्रतानि व्रतान्यनु मे मेनु व्रतानि व्रतान्यनु मे। अनु मे मेन्वनु मे दीक्षान्दीक्षाम्मेन्वनु मे दीक्षाम्। मे दीक्षान्दीक्षाम्मे मे दीक्षान्दीक्षापतिर्द्दीक्षापतिर्द्दीक्षाम्मे मे दीक्षान्दी-क्षापतिः। दीक्षान्दीक्षापतिर्द्दीक्षापतिर्द्दीक्षान्दीक्षान्दीक्षापतिर्म्मन्न्यता-म्मन्न्यतान्दीक्षापतिर्द्दीक्षान्दीक्षान्दीक्षापतिर्म्मन्न्यताम्। दीक्षापतिर्म्मन्न्य-ताम्मन्न्यतान्दीक्षापतिर्द्दीक्षापतिर्म्मन्न्यतामन्वनु मन्न्यतान्दीक्षापतिर्द्दीक्षा-पतिर्म्मन्न्यतामनु। दीक्षापतिरिति दीक्षा पतिः। मन्न्यतामन्वनु मन्न्यताम्म-न्न्यतामनु तपस्तपोनु मन्न्यताम्मन्न्यतामनु तपः। अनु तपस्तपोन्वनु तपस्तप-स्प्पतिस्तपःपतिस्तपोन्वनु तपस्तपस्प्पतिः। तपस्तपस्प्पतिस्तपःपतिस्तप-स्तपस्तपस्प्पतिः। तपःपतिरिति तपः पतिः॥६॥

अꣳशुरꣳशुष्टे तेꣳशुरꣳशुरꣳशुरꣳशुष्टे देव देव तेꣳशुरꣳशुरꣳशुरꣳशुष्टे देव[2]। अꣳशुरꣳशुरित्यꣳशुः अꣳशुः। ते देव देव ते ते देव सोम सोम देव ते ते देव सोम। देव सोम सोम देव देव सोमा प्प्यायताम्प्यायतामा सोम देव देव सोमा

[1]. भाष्यकार उव्वट तथा महीधर ने यो को या उ के रूप में माना है।

प्प्यायताम्। सोमा प्प्यायताम्प्यायतामा सोम सोमा प्प्यायतामिन्द्रायेन्द्राय प्प्यायतामा सोम सोमा प्प्यायतामिन्द्राय। आ प्प्यायताम्[1]। प्यायतामिन्द्रायेन्द्राय प्प्यायताम्प्यायतामिन्द्रायैकधनविदऽ एकधनविदऽ इन्द्राय प्प्यायताम्प्यायतामिन्द्रायैकधनविदे। इन्द्रायैकधनविदऽ एकधनविदऽ इन्द्रायेन्द्रायैकधनविदे। एकधनविदऽ इत्येकधन व्विदे॥ आ तुभ्यन्तुभ्यमा तुभ्यमिन्द्रऽ इन्द्रस्तुभ्यमा तुभ्यमिन्द्रः। तुभ्यमिन्द्रऽ इन्द्रस्तुभ्यन्तुभ्यमिन्द्रः प्प्यायताम्प्यायतामिन्द्रस्तुभ्यन्तुभ्यमिन्द्रः प्प्यायताम्। इन्द्रः प्प्यायताम्प्यायतामिन्द्रऽ इन्द्रः प्प्यायतामा त्वन्त्वमा प्प्यायतामिन्द्रऽ इन्द्रः प्प्यायतामा त्वम्। प्यायतामा त्वन्त्वमा प्प्यायताम्प्यायतामा त्वमिन्द्रायेन्द्राय त्वमा प्प्यायताम्प्यायतामा त्वमिन्द्राय। आ त्वम्। त्वमिन्द्रायेन्द्राय त्वन्त्वमिन्द्राय प्प्यायस्व प्प्यायस्वेन्द्राय त्वन्त्वमिन्द्राय प्प्यायस्व। इन्द्राय प्प्यायस्व प्प्यायस्वेन्द्रायेन्द्राय प्प्यायस्व। प्यायस्वेति प्प्यायस्व॥ आ प्प्यायय प्प्यायया प्प्याययास्म्मानस्म्मान्प्प्यायया प्प्याययास्म्मान्। प्याययास्म्मानस्म्मान्प्प्यायय प्प्याययास्म्मान्त्सखीन्त्सखीनस्म्मान्प्प्यायय प्प्याययास्म्मान्त्सखीन्। अस्म्मान्त्सखीन्त्सखीनस्म्मानस्म्मान्त्सखीन्त्सन्न्या सन्न्या सखीनस्म्मानस्म्मान्त्सखीन्त्सन्न्या। सखीन्त्सन्न्या सन्न्या सखीन्त्सखीन्त्सन्न्या मेधया मेधया सन्न्या सखीन्त्सखीन्त्सन्न्या मेधया। सन्न्या मेधया मेधया सन्न्या सन्न्या मेधया स्वस्ति

---

[2]. सधिरंशुरदितिः (वा. प्रा. ३.७५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अंशुः का विसर्जनीय सकार षकार हो गया है। षात्तयो मूर्धन्यम् (वा. प्रा. ३.७९) यह सूत्र षकारोत्तरवर्ती त को मूर्धन्य करता है।

[1]. वा.प्रा.४.१८३. में दो पदों का समूह लेकर क्रम पाठ का विधान है। वा.प्रा.४.१८४. में अपृक्त पद आने पर तीन पदों के समूह का निर्देश है। वा.प्रा.१.१५१. में आ तथा उ को अपृक्त कहा गया है। वा.प्रा.४.१८५. में आकार के साथ उत्तरवर्ती पद को पुनः ग्रहण करना निर्दिष्ट है। मन्त्र अथवा अर्द्धर्च के आदि या अन्त में उक्त नियम प्रवर्तित नहीं होता है। जिन स्थलों में क्रम पाठ में दो पद को ग्रहण करना उपदिष्ट है उन स्थलों में घनपाठ में उसके उत्तरवर्ती पद को लेकर तीन तथा जिन स्थलों में क्रम में तीन पद लिये जायेंगे, उन स्थलों में घनपाठ में उसके उत्तरवर्ती पद को लेकर चार पदों का समूह होगा।

स्व॒स्ति मे॒धया॑ स॒न्न्या स॒न्न्या मे॒धया॑ स्व॒स्ति। मे॒धया॑ स्व॒स्ति स्व॒स्ति मे॒धया॑ मे॒धया॑ स्व॒स्ति ते॑ ते स्व॒स्ति मे॒धया॑ मे॒धया॑ स्व॒स्ति ते॑। स्व॒स्ति ते॑ ते स्व॒स्ति स्व॒स्ति ते॑ देव देव ते स्व॒स्ति स्व॒स्ति ते॑ देव। ते॒ दे॒व॒ दे॒व॒ ते॒ ते॒ दे॒व॒ सो॒म॒ सो॒म॒ दे॒व॒ ते॒ ते॒ दे॒व॒ सो॒म॒। दे॒व॒ सो॒म॒ सो॒म॒ दे॒व॒ दे॒व॒ सो॒म॒ सु॒त्याꣳ सु॒त्याꣳ सो॑म देव देव सोम सु॒त्याम्। सो॒म॒ सु॒त्याꣳ सु॒त्याꣳ सो॑म सोम सु॒त्याम॑शीयाशीय सु॒त्याꣳ सो॑म सोम सु॒त्याम॑शीय। सु॒त्याम॑शीयाशीय सु॒त्याꣳ सु॒त्याम॑शीय। अ॒शी॒येत्य॑शीय॥

एष्टा॒ रायो॒ राय॒ऽ एष्टा॒ऽ एष्टा॒ राय॒ः प्र प्र राय॒ऽ एष्टा॒ऽ एष्टा॒ राय॒ः प्र[1]। एष्टा॒ऽ इत्त्या इष्टा॒ः। राय॒ः प्र प्र रायो॒ राय॒ः प्रेष॒ऽ इ॒षे प्र रायो॒ राय॒ः प्रेषे। प्रेष॒ऽ इ॒षे प्र प्रेषे भगा॑य॒ भगा॑ये॒षे प्र प्रेषे भगा॑य। इ॒षे भगा॑य॒ भगा॑ये॒षऽ इ॒षे भगा॑यऽ ऋ॒तमृ॒तम्भगा॑ये॒षऽ इ॒षे भगा॑यऽ ऋ॒तम्[2]। भगा॑यऽ ऋ॒तमृ॒तम्भगा॑य॒ भगा॑यऽ ऋ॒तमृ॑तवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋ॒तम्भगा॑य॒ भगा॑यऽ ऋ॒तमृ॑तवा॒दिब्भ्य॑ः। ऋ॒तमृ॑तवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋ॒तमृ॒तमृ॑तवा॒दिब्भ्यो॒ नमो॒ नम॑ऽ ऋतवा॒दि-ब्भ्य॑ऽ ऋ॒तमृ॒तमृ॑तवा॒दिब्भ्यो॒ नम॑ः। ऋ॒त॒वा॒दिब्भ्यो॒ नमो॒ नम॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्यो॒ नमो॒ द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॒न्द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॒न्नम॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्यो॒ नमो॒ द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॑म्। ऋ॒त॒वा॒दिब्भ्य॒ऽ इत्यृ॑तवा॒दि भ्य॑ः। नमो॒ द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॒न्द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॒न्नमो॒ नमो॒ द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॑म् । द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॒मिति॒ द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॑म्॥७॥

या ते॑ ते॒ या या ते॑ऽ अग्ग्नेऽग्ग्ने ते॒ या या ते॑ऽ अग्ग्ने[3]। ते॒ऽ अ॒ग्ग्ने॒ग्ग्ने ते॒ ते॒ऽ अ॒ग्ग्नेय॒ःश॒याय॑ःश॒याग्ग्ने॑ ते तेऽ अग्ग्नेयःश॒या। अ॒ग्ग्ने॒य॒ःश॒याय॑ःश॒याग्ग्नेग्ग्नेयः-

---

[1]. वा.प्रा.२.४२. के अनुसार पोष बाद में न होने पर रायः पद आद्युदात्त होता है।

[2]. कण्ठ्य ऋकारे ह्रस्वम् (वा. प्रा. ४.५०) इस सूत्र के अनुसार ऋकार परे होने पर कण्ठ्य स्वर ह्रस्व (अ) हो जाता है।

[3]. ते चानुदात्तमनुदात्ते(वा.प्रा.४.८४) इस सूत्र के अनुसार ते॒ अ॒ग्ने यहाँ अनुदात्त अकार बाद में होने से ते का एकार प्रकृतिभाव से रहता है।

शया तनूस्तनूरयःशयाग्नेग्नेयःशया तनूः। अयःशया तनूस्तनूरयःशयायः-शया तनूर्वर्षिष्ठा वर्षिष्ठा तनूरयःशयायःशया तनूर्वर्षिष्ठा। अयःशयेत्ययः शया। तनूर्वर्षिष्ठा वर्षिष्ठा तनूस्तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा गह्वरेस्त्था वर्षिष्ठा तनूस्तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा। वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा गह्वरेस्त्था वर्षिष्ठा वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा। गह्वरेस्त्थेति गह्वरे स्था॥ उग्रंवचो वचऽ उग्रमुग्रंवचोऽ अपाप वचऽ उग्रमुग्रंवचोऽ अप। वचोऽ अपाप वचो वचोऽ अपावधीदवधीदप वचो वचोऽ अपावधीत्। अपावधीदवधीद-पापावधीत्त्वेषन्त्वेषमवधीदपापावधीत्त्वेषम्। अवधीत्त्वेषन्त्वेषमवधीदवधीत्त्वेषं-वचो वचस्त्त्वेषमवधीदवधीत्त्वेषंवचः। त्वेषंवचो वचस्त्त्वेषन्त्वेषंवचोऽ अपाप वचस्त्त्वेषन्त्वेषंवचोऽ अप[1]। वचोऽ अपाप वचो वचोऽ अपावधीदवधीदप वचो वचोऽ अपावधीत्। अपावधीदवधीदपापावधीत्त्स्वाहा स्वाहावधीदपापावधी-त्त्स्वाहा। अवधीत्त्स्वाहा स्वाहावधीदवधीत्त्स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ रजःशया हरिशया हरिशया रंजःशया रजःशया हरिशया[2]। रजःशयेति रजः शया॥ हरिशयेति हरि शया॥ ८॥

तप्तायनी मे मे तप्तायनी तप्तायनी मेस्यसि मे तप्तायनी तप्तायनी मेसि। तप्तायनीति तप्त अयनी। मेस्यसि मे मेसि वित्तायनी वित्तायन्न्यसि मे मेसि वित्तायनी। असि वित्तायनी वित्तायन्न्यस्यसि वित्तायनी मे मे वित्तायन्न्यस्य-सि वित्तायनी मे। वित्तायनी मे मे वित्तायनी वित्तायनी मेस्यसि मे वित्तायनी वित्तायनी मेसि। वित्तायनीति वित्त अयनी। मेस्यसि मे मेस्यवतादवतादसि मे मेस्यवतात्। अस्यवतादवतादस्यस्यवतान्मा मावतादस्यस्यवतान्मा। अवता-

---

1. वचो अप यहाँ वा.प्रा.४.८५. के अनुसार ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

2. हरि शयेत्येके (वा. प्रा. ३.१२८) इस सूत्र में प्रतिपादित हरि के इकार का दीर्घत्व माध्यन्दिनशाखा के लिये नहीं है।

न्मा मावतादवतान्मा नाथितान्नाथितान्मावतादवतान्मा नाथितात्। मा नाथि-
तान्नाथितान्मा मा नाथितादवतादवतान्नाथितान्मा मा नाथितादवतात्। नाथि-
तादवतादवतान्नाथितान्नाथितादवतान्मा मावतान्नाथितान्नाथितादवतान्मा। अव-
तान्मा मावतादवतान्मा व्यथिताद्व्यथितान्मावतादवतान्मा व्यथितात्। मा
व्यथिताद्व्यथितान्मा मा व्यथितात्। व्यथितादिति व्यथितात्॥ विदेदग्निरग्निर्वि-
देद्विदेदग्निर्नभो नभोग्निर्विदेद्विदेदग्निर्नभः। अग्निर्नभो नभोग्निरग्निर्नभो नाम
नाम नभोग्निरग्निर्नभो नाम। नभो नाम नाम नभो नभो नामाग्नेग्ने नाम नभो
नभो नामाग्ने। नामाग्नेग्ने नाम नामाग्नेऽ अङ्गिरोङ्गिरोग्ने नाम नामाग्नेऽ
अङ्गिरः। अग्नेऽ अङ्गिरोङ्गिरोग्नेग्नेऽ अङ्गिरऽ आयुनायुनाङ्गिरोग्नेग्नेऽ अङ्गिरऽ
आयुना। अङ्गिरऽ आयुनायुनाङ्गिरोङ्गिरऽ आयुना नाम्ना नाम्नायुनाङ्गिरोङ्गिरऽ
आयुना नाम्ना। आयुना नाम्ना नाम्नायुनायुना नाम्नेहीह्या नाम्नायुनायुना
नाम्नेहि। नाम्नेहीह्या नाम्ना नाम्नेहि यो यऽ इह्या नाम्ना नाम्नेहि यः। एहि
। इहि यो यऽ ईहीहि योस्यामस्याँऽयऽ ईहीहि योस्याम्। योस्यामस्याँऽयो यो-
स्याम्पृथिव्याम्पृथिव्यामस्याँऽयो योस्याम्पृथिव्याम्। अस्याम्पृथिव्याम्पृथिव्या-
मस्यामस्याम्पृथिव्यामस्यसि पृथिव्यामस्यामस्याम्पृथिव्यामसि[1]। पृथिव्याम-
स्यसि पृथिव्याम्पृथिव्यामसि यद्यदसि पृथिव्याम्पृथिव्यामसि यत्। असि यद्यद-
स्यसि यत्ते ते यदस्यसि यत्ते। यत्ते ते यद्यत्तेनाधृष्टमनाधृष्टन्ते यद्यत्तेनाधृष्टम्।
तेनाधृष्टमनाधृष्टन्ते तेनाधृष्टन्नाम नामानाधृष्टन्ते तेनाधृष्टन्नाम। अनाधृष्टन्नाम
नामानाधृष्टमनाधृष्टन्नाम यज्ञियँऽयज्ञियन्नामानाधृष्टमनाधृष्टन्नाम यज्ञियम्।
नाम यज्ञियँऽयज्ञियन्नाम नाम यज्ञियन्तेन तेन यज्ञियन्नाम नाम यज्ञिय-
न्तेन। यज्ञियन्तेन तेन यज्ञियँऽयज्ञियन्तेन त्वा त्वा तेन यज्ञियँऽयज्ञि-

1. वा.प्रा.२.४०. के अनुसार यहाँ असि पद आद्युदात्त है।

य॒न्तेन॑ त्वा। तेन॑ त्वा त्वा॒ तेन॒ तेन॒ त्वा द॑धे दध॒ऽ आ त्वा॒ तेन॒ तेन॒ त्वा द॑धे। त्वा द॑धे दध॒ऽ आ त्वा॒ त्वा द॑धे द्वि॒तीय॑स्यान्द्वि॒तीय॑स्यान्दध॒ऽ आ त्वा॒ त्वा द॑धे द्वि॒तीय॑स्याम्[1]। आ द॑धे। द॒धे॒ द्वि॒तीय॑स्यान्द्वि॒तीय॑स्यान्दधे दधे द्वि॒तीय॑स्यान्तृ॒तीय॑स्यान्तृ॒तीय॑स्यान्द्वि॒तीय॑स्यान्दधे दधे द्वि॒तीय॑स्यान्तृ॒तीय॑स्याम्। द्वि॒तीय॑स्यान्तृ॒तीय॑स्यान्तृ॒तीय॑स्यान्द्वि॒तीय॑स्यान्द्वि॒तीय॑स्यान्तृ॒तीय॑स्याम्। तृ॒तीय॑स्या॒मिति॑ तृ॒तीय॑स्याम्॥ अनु॑ त्वा॒ त्वान्वनु॑ त्वा दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये॒ त्वान्वनु॑ त्वा दे॒ववी॑तये[2]। त्वा॒ दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये त्वा त्वा दे॒ववी॑तये सि॒ꣳही सि॒ꣳही दे॒ववी॑तये त्वा त्वा दे॒ववी॑तये सि॒ꣳही। दे॒ववी॑तये सि॒ꣳही सि॒ꣳही दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये सि॒ꣳह्य॒स्यसि सि॒ꣳही दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये सि॒ꣳह्य॒सि। दे॒ववी॑तय॒ऽ इति॑ दे॒व व्वी॑तये॥९॥

सि॒ꣳह्य॒स्यसि सि॒ꣳही सि॒ꣳह्य॒सि सपत्नसा॒ही स॑पत्नस॒ह्य॒सि सि॒ꣳही सि॒ꣳह्य॒सि सपत्नसा॒ही[3]। अ॒सि॒ स॒प॒त्न॒सा॒ही स॑पत्नस॒ह्य॒स्यसि सपत्नसा॒ही दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑ः सपत्नस॒ह्य॒स्यसि सपत्नसा॒ही दे॒वेभ्य॑ः। स॒प॒त्न॒सा॒ही दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑ः सपत्नस॒ही स॑पत्नसा॒ही दे॒वेभ्य॑ः कल्प्पस्व कल्प्पस्व दे॒वेभ्य॑ः सपत्नस॒ही स॑पत्नसा॒ही दे॒वेभ्य॑ः कल्प्पस्व। स॒प॒त्न॒स॒हीति॑ सपत्न स॒ही। दे॒वेभ्य॑ः कल्प्पस्व कल्प्पस्व दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑ः कल्प्पस्व शुन्धस्व शुन्धस्व कल्प्पस्व दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑ः कल्प्पस्व शुन्धस्व। क॒ल्प्प॒स्व॒ शु॒न्ध॒स्व॒ शु॒न्ध॒स्व॒ क॒ल्प्प॒स्व॒ क॒ल्प्प॒स्व॒ शु॒न्ध॒स्व॒ शु॒म्भ॒स्व॒ शु॒म्भ॒स्व॒ शु॒न्ध॒स्व॒ क॒ल्प्प॒स्व॒ क॒ल्प्प॒स्व॒

---

1. पदसमूहे (वा. प्रा. ४.१७७) पदों के पुनरुक्त होने पर सङ्क्रम होता है। पुनरुक्त पदों को छोड़कर अपुनरुक्त पद के साथ होने वाली सन्धि को यहाँ सङ्क्रम शब्द से कहा गया है। यह सङ्क्रम संहितायाम् (वा. प्रा. ४.१७८) इस सूत्र के अनुसार संहिता में भी होता है।

लोकन्ताऽ इन्द्रम् (वा. सं. १३. ५८)

2. त्वा च(वा.प्रा.२.६) युष्मदर्थ में विद्यमान त्वा पद अनुदात्त होता है।

3. अभिमातिपृतनासुसपत्नधूर्विश्वसमत्सुपृतनाव्रातेभ्यः सहेः (वा. प्रा. ३.१२२) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार यहाँ सपत्न से परवर्ती सह का अकार दीर्घ होने से सपत्नसाही हो गया है।

शुन्धस्व शुम्भस्व। शुन्धस्व शुम्भस्व शुम्भस्व शुन्धस्व शुन्धस्व शुम्भस्व। शुम्भस्वेति शुम्भस्व॥१०॥

इन्द्रघोषस्त्वा त्वेन्द्रघोषऽ इन्द्रघोषस्त्वा व्वसुभिर्व्वसुभिस्त्वेन्द्रघोषऽ इन्द्रघोषस्त्वा व्वसुभिः। इन्द्रघोषऽ इतीन्द्र घोषः। त्वा व्वसुभिर्व्वसुभिस्त्वा त्वा व्वसुभिः पुरस्तात्पुरस्ताद्वसुभिस्त्वा त्वा व्वसुभिः पुरस्तात्। व्वसुभिः पुरस्तात्पुरस्ताद्वसुभिर्व्वसुभिः पुरस्तात्पातु पातु पुरस्ताद्वसुभिर्व्वसुभिः पुरस्तात्पातु। व्वसुभिरिति वसु भिः। पुरस्तात्पातु पातु पुरस्तात्पुरस्तात्पातु प्प्रचेताः प्प्रचेताः पातु पुरस्तात्पुरस्तात्पातु प्प्रचेताः। पातु प्प्रचेताः प्प्रचेताः पातु पातु प्प्रचेता रुद्रै रुद्रैः प्प्रचेताः पातु पातु प्प्रचेता रुद्रैः। प्रचेता रुद्रै रुद्रैः प्प्रचेताः प्प्रचेता रुद्रैः पश्चात्पश्चाद्रुद्रैः प्प्रचेताः प्प्रचेता रुद्रैः पश्चात्। प्रचेताऽ इति प्प्र चेताः। रुद्रैः पश्चात्पश्चाद्रुद्रै रुद्रैः पश्चान्मनोजवा मनोजवाः पश्चाद्रुद्रै रुद्रैः पश्चान्मनोजवाः। पश्चान्मनोजवा मनोजवाः पश्चात्पश्चान्मनोजवाः पितृभिः पितृभिर्म्मनोजवाः पश्चात्पश्चान्मनोजवाः पितृभिः। मनोजवाः पितृभिः पितृभिर्म्मनोजवा मनोजवाः पितृभिर्द्दक्षिणतो दक्षिणतः पितृभिर्म्मनोजवा मनोजवाः पितृभिर्द्दक्षिणतः[1]। मनोजवाऽ इति मनः जवाः। पितृभिर्द्दक्षिणतो दक्षिणतः पितृभिः पितृभिर्द्दक्षिणतो व्विश्वकर्म्मा व्विश्वकर्म्मा दक्षिणतः पितृभिः पितृभिर्द्दक्षिणतो व्विश्वकर्म्मा। पितृभिरिति पितृ भिः। दक्षिणतो व्विश्वकर्म्मा व्विश्वकर्म्मा दक्षिणतो दक्षिणतो व्विश्वकर्म्मादित्यैरादित्यैर्व्विश्वकर्म्मा दक्षिणतो दक्षिणतो व्विश्वकर्म्मादित्यैः। व्विश्वकर्म्मादित्यैरादित्यैर्व्विश्वकर्म्मा व्विश्वकर्म्मादित्यैरुत्तरतऽ उत्तरतऽ आदित्यैर्व्विश्वकर्म्मा व्विश्वकर्म्मादित्यैरुत्तरतः। व्विश्वकर्म्मेति विश्व कर्म्मा। आदित्यैरुत्तरतऽ उत्तरतऽ आदित्यैरा-

[1].वा.प्रा.२.३०. के अनुसार यहाँ दक्षिणा आद्युदात्त नहीं है।

दि॒त्यैरुत्तर॒तऽ इ॒दमि॒दमुत्त॒र॒तऽ आदि॒त्यैरादि॒त्यैरुत्तर॒तऽ इ॒दम्। उ॒त्त॒र॒तऽ इ॒दमि॒दमुत्तर॒तऽ उत्तर॒तऽ इ॒दम॒हम॒हमि॒दमुत्तर॒तऽ उत्तर॒तऽ इ॒दम॒हम्। इ॒दम॒हम॒हमि॒दमि॒दम॒हन्तु॒प्स॒न्तु॒प्सम॒हमि॒दमि॒दम॒हन्तु॒प्सम्। अ॒हन्तु॒प्स॒न्तु॒प्सम॒हम॒हन्तु॒प्सँव्वार्व्वास्तु॒प्सम॒हम॒हन्तु॒प्सँव्वाः[1]। तु॒प्सँव्वार्व्वास्तु॒प्स॒न्तु॒प्सँव्वार्ब्बहि॒र्द्धा बहि॒र्द्धा व्वास्तु॒प्स॒न्तु॒प्सँ व्वार्ब्बहि॒र्द्धा। व्वार्ब्बहि॒र्द्धा बहि॒र्द्धा व्वार्व्वार्ब्बहि॒र्द्धा य॒ज्ज्ञाद्य॒ज्ज्ञाद् बहि॒र्द्धा व्वार्व्वार्ब्बहि॒र्द्धा य॒ज्ज्ञात्। ब॒हि॒र्द्धा य॒ज्ज्ञाद्य॒ज्ज्ञाद् बहि॒र्द्धा बहि॒र्द्धा य॒ज्ज्ञान्निर्न्निर्य्य॒ज्ज्ञाद् बहि॒र्द्धा बहि॒र्द्धा य॒ज्ज्ञान्निः। ब॒हि॒र्द्धेति॒ बहिः धा। य॒ज्ज्ञान्निर्न्निर्य्य॒ज्ज्ञाद्य॒ज्ज्ञान्निः सृजामि सृजामि॒ निर्य्य॒ज्ज्ञाद्य॒ज्ज्ञान्निः सृजामि। निः सृजामि सृजामि॒ निर्न्निः सृजामि। सृ॒जा॒मीति॑ सृजामि॥११॥

सि॒ꣳह्यस्यसि सि॒ꣳही सि॒ꣳह्यसि॒ स्वाहा॒ स्वाहासि सि॒ꣳही सि॒ꣳह्यसि॒ स्वाहा। अ॒सि॒ स्वाहा॒ स्वाहास्यसि॒ स्वाहादित्य॒वनि॑रादित्य॒वनि॒ः स्वाहास्यसि॒ स्वाहादित्य॒वनिः। स्वाहादित्य॒वनि॑रादित्य॒वनि॒ः स्वाहा॒ स्वाहादित्य॒वनि॑र्ब्रह्म॒व॒नि॑र्ब्रह्म॒वनि॑रादित्य॒वनि॒ः स्वाहा॒ स्वाहादित्य॒वनि॑र्ब्रह्म॒वनिः। आ॒दि॒त्य॒वनि॑र्ब्रह्म॒व॒नि॑र्ब्रह्म॒वनि॑रादित्य॒वनि॑रादित्य॒वनि॑र्ब्रह्म॒वनिः क्षत्र॒वनिः क्षत्र॒वनि॑र्ब्रह्म॒वनि॑रादित्य॒वनि॑रादित्य॒वनि॑र्ब्रह्म॒वनिः क्षत्र॒वनिः। आ॒दि॒त्य॒वनि॒रित्या॑दित्य॒ व्वनिः। ब्र॒ह्म॒वनिः क्षत्र॒वनिः क्षत्र॒वनि॑र्ब्रह्म॒वनि॑र्ब्रह्म॒वनिः क्षत्र॒वनिः सुप्रजा॒वनिः सुप्रजा॒वनिः क्षत्र॒वनि॑र्ब्रह्म॒वनि॑र्ब्रह्म॒वनिः क्षत्र॒वनिः सुप्रजा॒वनिः। ब्र॒ह्म॒व॒नि॒रिति॑ ब्रह्म॒ व्वनिः। क्ष॒त्र॒वनिः सुप्रजा॒वनिः सुप्रजा॒वनिः क्षत्र॒वनिः क्षत्र॒वनिः सुप्रजा॒वनी रायस्पोष॒वनी रायस्पोष॒वनिः सुप्रजा॒वनिः क्षत्र॒वनिः क्षत्र॒वनिः सुप्रजा॒वनी रायस्पोष॒वनिः[2]। क्ष॒त्र॒व॒नि॒रिति॑ क्षत्र॒ व्वनिः।

---

[1]. स्तोतर्वस्तः सनुतरभार्वार्द्धाः (वा. प्रा. १.१६५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ वाः पद रिफितसंज्ञक है।

[2]. सुप्रजावनिः रायस्पोषवनिः यहाँ वा.प्रा.४.३६. के अनुसार र बाद में होने पर विसर्जनीय लुप्त होता है तथा उपधा दीर्घ होता है।

सुप्रजावनीं रायस्पोषवनीं रायस्पोषवनिं सुप्रजावनिं सुप्रजावनीं रायस्पोषवनिरा वंह वहा रायस्पोषवनिं सुप्रजावनिं सुप्रजावनीं रायस्पोषवनिरा वंह। सुप्रजावनिरिति सुप्रजा वनिं। रायस्पोषवनिरा वंह वहा रायस्पोषवनीं रायस्पोषवनिरा वंह देवान्देवान्वहा रायस्पोषवनीं रायस्पोषवनिरा वंह देवान्। रायस्पोषवनिरिति रायस्पोष वनिं। आ वंह। वह देवान्देवान्वंह वह देवान्यजमानाय यजमानाय देवान्वंह वह देवान्यजमानाय। देवान्यजमानाय यजमानाय देवान्देवान्यजमानाय स्वाहा स्वाहा यजमानाय देवान्देवान्यजमानाय स्वाहा। यजमानाय स्वाहा स्वाहा यजमानाय यजमानाय स्वाहा भूतेभ्यो भूतेभ्यः स्वाहा यजमानाय यजमानाय स्वाहा भूतेभ्यः। स्वाहा भूतेभ्यो भूतेभ्यः स्वाहा स्वाहा भूतेभ्यस्त्वा त्वा भूतेभ्यः स्वाहा स्वाहा भूतेभ्यस्त्वा। भूतेभ्यस्त्वा त्वा भूतेभ्यो भूतेभ्यस्त्वा। त्वेति त्वा॥१२॥

ध्रुवोस्यसि ध्रुवो ध्रुवोसि पृथिवीम्पृथिवीमसि ध्रुवो ध्रुवोसि[1] पृथिवीम्। असि पृथिवीम्पृथिवीमस्यसि पृथिवीन्दृꣳह दृꣳह पृथिवीमस्यसि पृथिवीन्दृꣳह। पृथिवीन्दृꣳह दृꣳह पृथिवीम्पृथिवीन्दृꣳह ध्रुवक्षिद्ध्रुवक्षिद्दृꣳह पृथिवीम्पृथिवीन्दृꣳह ध्रुवक्षित्। दृꣳह ध्रुवक्षिद्ध्रुवक्षिद्दृꣳह दृꣳह ध्रुवक्षिदन्तरिक्षमन्तरिक्षन्ध्रुवक्षिद्दृꣳह दृꣳह ध्रुवक्षिदन्तरिक्षम्। ध्रुवक्षिदन्तरिक्षमन्तरिक्षन्ध्रुवक्षिद्ध्रुवक्षिदन्तरिक्षमच्युतक्षिदच्युतक्षिदन्तरिक्षन्ध्रुवक्षिद्ध्रुवक्षिदन्तरिक्षमच्युतक्षित्। ध्रुवक्षिदिति ध्रुव क्षित्। अन्तरिक्षमच्युतक्षिदच्युतक्षिदन्तरिक्षमन्तरिक्षमच्युतक्षिद्दिवन्दिवमच्युतक्षिदन्तरिक्षमन्त-

[1]. ध्रुवः असि यहाँ सन्धि की स्थिति में वा.प्रा.४.४३. तथा वा.प्रा.४.४४. के अनुसार सोपध विसर्जनीय ओकार हो जाता है। वा. प्रा. ४.६२ के अनुसार ओकार से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है।

रिक्षमच्युतक्षिद्दिवम्। अच्युतक्षिद्दिवन्दिवमच्युतक्षिदच्युतक्षिद्दिवमग्ग्नेर- ग्ग्नेर्द्दिवमच्युतक्षिदच्युतक्षिद्दिवमग्ग्नेः। अच्युतक्षिदित्यच्युत क्षित्। दिवम- ग्ग्नेरग्ग्नेर्द्दिवन्दिवमग्ग्नेः पुरीषम्पुरीषमग्ग्नेर्द्दिवन्दिवमग्ग्नेः पुरीषम्। अग्ग्नेः पुरीष- म्पुरीषमग्ग्नेरग्ग्नेः पुरीषमस्यसि पुरीषमग्ग्नेरग्ग्नेः पुरीषमसि। पुरीषमस्यसि पुरीषम्पुरीषमसि। असीत्यसि॥१३॥

युञ्जते मनो मनो युञ्जते युञ्जते मनऽ उतोत मनो युञ्जते युञ्जते मनऽ उत। मनऽ उतोत मनो मनऽ उत युंञ्जते युञ्जतऽ उत मनो मनऽ उत युंञ्जते। उत युं- ञ्जते युञ्जतऽ उतोत युंञ्जते धियो धियो युञ्जतऽ उतोत युंञ्जते धियः। युञ्जते धियो धियो युञ्जते युञ्जते धियो व्विप्प्रा व्विप्प्रा धियो युञ्जते युञ्जते धियो व्विप्प्राः[1]। धियो व्विप्प्रा व्विप्प्रा धियो धियो व्विप्प्रा व्विप्प्रस्य व्विप्प्रस्य व्विप्प्रा धियो धियो व्विप्प्रा व्विप्प्रस्य। व्विप्प्रा व्विप्प्रस्य व्विप्प्रस्य व्विप्प्रा व्विप्प्रा व्विप्प्रस्य बृहतो बृंहतो व्विप्प्रस्य व्विप्प्रा व्विप्प्रा व्विप्प्रस्य बृहतः। व्विप्प्रस्य बृहतो बृंहतो व्विप्प्रस्य व्विप्प्रस्य बृहतो व्विंपश्चितो व्विपश्चितो बृहतो व्विप्प्रस्य व्विप्प्रस्य बृहतो व्विंपश्चितः। बृहतो व्विंपश्चितो व्विपश्चितो बृहतो बृंहतो व्विंपश्चितः। व्विपश्चितऽ इति विपः चितः॥ व्वि होत्रा होत्रा व्वि वि होत्रा दधे दधे होत्रा व्वि वि होत्रा दधे। होत्रा दधे दधे होत्रा होत्रा दधे व्वयुनाविद्व्वयुनविद्दधे होत्रा होत्रा दधे व्वयुनावित्[2]। दधे व्वयुनाविद्व्वयुनविद्दधे दधे व्वयुनाविदेकऽ एको व्वयुनविद्दधे दधे व्वयुनाविदेकः। व्वयुनाविदेकऽ एको व्वयुनविद्व्वयुनाविदेकऽ इदिदेको व्वयुनविद्व्वयुनाविदेकऽ इत्। व्वयुनविदिति वयुन वित्। एकऽ इदिदेकऽ एकऽ इन्न्मही महीदेकऽ एकऽ इन्न्मही। इन्न्मही महीदि- न्न्मही देवस्य देवस्य महीदिन्न्मही देवस्य। मही देवस्य देवस्य मही मही देवस्य

[1]. विप्राः विप्राः यहाँ लोपं घो (वा.प्रा.४.३९) इस सूत्र के अनुसार व (घिसंज्ञक वर्ण) होने से कण्ठ्यपूर्व विसर्ग का लोप होता है।

[2]. वा. प्रा. ३.९७. के अनुसार यहाँ वयुन का अन्तिम स्वर वकार परे रहते दीर्घ होने पर वयुनावित् होता है।

स॒वि॒तुः सं॑वि॒तुर्दे॒वस्य॑ म॒ही म॒ही दे॒वस्य॑ स॒वि॒तुः। दे॒वस्य॑ स॒वि॒तुः सं॑वि॒तुर्दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ स॒वि॒तुः परि॑ष्टुति॒ः परि॑स्तुतिः स॒वि॒तुर्दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ स॒वि॒तुः परि॑ष्टुतिः। स॒वि॒तुः परि॑ष्टुति॒ः परि॑स्तुतिः स॒वि॒तुः सं॑वि॒तुः परि॑ष्टुति॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ परि॑स्तु-तिः स॒वि॒तुः सं॑वि॒तुः परि॑ष्टुति॒ः स्वाहा॑। परि॑ष्टुति॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ परि॑स्तुति॒ः परि॑ष्टुति॒ः स्वाहा॑। परि॑स्तुति॒रिति॒ परि॑ स्तुतिः। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१४॥

इ॒दँ॒विष्णु॒र्विष्ण॑ुरि॒दमि॒दँ॒विष्णु॒र्वि वि विष्ण॑ुरि॒दमि॒दँ॒विष्णु॒र्वि। विष्णु॒र्वि वि विष्णु॒र्विष्णु॒र्वि च॑क्रमे चक्रमे॒ वि विष्णु॒र्विष्णु॒र्वि च॑क्रमे। वि च॑क्रमे चक्रमे॒ वि वि च॑क्रमे त्रे॒धा त्रे॒धा च॑क्रमे॒ वि वि च॑क्रमे त्रे॒धा। च॒क्र॒मे॒ त्रे॒धा त्रे॒धा च॑क्रमे चक्रमे त्रे॒धा नि नि त्रे॒धा च॑क्रमे चक्रमे त्रे॒धा नि। त्रे॒धा नि नि त्रे॒धा त्रे॒धा नि द॑धे दधे॒ नि त्रे॒धा त्रे॒धा नि द॑धे। नि द॑धे दधे॒ नि नि द॑धे प॒दम्प॒दन्द॑धे॒ नि नि द॑धे प॒दम्। द॒धे॒ प॒दम्प॒दन्द॑धे दधे प॒दम्। प॒दमिति॑ प॒दम्॥ सम॑ूढमस्यास्य॒ सम॑ूढ॒ꣳ सम॑ूढमस्य पाꣳसु॒रे पा॑ꣳसु॒रे॒स्य॒ सम॑ूढ॒ꣳ सम॑ूढमस्य पाꣳसु॒रे। सम॑ूढ॒मिति॒ सम् ऊ॑ढम्। अ॒स्य॒ पा॒ꣳसु॒रे पा॑ꣳसु॒रे॒स्यास्य पाꣳसु॒रे स्वाहा॒ स्वाहा॑ पाꣳसु॒रे॒स्यास्य पाꣳसु॒रे स्वाहा॑। पा॒ꣳसु॒रे स्वाहा॒ स्वाहा॑ पाꣳसु॒रे पा॑ꣳसु॒रे स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१५॥

इरा॑वती धेनु॒मती॑ धेनु॒मती॒ऽ इरा॑वती॒ऽ इरा॑वती धेनु॒मती॒ हि हि धे॑नु॒मती॒ऽ इरा॑वती॒ऽ इरा॑वती धेनु॒मती॒ हि[1]। इरा॑वती॒ऽ इतीरा॑ वती। धे॒नु॒मती॒ हि हि धे॑नु॒म-ती॑ धेनु॒मती॒ हि भू॒तम्भू॒तꣳ हि धे॑नु॒मती॑ धेनु॒मती॒ हि भू॒तम्। धे॒नु॒मती॒ऽ इति॑ धेनु मती॑। हि भू॒तम्भू॒तꣳ हि हि भू॒तꣳ सू॑यव॒सिनी॑ सुयव॒सिनी॑ भू॒तꣳ हि हि भू॒तꣳ सू॑यव॒सिनी॑। भू॒तꣳ सू॑यव॒सिनी॑ सुयव॒सिनी॑ भू॒तम्भू॒तꣳ सू॑यव॒सिनी॒ मन॑वे॒ मन॑वे

[1]. वा.प्रा.४.८८. के अनुसार स्वर बाद में होने पर प्रगृह्य पद प्रकृति भाव से रहता है। वा.प्रा.१.९३. के अनुसार इरावती यह पद प्रगृह्यसंज्ञक है।

सुयवसिनीं भूतम्भूतꣳ सूयवसिनी मनवे। सूयवसिनी मनवे मनवे सुयवसिनीं सूयवसिनी मनवे दशस्या दशस्या मनवे सुयवसिनीं सूयवसिनी मनवे दशस्या। सुयवसिनीऽ इति सु यवसिनीं। मनवे दशस्या दशस्या मनवे मनवे दशस्या। दशस्येति दशस्या॥ व्यस्कब्भ्नाऽ अस्कब्भ्ना व्वि व्यस्कब्भ्ना रोदसी रोदसीऽ अस्कब्भ्ना व्वि व्यस्कब्भ्ना रोदसी[1]। अस्कब्भ्ना रोदसी रोदसीऽ अस्कब्भ्नाऽ अस्कब्भ्ना रोदसी व्विष्णणो व्विष्णणो रोदसीऽ अस्कब्भ्नाऽ अस्कब्भ्ना रोदसी व्विष्णणो। रोदसी व्विष्णणो व्विष्णणो रोदसी रोदसी व्विष्णणवेतेऽ एते व्विष्णणो रोदसी रोदसी व्विष्णणवेते[2]। रोदसीऽ इति रोदसी। व्विष्णणवेतेऽ एते व्विष्णणो व्विष्णणवेते दाधर्त्थं दाधर्त्थंते व्विष्णणो व्विष्णणवेते दाधर्त्थं। व्विष्णणोऽ इति विष्णणो। एते दाधर्त्थं दाधर्त्थंतेऽ एते दाधर्त्थं पृथिवीम्पृथिवीन्दाधर्त्थंतेऽ एते दाधर्त्थं पृथिवीम्। एतेऽ इत्येते। दाधर्त्थं पृथिवीम्पृथिवीन्दाधर्त्थं दाधर्त्थं पृथिवीमभितोभितः पृथिवीन्दाधर्त्थं दाधर्त्थं पृथिवीमभितः। पृथिवीमभितोभितः पृथिवीम्पृथिवीमभितो मयूखैर्म्मयूखैरभितः पृथिवीम्पृथिवीमभितो मयूखैः। अभितो मयूखैर्म्मयूखैरभितोभितो मयूखैः स्वाहा स्वाहा मयूखैरभितोभितो मयूखैः स्वाहा। मयूखैः स्वाहा स्वाहा मयूखैर्म्मयूखैः स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१६॥

देवश्रुतौ देवेषु देवेषु देवश्रुतौ देवश्रुतौ देवेष्ष्वा घोषतङ्घोषतमा देवेषु देवश्रुतौ देवश्रुतौ देवेष्ष्वा घोषतम्। देवश्रुताविति देव श्रुतौ। देवेष्ष्वा घोषत-

---

1. वि अस्कुभ्नाः यहाँ युवर्णौ यवौ क्षैप्रः (वा. प्रा. १.११५) इस सूत्र से क्षैप्र संज्ञक स्वरित होता है।

2. विष्णो यह पद ओकारश्च पदान्तेऽनवग्रहः(वा.प्रा.१.९४) इस सूत्र के अनुसार प्रगृह्य है। ओकारश्च(वा.प्रा.४.९३) के अनुसार पदान्तीय ओकार प्रकृतिभाव से रहता है। इस सूत्र में प्लुतमितौ (वा.प्रा.४.९२) से इति की अनुवृत्ति हो रही है। अतः इति पद बाद में होने पर ही ओकारान्त पद विष्णो प्रगृह्य होगा। एते पद परे होने पर प्रगृह्य नहीं होगा। ज्योत्स्नावृत्ति पृ.२२९ के अनुसार ओत् (पा.१.११५) इत्यनेन प्रगृह्यत्वम्। ओकारश्च(ज्यो.५१६ शु.प्रा.४.९२) इत्यनेन विहितप्रगृह्यनिमित्तप्रकृतिभावस्तु इतौ(ज्यो.५१६ शु.प्रा.४.९१. अनुवृत्तिः) प्रकृतिभावविधानादन्यत्र न। अत एव- विष्णणवेते (सं.५.१६ पद ५.१६) इत्यत्र अवादेशः।

ङ्घोषतमा देवेषु देवेष्ष्वा घोषतम्प्राची प्प्राचीं घोषतमा देवेषु देवेष्ष्वा घोषतम्प्राचीं । आ घोषतम्। घोषतम्प्राची प्प्राचीं घोषतङ्घोषतम्प्राची प्प्र प्प्र प्प्राचीं घोषतङ्घो-षतम्प्राची प्प्र। प्राची प्प्र प्प्र प्प्राची प्प्राची प्प्रेतमितम्प्र प्प्राची प्प्राची प्प्रेतम्। प्राचीऽ इति प्प्राचीं। प्रेतमितम्प्र प्प्रेतमद्ध्वरमद्ध्वरमितम्प्र प्प्रेतमद्ध्वरम्। इतमद्ध्वरम-द्ध्वरमितमितमद्ध्वरङ्कल्प्पयन्ती कल्प्पयन्तीऽ अद्ध्वरमितमितमद्ध्वरङ्कल्प्पयन्ती[1]। अद्ध्वरङ्कल्प्पयन्ती कल्प्पयन्तीऽ अद्ध्वरमद्ध्वरङ्कल्प्पयन्तीऽ ऊर्द्ध्वमूर्द्ध्वङ्कल्प्पयन्तीऽ अद्ध्वरमद्ध्वरङ्कल्प्पयन्तीऽ ऊर्द्ध्वम्। कल्प्पयन्तीऽ ऊर्द्ध्वमूर्द्ध्वङ्कल्प्पयन्ती कल्प्पय-न्तीऽ ऊर्द्ध्वँय्यज्ञँय्यज्ञमूर्द्ध्वङ्कल्प्पयन्ती कल्प्पयन्तीऽ ऊर्द्ध्वँय्यज्ञम्। कल्प्पय-न्तीऽ इति कल्प्पयन्ती। ऊर्द्ध्वँय्यज्ञँय्यज्ञमूर्द्ध्वमूर्द्ध्वँय्यज्ञन्नयतन्नयतँय्यज्ञमू-र्द्ध्वमूर्द्ध्वँय्यज्ञन्नयतम्। यज्ञन्नयतन्नयतँय्यज्ञँय्यज्ञन्नयतम्मा मा नयतँय्यज्ञँ-य्यज्ञन्नयतम्मा। नयतम्मा मा नयतन्नयतम्मा जिंह्वरतञ्जिह्वरतम्मा नयतन्नय-तम्मा जिंह्वरतम्। मा जिंह्वरतञ्जिह्वरतम्मा मा जिंह्वरतम्। जिह्वरतमिति जिह्वर-तम्॥ स्वङ्गोष्ठङ्गोस्त्थꣳ स्वꣳ स्वङ्गोष्ठमा वदतँव्वदतमा गोस्त्थꣳ स्वꣳ स्वङ्गोष्ठमा वदतम्। गोष्ठमा वदतँव्वदतमा गोस्त्थङ्गोष्ठमा वदतन्देवी देवी व्वदतमा गोस्त्थङ्गो-ष्ठमा वदतन्देवी। गोस्त्थमिति गो स्थम्। आ वदतम्। व्वदतन्देवी देवी व्वदतँव्वद-तन्देवी दुर्य्ये दुर्य्ये देवी व्वदतँव्वदतन्देवी दुर्य्ये। देवी दुर्य्ये दुर्य्ये देवी देवी दुर्य्येऽ आयुरायुर्दुर्य्ये देवी देवी दुर्य्येऽ आयुः। देवीऽ इति देवी। दुर्य्येऽ आयुरायुर्दुर्य्ये दुर्य्येऽ आयुर्म्मा मायुर्दुर्य्ये दुर्य्येऽ आयुर्म्मा। दुर्य्येऽ इति दुर्य्ये। आयुर्म्मा मायुरा-युर्म्मा निर्न्निर्म्मायुरायुर्म्मा निः। मा निर्न्निर्म्मा मा निर्व्वादिष्टँव्वादिष्टन्निर्म्मा मा निर्व्वादिष्टम्। निर्व्वादिष्टँव्वादिष्टन्निर्न्निर्व्वादिष्टम्प्रजाम्प्रजाँव्वादिष्टन्निर्न्निर्व्वादिष्टम्प्रजाम्। व्वादिष्टम्प्रजाम्प्रजाँव्वादिष्टँव्वादिष्टम्प्रजाम्मा मा प्प्रजाँव्वादिष्टँव्वादिष्टम्प्रजाम्मा।

[1]. एकारेकारोकारा द्विवचनान्ताः (वा. प्रा. १.९३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ कल्पयन्ती पद प्रगृह्यसंज्ञक है।

प्रजाम्मा मा प्प्रजाम्प्रजाम्मा निर्न्निर्म्मा प्प्रजाम्प्रजाम्मा निः। प्रजामिति प्प्र जाम्। मा निर्न्निर्म्मा मा निर्ब्बांदिष्टँब्बादिष्टन्निर्म्मा मा निर्ब्बांदिष्टम्। निर्ब्बांदिष्टँब्बादिष्टन्निर्न्निर्ब्बांदिष्टमत्रात्र ब्बादिष्टन्निर्न्निर्ब्बांदिष्टमत्र। ब्बादिष्टमत्रात्र ब्बादिष्टँब्बादिष्टमत्र रमेथाॐ रमेथामत्र ब्बादिष्टँब्बादिष्टमत्र रमेथाम्। अत्र रमेथाॐ रमेथामत्रात्र रमेथाँब्वष्र्मन्न्वष्र्मन्न्रमेथामत्रात्र रमेथाँब्वष्र्मन्[1]। रमेथाँब्वष्र्मन्न्वष्र्मन्न्रमेथाॐ रमेथाँब्वष्र्मन्न्पृथिव्याः पृथिव्या ब्वष्र्मन्न्रमेथाॐ रमेथाँब्वष्र्मन्न्पृथिव्याः। ब्वष्र्मन्न्पृथिव्याः पृथिव्या ब्वष्र्मन्न्वष्र्मन्न्पृथिव्याः। पृथिव्याऽ इति पृथिव्याः॥१७॥

ब्विष्णोर्न्नु नु ब्विष्णोर्ब्विष्णोर्न्नु कङ्कन्नु ब्विष्णोर्ब्विष्णोर्न्नु कम्। नु कङ्कन्नु नु कँव्वीर्य्याणि ब्वीर्य्याणि कन्नु नु कँव्वीर्य्याणि। कँव्वीर्य्याणि ब्वीर्य्याणि कङ्कँव्वीर्य्याणि प्प्र प्प्र वीर्य्याणि कङ्कँव्वीर्य्याणि प्प्र। ब्वीर्य्याणि प्प्र प्प्र वीर्य्याणि ब्वीर्य्याणि प्प्र वोचँब्वोचम्प्र वीर्य्याणि ब्वीर्य्याणि प्र वोचम्। प्र वोचँब्वोचम्प्र प्प्र वोचँय्यो यो ब्वोचम्प्र प्प्र वोचँय्यः। ब्वोचँय्यो यो ब्वोचँब्वोचँय्यः पार्त्थिवानि पार्त्थिवानि यो ब्वोचँब्वोचँय्यः पार्त्थिवानि। यः पार्त्थिवानि पार्त्थिवानि यो यः पार्त्थिवानि ब्विममे ब्विममे पार्त्थिवानि यो यः पार्त्थिवानि ब्विममे। पार्त्थिवानि ब्विममे ब्विममे पार्त्थिवानि पार्त्थिवानि ब्विममे रजांॐसि रजांॐसि ब्विममे पार्त्थिवानि पार्त्थिवानि ब्विममे रजांॐसि। ब्विममे रजांॐसि रजांॐसि ब्विममे ब्विममे रजांॐसि। ब्विममऽ इति वि ममे। रजाॐसीति रजांॐसि॥ योऽ अस्कभायदस्कभायद्यो योऽ अस्कभायदुत्तरमुत्तरमस्कभायद्यो योऽ अस्कभायदुत्तरम्। अस्कभायदुत्तरमुत्तरमस्कभायदस्कभायदुत्तरꣳ सधस्त्थꣳ सधस्त्थमुत्तरमस्कभायदस्कभायदुत्तरꣳ सधस्त्थम्। उत्तरꣳ सधस्त्थꣳ सधस्त्थमुत्तरमुत्तरꣳ सधस्त्थँव्विचक्रमाणो ब्विच-

[1]. ब्वष्र्मन् यहाँ पर परं तु रेफहकाराभ्याम्(वा.प्रा.४.१०२) तथा नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः(वा.प्रा.४.१०६) इन सूत्रों से क्रमशः षकार का द्वित्व प्राप्त है, मकार का द्वित्व प्राप्त नहीं है।

क्रमाणः सधस्थमुत्तरमुत्तरꣳ सधस्थँविचक्रमाणः। उत्तरमित्युत् तरम्[1]।
सधस्थँविचक्रमाणो विचक्रमाणः सधस्थꣳ सधस्थँविचक्रमाणस्त्रेधा त्रेधा
विचक्रमाणः सधस्थꣳ सधस्थँविचक्रमाणस्त्रेधा। सधस्थमिति सध स्थम्।
विचक्रमाणस्त्रेधा त्रेधा विचक्रमाणो विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायऽ उरुगायस्त्रेधा
विचक्रमाणो विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः। विचक्रमाणऽ इति वि चक्रमाणः।
त्रेधोरुगायऽ उरुगायस्त्रेधा त्रेधोरुगायो विष्णवे विष्णवऽ उरुगायस्त्रेधा
त्रेधोरुगायो विष्णवे। उरुगायो विष्णवे विष्णवऽ उरुगायऽ उरुगायो
विष्णवे त्वा त्वा विष्णवऽ उरुगायऽ उरुगायो विष्णवे त्वा। उरुगायऽ इत्युरु
गायः। विष्णवे त्वा त्वा विष्णवे विष्णवे त्वा। त्वेति त्वा॥१८॥

दिवो वा वा दिवो दिवो वा विष्णो विष्णो वा दिवो दिवो वा विष्णो। वा
विष्णो विष्णो वा वा विष्णऽ उतोत विष्णो वा वा विष्णऽ उत[2]। विष्णऽ
उतोत विष्णो विष्णऽ उत वा वोत विष्णो विष्णऽ उत वा। विष्णोऽ इति
विष्णो[3]। उत वा वोतोत वा पृथिव्याः पृथिव्या वोतोत वा पृथिव्याः। वा
पृथिव्याः पृथिव्या वा वा पृथिव्या महो महः पृथिव्या वा वा पृथिव्या महः।
पृथिव्या महो महः पृथिव्याः पृथिव्या महो वा वा महः पृथिव्याः पृथिव्या महो
वा। महो वा वा महो महो वा विष्णो विष्णो वा महो महो वा विष्णो। वा
विष्णो विष्णो वा वा विष्णऽ उरोरुरोर्विष्णो वा वा विष्णऽ उरोः। विष्णऽ
उरोरुरोर्विष्णो विष्णऽ उरोरन्तरिक्षादन्तरिक्षादुरोर्विष्णो विष्णऽ उरोर-
न्तरिक्षात्। विष्णोऽ इति विष्णो। उरोरन्तरिक्षादन्तरिक्षादुरोरुरोरन्त-

---

1 .तरतमयोश्चातिशयेऽदक्षिणप्रत्यासङ्गे (वा. प्रा. ५.२) इस सूत्र के अनुसार यहाँ उत्तरम् पद का पृथक्करण विहित है।

2. न वकारस्यासस्थान एकेषाम्(वा.प्रा.४.१२८) इस सूत्र के अनुसार असमान उच्चारण-स्थान वाला स्वर बाद में होने पर वकार का लोप नहीं होता, यह नियम काण्व शाखा के लिये नहीं है, यह काण्वशाखीय भाष्यकार अनन्त का मत है।

3. ओकारश्च पदान्तेऽनवग्रहः (वा. प्रा. १.९४) इस सूत्र के अनुसार यहाँ ओकार प्रगृह्यसंज्ञक है।

रिंक्षात्। अन्तरिंक्षादित्यन्तरिंक्षात्॥ उभा हि ह्युभोभा हि हस्ता हस्ता ह्युभोभा हि हस्तां। हि हस्ता हस्ता हि हि हस्ता ब्वसुना ब्वसुंना हस्ता हि हि हस्ता ब्वसुंना। हस्ता ब्वसुंना ब्वसुंना हस्ता हस्ता ब्वसुंना पृणस्वं पृणस्व ब्वसुंना हस्ता हस्ता ब्वसुंना पृणस्वं। ब्वसुंना पृणस्वं पृणस्व ब्वसुंना ब्वसुंना पृणस्वा प्प्र प्प्रा पृणस्व ब्वसुंना ब्वसुंना पृणस्वा प्प्र। पृणस्वा प्प्र प्प्रा पृणस्वं पृणस्वा प्प्र यंच्छ यच्छ प्प्रा पृणस्वं पृणस्वा प्प्र यंच्छ। आ प्प्र। प्र यंच्छ यच्छ प्प्र प्प्र यंच्छ दक्षिंणाद्दक्षिंणाद्यच्छ प्प्र प्प्र यंच्छ दक्षिंणात्[1]। यच्छ दक्षिंणाद्दक्षिंणाद्य-च्छ यच्छ दक्षिंणादोतोता दक्षिंणाद्यच्छ यच्छ दक्षिंणादोत। दक्षिंणादोतो-ता दक्षिंणाद्दक्षिंणादोत सुध्यात्सुध्यादुता दक्षिंणाद्दक्षिंणादोत सुध्यात्। ओत । उत सुध्यात्सुध्यादुतोत सुध्याद्विष्ण्णंवे ब्विष्ण्णंवे सुध्यादुतोत सुध्याद्विष्ण्णंवे। सुध्याद्विष्ण्णंवे ब्विष्ण्णंवे सुध्यात्सुध्याद्विष्ण्णंवे त्वा त्वा ब्विष्ण्णंवे सुध्यात्सुध्याद्वि-ष्ण्णंवे त्वा। ब्विष्ण्णंवे त्वा त्वा ब्विष्ण्णंवे ब्विष्ण्णंवे त्वा। त्वेतिं त्वा॥१९॥

प्र तत्तत्प्र प्प्र तद्विष्ण्णुर्ब्विष्ण्णुस्तत्प्र प्प्र तद्विष्ण्णुं÷। तद्विष्ण्णुर्ब्विष्ण्णुस्तत्त-द्विष्ण्णुं स्तवते स्तवते ब्विष्ण्णुस्तत्तद्विष्ण्णुं स्तवते[2]। ब्विष्ण्णुं स्तवते स्तवते ब्विष्ण्णुर्ब्विष्ण्णुं स्तवते ब्वीर्य्येण ब्वीर्य्येण स्तवते ब्विष्ण्णुर्ब्विष्ण्णुं स्तवते ब्वीर्य्येण। स्तवते ब्वीर्य्येण ब्वीर्य्येण स्तवते स्तवते ब्वीर्य्येण मृगो मृगो ब्वीर्य्येण स्तवते स्तवते ब्वीर्य्येण मृगः। ब्वीर्य्येण मृगो मृगो ब्वीर्य्येण ब्वीर्य्येण मृगो न न मृगो ब्वीर्य्येण ब्वीर्य्येण मृगो न। मृगो न न मृगो मृगो न भीमो भीमो न मृगो मृगो न भीमः। न भीमो भीमो न न भीमः कुंचरः कुंचरो भीमो न न भीमः कुंचरः। भीमः कुंचरः कुंचरो भीमो भीमः कुंचरो गिंरिष्ठा गिंरिस्त्थाः कुंचरो भीमो भीमः

---

1. दक्षिणा च(वा.प्रा.२.२९) दक्षिणा पद आद्युदात्त होता है।

2. विष्णुः स्तवते यहाँ पर लुङ् मुदि जितपरे (वा. प्रा. ३.१३) के अनुसार विसर्ग का लोप होता है।

कु॑च॒रो गि॑रि॒ष्ठाः। कु॒च॒रो गि॑रि॒ष्ठा गि॑रि॒स्त्थाः कु॑च॒रः कु॑च॒रो गि॑रि॒ष्ठाः। गि॒रि॒स्त्थाऽ इति॑ गिरि॒ स्थाः॥ यस्यो॒रुषू॒रुषु॒ यस्य॒ यस्यो॒रुषु॑ त्रि॒षु त्रि॒षूरुषु॒ यस्य॒ यस्यो॒रुषु॑ त्रि॒षु[1]। उ॒रुषु॑ त्रि॒षु त्रि॒षूरुषू॒रुषु॑ त्रि॒षु व्वि॒क्क्रम॑णेषु व्वि॒क्क्रम॑णेषु त्रि॒षूरुषू॒रुषु॑ त्रि॒षु व्वि॒क्क्रम॑णेषु। त्रि॒षु व्वि॒क्क्रम॑णेषु व्वि॒क्क्रम॑णेषु त्रि॒षु त्रि॒षु व्वि॒क्क्रम॑णेष्ष्वधिक्क्षि॒यन्त्य॑धिक्क्षि॒यन्ति॑ व्वि॒क्क्रम॑णेषु त्रि॒षु त्रि॒षु व्वि॒क्क्रम॑णेष्ष्वधिक्क्षि॒यन्ति॑। व्वि॒क्क्रम॑णेष्ष्वधिक्क्षि॒यन्त्य॑धिक्क्षि॒यन्ति॑ व्वि॒क्क्रम॑णेषु व्वि॒क्क्रम॑णेष्ष्वधिक्क्षि॒यन्ति॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नान्न्यधिक्क्षि॒यन्ति॑ व्वि॒क्क्रम॑णेषु व्वि॒क्क्रम॑णेष्ष्वधिक्क्षि॒यन्ति॒ भुव॑नानि। व्वि॒क्क्रम॑णे॒ष्ष्विति॑ वि॒ क्रम॑णेषु। अ॒धि॒क्क्षि॒यन्ति॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नान्न्यधिक्क्षि॒यन्त्य॑धिक्क्षि॒यन्ति॒ भुव॑नानि॒ व्वि॒श्श्वा॒ व्वि॒श्श्वा॒ भुव॑नान्न्यधिक्क्षि॒यन्त्य॑धिक्क्षि॒यन्ति॒ भुव॑नानि॒ व्वि॒श्श्वा॑[2]। अ॒धि॒क्क्षि॒यन्तीत्त्य॑धि क्षि॒यन्ति॑। भुव॑नानि॒ व्वि॒श्श्वा॒ व्वि॒श्श्वा॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नानि॒ व्वि॒श्श्वा॑। व्वि॒श्श्वेति॒ विश्श्वा॑॥२०॥

व्वि॒ष्ण्णो॑ र॒राट॑ꣳ र॒राटँ॒व्वि॒ष्ण्णो॒र्व्वि॒ष्ण्णो॑ र॒राट॑मस्यसि र॒राटँ॒व्वि॒ष्ण्णो॒र्व्वि॒ष्ण्णो॑ र॒राट॑मसि। र॒राट॑मस्यसि र॒राट॑ꣳ र॒राट॑मसि॒ श्नप्प्त्रे॒ श्नप्प्त्रे॑ऽ असि र॒राट॑ꣳ र॒राट॑मसि॒ श्नप्प्त्रे॑। अ॒सि॒ श्नप्प्त्रे॒ श्नप्प्त्रे॑ऽ अस्यसि॒ श्नप्प्त्रे॑ स्त्थ स्त्थ॒ः श्नप्प्त्रे॑ऽ अस्यसि॒ श्नप्प्त्रे॑ स्त्थः। श्नप्प्त्रे॑ स्त्थ स्त्थ॒ः श्नप्प्त्रे॒ श्नप्प्त्रे॑ स्त्थ॒ः स्यूः स्यू स्त्थ॒ः श्नप्प्त्रे॒ श्नप्प्त्रे॑ स्त्थ॒ः स्यूः[3]। श्नप्प्त्रे॒ऽ इति॒ श्नप्प्त्रे॑। स्थ॒ः स्यूः स्यू स्त्थ॑ स्त्थ॒ः स्यूर्द्ध्रुवो॒ ध्रुवः॒ स्यू स्त्थ॑ स्त्थ॒ः स्यूर्द्ध्रुवः॒। स्यूर्द्ध्रुवो॒ ध्रुवः॒ स्यूः स्यूर्द्ध्रुवो॒ व्वैष्ण्ण॒वँ॒व्वैष्ण्ण॒वन्ध्रु॒वः स्यूः स्यूर्द्ध्रुवो॒ व्वैष्ण्ण॒वम्। ध्रु॒वो व्वैष्ण्ण॒वँ॒व्वैष्ण्ण॒वन्ध्रु॒वो ध्रु॒वो

[1]. उरुषु त्रिषु तथा उरुषु उरुषु यहाँ सिं संज्ञक स्वर उ सवर्ण परे रहते सिं सवर्णे दीर्घम्(वा.प्रा.४.५२) इस सूत्र से दीर्घ होता है। अथैकमुत्तरश्च(वा.प्रा.४.५१) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत उपर्युक्त सूत्र आता है। सिमादितोऽष्टौ स्वराणाम्(वा.प्रा.१.४४) सूत्र से उ सिं संज्ञक है।

[2]. वा.प्रा.४.२७. में उल्लिखित न होने से यहाँ विश्वा पद स्वरान्त है।

[3]. स्थः स्यूः यहाँ पर विसर्जनीयाद्व्यञ्जनपरः (वा. प्रा. ४.१०७) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय से परवर्ती स्पर्श व्यञ्जन परे रहते द्वित्व को प्राप्त करता है यहाँ उक्त स्थिति न होने से सकार का द्वित्व नहीं होगा।

व्वैष्णवँव्विष्णवे व्विष्णवे व्वैष्णवन्ध्रुवो ध्रुवो व्वैष्णवँव्विष्णवे ॥ व्वैष्णवँव्विष्णवे व्विष्णवे व्वैष्णवँव्वैष्णवँव्विष्णवे त्वा त्वा व्विष्णवे व्वैष्णवँव्वैष्णवँव्विष्णवे त्वा। व्विष्णवे त्वा त्वा व्विष्णवे व्विष्णवे त्वा। त्वेति त्वा ॥२१॥

नार्य्यसि नारी नार्य्यसीदमिदमसि नारी नार्य्यसीदम्। असीदमिदमस्यसीदमहमहमिदमस्यसीदमहम्। इदमहमहमिदमिदमहꣳ रक्षसाꣳ रक्षसामहमिदमिदमहꣳ रक्षसाम्। अहꣳ रक्षसाꣳ रक्षसामहमहꣳ रक्षसाङ्ग्रीवा ग्ग्रीवा रक्षसामहमहꣳ रक्षसाङ्ग्रीवाः। रक्षसाङ्ग्रीवा ग्ग्रीवा रक्षसाꣳ रक्षसाङ्ग्रीवाऽ अप्प्यपि ग्ग्रीवा रक्षसाꣳ रक्षसाङ्ग्रीवाऽ अपि। ग्रीवाऽ अप्प्यपि ग्ग्रीवा ग्ग्रीवाऽ अपि कृन्तामि कृन्ताम्म्यपि ग्ग्रीवा ग्ग्रीवाऽ अपि कृन्तामि। अपि कृन्तामि कृन्ताम्म्यप्प्यपि कृन्तामि। कृन्तामीति कृन्तामि॥ बृहन्नस्यसि बृहन्बृहन्नसि बृहद्द्रवा बृहद्द्रवाऽ असि बृहन्बृहन्नसि बृहद्द्रवाः। असि बृहद्द्रवा बृहद्द्रवाऽ अस्यसि बृहद्द्रवा बृहतीम्बृहतीम्बृहद्द्रवाऽ अस्यसि बृहद्द्रवा बृहतीम्। बृहद्द्रवा बृहतीम्बृहतीम्बृहद्द्रवा बृहद्द्रवा बृहतीमिन्द्रायेन्द्राय बृहतीम्बृहद्द्रवा बृहद्द्रवा बृहतीमिन्द्राय। बृहद्द्रवाऽ इति बृहत् रवाः। बृहतीमिन्द्रायेन्द्राय बृहतीम्बृहतीमिन्द्राय व्वाचँव्वाचमिन्द्राय बृहतीम्बृहतीमिन्द्राय व्वाचम्। इन्द्राय व्वाचँव्वाचमिन्द्रायेन्द्राय व्वाचँव्वद व्वद व्वाचमिन्द्रायेन्द्राय व्वाचँव्वद[1]। व्वाचँव्वद व्वद व्वाचँव्वाचँव्वद। व्वदेति वद ॥२२॥

रक्षोहणँव्वलगहनँव्वलगहनꣳ रक्षोहनꣳ रक्षोहणँव्वलगहनँव्वैष्णवीँव्वैष्णवीँव्वलगहनꣳ रक्षोहनꣳ रक्षोहणँव्वलगहनँव्वैष्णवीम्। रक्षोहनमिति रक्षः हनम्। व्वलगहनँव्वैष्णवीँव्वैष्णवीँव्वलगहनँव्वलगहनँव्वैष्णवीमिदमिदँव्वै-

[1]. वाचम् वाचम् तथा वाचम् वद यहाँ अन्तस्थामन्तस्थास्वनुनासिकां परसस्थानाम्(वा.प्रा.४.१०) इस सूत्र से अन्तस्थ वर्ण(व) बाद में होने से मकार अनुनासिक अन्तस्थ व होता है।

ष्णवींब्वंलगहनंब्बलगहनंब्वैष्णवीमिदम्। ब्वलगहनमितिं वलग हनंम्। ब्वैष्णवीमिदमिदंब्वैष्णवींब्वैष्णवीमिदमहमहमिदंब्वैष्णवींब्वैष्णवीमिदमहम्। इदमहमहमिदमिदमहन्तन्तमहमिदमिदमहन्तम्। अहन्तन्तमहमहन्तंब्वलगंब्वलगन्तमहमहन्तंब्वलगम्। तंब्वलगंब्वलगन्तन्तंब्वलगमुदुद्वंलगन्तन्तंब्वलगमुत्। ब्वलगमुदुद्वंलगंब्वलगमुत्किंरामि किराम्म्युद्वंलगंब्वलगमुत्किंरामि[1]। उत्किंरामि किराम्म्युदुत्किंरामि यँऽयङ्किंराम्म्युदुत्किंरामि यम्। किरामि यँऽयङ्किंरामि किरामि यम्मैं मे यङ्किंरामि किरामि यम्मैं। यम्मैं मे यँऽयम्मे निष्ट्यो निष्ट्यों मे यँऽयम्मे निष्ट्यंः। मे निष्ट्यो निष्ट्यों मे मे निष्ट्यो यँऽयन्निष्ट्यों मे मे निष्ट्यो यम्। निष्ट्यो यँऽयन्निष्ट्यो निष्ट्यो यममात्त्योमात्त्यो यन्निष्ट्यो निष्ट्यो यममात्त्यंः। यममात्त्योमात्त्यो यँऽयममात्त्यों निचखानं निचखानामात्त्यो यँऽयममात्त्यों निचखानं। अमात्त्यों निचखानं निचखानामात्त्योमात्त्यों निचखानं समानः संमानो निंचखानामात्त्योमात्त्यों निचखानं समानः। निचखानं समानः संमानो निंचखानं निचखानं समानोसंमानोसंमानः समानो निंचखानं निचखानं समानोसंमानः। निचखानेतिं नि चखानं। समानोसंमानोसंमानः समानः संमानोसंमानः सबंन्धुः सबंन्धुरसंमानः समानः संमानोसंमानः सबंन्धुः। असंमानः सबंन्धुः सबंन्धुरसंमानोसंमानः सबंन्धुरसंबन्धुरसंबन्धुः सबंन्धुरसंमानोसंमानः सबंन्धुरसंबन्धुः। सबंन्धुरसंबन्धुरसंबन्धुः सबंन्धुः सबंन्धुरसंबन्धुः सजातः संजातोसंबन्धुः सबंन्धुः सबंन्धुरसंबन्धुः सजातः। सबंन्धुरिति स बंन्धुः। असंबन्धुः सजातः संजातोसंबन्धुरसंबन्धुः सजातोसंजातोसंजातः सजातोसंबन्धुरसंबन्धुः सजातोसंजातः। असंबन्धुरित्यसं बन्धुः। सजातोसंजातोसंजातः सजातः संजातोसंजातऽ उदुदसंजातः सजातः संजातोसंजातऽ उत्।

1. वा. प्रा. ५.३५. के अनुसार वलगम् पद का पृथक्करण विहित नहीं है।

स॒जा॒तऽ इति॑ स जा॒तः। अस॑जात॒ऽ उदुदस॑जा॒तोस॑जात॒ऽ उत्कृ॒त्याङ्कृ॒त्या-
मुदस॑जा॒तोस॑जात॒ऽ उत्कृ॒त्याम्[1]। उत्कृ॒त्याङ्कृ॒त्यामुदुत्कृ॒त्याङ्कि॑रामि किरामि
कृ॒त्यामुदुत्कृ॒त्याङ्कि॑रामि। कृ॒त्याङ्कि॑रामि किरामि कृ॒त्याङ्कृ॒त्याङ्कि॑रामि।
कि॒रा॒मीति॑ किरामि॥२३॥

स्व॒राड॑स्यसि स्व॒राट्ट् स्व॒राड॑सि सपत्न॒हा स॑प॒त्नहासि॑ स्व॒राट्ट् स्व॒राड॑सि सपत्न॒हा। स्व॒राडिति॑ स्व॒ राट्। अ॒सि॒ स॒प॒त्न॒हा स॑पत्न॒हास्य॑सि सपत्न॒हा स॑त्र॒राट्ट् स॑त्र॒राट्ट् स॑पत्न॒हास्य॑सि सपत्न॒हा स॑त्र॒राट्[2]। स॒प॒त्न॒हा स॑त्र॒राट्ट् स॑त्र॒राट्ट् स॑पत्न॒हा स॑पत्न॒हा स॑त्र॒राड॑भिमाति॒हाभि॑माति॒हा स॑त्र॒राट्ट् स॑पत्न॒हा स॑पत्न॒हा स॑त्र॒राड॑भिमाति॒हा। स॒प॒त्न॒हेति॑ सपत्न॒ हा। स॒त्र॒राड॑भिमाति॒हाभि॑माति॒हा स॑त्र॒राट्ट् स॑त्र॒राड॑भिमाति॒हा ज॑न॒राड्ड् ज॑न॒राड॑भिमाति॒हा स॑त्र॒राट्ट् स॑त्र॒राड॑भिमा-ति॒हा ज॑न॒राट्। स॒त्र॒राडिति॑ सत्र॒ राट्। अ॒भि॒मा॒ति॒हा ज॑न॒राड्ड् ज॑न॒राड॑भि-माति॒हाभि॑माति॒हा ज॑न॒राड्ड्रक्षो॒हा र॑क्षो॒हा ज॑न॒राड॑भिमाति॒हाभि॑माति॒हा ज॑न॒राड्ड्रक्षो॒हा। अ॒भि॒मा॒ति॒हेत्य॑भिमाति॒ हा। ज॒न॒राड्ड्रक्षो॒हा र॑क्षो॒हा ज॑न॒राड्ड् ज॑न॒राड्ड्रक्षो॒हा स॑र्व्व॒राट्ट् स॑र्व्व॒राड्ड्रक्षो॒हा ज॑न॒राड्ड् ज॑न॒राड्ड्रक्षो॒हा स॑र्व्व॒राट्। ज॒न॒राडिति॑ जन॒ राट्। र॒क्षो॒हा स॑र्व्व॒राट्ट् स॑र्व्व॒राड्ड्रक्षो॒हा र॑क्षो॒हा स॑र्व्व॒राड॑-मित्र॒हामि॑त्र॒हा स॑र्व्व॒राड्ड्रक्षो॒हा र॑क्षो॒हा स॑र्व्व॒राड॑मित्र॒हा। र॒क्षो॒हेति॑ रक्षः॒ हा। स॒र्व्व॒राड॑मित्र॒हामि॑त्र॒हा स॑र्व्व॒राट्ट् स॑र्व्व॒राड॑मित्र॒हा। स॒र्व्व॒राडिति॑ सर्व्व॒ राट्। अ॒मि॒त्र॒हेत्य॑मित्र॒ हा॥२४॥

---

1. वा.प्रा.५.३७. के अनुसार असजातः इस पद का पृथक्करण नहीं होता है।

2. सत्रराट् यहाँ वा.प्रा.४.१०१. के अनुसार तकार का द्वित्व प्राप्त है परन्तु वा.प्रा.६.२७. के अनुसार उसका विरोध होता है। सत्रराट् समस्त पद है, यहाँ भी अवग्रह होने के कारण वा.प्रा.६.२७. प्रवर्तित होगा, क्योंकि प्रातिशाख्यों की प्रवृत्ति पद को मानकर होती है।

रक्षोहणो वो वो रक्षोहनो रक्षोहणो वो ब्वलगहनो ब्वलगहनो वो रक्षोहनो रक्षोहणो वो ब्वलगहनः। रक्षोहनऽ इति रक्षः हनः। ब्वो ब्वलगहनो ब्वलगहनो वो वो ब्वलगहनः प्प्र प्प्र वलगहनो वो वो ब्वलगहनः प्प्र। ब्वलगहनः प्प्र प्प्र वलगहनो ब्वलगहनः प्प्रोक्षाम्म्युक्षामि प्प्र वलगहनो ब्वलगहनः प्प्रोक्षामि। ब्वलगहनऽ इति वलग हनः। प्रोक्षाम्म्युक्षामि प्प्र प्प्रोक्षामि ब्वैष्णवान्वैष्णवानुक्षामि प्प्र प्प्रोक्षामि ब्वैष्णवान्। उक्षामि ब्वैष्णवान्वैष्णवानुक्षाम्म्युक्षामि ब्वैष्णवानवाव वैष्णवानुक्षाम्म्युक्षामि ब्वैष्णवानव। ब्वैष्णवानवाव वैष्णवान्वैष्णवानव नयामि नयाम्म्यव वैष्णवान्वैष्णवानव नयामि[1]। अव नयामि नयाम्म्यवाव नयाम्म्यवाव नयाम्म्यवाव नयाम्म्यव। नयाम्म्यवाव नयामि नयाम्म्यव स्तृणामि स्तृणाम्म्यव नयामि नयाम्म्यव स्तृणामि। अव स्तृणामि स्तृणाम्म्यवाव स्तृणामि रक्षोहणौ रक्षोहनौ स्तृणाम्म्यवाव स्तृणामि रक्षोहणौ। स्तृणामि रक्षोहणौ रक्षोहनौ स्तृणामि स्तृणामि रक्षोहणौ वाँब्वाꣳ रक्षोहनौ स्तृणामि स्तृणामि रक्षोहणौ वाम्। रक्षोहणौ वाँब्वाꣳ रक्षोहनौ रक्षोहणौ वाँब्वलगहनौ ब्वलगहनौ वाꣳ रक्षोहनौ रक्षोहणौ वाँब्वलगहनौ। रक्षोहनाविति रक्षः हनौ। ब्वाँब्वलगहनौ ब्वलगहनौ वाँब्वाँब्वलगहनाऽ उपोप वलगहनौ वाँब्वाँब्वलगहनाऽ उप। ब्वलगहनाऽ उपोप वलगहनौ ब्वलगहनाऽ उप दधामि दधाम्म्युप वलगहनौ ब्वलगहनाऽ उप दधामि। ब्वलगहनाविति वलग हनौ। उप दधामि दधाम्म्युपोप दधामि ब्वैष्णवी ब्वैष्णवी दधाम्म्युपोप दधामि ब्वैष्णवी। दधामि ब्वैष्णवी ब्वैष्णवी दधामि दधामि ब्वैष्णवी परि परि वैष्णवी दधामि दधामि ब्वैष्णवी परि। ब्वैष्णवी परि

1. नाव नयामि (वा. प्रा. ३.१०६) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अव पद के अन्तिम स्वर का दीर्घ नहीं होगा। सक्रमे च वैष्णवान्(वा.प्रा.३.१४९) इस सूत्र के अनुसार सक्रम में यहाँ वैष्णवान् का नकार भी विकार को नहीं प्राप्त होता है।

परिं वैष्णुवी ब्वैष्णुवी पर्य्यूहाम्म्यूहामि परिं वैष्णुवी ब्वैष्णुवी पर्य्यूहामि। ब्वैष्णुवीऽ इतिं वैष्णुवी। पर्य्यूहाम्म्यूहामि परि पर्य्यूहामि ब्वैष्णुवी ब्वैष्णुवीऽ ऊंहामि परि पर्य्यूहामि ब्वैष्णुवी। ऊहामि ब्वैष्णुवी ब्वैष्णुवीऽ ऊंहाम्म्यूहामि ब्वैष्णुवी ब्वैष्णुवँब्वैष्णुवँब्वैष्णुवीऽ ऊंहाम्म्यूहामि ब्वैष्णुवी ब्वैष्णुवम्। ब्वैष्णुवी ब्वैष्णुवँब्वैष्णुवँब्वैष्णुवी ब्वैष्णुवी ब्वैष्णुवमंस्यसि ब्वैष्णुवँब्वैष्णुवी ब्वैष्णुवी ब्वैष्णुवमंसि। ब्वैष्णुवीऽ इतिं वैष्णुवी। ब्वैष्णुवमंस्यसि ब्वैष्णुवँब्वैष्णुवमंसि ब्वैष्णुवा ब्वैष्णुवाऽ अंसि ब्वैष्णुवँब्वैष्णुवमंसि ब्वैष्णुवाः। असि ब्वैष्णुवा ब्वैष्णुवाऽ अंस्यसि ब्वैष्णुवा स्त्थं स्त्थ ब्वैष्णुवाऽ अंस्यसि ब्वैष्णुवा स्त्थं। ब्वैष्णुवा स्त्थं स्त्थ ब्वैष्णुवा ब्वैष्णुवा स्त्थं। स्थेतिं स्त्थ॥२५॥

य्यवोंस्यसि य्यवो य्यवोंसि य्यवयं य्यवयांसि य्यवो य्यवोंसि य्यवयं[1]। असि य्यवयं य्यवयांस्यसि य्यवयास्म्मदस्म्मद्यवयांस्यसि य्यवयास्म्मत्। य्यवयास्म्मद्स्म्मद्यवयं य्यवयास्म्मद्वेषो द्वेषोस्म्मद्यवयं य्यवयास्म्मद्वेषंः। अस्म्मद्वेषो द्वेषोस्म्मदुस्म्मद्वेषों य्यवयं य्यवयु द्वेषोस्म्मदुस्म्मद्वेषों य्यवयं। द्वेषों य्यवयं य्यवयु द्वेषो द्वेषों य्यवयारांतीररांतीर्य्यवयु द्वेषो द्वेषों य्यवयारांतीः। य्यवयारांतीररांतीर्य्यवयं य्यवयारांतीर्द्दिवे दिवेरांतीर्य्यवयं य्यवयारांतीर्द्दिवे। अरांतीर्द्दिवे दिवेरांतीररांतीर्द्दिवे त्वां त्वा दिवेरांतीररांतीर्द्दिवे त्वां। दिवे त्वां त्वा दिवे दिवे त्वान्तरिंक्षायान्तरिंक्षाय त्वा दिवे दिवे त्वान्तरिंक्षाय। त्वान्तरिंक्षायान्तरिंक्षाय त्वा त्वान्तरिंक्षाय पृथिव्यै पृथिव्याऽ अन्तरिंक्षाय त्वा त्वान्तरिंक्षाय पृथिव्यै। अन्तरिंक्षाय पृथिव्यै पृथिव्याऽ अन्तरिंक्षायान्तरिंक्षाय पृथिव्यै शुन्धंन्ताँ शुन्धंन्ताम्पृथिव्याऽ अन्तरिंक्षायान्तरिंक्षाय पृथिव्यै शुन्धंन्ताम्। पृथिव्यै शुन्धंन्ताँ शुन्धंन्ताम्पृथिव्यै पृथिव्यै शुन्धंन्ताँल्लोका लोकाः शुन्धंन्ताम्पृथिव्यै पृथिव्यै शुन्धंन्ताँ-

[1]. यवः असि यहाँ वा.प्रा.४.८०. के अनुसार असि के अकार का अभिनिधान होता है।

ल्लोकाः। शुन्धन्ताँल्लोका लोकाः शुन्धन्ताꣳ शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः पितृसदना लोकाः शुन्धन्ताꣳ शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः। लोकाः पितृषदनाः पितृसदना लोका लोकाः पितृषदनाः पितृषदनम्पितृसदनम्पितृसदना लोका लोकाः पितृषदनाः पितृषदनम्[1]। पितृषदनाः पितृषदनम्पितृसदनम्पितृसदनाः पितृषदनाः पितृषदनमस्यसि पितृसदनम्पितृसदनाः पितृषदनाः पितृषदनमसि। पितृसदनाऽ इति पितृ सदनाः। पितृषदनमस्यसि पितृसदनम्पितृषदनमसि। पितृसदनमिति पितृ सदनम्। असीत्यसि॥२६॥

उद्दिवन्दिवमुदुद्दिवꣳ स्तभान स्तभान दिवमुदुद्दिवꣳ स्तभान[2]। दिवꣳ स्तभान स्तभान दिवन्दिवꣳ स्तभानान्तरिक्षमन्तरिक्षमा स्तभान दिवन्दिवꣳ स्तभानान्तरिक्षम्। स्तभानान्तरिक्षमन्तरिक्षमा स्तभान स्तभानान्तरिक्षम्पृण पृणान्तरिक्षमा स्तभान स्तभानान्तरिक्षम्पृण। आन्तरिक्षम्। अन्तरिक्षम्पृण पृणान्तरिक्षमन्तरिक्षम्पृण दृꣳहस्व दृꣳहस्व पृणान्तरिक्षमन्तरिक्षम्पृण दृꣳहस्व। पृण दृꣳहस्व दृꣳहस्व पृण पृण दृꣳहस्व पृथिव्याम्पृथिव्यान्दृꣳहस्व पृण पृण दृꣳहस्व पृथिव्याम्। दृꣳहस्व पृथिव्याम्पृथिव्यान्दृꣳहस्व दृꣳहस्व पृथिव्यान्द्युतानो द्युतानः पृथिव्यान्दृꣳहस्व दृꣳहस्व पृथिव्यान्द्युतानः। पृथिव्यान्द्युतानो द्युतानः पृथिव्याम्पृथिव्यान्द्युतानस्त्वा त्वा द्युतानः पृथिव्याम्पृथिव्यान्द्युतानस्त्वा। द्युतानस्त्वा त्वा द्युतानो द्युतानस्त्वा मारुतो मारुतस्त्वा द्युतानो द्युतानस्त्वा मारुतः। त्वा मारुतो मारुतस्त्वा त्वा मारुतो मिनोतु मिनोतु मारुतस्त्वा त्वा मारुतो मिनोतु। मारुतो मिनोतु मिनोतु

1. पितृसदनाः तथा पितृसदनम् यहाँ भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) के अनुसार एक पद में भावी से परे स्थित सकार षकार होता है। अकण्ठ्यो भावी(वा.प्रा.१.४६) के अनुसार ऋ की संज्ञा भावी है।

2. याज्ञवल्क्य शिक्षा में संयोग पिण्ड सात प्रकार के निर्देशित हैं। उद्दिवꣳ स्तभान यह मृत्पिण्ड का उदाहरण है। - या. शि. २०५

मारुतो मारुतो मिनोतु मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ मिनोतु मारुतो मारुतो मिनोतु मित्रावरुणौ[1]। मिनोतु मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ मिनोतु मिनोतु मित्रावरुणौ ध्रुवेण ध्रुवेण मित्रावरुणौ मिनोतु मिनोतु मित्रावरुणौ ध्रुवेण। मित्रावरुणौ ध्रुवेण ध्रुवेण मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ ध्रुवेण धर्म्मणा धर्म्मणा ध्रुवेण मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ ध्रुवेण धर्म्मणा। ध्रुवेण धर्म्मणा धर्म्मणा ध्रुवेण ध्रुवेण धर्म्मणा। धर्म्मणेति धर्म्मणा॥ ब्रह्मवनिं त्वा त्वा ब्रह्मवनिं ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं क्षत्रवनिं त्वा ब्रह्मवनिं ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं। ब्रह्मवनीतिं ब्रह्म वनिं। त्वा क्षत्रवनिं क्षत्रवनिं त्वा त्वा क्षत्रवनिं रायस्पोषवनिं रायस्पोषवनिं क्षत्रवनिं त्वा त्वा क्षत्रवनिं रायस्पोषवनिं। क्षत्रवनिं रायस्पोषवनिं रायस्पोषवनिं क्षत्रवनिं क्षत्रवनिं रायस्पोषवनि परि परिं रायस्पोषवनिं क्षत्रवनिं क्षत्रवनिं रायस्पोषवनि परिं। क्षत्रवनीतिं क्षत्र वनिं। रायस्पोषवनि परि परिं रायस्पोषवनिं रायस्पोषवनि पर्य्यूँहाम्म्यूहामि परिं रायस्पोषवनिं रायस्पोषवनि पर्य्यूँहामि। रायस्पोषवनीतिं रायस्पोष वनि[2]। पर्य्यूँहाम्म्यूहामि परि पर्य्यूँहामि। ऊहामीत्यूँहामि॥ ब्रह्मं दृꣳह दृꣳह ब्रह्म ब्रह्मं दृꣳह क्षत्रङ्क्षत्रन्दृꣳह ब्रह्म ब्रह्मं दृꣳह क्षत्रम्। दृꣳह क्षत्रङ्क्षत्रन्दृꣳह दृꣳह क्षत्रमायुरायुं: क्षत्रन्दृꣳह दृꣳह क्षत्रमायुं:। क्षत्रमायुरायुं: क्षत्रङ्क्षत्रमायुं: प्प्रजाम्प्रजामायुं: क्षत्रङ्क्षत्रमायुं: प्प्रजाम्। आयुं: प्प्रजाम्प्रजामायुरायुं: प्प्रजाम्। प्रजामितिं प्प्र जाम्॥२७॥

ध्रुवास्यंसि ध्रुवा ध्रुवासिं ध्रुवो ध्रुवोसि ध्रुवा ध्रुवासिं ध्रुवः। असि ध्रुवो ध्रुवोस्यसि ध्रुवोयमयन्ध्रुवोस्यसि ध्रुवोयम्। ध्रुवोयमयन्ध्रुवो ध्रुवोयँय्यजंमानो यजंमानोयन्ध्रुवो ध्रुवोयँय्यजंमानः। अयँय्यजंमानो यजंमानोयमयँय्यजंमानो-

---

1. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि(वा.प्रा.२.४८) इस सूत्र के अनुसार सम्बोधन न होने से यहाँ मित्रावरुणौ पद द्विरुदात्त है।

2. नि वनि नसः प्रणीनम् (वा. प्रा. ३.९०) इस सूत्र के अनुसार वनि का नकार प्रकृतिभाव से रहता है।

स्म्मिन्नस्म्मिन्न्यजमानोयमयँय्यजमानोस्म्मिन्। यजमानोस्म्मिन्नस्म्मिन्न्यज-
मानो यजमानोस्म्मिन्नायतनऽ आयतनेस्म्मिन्न्यजमानो यजमानोस्म्मिन्नायतने
। अस्म्मिन्नायतनऽ आयतनेस्म्मिन्नस्म्मिन्नायतने प्प्रजया प्प्रजयायतनेस्म्मि-
न्नस्म्मिन्नायतने प्प्रजया। आयतने प्प्रजया प्प्रजयायतनऽ आयतने प्प्रजया
पशुभिः पशुभिः प्प्रजयायतनऽ आयतने प्प्रजया पशुभिः। आयतनऽ इत्या
यतने। प्रजया पशुभिः पशुभिः प्प्रजया प्प्रजया पशुभिर्ब्भूयाद् भूयात्पशुभिः
प्प्रजया प्प्रजया पशुभिर्ब्भूयात्। प्रजयेति प्प्र जया। पशुभिर्ब्भूयाद् भूयात्प-
शुभिः पशुभिर्ब्भूयात्। पशुभिरिति पशु भिः। भूयादिति भूयात्॥ घृतेन द्यावा-
पृथिवी द्यावापृथिवी घृतेन घृतेन द्यावापृथिवी पूर्व्वेथाम्पूर्व्वेथान्द्यावापृथिवी
घृतेन घृतेन द्यावापृथिवी पूर्व्वेथाम्। द्यावापृथिवी पूर्व्वेथाम्पूर्व्वेथान्द्यावापृथिवी
द्यावापृथिवी पूर्व्वेथामिन्द्रस्येन्द्रस्य पूर्व्वेथान्द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी पूर्व्वेथा-
मिन्द्रस्य। द्यावापृथिवीऽ इति द्यावापृथिवी। पूर्व्वेथामिन्द्रस्येन्द्रस्य पूर्व्वेथा-
म्पूर्व्वेथामिन्द्रस्य च्छदिश्च्छदिरिन्द्रस्य पूर्व्वेथाम्पूर्व्वेथामिन्द्रस्य च्छदिः[1]।
इन्द्रस्य च्छदिश्च्छदिरिन्द्रस्येन्द्रस्य च्छदिरस्यसि च्छदिरिन्द्रस्येन्द्रस्य च्छदिर-
सि। छदिरस्यसि च्छदिश्च्छदिरसि व्विश्वजनस्य व्विश्वजनस्यासि च्छदि-
श्च्छदिरसि व्विश्वजनस्य। असि व्विश्वजनस्य व्विश्वजनस्यास्यसि व्विश्वजनस्य
च्छाया च्छाया व्विश्वजनस्यास्यसि व्विश्वजनस्य च्छाया[2]। व्विश्वजनस्य च्छाया
च्छाया व्विश्वजनस्य व्विश्वजनस्य च्छाया। व्विश्वजनस्येति विश्व जनस्य।
छायेति च्छाया॥२८॥

---

[1]. इन्द्रस्य छदिः यहाँ वा.प्रा.४.२५. के अनुसार छकार बाद में होने से अकार(य) चकार से व्यवहित होता है।

[2]. स्वरश्छकारे चकारेण सर्वत्र(वा.प्रा.४.२५) इस सूत्र के अनुसार विश्वजनस्य छाया इन दो पदों के मध्य च आता है।

परिं त्वा त्वा॒ परि॒ परिं त्वा गिर्व्वणो गिर्व्वणस्त्वा॒ परि॒ परिं त्वा गिर्व्वणः[1]। त्वा॒ गि॒र्व्व॒णो॒ गि॒र्व्व॒ण॒स्त्वा॒ त्वा॒ गि॒र्व्व॒णो॒ गिरो॒ गिरों गिर्व्वणस्त्वा त्वा गिर्व्वणो॒ गिरः॑। गि॒र्व्व॒णो॒ गिरो॒ गिरों गिर्व्वणो गिर्व्वणो॒ गिरं॑ऽ इ॒माऽ इ॒मा गिरों गिर्व्वणो गिर्व्वणो॒ गिरं॑ऽ इ॒माः। गिरं॑ऽ इ॒माऽ इ॒मा गिरो॒ गिरं॑ऽ इ॒मा भंवन्तु भवन्त्वि॒मा गिरो॒ गिरं॑ऽ इ॒मा भंवन्तु। इ॒मा भंवन्तु भवन्त्वि॒माऽ इ॒मा भंवन्तु वि॒श्वतों वि॒श्वतों भवन्त्वि॒माऽ इ॒मा भंवन्तु वि॒श्वतं॑ः। भ॒व॒न्तु॒ वि॒श्वतों वि॒श्वतों भवन्तु भवन्तु वि॒श्वतं॑ः। वि॒श्वत॒ऽ इतिं वि॒श्वतं॑ः॥ वृ॒द्धायु॒मन्व॒नुं वृ॒द्धायुँवृ॒द्धायु॒मनु॒ वृद्धंयो॒ वृ॒द्धयो॒नुं वृ॒द्धायुँवृ॒द्धायु॒मनु॒ वृद्धंयः। वृ॒द्धायु॒मितिं वृद्ध आंयुम्। अनु॒ वृद्धंयो॒ वृ॒द्धयो॒न्व॒नु॒ वृद्धंयो॒ जुष्टा॒ जुष्टा॒ वृ॒द्धयो॒न्व॒नु॒ वृद्धंयो॒ जुष्टा॑ः। वृ॒द्धंयो॒ जुष्टा॒ जुष्टा॒ वृद्धंयो॒ वृद्धंयो॒ जुष्टां भवन्तु भवन्तु॒ जुष्टा॒ वृ॒द्धंयो॒ वृ॒द्धंयो॒ जुष्टां भवन्तु। जुष्टां भवन्तु भवन्तु॒ जुष्टा॒ जुष्टां भवन्तु॒ जुष्टंयो॒ जुष्टंयो भवन्तु॒ जुष्टा॒ जुष्टां भवन्तु॒ जुष्टंयः। भ॒व॒न्तु॒ जुष्टंयो॒ जुष्टंयो भवन्तु भवन्तु॒ जुष्टंयः। जुष्टंय॒ऽ इति॒ जुष्टंयः॥२९॥

इन्द्रंस्य॒ स्यूः स्यूरिन्द्र॒स्येन्द्रंस्य॒ स्यूरंस्यसि॒ स्यूरिन्द्र॒स्येन्द्रंस्य॒ स्यूरंसि। स्यूरंस्यसि॒ स्यूः स्यूरंसि ध्रु॒वो ध्रु॒वो॒सि॒ स्यूः स्यूरंसि ध्रु॒वः। अ॒सि॒ ध्रु॒वो ध्रु॒वो॒स्यसि ध्रु॒वऽ ऐ॒न्द्रमै॒न्द्रन्ध्रु॒वो॒स्यसि ध्रु॒वऽ ऐ॒न्द्रम्। ध्रु॒वऽ ऐ॒न्द्रमै॒न्द्रन्ध्रु॒वो ध्रु॒वऽ ऐ॒न्द्रँवै॒श्व-दे॒वँवै॒श्वदे॒वमै॒न्द्रन्ध्रु॒वो ध्रु॒वऽ ऐ॒न्द्रँवै॒श्वदे॒वम्॥ ऐ॒न्द्रँवै॒श्वदे॒वँवै॒श्वदे॒वमै॒न्द्रमै॒न्द्रँ-वै॒श्वदे॒वम्। वै॒श्व॒दे॒वमितिं वैश्व दे॒वम्॥३०॥

वि॒भूरंस्यसि वि॒भूर्वि॒भूरंसि प्र॒वाहंणः प्र॒वाहंनोसि वि॒भूर्वि॒भूरंसि प्र॒वाहं-णः[2]। वि॒भूरितिं वि॒ भूः। अ॒सि॒ प्र॒वाहंणः प्र॒वाहंनोस्यसि प्र॒वाहंणो॒ वह्नि॒र्वह्निः॑ प्र॒वाहंनोस्यसि प्र॒वाहंणो॒ वह्निः॑। प्र॒वाहंणो॒ वह्नि॒र्वह्निः॑ प्र॒वाहंनः प्र॒वाहंणो॒

[1].गिर्वणः (वा. प्रा. २.१०) यह पद अनुदात्त होता है।

[2]. स्वरयवहकपेथ्र (वा. प्रा. ३.८५) इस सूत्र के अनुसार प्रवाहनः इस पद का नकार णकार हो जाता है।

व॒ह्निर्हव्य॒वाह॑नो हव्य॒वाह॑नो॒ व॒ह्निः॑ प्प्र॒वाह॑नः प्प्र॒वाह॑णो॒ व॒ह्निर्हव्य॒वाह॑नः। प्र॒वाह॑न॒ऽ इति॑ प्प्र॒ व्वाह॑नः। व॒ह्निर्हव्य॒वाह॑नो हव्य॒वाह॑नो॒ व॒ह्निर्व॒ह्निर्हव्य॒वाह॑नः श्वा॒त्रः श्वा॒त्रो ह॑व्य॒वाह॑नो॒ व॒ह्निर्व॒ह्निर्हव्य॒वाह॑नः श्वा॒त्रः[1]। ह॒व्य॒वाह॑नः श्वा॒त्रः श्वा॒त्रो ह॑व्य॒वाह॑नो हव्य॒वाह॑नः श्वा॒त्रः प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑ताः श्वा॒त्रो ह॑व्य॒वाह॑नो हव्य॒वाह॑नः श्वा॒त्रः प्प्रचे॑ताः। ह॒व्य॒वाह॑न॒ऽ इति॑ हव्य॒ व्वाह॑नः॥ श्वा॒त्रः प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑ताः श्वा॒त्रः श्वा॒त्रः प्प्रचे॑तास्तु॒थस्तु॒थः प्प्रचे॑ताः श्वा॒त्रः श्वा॒त्रः प्प्रचे॑तास्तु॒थः। प्रचे॑तास्तु॒थस्तु॒थः प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑तास्तु॒थो व्वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दास्तु॒थः प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑तास्तु॒थो व्वि॒श्ववे॑दाः। प्रचे॑ता॒ऽ इति॒ प्प्र चे॑ताः। तु॒थो व्वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दा-स्तु॒थस्तु॒थो व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ उ॒शिगु॒शिग्ग्वि॒श्ववे॑दास्तु॒थस्तु॒थो व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ उ॒शिक्। व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ उ॒शिगु॒शिग्ग्वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ उ॒शिक्क॒विः क॒विरु॒शिग्ग्वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ उ॒शिक्क॒विः। व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ इति॑ वि॒श्व व्वे॑दाः॥३१॥

उ॒शिक्क॒विः क॒विरु॒शिगु॒शिक्क॒विरङ्गा॑रि॒रङ्गा॑रिः क॒विरु॒शिगु॒शिक्क॒विरङ्गा॑रिः। क॒विरङ्गा॑रि॒रङ्गा॑रिः क॒विः क॒विरङ्गा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रि॒रङ्गा॑रिः क॒विः क॒विरङ्गा॑-रि॒र्ब्बम्भा॑रिः। अङ्गा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रि॒रङ्गा॑रि॒रङ्गा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रिरव॒स्यूर॑व॒स्यूर्ब्बम्भा॑रि॒रङ्गा॑-रि॒रङ्गा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रिरव॒स्यूः। बम्भा॑रिरव॒स्यूर॑व॒स्यूर्ब्बम्भा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रिरव॒स्यूर्दु॑व॑स्वा॒न्दुव॑-स्वानव॒स्यूर्ब्बम्भा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रिरव॒स्यूर्दु॑व॑स्वान्[2]। अ॒व॒स्यूर्दु॑व॑स्वा॒न्दुव॑स्वानव॒स्यूर॑व॒स्यू-र्दुव॑स्वाञ्छु॒न्ध्यूः शु॒न्ध्यूर्दुव॑स्वानव॒स्यूर॑व॒स्यूर्दुव॑स्वाञ्छु॒न्ध्यूः[3]। दुव॑स्वाञ्छु॒न्ध्यूः शु॒न्ध्यूर्दुव॑स्वा॒न्दुव॑स्वाञ्छु॒न्ध्यूर्म्मा॑र्ज्जा॒लीयो॑ मार्ज्जा॒लीय॑ः शु॒न्ध्यूर्दुव॑स्वा॒न्दुव॑स्वा-ञ्छु॒न्ध्यूर्म्मा॑र्ज्जा॒लीय॑ः। शु॒न्ध्यूर्म्मा॑र्ज्जा॒लीयो॑ मार्ज्जा॒लीय॑ः शु॒न्ध्यूः शु॒न्ध्यूर्म्मा॑-

---

[1]. विसर्जनीयाद्व्यञ्जनपरः(वा.प्रा.४.१०७) इस सूत्र के अनुसार हव्यवाहनः श्वात्रः यहाँ विसर्ग से परे शकार की द्विरुक्ति नहीं होगी, जैसे इसी मन्त्र में वह्निः प्प्रवाहणः में पकार का द्वित्व होगा, वैसा उपर्युक्त स्थल में शकार का द्वित्व नहीं होगा।

[2]. प्रकृत्या पदान्तीयः (वा. प्रा. ३.८९) पदान्त नकार प्रकृतिभाव से रहता है।

[3]. दुवस्वान् शुन्ध्यूः यहाँ परश्चास्पर्शपरश्छम्(वा.प्रा.४.९८) इस सूत्र से शकार छकार होता है।

र्ज्जालीयः सम्म्राट्ट् सम्म्राण्णमार्ज्जालीयः शुन्ध्यूः शुन्ध्यूम्मार्ज्जालीयः सम्म्राट्। मार्ज्जालीयः सम्म्राट्ट् सम्म्राण्णमार्ज्जालीयो मार्ज्जालीयः सम्म्राट्ट् कृशानुः कृशानुः सम्म्राण्णमार्ज्जालीयो मार्ज्जालीयः सम्म्राट्ट् कृशानुः। सम्म्राट्ट् कृशानुः कृशानुः सम्म्राट्ट् सम्म्राट्ट् कृशानुः परिषद्यः परिसद्यः कृशानुः सम्म्राट्ट् सम्म्राट्ट् कृशानुः परिषद्यः। सम्म्राडिति सम् राट्। कृशानुः परिषद्यः परिसद्यः कृशानुः कृशानुः परिषद्यः पवमानः पवमानः परिसद्यः कृशानुः कृशानुः परिषद्यः पवमानः। परिषद्यः पवमानः पवमानः परिसद्यः परिषद्यः पवमानो नभो नभः पवमानः परिसद्यः परिषद्यः पवमानो नभः। परिसद्यऽ इति परि सद्यः। पवमानो नभो नभः पवमानः पवमानो नभः प्प्रतक्क्वा प्प्रतक्क्वा नभः पवमानः पवमानो नभः प्प्रतक्क्वा। नभः प्प्रतक्क्वा प्प्रतक्क्वा नभो नभः प्प्रतक्क्वा मृष्टो मृष्टः प्प्रतक्क्वा नभो नभः प्प्रतक्क्वा मृष्टः। प्रतक्क्वा मृष्टो मृष्टः प्प्रतक्क्वा प्प्रतक्क्वा मृष्टो हव्यसूदनो हव्यसूदनो मृष्टः प्प्रतक्क्वा प्प्रतक्क्वा मृष्टो हव्यसूदनः। प्रतक्क्वेति प्प्र तक्क्वा। मृष्टो हव्यसूदनो हव्यसूदनो मृष्टो मृष्टो हव्यसूदनऽ ऋतधामऽ ऋतधामा हव्यसूदनो मृष्टो मृष्टो हव्यसूदनऽ ऋतधामा[1]। हव्यसूदनऽ ऋतधामऽ ऋतधामा हव्यसूदनो हव्यसूदनऽ ऋतधामा स्वज्ज्योतिः स्वज्ज्योतिर्ऋतधामा हव्यसूदनो हव्यसूदनऽ ऋतधामा स्वज्ज्योतिः[2]। हव्यसूदनऽ इति हव्य सूदनः। ऋतधामा स्वज्ज्योतिः स्वज्ज्योतिर्ऋतधामऽ ऋतधामा स्वज्ज्योतिः समुद्रः समुद्रः स्वज्ज्योतिर्ऋतधामऽ ऋतधामा स्वज्ज्योतिः समुद्रः। ऋतधामेत्यृत धामा। स्वज्ज्योतिः समुद्रः समुद्रः

---

1. ऋतधामा ऋतधामा यहाँ कण्ठ्य ऋकारे ह्रस्वम्(वा.प्रा.४.५०) के अनुसार ऋकार बाद में होने से मा का स्वर(आ) ह्रस्व अ होता है।

2. वा. प्रा. ४.१५५. के अनुसार ज्योतिः एक यकार के संयोग वाला पद है।

स्वर्ज्योतिः स्वर्ज्योतिः समुद्रो विश्वव्यचा विश्वव्यचाः समुद्रः स्वर्ज्योतिः स्वर्ज्योतिः समुद्रो विश्वव्यचाः। स्वर्ज्योतिरिति स्वः ज्योतिः॥३२॥

समुद्रो विश्वव्यचा विश्वव्यचाः समुद्रः संमुद्रो विश्वव्यचाऽ अजोजो विश्वव्यचाः समुद्रः संमुद्रो विश्वव्यचाऽ अजः। विश्वव्यचाऽ अजोजो विश्वव्यचा विश्वव्यचाऽ अजऽ एकंपादेकंपादजो विश्वव्यचा विश्वव्यचाऽ अजऽ एकंपात् । विश्वव्यचाऽ इति विश्व व्यचाः। अजऽ एकंपादेकंपादजोजऽ एकंपादहिरहिरेकंपादजोजऽ एकंपादहिः। एकंपादहिरहिरेकंपादेकंपादहिर्बुध्न्यो बुध्न्योहिरेकंपादेकंपादहिर्बुध्न्यः[1]। एकंपादित्येकं पात्। अहिर्बुध्न्यो बुध्न्योहिरहिर्बुध्न्यो वाग्वाग्बुध्न्योहिरहिर्बुध्न्यो वाक्। बुध्न्यो वाग्वाग्बुध्न्यो बुध्न्यो वागैन्द्रमैन्द्रंवाग्बुध्न्यो बुध्न्यो वागैन्द्रम्। वागैन्द्रमैन्द्रंवाग्वागैन्द्रꣳ सदः सदऽ ऐन्द्रंवाग्वागैन्द्रꣳ सदः। ऐन्द्रꣳ सदः सदऽ ऐन्द्रमैन्द्रꣳ सदऽ ऋतस्यऽ ऋतस्य सदऽ ऐन्द्रमैन्द्रꣳ सदऽ ऋतस्य। सदऽ ऋतस्यऽ ऋतस्य सदः सदऽ ऋतस्य द्वारौ द्वारावृतस्य सदः सदऽ ऋतस्य द्वारौ। ऋतस्य द्वारौ द्वारावृतस्यऽ ऋतस्य द्वारौ मा मा द्वारावृतस्यऽ ऋतस्य द्वारौ मा। द्वारौ मा मा द्वारौ द्वारौ मा मां मा मा द्वारौ द्वारौ मा मां। मा मां मा मा मा मा सꣳ सम्मा मा मा मा सम्। मा सꣳ सम्मां मा सन्तांप्सन्ताप्सꣳ सम्मां मा सन्तांप्सम्। सन्तांप्सन्ताप्सꣳ सꣳ सन्तांप्समर्द्धनामर्द्धनान्ताप्सꣳ सꣳ सन्तांप्समर्द्धनाम्। ताप्समर्द्धनामर्द्धनान्ताप्सन्ताप्समर्द्धनामद्धपतेद्धपतेर्द्धनान्ताप्सन्ताप्समर्द्धनामद्धपते। अर्द्धनामद्धपतेद्धपतेर्द्धनामर्द्धनामद्धपते प्प्र प्प्राद्धपतेर्द्धनामर्द्धनामद्धपते प्प्र। अद्धपते प्प्र प्प्राद्धपतेद्धपते प्प्र मां मा प्प्राद्धपतेद्धपते प्प्र मां। अद्धपतऽ इत्यद्ध पते। प्र मां मा प्प्र प्प्र

---

[1]. बुध्न्यः+ अहिः+ यहाँ पा.पा.४.१३३. के अनुसार स्वरित स्वर का एकीभाव स्वरित कहा गया है परन्तु अग्रिम सूत्र उदात्त के एकीभाव को उदात्त कहता है। पा.पा.१.१५९. परवर्ती सूत्र को इस सम्बन्ध में बलवान् कहता है।

मा॑ तिर तिर मा॒ प्र प्र मा॑ तिर। मा॒ ति॒र॒ ति॒र॒ मा॒ मा॒ ति॒र॒ स्व॒स्ति स्व॒स्ति ति॑र मा मा तिर स्व॒स्ति। ति॒र॒ स्व॒स्ति स्व॒स्ति ति॑र तिर स्व॒स्ति मे॑ मे स्व॒स्ति ति॑र तिर स्व॒स्ति मे॑। स्व॒स्ति मे॑ मे स्व॒स्ति स्व॒स्ति मे॒स्मिन्न॒स्मिन्मे॑ स्व॒स्ति स्व॒स्ति मे॒स्मिन्। मे॒स्मिन्न॒स्मिन्मे॑ मे॒स्मिन्प॒थि प॒थ्यु॒स्मिन्मे॑ मे॒स्मिन्प॒थि। अ॒स्मिन्प॒थि प॒थ्यु॒स्मिन्न॒स्मिन्प॒थि दे॑व॒याने॑ देव॒याने॑ प॒थ्यु॒स्मिन्न॒स्मिन्प॒थि दे॑व॒याने॑। प॒थि दे॑व॒याने॑ देव॒याने॑ प॒थि प॒थि दे॑व॒याने॑ भूयाद् भूयादेव॒याने॑ प॒थि प॒थि दे॑व॒याने॑ भूयात्। दे॒व॒याने॑ भूयाद् भूयादे॑व॒याने॑ देव॒याने॑ भूयान्मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॑ भूयादेव॒याने॑ देव॒याने॑ भूयान्मि॒त्रस्य॑। दे॒व॒यान॒ऽ इति॑ देव॒ याने॑। भू॒या॒न्मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॑ भूयाद् भूयान्मि॒त्रस्य॑ मा मा मि॒त्रस्य॑ भूयाद् भूयान्मि॒त्रस्य॑ मा॥२३॥

मि॒त्रस्य॑ मा मा मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॑ मा॒ चक्षु॑षा॒ चक्षु॑षा मा मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॑ मा॒ चक्षु॑षा। मा॒ चक्षु॑षा॒ चक्षु॑षा मा मा॒ चक्षु॑षेक्षध्व॒मीक्षध्व॒ञ्चक्षु॑षा मा मा॒ चक्षु॑षेक्षध्वम्। चक्षु॑षेक्षध्व॒मीक्षध्व॒ञ्चक्षु॑षा॒ चक्षु॑षेक्षध्व॒मग्न॒योग्न॑यऽ ईक्षध्व॒ञ्चक्षु॑षा॒ चक्षु॑षेक्षध्व॒मग्न॑यः[1]। ई॒क्ष॒ध्व॒मग्न॒योग्न॑यऽ ईक्षध्व॒मीक्षध्व॒मग्न॑यः सगराः सग॒राऽ अग्न॑यऽ ईक्षध्व॒मीक्षध्व॒मग्न॑यः सगराः[2]। अग्न॑यः सगराः सग॒राऽ अग्न॒योग्न॑यः सग॒राः सग॑रा॒ः सग॑राः सग॒राऽ अग्न॒योग्न॑यः सग॒राः सग॑राः। स॒ग॒राः सग॑रा॒ः सग॑राः सगराः सग॒राः सग॑रा स्त्थ स्त्थ॒ सग॑राः सगराः सग॒राः सग॑रा स्त्थ। सग॑रा स्त्थ स्त्थ॒ सग॑रा॒ः सग॑रा स्त्थ॒ सग॑रेण॒ सग॑रेण स्त्थ॒ सग॑रा॒ः सग॑रा स्त्थ॒ सग॑रेण। स्त्थ॒ सग॑रेण॒ सग॑रेण स्त्थ स्त्थ॒

---

1. वा. प्रा. २.१७ के अनुसार पदपूर्व आमन्त्रित पद अनुदात्त होता है। यदि वह अनेक पदार्थों का वाचक न हो एवं पाद के प्रारम्भ में न हो। यहाँ अग्नयः अनेक पदार्थों का वाचक होने से अनुदात्त (सर्वानुदात्त) नहीं है।

2. अग्नयः सगराः तथा सगराः सगराः यहाँ अविकारं शाकल्यः शषसेषु(वा.प्रा.३.१०) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय विकार को प्राप्त नहीं करता है। प्रत्ययसवर्णं मुदि शाकटायनः(वा.प्रा.३.९) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय का परसवर्णत्व माध्यन्दिन शाखा में सम्प्रदाय से अप्राप्त है।

सगरेण नाम्ना नाम्ना सगरेण स्त्थ स्त्थ सगरेण नाम्ना। सगरेण नाम्ना नाम्ना सगरेण सगरेण नाम्ना रौद्रेण रौद्रेण नाम्ना सगरेण सगरेण नाम्ना रौद्रेण। नाम्ना रौद्रेण रौद्रेण नाम्ना नाम्ना रौद्रेणानीकेनानीकेन रौद्रेण नाम्ना नाम्ना रौद्रेणानीकेन। रौद्रेणानीकेनानीकेन रौद्रेण रौद्रेणानीकेन पात पातानीकेन रौद्रेण रौद्रेणानीकेन पात। अनीकेन पात पातानीकेनानीकेन पात मा मा पातानीके-नानीकेन पात मा। पात मा मा पात पात माग्ग्रयोग्ग्रयो मा पात पात माग्ग्रयः। माग्ग्रयोग्ग्रयो मा माग्ग्रयः पिपृत पिपृताग्ग्रयो मा माग्ग्रयः पिपृत। अग्ग्रयः पिपृत पिपृताग्ग्रयोग्ग्रयः पिपृत गोपायत गोपायत पिपृताग्ग्रयोग्ग्रयः पिपृत गोपायत। पिपृत गोपायत गोपायत पिपृत पिपृत गोपायत नमो नमो गोपायत पिपृत पिपृत गोपायत नमः। गोपायत नमो नमो गोपायत गोपायत नमो वो वो नमो गोपायत गोपायत नमो वः। नमो वो वो नमो नमो वोस्त्वस्तु वो नमो नमो वोस्तु। व्वोस्त्वस्तु वो वोस्तु मा मास्तु वो वोस्तु मा। अस्तु मा मास्त्वस्तु मा मा मा मास्त्वस्तु मा मा[1]। मा मा मा मा मा मा हिङ्सिष्ट हिङ्सिष्ट मा मा मा मा हिङ्सिष्ट। मा हिङ्सिष्ट हिङ्सिष्ट मा मा हिङ्सिष्ट। हिङ्सिष्टेति हिङ्सिष्ट॥३४॥

ज्योतिरस्यसि ज्योतिर्ज्योतिरसि व्विश्वरूपंव्विश्वरूपमसि ज्योतिर्ज्योतिरसि व्विश्वरूपम्। असि व्विश्वरूपंव्विश्वरूपमस्यसि व्विश्वरूपंव्विश्वेषांव्विश्वेषांव्विश्वरूपमस्यसि व्विश्वरूपंव्विश्वेषाम्। व्विश्वरूपंव्विश्वेषांव्विश्वेषांव्विश्वरूपंव्विश्वरूपंव्विश्वेषान्देवानान्देवानांव्विश्वेषांव्विश्वरूपंव्विश्वरूपंव्विश्वेषान्देवानाम्। व्विश्वरूपमिति विश्व रूपम्। व्विश्वेषान्देवानान्देवानांव्विश्वेषांव्विश्वेषान्देवानाᳩ समित्समिद्देवानांव्विश्वेषांव्विश्वेषान्देवानाᳩ समित्। देवानाᳩ समित्समिद्देवानान्देवानाᳩ

[1]. इस सन्धि में प्रथम मा उदात्त है, द्वितीय मा वा.प्रा.२.४. के अनुसार अस्मदर्थ में प्रयुक्त होने से अनुदात्त है।

समित्। समिदितिं सम् इत्॥ त्वꣳ सोम सोम त्वन्त्वꣳ सोम तनूकृद्भ्यस्तनूकृद्भ्यः सोम त्वन्त्वꣳ सोम तनूकृद्भ्यः। सोम तनूकृद्भ्य-स्तनूकृद्भ्यः सोम सोम तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्यो द्वेषोभ्यस्तनूकृद्भ्यः सोम सोम तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्यः। तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्यो द्वेषोभ्यस्तनूकृद्भ्य-स्तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्योऽन्यकृतेभ्यो द्वेषोभ्यस्तनूकृद्भ्यस्तनू-कृद्भ्यो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यः[1]। तनूकृद्भ्यऽ इति तनूकृत् भ्यः। द्वेषोभ्यो-ऽन्यकृतेभ्योऽन्यकृतेभ्यो द्वेषोभ्यो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यऽ उरूर्व्वन्यकृतेभ्यो द्वेषोभ्यो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यऽ उरु। द्वेषोभ्यऽ इति द्वेषः भ्यः। अन्यकृते-भ्यऽ उरूर्व्वन्यकृतेभ्योऽन्यकृतेभ्यऽ उरु यन्ता यन्तोर्व्वन्यकृतेभ्योऽन्यकृते-भ्यऽ उरु यन्ता। अन्यकृतेभ्यऽ इत्यन्य कृतेभ्यः। उरु यन्ता यन्तोरूरु यन्तास्यसि यन्तोरूरु यन्तासि। यन्तास्यसि यन्ता यन्तासि व्वरूथँव्वरूथमसि यन्ता यन्तासि व्वरूथम्। असि व्वरूथँव्वरूथमस्यसि व्वरूथꣳ स्वाहा स्वाहा व्वरूथमस्यसि व्वरूथꣳ स्वाहा। व्वरूथꣳ स्वाहा स्वाहा व्वरूथँव्वरूथꣳ स्वाहा जुषाणो जुषाणः स्वाहा व्वरूथँव्वरूथꣳ स्वाहा जुषाणः। स्वाहा जुषाणो जुषाणः स्वाहा स्वाहा जुषाणोऽ अप्तुरप्तुर्ज्जुषाणः स्वाहा स्वाहा जुषाणोऽ अप्तुः[2]। जुषाणोऽ अप्तुरप्तुर्ज्जुषाणो जुषाणोऽ अप्तुराज्ज्यस्याज्ज्यस्याप्तुर्ज्जुषाणो जुषाणोऽ अप्तुराज्ज्यस्य। अप्तुराज्ज्यस्याज्ज्यस्याप्तुरप्तुराज्ज्यस्य व्वेतु व्वेत्वाज्ज्यस्याप्तुरप्तुराज्ज्यस्य व्वेतु। आज्ज्यस्य व्वेतु व्वेत्वाज्ज्यस्याज्ज्यस्य व्वेतु स्वाहा स्वाहा व्वेत्वाज्ज्यस्याज्ज्यस्य व्वेतु स्वाहा। व्वेतु स्वाहा स्वाहा व्वेतु व्वेतु स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥३५॥

---

1. वा. प्रा. ४.६५. के अनुसार यहाँ द्वेषोभ्यो से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है।

2. जुषाणश्चानध्वनि (वा. प्रा. ४.८३) इस सूत्र के अनुसार जुषाणोऽ अप्तुः यहाँ जुषाणो का ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

अग्ग्ने॒ नय॒ नयाग्ग्नेग्ग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑ सु॒पथा॒ नयाग्ग्नेग्ग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑[1]। नय॑
सु॒पथा॑ सु॒पथा॒ नय॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒ये रा॒ये सु॒पथा॒ नय॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒ये। सु॒पथा॑ रा॒ये
रा॒ये सु॒पथा॑ सु॒पथा॑ रा॒येऽ अ॒स्म्मान॒स्म्मान्रा॒ये सु॒पथा॑ सु॒पथा॑ रा॒येऽ अ॒स्म्मान्[2]।
सु॒पथेति॑ सु पथा॑। रा॒येऽ अ॒स्म्मान॒स्म्मान्रा॒ये रा॒येऽ अ॒स्म्मान्विश्श्वा॑नि॒ व्विश्श्वा॑न्न्य॒-
स्म्मान्रा॒ये रा॒येऽ अ॒स्म्मान्विश्श्वा॑नि। अ॒स्म्मान्विश्श्वा॑नि॒ व्विश्श्वा॑न्न्य॒स्म्मान॒स्म्मा-
न्विश्श्वा॑नि देव देव॒ व्विश्श्वा॑न्न्य॒स्म्मान॒स्म्मान्विश्श्वा॑नि देव। व्विश्श्वा॑नि देव देव॒
व्विश्श्वा॑नि॒ व्विश्श्वा॑नि देव व्व॒युना॑नि व्व॒युना॑नि देव॒ व्विश्श्वा॑नि॒ व्विश्श्वा॑नि देव व्व॒युना॑नि।
दे॒व॒ व्व॒युना॑नि व्व॒युना॑नि देव देव व्व॒युना॑नि व्वि॒द्वान्वि॒द्वान्व॒युना॑नि देव देव व्व॒युना॑नि
व्वि॒द्वान्। व्व॒युना॑नि व्वि॒द्वान्वि॒द्वान्व॒युना॑नि व्व॒युना॑नि व्वि॒द्वान्। व्वि॒द्वानिति॑ वि॒द्वान्॥
यु॒यो॒द्ध्य॒स्म्मद॒स्म्मद्यु॑यो॒धि यु॒यो॒द्ध्य॒स्म्मज्जु॑हुरा॒णञ्जु॑हुरा॒णम॒स्म्मद्यु॑यो॒धि यु॒यो॒द्ध्य॒-
स्म्मज्जु॑हुरा॒णम्। अ॒स्म्मज्जु॑हुरा॒णञ्जु॑हुरा॒णम॒स्म्मद॒स्म्मज्जु॑हुरा॒णमेन॒ऽ एनो॑ जुहुरा॒-
णम॒स्म्मद॒स्म्मज्जु॑हुरा॒णमेनः॑ । जु॒हु॒रा॒णमेन॒ऽ एनो॑ जुहुरा॒णञ्जु॑हुरा॒णमेनो॒ भूयि॑ष्ठा॒-
म्भूयि॑ष्ठा॒मेनो॑ जुहुरा॒णञ्जु॑हुरा॒णमेनो॒ भूयि॑ष्ठाम्। एनो॒ भूयि॑ष्ठा॒म्भूयि॑ष्ठा॒मेन॒ऽ एनो॒
भूयि॑ष्ठान्ते ते॒ भूयि॑ष्ठा॒मेन॒ऽ एनो॒ भूयि॑ष्ठान्ते। भूयि॑ष्ठान्ते ते॒ भूयि॑ष्ठा॒म्भूयि॑ष्ठान्ते॒
नम॑ऽउक्ति॒न्नम॑ऽउक्तिन्ते॒ भूयि॑ष्ठा॒म्भूयि॑ष्ठान्ते॒ नम॑ऽउक्तिम्। ते॒ नम॑ऽउक्ति॒न्नम॑ऽउ-
क्तिन्ते ते॒ नम॑ऽउक्तिँव्विधेम व्वि॒धेम॒ नम॑ऽउक्तिन्ते ते॒ नम॑ऽउक्तिँव्विधेम। नम॑ऽउक्तिँ-
व्विधेम व्वि॒धेम॒ नम॑ऽउक्ति॒न्नम॑ऽउक्तिँव्विधेम। नम॑ऽउक्ति॒मिति॒ नमः॑ उक्तिम्।
व्वि॒धे॒मेति॑ विधेम॥३६॥

[1]. उदात्ताच्चामन्त्रितादनन्तरम्(वा.प्रा.६.१२) इस सूत्र के अनुसार उदात्तयुक्त सम्बोधन-पद (अग्ने॑) से अव्यवहित परवर्ती क्रियापद(नय॑) अपने प्रकृतिस्वर से युक्त है।

[2]. राये अस्मान् यहाँ वा.प्रा.४.८२. के अनुसार राये का एकार प्रकृति भाव से रहता है।

अ॒यन्नो॑ नो॒यम॒यन्नो॑ऽ अ॒ग्निर॒ग्निर्न्नो॒यम॒यन्नो॑ऽ अ॒ग्निः॑। नो॒ऽ अ॒ग्निर॒ग्निर्न्नो॑ नो॑ऽ अ॒ग्निर्व्वरि॑वो॒ व्वरि॑वो॒ग्निर्न्नो॑ नो॑ऽ अ॒ग्निर्व्वरि॑वः। अ॒ग्निर्व्वरि॑वो॒ व्वरि॑वो॒ग्निर॒ग्निर्व्व-रि॑वस्कृणोतु कृणोतु॒ व्वरि॑वो॒ग्निर॒ग्निर्व्वरि॑वस्कृणोतु[1]। व्वरि॑वस्कृणोतु कृणोतु॒ व्वरि॑-वो॒ व्वरि॑वस्कृणोत्त्व॒यम॒यङ्कृ॑णोतु॒ व्वरि॑वो॒ व्वरि॑वस्कृणोत्त्व॒यम्। कृ॒णो॒त्त्व॒यम॒यङ्कृ॑णोतु कृणोत्त्व॒यम्मृधो॒ मृधो॒यङ्कृ॑णोतु कृणोत्त्व॒यम्मृधः॑। अ॒यम्मृधो॒ मृधो॒यम॒यम्मृधः॑ पु॒रः॑ पु॒रो मृधो॒यम॒यम्मृधः॑ पु॒रः॑। मृधः॑ पु॒रः॑ पु॒रो मृधो॒ मृधः॑ पु॒रऽ ए॑त्त्वेतु पु॒रो मृधो॒ मृधः॑ पु॒रऽ ए॑तु। पु॒रऽ ए॑त्त्वेतु पु॒रः॑ पु॒रऽ ए॑तु प्प्रभि॒न्दन्प्प्रभि॒न्दन्नेतु पु॒रः॑ पु॒रऽ ए॑तु प्प्रभि॒न्दन्। ए॒तु॒ प्प्र॒भि॒न्दन्प्रभि॒न्दन्नेत्त्वेतु प्प्रभि॒न्दन्। प्र॒भि॒न्दन्निति॑ प्प्र भि॒न्दन्॥ अ॒यँव्वाजा॒न्व्वाजा॑न॒यम॒यँव्वाजा॑ञ्जयतु जयतु॒ व्वाजा॑न॒यम॒यँव्वाजा॑ञ्जयतु[2]। व्वाजा॑ञ्जयतु जयतु॒ व्वाजा॒न्व्वाजा॑ञ्जयतु॒ व्वाज॑सातौ॒ व्वाज॑सातौ जयतु॒ व्वाजा॒न्व्वा-जा॑ञ्जयतु॒ व्वाज॑सातौ। ज॒य॒तु॒ व्वाज॑सातौ॒ व्वाज॑सातौ जयतु जयतु॒ व्वाज॑साताव॒यम॒-यँव्वाज॑सातौ जयतु जयतु॒ व्वाज॑साताव॒यम्। व्वाज॑साताव॒यम॒यँव्वाज॑सातौ॒ व्वाज॑सा-ताव॒यꣳ शत्रू॒ञ्छत्रू॑न॒यँव्वाज॑सातौ॒ व्वाज॑साताव॒यꣳ शत्रू॑न्। व्वाज॑साता॒विति॒ वाज॑ सातौ। अ॒यꣳ शत्रू॒ञ्छत्रू॑न॒यम॒यꣳ शत्रू॑ञ्जयतु जयतु॒ शत्रू॑न॒यम॒यꣳ शत्रू॑ञ्जयतु। शत्रू॑ञ्जयतु जयतु॒ शत्रू॒ञ्छत्रू॑ञ्जयतु॒ जहृ॑षाणो॒ जहृ॑षाणो जयतु॒ शत्रू॒ञ्छत्रू॑ञ्जयतु जहृ॑षाणः। ज॒य॒तु॒ जहृ॑षाणो॒ जहृ॑षाणो जयतु जयतु॒ जहृ॑षाणः॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ जहृ॑षाणो जयतु जयतु॒ जहृ॑षाणः॒ स्वाहा॑। जहृ॑षाणः॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ जहृ॑षाणो॒ जहृ॑षाणः॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥३७॥शतम्॥२००॥

---

1. आविर्निरिड इडाया वसतिर्वरिवः (वा. प्रा. ३.२३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ वरिवः का विसर्जनीय सकार हो जाता है।

2. वाजान् जयतु यहाँ तकारवर्गश्चकारवर्गे चकारवर्गम्(वा.प्रा.४.९६) इस सूत्र से चकारवर्ग(ज) बाद में होने से तकारवर्ग (ञ) होता है।

उरु ब्विंष्ण्णो ब्विष्ण्णऽ उरूरु ब्विंष्ण्णो ब्वि वि विंष्ण्णऽ उरूरु ब्विंष्ण्णो ब्वि। ब्विष्ण्णो ब्वि वि विंष्ण्णो ब्विष्ण्णो ब्वि क्क्रंमस्व क्क्रमस्व ब्वि विंष्ण्णो ब्विष्ण्णो ब्वि क्क्रंमस्व। ब्विष्ण्णोऽ इतिं विष्ण्णो। ब्वि क्क्रंमस्व क्क्रमस्व ब्वि वि क्क्रंमस्वोरूरु क्क्रंमस्व ब्वि वि क्क्रंमस्वोरु। क्क्रमस्वोरूरु क्क्रंमस्व क्क्रमस्वोरु क्क्षयांय क्क्षयांयोरु क्क्रंमस्व क्क्रमस्वोरु क्क्षयांय। उरु क्क्षयांय क्क्षयांयोरूरु क्क्षयांय नो नः क्क्षयांयोरूरु क्क्षयांय नः। क्षयांय नो नः क्क्षयांय क्क्षयांय नस्कृधि कृधि नः क्क्षयांय क्क्षयांय नस्कृधि[1]। नस्कृधि कृधि नो नस्कृधि। कृधीतिं कृधि॥ घृतङ्घृतयोने घृतयोने घृतङ्घृतङ्घृतयोने पिब पिब घृतयोने घृतङ्घृतङ्घृतयोने पिब। घृतयोने पिब पिब घृतयोने घृतयोने पिब प्प्रप्प्र प्प्रप्प्रं पिब घृतयोने घृतयोने पिब प्प्रप्प्रं[2]। घृतयोनऽ इतिं घृत योने। पिब प्प्रप्प्र प्प्रप्प्रं पिब पिब प्प्रप्प्रं यज्ज्ञपंतिंय्यज्ज्ञपं-तिम्प्रप्प्रं पिब पिब प्प्रप्प्रं यज्ज्ञपंतिम्। प्रप्प्रं यज्ज्ञपंतिंय्यज्ज्ञपंतिम्प्रप्प्र प्प्रप्प्रं यज्ज्ञपंतिन्तिर तिर य्यज्ज्ञपंतिम्प्रप्प्र प्प्रप्प्रं यज्ज्ञपंतिन्तिर। प्रप्प्रेति प्प्र प्रं। य्यज्ज्ञपंतिन्तिर तिर य्यज्ज्ञपंतिंय्यज्ज्ञपंतिन्तिर स्वाहा स्वाहां तिर य्यज्ज्ञपंतिं-य्यज्ज्ञपंतिन्तिर स्वाहां। य्यज्ज्ञपंतिमितिं यज्ज्ञ पंतिम्। तिर स्वाहा स्वाहां तिर तिर स्वाहां। स्वाहेति स्वाहां॥३८॥

देवं सवितः सवितर्द्देव देवं सवितरेषऽ एष संवितर्द्देव देवं सवितरेषः। सवितरेषऽ एष संवितः सवितरेष तें तऽ एष संवितः सवितरेष तें। एष तें तऽ एषऽ एष ते सोमः सोमंस्तऽ एषऽ एष ते सोमंः। ते सोमः सोमंस्ते ते सोमस्तन्तꣳ सोमंस्ते ते सोमस्तम्। सोमस्तन्तꣳ सोमः सोमस्तꣳ रंक्क्षस्व रक्क्षस्व तꣳ सोमः सोमस्तꣳ रंक्क्षस्व। तꣳ रंक्क्षस्व रक्क्षस्व तन्तꣳ रंक्क्षस्व

1. नः कृधि यहाँ कविष्करत्कृधिषु(वा.प्रा.३.३२) के अनुसार विसर्ग सकार होता है।

2. आम्रेडिते चोत्तर (वा. प्रा. ६.३) द्विरुक्त पद में बाद में विद्यमान उपसर्ग अनुदात होता है।

मा मा रक्षस्व तन्तꣳ रक्षस्व मा। रक्षस्व मा मा रक्षस्व रक्षस्व मा त्वा त्वा मा रक्षस्व रक्षस्व मा त्वा। मा त्वा त्वा मा मा त्वा दभन्दभँस्त्वा मा मा त्वा दभन्। त्वा दभन्दभँस्त्वा त्वा दभन्। दभन्निति दभन्॥ एतत्त्वन्त्वमेतदेतत्त्वन्देव देव त्वमेतदेतत्त्वन्देव। त्वन्देव देव त्वन्त्वदेव सोम सोम देव त्वन्त्वन्देव सोम। देव सोम सोम देव देव सोम देवो देवः सोम देव देव सोम देवः। सोम देवो देवः सोम सोम देवो देवान्देवान्देवः सोम सोम देवो देवान्। देवो देवान्देवान्देवो देवो देवाँ२॥ऽ उपोप देवान्देवो देवो देवाँ२॥ऽ उप। देवाँ२॥ऽ उपोप देवान्देवाँ२॥ऽ उपागाऽ अगाऽ उप देवान्देवाँ२॥ऽ उपागाः। उपागाऽ अगाऽ उपोपागाऽ इदमिदमगाऽ उपोपागाऽ इदम्। अगाऽ इदमिदमगाऽ अगाऽ इदमहमहमिदमगाऽ अगाऽ इदमहम्। इदमहमहमिदमिदमहम्मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानहमिदमिदमहम्मनुष्ष्यान्। अहम्मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानहमहम्मनुष्ष्यान्त्सह सह मनुष्ष्यानहमहम्मनुष्ष्यान्त्सह। मनुष्ष्यान्त्सह सह मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यान्त्सह रायो रायः सह मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यान्त्सह रायः। सह रायो रायः सह सह रायस्पोषेण पोषेण रायः सह सह रायस्पोषेण[1]। रायस्पोषेण पोषेण रायो रायस्पोषेण स्वाहा स्वाहा पोषेण रायो रायस्पोषेण स्वाहा। पोषेण स्वाहा स्वाहा पोषेण पोषेण स्वाहा निर्न्निः स्वाहा पोषेण पोषेण स्वाहा निः। स्वाहा निर्न्निः स्वाहा स्वाहा निर्व्वरुणस्य व्वरुणस्य निः स्वाहा स्वाहा निर्व्वरुणस्य। निर्व्वरुणस्य व्वरुणस्य निर्न्निर्व्वरुणस्य पाशात्पाशाद्वरुणस्य निर्न्निर्व्वरुणस्य पाशात्। व्वरुणस्य पाशात्पाशाद्वरुणस्य व्वरुणस्य पाशान्मुच्ये मुच्ये पाशाद्वरुणस्य व्वरुणस्य पाशान्मुच्ये। पाशान्मुच्ये मुच्ये पाशात्पाशान्मुच्ये। मुच्यऽ इति मुच्ये॥ अभूद्यथायथँऽयथायथमभूदभूद्यथायथमम्ꣳस्तामꣳस्त यथायथमभूदभूद्यथायथम-

[1]. रायः पोषेण यहाँ वा.प्रा.३.२५. के अनुसार विसर्जनीय सकार होता है।

मं॑ꣳस्त[1]॥ यु॒था॒यु॒थम॑मु॒ꣳस्ताम॑ꣳस्त यथायुथँ॑ध्वंथायु॒थमम॑ꣳस्त। यु॒था॒यु॒थमि॑ति॑ यथा युथम्। अमु॒ꣳस्तेत्यम॑ꣳस्त॥३९॥

अत्त्यु॒न्न्यान॒न्न्यानत्त्यत्त्यु॒न्न्यारँ॑॥ऽ अगा॒मगा॑मु॒न्न्यानत्त्यत्त्यु॒न्न्यारँ॑॥ऽ अगा॑म्। अ॒न्न्यारँ॑॥ऽ अगा॒मगा॑मु॒न्न्यान॒न्न्यारँ॑॥ऽ अगा॒न्न नागा॑मु॒न्न्यान॒न्न्यारँ॑॥ऽ अगा॒न्न। अगा॒न्न नागा॒मगा॒न्नान्न्यान॒न्न्यान्नागा॒मगा॒न्नान्न्यान्। नान्न्यान॒न्न्यान्न नान्न्यारँ॑॥ऽ उपोपा॒न्न्यान्न नान्न्यारँ॑॥ऽ उप॑। अ॒न्न्यारँ॑॥ऽ उपोपा॒न्न्यान॒न्न्यारँ॑॥ऽ उपा॑गामगा॒मुपा॒न्न्यान॒न्न्यारँ॑॥ऽ उपा॑गाम्। उपा॑गामगा॒मुपोपा॑गाम॒र्व्वागर्व्वाग॑गा॒मुपोपा॑गाम॒र्व्वाक्। अ॒गा॒म॒र्व्वाग॒र्व्वाग॑गामगाम॒र्व्वाक्क्वा॑ त्वा॒र्व्वाग॑गामगाम॒र्व्वाक्क्वा॑। अ॒र्व्वाक्क्वा॑ त्वा॒र्व्वाग॒र्व्वाक्क्वा॒ परे॑ब्भ्यः॒ परे॑ब्भ्यस्त्वा॒र्व्वाग॒र्व्वाक्क्वा॒ परे॑ब्भ्यः। त्वा॒ परे॑ब्भ्यः॒ परे॑ब्भ्यस्त्वा त्वा॒ परे॒ब्भ्योविं॑दुमविं॑दु॒म्परे॑ब्भ्यस्त्वा त्वा॒ परे॒ब्भ्योविं॑दम्। परे॒ब्भ्योविं॑दु॒मविं॑दु॒म्परे॑ब्भ्यः॒ परे॒ब्भ्योविं॑दम्पु॒रः॒ पु॒रोविं॑दु॒म्परे॑ब्भ्यः॒ परे॒ब्भ्योविं॑दम्पु॒रः। अविं॑दम्पु॒रः॒ पु॒रोविं॑दु॒मविं॑दम्पु॒रोव॑रे॒ब्भ्योव॑रेब्भ्यः॒ पु॒रोविं॑दु॒मविं॑दम्पु॒रोव॑रेब्भ्यः। पु॒रोव॑रे॒ब्भ्योव॑रेब्भ्यः॒ पु॒रः॒ पु॒रोव॑रेब्भ्यः। अव॑रेब्भ्यु॒ऽ इत्त्यव॑रेब्भ्यः॥ तन्त्वा॑ त्वा॒ तन्तन्त्वा॑ जुषामहे जुषामहे त्वा॒ तन्तन्त्वा॑ जुषामहे। त्वा॒ जु॒षा॒म॒हे॒ जु॒षा॒म॒हे॒ त्वा॒ त्वा॒ जु॒षा॒म॒हे॒ दे॒व॒ दे॒व॒ जु॒षा॒म॒हे॒ त्वा॒ त्वा॒ जु॒षा॒म॒हे॒ दे॒व॒। जु॒षा॒म॒हे॒ दे॒व॒ दे॒व॒ जु॒षा॒म॒हे॒ जु॒षा॒म॒हे॒ दे॒व॒ ब्व॒न॒स्प्प॒ते॒ ब्व॒न॒स्प्प॒ते॒ दे॒व॒ जु॒षा॒म॒हे॒ जु॒षा॒म॒हे॒ दे॒व॒ ब्व॒न॒स्प्प॒ते॒[2]। दे॒व॒ ब्व॒न॒स्प्प॒ते॒ ब्व॒न॒स्प्प॒ते॒ दे॒व॒ दे॒व॒ ब्व॒न॒स्प्प॒ते॒ दे॒व॒यु॒ज्ज्यायै॑ देवयु॒ज्ज्यायै॑ ब्वनस्प्पते देव देव ब्वनस्प्पते देवयु॒ज्ज्यायै॑। ब्व॒न॒स्प्प॒ते॒ दे॒व॒यु॒ज्ज्यायै॑ देवयु॒ज्ज्यायै॑ ब्वनस्प्पते ब्वनस्प्पते देवयु॒ज्ज्यायै॑ दे॒वा दे॒वा दे॑वयु॒ज्ज्यायै॑ ब्वनस्प्पते ब्वनस्प्पते

---

[1]. अमꣳस्त यहाँ ऊष्मान्तस्याभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०२) की प्रवृत्ति नहीं होगी, वा.प्रा.८.७. तथा ८.२१. के अनुसार अनुस्वार की गणना व्यञ्जनों में है।

[2]. पत्यौ च सकारेण (वा. प्रा. ३.५०) पति शब्द बाद में होने पर वन शब्द सकार से व्यवहित हो जाता है।

देवयज्यायै देवाः। देवयज्यायै देवा देवा देवयज्यायै देवयज्यायै देवास्त्वा त्वा देवा देवयज्यायै देवयज्यायै देवास्त्वा[1]। देवयज्याया इति देव यज्यायै। देवास्त्वा त्वा देवा देवास्त्वा देवयज्यायै देवयज्यायै त्वा देवा देवास्त्वा देवयज्यायै। त्वा देवयज्यायै देवयज्यायै त्वा त्वा देवयज्यायै जुषन्ताञ्जुषन्तान्देवयज्यायै त्वा त्वा देवयज्यायै जुषन्ताम्। देवयज्यायै जुषन्ताञ्जुषन्तान्देवयज्यायै देवयज्यायै जुषन्ताँव्विष्ण्णवे व्विष्ण्णवे जुषन्तान्देवयज्यायै देवयज्यायै जुषन्ताँव्विष्ण्णवे। देवयज्याया इति देव यज्यायै। जुषन्ताँव्विष्ण्णवे व्विष्ण्णवे जुषन्ताञ्जुषन्ताँव्विष्ण्णवे त्वा त्वा व्विष्ण्णवे जुषन्ताञ्जुषन्ताँव्विष्ण्णवे त्वा। व्विष्ण्णवे त्वा त्वा व्विष्ण्णवे व्विष्ण्णवे त्वा। त्वेति त्वा॥४०॥

द्याम्मा मा द्यान्द्याम्मा लेखीर्ल्लेखीर्म्मा द्यान्द्याम्मा लेखीः। मा लेखीर्ल्लेखीर्म्मा मा लेखीरन्तरिक्क्षमन्तरिक्क्षँल्लेखीर्म्मा मा लेखीरन्तरिक्क्षम्। लेखीरन्तरिक्क्षमन्तरिक्क्षँल्लेखीर्ल्लेखीरन्तरिक्क्षम्मा मान्तरिक्क्षँल्लेखीर्ल्लेखीरन्तरिक्क्षम्मा। अन्तरिक्क्षम्मा मान्तरिक्क्षमन्तरिक्क्षम्मा हिꣳसीर्हिꣳसीर्म्मान्तरिक्क्षमन्तरिक्क्षम्मा हिꣳसीः। मा हिꣳसीर्हिꣳसीर्म्मा मा हिꣳसीः पृथिव्व्या पृथिव्व्या हिꣳसीर्म्मा मा हिꣳसीः पृथिव्व्या। हिꣳसीः पृथिव्व्या पृथिव्व्या हिꣳसीर्हिꣳसीः पृथिव्व्या सꣳ सम्पृथिव्व्या हिꣳसीर्हिꣳसीः पृथिव्व्या सम्। पृथिव्व्या सꣳ सम्पृथिव्व्या पृथिव्व्या सम्भव भव सम्पृथिव्व्या पृथिव्व्या सम्भव[2]। सम्भव भव सꣳ सम्भव। भवेति भव॥ अयꣳ हि ह्ययमयꣳ हि त्वा त्वा ह्ययमयꣳ हि त्वा। हि त्वा त्वा हि हि त्वा स्वधितिः स्वधितिस्त्वा हि हि त्वा स्वधितिः। त्वा

---

[1]. देवाः त्वा यहाँ विसर्जनीयः (वा.प्रा.३.६) के अधिकार में पठित सूत्र तथयोः सम् (वा.प्रा.३.८) से विसर्जनीय सकार होता है। ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः (वा.प्रा.४.१०३) से तकार का द्वित्व विहित है।

[2]. पृथिव्या स्वरान्तं सम्भव शुक्रो मन्थी पृथिवीं परो देवेभिरित्येतेषु (वा. प्रा. ४.२८) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथिव्या पद स्वरान्त है।

स्वधिंतिः स्वधिंतिस्त्वा त्वा स्वधिंतिस्तेतिंजानस्तेतिंजानः स्वधिंतिस्त्वा त्वा स्वधिंतिस्तेतिंजानः। स्वधिंतिस्तेतिंजानस्तेतिंजानः स्वधिंतिः स्वधिंतिस्ते-तिंजानः प्प्रणिनायं प्प्रनिनाय तेतिंजानः स्वधिंतिः स्वधिंतिस्तेतिंजानः प्प्रणिनायं। स्वधिंतिरिति स्व धिंतिः। तेतिंजानः प्प्रणिनायं प्प्रनिनाय तेतिंजा-नस्तेतिंजानः प्प्रणिनायं महते मंहते प्प्रंनिनाय तेतिंजानस्तेतिंजानः प्प्रणिना-यं महते। प्रणिनायं महते मंहते प्प्रंनिनायं प्प्रणिनायं महते सौभंगाय सौभंगाय महते प्प्रंनिनायं प्प्रणिनायं महते सौभंगाय। प्रनिनायेतिं प्प्र निनायं। महते सौभंगाय सौभंगाय महते मंहते सौभंगाय। सौभंगायेति सौभंगाय॥ अतस्त्व-न्त्वमतोतस्त्वन्देंव देव त्वमतोतस्त्वन्देंव। त्वन्देंव देव त्वन्त्वन्देंव व्वनस्प्पते व्वनस्प्पते देव त्वन्त्वन्देंव व्वनस्प्पते। देव व्वनस्प्पते व्वनस्प्पते देव देव व्वनस्प्पते शतवंल्शः शतवंल्शो व्वनस्प्पते देव देव व्वनस्प्पते शतवंल्शः[1]। व्वनस्प्पते शतवंल्शः शतवंल्शो व्वनस्प्पते व्वनस्प्पते शतवंल्शो व्वि वि शतवंल्शो व्वनस्प्पते व्वनस्प्पते शतवंल्शो व्वि। शतवंल्शो व्वि वि शतवंल्शः शतवंल्शो व्वि रोंह रोह व्वि शतवंल्शः शतवंल्शो व्वि रोंह। शतवंल्शऽ इतिं शत व्वंल्शः। व्वि रोंह रोह व्वि वि रोंह सहस्रंवल्शाः सहस्रंवल्शा रोह व्वि वि रोंह सहस्रंवल्शाः। रोह सहस्रंवल्शाः सहस्रंवल्शा रोह रोह सहस्रंवल्शा व्वि वि सहस्रंवल्शा रोह रोह सहस्रंवल्शा व्वि। सहस्रंवल्शा व्वि वि सहस्रंवल्शाः सहस्रंवल्शा व्वि वयँव्वयँव्वि सहस्रंवल्शाः सहस्रंवल्शा व्वि वयम्। सहस्रंवल्शाऽ इतिं सहस्रं व्वल्शाः। व्वि वयँव्वयँव्वि वि वयꣳ रुंहेम रुहेम व्वयँव्वि वि वयꣳ रुंहेम। व्वयꣳ रुंहेम रुहेम व्वयँव्वयꣳ रुंहेम। रुहेमेतिं रुहेम॥४१॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे पञ्चमोध्यायः॥

[1]. यहाँ हरिता नामक स्वर भक्ति है। शतवल्शेति हारिता – या. शि. १०१.

॥षष्ठोध्यायः॥

हरिः॒ ॐ॥ अ॒ग्ग्रे॒णीर॑स्यस्यग्ग्रेनीर॑ग्ग्रे॒णीर॑सि स्वावे॒शः स्वा॑वे॒शो॒स्यग्ग्रेनी-र॑ग्ग्रे॒णीर॑सि स्वावे॒शः। अ॒ग्ग्रेनीरित्य॑ग्ग्रे नीः। अ॒सि॒ स्वा॒वे॒शः स्वा॑वे॒शो॒स्यसि स्वावे॒शऽ उ॑न्नेतॄ॒णामु॑न्नेतॄ॒णाᳬ स्वा॑वे॒शो॒स्यसि स्वावे॒शऽ उ॑न्नेतॄ॒णाम्[1]। स्वा॒वे॒शऽ उ॑न्नेतॄ॒णामु॑न्नेतॄ॒णाᳬ स्वा॑वे॒शः स्वा॑वे॒शऽ उ॑न्नेतॄ॒णामे॒तस्यै॒तस्यौ॑न्नेतॄ॒णाᳬ स्वा॑वे॒शः स्वा॑वे॒शऽ उ॑न्नेतॄ॒णामे॒तस्य॑। स्वा॒वे॒शऽ इति॑ सु आवे॒शः। उ॒न्ने॒तॄ॒णामे॒तस्यै॒तस्यौ॑न्ने-तॄ॒णामु॑न्नेतॄ॒णामे॒तस्य॑ व्वित्ताद्वित्तादे॒तस्यौ॑न्नेतॄ॒णामु॑न्नेतॄ॒णामे॒तस्य॑ व्वित्तात्। उ॒न्ने॒तॄ॒णा-मित्यु॑त् नेतॄ॒णाम्। ए॒तस्य॑ व्वित्ताद्वित्तादे॒तस्यै॒तस्य॑ व्वि॒त्ता॒दद्ध्यधि॑ वित्तादे॒तस्यै॒तस्य॑ व्वित्ता॒दधि॑ । व्वि॒त्ता॒दद्ध्यधि॑ वित्ताद्वित्ता॒दधि॑ त्वा॒ त्वाधि॑ वित्ताद्वित्ता॒दधि॑ त्वा[2]। अधि॑ त्वा॒ त्वाद्ध्यधि॑ त्वा स्त्थास्यति स्त्थास्यति॒ त्वाद्ध्यधि॑ त्वा स्त्थास्यति। त्वा॒ स्त्था॒-स्य॒ति॒ स्त्था॒स्य॒ति॒ त्वा॒ त्वा॒ स्त्था॒स्य॒ति॒ दे॒वो दे॒व स्त्था॑स्यति त्वा त्वा स्त्थास्यति दे॒वः। स्त्था॒स्य॒ति॒ दे॒वो दे॒व स्त्था॑स्यति स्त्थास्यति दे॒वस्त्वा॑ त्वा दे॒व स्त्था॑स्यति स्त्थास्यति दे॒वस्त्वा॑। दे॒वस्त्वा॑ त्वा दे॒वो दे॒वस्त्वा॑ सवि॒ता स॑वि॒ता त्वा॑ दे॒वो दे॒वस्त्वा॑ सवि॒ता। त्वा॒ स॒वि॒ता स॑वि॒ता त्वा॑ त्वा सवि॒ता मद्ध्वा॒ मद्ध्वा॑ सवि॒ता त्वा॑ त्वा सवि॒ता मद्ध्वा॑। स॒वि॒ता मद्ध्वा॒ मद्ध्वा॑ सवि॒ता स॑वि॒ता मद्ध्वा॑नक्क्वनक्कु॒ मद्ध्वा॑ सवि॒ता स॑वि॒ता मद्ध्वा॑नक्कु। मद्ध्वा॑नक्क्वनक्कु॒ मद्ध्वा॒ मद्ध्वा॑नक्कु सुपिप्प॒लाब्भ्य॑ः सुपिप्प॒लाब्भ्यो॑नक्कु॒ मद्ध्वा॒ मद्ध्वा॑नक्कु सुपिप्प॒लाब्भ्य॑ः। अ॒न॒क्कु॒ सु॒पि॒प्प॒लाब्भ्य॑ः सुपिप्प॒लाब्भ्यो॑नक्क्वनक्कु॒ सुपिप्प॒लाब्भ्य॑स्त्वा त्वा सुपिप्प॒लाब्भ्यो॑नक्क्वनक्कु॒ सुपिप्प॒लाब्भ्य॑स्त्वा। सु॒पि॒प्प॒लाब्भ्य॑स्त्वा त्वा सुपिप्प॒लाब्भ्य॑ः सुपिप्प॒लाब्भ्य॒-

[1].उन्नेतॄणाम् यहाँ ऋवर्णे वा.प्रा.४.११३. के अनुसार तकार का द्वित्व नहीं होता, अतः उन्नेत्रेणाम् ऐसा उच्चारण नहीं करना उचित होगा।

[2]. त्वा च (वा. प्रा. २.६) त्वा यह पद मध्यम पुरुष के अर्थ में विद्यमान होने पर अनुदात होता है।

स्त्वौष॑धीभ्य॒ऽ ओष॑धीभ्यस्त्वा सुपिप्प॒लाभ्य॑ः सुपिप्प॒लाभ्य॒स्त्वौष॑धीभ्यः । सु॒पि॒प्प॒लाभ्य॒ऽ इति॑ सु पिप्प॒लाभ्य॑ः[1]। त्वौष॑धीभ्य॒ऽ ओष॑धीभ्यस्त्वा॒ त्वौष॑धीभ्यः । ओष॑धीभ्य॒ऽ इत्योष॑धीभ्यः ॥ द्यामग्ग्रे॒णाग्ग्रे॑ण॒ द्यान्द्यामग्ग्रे॑णास्पृक्षोस्पृक्षोग्ग्रे॑ण॒ द्यान्द्यामग्ग्रे॑णास्पृक्षः । अग्ग्रे॑णास्पृक्षोस्पृ॒क्षोग्ग्रे॒णाग्ग्रे॑णास्पृक्ष॒ऽ आन्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्ष॒मास्पृक्षोग्ग्रे॒णाग्ग्रे॑णास्पृक्ष॒ऽ आन्तरि॑क्षम्। अ॒स्पृक्ष॒ऽ आन्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्ष॒मास्पृ॑क्षोस्पृक्ष॒ऽ आन्तरि॑क्ष॒म्मद्ध्ये॑न॒ मद्ध्ये॑ना॒न्तरि॑क्ष॒मास्पृ॑क्षोस्पृक्ष॒ऽ आन्तरि॑क्ष॒म्मद्ध्ये॑न। आन्तरि॑क्षम्। अ॒न्तरि॑क्ष॒म्मद्ध्ये॑न॒ मद्ध्ये॑ना॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्ष॒म्मद्ध्ये॑नाप्प्राऽ अप्प्रा॒ मद्ध्ये॑ना॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्ष॒म्मद्ध्ये॑नाप्प्राः। मद्ध्ये॑नाप्प्राऽ अप्प्रा॒ मद्ध्ये॑न॒ मद्ध्ये॑नाप्प्राः पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीम॑प्प्रा॒ मद्ध्ये॑न॒ मद्ध्ये॑नाप्प्राः पृथि॒वीम्। अ॒प्प्रा॒ः पृ॒थि॒वीम्पृ॑थि॒वीम॑प्प्राऽ अप्प्राः पृथि॒वीमुप॑रे॒णोप॑रेण पृथि॒वीम॑प्प्राऽ अप्प्राः पृथि॒वीमुप॑रेण। पृ॒थि॒वीमुप॑रे॒णोप॑रेण पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीमुप॑रेणादृꣳहीरदृꣳही॒रुप॑रेण पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीमुप॑रेणादृꣳहीः । उप॑रेणादृꣳहीरदृꣳही॒रुप॑रे॒णोप॑रेणादृꣳहीः । अ॒दृ॒ꣳही॒रित्य॑दृꣳहीः ॥१॥

या ते॑ ते॒ या या ते॒ धामा॑नि॒ धामा॑नि ते॒ या या ते॒ धामा॑नि[2]। ते॒ धामा॑नि॒ धामा॑नि ते ते॒ धामा॑न्न्युश्श्मस्यु॒श्श्मसि॒ धामा॑नि ते ते॒ धामा॑न्न्युश्श्मसि॑। धामा॑न्न्युश्श्मस्यु॒श्श्मसि॒ धामा॑नि॒ धामा॑न्न्युश्श्मसि॒ गम॑द्ध्यै॒ गम॑द्ध्याऽ उ॒श्श्मसि॒ धामा॑नि॒ धामा॑न्न्युश्श्मसि॒ गम॑द्ध्यै। उ॒श्श्मसि॒ गम॑द्ध्यै॒ गम॑द्ध्याऽ उ॒श्श्मस्यु॒श्श्मसि॒ गम॑द्ध्यै॒ यत्र॒ यत्र॒ गम॑द्ध्याऽ उ॒श्श्मस्यु॒श्श्मसि॒ गम॑द्ध्यै॒ यत्र॑। गम॑द्ध्यै॒ यत्र॒ यत्र॒ गम॑द्ध्यै॒ गम॑द्ध्यै॒ यत्र॒ गावो॒ गावो॒ यत्र॒ गम॑द्ध्यै॒ गम॑द्ध्यै॒ यत्र॒ गाव॑ः । यत्र॒ गावो॒ गावो॒

---

[1]. ह्रस्वव्यञ्जनाभ्यां भकारादौ विभक्तिमत्यये(वा.प्रा.५.१३) इस सूत्र के अनुसार भ्यः इस विभक्ति से समस्त पद में पृथक्करण नहीं होगा, अतः सु इस पदांश से पृथक्करण होगा।

[2].निशब्दो बहुलम्(वा.प्रा.३.१८) इस सूत्र के अनुसार पदान्तीय नि शब्द का लोप होता है। सूत्रोक्त बहुलम् पद का तात्पर्य है कि कहीं लोप नहीं भी होता है, जैसे यहाँ धामानि।

यत्र॒ यत्र॒ गावो॒ भूरि॑श्रृङ्गा॒ भूरि॑श्रृङ्गा॒ गावो॒ यत्र॒ यत्र॒ गावो॒ भूरि॑श्रृङ्गाः[1]। गावो॒ भूरि॑श्रृङ्गा॒ भूरि॑श्रृङ्गा॒ गावो॒ गावो॒ भूरि॑श्रृङ्गाऽ अ॒यासो॒यासो॒ भूरि॑श्रृङ्गा॒ गावो॒ गावो॒ भूरि॑श्रृङ्गाऽ अ॒यास॑÷। भूरि॑श्रृङ्गाऽ अ॒यासो॒यासो॒ भूरि॑श्रृङ्गा॒ भूरि॑श्रृङ्गाऽ अ॒यास॑÷। भूरि॑श्रृङ्गा॒ऽ इति॒ भूरि॑ श्रृङ्गाः। अ॒यास॒ऽ इत्य॒यास॑÷॥ अत्राहाहात्रात्राह॒ तत्तदहात्रा-त्राह॒ तत्। अह॒ तत्तदहाह॒ तदु॑रुगा॒यस्यो॑रुगा॒यस्य॒ तदहाह॒ तदु॑रुगा॒यस्य॑। तदु॑रु-गा॒यस्यो॑रुगा॒यस्य॒ तत्तदु॑रुगा॒यस्य॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॑रुरुगा॒यस्य॒ तत्तदु॑रुगा॒यस्य॒ व्विष्ण्णोः॑। उ॒रु॒गा॒यस्य॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॑रुरुगा॒यस्यो॑रुगा॒यस्य॒ व्विष्ण्णोः॑ प॒रमम्प॑-र॒मँव्विष्ण्णो॑रुरुगा॒यस्यो॑रुगा॒यस्य॒ व्विष्ण्णोः॑ प॒रमम्। उ॒रु॒गा॒यस्येत्यु॑रु गा॒यस्य॑। व्विष्ण्णोः॑ प॒रमम्प॑र॒मँव्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णोः॑ प॒रमम्प॒दम्प॒दम्प॑र॒मँव्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णोः॑ प॒र-मम्प॒दम्। प॒र॒मम्प॒दम्प॒दम्प॑र॒मम्प॑र॒मम्प॒दमवाव॑ प॒दम्प॑र॒मम्प॑र॒मम्प॒दमव॑। प॒दम-वाव॑ प॒दम्प॒दमव॑ भारि भा॒र्व्यव॑ प॒दम्प॒दमव॑ भारि। अव॑ भारि भा॒र्व्यवाव॑ भारि॒ भूरि॒ भूरि॑ भा॒र्व्यवाव॑ भारि॒ भूरि॑। भा॒रि॒ भूरि॒ भूरि॑ भारि भारि॒ भूरि॑। भूरीति॒ भूरि॑॥२॥

व्विष्ण्णो॒ः कर्म्मा॑णि॒ कर्म्मा॑णि॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॒ः कर्म्मा॑णि पश्श्यत पश्श्यत॒ कर्म्मा॑णि॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॒ः कर्म्मा॑णि पश्श्यत। कर्म्मा॑णि पश्श्यत पश्श्यत॒ कर्म्मा॑णि॒ कर्म्मा॑णि पश्श्यत॒ यतो॒ यत॑÷ पश्श्यत॒ कर्म्मा॑णि॒ कर्म्मा॑णि पश्श्यत॒ यत॑÷[2]। प॒श्श्य॒त॒ यतो॒ यत॑÷ पश्श्यत पश्श्यत॒ यतो॑ व्व्रतानि॑ व्व्रतानि॒ यत॑÷ पश्श्यत पश्श्यत॒ यतो॑ व्व्रतानि॑। यतो॑ व्व्रतानि॑ व्व्रतानि॒ यतो॒ यतो॑ व्व्रतानि॑ पस्प्पृ॒शे प॑स्प्पृ॒शे व्व्रतानि॒ यतो॒ यतो॑ व्व्रतानि॑ पस्प्पृ॒शे। व्व्रतानि॑ पस्प्पृ॒शे प॑स्प्पृ॒शे व्व्रतानि॑ व्व्रतानि॑ पस्प्पृ॒शे। प॒स्प्पृ॒शऽ इति॑ पस्प्पृ॒शे॥ इन्द्र॑स्य॒ युज्ज्यो॒ युज्ज्य॒ऽ

[1]. भूरिश्रृङ्गाः भूरिश्रृङ्गाः यहाँ सन्धि की दशा में लोपं धौ (वा. प्रा. ४.३९) इस सूत्र से प्रथम विसर्जनीय का लोप होता है।

[2].वा.प्रा.२.५८. के अनुसार गत्यर्थक यतः पद अन्तोदात्त होता है, यहाँ गत्यर्थक न होने से अन्तोदात्त नहीं है।

इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ युज्य॒ः सखा॒ सखा॒ युज्य॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ युज्य॒ः सखा॑। युज्य॒ः सखा॒ सखा॒ युज्यो॒ युज्य॒ः सखा॑। सखेति॒ सखा॑॥३॥

तद्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॒स्तत्तद्विष्ण्णो॑ः पर॒मम्प॑र॒मँव्विष्ण्णो॒स्तत्तद्विष्ण्णो॑ः पर॒मम्। व्विष्ण्णो॑ः पर॒मम्प॑र॒मँव्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॑ः पर॒मम्पद॒म्पद॒म्प॑र॒मँव्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॑ः पर॒मम्पद॒म्। प॒र॒मम्पद॒म्पद॒म्प॑र॒मम्प॑र॒मम्पद॒ꣳ सदा॒ सदा॑ प॒दम्प॑र॒मम्प॑र॒मम्पद॒ꣳ सदा॑। प॒दꣳ सदा॒ सदा॑ प॒दम्पद॒ꣳ सदा॑ पश्श्यन्ति पश्श्यन्ति॒ सदा॑ प॒दम्पद॒ꣳ सदा॑ पश्श्यन्ति। सदा॑ पश्श्यन्ति पश्श्यन्ति॒ सदा॒ सदा॑ पश्श्यन्ति सू॒रय॑ः सू॒रय॑ः पश्श्यन्ति॒ सदा॒ सदा॑ पश्श्यन्ति सू॒रय॑ः। प॒श्श्य॒न्ति॒ सू॒रय॑ः सू॒रय॑ः पश्श्यन्ति पश्श्यन्ति सू॒रय॑ः। सू॒रय॒ऽ इति॑ सू॒रय॑ः॥ दि॒वी॒व॒ चक्क्षु॒श्चक्क्षु॑र्दि॒वी॒व दि॒वी॒व॒ चक्क्षु॒रात॑त॒मात॑त॒ञ्चक्क्षु॑र्दि॒वी॒व दि॒वी॒व॒ चक्क्षु॒रात॑तम्। दि॒वी॒वेति॑ दि॒वि इ॑व[1]। चक्क्षु॒रात॑त॒मात॑त॒ञ्चक्क्षु॒श्चक्क्षु॒रात॑तम्। आत॑त॒मित्या त॑तम्॥४॥

प॒रि॒वीर॑स्यसि परि॒वीः प॑रि॒वीर॑सि॒ परि॒ पर्य्य॑सि परि॒वीः प॑रि॒वीर॑सि॒ परि॑। प॒रि॒वीरिति॑ परि॒ व्वीः। अ॒सि॒ परि॒ पर्य्य॑स्यसि॒ परि॑ त्वा त्वा॒ पर्य्य॑स्यसि॒ परि॑ त्वा। परि॑ त्वा त्वा॒ परि॒ परि॑ त्वा॒ दैवी॒र्द्दैवी॑स्त्वा॒ परि॒ परि॑ त्वा॒ दैवी॑ः। त्वा॒ दैवी॒र्द्दैवी॑स्त्वा त्वा॒ दैवी॒र्व्विशो॒ व्विशो॒ दैवी॑स्त्वा त्वा॒ दैवी॒र्व्विश॑ः। दैवी॒र्व्विशो॒ व्विशो॒ दैवी॒र्द्दैवी॒र्व्विशो॑ ह्वयन्ताँह्वयन्ताँ॒व्विशो॒ दैवी॒र्द्दैवी॒र्व्विशो॑ ह्वयन्ताम्। व्विशो॑ ह्वयन्ताँह्वयन्ताँ॒व्विशो॒ व्विशो॑ ह्वयन्ता॒म्परि॒ परि॑ ह्वयन्ताँ॒व्विशो॒ व्विशो॑ ह्वयन्ता॒म्परि॑। ह्व॒य॒न्ता॒म्परि॒ परि॑ ह्वयन्ताँह्वयन्ता॒म्परी॒ममि॒मम्परि॑ ह्वयन्ताँह्वयन्ता॒म्परी॒मम्। परी॒ममि॒मम्परि॒ परी॒मँय्यज॑माना॒नँय्यज॑मानमि॒मम्परि॒ परी॒मँय्यज॑मानम्। इ॒मँय्यज॑माना॒नँय्यज॑मानमि॒ममि॒मँय्यज॑माना॒नꣳ रायो॒ रायो॒ यज॑मानमि॒ममि॒मँय्यज॑माना॒नꣳ राय॑ः। यज॑मा-

[1]. ऋजुन्निहत्य प्रणिहन्यते उदात्ते (वा. प्रा. १.१२४) दिवीवेति॑ यहाँ स्वरित के पश्चात् उदात्त आने के कारण दि के प्रदर्शन में हाथ को अनुदात्त के स्थान पर (नीचे) ले जाकर तदनन्तर वी के प्रदर्शन में प्रकृष्ट रूप से नीचे ले जाया जाता है। इवर्ण उभयतो ह्रस्वः प्रश्लिष्टः(वा.प्रा.१.११६) इस सूत्र के अनुसार दिवि इव यहाँ उदात्त इकार तथा अनुदात्त इकार दीर्घ होने से प्रश्लिष्ट नामक स्वरित होता है।

नः रायो रायो यजमानँय्यजमानः रायो मनुष्याणाम्मनुष्याणाᳪं रायो यजमानँय्यजमानः रायो मनुष्याणाम्। रायो मनुष्याणाम्मनुष्याणाᳪं रायो रायो मनुष्याणाम्। मनुष्याणामिति मनुष्याणाम्॥ दिवः सूनुः सूनुर्द्दिवो दिवः सूनुरस्यसि सूनुर्द्दिवो दिवः सूनुरसि। सूनुरस्यसि सूनुः सूनुरस्येषऽ एषोसि सूनुः सूनुरस्येषः। अस्येषऽ एषोस्यस्येष तें तऽ एषोस्यस्येष तें।[1] एष तें तऽ एषऽ एष तें पृथिव्याम्पृथिव्यान्तंऽ एषऽ एष तें पृथिव्याम्। ते पृथिव्याम्पृथिव्या-न्तें ते पृथिव्याँल्लोको लोकः पृथिव्यान्तें ते पृथिव्याँल्लोकः। पृथिव्याँल्लोको लोकः पृथिव्याम्पृथिव्याँल्लोकऽ आरण्यऽ आरण्यो लोकः पृथिव्याम्पृथिव्याँ-ल्लोकऽ आरण्यः। लोकऽ आरण्यऽ आरण्यो लोको लोकऽ आरण्यस्तें तऽ आरण्यो लोको लोकऽ आरण्यस्तें। आरण्यस्तें तऽ आरण्यऽ आरण्यस्तें पशुः पशुस्तंऽ आरण्यऽ आरण्यस्तें पशुः। ते पशुः पशुस्तें ते पशुः। पशुरिति पशुः॥५॥

उपावीरस्यस्युपावीरुपावीरस्युपोपास्युपावीरुपावीरस्युप। उपावीरित्युप अवीः। अस्युपोपास्यस्युप देवान्देवानुपास्यस्युप देवान्। उप देवान्देवानुपोप देवान्दैवीर्दैवीर्द्देवानुपोप देवान्दैवीः। देवान्दैवीर्दैवीर्द्देवान्देवान्दैवीर्व्विशो व्विशो दैवीर्द्देवान्देवान्दैवीर्व्विशः। दैवीर्व्विशो व्विशो दैवीर्दैवीर्व्विशः प्प्र प्प्र विशो दैवीर्दै-वीर्व्विशः प्प्र। व्विशः प्प्र प्प्र विशो व्विशः प्प्रागुरगुः प्प्र विशो व्विशः प्प्रागुः। प्रागुरगुः प्प्र प्प्रागुरुशिजऽ उशिजोगुः प्प्र प्प्रागुरुशिजः। अगुरुशिजऽ उशिजोगुरगुरुशिजो व्वह्नितमान्वह्नितमानुशिजोगुरगुरुशिजो व्वह्नितमान्। उशिजो व्वह्नितमान्वह्नितमानुशिजऽ उशिजो व्वह्नितमान्। व्वह्नितमानिति वह्नि

[1]. एषः ते यहाँ स्य एष च(वा.प्रा.३.१७) के अनुसार व्यञ्जन बाद में होने से एषः के विसर्जनीय का लोप होता है।

तमान्॥ देवं त्वष्टस्त्वष्टुर्देव देवं त्वष्टुर्व्वसु व्वसुं त्वष्टुर्देव देवं त्वष्टुर्व्वसुं[1]। त्वष्टुर्व्वसु व्वसुं त्वष्टस्त्वष्टुर्व्वसु रम रम व्वसुं त्वष्टस्त्वष्टुर्व्वसु रम। व्वसु रम रम व्वसु व्वसुं रम हुव्या हुव्या रम व्वसु व्वसुं रम हुव्या। रम हुव्या हुव्या रम रम हुव्या तें ते हुव्या रम रम हुव्या तें। हुव्या तें ते हुव्या हुव्या तें स्वदन्ताꣳ स्वदन्तान्ते हुव्या हुव्या तें स्वदन्ताम्। ते स्वदन्ताꣳ स्वदन्तान्ते ते स्वदन्ताम्। स्वदन्तामितिं स्वदन्ताम्॥६॥

रेवंती रमंद्धꣳ रमंद्धꣳ रेवंती रेवंती रमंद्धम्बृहंस्प्पते बृहंस्प्पते रमंद्धꣳ रेवंती रेवंती रमंद्धम्बृहंस्प्पते। रमंद्धम्बृहंस्प्पते बृहंस्प्पते रमंद्धꣳ रमंद्धम्बृहंस्प्पते धारयं धारय बृहंस्प्पते रमंद्धꣳ रमंद्धम्बृहंस्प्पते धारयं। बृहंस्प्पते धारयं धारय बृहंस्प्पते बृहंस्प्पते धारया व्वसूंनि व्वसूंनि धारय बृहंस्प्पते बृहंस्प्पते धारया व्वसूंनि । धारया व्वसूंनि व्वसूंनि धारयं धारया व्वसूंनि। व्वसूनीति वसूंनि॥ ऋतस्यं त्वा त्वऽ ऋतस्यंऽ ऋतस्यं त्वा देवहविर्देवहविस्त्वऽ ऋतस्यंऽ ऋतस्यं त्वा देवहविꣳ। त्वा देवहविर्देवहविस्त्वा त्वा देवहविꣳ पाशेंन पाशेंन देवहविस्त्वा त्वा देवहविꣳ पाशेंन। देवहविꣳ पाशेंन पाशेंन देवहविर्देवहविꣳ पाशेंन प्प्रति प्प्रति पाशेंन देवहविर्देवहविꣳ पाशेंन प्प्रतिं। देवहविरितिं देव हविꣳ। पाशेंन प्प्रति प्प्रति पाशेंन पाशेंन प्प्रतिं मुञ्चामि मुञ्चामि प्प्रति पाशेंन पाशेंन प्प्रतिं मुञ्चामि। प्रतिं मुञ्चामि मुञ्चामि प्प्रति प्प्रतिं मुञ्चामि धर्ष धर्षं मुञ्चामि प्प्रति प्प्रतिं मुञ्चामि धर्षं। मुञ्चामि धर्ष धर्षं मुञ्चामि मुञ्चामि धर्षा मानुंषो मानुंषो धर्षं मुञ्चामि मुञ्चामि धर्षा मानुंषꣳ[2]। धर्षा मानुंषो मानुंषो धर्ष धर्षा मानुंषꣳ। मानुंषऽ इति मानुंषꣳ॥

---

[1]. वा. प्रा. १.१६८. के अनुसार त्वष्टः पद का विसर्जनीय रिफित संज्ञक है।

[2]. वा.प्रा.३.१२९. के अनुसार धर्ष मानुषः यहाँ धर्ष के अन्तिम स्वर का दीर्घ होना कहा गया है। भाष्यकार महीधर ने द्व्यचोऽतस्तिङः(पा.६.३.१३५) से दीर्घ कहा है।

अग्नीषोमाभ्याञ्जुष्टञ्जुष्टमग्नीषोमाभ्यामग्नीषोमाभ्याञ्जुष्टन्नि नि जुष्टमग्नीषोमाभ्यामग्नीषोमाभ्याञ्जुष्टन्नि[1]। जुष्टन्नि नि जुष्टञ्जुष्टन्नि युनज्मि युनज्मि नि जुष्टञ्जुष्टन्नि युनज्मि। नि युनज्मि युनज्मि नि नि युनज्मि। युनज्मीति युनज्मि॥ अद्भ्यस्त्वा त्वाद्भ्योद्भ्यस्त्वौषधीभ्यऽ ओषधीभ्यस्त्वाद्भ्योद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः। अद्भ्यऽ इत्यत् भ्यः। त्वौषधीभ्यऽ ओषधीभ्यस्त्वा त्वौषधीभ्यः। ओषधीभ्यऽ इत्योषधीभ्यः॥७॥

अपाम्पेरुः पेरुरपामपाम्पेरुरस्यसि पेरुरपामपाम्पेरुरसि। पेरुरस्यसि पेरुः पेरुरस्यापऽ आपोसि पेरुः पेरुरस्यापः। अस्यापऽ आपोस्यस्यापो देवीर्देवीरापोस्यस्यापो देवीः। आपो देवीर्देवीरापऽ आपो देवीः स्वदन्तु स्वदन्तु देवीरापऽ आपो देवीः स्वदन्तु। देवीः स्वदन्तु स्वदन्तु देवीर्देवीः स्वदन्तु स्वात्तꣳ स्वात्तꣳ स्वदन्तु देवीर्देवीः स्वदन्तु स्वात्तम्। स्वदन्तु स्वात्तꣳ स्वात्तꣳ स्वदन्तु स्वदन्तु स्वात्तञ्चिचित्स्वात्तꣳ स्वदन्तु स्वदन्तु स्वात्तञ्चित्। स्वात्तञ्चिचित्स्वात्तꣳ स्वात्तञ्चित्सत्सचित्स्वात्तꣳ स्वात्तञ्चित्सत्। चित्सत्सचिच्चिसद्देवहविर्देवहविः सचिच्चित्सद्देवहविः। सद्देवहविर्देवहविः सत्सद्देवहविः। देवहविरिति देव हविः॥ सन्ते ते सꣳ सन्ते प्प्राणः प्प्राणस्ते सꣳ सन्ते प्प्राणः। ते प्प्राणः प्प्राणस्ते ते प्प्राणो व्वातेन व्वातेन प्प्राणस्ते ते प्प्राणो व्वातेन। प्राणो व्वातेन व्वातेन प्प्राणः प्प्राणो व्वातेन गच्छताङ्गच्छताँव्वातेन प्प्राणः प्प्राणो व्वातेन गच्छताम्[2]। व्वातेन गच्छताङ्गच्छताँव्वातेन व्वातेन गच्छतामङ्गान्यङ्गानि गच्छताँव्वातेन व्वातेन गच्छतामङ्गानि। गच्छतामङ्गान्यङ्गानि गच्छताङ्गच्छतामङ्गानि यजत्रैर्य्यजत्रैरङ्गानि

[1]. पूर्वो द्वन्द्वेष्ववायुषु (वा. प्रा. ३.१२७) इस सूत्र के अनुसार वायु-रहित द्वन्द्व समासों में पूर्व-पद का अन्तिम स्वर दीर्घ हो जाता है।

[2]. गच्छताम् वातेन यहाँ सन्धि की दशा में अन्तस्थामन्तस्थास्वनुनासिकां परसस्थानाम् (वा. प्रा. ४.१०) इस सूत्र से मकार परवर्ती अन्तस्थ वर्ण (व) के समान स्थान वाला अनुनासिक अन्तस्थ हो जाता है।

गच्छताङ्गच्छतामङ्गानि यजत्रैः। अङ्गानि यजत्रैर्व्यजत्रैरङ्गान्यङ्गानि यजत्रैर्य्य-ज्ञपतिर्व्यज्ञपतिर्व्यजत्रैरङ्गान्यङ्गानि यजत्रैर्व्यज्ञपतिः। यजत्रैर्व्यज्ञपति-र्व्यज्ञपतिर्व्यजत्रैर्व्यजत्रैर्व्यज्ञपतिराशिषाशिषा यज्ञपतिर्व्यजत्रैर्व्यजत्रैर्व्य-ज्ञपतिराशिषा। यज्ञपतिराशिषाशिषा यज्ञपतिर्व्यज्ञपतिराशिषा। यज्ञ-पतिरिति यज्ञ पतिः। आशिषेत्या शिषा॥८॥

घृतेनाक्तावक्तौ घृतेन घृतेनाक्तौ पशूनपशूनक्तौ घृतेन घृतेनाक्तौ पशून्। अक्तौ पशून्पशूनक्तावक्तौ पशूँस्त्रायेथान्त्रायेथाम्पशूनक्तावक्तौ पशूँस्त्रायेथाम्[1]। पशूँस्त्रायेथान्त्रायेथाम्पशून्पशूँस्त्रायेथाँ रेवति रेवति त्रायेथाम्पशून्पशूँस्त्रा-येथाँ रेवति। त्रायेथाँ रेवति रेवति त्रायेथान्त्रायेथाँ रेवति यजमाने यजमाने रेवति त्रायेथान्त्रायेथाँ रेवति यजमाने। रेवति यजमाने यजमाने रेवति रेवति यजमाने प्प्रियम्प्रियँय्यजमाने रेवति रेवति यजमाने प्प्रियम्। यजमाने प्प्रियम्प्रियँय्यजमाने यजमाने प्प्रियन्धा धाः प्प्रियँय्यजमाने यजमाने प्प्रिय-न्धाः। प्रियन्धा धाः प्प्रियम्प्रियन्धाऽ आ विंश ब्विशा धाः प्प्रियम्प्रियन्धाऽ आ विंश। धाऽ आ विंश ब्विशा धा धाऽ आ विंश। आ विंश। ब्विशेति विश॥ उरोर-न्तरिंक्षादन्तरिंक्षादुरोरुरोरन्तरिंक्षात्सजूः सजूरन्तरिंक्षादुरोरुरोरन्त-रिंक्षात्सजूः। अन्तरिंक्षात्सजूः सजूरन्तरिंक्षादन्तरिंक्षात्सजूर्द्देवेन देवेन सजूरन्तरिंक्षादन्तरिंक्षात्सजूर्द्देवेन। सजूर्द्देवेन देवेन सजूः सजूर्द्देवेन ब्वातेन ब्वातेन देवेन सजूः सजूर्द्देवेन ब्वातेन। सजूरिति स जूः। देवेन ब्वातेन ब्वातेन देवेन देवेन ब्वातेनास्यास्य ब्वातेन देवेन देवेन ब्वातेनास्य[2]। ब्वातेनास्यास्य ब्वातेन

---

[1]. पशून् त्रायेथाम् यहाँ तथयोः सम(वा.प्रा.३.१३५) से नकार सकार होता है तथा उपधा अनुनासिक वा.प्रा.४.१०३. से तकार का द्वित्व विहित है।

[2]. वा.प्रा.२.६२. के अनुसार हविषः वाद में होने पर अस्य पद अन्तोदात होता है।

व्रातेनास्य हविषो हविषोऽस्य व्रातेन व्रातेनास्य हविषः। अस्य हविषो हविषोऽस्यास्य हविषस्त्मना त्मना हविषोऽस्यास्य हविषस्त्मना। हविषस्त्मना त्मना हविषो हविषस्त्मना यज यज त्मना हविषो हविषस्त्मना यज। त्मना यज यज त्मना त्मना यज सꣳ सँय्यज त्मना त्मना यज सम्। यज सꣳ सँय्यज यज समस्यास्य सँय्यज यज समस्य। समस्यास्य सꣳ समस्य तन्वा तन्वास्य सꣳ समस्य तन्वा। अस्य तन्वा तन्वास्यास्य तन्वा भव भव तन्वास्यास्य तन्वा भव। तन्वा भव भव तन्वा तन्वा भव। भवेति भव॥ व्रर्षो व्रर्षीयसि व्रर्षीयसि व्रर्षो व्रर्षो व्रर्षीयसि यज्ञे यज्ञे व्रर्षीयसि व्रर्षो व्रर्षो व्रर्षीयसि यज्ञे। व्रर्षोऽ इति वर्षो। व्रर्षीयसि यज्ञे यज्ञे व्रर्षीयसि व्रर्षीयसि यज्ञे यज्ञपतिँय्यज्ञपतिँय्यज्ञे व्रर्षीयसि व्रर्षीयसि यज्ञे यज्ञपतिम्। यज्ञे यज्ञपतिँय्यज्ञपतिँय्यज्ञे यज्ञे यज्ञपतिन्धा धा यज्ञपतिँय्यज्ञे यज्ञे यज्ञपतिन्धाः। यज्ञपतिन्धा धा यज्ञपतिँय्यज्ञपतिन्धाः स्वाहा स्वाहा धा यज्ञपतिँय्यज्ञपतिन्धाः स्वाहा। यज्ञपतिमिति यज्ञ पतिम्। धाः स्वाहा स्वाहा धा धाः स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा धा धाः स्वाहा देवेभ्यः। स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यो देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः। देवेभ्यो देवेभ्यो देवेभ्यो देवेभ्यो देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यो देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। देवेभ्यः स्वाहा स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥९॥

माहिरहिर्म्मा माहिर्भूर्भूरहिर्म्मा[1] माहिर्भूः। अहिर्भूर्भूरहिरहिर्भूर्म्मा मा भूरहिरहिर्भूर्म्मा। भूर्म्मा मा भूर्भूर्म्मा पृदाकुः पृदाकुर्म्मा भूर्भूर्म्मा पृदाकुः

[1]. मा च (वा. प्रा. २.४) के अनुसार उत्तमपुरुष के अर्थ में विद्यमान मा पद अनुदात होता है। यहाँ मा पद निषेधार्थक होने से उदात्त है।

। मा पृदा॑कुः पृदा॑कुर्म्मा मा पृदा॑कु॒र्न्नमो॒ नम॒ः पृदा॑कु॒र्म्मा मा पृदा॑कु॒र्न्नम॑ः । पृदा॑कु॒र्न्नमो॒ नम॒ः पृदा॑कु॒ः पृदा॑कु॒र्न्नम॑स्ते ते॒ नम॒ः पृदा॑कु॒ः पृदा॑कु॒र्न्नम॑स्ते । नम॑स्ते ते॒ नमो॒ नम॑स्तऽ आतानातान ते॒ नमो॒ नम॑स्तऽ आतान । त॒ऽ आ॒ता॒ना॒ता॒न॒ ते॒ त॒ऽ आ॒ता॒ना॒न॒र्व्वा॒न॒र्व्वाता॑न ते तऽ आतानान॒र्व्वा । आ॒ता॒ना॒न॒र्व्वा॒न॒र्व्वाता॑नातानान॒र्व्वा प्प्र प्प्रान॒र्व्वाता॑नातानान॒र्व्वा प्प्र । आ॒ता॒नेत्या॑ तान । अ॒न॒र्व्वा प्प्र प्प्रान॒र्व्वान॒र्व्वा प्प्रेहीं॑हि॒ प्प्रान॒र्व्वान॒र्व्वा प्प्रेहिं॑ । प्रेहीं॑हि॒ प्प्र प्प्रेहिं॑ । इ॒हीतीं॑हि ॥ घृ॒तस्य॑ कु॒ल्ल्या॑ः कु॒ल्ल्या घृ॒तस्य॑ घृ॒तस्य॑ कु॒ल्ल्या॑ऽ उपोप॑ कु॒ल्ल्या घृ॒तस्य॑ घृ॒तस्य॑ कु॒ल्ल्या॑ऽ उप॑ । कु॒ल्ल्या॑ऽ उपोप॑ कु॒ल्ल्या॑ः कु॒ल्ल्या॑ऽ उप॑ऽ ऋ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्योप॑ कु॒ल्ल्या॑ः कु॒ल्ल्या॑ऽ उप॑ऽ ऋ॒तस्य॑ । उप॑ऽ ऋ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्योपोप॑ऽ ऋ॒तस्य॒ पत्थ्या॒ः पत्थ्या॑ऽ ऋ॒तस्योपोप॑ऽ ऋ॒तस्य॒ पत्थ्या॑ः । ऋ॒तस्य॒ पत्थ्या॒ः पत्थ्या॑ऽ ऋ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्य॒ पत्थ्या॒ऽ अन्न्वनु॒ पत्थ्या॑ऽ ऋ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्य॒ पत्थ्या॒ऽ अनु॑ । पत्थ्या॒ऽ अन्न्वनु॒ पत्थ्या॒ः पत्थ्या॒ऽ अनु॑ । अन्न्वित्त्यनु॑ ॥१०॥

देवीं॑रापऽ आपो॒ दे॒वी॒र्दे॒वीं॑राप॒ः शु॒द्धाः॑ शु॒द्धाऽ आ॑पो॒ दे॒वी॒र्दे॒वीं॑राप॒ः शु॒द्धाः॑ । आ॒प॒ः शु॒द्धाः॑ शु॒द्धाऽ आ॑पऽ आप॒ः शु॒द्धा ब्वोँ॑ड्ढ्वँब्वोड्ढ्वꣳ शु॒द्धाऽ आ॑पऽ आप॒ः शु॒द्धा ब्वो॑ड्ढ्वम् । शु॒द्धा ब्वोँ॑ड्ढ्वँब्वोड्ढ्वꣳ शु॒द्धाः॑ शु॒द्धा ब्वो॑ड्ढ्वꣳ सु॒प॑रिविष्टा॒ः सु॒प॑रिविष्टा ब्वोड्ढ्वꣳ शु॒द्धाः॑ शु॒द्धा ब्वो॑ड्ढ्वꣳ सु॒प॑रिविष्टाः[1] । ब्वो॒ड्ढ्वꣳ सु॒प॑रिविष्टा॒ः सु॒प॑रिविष्टा ब्वोँ॑ड्ढ्वँब्वोड्ढ्वꣳ सु॒प॑रिविष्टा दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ सु॒प॑रिविष्टा ब्वोँ॑ड्ढ्वँब्वोड्ढ्वꣳ सु॒प॑रिविष्टा दे॒वेषु॑ । सु॒प॑रिविष्टा दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ सु॒प॑रिविष्टा॒ः सु॒प॑रिविष्टा दे॒वेषु॒ सु॒प॑रिविष्टा॒ः सु॒प॑रिविष्टा दे॒वेषु॒ सु॒प॑रिविष्टा॒ः सु॒प॑रिविष्टा दे॒वेषु॒ सु॒प॑रिविष्टाः । सु॒प॑रिविष्टा॒ऽ इति॒ सु प॑रिविष्टाः । दे॒वेषु॒ सु॒प॑रिवि-ष्टा॒ः सु॒प॑रिविष्टा दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ सु॒प॑रिविष्टा ब्व॒यँब्व॒यꣳ सु॒प॑रिविष्टा दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ सु॒प॑रिवि-

[1]. सुपरिविष्टाः सुपरिविष्टाः यहाँ सन्धि की दशा में अविकारं शाकल्यः शषसेषु (वा. प्रा. ३.१०) इस सूत्र से विसर्जनीय विकार को नहीं प्राप्त होगा।

ष्टा व्रयम्। सुपरिविष्टा व्रयँव्वयꣳ सुपरिविष्टाः सुपरिविष्टा व्रयम्परिवेष्टारः परिवेष्टारो व्रयꣳ सुपरिविष्टाः सुपरिविष्टा व्रयम्परिवेष्टारः। सुपरिविष्टाऽ इति सु परिविष्टाः। व्रयम्परिवेष्टारः परिवेष्टारो व्रयँव्वयम्परिवेष्टारो भूयास्म भूयास्म परिवेष्टारो व्रयँव्वयम्परिवेष्टारो भूयास्म। परिवेष्टारो भूयास्म भूयास्म परिवेष्टारः परिवेष्टारो भूयास्म। परिवेष्टारऽ इति परि वेष्टारः। भूयास्मेति भूयास्म॥११॥

व्राचन्ते ते व्राचँव्वाचन्ते शुन्धामि शुन्धामि ते व्राचँव्वाचन्ते शुन्धामि। ते शुन्धामि शुन्धामि ते ते शुन्धामि प्प्राणम्प्राणꣳ शुन्धामि ते ते शुन्धामि प्प्राणम्। शुन्धामि प्प्राणम्प्राणꣳ शुन्धामि शुन्धामि प्प्राणञ्चक्षुश्चक्षुः प्प्राणꣳ शुन्धामि शुन्धामि प्प्राणञ्चक्षुः। प्राणञ्चक्षुश्चक्षुः प्प्राणम्प्राणञ्चक्षुः श्श्रोत्रꣳ श्रोत्रञ्चक्षुः प्राणम्प्राणञ्चक्षुः श्श्रोत्रम्[1]। चक्षुः श्श्रोत्रꣳ श्रोत्रञ्चक्षुश्चक्षुः श्रोत्रन्नाभिन्नाभिꣳ श्रोत्रञ्चक्षुश्चक्षुः श्रोत्रन्नाभिम्। श्रोत्रन्नाभिन्नाभिꣳ श्रोत्रꣳ श्रोत्रन्नाभिम्मेढ्रम्मेढ्रन्नाभिꣳ श्रोत्रꣳ श्रोत्रन्नाभिम्मेढ्रम्। नाभिम्मेढ्रम्मेढ्रन्नाभिन्नाभिम्मेढ्रम्पायुम्पायुम्मेढ्रन्नाभिन्नाभिम्मेढ्रम्पायुम्। मेढ्रम्पायुम्पायुम्मेढ्रम्मेढ्रम्पायुञ्चरित्राँश्चरित्रान्पायुम्मेढ्रम्मेढ्रम्पायुञ्चरित्रान्। पायुञ्चरित्राँश्चरित्रान्पायुम्पायुञ्चरित्रान्। चरित्रानिति चरित्रान्॥१२॥

मनस्ते ते मनो मनस्तऽ आ प्प्यायताम्प्यायतामा ते मनो मनस्तऽ आ प्प्यायताम्। तऽ आ प्प्यायताम्प्यायतामा ते तऽ आ प्प्यायताँव्वाग्ग्वाक्प्प्यायतामा ते तऽ आ प्प्यायताँव्वाक्। आ प्प्यायताम्। प्प्यायताँव्वाग्ग्वाक्प्यायताम्प्यायताँव्वाक्प्राणः प्प्राणो व्वाक्प्यायताम्प्यायताँव्वाक्प्राणः। व्वाक्प्राणः प्प्राणो व्वाग्ग्वाक्प्राणश्चक्षुश्चक्षुः प्प्राणो व्वाग्ग्वाक्प्राणश्चक्षुः। प्राणश्चक्षुश्चक्षुः

[1]. चक्षुः श्रोत्रम् यहाँ विसर्जनीय के बाद शकार द्वित्व नहीं होगा, विसर्जनीयाद्व्यञ्जनपरः(वा.प्रा.४.१०७) इस सूत्र के अनुसार बाद में व्यञ्जन होने पर विसर्जनीय से परवर्ती स्पर्श ही द्वित्व को प्राप्त करता है।

प्प्राणः प्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रꣳ श्रोत्रञ्चक्षुः प्प्राणः प्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रम्। चक्षुः श्रोत्रꣳ श्रोत्रञ्चक्षुश्चक्षुः श्रोत्रम्। श्रोत्रमिति श्श्रोत्रम्॥ यत्ते ते यद्यत्ते क्क्रूरङ्क्रूरन्ते यद्यत्ते क्क्रूरम्। ते क्क्रूरङ्क्रूरन्ते ते क्क्रूरꣳय्यद्यत्क्क्रूरन्ते ते क्क्रूरꣳय्यत्। क्क्रूरꣳय्यद्यत्क्रूरङ्क्रूरꣳय्यदास्त्थितमास्त्थितꣳय्यत्क्रूरङ्क्रूरꣳय्यदास्त्थितम्। यदास्त्थितमास्त्थितꣳय्यद्यदास्त्थितन्तत्तदास्त्थितꣳय्यद्यदास्त्थितन्तत्।

आस्त्थितन्तत्तदास्त्थितमास्त्थितन्तत्ते ते तदास्त्थितमास्त्थितन्तत्ते। आस्त्थितमित्या स्त्थितम्। तत्ते ते तत्तत्ऽ आ प्प्यायतामप्प्यायतामा ते तत्तत्ऽ आ प्प्यायताम्। तऽ आ प्प्यायतामप्प्यायतामा ते तऽ आ प्प्यायतान्निर्न्निः प्प्यायतामा ते तऽ आ प्प्यायतान्निः। आ प्प्यायताम्। प्प्यायतान्निर्न्निः प्प्यायतामप्प्यायतान्नि ष्ट्यायताꣳ स्त्यायतान्निः प्प्यायतामप्प्यायतान्नि ष्ट्यायताम्[1]। नि ष्ट्यायताꣳ स्त्यायतान्निर्न्नि ष्ट्यायतान्तत्तत्स्त्यायतान्निर्न्नि ष्ट्यायतान्तत्।[2] स्त्यायतान्तत्तत्स्त्यायताꣳ स्त्यायतान्तत्ते ते तत्स्त्यायताꣳ स्त्यायतान्तत्ते। तत्ते ते तत्तत्ते शुद्ध्यतु शुद्ध्यतु ते तत्तत्ते शुद्ध्यतु। ते शुद्ध्यतु शुद्ध्यतु ते ते शुद्ध्यतु शꣳ शꣳ शुद्ध्यतु ते ते शुद्ध्यतु शम्। शुद्ध्यतु शꣳ शꣳ शुद्ध्यतु शुद्ध्यतु शमहोब्भ्योहोब्भ्यः शꣳ शुद्ध्यतु शुद्ध्यतु शमहोब्भ्यः। शमहोब्भ्योहोब्भ्यः शꣳ शमहोब्भ्यः। अहोब्भ्यऽ इत्यहः÷ भ्यः॥१३॥

निरस्तꣳ रक्क्षो रक्क्षो निरस्तन्निरस्तꣳ रक्क्षऽ इदमिदꣳ रक्क्षो निरस्तन्निरस्तꣳ रक्क्षऽ इदम्। निरस्तमिति निः अस्तम्। रक्क्षऽ इदमिदꣳ रक्क्षो

---

[1]. निः स्त्यायताम् यहाँ सन्धि की दशा में नेः स्त्यास्तनोः (वा,. प्रा. ३.६९) इस सूत्र से सकार षकार हो जाता है। षात्तथौ मूर्धन्यम् (वा. प्रा. ३.७९) इस सूत्र से षकार से परवर्ती तकार टकार हो जाता है।

[2]. तत् स्त्यायताम् यहाँ तकार के बाद न तो तकार का एवं न ही सकार के बाद तकार का द्वित्व होगा। यैस्तु परं तैर्न पूर्वम्(वा.प्रा.४.१०५) यत्र चोभयतः स्पर्शैः संयुक्ताः शषसाः सह। तत्र नाद्यः क्रमो ज्ञेयो नापरो बोधितो बुधैः। पक्ष्माणि वाऽथ सूक्ष्मा(सुक्ष्मा) च विश्वप्स्या(विश्वप्स्या) च तथा पुनः। नेदृशेषु द्विरुक्तिः स्यादिति प्राहुर्मनीषिणः।-व.शिक्षा-१५७-१५९.

रक्षं॑ऽ इ॒दम॒हम॒हमि॒दꣳ रक्षो॒ रक्षं॑ऽ इ॒दम॒हम्। इ॒दम॒हम॒हमि॒दमि॒दम॒हꣳ रक्षो॒ रक्षो॒हमि॒दमि॒दम॒हꣳ रक्षः॑। अ॒हꣳ रक्षो॒ रक्षो॒हम॒हꣳ रक्षो॒भ्यु॒भि रक्षो॒हम॒हꣳ रक्षो॒भि। रक्षो॒भ्यु॒भि रक्षो॒ रक्षो॒भि तिं॑ष्ठामि तिष्ठा॒म्म्यु॒भि रक्षो॒ रक्षो॒भि तिं॑ष्ठामि। अ॒भि तिं॑ष्ठामि तिष्ठा॒म्म्यु॒भ्यु॒भि तिं॑ष्ठा॒म्म्यवाव॑ तिष्ठा॒म्म्यु॒भ्यु॒भि तिं॑ष्ठा॒म्म्यव॑। ति॒ष्ठा॒म्म्यवाव॑ तिष्ठामि तिष्ठा॒म्म्यव॑ बाधे बा॒धेव॑ तिष्ठामि तिष्ठा॒म्म्यव॑ बाधे। अव॑ बाधे बा॒धेवाव॑ बाधेधु॒मम॑धु॒मम्बा॒धेवाव॑ बाधेधु॒मम्। बा॒धे॒धु॒मम॑धु॒मम्बा॑धे बाधेधु॒मन्तम॒स्तमो॑धु॒मम्बा॑धे बाधेधु॒मन्तम॑ः। अ॒धु॒मन्तम॒स्तमो॑धु॒मम॑धु॒मन्तमो॑ नयामि नयामि॒ तमो॑धु॒मम॑धु॒मन्तमो॑ नयामि। तमो॑ नयामि नयामि॒ तम॒स्तमो॑ नयामि। न॒या॒मीति॑ नयामि॥ घृ॒तेन॑ द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ द्यावापृथिवी॒ प्प्र प्प्र द्या॑वापृथिवी घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ द्यावा-पृथिवी॒ प्प्र। द्या॒वा॒पृ॒थि॒वी॒ प्प्र प्प्र द्या॑वापृथिवी द्यावापृथिवी॒ प्प्रोर्ण्णु॑वाथा-मूर्ण्णुवाथा॒म्प्र द्या॑वापृथिवी द्यावापृथिवी॒ प्प्रोर्ण्णु॑वाथाम्। द्या॒वा॒पृ॒थि॒वी॒ऽ इति॑ द्यावापृथिवी[1]। प्रोर्ण्णु॑वाथामूर्ण्णुवाथा॒म्प्र प्प्रोर्ण्णु॑वाथाँ॒ब्वायो॒ ब्वायं॑ऽ ऊर्ण्णुवाथा॒म्प्र प्प्रोर्ण्णु॑वाथाँ॒ब्वायो॑। ऊ॒र्ण्णु॒वा॒थाँ॒ब्वा॒यो॒ ब्वायं॑ऽ ऊर्ण्णुवाथामूर्ण्णुवाथाँ॒ब्वायो॒ ब्वेर्ब्वे॒र्ब्वायं॑ऽ ऊर्ण्णुवाथामूर्ण्णुवाथाँ॒ब्वायो॒ ब्वेः। ब्वायो॒ ब्वेर्ब्वे॒र्ब्वायो॒ ब्वायो॒ ब्वे स्तो॒काना॑ꣳ स्तो॒कानाँ॒ब्वेर्ब्वा॒यो॒ ब्वायो॒ ब्वे स्तो॒काना॑म्। ब्वायो॒ऽ इति॒ वायो॑। ब्वे स्तो॒काना॑ꣳ स्तो॒कानाँ॒ब्वेर्ब्वे स्तो॒काना॑म॒ग्ग्निर॒ग्ग्नि स्तो॒कानाँ॒ब्वेर्ब्वे स्तो॒काना॑म॒ग्ग्निः। स्तो॒काना॑म॒ग्ग्निर॒ग्ग्नि स्तो॒काना॑ꣳ स्तो॒काना॑म॒ग्ग्निराज्ज्य॒स्याज्ज्यं॑स्या॒ग्ग्नि स्तो॒काना॑ꣳ स्तो॒काना॑म॒ग्ग्निराज्ज्यं॑स्य। अ॒ग्ग्निराज्ज्य॒स्याज्ज्यं॑स्या॒ग्ग्निर॒ग्ग्नि-राज्ज्यं॑स्य ब्वेतु ब्वे॒त्त्वाज्ज्यं॑स्या॒ग्ग्निर॒ग्ग्निराज्ज्यं॑स्य ब्वेतु। आज्ज्यं॑स्य ब्वेतु ब्वे॒त्त्वाज्ज्य॒स्याज्ज्यं॑स्य ब्वे॒तु स्वाहा॒ स्वाहा॑ ब्वे॒त्त्वाज्ज्य॒स्याज्ज्यं॑स्य ब्वे॒तु स्वाहा॑। ब्वे॒तु

1. पदावृत्तौ चान्तरेण (वा. प्रा. ४.२०) पद की द्विरुक्ति होने पर मध्य में इति होता है। जैसे द्यावापृथिवीऽ इति द्यावापृथिवी।

स्वाहा स्वाहा ब्वेतु ब्वेतु स्वाहा स्वाहाकृते स्वाहाकृते स्वाहा ब्वेतु ब्वेतु स्वाहा स्वाहाकृते। स्वाहा स्वाहाकृते स्वाहाकृते स्वाहा स्वाहा स्वाहाकृतेऽ ऊर्द्धनंभसमूर्द्धनंभसꣳ स्वाहाकृते स्वाहा स्वाहा स्वाहाकृतेऽ ऊर्द्धनंभसम्[1]। स्वाहाकृतेऽ ऊर्द्धनंभसमूर्द्धनंभसꣳ स्वाहाकृते स्वाहाकृतेऽ ऊर्द्धनंभसम्मारुत-म्मारुतमूर्द्धनंभसꣳ स्वाहाकृते स्वाहाकृतेऽ ऊर्द्धनंभसम्मारुतम्। स्वाहाकृतेऽ इति स्वाहा कृते। ऊर्द्धनंभसम्मारुतम्मारुतमूर्द्धनंभसमूर्द्धनंभसम्मारुतङ्गच्छत-ङ्गच्छतम्मारुतमूर्द्धनंभसमूर्द्धनंभसम्मारुतङ्गच्छतम्। ऊर्द्धनंभसमित्यूर्द्ध नंभसम् । मारुतङ्गच्छतङ्गच्छतम्मारुतम्मारुतङ्गच्छतम्। गच्छतमिति गच्छतम्॥१४॥

इदमापऽ आपऽ इदमिदमापः प्प्र प्प्रापऽ इदमिदमापः प्प्र। आपः प्प्र प्प्रापऽ आपः प्प्र वंहत ब्वहत प्प्रापऽ आपः प्प्र वंहत। प्र वंहत ब्वहत प्प्र प्प्र वंह-तावद्यमंवद्यँब्वंहत प्प्र प्प्र वंहतावद्यम्। ब्वहतावद्यमंवद्यँब्वंहत ब्वहतावद्यञ्चं चावद्यँब्वं-हत ब्वहतावद्यञ्चं। अवद्यञ्चं चावद्यमंवद्यञ्च मलम्मलंञ्चावद्यमंवद्यञ्च मलंम्। च मलम्मलंञ्च च मलंञ्च च मलंञ्च च मलंञ्च। मलंञ्च च मलम्मलंञ्च यद्यच्च मल-म्मलंञ्च यत्। च यद्यच्चं च यत्। यदिति यत्॥ यच्चं च यद्यच्चाभिदुद्रोहाभिदुद्रोहं च यद्यच्चाभिदुद्रोहं। चाभिदुद्रोहाभिदुद्रोहं च चाभिदुद्रोहानृंतमनृंतमभिदुद्रोहं च चाभिदुद्रोहानृंतम्। अभिदुद्रोहानृंतमनृंतमभिदुद्रोहाभिदुद्रोहानृंतँय्यद्यदनृंतमभि-दुद्रोहाभिदुद्रोहानृंतँय्यत्। अभिदुद्रोहेत्यंभि दुद्रोहं। अनृंतँय्यद्यदनृंतमनृंतँय्यच्चं च यदनृंतमनृंतँय्यच्चं[2]। यच्चं च यद्यच्चं शेपे शेपे च यद्यच्चं शेपे। च शेपे शेपे चं च शेपेऽ अंभीरुणमभीरुणंछ शेपे चं च शेपेऽ अंभीरुणम्। शेपेऽ अंभीरुणमभी-

[1]. वा.प्रा.४.८८. के अनुसार स्वर बाद में होने पर प्रगृह्य पद प्रकृतिभाव से रहता है। वा.प्रा.१.९३. के अनुसार यहाँ स्वाहाकृते पद प्रगृह्य है।

[2]. तकारवर्गश्चकारवर्गे चकारवर्गम् (वा. प्रा. ४.९६) चकार वर्ग बाद में होने पर तकार वर्ग चकारवर्ग हो जाता है। यत् च यहाँ सन्धि की दशा में तकार चकार होगा।

रु॒णꣳ॑ शे॒पे शे॒पेऽ अ॑भी॒रुण॑म्। अ॒भी॒रु॒णमित्य॑भी॒रुण॑म्॥ आपो॑ मा॒ मा॒पऽ॒ आपो॑ मा॒ तस्मा॒त्तस्मा॒न्मापऽ॒ आपो॑ मा॒ तस्मा॑त्। मा॒ तस्मा॒त्तस्मा॑न्मा मा॒ तस्मा॒देन॑सऽ॒ एन॑स॒स्तस्मा॑न्मा मा॒ तस्मा॒देन॑सः[1]। तस्मा॒देन॑सऽ॒ एन॑स॒स्तस्मा॒त्तस्मा॒देन॑सः॒ पव॑मानः॒ पव॑मानऽ॒ एन॑स॒स्तस्मा॒त्तस्मा॒देन॑सः॒ पव॑मानः। एन॑सः॒ पव॑मानः॒ पव॑मानऽ॒ एन॑सऽ॒ एन॑सः॒ पव॑मानश्च च॒ पव॑मानऽ॒ एन॑सऽ॒ एन॑सः॒ पव॑मानश्च। पव॑मानश्च च॒ पव॑मानः॒ पव॑मानश्च मुञ्चतु मुञ्चतु च॒ पव॑मानः॒ पव॑मानश्च मुञ्चतु। च॒ मु॒ञ्च॒तु॒ मु॒ञ्च॒तु॒ च॒ च॒ मु॒ञ्च॒तु॒। मु॒ञ्च॒त्विति॑ मुञ्चतु॥१५॥

सन्तें॑ ते॒ सꣳ सन्ते॒ मनो॒ मन॑स्ते॒ सꣳ सन्ते॒ मन॑ः। ते॒ मनो॒ मन॑स्ते ते॒ मनो॒ मन॑सा॒ मन॑सा॒ मन॑स्ते ते॒ मनो॒ मन॑सा। मनो॒ मन॑सा॒ मन॑सा॒ मनो॒ मनो॒ मन॑सा॒ सꣳ सम्मन॑सा॒ मनो॒ मनो॒ मन॑सा॒ सम्। मन॑सा॒ सꣳ सम्मन॑सा॒ मन॑सा॒ सम्प्रा॒णः प्रा॒णः सम्मन॑सा॒ मन॑सा॒ सम्प्रा॒णः। सम्प्रा॒णः प्रा॒णः सꣳ सम्प्रा॒णः प्रा॒णेन॑ प्रा॒णेन॑ प्रा॒णः सꣳ सम्प्रा॒णः प्रा॒णेन॑। प्रा॒णः प्रा॒णेन॑ प्रा॒णेन॑ प्रा॒णः प्रा॒णः प्रा॒णेन॑ गच्छताङ्गच्छताम्प्रा॒णेन॑ प्रा॒णः प्रा॒णः प्रा॒णेन॑ गच्छताम्। प्रा॒णेन॑ गच्छताङ्गच्छताम्प्रा॒णेन॑ प्रा॒णेन॑ गच्छताम्। ग॒च्छ॒ता॒मिति॑ गच्छताम्॥ रेड॑स्यसि॒ रेड्रेड॑स्य॒ग्निर॒ग्निर॑सि॒ रेड्रेड॑स्य॒ग्निः। अ॒स्य॒ग्निर॒ग्निर॑स्यस्य॒ग्निष्ट्वा॑ त्वा॒ग्निर॑स्यस्य॒ग्निष्ट्वा॑[2]। अ॒ग्निष्ट्वा॑ त्वा॒ग्निर॒ग्निष्ट्वा॑ श्रीणातु श्रीणातु त्वा॒ग्निर॒ग्निष्ट्वा॑ श्रीणातु। त्वा॒ श्री॒णा॒तु॒ श्री॒णा॒तु॒ त्वा॒ त्वा॒ श्री॒णा॒त्वापऽ॒ आप॑ः श्रीणातु त्वा त्वा श्रीणा॒त्वाप॑ः। श्री॒णा॒त्वापऽ॒ आप॑ः श्रीणातु श्रीणा॒त्वाप॑स्त्वा॒ त्वाप॑ः श्रीणातु

---

1. एनोऽपापे(वा.प्रा.२.१३) इस सूत्र के अनुसार पाप का वाचक न होने पर एनः पद अनुदात होता है। यहाँ पाप का वाचक होने से उक्त पद आद्युदात है।

2. अग्निः त्वा यहाँ वा.प्रा.३.८६. के अनुसार अग्निः पद का विसर्ग सकार होता है। वा.प्रा.३.७६. से अग्निः पद का विसर्जनीय सकार षकार एकाक्षर पद बाद में होने से होता है। वा.प्रा.१.९९-१०१. के अनुसार त्वा एकाक्षर पद है। वा.प्रा.३.७९. के अनुसार यहाँ षकार से परवर्ती तकार टकार होता है। वा.प्रा.४.१०३. के अनुसार उस टकार का द्वित्व होता है।

श्रीणात्त्वापस्त्वा। आपस्त्वा त्वापऽ आपस्त्वा सꣳ सन्त्वापऽ आपस्त्वा सम्। त्वा सꣳ सन्त्वा त्वा समरिणन्नरिणन्त्सन्त्वा त्वा समरिणन्। समरिणन्नरिणन्त्सꣳ समरिणन्व्वातस्य व्वातस्यारिणन्त्सꣳ समरिणन्व्वातस्य[1]। अरिणन्व्वातस्य व्वातस्यारिणन्नरिणन्व्वातस्य त्वा त्वा व्वातस्यारिणन्नरिणन्व्वातस्य त्वा। व्वातस्य त्वा त्वा व्वातस्य व्वातस्य त्वा ध्राज्यै ध्राज्यै त्वा व्वातस्य व्वातस्य त्वा ध्राज्यै। त्वा ध्राज्यै ध्राज्यै त्वा त्वा ध्राज्यै पूष्णः पूष्णो ध्राज्यै त्वा त्वा ध्राज्यै पूष्णः। ध्राज्यै पूष्णः पूष्णो ध्राज्यै ध्राज्यै पूष्णो रꣳह्यै रꣳह्यै पूष्णो ध्राज्यै ध्राज्यै पूष्णो रꣳह्यै। पूष्णो रꣳह्यै रꣳह्यै पूष्णः पूष्णो रꣳह्याऽ ऊष्म्मणऽ ऊष्म्मणो रꣳह्यै पूष्णः पूष्णो रꣳह्याऽ ऊष्म्मणः। रꣳह्याऽ ऊष्म्मणऽ ऊष्म्मणो रꣳह्यै रꣳह्याऽ ऊष्म्मणो व्यथिषद्व्यथिषदूष्म्मणो रꣳह्यै रꣳह्याऽ ऊष्म्मणो व्यथिषत्। ऊष्म्मणो व्यथिषद्व्यथिषदूष्म्मणऽ ऊष्म्मणो व्यथिषत्प्रयुतम्प्रयुतँव्यथिषदूष्म्मणऽ ऊष्म्मणो व्यथिषत्प्रयुतम्। व्यथिषत्प्रयुतम्प्रयुतँव्यथिषद्व्यथिषत्प्रयुतन्द्वेषो द्वेषः प्प्रयुतँव्यथिषद्व्यथिषत्प्रयुतन्द्वेषः। प्रयुतन्द्वेषो द्वेषः प्प्रयुतम्प्रयुतन्द्वेषः। प्रयुतमिति प्र युतम्। द्वेषऽ इति द्वेषः॥ १६॥

घृतङ्घृतपावानो घृतपावानो घृतङ्घृतङ्घृतपावानः पिबत पिबत घृतपावानो घृतङ्घृतङ्घृतपावानः पिबत[2]। घृतपावानः पिबत पिबत घृतपावानो घृतपावानः पिबत व्वसाँव्वसाम्पिबत घृतपावानो घृतपावानः पिबत व्वसाम्। घृतपावानऽ इति घृत पावानः। पिबत व्वसाँव्वसाम्पिबत पिबत व्वसाँव्वसापावानो व्वसापावानो व्वसा-

[1]. अरिणन् अरिणन् यहाँ सन्धि की दशा में ङ्णौ चेद्धस्वपूर्वौ स्वरे पदान्तौ (वा. प्रा. ४.१०८) इस सूत्र से प्रथम अरिणन् का नकार द्वित्व को प्राप्त करता है।

[2]. वा.प्रा.२.१७. के अनुसार यहाँ पद पूर्व में होने वाला घृतपावानः आमन्त्रित पद अनुदात्त है।

म्पिबत पिबत॒ ब्वसाँब्वसापावानः। ब्वसाँब्वसापावानो ब्वसापावानो॒ ब्वसाँ॒ब्वसाँब्वसापा-वानः पिबत पिबत ब्वसापावानो॒ ब्वसाँ॒ब्वसाँब्वसापावानः पिबत। ब्व॒सा॒पा॒वा॒नः॒ पि॒ब॒त॒ पि॒ब॒त॒ ब्व॒सा॒पा॒वा॒नो॒ ब्व॒सा॒पा॒वा॒नः॒ पि॒ब॒ता॒न्तरिक्षस्या॒न्तरिक्षस्य पिबत ब्वसापावानो ब्वसापावानः पिबता॒न्तरिक्षस्य। ब्व॒सा॒पा॒वा॒न॒ऽ इति॑ वसा पावानः। पि॒ब॒ता॒न्तरिक्षस्या॒न्तरिक्षस्य पिबत पिबता॒न्तरिक्षस्य ह॒विर्ह॒विर॒न्तरिक्षस्य पिबत पिबता॒न्तरिक्षस्य ह॒विः। अ॒न्तरिक्षस्य ह॒विर्ह॒विर॒न्तरिक्षस्या॒न्तरि-क्षस्य ह॒विरस्यसि ह॒विर॒न्तरिक्षस्या॒न्तरिक्षस्य ह॒विरसि। ह॒विरस्यसि ह॒विर्ह॒-विरसि॒ स्वाहा॒ स्वाहासि ह॒विर्ह॒विरसि॒ स्वाहा। अ॒सि॒ स्वाहा॒ स्वाहास्यसि॒ स्वाहा। स्वाहेति॒ स्वाहा॥ दिशः प्प्र॒दिशः प्प्र॒दिशो॒ दिशो॒ दिशः प्प्र॒दिशऽ आ॒दिशऽ आ॒दिशः प्प्र॒दिशो॒ दिशो॒ दिशः प्प्र॒दिशऽ आ॒दिशः। प्र॒दिशऽ आ॒दिशऽ आ॒दिशः प्प्र॒दिशः प्प्र॒दिशऽ आ॒दिशो ब्वि॒दिशो ब्वि॒दिशऽ आ॒दिशः प्प्र॒दिशः प्प्र॒दिशऽ आ॒दिशो ब्वि॒दिशः। प्र॒दिश॒ऽ इति॑ प्प्र॒ दिशः। आ॒दिशो ब्वि॒दिशो ब्वि॒दिशऽ आ॒दिशऽ आ॒दिशो ब्वि॒दिशऽ उ॒द्दिशऽ उ॒द्दिशो ब्वि॒दिशऽ आ॒दिशऽ आ॒दिशो ब्वि॒दिशऽ उ॒द्दिशः। आ॒दिश॒ऽ इत्या॒ दिशः। ब्वि॒दिशऽ उ॒द्दिशऽ उ॒द्दिशो ब्वि॒दिशो ब्वि॒दिशऽ उ॒द्दिशो दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्यऽ उ॒द्दिशो ब्वि॒दिशो ब्वि॒दिशऽ उ॒द्दिशो दि॒ग्ग्भ्यः। ब्वि॒दिश॒ऽ इति॑ वि॒ दिशः। उ॒द्दिशो दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्यऽ उ॒द्दिशऽ उ॒द्दिशो दि॒ग्ग्भ्यः स्वाहा॒ स्वाहा दि॒ग्ग्भ्यऽ उ॒द्दिशऽ उ॒द्दिशो दि॒ग्ग्भ्यः स्वाहा। उ॒द्दिश॒ऽ इत्युत् दिशः। दि॒ग्ग्भ्यः स्वाहा॒ स्वाहा दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्यः स्वाहा। दि॒ग्ग्भ्यऽ इति॑ दि॒क् भ्यः। स्वाहेति॒ स्वाहा॥१७॥

ऐ॒न्द्रः प्प्रा॒णः प्प्रा॒णऽ ऐ॒न्द्रऽ ऐ॒न्द्रः प्प्रा॒णोऽ अङ्गेऽअ॒ङ्गेङ्गेऽअङ्गे प्प्रा॒णऽ ऐ॒न्द्रऽ ऐ॒न्द्रः प्प्रा॒णोऽ अङ्गेऽअङ्गे। प्रा॒णोऽ अङ्गेऽअ॒ङ्गेङ्गेऽअङ्गे प्प्रा॒णः प्प्रा॒णोऽ

अङ्गेऽअङ्गे॒ नि न्यङ्गेऽअङ्गे प्प्रा॒णः प्प्रा॒णोऽ अङ्गेऽअङ्गे॒ नि। अङ्गेऽअङ्गे॒ नि न्यङ्गेऽ-अ॒ङ्गेङ्गेऽअङ्गे॒ नि दीं॑द्ध्यदीद्ध्य॒न्यङ्गेऽअ॒ङ्गेङ्गेऽअङ्गे॒ नि दीं॑द्ध्यत्। अङ्गेऽअङ्ग॒ऽ इत्यङ्गे अङ्गे। नि दीं॑द्ध्यदीद्ध्यु॒न्नि नि दीं॑द्ध्यदै॒न्द्रऽ ऐ॒न्द्रो दीं॑द्ध्यु॒न्नि नि दीं॑द्ध्यदै॒न्द्रः। दी॒द्ध्य॒-दै॒न्द्रऽ ऐ॒न्द्रो दीं॑द्ध्यदीद्ध्यदै॒न्द्रऽ उं॑दा॒नऽ उं॑दा॒नऽ ऐ॒न्द्रो दीं॑द्ध्यदीद्ध्यदै॒न्द्रऽ उं॑दा॒नः। ऐ॒न्द्रऽ उं॑दा॒नऽ उं॑दा॒नऽ ऐ॒न्द्रऽ ऐ॒न्द्रऽ उं॑दा॒नोऽ अङ्गेऽअ॒ङ्गेङ्गेऽअङ्गऽ उदा॒नऽ ऐ॒न्द्रऽ ऐ॒न्द्रऽ उं॑दा॒नोऽ अङ्गेऽअङ्गे[1]। उ॒दा॒नोऽ अङ्गेऽअ॒ङ्गेङ्गेङ्गऽअङ्गऽ उदा॒नऽ उं॑दा॒नोऽ अङ्गेऽअङ्गे॒ निधीं॑तो॒ निधी॒तोङ्गेऽअङ्गऽ उदा॒नऽ उं॑दा॒नोऽ अङ्गेऽअङ्गे॒ निधीं॑तः। उ॒दा॒-नऽ इत्युं॑त् आ॒नः। अङ्गेऽअङ्गे॒ निधीं॑तो॒ निधी॒तोङ्गेऽअ॒ङ्गेङ्गेऽअङ्गे॒ निधीं॑तः। अङ्गेऽ-अङ्ग॒ऽ इत्यङ्गे अङ्गे। निधीं॑त॒ऽ इति॒ नि धीं॑तः॥ देवं॑ त्वष्टस्त्वष्ट॒र्द्देव॒ देवं॑ त्वष्ट॒र्ब्भूरि॒ भूरिं॑ त्वष्ट॒र्द्देव॒ देवं॑ त्वष्ट॒र्ब्भूरिं॑[2]। त्व॒ष्ट॒र्ब्भूरि॒ भूरिं॑ त्वष्टस्त्वष्ट॒र्ब्भूरिं॑ ते ते॒ भूरि॑ त्वष्ट-स्त्वष्ट॒र्ब्भूरिं॑ ते। भूरिं॑ ते ते॒ भूरि॒ भूरिं॑ ते॒ सꣳसु॒ꣳ सꣳसंन्ते॒ भूरि॒ भूरिं॑ ते॒ सꣳसंम्। ते॒ सꣳसु॒ꣳ सꣳसंन्ते ते॒ सꣳसंमेत्त्वेतु॒ सꣳसंन्ते ते॒ सꣳसंमेतु। सꣳसंमेत्त्वेतु॒ सꣳसु॒ꣳ सꣳसंमेतु॒ सलं॑क्ष्म॒ सलं॑क्ष्मैतु॒ सꣳसु॒ꣳ सꣳसंमेतु॒ सलं॑क्ष्म। सꣳसु॒मिति॒ सम् सम्। ए॒तु॒ सलं॑क्ष्म॒ सलं॑क्ष्मैत्त्वेतु॒ सलं॑क्ष्मा॒ यद्यत्सलं॑क्ष्मैत्त्वेतु॒ सलं॑क्ष्मा॒ यत्[3]। सलं॑क्ष्मा॒ यद्यत्सलं॑क्ष्म॒ सलं॑क्ष्मा॒ यद्विषुं॑रूपं॒व्विषुं॑रूपं॒य्यत्सलं॑क्ष्म॒ सलं॑क्ष्मा॒ यद्विषुं॑-रूपम्। सल॒क्ष्मेति॒ स लं॑क्ष्म। यद्विषुं॑रूपं॒व्विषुं॑रूपं॒य्यद्यद्विषुं॑रूप॒म्भवा॑ति॒ भवा॑ति॒ व्विषुं॑रूपं॒य्यद्यद्विषुं॑रूप॒म्भवा॑ति। व्विषुं॑रूप॒म्भवा॑ति॒ भवा॑ति॒ व्विषुं॑रूपं॒व्विषुं॑रूप॒म्भवा॑ति। व्विषुं॑रूप॒मिति॒ विषुं॑ रूपम्। भवा॒तीति॒ भवा॑ति॥ दे॒व॒त्रा यन्तं॒य्यन्तं॑न्देव॒त्रा दें॑व॒त्रा यन्त॒मव॒सेवं॑से॒ यन्तं॑न्देव॒त्रा दें॑व॒त्रा यन्त॒मवं॑से। दे॒व॒त्रेतिं॑ देव॒ त्रा। यन्त॒मव॒सेवं॑से॒

[1]. वा. प्रा. ४.८५. के अनुसार इस कण्डिका में प्राणः एवं उदानः इनसे सम्बन्धित ओकार प्रकृति भाव से रहते हैं। तथा अङ्गे इस पदावयव(पूर्वपद) का एकार भी प्रकृतिभाव से रहता है।

[2]. त्वष्टः भूरिं यहाँ रेफं स्वरघौ(वा.प्रा.४.३७) इस सूत्र से विसर्जनीय रेफ होता है।

[3]. वा.प्रा. ३.११२. के अनुसार यहाँ सलक्ष्म का अन्तिम स्वर दीर्घ हो जाता है।

यन्तुँञ्यन्तमवंसे सखांयः सखायोवंसे यन्तुँञ्यन्तमवंसे सखांयः। अवंसे सखांयः सखायोवसेवंसे सखायोन्वनु सखायोवसेवंसे सखायोनुं। सखायोन्वनु सखांयः सखायोनुं त्वा त्वानु सखांयः सखायोनुं त्वा। अनुं त्वा त्वान्वनुं त्वा माता माता त्वान्वनुं त्वा माता। त्वा माता माता त्वां त्वा माता पितरंः पितरों माता त्वां त्वा माता पितरंः। माता पितरंः पितरों माता माता पितरों मदन्तु मदन्तु पितरों माता माता पितरों मदन्तु। पितरों मदन्तु मदन्तु पितरंः पितरों मदन्तु। मदुन्त्विति मदन्तु॥१८॥

समुद्रङ्गच्छ गच्छ समुद्रꣳ संमुद्रङ्गच्छ स्वाहा स्वाहां गच्छ समुद्रꣳ संमुद्रङ्गच्छ स्वाहां[1]। गच्छ स्वाहा स्वाहां गच्छ गच्छ स्वाहान्तरिंक्षमन्तरिंक्षꣳ स्वाहां गच्छ गच्छ स्वाहान्तरिंक्षम्। स्वाहान्तरिंक्षमन्तरिंक्षꣳ स्वाहा स्वाहान्तरिंक्षन्देवन्देवमन्तरिंक्षꣳ स्वाहा स्वाहान्तरिंक्षन्देवम्। अन्तरिंक्षन्देवन्देवमन्तरिंक्षमन्तरिंक्षन्देवꣳ संवितारꣳ सवितारंन्देवमन्तरिंक्षमन्तरिंक्षन्देवꣳ संवितारंम्। देवꣳ संवितारꣳ सवितारंन्देवन्देवꣳ संवितारंम्मित्रावरुंणौ मित्रावरुंणौ सवितारंन्देवन्देवꣳ संवितारंम्मित्रावरुंणौ। सवितारंम्मित्रावरुंणौ मित्रावरुंणौ सवितारꣳ सवितारंम्मित्रावरुंणावहोरात्रेऽ अंहोरात्रे मित्रावरुंणौ सवितारꣳ सवितारंम्मित्रावरुंणावहोरात्रे। मित्रावरुंणावहोरात्रेऽ अंहोरात्रे मित्रावरुंणौ मित्रावरुंणावहोरात्रे च्छन्दांꣳसि च्छन्दांꣳस्यहोरात्रे मित्रावरुंणौ मित्रावरुंणावहोरात्रे च्छन्दांꣳसि। अहोरात्रे च्छन्दांꣳसि च्छन्दांꣳस्यहोरात्रेऽ अंहोरात्रे च्छन्दांꣳसि द्यावांपृथिवी द्यावांपृथिवी च्छन्दांꣳस्यहोरात्रेऽ अंहोरात्रे च्छन्दांꣳसि द्यावांपृथिवी। अहोरात्रेऽ इत्यंहोरात्रे। छन्दांꣳसि द्यावांपृथिवी द्यावांपृथिवी च्छन्दांꣳसि च्छन्दांꣳसि द्यावांपृथिवी यज्ञँञ्यज्ञन्द्यावांपृथिवी

[1]. वा.प्रा.५.३७. के अनुसार समुद्रम् पद का पृथक्करण नहीं होता है।

च्छन्दां॑ऽसि च्छन्दां॑ऽसि द्यावा॑पृथि॒वी य॒ज्ञम्। द्यावा॑पृथि॒वी य॒ज्ञँऽय॒ज्ञन्द्या-वा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी य॒ज्ञꣳ सोम॒ꣳ सोमँ॑ऽय॒ज्ञन्द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी य॒ज्ञꣳ सोम॑म्। द्यावा॑पृथि॒वीऽ इति॒ द्यावा॑पृथि॒वी। य॒ज्ञꣳ सोम॒ꣳ सोमँ॑ऽय॒ज्ञँ-ऽय॒ज्ञꣳ सोम॑न्दि॒व्यन्दि॒व्यꣳ सोमँ॑ऽय॒ज्ञँऽय॒ज्ञꣳ सोम॑न्दि॒व्यम्। सोम॑न्दि॒व्य-न्दि॒व्यꣳ सोम॒ꣳ सोम॑न्दि॒व्यन्नभो॒ नभो॑ दि॒व्यꣳ सोम॒ꣳ सोम॑न्दि॒व्यन्नभ॑ः। दि॒व्यन्नभो॒ नभो॑ दि॒व्यन्दि॒व्यन्नभो॒ग्निम॒ग्निन्नभो॑ दि॒व्यन्दि॒व्यन्नभो॒ग्निम्[1]। नभो॒ग्निम॒ग्निन्नभो॒ नभो॒ग्निँवै॒श्वान॒रँवै॒श्वान॒रम॒ग्निन्नभो॒ नभो॒ग्निँवै॒श्वान॒रम्। अ॒ग्निँवै॒श्वान॒रँवै॒श्वान॒रम॒ग्निम॒ग्निँवै॒श्वान॒रम्मनो॒ मनो॑ वै॒श्वान॒रम॒ग्निम॒ग्निँवै॒श्वान॒-रम्मन॑ः। वै॒श्वा॒न॒रम्मनो॒ मनो॑ वै॒श्वान॒रँवै॒श्वान॒रम्मनो॑ मे मे॒ मनो॑ वै॒श्वान॒रँवै॒श्वान॒-रम्मनो॑ मे। मनो॑ मे मे॒ मनो॒ मनो॑ मे॒ हार्द्दि॒ हार्द्दि॑ मे॒ मनो॒ मनो॑ मे॒ हार्द्दि॑। मे॒ हार्द्दि॒ हार्द्दि॑ मे मे॒ हार्द्दि॑ यच्छ यच्छ॒ हार्द्दि॑ मे मे॒ हार्द्दि॑ यच्छ। हार्द्दि॑ यच्छ यच्छ॒ हार्द्दि॒ हार्द्दि॑ यच्छ॒ दि॒वन्दि॒वँऽयच्छ॒ हार्द्दि॒ हार्द्दि॑ यच्छ॒ दिव॑म्। य॒च्छ॒ दि॒वन्दि॒वँऽयच्छ यच्छ॒ दिव॑न्ते ते॒ दि॒वँऽयच्छ यच्छ॒ दिव॑न्ते। दिव॑न्ते ते॒ दि॒वन्दि॒व॑न्ते धू॒मो धू॒मस्ते॒ दि॒वन्दि॒व॑न्ते धू॒मः। ते॒ धू॒मो धू॒मस्ते॑ ते धू॒मो ग॑च्छतु गच्छतु धू॒मस्ते॑ ते धू॒मो ग॑च्छतु। धू॒मो ग॑च्छतु गच्छतु धू॒मो धू॒मो ग॑च्छतु स्व॒ः स्व॑र्ग्गच्छतु धू॒मो धू॒मो ग॑च्छतु स्व॒ः[2]। ग॒च्छ॒तु स्व॒ः स्व॑र्ग्गच्छतु गच्छतु स्व॒र्ज्ज्योति॒र्ज्ज्योति॒ः स्व॒र्ग्ग-च्छतु गच्छतु स्व॒र्ज्ज्योति॑ः। स्व॒र्ज्ज्योति॒र्ज्ज्योति॒ः स्व॒ः स्व॒र्ज्ज्योति॑ः पृथि॒वीम्पृ-थि॒वीञ्ज्योति॒ः स्व॒ः स्व॒र्ज्ज्योति॑ः पृथि॒वीम्। ज्योति॑ः पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीञ्ज्योति॒-र्ज्ज्योति॑ः पृथि॒वीम्भस्म॑ना॒ भस्म॑ना पृथि॒वीञ्ज्योति॒र्ज्ज्योति॑ः पृथि॒वीम्भस्म॑-

[1]. गलत् पदों का अतिक्रमण करके अगलत् पदों के साथ सन्धि करना सङ्क्रम है। सङ्क्रमे च सर्वत्र (वा. प्रा. ४.८१) इस सूत्र के अनुसार सङ्क्रम में अकार का अभिनिधान होता है।

[2]. एकपदे नीचपूर्वः सयवो जात्यः (वा.प्रा.१.१११) के भाष्यकारों ने एकपद में अनुदात पूर्व में न होने पर भी स्वः पद को जात्य स्वरित माना है।

ना। पृथिवीम्भस्म्मना भस्म्मना पृथिवीम्पृथिवीम्भस्म्मना पृण पृणा भस्म्मना पृथिवीम्पृथिवीम्भस्म्मना पृण। भस्म्मना पृण पृणा भस्म्मना भस्म्मना पृण स्वाहा स्वाहा पृणा भस्म्मना भस्म्मना पृण स्वाहा। आ पृण। पृण स्वाहा स्वाहा पृण पृण स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१९॥

मापोपो मा मापो मा मापो मा मापो मा[1]। अपो मा मापोपो मौषधीरोषधीर्म्मापोपो मौषधीः। मौषधीरोषधीर्म्मा मौषधीर्हिंᳪसीर्हिंᳪसीरोषधीर्म्मा मौषधीर्हिंᳪसीः। ओषधीर्हिंᳪसीर्हिंᳪसीरोषधीरोषधीर्हिंᳪसीर्द्धाम्म्नोधाम्म्नो धाम्म्नोधाम्म्नो हिंᳪसीरोषधीरोषधीर्हिंᳪसीर्द्धाम्म्नोधाम्म्नः। हिंᳪसीर्द्धाम्म्नोधाम्म्नो धाम्म्नोधाम्म्नो हिंᳪसीर्हिंᳪसीर्द्धाम्म्नोधाम्म्नो राजन्राजन्धाम्म्नोधाम्म्नो हिंᳪसीर्हिंᳪसीर्द्धाम्म्नोधाम्म्नो राजन्। धाम्म्नोधाम्म्नो राजन्राजन्धाम्म्नोधाम्म्नो धाम्म्नोधाम्म्नो राजँस्ततस्ततो राजन्धाम्म्नोधाम्म्नो धाम्म्नोधाम्म्नो राजँस्ततः[2]। धाम्म्नोधाम्म्नऽ इति धाम्म्नः धाम्म्नः। राजँस्ततस्ततो राजन्राजँस्ततो व्वरुण व्वरुण ततो राजन्राजँस्ततो व्वरुण। ततो व्वरुण व्वरुण ततस्ततो व्वरुण नो नो व्वरुण ततस्ततो व्वरुण नः। व्वरुण नो नो व्वरुण व्वरुण नो मुञ्च मुञ्च नो व्वरुण व्वरुण नो मुञ्च। नो मुञ्च मुञ्च नो नो मुञ्च। मुञ्चेति मुञ्च॥ यदाहुराहुर्य्यद्यदाहुरघ्न्याऽ अघ्न्याऽ आहुर्य्यद्यदाहुरघ्न्याः। आहुरघ्न्याऽ अघ्न्याऽ आहुराहुरघ्न्याऽ इतीत्यघ्न्याऽ आहुराहुरघ्न्याऽ इति। अघ्न्याऽ इतीत्यघ्न्याऽ अघ्न्याऽ इति व्वरुण व्वरुणेत्यघ्न्याऽ अघ्न्याऽ इति व्वरुण। इति व्वरुण व्वरुणेतीति व्वरुणेतीति

---

1. उदात्तवानुदात्तः (वा. प्रा. ४.१३४) उदात्त के साथ किसी अन्य अनुदात्त अथवा स्वरित की सन्धि होने पर वह एकीभाव उदात्त होता है। यहाँ मा अपः इस सन्धि की दशा में उदात्त प्रबल होगा।

2. राजन् ततः यहाँ वा.प्रा.३.१३५. के अनुसार तकार वाद में होने पर नकार सकार तथा उपधा(वा.प्रा.१.३५) का अनुनासिक होता है, अतः यहाँ अनुनासिकत्व स्वर का धर्म है, न कि पृथगक्षर अतः सकारोत्तरवर्ती तकार का द्वित्व वा.प्रा.४.१०३. के अनुसार होगा।

व्वरुणेतीति व्वरुणेतिं। व्वरुणेतीति व्वरुंण व्वरुणेति शपामहे शपामहऽ इति व्वरुंण व्वरुणेति शपामहे। इति शपामहे शपामहऽ इतीति शपामहे। शपामहऽ इति शपामहे॥ सुमित्रिया नों नः सुमित्रियाः सुमित्रिया नऽ आपऽ आपों नः सुमित्रियाः सुमित्रिया नऽ आपंः। सुमित्रियाऽ इतिं सु मित्रियाः। नऽ आपऽ आपों नो नऽ आपऽ ओषधयऽ ओषधयऽ आपों नो नऽ आपऽ ओषधयः। आपऽ ओषधयऽ ओषधयऽ आपऽ आपऽ ओषधयः सन्तु सन्त्वोषधयऽ आपऽ आपऽ ओषधयः सन्तु। ओषधयः सन्तु सन्त्वोषधयऽ ओषधयः सन्तु दुर्म्मित्रिया दुर्म्मित्रियाः सन्त्वोषधयऽ ओषधयः सन्तु दुर्म्मित्रियाः। सन्तु दुर्म्मित्रिया दुर्म्मित्रियाः संन्तु सन्तु दुर्म्मित्रियास्तस्म्मै तस्म्मैं दुर्म्मित्रियाः संन्तु सन्तु दुर्म्मित्रियास्तस्म्मैं। दुर्म्मित्रियास्तस्म्मै तस्म्मैं दुर्म्मित्रिया दुर्म्मित्रियास्तस्म्मैं सन्तु सन्तु तस्म्मैं दुर्म्मित्रिया दुर्म्मित्रियास्तस्म्मैं सन्तु। दुर्म्मित्रियाऽ इतिं दुः मित्रियाः। तस्म्मैं सन्तु सन्तु तस्म्मै तस्म्मैं सन्तु। सन्त्विति सन्तु॥२०॥

हविष्म्मंतीरिमाऽ इमा हविष्म्मंतीर्हविष्म्मंतीरिमाऽ आपऽ आपंऽ इमा हविष्म्मंतीर्हविष्म्मंतीरिमाऽ आपंः। इमाऽ आपऽ आपंऽ इमाऽ इमाऽ आपों हविष्म्मान्हविष्म्मानापंऽ इमाऽ इमाऽ आपों हविष्म्मान्। आपों हविष्म्मान्हविष्म्मानापऽ आपों हविष्म्माउँ॥ऽ आ विंवासति व्विवासत्त्या हविष्म्मानापऽ आपों हविष्म्माउँ॥ऽ आ विंवासति। हविष्म्माउँ॥ऽ आ विंवासति व्विवासत्त्या हविष्म्मान्हविष्म्माउँ॥ऽ आ विंवासति। आ विंवासति। व्विवासतीतिं विवासति॥ हविष्म्मान्देवो देवो हविष्म्मान्हविष्म्मान्देवोऽ अंद्ध्वरोद्ध्वरो देवो हविष्म्मान्हविष्म्मान्देवोऽ अंद्ध्वरः।[1] देवोऽ अंद्ध्वरोद्ध्वरो देवो देवोऽ अंद्ध्वरो हविष्म्मान्हविष्म्मानद्ध्वरो देवो देवोऽ अंद्ध्वरो हविष्म्मान्। अद्ध्वरो हविष्म्मान्हविष्म्मानद्ध्वरोद्ध्वरो

[1]. देवः अध्वरः यहाँ वा.मा.४.८५. के अनुसार देवः के विसर्जनीय से सम्बन्धित ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

हविष्म्मारँ॥ऽ अस्त्वस्तु हविष्म्मानद्धरोद्धरो हविष्म्मारँ॥ऽ अस्तु। हवि-ष्म्मारँ॥ऽ अस्त्वस्तु हविष्म्मान्हविष्म्मारँ॥ऽ अस्तु सूर्य्यः सूर्य्योस्तु हवि-ष्म्मान्हविष्म्मारँ॥ऽ अस्तु सूर्य्यः। अस्तु सूर्य्यः सूर्य्योस्त्वस्तु सूर्य्यः । सूर्य्यऽ इति सूर्य्यः ॥२१॥

अग्ग्नेर्व्वो वोग्ग्नेरग्ग्नेर्व्वोपन्नगृहस्यापन्नगृहस्य वोग्ग्नेरग्ग्नेर्व्वोपन्नगृहस्य[1]। व्वो-पन्नगृहस्यापन्नगृहस्य वो वोपन्नगृहस्य सदसि सदस्यपन्नगृहस्य वो वोपन्नगृहस्य सदसि। अपन्नगृहस्य सदसि सदस्यपन्नगृहस्यापन्नगृहस्य सदसि सादयामि सादयामि सदस्यपन्नगृहस्यापन्नगृहस्य सदसि सादयामि। अपन्नगृहस्येत्यपन्न गृहस्य। सदसि सादयामि सादयामि सदसि सदसि सादयामीन्द्राग्ग्न्योरिन्द्राग्ग्न्योः सादयामि सदसि सदसि सादयामीन्द्राग्ग्न्योः। सादयामीन्द्राग्ग्न्योरिन्द्राग्ग्न्योः सादयामि सादयामीन्द्राग्ग्न्योर्ब्भागधेयीर्ब्भागधे-यीरिन्द्राग्ग्न्योः सादयामि सादयामीन्द्राग्ग्न्योर्ब्भागधेयीः[2]। इन्द्राग्ग्न्योर्ब्भागधे-यीर्ब्भागधेयीरिन्द्राग्ग्न्योरिन्द्राग्ग्न्योर्ब्भागधेयी स्त्थ स्त्थ भागधेयीरिन्द्राग्ग्न्यो-रिन्द्राग्ग्न्योर्ब्भागधेयी स्त्थ। भागधेयी स्त्थ स्त्थ भागधेयीर्ब्भागधेयी स्त्थ मित्रावरुणयोर्म्मित्रावरुणयो स्त्थ भागधेयीर्ब्भागधेयी स्त्थ मित्रावरुणयोः। भागधेयीरिति भाग धेयीः। स्त्थ मित्रावरुणयोर्म्मित्रावरुणयो स्त्थ स्त्थ मित्रावरुणयोर्व्विश्श्वेषाँव्विश्श्वेषाम्मित्रावरुणयो स्त्थ स्त्थ मित्रावरुणयोर्व्विश्श्वेषाम्। मित्रावरुणयोर्व्विश्श्वेषाँव्विश्श्वेषाम्मित्रावरुणयोर्म्मित्रावरुणयोर्व्विश्श्वेषान्देवानान्देवा-नाँव्विश्श्वेषाम्मित्रावरुणयोर्म्मित्रावरुणयोर्व्विश्श्वेषान्देवानाम्। व्विश्श्वेषान्देवानान्देवा-

---

[1]. स्येति ण्यत्वं च (वा. प्रा. ४.१५७) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अपन्नगृहस्य पद एक यकार वाला है।

[2]. इन्द्राग्न्योः भागधेयीः यहाँ रेफं स्वरधौ(वा.प्रा.४.३७) के अनुसार विसर्जनीय रेफ होता है। परं तु रेफहकाराभ्याम्(वा.प्रा.४.१०२) के अनुसार रेफ से परवर्ती भकार का द्वित्व प्रथमैर्द्वितीयास्तृतीयैश्चतुर्थाः(वा.प्रा.४.११०) इस सूत्र से बकार के साथ होता है।

नाँ॒न्विश्वे॑षाँ॒न्विश्वे॑षान्दे॒वाना॑म्। दे॒वाना॒मिति॑ दे॒वाना॑म्॥ अ॒मूर्य्या याऽ अ॒मूर॒मूर्य्याऽ उपोप॒ याऽ अ॒मूर॒मूर्य्याऽ उप॑। याऽ उपोप॒ या याऽ उप॒ सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒ऽ उप॒ या याऽ उप॒ सूर्य्ये॑। उप॒ सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒ऽ उपोप॒ सूर्य्ये॒ याभि॒र्य्याभि॒ᳬ सूर्य्ये॒ऽ उपोप॒ सूर्य्ये॒ याभि॑ः। सूर्य्ये॒ याभि॒र्य्याभि॒ᳬ सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒ याभि॑र्वा वा॒ याभि॒ᳬ सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒ याभि॑र्वा। याभि॑र्वा वा॒ याभि॒र्य्याभि॑र्वा॒ सूर्य्य॒ᳬ सूर्य्यो॑ वा॒ याभि॒र्य्याभि॑र्वा॒ सूर्य्य॑ः। वा॒ सूर्य्य॒ᳬ सूर्य्यो॑ वा वा॒ सूर्य्य॑ः स॒ह स॒ह सूर्य्यो॑ वा वा॒ सूर्य्य॑ः स॒ह। सूर्य्य॑ः स॒ह स॒ह सूर्य्य॒ᳬ सूर्य्य॑ः स॒ह। स॒हेति॑ स॒ह॥ ता नो॑ न॒स्तास्ता नो॑ हिन्वन्तु हिन्वन्तु न॒स्तास्ता नो॑ हिन्वन्तु[1]। नो॒ हि॒न्व॒न्तु॒ हि॒न्व॒न्तु॒ नो॒ नो॒ हि॒न्व॒न्त्व॒द्धु॒रम॑द्धुरᳬ हि॑न्वन्तु नो नो हिन्वन्त्वद्धु॒रम्। हि॒न्व॒न्त्व॒द्धु॒रम॑द्धुरᳬ हि॑न्वन्तु हिन्वन्त्वद्धु॒रम्। अ॒द्धु॒रमित्य॑द्धुरम्॥२२॥

हृ॒दे त्वा॑ त्वा हृ॒दे हृ॒दे त्वा॒ मन॑से॒ मन॑से त्वा हृ॒दे हृ॒दे त्वा॒ मन॑से। त्वा॒ मन॑से॒ मन॑से त्वा त्वा॒ मन॑से दि॒वे दि॒वे मन॑से त्वा त्वा॒ मन॑से दि॒वे। मन॑से दि॒वे दि॒वे मन॑से॒ मन॑से दि॒वे सूर्य्या॑य॒ सूर्य्या॑य दि॒वे मन॑से॒ मन॑से दि॒वे सूर्य्या॑य। दि॒वे सूर्य्या॑य॒ सूर्य्या॑य दि॒वे दि॒वे सूर्य्या॑य। सूर्य्या॒येति॒ सूर्य्या॑य॥ ऊ॒र्द्धमि॒मम॒मि॒ममू॒र्द्धमू॒र्द्धमि॒मम॑-द्धुरम॑द्धुरमि॒ममू॒र्द्धमू॒र्द्धमि॒मम॑द्धुरम्। इ॒मम॑द्धु॒रम॑द्धुरमि॒ममि॒मम॑द्धु॒रन्दि॒वि दि॒व्यद्धु॒र-मि॒ममि॒मम॑द्धुरन्दि॒वि। अ॒द्धु॒रन्दि॒वि दि॒व्य॒द्धु॒रम॑द्धु॒रन्दि॒वि दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॑ दि॒व्य॒द्धु॒-रम॑द्धुरन्दि॒वि दे॒वेषु॑। दि॒वि दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॑ दि॒वि दि॒वि दे॒वेषु॒ होत्रा॒ होत्रा॑ दे॒वेषु॑ दि॒वि दि॒वि दे॒वेषु॒ होत्रा॑ᳬ। दे॒वेषु॒ होत्रा॒ होत्रा॑ दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ होत्रा॑ यच्छ यच्छ॒ होत्रा॑ दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ होत्रा॑ यच्छ। होत्रा॑ यच्छ यच्छ॒ होत्रा॒ होत्रा॑ यच्छ। य॒च्छेति॑ यच्छ॥२३॥

सोम॑ राजन्राज॒न्त्सोम॒ सोम॑ राज॒न्विश्वा॒ विश्वा॑ राज॒न्त्सोम॒ सोम॑ राज॒-न्विश्वा॑ः। रा॒ज॒न्विश्वा॒ विश्वा॑ राजन्राज॒न्विश्वा॒स्त्वन्त्वँ॑विश्वा॑ राजन्राज॒न्विश्वा॒-

[1].वा.प्रा.४.३१. तथा ४.३२. में निर्दिष्ट न होने से यहाँ ताः पद ऊष्मान्त है।

स्त्वम्। व्विश्वास्त्वन्त्वँव्विश्वा व्विश्वास्त्वम्प्रजाः प्प्रजास्त्वँव्विश्वा व्विश्वास्त्वम्प्रजाः[1]। त्वम्प्रजाः प्प्रजास्त्वन्त्वम्प्रजाऽ उपावरोहोपावरोह प्प्रजास्त्वन्त्वम्प्रजाऽ उपावरोह। प्रजाऽ उपावरोहोपावरोह प्प्रजाः प्प्रजाऽ उपावरोह व्विश्वा व्विश्वाऽ उपावरोह प्प्रजाः प्प्रजाऽ उपावरोह व्विश्वाः। प्रजाऽ इति प्प्र जाः। उपावरोह व्विश्वा व्विश्वाऽ उपावरोहोपावरोह व्विश्वास्त्वान्त्वाँव्विश्वाऽ उपावरोहोपावरोह व्विश्वास्त्वाम्। उपावरोहेत्युप अवरोह। व्विश्वास्त्वान्त्वाँव्विश्वा व्विश्वास्त्वाम्प्रजाः प्प्रजास्त्वाँव्विश्वा व्विश्वास्त्वाम्प्रजाः। त्वाम्प्रजाः प्प्रजास्त्वान्त्वाम्प्रजाऽ उपावरोहन्तूपावरोहन्तु प्प्रजास्त्वान्त्वाम्प्रजाऽ उपावरोहन्तु। प्रजाऽ उपावरोहन्तूपावरोहन्तु प्प्रजाः प्प्रजाऽ उपावरोहन्तु। प्रजाऽ इति प्प्र जाः। उपावरोहन्त्वित्युप अवरोहन्तु॥ शृणोत्वग्निरग्निः शृणोतु शृणोत्वग्निः समिधा समिधाग्निः शृणोतु शृणोत्वग्निः समिधा। अग्निः समिधा समिधाग्निरग्निः समिधा हवꣳ हवꣳ समिधाग्निरग्निः समिधा हवम्। समिधा हवꣳ हवꣳ समिधा समिधा हवम्मे मे हवꣳ समिधा समिधा हवम्मे[2]। समिधेति सम् इधा। हवम्मे मे हवꣳ हवम्मे शृण्वन्तु शृण्वन्तु मे हवꣳ हवम्मे शृण्वन्तु। मे शृण्वन्तु शृण्वन्तु मे मे शृण्वन्त्वापऽ आपः शृण्वन्तु मे मे शृण्वन्त्वापः। शृण्वन्त्वापऽ आपः शृण्वन्तु शृण्वन्त्वापो धिषणा धिषणाऽ आपः शृण्वन्तु शृण्वन्त्वापो धिषणाः। आपो धिषणा धिषणाऽ आपऽ आपो धिषणाश्च च धिषणाऽ आपऽ आपो धिषणाश्च। धिषणाश्च च धिषणा धिषणाश्च देवीर्देवीश्च धिषणा धिषणाश्च देवीः। च देवीर्देवीश्च च देवीः। देवीरिति देवीः॥ श्रोता ग्ग्रावाणो ग्ग्रावाणः श्रोत श्श्रोता ग्ग्रावाणो व्विदुषो व्विदुषो ग्ग्रावाणः श्रोत श्श्रोता

[1]. वा. प्रा. ४.२७. के अनुसार यहाँ विश्वाः पद ऊष्मान्त है।

[2]. नो नौ मे मदर्थे त्रिष्ठ्येकेषु(वा.प्रा.२.३) इस सूत्र के अनुसार अस्मदर्थवाचक मे पद यहाँ अनुदात्त है।

ग्ग्रावाणो ब्वि॒दुष॑÷। ग्रा॒वा॒णो॒ ब्वि॒दुषो॑ ब्वि॒दुषो॑ ग्ग्रावाणो ग्ग्रावाणो ब्वि॒दुषो॒ न न ब्वि॒दु-
षो॑ ग्ग्रावाणो ग्ग्रावाणो ब्वि॒दुषो॒ न। ब्वि॒दुषो॒ न न ब्वि॒दुषो॑ ब्वि॒दुषो॒ न य॒ज्ज्ञँ॑य्य॒ज्ज्ञन्न
ब्वि॒दुषो॑ ब्वि॒दुषो॒ न य॒ज्ज्ञम्। न य॒ज्ज्ञँ॑य्य॒ज्ज्ञन्न न य॒ज्ज्ञꣳ शृ॒णोतु॑ शृ॒णोतु॑ य॒ज्ज्ञन्न
न य॒ज्ज्ञꣳ शृ॒णोतु॑[1]। य॒ज्ज्ञꣳ शृ॒णोतु॑ शृ॒णोतु॑ य॒ज्ज्ञँ॑य्य॒ज्ज्ञꣳ शृ॒णोतु॑ दे॒वो दे॒वः
शृ॒णोतु॑ य॒ज्ज्ञँ॑य्य॒ज्ज्ञꣳ शृ॒णोतु॑ दे॒वः। शृ॒णोतु॑ दे॒वो दे॒वः शृ॒णोतु॑ शृ॒णोतु॑ दे॒वः
स॑वि॒ता स॑वि॒ता दे॒वः शृ॒णोतु॑ शृ॒णोतु॑ दे॒वः स॑वि॒ता। दे॒वः स॑वि॒ता स॑वि॒ता दे॒वो दे॒वः
स॑वि॒ता ह॒व॒ꣳ हव॑ꣳ सवि॒ता दे॒वो दे॒वः स॑वि॒ता हव॑म्। स॒वि॒ता ह॒व॒ꣳ हव॑ꣳ सवि॒ता
स॑वि॒ता हव॑म्मे मे॒ हव॑ꣳ सवि॒ता स॑वि॒ता हव॑म्मे। हव॑म्मे मे॒ ह॒व॒ꣳ हव॑म्मे॒ स्वाहा॒
स्वाहा॑ मे॒ ह॒व॒ꣳ हव॑म्मे॒ स्वाहा॑। मे॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ मे मे॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥
२४॥

देवी॑रापऽ आपो॒ देवी॒र्देवी॑रापोऽ अपामपामापो॒ देवी॒र्देवी॑रापोऽ अपाम्[2]।
आ॒पो॒ऽ अ॒पा॒म॒पा॒मा॒प॒ऽ आ॒पो॒ऽ अ॒पा॒न्न॒पा॒न्न॒पा॒द॒पा॒मा॒प॒ऽ आ॒पो॒ऽ अ॒पा॒न्न॒पा॒त्।
अ॒पा॒न्न॒पा॒न्न॒पा॒द॒पा॒म॒पा॒न्न॒पा॒द्यो यो न॑पादपामपान्नपा॒द्यः। न॒पा॒द्यो यो न॑पान्नपा॒द्यो
वो॑ वो॒ यो न॑पान्नपा॒द्यो व॑÷। यो वो॑ वो॒ यो यो व॑ऽ ऊ॒र्म्मिरू॒र्म्मिर्व्वो॑ यो यो व॑ऽ
ऊ॒र्म्मिः। ब्व॒ऽ ऊ॒र्म्मिरू॒र्म्मिर्व्वो॑ वऽ ऊ॒र्म्मिर्ह॑वि॒ष्ष्यो॒ ह॒वि॒ष्ष्य॒ऽ ऊ॒र्म्मिर्व्वो॑ वऽ
ऊ॒र्म्मिर्ह॑वि॒ष्ष्य॒÷। ऊ॒र्म्मिर्ह॑वि॒ष्ष्यो॒ ह॒वि॒ष्ष्य॒ऽ ऊ॒र्म्मिरू॒र्म्मिर्ह॑वि॒ष्ष्य॒ऽ इ॒न्द्रि॒या-
वा॑निन्द्रि॒यवा॑न्हवि॒ष्ष्य॒ऽ ऊ॒र्म्मिरू॒र्म्मिर्ह॑वि॒ष्ष्य॒ऽ इ॒न्द्रि॒यावा॑न्। ह॒वि॒ष्ष्य॒ऽ
इ॒न्द्रि॒यावा॑निन्द्रि॒यवा॑न्हवि॒ष्ष्यो॒ ह॒वि॒ष्ष्य॒ऽ इ॒न्द्रि॒यावा॑न्म॒दिन्त॑मो म॒दिन्त॑मऽ
इ॒न्द्रि॒यवा॑न्हवि॒ष्ष्यो॒ ह॒वि॒ष्ष्य॒ऽ इ॒न्द्रि॒यावा॑न्म॒दिन्त॑मः। इ॒न्द्रि॒यावा॑न्म॒दिन्त॑मो
म॒दिन्त॑मऽ इ॒न्द्रि॒यवा॑निन्द्रि॒यावा॑न्म॒दिन्त॑मः। इ॒न्द्रि॒यवा॒निती॑न्द्रि॒य ब्वा॑न्।

---

1. अनुस्वारस्योपरिष्टात्संवृतं यत्र दृश्यते। दीर्घं तं तु विजानीयाच्छ्रोता ग्रावाणकं यथा॥ - या. शि. १४०

2. वा. प्रा. ४.८५. के अनुसार आपो अपाम् यहाँ ओकार प्रकृति भाव से रहता है।

मदिन्तमऽ इति मदिन् तमः ॥ तन्देवेभ्यो देवेभ्यस्तत्तन्तन्देवेभ्यो देवत्रा देवत्रा देवेभ्यस्तत्तन्तन्देवेभ्यो देवत्रा। देवेभ्यो देवत्रा देवत्रा देवेभ्यो देवेभ्यो देवत्रा दत्त दत्त देवत्रा देवेभ्यो देवेभ्यो देवत्रा दत्त। देवत्रा दत्त दत्त देवत्रा देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यः शुक्रपेभ्यो दत्त देवत्रा देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यः। देवत्रेति देव त्रा[1]। दत्त शुक्रपेभ्यः शुक्रपेभ्यो दत्त दत्त शुक्रपेभ्यो येषाँय्येषाँ शुक्रपेभ्यो दत्त दत्त शुक्रपेभ्यो येषाम्। शुक्रपेभ्यो येषाँय्येषाँ शुक्रपेभ्यः शुक्रपेभ्यो येषाम्भागो भागो येषाँ शुक्रपेभ्यः शुक्रपेभ्यो येषाम्भागः। शुक्रपेभ्यऽ इति शुक्र पेभ्यः। येषाम्भागो भागो येषाँय्येषाम्भाग स्त्थ स्त्थ भागो येषाँय्येषाम्भाग स्त्थ। भाग स्त्थ स्त्थ भागो भाग स्त्थ स्वाहा स्वाहा स्त्थ भागो भाग स्त्थ स्वाहा। स्थ स्वाहा स्वाहा स्त्थ स्त्थ स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२५॥

कार्षिरस्यसि कार्षिः कार्षिरसि समुद्रस्य समुद्रस्यासि कार्षिः कार्षिरसि समुद्रस्य। असि समुद्रस्य समुद्रस्यास्यसि समुद्रस्य त्वा त्वा समुद्रस्यास्यसि समुद्रस्य त्वा। समुद्रस्य त्वा त्वा समुद्रस्य समुद्रस्य त्वाक्षित्त्याऽ अक्षित्त्यै त्वा समुद्रस्य समुद्रस्य त्वाक्षित्त्यै। त्वाक्षित्त्याऽ अक्षित्त्यै त्वा त्वाक्षित्त्याऽ उदुदक्षित्त्यै त्वा त्वाक्षित्त्याऽ उत्। अक्षित्त्याऽ उदुदक्षित्त्याऽ अक्षित्त्याऽ उन्नयामि नयाम्म्युदक्षित्त्याऽ अक्षित्त्याऽ उन्नयामि। उन्नयामि नयाम्म्युदुन्नयामि। नयामीति नयामि॥ समापऽ आपः सः समापोऽ अद्भिरद्भिरापः सः समापोऽ अद्भिः। आपोऽ अद्भिरद्भिरापऽ आपोऽ अद्भिरग्ग्मताग्ग्मताद्भिरापऽ आपोऽ अद्भिरग्ग्मत। अद्भिरग्ग्मताग्ग्मताद्भिरद्भिरग्ग्मत सः समग्ग्मताद्भिरद्भिरग्ग्मत सम्। अद्भिरित्त्यत् भिः। अग्ग्मत सः समग्ग्मताग्ग्मत समोषधीभिरोषधीभिः समग्ग्मताग्ग्मत समोषधीभिः। समोषधीभिरोषधीभिः सः समोषधीभिरोषधी-

[1]. वा.प्रा.५.९. के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

रोषधीरोषधीभिः सह समोषधीभिरोषधीः। ओषधीभिरोषधीरोषधीरोषधीभिरोषधीभिरोषधीः। ओषधीरित्योषधीः॥२६॥

यमग्नेऽग्ने यँय्यमग्ने पृत्सु पृत्स्वग्ने यँय्यमग्ने पृत्सु। अग्ने पृत्सु पृत्स्वग्नेऽग्ने पृत्सु मर्त्यम्मर्त्यम्पृत्स्वग्नेऽग्ने पृत्सु मर्त्यम्। पृत्सु मर्त्यम्मर्त्यम्पृत्सु पृत्सु मर्त्यमवाऽ अवा मर्त्यम्पृत्सु पृत्सु मर्त्यमवाः। पृत्स्विति पृत् सु[1]। मर्त्यमवाऽ अवा मर्त्यम्मर्त्यमवा व्वाजेषु व्वाजेष्ववा मर्त्यम्मर्त्यमवा व्वाजेषु। अवा व्वाजेषु व्वाजेष्ववाऽ अवा व्वाजेषु यँय्यँव्वाजेष्ववाऽ अवा व्वाजेषु यम्। व्वाजेषु यँय्यँव्वाजेषु व्वाजेषु यञ्जुना जुना यँव्वाजेषु व्वाजेषु यञ्जुनाः। यञ्जुना जुना यँय्यञ्जुनाः। जुनाऽ इति जुनाः॥ स यन्ता यन्ता स स यन्ता शश्वतीः शश्वतीर्य्यन्ता स स यन्ता शश्वतीः। यन्ता शश्वतीः शश्वतीर्य्यन्ता यन्ता शश्वतीरिषऽ इषः शश्वतीर्य्यन्ता यन्ता शश्वतीरिषः। शश्वतीरिषऽ इषः शश्वतीः शश्वतीरिषः स्वाहा स्वाहेषः शश्वतीः शश्वतीरिषः स्वाहा। इषः स्वाहा स्वाहेषऽ इषः स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२७॥

रावास्यसि रावा रावासि गभीरङ्गभीरमसि रावा रावासि गभीरम्। असि गभीरङ्गभीरमस्यसि गभीरमिममिमङ्गभीरमस्यसि गभीरमिमम्। गभीरमिममिमङ्गभीरङ्गभीरमिममध्वरमध्वरमिमङ्गभीरङ्गभीरमिममध्वरम्। इममध्वरमध्वरमिममिममध्वरङ्कृधि कृध्यध्वरमिममिममध्वरङ्कृधि। अध्वरङ्कृधि कृध्यध्वरमध्वरङ्कृधीन्द्रायेन्द्राय कृध्यध्वरमध्वरङ्कृधीन्द्राय। कृधीन्द्रायेन्द्राय कृधि कृधीन्द्राय सुषूतमः सुसूतममिन्द्राय कृधि कृधीन्द्राय सुषूतमम्। इन्द्राय सुषूतमः सुसूतममिन्द्रायेन्द्राय सुषूतमम्। सुसूतममिति सु सूतमम्[2]॥ उत्तमेन पविना पविनोत्तमेनोत्तमेन पविनोर्ज्जस्वन्तमूर्ज्जस्वन्तम्पविनोत्तमेनोत्तमेन पविनोर्ज्जस्वन्तम्। उत्तमे-

[1]. स्विति चानतौ(वा.प्रा.५.१४) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

नेत्युंत् तमेनं। पविनोर्ज्जस्वन्तमूर्ज्जस्वन्तम्पविना पविनोर्ज्जस्वन्तम्मधुमन्त- म्मधुमन्तमूर्ज्जस्वन्तम्पविना पविनोर्ज्जस्वन्तम्मधुमन्तम्। ऊर्ज्जस्वन्तम्मधुम- न्तम्मधुमन्तमूर्ज्जस्वन्तमूर्ज्जस्वन्तम्मधुमन्तम्पयस्वन्तम्पयस्वन्तम्मधुमन्तमू- र्ज्जस्वन्तमूर्ज्जस्वन्तम्मधुमन्तम्पयस्वन्तम्। मधुमन्तम्पयस्वन्तम्पयस्वन्तम्म- धुमन्तम्मधुमन्तम्पयस्वन्तन्निग्ग्राभ्या निग्ग्राभ्याः पयस्वन्तम्मधुमन्तम्मधु- मन्तम्पयस्वन्तन्निग्ग्राभ्याः। मधुमन्तमिति मधु मन्तम्। पयस्वन्तन्निग्ग्रा- भ्या निग्ग्राभ्याः पयस्वन्तम्पयस्वन्तन्निग्ग्राभ्या स्त्थ स्त्थ निग्ग्राभ्याः पयस्वन्तम्पयस्वन्तन्निग्ग्राभ्या स्त्थ[1]। निग्ग्राभ्या स्त्थ स्त्थ निग्ग्राभ्या निग्ग्राभ्या स्त्थ देवश्श्रुतो देवश्श्रुत स्त्थ निग्ग्राभ्या निग्ग्राभ्या स्त्थ देवश्श्रुतः। निग्ग्राभ्याऽ इति नि ग्राभ्याः। स्थ देवश्श्रुतो देवश्श्रुत स्त्थ स्त्थ देवश्श्रुतस्तर्प्प- यत तर्प्पयत देवश्श्रुत स्त्थ स्त्थ देवश्श्रुतस्तर्प्पयत। देवश्श्रुतस्तर्प्पयत तर्प्पयत देवश्श्रुतो देवश्श्रुतस्तर्प्पयत मा मा तर्प्पयत देवश्श्रुतो देवश्श्रुतस्तर्प्पयत मा। देवश्श्रुतऽ इति देव श्रुतः। तर्प्पयत मा मा तर्प्पयत तर्प्पयत मा मनो मनो मा तर्प्पयत तर्प्पयत मा मनः। मा मनो मनो मा मा मनो मे मे मनो मा मा मनो मे॥२८॥

मनो मे मे मनो मनो मे तर्प्पयत तर्प्पयत मे मनो मनो मे तर्प्पयत। मे तर्प्पयत तर्प्पयत मे मे तर्प्पयत व्वाचँव्वाचन्तर्प्पयत मे मे तर्प्पयत व्वाचम्। तर्प्पयत व्वाचँव्वाचन्तर्प्पयत तर्प्पयत व्वाचम्प्राणम्प्राणँव्वाचन्तर्प्पयत तर्प्पयत व्वाचम्प्राणम्। व्वाचम्प्राणम्प्राणँव्वाचँव्वाचम्प्राणञ्चक्षुश्चक्षुः प्प्राणँव्वाचँव्वाचम्प्रा-

[2]. वा. प्रा. ५.३. के अनुसार यह पद पूर्ववर्ती पद (सु) के सहित अवगृहीत होता है। वा.प्रा.३.५६. के अनुसार सुसूतमम् पद में द्वितीय सकार षकार होता है।

[1]. निग्राभ्याः स्थ यहाँ लुङ् मुदि जित्परे(वा.प्रा.३.१२) इस सूत्र से विसर्जनीय का लोप होता है।

णञ्चक्षुंः[1]। प्राणञ्चक्षुश्चक्षुंः प्प्राणम्प्राणञ्चक्षुः श्रोत्रꣳ श्रोत्रञ्चक्षुंः प्प्राण-म्प्राणञ्चक्षुः श्रोत्रम्। चक्षुः श्रोत्रꣳ श्रोत्रञ्चक्षुश्चक्षुः श्रोत्रमात्मानमा-त्मानꣳ श्रोत्रञ्चक्षुश्चक्षुः श्रोत्रमात्मानम्। श्रोत्रमात्मानमात्मानꣳ श्रोत्रꣳ श्रोत्रमात्मानम्प्रजाम्प्रजामात्मानꣳ श्रोत्रꣳ श्रोत्रमात्मानम्प्रजाम्। आत्मानं-म्प्रजाम्प्रजामात्मानमात्मानम्प्रजाम्पशून्पशून्प्रजामात्मानमात्मानम्प्रजाम्प-शून्। प्रजाम्पशून्पशून्प्रजाम्प्रजाम्पशून्गणान्गणान्पशून्प्रजाम्प्रजाम्पशून्ग-णान्। प्रजामितिं प्प्र जाम्। पशून्गणान्गणान्पशून्पशून्गणान्गणा गणा गणान्पशून्पशून्गणान्गणाः। गणान्गणा गणा गणान्गणान्गणा में मे गणा गणान्गणान्गणा में। गणा में मे गणा गणा मे मा मा में गणा गणा मे मा। मे मा मा में मे मा व्वि वि मा में मे मा व्वि। मा व्वि वि मा मा व्वि तृंषँस्तृषन्व्वि मा मा व्वि तृंषन्। व्वि तृंषँस्तृषन्व्वि वि तृंषन्। तृषन्निति तृषन्॥२९॥

इन्द्राय त्वा त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा व्वसुंमते व्वसुंमते त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा व्वसुंमते। त्वा व्वसुंमते व्वसुंमते त्वा त्वा व्वसुंमते रुद्रवंते रुद्रवंते व्वसुंमते त्वा त्वा व्वसुंमते रुद्रवंते। व्वसुंमते रुद्रवंते रुद्रवंते व्वसुंमते व्वसुंमते रुद्रवंतऽ आदित्यवंतऽ आदित्य-वंते रुद्रवंते व्वसुंमते व्वसुंमते रुद्रवंतऽ आदित्यवंते। व्वसुंमतऽ इति वसुं मते। रुद्र-वंतऽ आदित्यवंतऽ आदित्यवंते रुद्रवंते रुद्रवंतऽ आदित्यवंतेभिमातिग्घ्नेभिमाति-ग्घ्नऽ आदित्यवंते रुद्रवंते रुद्रवंतऽ आदित्यवंतेभिमातिग्घ्ने। रुद्रवंतऽ इतिं रुद्र व्वंते। आदित्यवंतेभिमातिग्घ्नेभिमातिग्घ्नऽ आदित्यवंतऽ आदित्यवंतेभिमातिग्घ्ने। आदित्यवंतऽ इत्यादित्य व्वंते। अभिमातिग्घ्नऽ इत्यंभिमाति घ्ने॥३०॥

---

[1]. उकार में विसर्ग आने पर हुकार के सदृश उच्चारण करना चाहिये। आखुस्ते पशुरित्यादौ ह (हु?) कारसदृशो भवेत्। - ल. मा. शि. १९.

यत्तें ते यद्यत्तें सोम सोम ते यद्यत्तें सोम[1]। ते सोम सोम ते ते सोम दिवि दिवि सोंम ते ते सोम दिवि। सोम दिवि दिवि सोंम सोम दिवि ज्योतिर्ज्योतिर्दिवि सोंम सोम दिवि ज्योतिः। दिवि ज्योतिर्ज्योतिर्दिवि दिवि ज्योतिः पृथिव्याम्पृथिव्याञ्ज्योतिर्दिवि दिवि ज्योतिः पृथिव्याम्। ज्योतिः पृथिव्याम्पृथिव्याञ्ज्योतिर्ज्योतिः पृथिव्यामुराऽ उरौ पृथिव्याञ्ज्योतिर्ज्योतिः पृथिव्यामुरौ। पृथिव्यामुराऽ उरौ पृथिव्याम्पृथिव्यामुरावन्तरिंक्षेन्तरिंक्षऽ उरौ पृथिव्याम्पृथिव्यामुरावन्तरिंक्षे[2]। उरावन्तरिंक्षेन्तरिंक्षऽ उराऽ उरावन्तरिंक्षे। अन्तरिंक्षऽ इत्यन्तरिंक्षे॥ तेनास्म्माऽ अस्म्मै तेन तेनास्म्मै यजंमानाय यजंमानायास्म्मै तेन तेनास्म्मै यजंमानाय। अस्म्मै यजंमानाय यजंमानायास्म्माऽ अस्म्मै यजंमानायोरूरु यजंमानायास्म्माऽ अस्म्मै यजंमानायोरु। यजंमानायोरूरु यजंमानाय यजंमानायोरु राये रायऽ उरु यजंमानाय यजंमानायोरु राये। उरु राये रायऽ उरूरु राये कृंधि कृधि रायऽ उरूरु राये कृंधि। राये कृंधि कृधि राये राये कृद्ध्यद्ध्यधिं कृधि राये राये कृद्ध्यधिं। कृद्ध्यद्ध्यधिं कृधि कृद्ध्यधिं दात्रे दात्रेधिं कृधि कृद्ध्यधिं दात्रे[3]। अधिं दात्रे दात्रेद्ध्यधिं दात्रे ब्वोंचो ब्वोचो दात्रेद्ध्यधिं दात्रे ब्वोंचः। दात्रे ब्वोंचो ब्वोचो दात्रे दात्रे ब्वोंचः। ब्वोचऽ इतिं वोचः॥३१॥

श्वात्रा स्त्थं स्त्थ श्वात्राः श्वात्रा स्त्थं ब्वृत्रतुरों ब्वृत्रतुरं स्त्थ श्वात्राः श्वात्रा स्त्थं ब्वृत्रतुरंः। स्त्थ ब्वृत्रतुरों ब्वृत्रतुरं स्त्थ स्त्थ ब्वृत्रतुरो राधोंगूर्त्ता राधोंगूर्त्ता ब्वृत्रतुरं स्त्थ स्त्थ ब्वृत्रतुरो राधोंगूर्त्ताः। ब्वृत्रतुरो राधोंगूर्त्ता राधोंगूर्त्ता ब्वृत्रतुरों ब्वृत्रतुरो राधोंगूर्त्ताऽ अमृतंस्यामृतंस्य राधोंगूर्त्ता ब्वृत्रतुरों ब्वृत्रतुरो राधोंगूर्त्ताऽ अमृतंस्य। ब्वृत्रतुरऽ

---

1. वा.प्रा.२.५. के अनुसार यहां ते पद अनुदात्त है।

2. उरौ अन्तरिक्षे यहाँ न वकारस्यासस्थान एकेषाम्(वा.प्रा.४.१२८) के अनुसार वकार का लोप न होने से उरावन्तरिक्षे होगा।

3. वा. प्रा. ६.२६. के अनसार दात्रे पद में दो स्पर्श हैं।

इतिं वृत्र तुरंः। राधोंगूर्त्ताऽ अमृतंस्यामृतंस्य राधोंगूर्त्ता राधोंगूर्त्ताऽ अमृतंस्य पत्नीः पत्नीरमृतंस्य राधोंगूर्त्ता राधोंगूर्त्ताऽ अमृतंस्य पत्नीः। राधोंगूर्त्ताऽ इति राधंः गूर्त्ताः। अमृतंस्य पत्नीः पत्नीरमृतंस्यामृतंस्य पत्नीः। पत्नीरिति पत्नीः॥ ता देंवीर्देवीस्तास्ता देंवीर्देवत्रा देंवत्रा देंवीस्तास्ता देंवीर्देवत्रा। देवीर्देवत्रा देंवत्रा देंवीर्देवीर्देवत्रेममिमन्देंवत्रा देंवीर्देवीर्देवत्रेमम्। देवत्रेममिमन्देंवत्रा देंवत्रेमँ-य्यज्ञँय्यज्ञमिमन्देंवत्रा देंवत्रेमँय्यज्ञम्। देवत्रेतिं देव त्रा[1]। इमँय्यज्ञँय्य-ज्ञमिममिमँय्यज्ञन्नंयत नयत यज्ञमिममिमँय्यज्ञन्नंयत। यज्ञन्नंयत नयत यज्ञँय्यज्ञन्नंयतोपंहूताऽ उपंहूता नयत यज्ञँय्यज्ञन्नंयतोपंहूताः[2]। नयतो-पंहूताऽ उपंहूता नयत नयतोपंहूताः सोमंस्य सोमस्योपंहूता नयत नयतोपंहूताः सोमंस्य। उपंहूताः सोमंस्य सोमस्योपंहूताऽ उपंहूताः सोमंस्य पिबत पिबत सोमस्योपंहूताऽ उपंहूताः सोमंस्य पिबत। उपंहूताऽ इत्युपं हूताः। सोमंस्य पिबत पिबत सोमंस्य सोमंस्य पिबत। पिबतेतिं पिबत॥३२॥

ऊर्ज्जंन्धत्स्व धत्स्वोर्ज्जमूर्ज्जंन्धत्स्व धिषंणे धिषंणे धत्स्वोर्ज्जमूर्ज्जंन्धत्स्व धिषंणे। धत्स्व धिषंणे धिषंणे धत्स्व धत्स्व धिषंणे व्वीड्वी व्वीड्वी धिषंणे धत्स्व धत्स्व धिषंणे व्वीड्वी। धिषंणे व्वीड्वी व्वीड्वी धिषंणे धिषंणे व्वीड्वी सती सती व्वीड्वी धिषंणे धिषंणे व्वीड्वी सती। धिषंणेऽ इति धिषंणे। व्वीड्वी सती सती व्वीड्वी व्वीड्वी सती व्वींडयेथाँव्वीडयेथाँ सती व्वीड्वी व्वीड्वी सती व्वींडयेथाम्। व्वीड्वीऽ इतिं वीड्वी। सती व्वींडयेथाँव्वीडयेथाँ सती सती व्वींडयेथामूर्ज्जमूर्ज्जंव्वीडयेथाँ सती सती व्वींडयेथामूर्ज्जंम्। सतीऽ इतिं सती। व्वीडयेथामूर्ज्जमूर्ज्जंव्वीडयेथाँव्वीडयेथामूर्ज्जं-न्दधाथान्दधाथामूर्ज्जंव्वीडयेथाँव्वीडयेथामूर्ज्जंन्दधाथाम्। ऊर्ज्जंन्दधाथान्दधाथामू-

---

[1]. शस्त्वत्रातादिषु च (वा. प्रा. ५.९) इस सूत्र के अनुसार त्रा (तद्धित प्रत्यय) बाद में होने पर पृथक्करण होता है।

[2]. नयत उपहूताः यहाँ उवर्ण ओकारम्(वा.प्रा.४.५५) के अनुसार उकार पूर्ववर्ती वर्ण के साथ ओकार होता है।

र्ज्जमूर्ज्जन्दधाथाम्। दधाथामिति दधाथाम्॥ पाप्प्मा हतो हतः पाप्प्मा पाप्प्मा हतो न न हतः पाप्प्मा पाप्प्मा हतो न। हतो न न हतो हतो न सोमः सोमो न हतो हतो न सोमः। न सोमः सोमो न न सोमः। सोम इति सोमः॥३३॥

प्रागपागपाक् प्राक् प्रागपागुदगुदगपाक् प्राक् प्रागपागुदक्[1]। अपागुदगुदगपागपागुदगधरागधरागुदगपागपागुदगधराक्। उदगधरागधरागुदगुदगधराक् सर्व्वतः सर्व्वतोधरागुदगुदगधराक् सर्व्वतः। अधराक् सर्व्वतः सर्व्वतोधरागधराक् सर्व्वतस्त्वा त्वा सर्व्वतोधरागधराक् सर्व्वतस्त्वा। सर्व्वतस्त्वा त्वा सर्व्वतः सर्व्वतस्त्वा दिशो दिशस्त्वा सर्व्वतः सर्व्वतस्त्वा दिशः। त्वा दिशो दिशस्त्वा त्वा दिश आ धावन्तु धावन्त्वा दिशस्त्वा त्वा दिश आ धावन्तु। दिश आ धावन्तु धावन्त्वा दिशो दिश आ धावन्तु। आ धावन्तु। धावन्त्विति धावन्तु॥ अम्ब निर्न्निरम्बाम्ब निष्प्पर पर निरम्बाम्ब निष्प्पर[2]। निष्प्पर पर निर्न्निष्प्पर सः सम्पर निर्न्निष्प्पर सम्। पर सः सम्पर पर समरीररीः सम्पर पर समरीः। समरीररीः सः समरीर्व्विदाँव्विदामरीः सः समरीर्व्विदाम्। अरीर्व्विदाँव्विदामरीररीर्व्विदाम्। व्विदामिति विदाम्॥३४॥

त्वमङ्गाङ्ग त्वन्त्वमङ्ग प्प्र प्प्राङ्ग त्वन्त्वमङ्ग प्प्र। अङ्ग प्प्र प्प्राङ्गाङ्ग प्प्र शंसिषः शंसिषः प्प्राङ्गाङ्ग प्प्र शंसिषः। प्र शंसिषः शंसिषः प्प्र प्प्र शंसिषो देवो देवः शंसिषः प्प्र प्प्र शंसिषो देवः। शंसिषो देवो देवः शंसिषः शंसिषो देवः शविष्ठ शविष्ठ देवः शंसिषः शंसिषो देवः शविष्ठ। देवः शविष्ठ शविष्ठ देवो देवः शविष्ठ मर्त्त्यम्मर्त्त्यं शविष्ठ देवो देवः शविष्ठ मर्त्त्यम्। शविष्ठ मर्त्त्यम्मर्त्त्यं शविष्ठ शविष्ठ मर्त्त्यम्। मर्त्त्यमिति मर्त्त्यम्॥ न

---

1. प्राक् अपाक् तथा अपाक् उदक् यहाँ स्पर्शोऽपञ्चमः स्वरघौ तृतीयम्(वा.प्रा.४.१२०) इस सूत्र से ककार गकार होता है।

2. आविर्निरिड इडाया वसतिर्वरिवः (वा. प्रा. ३.२३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ निः का विसर्जनीय पकार हो जाता है।

त्वत्त्वन्न न त्वदुन्न्योऽन्न्यस्त्वन्न न त्वदुन्न्यः। त्वदुन्न्योऽन्न्यस्त्वत्त्वदुन्न्यो मंघवन्नमघ-वन्नुन्न्यस्त्वत्त्वदुन्न्यो मंघवन्। अुन्न्यो मंघवन्नमघवन्नुन्न्योऽन्न्यो मंघवन्नस्त्यस्ति मघवन्नुन्न्योऽन्न्यो मंघवन्नस्ति। मुघुवुन्नुस्त्युस्ति मुघुवुन्नुमुघुवुन्नुस्ति मुर्ङ्डिता मंर्ङ्डितास्तिं मघवन्नमघवन्नस्ति मर्ङ्डिता। मुघुवुन्निति मघ वन्। अुस्ति मुर्ङ्डिता मंर्ङ्डितास्त्यंस्ति मर्ङ्डितेन्द्रेन्द्रं मर्ङ्डितास्त्यंस्ति मर्ङ्डितेन्द्रं। मुर्ङ्डितेन्द्रेन्द्रं मर्ङ्डिता मंर्ङ्डितेन्द्र ब्रवींमि ब्रवीमीन्द्रं मर्ङ्डिता मंर्ङ्डितेन्द्र ब्रवींमि। इन्द्र ब्रवींमि ब्रवीमीन्द्रेन्द्र ब्रवींमि ते ते ब्रवीमीन्द्रेन्द्र ब्रवींमि ते। ब्रवींमि ते ते ब्रवींमि ब्रवींमि ते ब्रचो ब्रचंस्ते ब्रवींमि ब्रवींमि ते ब्रचंः। ते ब्रचो ब्रचंस्ते ते ब्रचंः। ब्रचऽ इति वचंः[1] ॥३५॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे षष्ठोध्यायः॥

[1]. अवसाने च (वा. प्रा. ४.१९६) अवसान (विराम) में स्थित पद का स्थितोपस्थित पाठ किया जाता है।

॥सप्तमोध्यायः॥

हरिः॑ॐ॥ व्वाचस्प्पत॑ये पत॑ये व्वाचो व्वाचस्प्पत॑ये पवस्व पवस्व पत॑ये व्वाचो व्वाचस्प्पत॑ये पवस्व[1]। पत॑ये पवस्व पवस्व पत॑ये पत॑ये पवस्व व्वृष्ण्णो व्वृष्ण्णं॑ः पवस्व पत॑ये पत॑ये पवस्व व्वृष्ण्णं॑ः। पवस्व व्वृष्ण्णो व्वृष्ण्णं॑ः पवस्व पवस्व व्वृष्ण्णोऽ अꣳशुब्भ्यामꣳशुब्भ्याँव्वृष्ण्णं॑ः पवस्व पवस्व व्वृष्ण्णोऽ अꣳशुब्भ्याम्। व्वृष्ण्णोऽ अꣳशुब्भ्यामꣳशुब्भ्याँव्वृष्ण्णो व्वृष्ण्णोऽ अꣳशुब्भ्याङ्ग-भ॑स्त्तिपूतो गभ॑स्त्तिपूतोꣳशुब्भ्याँव्वृष्ण्णो व्वृष्ण्णोऽ अꣳशुब्भ्याङ्गभ॑स्त्तिपूतः। अꣳशुब्भ्याङ्गभ॑स्त्तिपूतो गभ॑स्त्तिपूतोꣳशुब्भ्यामꣳशुब्भ्याङ्गभ॑स्त्तिपूतः। अꣳशु-ब्भ्यामित्यꣳशु भ्याम्। गभ॑स्त्तिपूतऽ इति गभ॑स्त्ति पूतः॥ देवो देवेब्भ्यो॑ देवेब्भ्यो॑ देवो देवो देवेब्भ्य॑ः पवस्व पवस्व देवेब्भ्यो॑ देवो देवो देवेब्भ्य॑ः पवस्व। देवेब्भ्य॑ः पवस्व पवस्व देवेब्भ्यो॑ देवेब्भ्य॑ः पवस्व य्येषाँꣳय्येषा॑म्पवस्व देवेब्भ्यो॑ देवेब्भ्य॑ः पवस्व य्येषा॑म्। पवस्व य्येषाँꣳय्येषा॑म्पवस्व पवस्व य्येषा॑म्भागो भागो य्येषा॑म्पवस्व पवस्व य्येषा॑म्भागः। य्येषा॑म्भागो भागो य्येषाँꣳय्येषा॑म्भागोस्यसिं भागो य्येषाँꣳय्येषा॑म्भागोसिं[2]। भागोस्यसिं भागो भागोसिं। असीत्त्यसिं॥१॥

मधु॑मतीर्न्नो नो मधु॑मतीर्म्मधु॑मतीर्न्नऽ इषऽ इषो॑ नो मधु॑मतीर्म्मधु॑मतीर्न्नऽ इषं॑ः। मधु॑मतीरिति मधु॑ मतीः। नऽ इषऽ इषो॑ नो नऽ इषं॑स्कृधि कृधीषो॑ नो नऽ इषं॑स्कृधि। इषं॑स्कृधि कृधीषऽ इषं॑स्कृधि य्यद्यत्कृधीषऽ इषं॑स्कृधि य्यत्। कृधि य्यद्यत्कृ॑धि कृधि य्यत्ते॑ ते य्यत्कृ॑धि कृधि य्यत्ते॑। य्यत्ते॑ ते य्यद्यत्ते॑ सोम सोम ते य्यद्यत्ते॑ सोम। ते सोम सोम ते ते सोमादा॑ब्भ्यमदा॑ब्भ्यꣳ सोम ते ते सोमादा॑ब्भ्यम्। सोमादा॑ब्भ्यमदा॑ब्भ्यꣳ सोम सोमादा॑ब्भ्यन्नाम नामादा॑ब्भ्यꣳ सोम सोमादा॑-

---

[1]. पत्यौ तालव्यस्वरोदये(वा.प्रा.३.३५) तथा पदे च(वा.प्रा.३.३६) के अनुसार वाचः पतये यहाँ विसर्जनीय सकार होता है।

[2]. वा.प्रा.२.४०. के अनुसार यहाँ मधुमतीः पद बाद में होने से असि पद आद्युदात्त है।

ब्भ्यु॒न्नाम॑। अदा॑ब्भ्यु॒न्नाम॒ नामादा॑ब्भ्यु॒मदा॑ब्भ्यु॒न्नाम॒ जागृ॑वि॒ जागृ॑वि॒ नामादा॑-ब्भ्यु॒मदा॑ब्भ्यु॒न्नाम॒ जागृ॑वि। नाम॒ जागृ॑वि॒ जागृ॑वि॒ नाम॒ नाम॒ जागृ॑वि॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ जागृ॑वि॒ नाम॒ नाम॒ जागृ॑वि॒ तस्म्मै॑। जागृ॑वि॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ जागृ॑वि॒ जागृ॑वि॒ तस्म्मै॑ ते ते॒ तस्म्मै॒ जागृ॑वि॒ जागृ॑वि॒ तस्म्मै॑ ते। तस्म्मै॑ ते ते॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॑ ते सोम सोम ते॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॑ ते सोम। ते॒ सो॒म॒ सो॒म॒ ते॒ ते॒ सो॒म॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य सोम ते ते सोम॒ सोमा॑य। सो॒म॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य सोम सोम॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य सोम सोम॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॑। सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाङ्क्कृ॑त॒ꣳ स्वाङ्क्कृ॑त॒ꣳ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाङ्क्कृ॑तꣳ। स्वाहा॒ स्वाङ्क्कृ॑त॒ꣳ स्वाङ्क्कृ॑त॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ स्वाङ्क्कृ॑तोस्यसि॒ स्वाङ्क्कृ॑त॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ स्वाङ्क्कृ॑तोसि॥२॥

स्वाङ्क्कृ॑तोस्यसि॒ स्वाङ्क्कृ॑त॒ꣳ स्वाङ्क्कृ॑तोसि॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्यो॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्योसि॒ स्वाङ्क्कृ॑त॒ꣳ स्वाङ्क्कृ॑तोसि॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्यꣳ। स्वाङ्क्कृ॑त॒ऽ इति॒ स्वाम् कृ॑तꣳ। अ॒सि॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्यो॒ व्विश्श्वे॑-ब्भ्योस्यसि॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्यऽ इन्द्रि॒येब्भ्य॑ऽ इन्द्रि॒येब्भ्यो॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्योस्यसि॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्यऽ इन्द्रि॒येब्भ्य॑ः। व्विश्श्वे॑ब्भ्यऽ इन्द्रि॒येब्भ्य॑ऽ इन्द्रि॒येब्भ्यो॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्यो॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्यऽ इन्द्रि॒येब्भ्यो॑ दि॒व्व्येब्भ्यो॑ दि॒व्व्येब्भ्य॑ऽ इन्द्रि॒येब्भ्यो॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्यो॒ व्विश्श्वे॑ब्भ्यऽ इन्द्रि॒ये-ब्भ्यो॑ दि॒व्व्येब्भ्य॑ः। इ॒न्द्रि॒येब्भ्यो॑ दि॒व्व्येब्भ्यो॑ दि॒व्व्येब्भ्य॑ऽ इन्द्रि॒येब्भ्य॑ऽ इन्द्रि॒ये-ब्भ्यो॑ दि॒व्व्येब्भ्य॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्य॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्यो दि॒व्व्येब्भ्य॑ऽ इन्द्रि॒येब्भ्य॑ऽ इन्द्रि॒ये-ब्भ्यो॑ दि॒व्व्येब्भ्य॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्यꣳ। दि॒व्व्येब्भ्य॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्य॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्यो दि॒व्व्ये-ब्भ्यो॑ दि॒व्व्येब्भ्य॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्यो॒ मनो॒ मन॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्यो दि॒व्व्येब्भ्यो॑ दि॒व्व्येब्भ्य॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्यो॒ मन॑ः। पार्त्थि॑वेब्भ्यो॒ मनो॒ मन॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्य॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्यो॒ मन॑-स्त्वा त्वा॒ मन॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्य॒ꣳ पार्त्थि॑वेब्भ्यो॒ मन॑स्त्वा। मन॑स्त्वा त्वा॒ मनो॒ मन॑-

स्त्वाष्ट्वष्टु त्वा मनो मनस्त्वाष्टु[1]। त्वाष्ट्वष्टु त्वा त्वाष्टु स्वाहा स्वाहाष्टु त्वा त्वाष्टु स्वाहा[2]। अष्टु स्वाहा स्वाहाष्ट्वष्टु स्वाहा त्वा त्वा स्वाहाष्ट्वष्टु स्वाहा त्वा। स्वाहा त्वा त्वा स्वाहा स्वाहा त्वा सुभव सुभव त्वा स्वाहा स्वाहा त्वा सुभव। त्वा सुभव सुभव त्वा त्वा सुभव सूर्य्याय सूर्य्याय सुभव त्वा त्वा सुभव सूर्य्याय। सुभव सूर्य्याय सूर्य्याय सुभव सुभव सूर्य्याय देवेब्भ्यो देवेब्भ्यः सूर्य्याय सुभव सुभव सूर्य्याय देवेब्भ्यः। सुभवेति सु भव। सूर्य्याय देवेब्भ्यो देवेब्भ्यः सूर्य्याय सूर्य्याय देवेब्भ्यस्त्वा त्वा देवेब्भ्यः सूर्य्याय सूर्य्याय देवेब्भ्यस्त्वा। देवेब्भ्यस्त्वा त्वा देवेब्भ्यो देवेब्भ्यस्त्वा मरीचिपेब्भ्यो मरीचिपेब्भ्यस्त्वा देवेब्भ्यो देवेब्भ्य-स्त्वा मरीचिपेब्भ्यः। त्वा मरीचिपेब्भ्यो मरीचिपेब्भ्यस्त्वा त्वा मरीचिपेब्भ्यो देव देव मरीचिपेब्भ्यस्त्वा त्वा मरीचिपेब्भ्यो देव। मरीचिपेब्भ्यो देव देव मरीचिपेब्भ्यो मरीचिपेब्भ्यो देवाꣳशोꣳशो देव मरीचिपेब्भ्यो मरीचिपेब्भ्यो देवाꣳशो। मरीचिपेब्भ्यऽ इति मरीचि पेब्भ्यः। देवाꣳशोꣳशो देव देवाꣳशो यस्म्मै यस्म्माऽ अꣳशो देव देवाꣳशो यस्म्मै। अꣳशो यस्म्मै यस्म्माऽ अꣳशोꣳशो यस्म्मै त्वा त्वा यस्म्माऽ अꣳशोꣳशो यस्म्मै त्वा। अꣳशोऽ इत्यꣳशो। यस्म्मै त्वा त्वा यस्म्मै यस्म्मै त्वेडऽ ईडे त्वा यस्म्मै यस्म्मै त्वेडे। त्वेडऽ ईडे त्वा त्वेडे ततदीडे त्वा त्वेडे तत्। ईडे ततदीडऽ ईडे तत्सत्यꣳ सत्यन्तदीडऽ ईडे तत्सत्यम्। तत्सत्यꣳ सत्यन्ततत्सत्यमुपरिप्प्रुतोपरिप्प्रुता सत्यन्ततत्सत्यमुपरिप्प्रुता[3]। सत्यमुपरिप्प्रुतोपरिप्प्रुता सत्यꣳ सत्यमुपरिप्प्रुता भङ्गेन भङ्गेनोपरिप्प्रुता सत्यꣳ सत्यमुपरिप्प्रुता भङ्गेन। उपरिप्प्रुता भङ्गेन

---

[1]. अष्टु अष्टु यहाँ स्वरे भाव्यन्तस्थाम्(वा.प्रा.४.४७) इस सूत्र से उकार अन्तस्थ व होता है।

[2]. सर्व विश्व मानुषाशाः स्वाहा वाजः पयो नमः (वा. प्रा. २.३९) ये पद आद्युदात होते हैं।

[3]. भाष्यकार उव्वट ने उपरिप्लुता पद माना है।

भ॒ङ्गेनोपरि॒प्प्रुतोपरि॒प्प्रुता भ॒ङ्गेन ह॒तो ह॒तो भ॒ङ्गेनोपरि॒प्प्रुतोपरि॒प्प्रुता भ॒ङ्गेन ह॒तः। उ॒परि॒प्प्रुतेत्युपरि प्रुता। भ॒ङ्गेन ह॒तो ह॒तो भ॒ङ्गेन भ॒ङ्गेन ह॒तो॒सावसौ ह॒तो भ॒ङ्गेन भ॒ङ्गेन ह॒तो॒सौ। ह॒तो॒सावसौ ह॒तो ह॒तो॒सौ फट्ट् फड॒सौ ह॒तो ह॒तो॒सौ फट्। अ॒सौ फट्ट् फड॒साव॒सौ फट्ट् प्रा॒णाय प्प्रा॒णाय॒ फड॒साव॒सौ फट्ट् प्रा॒णाय। फट्ट् प्रा॒णाय प्प्रा॒णाय॒ फट्ट् फट्ट् प्रा॒णाय त्वा त्वा प्प्रा॒णाय॒ फट्ट् फट्ट् प्रा॒णाय त्वा। प्रा॒णाय त्वा त्वा प्प्रा॒णाय प्प्रा॒णाय त्वा ध्या॒नाय ध्या॒नाय त्वा प्प्रा॒णाय प्प्रा॒णाय त्वा ध्या॒नाय। त्वा॒ ध्या॒नाय ध्या॒नाय त्वा त्वा ध्या॒नाय त्वा त्वा ध्या॒नाय त्वा त्वा ध्या॒नाय त्वा। ध्या॒नाय त्वा त्वा ध्या॒नाय ध्या॒नाय त्वा। ध्या॒नायेति वि आ॒नाय। त्वेति त्वा॥३॥

उ॒प॒या॒मगृहीतोस्यस्युपया॒मगृहीतऽ उपया॒मगृहीतोस्य॒न्तर॒न्तरस्युपया॒म-गृहीतऽ उपया॒मगृहीतोस्य॒न्तः। उ॒प॒या॒मगृहीत॒ऽ इत्युपया॒म गृहीतः। अ॒स्य॒न्त-र॒न्तरस्यस्य॒न्तर्ळ्यच्छ यच्छा॒न्तरस्यस्य॒न्तर्ळ्यच्छ[1]। अ॒न्तर्ळ्यच्छ यच्छा॒न्तर॒-न्तर्ळ्यच्छ मघवन्नमघवन्न्यच्छा॒न्तर॒न्तर्ळ्यच्छ मघवन्। य॒च्छ॒ म॒घ॒व॒न्न॒म॒घ॒व॒न्न्य॒च्छ॒ य॒च्छ॒ म॒घ॒व॒न्न्पाहि पा॒हि मघवन्न्यच्छ यच्छ मघवन्न्पा॒हि। म॒घ॒व॒न्न्पा॒हि पा॒हि मघवन्नमघवन्न्पा॒हि सोम॒ᳪ सोमम्पा॒हि मघवन्नमघवन्न्पा॒हि सोमम्। म॒घ॒व॒न्निति मघ व्वन्। पा॒हि सोम॒ᳪ सोमम्पा॒हि पा॒हि सोमम्। सोम॒मिति॒ सोमम्॥ उ॒रु॒ष्ष्य रायो॒ रायऽ उरु॒ष्ष्योरु॒ष्ष्य राय॒ऽ एष॒ऽ इष॒ऽ आ रायऽ उरु॒ष्ष्योरु॒ष्ष्य राय॒ऽ एषः[2]। राय॒ऽ एष॒ऽ इष॒ऽ आ रायो॒ राय॒ऽ एषो यजस्व यजु॒स्वेष॒ऽ आ रायो॒ राय॒ऽ एषो यजस्व। एषः। इषो यजस्व यजु॒स्वेष॒ऽ इषो यजस्व। य॒जु॒स्वेति यजस्व॥ ४॥

---

[1]. अन्तरनाद्युदात्तम् (वा. प्रा. १.१६२) आद्युदात्त न होने पर अ॒न्तः पद रिफितसंज्ञक होता है।

[2]. रायोऽपोषे(वा.प्रा.२.४२) इस सूत्र के अनुसार पोष बाद में न होने पर रायः पद आद्युदात्त होता है।

अ॒न्तस्ते॑ ते॒न्तर॒न्तस्ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी ते॒न्तर॒न्तस्ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी । अ॒न्तरित्य॒न्तः॑ । ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी ते॑ ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी द॑धामि दधामि॒ द्यावा॑पृथि॒वी ते॑ ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी द॑धामि । द्यावा॑पृथि॒वी द॑धामि दधामि॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी द॑धाम्म्य॒न्तर॒न्तर्दँधामि॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी द॑धाम्म्य॒न्तः॑ । द्यावा॑पृथि॒वीऽ इति॒ द्यावा॑पृथि॒वी । द॒धा॒म्म्य॒न्तर॒न्तर्दँधामि दधाम्म्य॒न्तर्दँधामि दधाम्म्य॒न्तर्दँधामि दधाम्म्य॒न्तर्दँधामि । अ॒न्तर्दँधामि दधाम्म्य॒न्तर॒न्तर्दँधाम्म्यु॒रूरु द॑धाम्म्य॒न्तर॒न्तर्दँधाम्म्यु॒रु । द॒धा॒म्म्यु॒रूरु द॑धामि दधाम्म्यु॒र्व्व॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षमु॒रु द॑धामि दधाम्म्यु॒र्व्व॒न्तरि॑क्षम् । उ॒र्व्व॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षमु॒रूर्व्व॒न्तरि॑क्षम् । अ॒न्तरि॑क्ष॒मित्य॒न्तरि॑क्षम् ॥ स॒जूर्दे॒वेभि॒र्दे॒वेभि॑ः स॒जूः स॒जूर्दे॒वेभि॒रव॑रै॒रव॑रै॒र्दे॒वेभि॑ः स॒जूः स॒जूर्दे॒वेभि॒रव॑रैः । स॒जूरिति॑ स॒ जूः । दे॒वेभि॒रव॑रै॒रव॑रै॒र्दे॒वेभि॒र्दे॒वेभि॒रव॑रैः परै॑ः परै॒रव॑रै॒र्दे॒वेभि॒र्दे॒वेभि॒रव॑रैः परै॑ः । अव॑रैः परै॑ः परै॒रव॑रै॒रव॑रैः परै॑श्च च॒ परै॒रव॑रै॒रव॑रैः परै॑श्च । परै॑श्च च॒ परै॑ः परै॑श्चान्तर्य्या॒मेन्तर्य्या॒मे च॒ परै॑ः परै॑श्चान्तर्य्या॒मे[1] । चा॒न्त॒र्य्या॒मे॒न्तर्य्या॒मे च॑ चान्तर्य्या॒मे म॑घवन्नमघवन्नन्तर्य्या॒मे च॑ चान्तर्य्या॒मे म॑घवन् । अ॒न्त॒र्य्या॒मे म॑घवन्नमघवन्नन्तर्य्या॒मे॒न्तर्य्या॒मे म॑घवन्मादयस्व मादयस्व मघवन्नन्तर्य्या॒मे॒न्तर्य्या॒मे म॑घवन्मादयस्व । अ॒न्त॒र्य्या॒मऽ इत्य॑न्तः या॒मे । म॒घ॒व॒न्मा॒द॒य॒स्व॒ मा॒द॒य॒स्व॒ म॒घ॒व॒न्म॒घ॒व॒न्मा॒द॒य॒स्वो॒दा॒नायो॑दा॒नाय॑ मादयस्व मघवन्मघवन्मादयस्वोदा॒नाय॑ । म॒घ॒व॒न्निति॑ मघ वन् । मा॒द॒य॒स्वो॒दा॒नायो॑दा॒नाय॑ मादयस्व मादयस्वोदा॒नाय॑ त्वा त्वोदा॒नाय॑ मादयस्व मादयस्वोदा॒नाय॑ त्वा ॥ उ॒दा॒नाय॑ त्वा त्वोदा॒नायो॑दा॒नाय॑ त्वा । उ॒दा॒नायेत्यु॑त् आ॒नाय॑ । त्वेति॑ त्वा ॥५॥

---

[1]. अन्तर्य्यामे अन्तर्य्यामे यहाँ एदोद्भ्यां पूर्वमकारः(वा.प्रा.४.६२) इस सूत्र से एकार से परे अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है। तौ चेदुदात्तावनुदात्ते स्वरितौ(वा.प्रा.४.६३) के अनुसार एकार स्वरित होता है। एदोद्भ्यामकारो लुगभिनिहितः(वा.प्रा.१.११४) इस सूत्र से अभिनिहित स्वरित का विधान किया गया है।

आ वा॑यो व्वायु॒वा वा॑यो भूष भूष व्वायु॒वा वा॑यो भूष[1]। व्वा॒यो॒ भू॒ष॒ भू॒ष॒ व्वा॒यो॒ व्वा॒यो॒ भू॒ष॒ शु॒चि॒पा॒ः शु॒चि॒पा॒ भू॒ष॒ व्वा॒यो॒ व्वा॒यो॒ भू॒ष॒ शु॒चि॒पा॒ः। व्वा॒यो॒ऽ इति॑ वायो। भू॒ष॒ शु॒चि॒पा॒ः शु॒चि॒पा॒ भू॒ष॒ भू॒ष॒ शु॒चि॒पा॒ऽ उपोप॑ शुचिपा भूष भूष शुचिपा॒ऽ उप॑। शु॒चि॒पा॒ऽ उपोप॑ शुचिपाः शुचिपा॒ऽ उप॑ नो न॒ऽ उप॑ शुचिपाः शुचिपा॒ऽ उप॑ नः। शु॒चि॒पा॒ऽ इति॑ शुचि पाः। उप॑ नो न॒ऽ उपोप॑ नः स॒हस्र॑ꣳ स॒हस्र॑न्न॒ऽ उपोप॑ नः स॒हस्र॑म्। न॒ः स॒हस्र॑ꣳ स॒हस्र॑न्नो नः स॒हस्र॑न्ते ते स॒हस्र॑न्नो नः स॒हस्र॑न्ते। स॒हस्र॑न्ते ते स॒हस्र॑ꣳ स॒हस्र॑न्ते नि॒युतो॑ नि॒युत॑स्ते स॒हस्र॑ꣳ स॒हस्र॑न्ते नि॒युत॑ः । ते॒ नि॒युतो॑ नि॒युत॑स्ते ते नि॒युतो॑ व्विश्ववार व्विश्ववार नि॒युत॑स्ते ते नि॒युतो॑ व्विश्ववार। नि॒युतो॑ व्विश्ववार व्विश्ववार नि॒युतो॑ नि॒युतो॑ व्विश्ववार। नि॒युत॒ऽ इति॑ नि॒ युत॑ः । व्वि॒श्व॒वा॒रेति॑ विश्व व्वार॥ उपो॑ ते त॒ऽ उपो॒ऽ उपो॑ ते॒ऽ अन्धोन्ध॑स्त॒ऽ उपो॒ऽ उपो॑ ते॒ऽ अन्ध॑ः[2]। उपो॒ऽ इत्युपो॑। ते॒ऽ अन्धोन्ध॑स्ते ते॒ऽ अन्धो॒ मद्य॒म्मद्य॒मन्ध॑स्ते ते॒ऽ अन्धो॒ मद्य॑म्। अन्धो॒ मद्य॒म्मद्य॒मन्धोन्धो॒ मद्य॑मयाम्म्ययामि॒ मद्य॒मन्धोन्धो॒ मद्य॑मयामि। मद्य॑मयाम्म्ययामि॒ मद्य॒म्मद्य॑मयामि॒ यस्य॒ यस्या॑यामि॒ मद्य॒म्मद्य॑म-यामि॒ यस्य॑। अ॒या॒मि॒ यस्य॒ यस्या॑याम्म्ययामि॒ यस्य॑ देव दे॒व॒ यस्या॑याम्म्ययामि॒ यस्य॑ देव। यस्य॑ देव दे॒व॒ यस्य॒ यस्य॑ देव दधि॒षे द॑धि॒षे दे॑व॒ यस्य॒ यस्य॑ देव दधि॒षे। दे॒व॒ द॒धि॒षे द॑धि॒षे दे॑व देव दधि॒षे पू॒र्व्व॒पेय॑म्पूर्व्व॒पेय॑न्दधि॒षे दे॑व देव दधि॒षे पू॒र्व्व॒पेय॑म्। द॒धि॒षे पू॒र्व्व॒पेय॑म्पूर्व्व॒पेय॑न्दधि॒षे द॑धि॒षे पू॒र्व्व॒पेय॑ँव्वा॒यवे॑ व्वा॒यवे॑ पूर्व्व॒पेय॑न्दधि॒षे द॑धि॒षे पू॒र्व्व॒पेय॑ँव्वा॒यवे॑। पू॒र्व्व॒पेय॑ँव्वा॒यवे॑ व्वा॒यवे॑ पू॒र्व्व॒पेय॑म्पूर्व्व॒पेय॑ँव्वा॒यवे॑ त्वा त्वा व्वा॒यवे॑ पू॒र्व्व॒पेय॑-

---

[1]. उपसर्गपरौ यत्र यवकारौ पदादिगौ। ईषत्स्पृष्टौ ततो ज्ञेयावभियुध्य उपा यथा॥– व. शि. २०९.

[2]. वा.प्रा.४.८२. के अनुसार ते अन्धः यहाँ ते का एकार प्रकृतिभाव से रहता है। ओकारान्तनिपातानां व्युत्क्रमेऽस्ति प्रगृह्यता। यथा-उपो॑ ते तऽ उपो॒ऽ उपो॑ ते (पद.७.६ सं.७.७) – ज्यो. वृ. पृ.२२९.

म्पूर्व्वपेयँव्वायवे॑ त्वा। पूर्व्वपेयमिति॑ पूर्व्व पेय॑म्। व्वायवे॑ त्वा त्वा व्वायवे॑ व्वायवे॑ त्वा। त्वेति॑ त्वा॥६॥

इन्द्र॑वायूऽ इमऽ इमऽ इन्द्र॑वायूऽ इन्द्र॑वायूऽ इमे सुताः सुताऽ इमऽ इन्द्र॑वायूऽ इन्द्र॑वायूऽ इमे सुताः। इन्द्र॑वायूऽ इतीन्द्र॑वायू। इमे सुताः सुताऽ इमऽ इमे सुताऽ उपोप॑ सुताऽ इमऽ इमे सुताऽ उप॑। सुताऽ उपोप॑ सुताः सुताऽ उप प्प्रयो॑भिः प्प्रयो॑भिरुप॑ सुताः सुताऽ उप प्प्रयो॑भिः। उप प्प्रयो॑भिः प्प्रयो॑भिरुपोप प्प्रयो॑भिरा ग॑तङ्गतमा प्प्रयो॑भिरुपोप प्प्रयो॑भिरा ग॑तम्। प्रयो॑भिरा ग॑तङ्गतमा प्प्रयो॑भिः प्प्रयो॑भिरा ग॑तम्। प्रयो॑भिरिति प्प्रय॑ः भिः। आ ग॑तम्। गतमिति॑ गतम्॥ इन्द॑वो वाँव्वामिन्द॑वऽ इन्द॑वो वामुशन्त्युशन्ति॑ वामिन्द॑वऽ इन्द॑वो वामुशन्ति॑। व्वामुशन्त्युशन्ति॑ वाँव्वामुशन्ति हि ह्युशन्ति॑ वाँव्वामुशन्ति हि[1]। उशन्ति हि ह्युशन्त्युशन्ति हि। हीति हि॥ व्वायवऽ इन्द्रवायुब्भ्या॑मिन्द्रवायुब्भ्याँव्वायवे॑ व्वायवऽ इन्द्रवायुब्भ्यान्त्वा त्वेन्द्रवायुब्भ्याँव्वायवे॑ व्वायवऽ इन्द्रवायुब्भ्या॑न्त्वा[2]। इन्द्रवायुब्भ्या॑न्त्वा त्वेन्द्रवायुब्भ्या॑मिन्द्रवायुब्भ्या॑न्त्वैषऽ एष त्वेन्द्रवायुब्भ्या॑मिन्द्रवायुब्भ्या॑न्त्वैषः। इन्द्रवायुब्भ्यामिती॑न्द्रवायु भ्या॑म्। त्वैषऽ एष त्वा॑ त्वैष ते॑ तऽ एष त्वा॑ त्वैष ते॑। एष ते॑ तऽ एषऽ एष ते योनि॑र्व्योनि॑स्तऽ एषऽ एष ते योनि॑ः। ते योनि॑र्व्योनि॑स्ते ते योनि॑ः सजोषो॑ब्भ्याᳪ सजोषो॑ब्भ्याँय्योनि॑स्ते ते योनि॑ः सजोषो॑ब्भ्याम्। योनि॑ः सजोषो॑ब्भ्याᳪ सजोषो॑ब्भ्याँय्योनिर्व्योनि॑ः सजोषो॑ब्भ्यान्त्वा त्वा सजोषो॑ब्भ्याँय्योनिर्व्योनि॑ः सजोषो॑ब्भ्यान्त्वा। सजोषो॑-

---

[1]. उत्तरेऽपि (वा. मा. ६.१६) के अनुसार हि पद परे रहते उशन्ति॑ पद अपने प्रकृति स्वर से युक्त होता है।

[2]. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि(वा.प्रा. २.४८) इस सूत्र के अनुसार इन्द्र॑वायू यह पद आमन्त्रित होने से द्विरुदात्त नहीं है। इन्द्रवायुभ्या॑म् यह पद द्वन्द्वं चेन्द्रसोमपूर्वं पूषाग्निवायुषु(वा.प्रा. २.५५) इस सूत्र के अनुसार अन्तोदात्त है। यह सूत्र पूर्वोक्त सूत्र का अपवाद है।

ब्भ्यान्त्वा त्वा सुजोषोब्भ्याꣳ सुजोषोब्भ्यान्त्वा। सुजोषोब्भ्यामिति सुजोषः÷
भ्याम्। त्वेति त्वा॥७॥

अयँव्वाँव्वामयमयँव्वाम्मित्रावरुणा मित्रावरुणा वामयमयँव्वाम्मित्रावरुणा।
व्वाम्मित्रावरुणा मित्रावरुणा वाँव्वाम्मित्रावरुणा सुतः सुतो मित्रावरुणा वाँव्वा-
म्मित्रावरुणा सुतः। मित्रावरुणा सुतः सुतो मित्रावरुणा मित्रावरुणा सुतः
सोमꣳ सोमः÷ सुतो मित्रावरुणा मित्रावरुणा सुतः सोमः÷। सुतः सोमꣳ सोमः÷
सुतः सुतः सोमऽ ऋतावृधऽ ऋतवृधा सोमः÷ सुतः सुतः सोमऽ ऋतावृधा[1]।
सोमऽ ऋतावृधऽ ऋतवृधा सोमꣳ सोमऽ ऋतावृधा। ऋतवृधेत्यृत व्वृधा॥ ममेदि-
हमम ममेदिहेहेद्ममम ममेदिह। इदिहेहेदिदिह श्श्रुतꣳ श्रुतमिहेदिदिह श्श्रुतम्[2]।
इह श्श्रुतꣳ श्रुतमिहेह श्श्रुतꣳ हवꣳ हवꣳ श्रुतमिहेह श्श्रुतꣳ हवम्। श्रुतꣳ हवꣳ
हवꣳ श्रुतꣳ श्रुतꣳ हवम्। हवमिति हवम्॥ मित्रावरुणाब्भ्यान्त्वा त्वा मित्रा-
वरुणाब्भ्याम्मित्रावरुणाब्भ्यान्त्वा। त्वेति त्वा॥८॥

राया व्वयँव्वयꣳ राया राया व्वयꣳ सꣳसवाꣳसः÷ ससवाꣳसो व्वयꣳ राया
राया व्वयꣳ सꣳसवाꣳसः÷। व्वयꣳ सꣳसवाꣳसः÷ ससवाꣳसो व्वयँव्वयꣳ सꣳसवाꣳसो
मदेम मदेम ससवाꣳसो व्वयँव्वयꣳ सꣳसवाꣳसो मदेम। ससवाꣳसो मदेम मदेम
ससवाꣳसः÷ ससवाꣳसो मदेम हव्येन हव्येन मदेम ससवाꣳसः÷ ससवाꣳसो
मदेम हव्येन। ससवाꣳसऽ इति सस व्वाꣳसः÷। मदेम हव्येन हव्येन मदेम मदेम
हव्येन देवा देवा हव्येन मदेम मदेम हव्येन देवाः। हव्येन देवा देवा हव्येन हव्येन
देवा यवसेन यवसेन देवा हव्येन हव्येन देवा यवसेन। देवा यवसेन यवसेन देवा
देवा यवसेन गावो गावो यवसेन देवा देवा यवसेन गावः÷। यवसेन गावो गावो

---

[1]. ऋतवृधा यहाँ वा.प्रा.३.९७. के अनुसार वकार बाद में होने से ऋत इस पदावयव (पूर्वपद) का ह्रस्व स्वर दीर्घ होता है।

[2]. इहपूर्वं श्रुतम् (वा. प्रा. २.१४) इह से परे स्थित श्रुतम् पद अनुदात्त होता है।

यवसेन यवसेन गावः। गावऽ इति गावः॥ तान्धेनुन्धेनुन्तान्तान्धेनुम्मित्रा-
वरुणा मित्रावरुणा धेनुन्तान्तान्धेनुम्मित्रावरुणा। धेनुम्मित्रावरुणा मित्रावरुणा
धेनुन्धेनुम्मित्रावरुणा युवँय्युवम्मित्रावरुणा धेनुन्धेनुम्मित्रावरुणा युवम्।
मित्रावरुणा युवँय्युवम्मित्रावरुणा मित्रावरुणा युवन्नो नो युवम्मित्रावरुणा मित्रा-
वरुणा युवन्नः। युवन्नो नो युवँय्युवन्नो विश्वाहा विश्वाहा नो युवँय्युवन्नो विश्वाहा
। नो विश्वाहा विश्वाहा नो नो विश्वाहा धत्तन्धत्तँविश्वाहा नो नो विश्वाहा धत्तम्।
विश्वाहा धत्तन्धत्तँविश्वाहा विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीमनपस्फुरन्तीन्धत्तँवि-
श्वाहा विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम्। धत्तमनपस्फुरन्तीमनपस्फुरन्तीन्धत्त-
न्धत्तमनपस्फुरन्तीमृतायुभ्यामृतयुभ्यामनपस्फुरन्तीन्धत्तन्धत्तमनपस्फु-
रन्तीमृतायुभ्याम्[1]। अनपस्फुरन्तीमृतायुभ्यामृतयुभ्यामनपस्फुरन्तीम-
नपस्फुरन्तीमृतायुभ्यान्त्वा त्वऽ ऋतयुभ्यामनपस्फुरन्तीमनपस्फुरन्ती-
मृतायुभ्यान्त्वा। अनपस्फुरन्तीमित्यनप स्फुरन्तीम्। ऋतायुभ्यान्त्वा त्वऽ
ऋतयुभ्यामृतायुभ्यान्त्वा। ऋतयुभ्यामित्यृतयु भ्याम्। त्वेति त्वा॥९॥

या वाँव्वाँय्या या वाङ्कशा कशा वाँय्या या वाङ्कशा। वाङ्कशा कशा वाँव्वाङ्क-
शा मधुमती मधुमती कशा वाँव्वाङ्कशा मधुमती[2]। कशा मधुमती मधुमती कशा
कशा मधुमत्यश्विनाश्विना मधुमती कशा कशा मधुमत्यश्विना। मधु-
मत्यश्विनाश्विना मधुमती मधुमत्यश्विना सूनृतावती सूनृतावत्यश्विना मधुमती
मधुमत्यश्विना सूनृतावती। मधुमतीति मधु मती। अश्विना सूनृतावती सूनृता-
वत्यश्विनाश्विना सूनृतावती। सूनृतावतीति सूनृता वती॥ तया यज्ञँय्यज्ञन्त-

[1]. ऋतयुभ्याम् यहाँ वा.प्रा.३.११२. के अनुसार यकार बाद में होने से त का स्वर दीर्घ होता है।

[2]. वा. प्रा. २.१७. के अनुसार कोई भी पद पूर्व में होने पर संबोधन पद अनुदात होता है, यदि वह नानार्थक वाचक न हो एवं पाद के प्रारम्भ में न हो। यहाँ मधुमती पाद के प्रारम्भ में होने के कारण आद्युदात्त है।

या तया यज्ञम्मिमिक्षतम्मिमिक्षतँय्यज्ञन्तया तया यज्ञम्मिमिक्षतम्। यज्ञम्मिमिक्षतम्मिमिक्षतँय्यज्ञँय्यज्ञम्मिमिक्षतम्। मिमिक्षतमिति मिमिक्षतम्॥ अश्विभ्यान्त्वा त्वाश्विभ्यामश्विभ्यान्त्वा माद्धीभ्याम्माद्धी-भ्यान्त्वाश्विभ्यामश्विभ्यान्त्वा माद्धीभ्याम्। अश्विभ्यामित्यश्वि भ्याम्। त्वा माद्धीभ्याम्माद्धीभ्यान्त्वा त्वा माद्धीभ्यान्त्वा त्वा माद्धीभ्यान्त्वा त्वा माद्धीभ्यान्त्वा। माद्धीभ्यान्त्वा त्वा माद्धीभ्याम्माद्धीभ्यान्त्वा। त्वेति त्वा॥ १०॥

तम्प्रत्नथा प्प्रत्नथा तन्तम्प्रत्नथा पूर्व्वथा पूर्व्वथा प्प्रत्नथा तन्तम्प्रत्नथा पूर्व्वथा। प्रत्नथा पूर्व्वथा पूर्व्वथा प्प्रत्नथा प्प्रत्नथा पूर्व्वथा व्विश्वथा व्विश्वथा पूर्व्वथा प्प्रत्नथा प्प्रत्नथा पूर्व्वथा व्विश्वथा। प्रत्नथेति प्प्रत्न था। पूर्व्वथा व्विश्वथा व्विश्वथा पूर्व्वथा पूर्व्वथा व्विश्वथेमथेमथा व्विश्वथा पूर्व्वथा पूर्व्वथा व्विश्वथेमथा। पूर्व्वथेति पूर्व्व था। व्विश्वथेमथेमथा व्विश्वथा व्विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिञ्ज्येष्ठतातिमिमथा व्विश्वथा व्विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिम्। व्विश्वथेति व्विश्व था। इमथा ज्येष्ठतातिञ्ज्येष्ठताति-मिमथेमथा ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदम्बर्हिसदञ्ज्येष्ठतातिमिमथेमथा ज्येष्ठतातिम्ब-र्हिषदम्[1]। इमथेतीम था[2]। ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदम्बर्हिसदञ्ज्येष्ठतातिञ्ज्येष्ठ-तातिम्बर्हिषदँ स्वर्व्विदँ स्वर्व्विदम्बर्हिसदञ्ज्येष्ठतातिञ्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदँ स्वर्व्विदम्। ज्येष्ठतातिमिति ज्ज्येष्ठ तातिम्। बर्हिषदँ स्वर्व्विदँ स्वर्व्विदम्बर्हिस-दम्बर्हिषदँ स्वर्व्विदम्। बर्हिसदमिति बर्हि सदम्। स्वर्व्विदमिति स्वः व्विदम्॥ प्रतीचीनँव्वृजनँव्वृजनम्प्रतीचीनम्प्रतीचीनँव्वृजनन्दोहसे दोहसे व्वृजनम्प्रतीचीन-

1. करेफाभ्यां च(वा.प्रा.३.५८) इस सूत्र के अनुसार बर्हिसदम् पद में रेफ से बाद में स्थित सकार षकार होता है।

2. प्रत्नपूर्वविश्वेमर्तुभ्यस्था (वा. प्रा. ५.१२) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार इस कण्डिका में प्रत्न, पूर्व, विश्व एवं इम परे स्थित था प्रत्यय को पृथक् किया जाता है।

म्प्रतीचीनँब्वृजनन्दोहसे। ब्वृजनन्दोहसे दोहसे ब्वृजनँब्वृजनन्दोहसे धुनिन्धुनि-न्दोहसे ब्वृजनँब्वृजनन्दोहसे धुनिम्। दोहसे धुनिन्धुनिन्दोहसे दोहसे धुनिमाशु-माशुन्धुनिन्दोहसे दोहसे धुनिमाशुम्। धुनिमाशुमाशुन्धुनिन्धुनिमाशुञ्जयन्त-ञ्जयन्तमाशुन्धुनिन्धुनिमाशुञ्जयन्तम्। आशुञ्जयन्तञ्जयन्तमाशुमाशुञ्जयन्तम-न्न्वनु जयन्तमाशुमाशुञ्जयन्तमनु। जयन्तमन्न्वनु जयन्तञ्जयन्तमनु यासु यास्वनु जयन्तञ्जयन्तमनु यासु। अनु यासु यास्वन्न्वनु यासु ब्वर्द्धसे ब्वर्द्धसे यास्व-न्न्वनु यासु ब्वर्द्धसे। यासु ब्वर्द्धसे ब्वर्द्धसे यासु यासु ब्वर्द्धसे। ब्वर्द्धसऽ इति वर्द्धसे ॥ शण्डाय त्वा त्वा शण्डाय शण्डाय त्वा ब्वीरताँब्वीरतान्त्वा शण्डाय शण्डाय त्वा ब्वीरताम्[1]। त्वा ब्वीरताँब्वीरतान्त्वा त्वा ब्वीरताम्पाहि पाहि ब्वीरतान्त्वा त्वा ब्वीरताम्पाहि। ब्वीरताम्पाहि पाहि ब्वीरताँब्वीरताम्पाह्यपमृष्टोपमृष्टः पाहि ब्वीरताँ-ब्वीरताम्पाह्यपमृष्टः। पाह्यपमृष्टोपमृष्टः पाहि पाह्यपमृष्टः शण्डः शण्डोपमृष्टः पाहि पाह्यपमृष्टः शण्डः। अपमृष्टः शण्डः शण्डोपमृष्टोपमृष्टः शण्डो देवा देवाः शण्डोपमृष्टोपमृष्टः शण्डो देवाः। अपमृष्टऽ इत्यप मृष्टः। शण्डो देवा देवाः शण्डः शण्डो देवास्त्वा त्वा देवाः शण्डः शण्डो देवास्त्वा। देवास्त्वा त्वा देवा देवास्त्वा शुक्रपाः शुक्रपास्त्वा देवा देवास्त्वा शुक्रपाः। त्वा शुक्रपाः शुक्रपास्त्वा त्वा शुक्रपाः प्प्र प्प्र शुक्रपास्त्वा त्वा शुक्रपाः प्प्र। शुक्रपाः प्प्र प्प्र शुक्रपाः शुक्रपाः प्प्र णयन्तु नयन्तु प्प्र शुक्रपाः शुक्रपाः प्प्र णयन्तु। शुक्रपाऽ इति शुक्र पाः। प्र णयन्तु नयन्तु प्प्र प्प्र णयन्त्वनाधृष्टानाधृष्टा नयन्तु प्प्र प्प्र णयन्त्वनाधृष्टा। नयन्त्वनाधृष्टानाधृष्टा नयन्तु नयन्त्वनाधृष्टास्यस्यनाधृष्टा नयन्तु नयन्त्वनाधृष्टासि। अनाधृष्टास्यस्यनाधृष्टानाधृष्टासि। असीत्यसि॥११॥

---

1. स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र(वा.प्रा.४.१०१) इस सूत्र से शण्डाय इस पद में प्रतीयमान णकार की द्विरुक्ति स्ववर्गीये चानुत्तमे(वा.प्रा.४.११७) से बाधित होती है।

सुवीरो वीरान्वीरान्त्सुवीरः सुवीरो वीरान्प्रजनयंन्प्रजनयंन्वीरान्त्सुवीरः सुवीरो वीरान्प्रजनयन्। सुवीरऽ इति सु वीरः। वीरान्प्रजनयन्प्रजनयंन्वीरान्वीरान्प्रजनयन्परि परि प्रजनयंन्वीरान्वीरान्प्रजनयन्परि। प्रजनयन्परि परि प्रजनयंन्प्रजनयन्परीहीहि परि प्रजनयंन्प्रजनयन्परीहि। प्रजनयन्निति प्र जनयन्। परीहीहि परि परीह्यभ्यभीहि परि परीह्यभि। इह्यभ्यभीहीह्यभि रायो रायोभीहीह्यभि रायः। अभि रायो रायोऽभ्यभि रायस्पोषेण पोषेण रायोऽभ्यभि रायस्पोषेण[1]। रायस्पोषेण पोषेण रायो रायस्पोषेण यजमानँय्यजमानम्पोषेण रायो रायस्पोषेण यजमानम्। पोषेण यजमानँय्यजमानम्पोषेण पोषेण यजमानम्। यजमानमिति यजमानम्॥ सञ्जग्मानो दिवा दिवा संञ्जग्मानः संञ्जग्मानो दिवा पृथिव्या पृथिव्या दिवा संञ्जग्मानः संञ्जग्मानो दिवा पृथिव्या[2]। सञ्जग्मानऽ इति सम् जग्मानः। दिवा पृथिव्या पृथिव्या दिवा दिवा पृथिव्या शुक्रः शुक्रः पृथिव्या दिवा दिवा पृथिव्या शुक्रः। पृथिव्या शुक्रः शुक्रः पृथिव्या पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा शुक्रशोचिषा शुक्रः पृथिव्या पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा। शुक्रः शुक्रशोचिषा शुक्रशोचिषा शुक्रः शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तो निरस्तः शुक्रशोचिषा शुक्रः शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तः। शुक्रशोचिषा निरस्तो निरस्तः शुक्रशोचिषा शुक्रशोचिषा निरस्तः शण्डः शण्डो निरस्तः शुक्रशोचिषा शुक्रशोचिषा निरस्तः शण्डः। शुक्रशोचिषेति शुक्र शोचिषा। निरस्तः शण्डः शण्डो निरस्तो निरस्तः शण्डः शुक्रस्य शुक्रस्य शण्डो निरस्तो निरस्तः शण्डः शुक्रस्य। निरस्तऽ इति निः अस्तः। शण्डः शुक्रस्य शुक्रस्य शण्डः शण्डः

[1]. रायः सहसः पोषपुत्रयोः (वा. प्रा. ३.२५) पोष एवं पुत्र परे होने पर क्रमशः रायः एवं सहसः का विसर्जनीय सकार हो जाता है।
[2]. वा. प्रा. ४.२८. के अनुसार यहाँ पृथिव्या पद स्वरान्त है।

शुक्रस्याधिष्ठानमधिस्त्थानꣳ शुक्रस्य शण्डꣳ शण्डं॑ शुक्रस्याधिष्ठानम्। शुक्रस्याधिष्ठानमधिस्त्थानꣳ शुक्रस्य शुक्रस्याधिष्ठानमस्यस्यधिस्त्थानꣳ शुक्रस्य शुक्रस्याधिष्ठानमसि। अधिष्ठानमस्यस्यधिस्त्थानमधिष्ठानमसि। अधिस्त्थानमित्यधि स्थानम्[1]। असीत्यसि॥१२॥

अच्छिन्नस्य ते तेच्छिन्नस्याच्छिन्नस्य ते देव देव तेच्छिन्नस्याच्छिन्नस्य ते देव। ते देव देव ते ते देव सोम सोम देव ते ते देव सोम। देव सोम सोम देव देव सोम सुवीर्य्यस्य सुवीर्य्यस्य सोम देव देव सोम सुवीर्य्यस्य। सोम सुवीर्य्यस्य सुवीर्य्यस्य सोम सोम सुवीर्य्यस्य रायो रायः सुवीर्य्यस्य सोम सोम सुवीर्य्यस्य रायः। सुवीर्य्यस्य रायो रायः सुवीर्य्यस्य सुवीर्य्यस्य रायस्प्पोषस्य पोषस्य रायः सुवीर्य्यस्य सुवीर्य्यस्य रायस्प्पोषस्य। सुवीर्य्यस्येति सु वीर्य्यस्य। राय-स्प्पोषस्य पोषस्य रायो रायस्प्पोषस्य ददितारो ददितारः पोषस्य रायो रायस्प्पोषस्य ददितारः। पोषस्य ददितारो ददितारः पोषस्य पोषस्य ददितारः स्याम स्याम ददितारः पोषस्य पोषस्य ददितारः स्याम। ददितारः स्याम स्याम ददितारो ददितारः स्याम। स्यामेति स्याम॥ सा प्प्रथमा प्प्रथमा सा सा प्प्रथमा सँस्कृतिः सँस्कृतिः प्प्रथमा सा सा प्प्रथमा सँस्कृतिः[2]। प्रथमा सँस्कृतिः सँस्कृतिः प्प्रथमा प्प्रथमा सँस्कृतिर्व्विश्ववारा व्विश्ववारा सँस्कृतिः प्प्रथमा प्प्रथमा सँस्कृतिर्व्विश्ववारा। सँस्कृतिर्व्विश्ववारा व्विश्ववारा सँस्कृतिः सँस्कृतिर्व्विश्ववारा स स व्विश्ववारा सँस्कृतिः सँस्कृतिर्व्विश्ववारा सः। व्विश्ववारा स स व्विश्ववारा व्विश्ववारा स प्प्रथमः प्प्रथमः स व्विश्ववारा व्विश्ववारा स प्प्रथमः

---

1. वा.प्रा.४.१९३. के अनुसार यहाँ स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये।

2. सम् कृतिः यहाँ समन्तः पदे कखपफेष्वनूष्मपरेषु (वा. प्रा. ४.८) इस सूत्र से मकार सकार हो जाता है तथा उपधा का अनुनासिकत्व। अनुनासिकत्व वर्ण का धर्म है, अनुस्वार न होने से यहाँ ꣳकार की सम्भावना नहीं है। वा. प्रा. ५.४३. के अनुसार उपधाभूत स्वर के अनुनासिक होने से यह सँस्कृतिः पद पृथक् नहीं किया जाता है।

। व्विश्श्ववारेति विश्श्व व्वारा। स प्प्रथमः प्प्रथमः स स प्प्रथमो व्वरुणो व्वरुणः प्प्रथमः स स प्प्रथमो व्वरुणः। प्रथमो व्वरुणो व्वरुणः प्प्रथमः प्प्रथमो व्वरुणो मित्त्रो मित्त्रो व्वरुणः प्प्रथमः प्प्रथमो व्वरुणो मित्त्रः। व्वरुणो मित्त्रो मित्त्रो व्वरुणो व्वरुणो मित्त्रोऽ अग्ग्निरग्ग्निर्म्मित्त्रो व्वरुणो व्वरुणो मित्त्रोऽ अग्ग्निः। मित्त्रोऽ अग्ग्निरग्ग्निर्म्मित्त्रो मित्त्रोऽ अग्ग्निः। अग्ग्निरित्यग्ग्निः ॥१३॥

स प्प्रथमः प्प्रथमः स स प्प्रथमो बृहस्स्पतिर्बृहस्स्पतिः प्प्रथमः स स प्प्रथमो बृहस्स्पतिः। प्रथमो बृहस्स्पतिर्बृहस्स्पतिः प्प्रथमः प्प्रथमो बृहस्स्पतिश्चिकित्त्वाँश्चिकित्त्वान्बृहस्स्पतिः प्प्रथमः प्प्रथमो बृहस्स्पतिश्चिकित्त्वान्। बृहस्स्पतिश्चिकित्त्वाँश्चिकित्त्वान्बृहस्स्पतिर्बृहस्स्पतिश्चिकित्त्वाँस्तस्स्मै तस्स्मै चिकित्त्वान्बृहस्स्पतिर्बृहस्स्पतिश्चिकित्त्वाँस्तस्स्मै। चिकित्त्वाँस्तस्स्मै तस्स्मै चिकित्त्वाँश्चिकित्त्वाँस्तस्स्माऽ इन्द्रायेन्द्राय तस्स्मै चिकित्त्वाँश्चिकित्त्वाँस्तस्स्माऽ इन्द्राय। तस्स्माऽ इन्द्रायेन्द्राय तस्स्मै तस्स्माऽ इन्द्राय सुतꣳ सुतमिन्द्राय तस्स्मै तस्स्माऽ इन्द्राय सुतम्। इन्द्राय सुतꣳ सुतमिन्द्रायेन्द्राय सुतमा जुहोत जुहोता सुतमिन्द्रायेन्द्राय सुतमा जुहोत। सुतमा जुहोत जुहोता सुतꣳ सुतमा जुहोत स्वाहा स्वाहा जुहोता सुतꣳ सुतमा जुहोत स्वाहा। आ जुहोत। जुहोत स्वाहा स्वाहा जुहोत जुहोत स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ तृम्पन्तु होत्त्रा होत्त्रास्तृम्पन्तु तृम्पन्तु होत्त्रा मद्ध्वो मद्ध्वो होत्त्रास्तृम्पन्तु तृम्पन्तु होत्त्रा मद्ध्वः[1]। होत्त्रा मद्ध्वो मद्ध्वो होत्त्रा होत्त्रा मद्ध्वो या या मद्ध्वो होत्त्रा होत्त्रा मद्ध्वो याः। मद्ध्वो या या मद्ध्वो मद्ध्वो याः स्स्विष्टाः स्स्विष्टा या मद्ध्वो मद्ध्वो याः स्स्विष्टाः। याः स्स्विष्टाः स्स्विष्टा या याः स्स्विष्टा या याः स्स्विष्टा या याः स्स्विष्टा याः। स्स्विष्टा या याः

[1]. तृम्पन्तु यहाँ वा. प्रा. ३.९३. के अनुसार नकार प्रकृति भाव से रहता है। होत्रास्तृम्पन्तु यहाँ ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) इस सूत्र से सकार से परे तकार का द्वित्व प्राप्त है परन्तु परवर्ती सूत्र ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११२) से द्वित्व का निषेध है।

स्विष्टाः स्विष्टा याः सुप्रीताः सुप्रीता याः स्विष्टाः स्विष्टा याः सुप्रीताः। स्विष्टाऽ इति सु इष्टाः। याः सुप्रीताः सुप्रीता या याः सुप्रीताः सुहुताः सुहुताः सुप्रीता या याः सुप्रीताः सुहुताः। सुप्रीताः सुहुताः सुहुताः सुप्रीताः सुप्रीताः सुहुता यद्यत्सुहुताः सुप्रीताः सुप्रीताः सुहुता यत्। सुप्रीताऽ इति सु प्रीताः। सुहुता यद्यत्सुहुताः सुहुता यत्स्वाहा स्वाहा यत्सुहुताः सुहुता यत्स्वाहा। सुहुताऽ इति सु हुताः। यत्स्वाहा स्वाहा यद्यत्स्वाहायाडयाट्ट् स्वाहा यद्यत्स्वाहायाट्। स्वाहायाडयाट्ट् स्वाहा स्वाहायाडग्नीदग्नीडयाट्ट् स्वाहा स्वाहायाडग्नीत्। अयाडग्नीदग्नीदयाडयाडग्नीत्। अग्नीदित्यग्नीत्॥१४॥

अयँव्वेनो व्वेनोयमयँव्वेनश्चोदयच्चोदयद्वेनोयमयँव्वेनश्चोदयत्। व्वेनश्चोदयच्चोदयद्वेनो व्वेनश्चोदयत्पृश्निंगर्भाः पृश्निंगर्भाश्चोदयद्वेनो व्वेनश्चोदयत्पृश्निंगर्भाः। चोदयत्पृश्निंगर्भाः पृश्निंगर्भाश्चोदयच्चोदयत्पृश्निंगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायुर्ज्ज्योतिर्ज्जरायुः पृश्निंगर्भाश्चोदयच्चोदयत्पृश्निंगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायुः। पृश्निंगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायुर्ज्ज्योतिर्ज्जरायुः पृश्निंगर्भाः पृश्निंगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो रजसो ज्ज्योतिर्ज्जरायुः पृश्निंगर्भाः पृश्निंगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसः। पृश्निंगर्भाऽ इति पृश्नि गर्भाः। ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो रजसो ज्ज्योतिर्ज्जरायुर्ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने व्विमाने रजसो ज्ज्योतिर्ज्जरायुर्ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने। ज्ज्योतिर्ज्जरायुरिति ज्ज्योतिः जरायुः। रजसो व्विमाने व्विमाने रजसो रजसो व्विमाने। व्विमानऽ इति वि माने॥ इममपामपामिममिममपाᳪं सङ्गमे सङ्गमेपामिममिममपाᳪं सङ्गमे[1]। अपाᳪं सङ्गमे सङ्गमेपामपाᳪं सङ्गमे सूर्यस्य

[1]. सङ्गमे अपाम् यहाँ एदोङ्भ्यां पूर्वमकारः (वा. प्रा. ४.६२) से अकार पूर्वरूप हो जाता है। तौ चेदुदात्तावनुदात्ते स्वरितौ (वा. प्रा. ४.६३) से स्वरित स्वर की प्राप्ति है। एदोङ्भ्यामकारो लुगभिनिहितः(वा.प्रा.१.११४) इस सूत्र से अभिनिहित नामक स्वरित का विधान है।

सूर्य्यस्य सङ्गमेपामपा॑ सङ्गमे सूर्य्यस्य। सङ्गमे सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य सङ्गमे सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुः शिशुः सूर्य्यस्य सङ्गमे सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुम्। सङ्गमऽ इति सम् गमे। सूर्य्यस्य शिशुः शिशुः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य शिशुन्न न शिशुः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य शिशुन्न। शिशुन्न न शिशुः शिशुन्न विप्रा विप्रा न शिशुः शिशुन्न विप्राः। न विप्रा विप्रा न न विप्रा मतिभिर्म्मतिभिर्विप्रा न न विप्रा मतिभिः। विप्रा मतिभिर्म्मतिभिर्विप्रा विप्रा मतिभी रिहन्ति रिहन्ति मतिभिर्विप्रा विप्रा मतिभी रिहन्ति। मतिभी रिहन्ति रिहन्ति मतिभिर्म्मतिभी रिहन्ति। मतिभिरिति मति भिः। रिहन्तीति रिहन्ति॥ मर्क्कीय त्वा त्वा मर्क्कीय मर्क्कीय त्वा। त्वेति त्वा॥१५॥

मनो न न मनो मनो न येषु येषु न मनो मनो न येषु। न येषु येषु न न येषु हवनेषु हवनेषु येषु न न येषु हवनेषु। येषु हवनेषु हवनेषु येषु येषु हवनेषु तिग्ममन्तिग्ममः हवनेषु येषु येषु हवनेषु तिग्ममम्। हवनेषु तिग्ममन्तिग्ममः हवनेषु हवनेषु तिग्मँविपो विपस्तिग्ममः हवनेषु हवनेषु तिग्मँविपः[1]। तिग्मँविपो विपस्तिग्ममन्तिग्मँविपः शच्या शच्या विपस्तिग्ममन्तिग्मँविपः शच्या[2]। विपः शच्या शच्या विपो विपः शच्या वनुथो वनुथः शच्या विपो विपः शच्या वनुथः। शच्या वनुथो वनुथः शच्या शच्या वनुथो द्रवन्ता द्रवन्ता वनुथः शच्या शच्या वनुथो द्रवन्ता। वनुथो द्रवन्ता द्रवन्ता वनुथो वनुथो द्रवन्ता। द्रवन्तेति द्रवन्ता॥ आ यो यऽ आ यः शर्व्वाभिः शर्व्वाभिर्व्वऽ आ यः शर्व्वाभिः। यः शर्व्वाभिः शर्व्वाभिर्व्वो यः शर्व्वाभिस्तुविनृम्णस्तुविनृम्णः

1. तिग्मम् विपः यहाँ सवर्णे (वा. प्रा. ४.११२) इस सूत्र से द्वित्व नहीं होता।

2. विसर्जनीयः(वा.प्रा.३.६) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र अविकारं शाकल्यः शषसेषु(वा.प्रा.३.१०) के अनुसार विपः शच्या यहाँ शाकल्याचार्य के मत से विसर्ग का विकार नहीं होता है।

शर्व्वीभिर्व्वो यः शर्व्वीभिस्तुविनृम्म्णः। शर्व्वीभिस्तुविनृम्म्णस्तुविनृम्म्णः शर्व्वीभिः शर्व्वीभिस्तुविनृम्म्णोऽ अस्यास्य तुविनृम्म्णः शर्व्वीभिः शर्व्वीभिस्तुविनृम्म्णोऽ अस्य। तुविनृम्म्णोऽ अस्यास्य तुविनृम्म्णस्तुविनृम्म्णोऽ अस्याश्रीणीताश्रीणीतास्य तुविनृम्म्णस्तुविनृम्म्णोऽ अस्याश्रीणीत। तुविनृम्म्णऽ इति तुवि नृम्म्णः। अस्याश्रीणीताश्रीणीतास्यास्याश्रीणीतादिशमादिशमश्रीणीतास्यास्याश्रीणीतादिशम्। अश्रीणीतादिशमादिशमश्रीणीताश्रीणीतादिशङ्गभस्तौ गभस्तावादिशमश्रीणीताश्रीणीतादिशङ्गभस्तौ। आदिशङ्गभस्तौ गभस्तावादिशमादिशङ्गभस्तौ प्प्रजाः प्प्रजा गभस्तावादिशमादिशङ्गभस्तौ प्प्रजाः। आदिशमित्या दिशम्। गभस्तौ प्प्रजाः प्प्रजा गभस्तौ गभस्तौ प्प्रजाः पाहि पाहि प्प्रजा गभस्तौ गभस्तौ प्प्रजाः पाहि। प्रजाः पाहि पाहि प्प्रजाः प्प्रजाः पाह्यपमृष्टोपमृष्टः पाहि प्प्रजाः प्प्रजाः पाह्यपमृष्टः। प्रजाऽ इति प्प्र जाः। पाह्यपमृष्टोपमृष्टः पाहि पाह्यपमृष्टो मर्क्को मर्क्कोपमृष्टः पाहि पाह्यपमृष्टो मर्क्कः। अपमृष्टो मर्क्को मर्क्कोपमृष्टोपमृष्टो मर्क्को देवा देवा मर्क्कोपमृष्टोपमृष्टो मर्क्को देवाः। अपमृष्टऽ इत्यप मृष्टः। मर्क्को देवा देवा मर्क्को मर्क्को देवास्त्वा त्वा देवा मर्क्को मर्क्को देवास्त्वा। देवास्त्वा त्वा देवा देवास्त्वा मन्थिपा मन्थिपास्त्वा देवा देवास्त्वा मन्थिपाः। त्वा मन्थिपा मन्थिपास्त्वा त्वा मन्थिपाः प्प्र प्प्र मन्थिपास्त्वा त्वा मन्थिपाः प्प्र[1]। मन्थिपाः प्प्र प्प्र मन्थिपा मन्थिपाः प्प्र णयन्तु नयन्तु प्प्र मन्थिपा मन्थिपाः प्प्र णयन्तु[2]। मन्थिपाऽ इति मन्थि पाः। प्र णयन्तु नयन्तु प्प्र प्प्र णयन्त्वनाधृष्टानाधृष्टा नयन्तु प्प्र प्प्र णयन्त्वनाधृष्टा।

---

[1]. मन्थिपाःप्प यहाँ पर व्यञ्जन होने के कारण स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र (वा. प्रा. ४.१०१) इस सूत्र से विसर्जनीय का द्वित्व प्राप्त है, जिसका विसर्जनीयः (वा. प्रा. ४.११६) इस सूत्र से निषेध होता है।

[2]. प्र नयन्तु यहाँ प्र नेतिनुदातिह्निनोमीनाम्(वा.प्रा.३.८८) के अनुसार प्र से परवर्ती नकार णकार होता है।

नयन्त्वनाधृष्टानाधृष्टा नयन्तु नयन्त्वनाधृष्टास्युस्यनाधृष्टा नयन्तु नयन्त्वनाधृष्टासि। अनाधृष्टास्युस्यनाधृष्टानाधृष्टासि। असीत्यसि॥१६॥

सुप्प्रजाः प्प्रजाः प्प्रजाः सुप्प्रजाः सुप्प्रजाः प्प्रजाः प्प्रजनयन्नप्रजनयन्नप्रजाः सुप्प्रजाः सुप्प्रजाः प्प्रजाः प्प्रजनयन्। सुप्प्रजाऽ इति सु प्रजाः। प्रजाः प्प्रजनयन्नप्रजनयन्नप्रजाः प्प्रजाः प्प्रजनयन्नपरि परि प्प्रजनयन्नप्रजाः प्प्रजाः प्प्रजनयन्नपरि। प्रजाऽ इति प्प्र जाः। प्रजनयन्नपरि परि प्प्रजनयन्नप्रजनयन्नपरीहीहि परि प्प्रजनयन्नप्रजनयन्नपरीहि। प्रजनयन्निति प्प्र जनयन्। परीहीहि परि परीह्यभ्भ्यभीहि परि परीह्यभि। इह्यभ्भ्यभीहीह्यभि रायो रायोभीहीह्यभि रायः। अभि रायो रायोभ्भ्यभि रायस्प्पोषेण पोषेण रायोभ्भ्यभि रायस्प्पोषेण। रायस्प्पोषेण पोषेण रायो रायस्प्पोषेण यजमानँय्यजमानम्पोषेण रायो रायस्प्पोषेण यजमानम्। पोषेण यजमानँय्यजमानम्पोषेण पोषेण यजमानम्। यजमानमिति यजमानम्॥ सञ्जग्ग्मानो दिवा दिवा सञ्जग्ग्मानः सञ्जग्ग्मानो दिवा पृथिव्या पृथिव्या दिवा सञ्जग्ग्मानः सञ्जग्ग्मानो दिवा पृथिव्या[1]। सञ्जग्ग्मानऽ इति सम् जग्ग्मानः। दिवा पृथिव्या पृथिव्या दिवा दिवा पृथिव्या मन्थी मन्थी पृथिव्या दिवा दिवा पृथिव्या मन्थी। पृथिव्या मन्थी मन्थी पृथिव्या पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा मन्थिशोचिषा मन्थी पृथिव्या पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा। मन्थी मन्थिशोचिषा मन्थिशोचिषा मन्थी मन्थी मन्थिशोचिषा निरस्तो निरस्तो मन्थिशोचिषा मन्थी मन्थी मन्थिशोचिषा निरस्तः। मन्थिशोचिषा निरस्तो निरस्तो मन्थिशोचिषा मन्थिशोचिषा निरस्तो मर्क्को मर्क्को निरस्तो मन्थिशोचिषा मन्थिशोचिषा निरस्तो मर्क्कः। मन्थिशोचिषेति मन्थि शोचिषा। निरस्तो मर्क्को मर्क्को निरस्तो निरस्तो मर्क्को

[1]. वा.प्रा.४.२८. के अनुसार यहाँ पृथिव्या पद स्वरान्त है।

मुन्थिनो मुन्थिनो मर्को निरस्तो निरस्तो मर्को मुन्थिनः। निरस्तऽ इति निः अस्तः। मर्को मुन्थिनो मुन्थिनो मर्को मर्को मुन्थिनोधिष्ठानमधिस्त्थानम्मुन्थिनो मर्को मर्को मुन्थिनोधिष्ठानम्। मुन्थिनोधिष्ठानमधिस्त्थानम्मुन्थिनो मुन्थिनोधिष्ठानमस्यस्यधिस्त्थानम्मुन्थिनो मुन्थिनोधिष्ठानमसि। अधिष्ठानमस्यस्यधिस्त्थानमधिष्ठानमसि। अधिस्त्थानमित्यधि स्थानम्। असीत्यसि॥१७॥

ये देवासो देवासो ये ये देवासो दिवि दिवि देवासो ये ये देवासो दिवि। देवासो दिवि दिवि देवासो देवासो दिव्येकादशैकादश दिवि देवासो देवासो दिव्येकादश। दिव्येकादशैकादश दिवि दिव्येकादश स्त्थ स्त्थैकादश दिवि दिव्येकादश स्त्थ[1]। एकादश स्त्थ स्त्थैकादशैकादश स्त्थ पृथिव्याम्पृथिव्याँ स्त्थैकादशैकादश स्त्थ पृथिव्याम्। स्त्थ पृथिव्याम्पृथिव्याँ स्त्थ स्त्थ पृथिव्यामद्ध्यधि पृथिव्याँ स्त्थ स्त्थ पृथिव्यामधि। पृथिव्यामद्ध्यधि पृथिव्याम्पृथिव्यामद्ध्येकादशैकादशाधि पृथिव्याम्पृथिव्यामद्ध्येकादश। अद्ध्येकादशैकादशाद्ध्यद्ध्येकादश स्त्थ स्त्थैकादशाद्ध्यद्ध्येकादश स्त्थ। एकादश स्त्थ स्त्थैकादशैकादश स्त्थ[2]। स्त्थेति स्त्थ॥ अप्प्सुक्षितो महिना महिनाप्प्सुक्षितोप्प्सुक्षितो महिनैकादशैकादश महिनाप्प्सुक्षितोप्प्सुक्षितो महिनैकादश। अप्प्सुक्षितऽ इत्यप्प्सु क्षितः। महिनैकादशैकादश महिना महिनैकादश स्त्थ स्त्थैकादश महिना महिनैकादश स्त्थ। एकादश स्त्थ स्त्थैकादशैकादश स्त्थ ते ते स्त्थैकादशैकादश स्त्थ ते। स्त्थ ते ते स्त्थ स्त्थ ते देवासो देवासस्ते स्त्थ स्त्थ ते देवासः। ते

[1]. एकादश एकादश तथा स्त्थ एकादश दोनों स्थलों में अथैकमुत्तरश्चश्र(वा.प्रा.४.५२) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ(वा.प्रा.४.५८) के अनुसार सन्ध्यक्षर ए वाद में होने पर अकार परवर्ती सन्ध्यक्षर के सहित ऐकार होता है।

[2]. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार एकादश पद का पृथक्करण नहीं होता है।

देवासो देवासस्ते ते देवासो यज्ञँय्यज्ञन्देवासस्ते ते देवासो यज्ञम्। देवासो यज्ञँय्यज्ञन्देवासो देवासो यज्ञमिममिमँय्यज्ञन्देवासो देवासो यज्ञमिमम्। यज्ञमिममिमँय्यज्ञँय्यज्ञमिमञ्जुषद्ध्वञ्जुषद्ध्वमिमँय्यज्ञँय्यज्ञमिमञ्जुषद्ध्वम्। इमञ्जुषद्ध्वञ्जुषद्ध्वमिममिमञ्जुषद्ध्वम्। जुषद्ध्वमिति जुषद्ध्वम्॥१८॥

आग्ग्रयणोस्यस्याग्ग्रयणऽ आग्ग्रयणोसि स्वाग्ग्रयणः स्वाग्ग्रयणोस्याग्ग्रयणऽ आग्ग्रयणोसि स्वाग्ग्रयणः[1]। असि स्वाग्ग्रयणः स्वाग्ग्रयणोस्यसि स्वाग्ग्रयणः । स्वाग्ग्रयणऽ इति सु आग्ग्रयणः॥ पाहि यज्ञँय्यज्ञम्पाहि पाहि यज्ञम्पाहि पाहि यज्ञम्पाहि पाहि यज्ञम्पाहि। यज्ञम्पाहि पाहि यज्ञँय्यज्ञम्पाहि यज्ञपतिँय्यज्ञपतिम्पाहि यज्ञँय्यज्ञम्पाहि यज्ञपतिम्। पाहि यज्ञपतिँय्यज्ञपतिम्पाहि पाहि यज्ञपतिँव्विष्णुर्व्विष्णुर्यज्ञपतिम्पाहि पाहि यज्ञपतिँव्विष्णुः। यज्ञपतिँव्विष्णुर्व्विष्णुर्यज्ञपतिँय्यज्ञपतिँव्विष्णुस्त्वान्त्वाँव्विष्णुर्यज्ञपतिँय्यज्ञपतिँव्विष्णुस्त्वाम्। यज्ञपतिमिति यज्ञ पतिम्। व्विष्णुस्त्वान्त्वाँव्विष्णुर्व्विष्णुस्त्वामिन्द्रियेणेन्द्रियेण त्वाँव्विष्णुर्व्विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण। त्वामिन्द्रियेणेन्द्रियेण त्वान्त्वामिन्द्रियेण पातु पात्विन्द्रियेण त्वान्त्वामिन्द्रियेण पातु। इन्द्रियेण पातु पात्विन्द्रियेणेन्द्रियेण पातु व्विष्णुँव्विष्णुम्पात्विन्द्रियेणेन्द्रियेण पातु व्विष्णुम्। पातु व्विष्णुँव्विष्णुम्पातु पातु व्विष्णुन्त्वन्त्वँव्विष्णुम्पातु पातु व्विष्णुन्त्वम्। व्विष्णुन्त्वन्त्वँव्विष्णुँव्विष्णुन्त्वम्पाहि पाहि त्वँव्विष्णुँव्विष्णुन्त्वम्पाहि। त्वम्पाहि पाहि त्वन्त्वम्पाह्यब्भ्यभि पाहि त्वन्त्वम्पाह्यभि[2]। पाह्यब्भ्यभि पाहि पाह्यभि सवनानि सवनान्यभि पाहि

1. ए ओ आभ्यामुदात्ताभ्यामकारो नीच एव च। लुप्यते सन्धिकार्ये यत्तं चाभिनिहितं विदुः॥– व. शि. ६०.

2. अभि अभि यहाँ स्वरे भाव्यन्तस्थाम्(वा.प्रा.४.४७) इस सूत्र से इकार यकार होता है। उदात्तस्यान्तस्थीभावे स्वरितं परमनुदात्तम्(वा.प्रा.४.४९) इस सूत्र से परवर्ती अनुदात्त स्वरित होता है। युवर्णौ यवौ क्षैप्रः(वा.प्रा.१.११५) यह सूत्र क्षैप्र नामक स्वरित का विधान करता है।

पाह्यभि सर्वनानि। अभि सर्वनानि सर्वनान्यभ्यभि सर्वनानि पाहि पाहि सर्वनान्यभ्यभि सर्वनानि पाहि। सर्वनानि पाहि पाहि सर्वनानि सर्वनानि पाहि। पाहीति पाहि॥१९॥

सोमः पवते पवते सोमः सोमः पवते सोमः सोमः पवते सोमः सोमः पवते सोमः[1]। पवते सोमः सोमः पवते पवते सोमः पवते पवते सोमः पवते पवते सोमः पवते। सोमः पवते पवते सोमः सोमः पवतेस्म्माऽ अस्म्मै पवते सोमः सोमः पवतेस्म्मै[2]। पवतेस्म्माऽ अस्म्मै पवते पवतेस्म्मै ब्रह्मणे ब्रह्मणेस्म्मै पवते पवतेस्म्मै ब्रह्मणे। अस्म्मै ब्रह्मणे ब्रह्मणेस्म्माऽ अस्म्मै ब्रह्मणे क्षत्राय क्षत्राय ब्रह्मणेस्म्माऽ अस्म्मै ब्रह्मणे क्षत्राय। ब्रह्मणे क्षत्राय क्षत्राय ब्रह्मणे ब्रह्मणे क्षत्राय सुन्वते सुन्वते क्षत्राय ब्रह्मणे ब्रह्मणे क्षत्राय सुन्वते। क्षत्राय सुन्वते सुन्वते क्षत्राय क्षत्राय सुन्वते यजमानाय यजमानाय सुन्वते क्षत्राय क्षत्राय सुन्वते यजमानाय। सुन्वते यजमानाय यजमानाय सुन्वते सुन्वते यजमानायेषऽ इषे यजमानाय सुन्वते सुन्वते यजमानायेषे। यजमानायेषऽ इषे यजमानाय यजमानायेषऽ ऊर्ज्जऽ ऊर्ज्जऽ इषे यजमानाय यजमानायेषऽ ऊर्ज्जे। इषऽ ऊर्ज्जऽ ऊर्ज्जऽ इषऽ इषऽ ऊर्ज्जेद्भ्योद्भ्यऽ ऊर्ज्जऽ इषऽ इषऽ ऊर्ज्जेद्भ्यः। ऊर्ज्जेद्भ्योद्भ्यऽ ऊर्ज्जऽ ऊर्ज्जेद्भ्यऽ ओषधीभ्यऽ ओषधीभ्योद्भ्यऽ ऊर्ज्जऽ ऊर्ज्जेद्भ्यऽ ओषधीभ्यः। अद्भ्यऽ ओषधीभ्यऽ ओषधीभ्योद्भ्योद्भ्यऽ ओषधीभ्यो द्यावापृथिवीभ्यान्द्यावापृथिवीभ्यामोषधीभ्योद्भ्योद्भ्यऽ ओषधीभ्यो द्यावापृथिवीभ्याम्। अद्भ्यऽ इत्यत् भ्यः। ओषधीभ्यो

---

[1]. सोमः सोमः यहाँ निहितमुदात्तस्वरितपरम्(वा.प्रा.४.१३८) इस सूत्र से उदात बाद में होने से पूर्ववर्ती स्वरित अनुदात होता है।

[2]. पूर्ववाननुदेशः (वा. प्रा. २.७) के अनुसार पूर्ववर्ती पदार्थ का निर्देश करने वाला सर्वनाम पद अनुदात होता है। यहाँ अस्मै पद पूर्ववर्ती पदार्थ का निर्देश नहीं करता है। अतः सर्वानुदात्त नहीं है।

द्यावापृथिवीभ्यान्द्यावापृथिवीभ्यामोषधीभ्यऽ ओषधीभ्यो द्यावापृथिवीभ्याँ सुभूताय सुभूताय द्यावापृथिवीभ्यामोषधीभ्यऽ ओषधीभ्यो द्यावापृथिवीभ्याँ सुभूताय। द्यावापृथिवीभ्याँ सुभूताय सुभूताय द्यावापृथिवीभ्यान्द्यावापृथिवीभ्याँ सुभूताय विश्वेभ्यो विश्वेभ्यः सुभूताय द्यावापृथिवीभ्यान्द्यावापृथिवीभ्याँ सुभूताय विश्वेभ्यः। सुभूताय विश्वेभ्यो विश्वेभ्यः सुभूताय सुभूताय विश्वेभ्यस्त्वा त्वा विश्वेभ्यः सुभूताय सुभूताय विश्वेभ्यस्त्वा। सुभूतायेति सु भूताय। विश्वेभ्यस्त्वा त्वा विश्वेभ्यो विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो देवेभ्यस्त्वा विश्वेभ्यो विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः। त्वा देवेभ्यो देवेभ्यस्त्वा त्वा देवेभ्यः। देवेभ्यऽ इति देवेभ्यः[1]॥२०॥

इन्द्राय त्वा त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा बृहद्वते बृहद्वते त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा बृहद्वते। त्वा बृहद्वते बृहद्वते त्वा त्वा बृहद्वते वयस्वते वयस्वते बृहद्वते त्वा त्वा बृहद्वते वयस्वते। बृहद्वते वयस्वते वयस्वते बृहद्वते बृहद्वते वयस्वतऽ उक्थाव्यमुक्थाव्यँ वयस्वते बृहद्वते बृहद्वते वयस्वतऽ उक्थाव्यम्। बृहद्वतऽ इति बृहत् वते। वयस्वतऽ उक्थाव्यमुक्थाव्यँवयस्वते वयस्वतऽ उक्थाव्यङ्गृह्णामि गृह्णाम्म्युक्थाव्यँवयस्वते वयस्वतऽ उक्थाव्यङ्गृह्णामि। उक्थाव्यङ्गृह्णामि गृह्णाम्म्युक्थाव्यमुक्थाव्यङ्गृह्णामि। उक्थाव्यमित्त्युक्थ अव्यम्। गृह्णामीति गृह्णामि॥ यत्ते ते यद्यत्तऽ इन्द्रेन्द्र ते यद्यत्तऽ इन्द्र। तऽ इन्द्रेन्द्र ते तऽ इन्द्र बृहद् बृहदिन्द्र ते तऽ इन्द्र बृहत्। इन्द्र बृहद् बृहदिन्द्रेन्द्र बृहद्वयो वयो बृहदिन्द्रेन्द्र बृहद्वयः। बृहद्वयो वयो बृहद् बृहद्वयस्तस्म्मै तस्म्मै वयो बृहद् बृहद्वयस्तस्म्मै। वयस्तस्म्मै तस्म्मै वयो वयस्तस्म्मै त्वा त्वा तस्म्मै वयो वयस्तस्म्मै त्वा। तस्म्मै त्वा त्वा तस्म्मै तस्म्मै त्वा विष्ण्णवे विष्ण्णवे त्वा तस्म्मै तस्म्मै त्वा विष्ण्णवे। त्वा विष्ण्णवे

[1]. ह्रस्वव्यञ्जनाभ्यां भकारादौ विभक्तिप्रत्यये(वा.प्रा.५.१३) इस सूत्र के अनुसार देवेभ्यः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

व्विष्ण॑वे त्वा त्वा॒ व्विष्ण॑वे त्वा त्वा॒ व्विष्ण॑वे त्वा त्वा॒ व्विष्ण॑वे त्वा। व्विष्ण॑वे त्वा त्वा॒ व्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वे त्वो॒क्थेभ्य॑ऽ उ॒क्थेभ्य॑स्त्वा॒ व्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वे त्वो॒क्थेभ्य॑ः। त्वो॒क्थेभ्य॑ऽ उ॒क्थेभ्य॑स्त्वा त्वो॒क्थेभ्य॑स्त्वा त्वो॒क्थेभ्य॑स्त्वा त्वो॒क्थेभ्य॑स्त्वा। उ॒क्थेभ्य॑स्त्वा त्वो॒क्थेभ्य॑ऽ उ॒क्थेभ्य॑स्त्वा दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑स्त्वो॒क्थेभ्य॑ऽ उ॒क्थेभ्य॑स्त्वा दे॒वेभ्य॑ः। त्वा॒ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑स्त्वा त्वा दे॒वेभ्य॑स्त्वा त्वा दे॒वेभ्य॑स्त्वा त्वा दे॒वेभ्य॑स्त्वा। दे॒वेभ्य॑स्त्वा त्वा दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑स्त्वा देवा॒व्य॒न्देवा॒व्य॒न्त्वा दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑स्त्वा देवा॒व्य॒म्। त्वा॒ दे॒वा॒व्य॒न्देवा॒व्य॒न्त्वा त्वा देवा॒व्यँ॒य्य॒ज्ञस्य॑ य॒ज्ञस्य॑ देवा॒व्य॒न्त्वा त्वा देवा॒व्यँ॒य्य॒ज्ञस्य॑। दे॒वा॒व्यँ॒य्य॒ज्ञस्य॑ य॒ज्ञस्य॑ देवा॒व्य॒न्देवा॒व्यँ॒य्य॒ज्ञस्यायु॑ष॒ऽ आयु॑षे य॒ज्ञस्य॑ देवा॒व्य॒न्देवा॒व्यँ॒य्य॒ज्ञस्यायु॑षे। दे॒वा॒व्य॒मिति॑ देव अ॒व्य॒म्। य॒ज्ञस्यायु॑ष॒ऽ आयु॑षे य॒ज्ञस्य॑ य॒ज्ञस्यायु॑षे गृ॒ह्णामि गृ॒ह्णा॒म्म्यायु॑षे य॒ज्ञस्य॑ य॒ज्ञस्यायु॑षे गृ॒ह्णामि। आयु॑षे गृ॒ह्णामि गृ॒ह्णा॒म्म्यायु॑ष॒ऽ आयु॑षे गृ॒ह्णामि मि॒त्रावरु॑णाभ्याम्मि॒त्रावरु॑णाभ्याङ्गृ॒ह्णा॒म्म्यायु॑ष॒ऽ आयु॑षे गृ॒ह्णामि मि॒त्रावरु॑णाभ्याम्[1]। गृ॒ह्णा॒मि॒ मि॒त्रावरु॑णाभ्याम्मि॒त्रावरु॑णाभ्याङ्गृ॒ह्णामि गृ॒ह्णामि मि॒त्रावरु॑णाभ्या॒मिन्द्रा॒येन्द्रा॑य मि॒त्रावरु॑णाभ्याङ्गृ॒ह्णामि गृ॒ह्णामि मि॒त्रावरु॑णाभ्या॒मिन्द्रा॑य॥२१॥

मि॒त्रावरु॑णाभ्या॒मिन्द्रा॒येन्द्रा॑य मि॒त्रावरु॑णाभ्याम्मि॒त्रावरु॑णाभ्या॒मिन्द्रा॑येन्द्रा॒ग्निभ्या॑मिन्द्रा॒ग्निभ्या॒मिन्द्रा॑य मि॒त्रावरु॑णाभ्याम्मि॒त्रावरु॑णाभ्या॒मिन्द्रा॑येन्द्रा॒ग्निभ्या॑म्[2]। इन्द्रा॑येन्द्रा॒ग्निभ्या॑मिन्द्रा॒ग्निभ्या॒मिन्द्रा॒येन्द्रा॑येन्द्रा॒ग्निभ्या॒मिन्द्रा॒वरु॑णाभ्या॒मिन्द्रा॒वरु॑णाभ्या॒मिन्द्रा॒ग्निभ्या॒मिन्द्रा॒येन्द्रा॑येन्द्रा॒ग्निभ्या॒मिन्द्रा॒वरु॑णाभ्याम्। इ॒न्द्रा॒ग्निभ्या॒मिन्द्रा॒वरु॑णाभ्या॒मिन्द्रा॒वरु॑णा-

1. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि (वा. प्रा. २.४८) इस सूत्र के अनुसार यहाँ मि॒त्रावरु॑णाभ्याम् पद द्विरुदात्त है।

2. द्वन्द्वे चेन्द्रसोमपूर्वं पूषाग्निवायुषु(वा.प्रा.२.५५) इस सूत्र के अनुसार इन्द्राग्निभ्याम् यह समासात्मक पद अन्तोदात्त है।

ब्भ्यामिन्द्राग्निभ्याम्मिन्द्राग्निब्भ्यामिन्द्रावरुणाब्भ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंब्भ्यामि-
न्द्राबृहस्प्पतिंब्भ्यामिन्द्रावरुणाब्भ्यामिन्द्राग्निब्भ्याम्मिन्द्राग्निब्भ्यामिन्द्रावरु-
णाब्भ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंब्भ्याम्[1]। इन्द्राग्निब्भ्यामितीन्द्राग्नि भ्याम्। इन्द्राव-
रुणाब्भ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंब्भ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंब्भ्यामिन्द्रावरुणाब्भ्यामिन्द्राव-
रुणाब्भ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंब्भ्यामिन्द्राविष्णुंब्भ्यामिन्द्राविष्णुंब्भ्यामिन्द्राबृह-
स्प्पतिंब्भ्यामिन्द्रावरुणाब्भ्यामिन्द्रावरुणाब्भ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंब्भ्यामिन्द्रावि-
ष्णुंब्भ्याम्। इन्द्राबृहस्प्पतिंब्भ्यामिन्द्राविष्णुंब्भ्यामिन्द्राविष्णुंब्भ्यामिन्द्राबृ-
हस्प्पतिंब्भ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंब्भ्यामिन्द्राविष्णुंब्भ्याम्। इन्द्राबृहस्प्पतिंब्भ्या-
मितीन्द्राबृहस्प्पतिं भ्याम्। इन्द्राविष्णुब्भ्यामितीन्द्राविष्णु भ्याम्॥२२॥

मूर्द्धानन्दिवो दिवो मूर्द्धानम्मूर्द्धानन्दिवोऽ अरतिमरतिन्दिवो मूर्द्धान-
म्मूर्द्धानन्दिवोऽ अरतिम्। दिवोऽ अरतिमरतिन्दिवो दिवोऽ अरतिम्पृथिव्याः
पृथिव्याऽ अरतिन्दिवो दिवोऽ अरतिम्पृथिव्याः। अरतिम्पृथिव्याः पृथिव्याऽ
अरतिमरतिम्पृथिव्या व्वैश्वानरंव्वैश्वानरम्पृथिव्याऽ अरतिमरतिम्पृथिव्या व्वैश्वा-
नरम्। पृथिव्या व्वैश्वानरंव्वैश्वानरम्पृथिव्याः पृथिव्या व्वैश्वानरमृतऽ ऋते व्वैश्वा-
नरम्पृथिव्याः पृथिव्या व्वैश्वानरमृते। व्वैश्वानरमृतऽ ऋते व्वैश्वानरंव्वैश्वानरमृतऽ आ
जातञ्जातमऽ ऋते व्वैश्वानरंव्वैश्वानरमृतऽ आ जातम्[2]। ऋतऽ आ जातञ्जातमऽ
ऋतऽ ऋतऽ आ जातमग्निमग्निञ्जातमऽ ऋतऽ ऋतऽ आ जातमग्निम् । आ
जातम्। जातमग्निमग्निञ्जातञ्जातमग्निम्। अग्निमित्यग्निम्॥ कविꣳ
सम्म्राजꣳ सम्म्राजङ्कविङ्कविꣳ सम्म्राजमतिंथिमतिंथिꣳ सम्म्राजङ्कविङ्कविꣳ

---

[1]. इन्द्राबृहस्पतिभ्यामिन्द्राबृहस्पती इति त्रीणि (वा. प्रा. २.४९) इस सूत्र के अनुसार इन्द्राबृहस्पतिंभ्याम् पद में तीन अक्षर उदात्त हैं।

[2]. वा. प्रा. ६.६. के अनुसार यहाँ आ उपसर्ग अनुदात्त नहीं होता है।

सम्म्राजमतिथिम्[1]। सम्म्राजमतिथिमतिथिꣳ सम्म्राजꣳ सम्म्राजमतिथिञ्ज-नानाञ्जनानामतिथिꣳ सम्म्राजꣳ सम्म्राजमतिथिञ्जनानाम्। सम्म्राजमिति सम् राजम्। अतिथिञ्जनानाञ्जनानामतिथिमतिथिञ्जनानामासन्नासञ्जनानामतिथि-मतिथिञ्जनानामासन्। जनानामासन्नासञ्जनानाञ्जनानामासन्ना पात्रम्पात्रमास-ञ्जनानाञ्जनानामासन्ना पात्रम्[2]। आसन्ना पात्रम्पात्रमासन्नासन्ना पात्रञ्जनयन्त जनयन्त पात्रमासन्नासन्ना पात्रञ्जनयन्त। आ पात्रम्। पात्रञ्जनयन्त जनयन्त पात्रम्पात्रञ्जनयन्त देवा देवा जनयन्त पात्रम्पात्रञ्जनयन्त देवाः। जनयन्त देवा देवा जनयन्त जनयन्त देवाः। देवाऽ इति देवाः॥२३॥

ध्रुवोस्यसि ध्रुवो ध्रुवोसि ध्रुवक्षितिर्ध्रुवक्षितिरसि ध्रुवो ध्रुवोसि ध्रुवक्षि-तिः। असि ध्रुवक्षितिर्ध्रुवक्षितिरस्यसि ध्रुवक्षितिर्ध्रुवाणान्ध्रुवाणान्ध्रुवक्षिति-रस्यसि ध्रुवक्षितिर्ध्रुवाणाम्। ध्रुवक्षितिर्ध्रुवाणान्ध्रुवाणान्ध्रुवक्षितिर्ध्रुवक्षिति-र्ध्रुवाणान्ध्रुवतमो ध्रुवतमो ध्रुवाणान्ध्रुवक्षितिर्ध्रुवक्षितिर्ध्रुवाणान्ध्रुवतमः। ध्रुवक्षितिरिति ध्रुव क्षितिः। ध्रुवाणान्ध्रुवतमो ध्रुवतमो ध्रुवाणान्ध्रुवाणान्ध्रुवत-मोच्युतानामच्युतानान्ध्रुवतमो ध्रुवाणान्ध्रुवाणान्ध्रुवतमोच्युतानाम्। ध्रुवतमो-च्युतानामच्युतानान्ध्रुवतमो ध्रुवतमोच्युतानामच्युतक्षित्तमोच्युतक्षित्तमोच्यु-तानान्ध्रुवतमो ध्रुवतमोच्युतानामच्युतक्षित्तमः। ध्रुवतमऽ इति ध्रुव तमः। अच्युतानामच्युतक्षित्तमोच्युतक्षित्तमोच्युतानामच्युतानामच्युतक्षित्तमो वैश्वानराय वैश्वानरायाच्युतक्षित्तमोच्युतानामच्युतानामच्युतक्षित्तमो वैश्वा-नराय। अच्युतक्षित्तमो वैश्वानराय वैश्वानरायाच्युतक्षित्तमोच्युतक्षित्तमो

[1]. प्रकृत्या सम्राड्ढाम्राजि(वा.प्रा.४.६) इस सूत्र में सम्राट् तथा साम्राज् (साम्राज्य) पद में मकार का प्रकृतिभाव कहा है। यहाँ सम्राजम् सम्राट् पद का द्वितीया का एकवचन है।

[2]. वा. प्रा. ६.२६. के अनुसार पात्रम् पद में दो स्पर्श हैं।

वैश्वानरायं त्वा त्वा वैश्वानरायाच्युतक्षित्तंमोच्युतक्षित्तंमो वैश्वानरायं त्वा। अच्युतक्षित्तमऽ इत्यंच्युतक्षित् तंमः। वैश्वानरायं त्वा त्वा वैश्वानरायं वैश्वानरायं त्वा। त्वेतिं त्वा॥ ध्रुवन्ध्रुवेणं ध्रुवेणं ध्रुवन्ध्रुवन्ध्रुवेण मनंसा मनंसा ध्रुवेणं ध्रुवन्ध्रुवन्ध्रुवेण मनंसा। ध्रुवेण मनंसा मनंसा ध्रुवेणं ध्रुवेण मनंसा वाचा वाचा मनंसा ध्रुवेणं ध्रुवेण मनंसा वाचा। मनंसा वाचा वाचा मनंसा मनंसा वाचा सोमꣳ सोमँवाचा मनंसा मनंसा वाचा सोमंम्। वाचा सोमꣳ सोमँवाचा वाचा सोममवाव सोमँवाचा वाचा सोममवं। सोममवाव सोमꣳ सोममवं नयामि नयाम्म्यव सोमꣳ सोममवं नयामि। अवं नयामि नयाम्म्यवावं नयामि। नयामीतिं नयामि॥ अर्था नो नोथाथां नऽ इन्द्रऽ इन्द्रो नोथाथां नऽ इन्द्रं÷। नऽ इन्द्रऽ इन्द्रों नो नऽ इन्द्रऽ इदिदिन्द्रों नो नऽ इन्द्रऽ इत्। इन्द्रऽ इदिदिन्द्रऽ इन्द्रऽ इद्विशो विशऽ इदिन्द्रऽ इन्द्रऽ इद्विशं÷। इद्विशो विशऽ इदिद्विशोंसपत्नाऽ अंसपत्ना विशऽ इदिद्विशोंसपत्नाः[1]। विशोंसपत्नाऽ अंसपत्ना विशो विशोंसपत्नाः समंनसः समंनसोसपत्ना विशो विशोंसपत्नाः समंनसः। असपत्नाः समंनसः समंनसोसपत्नाऽ अंसपत्नाः समंनसस्करत्करत्समंनसोसपत्नाऽ अंसपत्नाः समंनसस्करंत्[2]। समंनसस्करत्करत्समंनसः समंनसस्करंत्। समंनसऽ इति स मंनसः। करदिति करंत्॥२४॥

यस्तें ते यो यस्तें द्रप्सो द्रप्सस्ते यो यस्तें द्रप्सः। ते द्रप्सो द्रप्सस्तें ते द्रप्स स्कन्दंति स्कन्दंन्ति द्रप्सस्तें ते द्रप्स स्कन्दंति। द्रप्स स्कन्दंति स्कन्दंति द्रप्सो द्रप्स स्कन्दंति यो य स्कन्दंति द्रप्सो द्रप्स स्कन्दंति यः।

---

1. वा.प्रा.४.७१. के अनुसार यहाँ विशः से सम्बन्धित ओकार से परवर्ती अकार अभिनिधान को प्राप्त होता है।

2. वा. प्रा. ६.१८. के अनुसार यहाँ करंत् यह आख्यात पद अपने प्रकृतिस्वर से युक्त होता है। कविष्करत्कृधिषु(वा.प्रा.३.३२) इस सूत्र के अनुसार करत् बाद में होने पर यहाँ समनसः पद का विसर्जनीय सकार होता है।

स्कन्द॑ति॒ यो य स्कन्द॑ति स्कन्द॑ति॒ यस्ते॑ ते॒ य स्कन्द॑ति॒ स्कन्द॑ति॒ यस्ते॑। यस्ते॑ ते॒ यो यस्ते॑ऽ अ॒ꣳशुर॒ꣳशुस्ते॒ यो यस्ते॑ऽ अ॒ꣳशुः। ते॒ऽ अ॒ꣳशुर॒ꣳशुस्ते॑ ते॒ऽ अ॒ꣳशुर्ग्ग्राव॑च्युतो॒ ग्ग्राव॑च्युतो॒ꣳशुस्ते॑ ते॒ऽ अ॒ꣳशुर्ग्ग्राव॑च्युतः। अ॒ꣳशुर्ग्ग्राव॑च्युतो॒ ग्ग्राव॑च्युतो॒ꣳशुर॒ꣳशुर्ग्ग्राव॑च्युतो धि॒षण॑योर्द्धि॒षण॑यो॒र्ग्ग्राव॑च्युतो॒ꣳशुर॒ꣳशुर्ग्ग्राव॑च्युतो धि॒षण॑योः। ग्राव॑च्युतो धि॒षण॑योर्द्धि॒षण॑यो॒र्ग्ग्राव॑च्युतो॒ ग्ग्राव॑च्युतो धि॒षण॑योरु॒पस्त्था॑दु॒पस्त्था॑द्धि॒षण॑यो॒र्ग्ग्राव॑च्युतो॒ ग्ग्राव॑च्युतो धि॒षण॑योरु॒पस्त्था॑त्। ग्राव॑च्युत॒ऽ इति॒ ग्ग्राव॑ च्युतः। धि॒षण॑योरु॒पस्त्था॑दु॒पस्त्था॑द्धि॒षण॑योर्द्धि॒षण॑योरु॒पस्त्था॑त्। उ॒पस्त्था॒दित्यु॒प स्त्था॑त्॥ अ॒द्धु॒र्व्वोर्व्वा॑ वाद्धुर्व्वोर॑द्धु॒र्व्वोर्व्वा॒ परि॒ परि॑ वाद्धुर्व्वोर॑द्धु॒र्व्वोर्व्वा॒ परि॑। व्वा॒ परि॒ परि॑ वा वा॒ परि॑ वा वा॒ परि॑ वा वा॒ परि॑ वा। परि॑ वा वा॒ परि॒ परि॑ वा॒ यो यो वा॒ परि॒ परि॑ वा॒ यः। व्वा॒ यो यो वा॑ वा॒ यः प॒वित्रा॑त्प॒वित्रा॒द्यो वा॑ वा॒ यः प॒वित्रा॑त्। यः प॒वित्रा॑त्प॒वित्रा॒द्यो यः प॒वित्रा॒त्तन्तम्प॒वित्रा॒द्यो यः प॒वित्रा॒त्तम्। प॒वित्रा॒त्तन्तम्प॒वित्रा॑त्प॒वित्रा॒त्तन्ते॑ ते॒ तम्प॒वित्रा॑त्प॒वित्रा॒त्तन्ते॑। तन्ते॑ ते॒ तन्तन्ते॑ जुहोमि जुहोमि ते॒ तन्तन्ते॑ जुहोमि। ते॒ जु॒हो॒मि॒ जु॒हो॒मि॒ ते॒ ते॒ जु॒हो॒मि॒ मन॑सा॒ मन॑सा जुहोमि ते ते जुहोमि॒ मन॑सा। जु॒हो॒मि॒ मन॑सा॒ मन॑सा जुहोमि जुहोमि॒ मन॑सा॒ व्वष॑ट्ट्कृत॒ँव्वष॑ट्ट्कृत॒म्मन॑सा जुहोमि जुहोमि॒ मन॑सा॒ व्वष॑ट्ट्कृतम्[1]। मन॑सा॒ व्वष॑ट्ट्कृत॒ँव्वष॑ट्ट्कृत॒म्मन॑सा॒ मन॑सा॒ व्वष॑ट्ट्कृत॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वष॑ट्ट्कृत॒म्मन॑सा॒ मन॑सा॒ व्वष॑ट्ट्कृत॒ꣳ स्वाहा॑। व्वष॑ट्ट्कृत॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वष॑ट्ट्कृत॒ँव्वष॑ट्ट्कृत॒ꣳ स्वाहा॑ दे॒वाना॑न्दे॒वाना॒ꣳ स्वाहा॒ व्वष॑ट्ट्कृत॒ँव्वष॑ट्ट्कृत॒ꣳ स्वाहा॑ दे॒वाना॑म्। व्वष॑ट्ट्कृत॒मिति॒ वष॑ट् कृतम्। स्वाहा॑ दे॒वाना॑न्दे॒वाना॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ दे॒वाना॑मु॒त्क्रम॑णमु॒त्क्रम॑णन्दे॒वाना॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ दे॒वाना॑मु॒त्क्रम॑णम्। दे॒वाना॑मु॒त्क्रम॑णमु॒त्क्रम॑णन्दे॒वाना॑-

---

1. यहाँ वा.प्रा.४.१०१. के अनुसार टकार का द्वित्व होगा।

न्देवानामुत्क्रमणमस्यस्युत्क्रमणन्देवानान्देवानामुत्क्रमणमसि। उत्क्रमणमस्यस्युत्क्रमणमुत्क्रमणमसि। उत्क्रमणमित्युत् क्रमणम्। असीत्यसि॥२५॥

प्राणाय मे मे प्प्राणाय प्प्राणाय मे व्वर्चोदा व्वर्चोदा मे प्प्राणाय प्प्राणाय मे व्वर्चोदाः। मे व्वर्चोदा व्वर्चोदा मे मे व्वर्चोदा व्वर्चसे व्वर्चसे व्वर्चोदा मे मे व्वर्चोदा व्वर्चसे। व्वर्चोदा व्वर्चसे व्वर्चसे व्वर्चोदा व्वर्चोदा व्वर्चसे पवस्व पवस्व व्वर्चसे व्वर्चोदा व्वर्चोदा व्वर्चसे पवस्व। व्वर्चोदाऽ इति वर्चः दाः। व्वर्चसे पवस्व पवस्व व्वर्चसे व्वर्चसे पवस्व व्यानाय व्यानाय पवस्व व्वर्चसे व्वर्चसे पवस्व व्यानाय। पवस्व व्यानाय व्यानाय पवस्व पवस्व व्यानायोदानायोदानाय व्यानाय पवस्व पवस्व व्यानायोदानाय। व्यानायोदानायोदानाय व्यानाय व्यानायोदानाय व्वाचे व्वाचऽ उदानाय व्यानाय व्यानायोदानाय व्वाचे। व्यानायेति वि आनाय। उदानाय व्वाचे व्वाचऽ उदानायोदानाय व्वाचे क्क्रतूदक्षाभ्याङ्क्रतूदक्षाभ्याँव्वाचऽ उदानायोदानाय व्वाचे क्क्रतूदक्षाभ्याम्।[1] उदानायेत्युत् आनाय। व्वाचे क्क्रतूदक्षाभ्याङ्क्रतूदक्षाभ्याँव्वाचे व्वाचे क्क्रतूदक्षाभ्याᳮ श्श्रोत्राय श्श्रोत्राय क्क्रतूदक्षाभ्याँव्वाचे व्वाचे क्क्रतूदक्षाभ्याᳮ श्श्रोत्राय। क्रतूदक्षाभ्याᳮ श्श्रोत्राय श्श्रोत्राय क्क्रतूदक्षाभ्याङ्क्रतूदक्षाभ्याᳮ श्श्रोत्राय चक्क्षुर्भ्याञ्चक्क्षुर्भ्याᳮ श्श्रोत्राय क्क्रतूदक्षाभ्याङ्क्रतूदक्षाभ्याᳮ श्श्रोत्राय चक्क्षुर्भ्याम्। श्श्रोत्राय चक्क्षुर्भ्याञ्चक्क्षुर्भ्याᳮ श्श्रोत्राय श्श्रोत्राय चक्क्षुर्भ्याम्मे मे चक्क्षुर्भ्याᳮ श्श्रोत्राय श्श्रोत्राय चक्क्षुर्भ्याम्मे। चक्क्षुर्भ्याम्मे मे चक्क्षुर्भ्याञ्चक्क्षुर्भ्याम्मे व्वर्चोदसौ व्वर्चोदसौ मे चक्क्षुर्भ्याञ्चक्क्षुर्भ्याम्मे व्वर्चोदसौ। चक्क्षुर्भ्यामिति चक्क्षुः भ्याम्। मे व्वर्चोदसौ व्वर्चोदसौ मे मे व्वर्चोदसौ व्वर्चसे व्वर्चसे व्वर्चोदसौ मे मे व्वर्चोदसौ व्वर्चसे। व्वर्चोदसौ व्वर्चसे व्वर्चसे व्वर्चोदसौ व्वर्चोदसौ व्वर्चसे पवेथाम्पवेथाँव्वर्चसे व्वर्चोदसौ व्वर्चोदसौ व्वर्चसे पवेथाम्।

[1]. वा.मा.२.४७. के अनुसार क्रतूदक्षाभ्याम् पद द्विरुदात है।

व्र्चोदसाविति वर्चः दसौ। व्र्चसे पवेथाम्पवेथाँव्र्चसे व्र्चसे पवेथामात्मनेऽ आत्मने पवेथाँव्र्चसे व्र्चसे पवेथामात्मने। पवेथामात्मानेऽ आत्मने पवे-थाम्पवेथामात्मनऽ ओजसऽ ओजसऽ आत्मने पवेथाम्पवेथामात्मनऽ ओजसे॥ आत्मनऽ ओजसऽ ओजसऽ आत्मनेऽ आत्मनऽ ओजसऽ आयुषऽ आयुषऽ ओजसऽ आत्मनेऽ आत्मनऽ ओजसऽ आयुषे। ओजसऽ आयुषऽ आयुषऽ ओजसऽ ओजसऽ आयुषे व्विश्वाब्भ्यो व्विश्वाब्भ्यऽ आयुषऽ ओजसऽ ओजसऽ आयुषे व्विश्वाब्भ्यः। आयुषे व्विश्वाब्भ्यो व्विश्वाब्भ्यऽ आयुषऽ आयुषे व्विश्वाब्भ्यो मे मे व्विश्वाब्भ्यऽ आयुषऽ आयुषे व्विश्वाब्भ्यो मे। व्विश्वाब्भ्यो मे मे व्विश्वाब्भ्यो व्विश्वाब्भ्यो मे प्प्रजाब्भ्यः प्प्रजाब्भ्यो मे व्विश्वाब्भ्यो व्विश्वाब्भ्यो मे प्प्रजाब्भ्यः। मे प्प्रजाब्भ्यः प्प्रजाब्भ्यो मे मे प्प्रजाब्भ्यः। प्रजाब्भ्यऽ इति प्प्र जाब्भ्यः॥२६॥

कोऽस्यसि कः कोऽसि कतमः कतमोऽसि कः कोऽसि कतमः[1]। असि कतमः कतमोऽस्यसि कतमः कस्य कस्य कतमोऽस्यसि कतमः कस्य। कतमः कस्य कस्य कतमः कतमः कस्य कः कः कस्य कतमः कतमः कस्य कः। कस्य कः कः कस्य कस्य को नाम नाम कः कस्य कस्य को नाम। को नाम नाम कः को नाम। नामेति नाम॥ यस्य ते ते यस्य यस्य ते नाम नाम ते यस्य यस्य ते नाम[2]। ते नाम नाम ते ते नामामन्महमुह्यमन्महि नाम ते ते नामामन्महि। नामामन्महमुह्यमन्महि नाम नामामन्महि यँव्यममन्महि नाम नामामन्महि यम्। अमन्महि यँव्यममन्महमुह्यमन्महि यन्त्वा त्वा यममन्महमुह्य-

---

[1]. कः असि यहाँ पर यजुष्षु च (वा. प्रा. ४.८०) इस सूत्र से विसर्जनीय से सम्बन्धित ओकार से परवर्ती अकार का अभिनिधान होता है।

[2]. वो वां ते त्वदर्थे(वा.प्रा.२.५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ ते पद अनुदात्त है।

मन्महि यन्त्वा। यन्त्वा त्वा यँऽयन्त्वा सोमेन सोमेन त्वा यँऽयन्त्वा सोमेन। त्वा सोमेन सोमेन त्वा त्वा सोमेनातीतृपामातीतृपाम सोमेन त्वा त्वा सोमेना-तीतृपाम। सोमेनातीतृपामातीतृपाम सोमेन सोमेनातीतृपाम। अतीतृपामेत्यतीं-तृपाम॥२७॥

मधवे त्वा त्वा मधवे मधवे त्वा माधवाय माधवाय त्वा मधवे मधवे त्वा माधवाय। त्वा माधवाय माधवाय त्वा त्वा माधवाय शुक्राय शुक्राय माधवाय त्वा त्वा माधवाय शुक्राय। माधवाय शुक्राय शुक्राय माधवाय माधवाय शुक्राय शुचये शुचये शुक्राय माधवाय माधवाय शुक्राय शुचये। शुक्राय शुचये शुचये शुक्राय शुक्राय शुचये नभसे नभसे शुचये शुक्राय शुक्राय शुचये नभसे। शुचये नभसे नभसे शुचये शुचये नभसे नभस्याय नभस्याय नभसे शुचये शुचये नभसे नभस्याय। नभसे नभस्याय नभस्याय नभसे नभसे नभस्यायेषऽ इषे नभस्याय नभसे नभसे नभस्यायेषे। नभस्यायेषऽ इषे नभस्याय नभस्यायेषऽ ऊर्ज्जऽ ऊर्ज्जऽ इषे नभस्याय नभस्यायेषऽ ऊर्ज्जे। इषऽ ऊर्ज्जऽ ऊर्ज्जऽ इषऽ इषऽ ऊर्ज्जे सहसे सहसऽ ऊर्ज्जऽ इषऽ इषऽ ऊर्ज्जे सहसे। ऊर्ज्जे सहसे सहसऽ ऊर्ज्जऽ ऊर्ज्जे सहसे सहस्याय सहस्याय सहसऽ ऊर्ज्जऽ ऊर्ज्जे सहसे सहस्याय। सहसे सहस्याय सहस्याय सहसे सहसे सहस्याय तपसे तपसे सहस्याय सहसे सहसे सहस्याय तपसे। सहस्याय तपसे तपसे सहस्याय सहस्याय तपसे तपस्याय तपस्याय तपसे सहस्याय सहस्याय तपसे तपस्याय। तपसे तपस्याय तपस्याय तपसे तपसे तपस्यायाᳪहसस्पतयेᳪहसः पतये तपस्याय तपसे तपसे तपस्यायाᳪहसस्पतये[1]। तपस्यायाᳪहसस्पतयेᳪहसः पतये तपस्याय तपस्यायाᳪहसस्पतये। अᳪहसः पतयऽ इत्यᳪहसः पतये॥२८॥

[1]. समानपदे च(वा.प्रा.३.३०) इस सूत्र के अनुसार अᳪहसःपतये इस एक पद में विद्यमान विसर्जनीय सकार होता है।

इन्द्राग्नीऽ आ गंतङ्गतमेन्द्राग्नीऽ इन्द्राग्नीऽ आ गंतꣳ सुतꣳ सुतङ्गंतमेन्द्राग्नीऽ इन्द्राग्नीऽ आ गंतꣳ सुतम्[1]। इन्द्राग्नीऽ इतीन्द्राग्नी। आ गंतम्। गतꣳ सुतꣳ सुतङ्गंतङ्गतꣳ सुतङ्गीर्भिर्गीर्भिः सुतङ्गंतङ्गतꣳ सुतङ्गीर्भिः। सुतङ्गीर्भिर्गीर्भिः सुतꣳ सुतङ्गीर्भिर्नभो नभो गीर्भिः सुतꣳ सुतङ्गीर्भिर्नभः। गीर्भिर्नभो नभो गीर्भिर्गीर्भिर्नभो वरेण्यँवरेण्यन्नभो गीर्भिर्गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। गीर्भिरिति गीः भिः। नभो वरेण्यँवरेण्यन्नभो नभो वरेण्यम्। वरेण्यमिति वरेण्यम्॥ अस्य पातम्पातमस्यास्य पातन्धिया धिया पातमस्यास्य पातन्धिया[2]। पातन्धिया धिया पातम्पातन्धियेषितेषिता धिया पातम्पातन्धियेषिता। धियेषितेषिता धिया धियेषिता। इषितेतीषिता॥ इन्द्राग्निभ्यान्त्वा त्वेन्द्राग्निभ्यामिन्द्राग्निभ्यान्त्वा। इन्द्राग्निभ्यामितीन्द्राग्निभ्याम्। त्वेति त्वा॥२९॥

आ घ घा घा ये ये घा घा ये। घा ये ये घ घा येऽ अग्निमग्निँय्ये घ घा येऽ अग्निम्। येऽ अग्निमग्निँय्ये येऽ अग्निमिन्धतऽ इन्धतेग्निँय्ये येऽ अग्निमिन्धते। अग्निमिन्धतऽ इन्धतेग्निमग्निमिन्धते स्तृणन्ति स्तृणन्तीन्धतेग्निमग्निमिन्धते स्तृणन्ति। इन्धते स्तृणन्ति स्तृणन्तीन्धतऽ इन्धते स्तृणन्ति बर्हिर्बर्हि स्तृणन्तीन्धतऽ इन्धते स्तृणन्ति बर्हिः। स्तृणन्ति बर्हिर्बर्हि स्तृणन्ति स्तृणन्ति बर्हिरानुषगानुषग्बर्हि स्तृणन्ति स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्। बर्हिरानुषगानुषग्बर्हिर्बर्हिरानुषक्। आनुषगित्यानुषक्॥ येषामिन्द्रऽ इन्द्रो येषाँय्येषामिन्द्रो युवा युवेन्द्रो येषाँय्येषामिन्द्रो युवा। इन्द्रो युवा युवेन्द्रऽ इन्द्रो युवा सखा सखा

---

[1]. वा. प्रा. ३.९२. के अनुसार इन्द्राग्नी का नकार प्रकृतिभाव से रहता है।

[2]. वा.प्रा.२.६२. के अनुसार पातम् पद बाद में होने से यहाँ अस्य यह पद अन्तोदात्त है।

युवेन्द्रऽ इन्द्रो युवा सखा। युवा सखा सखा युवा युवा सखा। सखेति सखा॥ अग्नीन्द्राभ्यान्त्वा त्वाग्नीन्द्राभ्यामग्नीन्द्राभ्यान्त्वा[1]। त्वेति त्वा॥३०॥

ओमासश्चर्षणीधृतश्चर्षणिधृतऽ ओमासऽ ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे विश्वे चर्षणिधृतऽ ओमासऽ ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे। चर्षणीधृतो विश्वे विश्वे चर्षणिधृतश्चर्षणीधृतो विश्वे देवासो देवासो विश्वे चर्षणिधृतश्चर्षणीधृतो विश्वे देवासः। चर्षणिधृतऽ इति चर्षणि धृतः। विश्वे देवासो देवासो विश्वे विश्वे देवासऽ आ गत गता देवासो विश्वे विश्वे देवासऽ आ गत। देवासऽ आ गत गता देवासो देवासऽ आ गत। आ गत। गतेति गत॥ दाश्वाᳬसो दाशुषो दाशुषो दाश्वाᳬसो दाश्वाᳬसो दाशुषः सुतᳬ सुतन्दाशुषो दाश्वाᳬसो दाश्वाᳬसो दाशुषः सुतम्। दाशुषः सुतᳬ सुतन्दाशुषो दाशुषः सुतम्। सुतमिति सुतम्॥३१॥

शृणुता मे मे शृणुत शृणुता मऽ इममिमम्मे शृणुत शृणुता मऽ इमम्[2]। मऽ इममिमम्मे मऽ इमᳬ हवᳬ हवमिमम्मे मऽ इमᳬ हवम्। इमᳬ हवᳬ हवमिममिमᳬ हवम्। हवमिति हवम्॥ एदमिदमेदम्बर्हिर्बर्हिरिदमेदम्बर्हिः। इदम्बर्हिर्बर्हिरिदमिदम्बर्हिर्न्नि नि बर्हिरिदमिदम्बर्हिर्न्नि। बर्हिर्न्नि नि बर्हिर्बर्हिर्न्नि षीदत सीदत नि बर्हिर्बर्हिर्न्नि षीदत[3]। नि षीदत सीदत नि नि षीदत। सीदतेति सीदत॥३२॥

इन्द्र मरुत्वो मरुत्वऽ इन्द्रेन्द्र मरुत्वऽ इहेह मरुत्वऽ इन्द्रेन्द्र मरुत्वऽ इह। मरुत्वऽ इहेह मरुत्वो मरुत्वऽ इह पाहि पाहीह मरुत्वो मरुत्वऽ इह पाहि। इह पाहि पाहीहेह पाहि सोमᳬ सोमम्पाहीहेह पाहि सोमम्। पाहि सोमᳬ

---

[1]. अग्निश्चेन्द्रे (वा. प्रा. २.५६) इस सूत्र के अनुसार अग्निपूर्वपद एवं इन्द्रोतरपद वाला देवता द्वन्द्व समास अन्तोदात होता है।

[2]. वा.प्रा.३.११६. के अनुसार मकार बाद में रहने से यहाँ शृणुत पद का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है।

[3]. नेः सीदतेः (वा. प्रा. ३.५९) नि से परे सीदति का सकार षकार हो जाता है।

सोम॑म्पाहि पाहि॒ सोम॑ँय्यथा॒ यथा॒ सोम॑म्पाहि पाहि॒ सोम॑ँय्यथा॑। सोम॑ँय्यथा॒ यथा॒ सोम॒ꣳ सोम॑ँय्यथा॑ शार्य्या॒ते शा॑र्य्या॒ते यथा॒ सोम॒ꣳ सोम॑ँय्यथा॑ शार्य्या॒ते। यथा॑ शार्य्या॒ते शा॑र्य्या॒ते यथा॒ यथा॑ शार्य्या॒तेऽ अपि॒बोपि॑बः शार्य्या॒ते यथा॒ यथा॑ शार्य्या॒तेऽ अपि॑बः। शा॒र्य्या॒तेऽ अपि॒बोपि॑बः शार्य्या॒ते शा॑र्य्या॒तेऽ अपि॑बः सु॒तस्य॑ सु॒तस्यापि॑बः शार्य्या॒ते शा॑र्य्या॒तेऽ अपि॑बः सु॒तस्य॑। अपि॑बः सु॒तस्य॑ सु॒तस्यापि॒बोपि॑बः सु॒तस्य॑। सु॒तस्येति॑ सु॒तस्य॑॥ तव॒ प्प्रणी॑ती॒ प्प्रनी॑ती॒ तव॒ तव॒ प्प्रणी॑ती॒ तव॒ तव॒ प्प्रनी॑ती॒ तव॒ तव॒ प्प्रणी॑ती॒ तव॑। प्रणी॑ती॒ तव॒ तव॒ प्प्रनी॑ती॒ प्प्रणी॑ती॒ तव॑ शूर शूर॒ तव॒ प्प्रनी॑ती॒ प्प्रणी॑ती॒ तव॑ शूर। प्रनी॒तीति॒ प्प्र नी॑ती। तव॑ शूर शूर॒ तव॒ तव॑ शूर॒ शर्म्म॒ञ्छर्म्म॑ञ्छूर॒ तव॒ तव॑ शूर॒ शर्म्म॑न्। शूर॒ शर्म्म॒ञ्छर्म्म॑ञ्छूर शूर॒ शर्म्म॒न्ना विं॑वासन्ति व्विवास॒न्त्या शर्म्म॑ञ्छूर शूर॒ शर्म्म॒न्ना विं॑वासन्ति। शर्म्म॒न्ना विं॑वासन्ति व्विवास॒न्त्या शर्म्म॒ञ्छर्म्म॒न्ना विं॑वासन्ति क॒वय॑ः क॒वयो॑ व्विवास॒न्त्या शर्म्म॒ञ्छर्म्म॒न्ना विं॑वासन्ति क॒वय॑ः। आ विं॑वासन्ति। व्वि॒वा॒स॒न्ति॒ क॒वय॑ः क॒वयो॑ व्विवासन्ति व्विवासन्ति क॒वय॑ः सु॒य॒ज्ज्ञाः सुं॒य॒ज्ज्ञाः क॒वयो॑ व्विवासन्ति व्विवासन्ति क॒वय॑ः सु॒य॒ज्ज्ञाः। क॒वय॑ः सु॒य॒ज्ज्ञाः सुं॒य॒ज्ज्ञाः क॒वय॑ः क॒वय॑ः सु॒य॒ज्ज्ञाः। सु॒य॒ज्ज्ञाऽ इति॑ सु य॒ज्ज्ञाः॥ इन्द्रा॑य त्वा॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रा॑य त्वा म॒रुत्व॑ते म॒रुत्व॑ते॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रा॑य त्वा म॒रुत्व॑ते। त्वा॒ म॒रुत्व॑ते म॒रुत्व॑ते त्वा त्वा म॒रुत्व॑ते। म॒रुत्व॑त॒ऽ इति॑ म॒रुत्व॑ते॥३३॥

म॒रुत्व॑न्तँव्वृष॒भँव्वृ॑ष॒भम्म॒रुत्व॑न्तम्म॒रुत्व॑न्तँव्वृष॒भँव्वा॑वृधा॒नँव्वा॑वृधा॒नँव्वृ॑ष॒भम्म॒रुत्व॑न्तम्म॒रुत्व॑न्तँव्वृष॒भँव्वा॑वृधा॒नम्[1]। व्वृ॒ष॒भँव्वा॑वृधा॒नँव्वा॑वृधा॒नँव्वृ॑ष॒भँव्वृ॑ष॒भँव्वा॑वृधा॒नमक॑वारि॒मक॑वारिँव्वावृधा॒नँव्वृ॑ष॒भँव्वृ॑ष॒भँव्वा॑वृधा॒नमक॑वारिम्। व्वा॒वृ॒धा॒नमक॑वारि॒मक॑वारिँव्वावृधा॒नँव्वा॑वृधा॒नमक॑वारिन्दि॒व्यन्दि॒व्यमक॑वारिँव्वावृधा॒नँव्वा॑वृधा॒नमक॑वारि-

[1]. वव्वृधानम् यहाँ व वृधवृजोः(वा.प्रा.३.११२) इस सूत्र के अनुसार वृध परे रहने से व का स्वर दीर्घ होता है।

न्दिद्ध्यम्। व्वृधानमितिं ववृधानम्। अर्कवारिन्दिद्ध्यन्दिद्ध्यमर्कवारिमर्कवारिन्दिद्ध्यꣳ शासꣳ शासन्दिद्ध्यमर्कवारिमर्कवारिन्दिद्ध्यꣳ शासम्। अर्कवारिमित्यर्कव अरिम्। दिद्ध्यꣳ शासꣳ शासन्दिद्ध्यन्दिद्ध्यꣳ शासमिन्द्रमिन्द्रꣳ शासन्दिद्ध्यन्दिद्ध्यꣳ शासमिन्द्रम्। शासमिन्द्रमिन्द्रꣳ शासꣳ शासमिन्द्रम्। इन्द्रमितीन्द्रम्॥ व्विश्श्वासाहमवसेवसे व्विश्श्वसहँव्विश्श्वासाहमवसे नूतनाय नूतनायावसे व्विश्श्वसहँव्विश्श्वासाहमवसे नूतनाय[1]। व्विश्श्वसहमितिं विश्श्व सहम्। अवसे नूतनाय नूतनायावसेवसे नूतनायोग्ग्रमुग्ग्रन्नूतनायावसेवसे नूतनायोग्ग्रम्। नूतनायोग्ग्रमुग्ग्रन्नूतनाय नूतनायोग्ग्रꣳ संहोदाꣳ संहोदामुग्ग्रन्नूतनाय नूतनायोग्ग्रꣳ संहोदाम्। उग्ग्रꣳ संहोदाꣳ संहोदामुग्ग्रमुग्ग्रꣳ संहोदामिहेह संहोदामुग्ग्रमुग्ग्रꣳ संहोदामिह। सहोदामिहेह संहोदाꣳ संहोदामिह तन्तमिह संहोदाꣳ संहोदामिह तम्। सहोदामितिं सहः दाम्। इह तन्तमिहेह तꣳ हुवेम हुवेम तमिहेह तꣳ हुवेम। तꣳ हुवेम हुवेम तन्तꣳ हुवेम। हुवेमेतिं हुवेम॥ मरुताव्त्वा त्वा मरुताम्मरुतान्त्वौजसऽ ओजसे त्वा मरुताम्मरुतान्त्वौजसे।[2] त्वौजसऽ ओजसे त्वा त्वौजसे। ओजसऽ इत्योजसे॥३४॥

सजोषाऽ इन्द्रेन्द्र सजोषाः सजोषाऽ इन्द्र सगणः सगणऽ इन्द्र सजोषाः सजोषाऽ इन्द्र सगणः। सजोषाऽ इतिं स जोषाः। इन्द्र सगणः सगणऽ इन्द्रेन्द्र सगणो मरुद्भिर्म्मरुद्भिः सगणऽ इन्द्रेन्द्र सगणो मरुद्भिः। सगणो मरुद्भिर्म्मरुद्भिः सगणः सगणो मरुद्भिः सोमꣳ सोमम्मरुद्भिः सगणः सगणो मरुद्भिः सोमम्। सगणऽ इति स गणः। मरुद्भिः सोमꣳ सोमम्मरुद्भिर्म्मरुद्भिः सोमम्पिब पिब सोमम्मरुद्भिर्म्मरुद्भिः सोमम्पिब। मरुद्भिरितिं मरुत् भिंः।

---

[1]. विश्वसहभुवपुषवसुषु (वा. प्रा. ३.१०१) सह , भुव, पुष एवं वसु इनके परे रहने पर विश्व का अकार दीर्घ हो जाता है।

[2]. त्वा ओजसे यहाँ सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ(वा.प्रा.४.५८) इस सूत्र के अनुसार आ परवर्ती ओ के सहित औकार होता है।

सोम॑म्पिब पिब॒ सोम॒ꣳ सोम॑म्पिब वृ॒त्र॒हा वृ॑त्र॒हा पिब॑ सोम॒ꣳ सोम॑म्पिब वृ॒त्र॒हा। पि॒ब॒ वृ॒त्र॒हा वृ॑त्र॒हा पिब॑ पिब वृ॒त्र॒हा शू॑र शूर वृ॒त्र॒हा पिब॑ पिब वृ॒त्र॒हा शू॑र। वृ॒त्र॒हा शू॑र शूर वृ॒त्र॒हा वृ॑त्र॒हा शू॑र वि॒द्वान्वि॒द्वाञ्छू॑र वृ॒त्र॒हा वृ॑त्र॒हा शू॑र वि॒द्वान्। वृ॒त्र॒हेति॑ वृत्र॒ हा। शू॒र॒ वि॒द्वान्वि॒द्वाञ्छू॑र शूर वि॒द्वान्। वि॒द्वानिति॑ वि॒द्वान्॥ ज॒हि शत्रू॒ञ्छत्रू॑ञ्ज॒हि ज॒हि शत्रूँ॑॥रपाप॒ शत्रू॑ञ्ज॒हि ज॒हि शत्रूँ॑॥रप॑[1]। शत्रूँ॑॥रपाप॒ शत्रू॒ञ्छत्रूँ॑॥रप॒ मृधो॒ मृधोप॒ शत्रू॒ञ्छत्रूँ॑॥रप॒ मृध॑ः। अप॒ मृधो॒ मृधोपाप॒ मृधो॑ नुदस्व नुदस्व॒ मृधोपाप॒ मृधो॑ नुद॑स्व। मृधो॑ नुदस्व नुदस्व॒ मृधो॒ मृधो॑ नुद॒स्वाथाथ॑ नुदस्व॒ मृधो॒ मृधो॑ नुद॒स्वाथ॑। नु॒द॒स्वाथाथ॑ नुदस्व नुद॒स्वाथाभ॑य॒मभ॑य॒मथ॑ नुदस्व नुद॒स्वाथाभ॑यम्। अथाभ॑य॒मभ॑य॒मथाथाभ॑यङ्कृणुहि कृणु॒ह्यभ॑य॒मथाथाभ॑यङ्कृणुहि। अभ॑यङ्कृणुहि कृणु॒ह्यभ॑य॒मभ॑यङ्कृणुहि वि॒श्वतो॑ वि॒श्वत॑ः कृणु॒ह्यभ॑य॒मभ॑यङ्कृणुहि वि॒श्वत॑ः[2]। कृ॒णु॒हि॒ वि॒श्वतो॑ वि॒श्वत॑ः कृणुहि कृणुहि वि॒श्वतो॑ नो नो वि॒श्वत॑ः कृणुहि कृणुहि वि॒श्वतो॑ नः। वि॒श्वतो॑ नो नो वि॒श्वतो॑ वि॒श्वतो॑ नः। न॒ऽ इति॑ नः॥३५॥

म॒रुत्वाँ॑॥ऽ इन्द्रेन्द्र म॒रुत्वा॑न्म॒रुत्वाँ॑॥ऽ इन्द्र वृ॒ष॒भो वृ॑ष॒भऽ इन्द्र म॒रुत्वा॑न्म॒रुत्वाँ॑॥ऽ इन्द्र वृ॒ष॒भः। इन्द्र॒ वृ॒ष॒भो वृ॑ष॒भऽ इन्द्रेन्द्र वृ॒ष॒भो रणा॑य॒ रणा॑य वृ॒ष॒भऽ इन्द्रेन्द्र वृ॒ष॒भो रणा॑य। वृ॒ष॒भो रणा॑य॒ रणा॑य वृ॒ष॒भो वृ॑ष॒भो रणा॑य॒ पिब॒ पिब॒ रणा॑य वृ॒ष॒भो वृ॑ष॒भो रणा॑य॒ पिब॑। रणा॑य॒ पिब॒ पिब॒ रणा॑य॒ रणा॑य॒ पिबा॒ सोम॒ꣳ सोम॒म्पिब॒ रणा॑य॒ रणा॑य॒ पिबा॒ सोम॑म्[3]। पिबा॒ सोम॒ꣳ सोम॒म्पिब॒ पिबा॒ सोम॑मनु॒ष्ष्व॒धम॑नुस्व॒धꣳ सोम॒म्पिब॒ पिबा॒ सोम॑मनु॒ष्ष्व॒धम्। सोम॑मनु॒ष्ष्व॒धम॑नु-स्व॒धꣳ सोम॒ꣳ सोम॑मनु॒ष्ष्व॒धम्मदा॑य॒ मदा॑यानुस्व॒धꣳ सोम॒ꣳ सोम॑मनु॒ष्ष्व॒ध-

---

[1]. यहाँ स्वर परे रहने पर वा. प्रा. ३.१४१. के अनुसार **शत्रून्** का नकार रेफ हो जाता है उपधा को अनुनासिक हो जाता है। वा. प्रा. १.३५. के अनुसार **शत्रून्** के ऊकार की उपधासंज्ञा होती है।

[2]. **विश्वतः कृणुहि** यहाँ वा.प्रा.३.११. के अनुसार विसर्जनीय प्रकृतिभाव से रहता है।

[3]. वा.प्रा.३.१२९. के अनुसार **पिब सोमम्** यहाँ ह्रस्व स्वर दीर्घ होकर **पिबा सोमम्** होता है।

म्मदाय। अनुष्ष्वधम्मदाय मदायानुस्वधमनुष्ष्वधम्मदाय। अनुस्वधमित्यनु स्वधम्। मदायेति मदाय॥ आ सिञ्चस्व सिञ्चस्वा सिञ्चस्व जठरे जठरे सिञ्चस्वा सिञ्चस्व जठरे। सिञ्चस्व जठरे जठरे सिञ्चस्व सिञ्चस्व जठरे मद्धो मद्धो जठरे सिञ्चस्व सिञ्चस्व जठरे मद्धं÷। जठरे मद्धो मद्धो जठरे जठरे मद्धऽ ऊर्म्मिमू-र्म्मिम्मद्धो जठरे जठरे मद्धऽ ऊर्म्मिम्। मद्धऽ ऊर्म्मिमूर्म्मिम्मद्धो मद्धऽ ऊर्म्मि-न्त्वन्त्वमूर्म्मिम्मद्धो मद्धऽ ऊर्म्मिन्त्वम्। ऊर्म्मिन्त्वन्त्वमूर्म्मिमूर्म्मिन्त्वꣳ राजा राजा त्वमूर्म्मिमूर्म्मिन्त्वꣳ राजा। त्वꣳ राजा राजा त्वन्त्वꣳ राजास्यसि राजा त्वन्त्वꣳ राजासि। राजास्यसि राजा राजासि प्प्रतिपत्त्प्रतिपदसि राजा राजासि प्प्रतिपत्। असि प्प्रतिपत्त्प्रतिपदस्यसि प्प्रतिपत्सुतानाꣳ सुतानाम्प्रतिपदस्यसि प्प्रतिपत्सुतानाम्। प्रतिपत्सुतानाꣳ सुतानाम्प्रतिपत्त्प्रतिपत्सुतानाम्। प्रतिप-दिति प्प्रति पत्। सुतानामिति सुतानाम्॥३६॥

महाँ॥ऽ इन्द्रऽ इन्द्रो महान्महाँ॥ऽ इन्द्रो नृवन्नृवदिन्द्रो महान्म-हाँ॥ऽ इन्द्रो नृवत्। इन्द्रो नृवन्नृवदिन्द्रऽ इन्द्रो नृवदा चर्षणिप्प्राश्चर्षणिप्प्राऽ आ नृवदिन्द्रऽ इन्द्रो नृवदा चर्षणिप्प्राः। नृवदा चर्षणिप्प्राश्चर्षणिप्प्राऽ आ नृवन्नृवदा चर्षणिप्प्राऽ उतोत चर्षणिप्प्राऽ आ नृवन्नृवदा चर्षणिप्प्राऽ उत। नृवदिति नृ ब्वत्। आ चर्षणिप्प्राः। चर्षणिप्प्राऽ उतोत चर्षणिप्प्राश्चर्षणिप्प्राऽ उत द्विबर्हा द्विबर्हाऽ उत चर्षणिप्प्राश्चर्षणिप्प्राऽ उत द्विबर्हाः। चर्षणिप्प्राऽ इति चर्षणि प्राः। उत द्विबर्हा द्विबर्हाऽ उतोत द्विबर्हाऽ अमिनोमिनो द्विबर्हाऽ उतोत द्विबर्हाऽ अमिनः। द्विबर्हाऽ अमिनोमिनो द्विबर्हा द्विबर्हाऽ अमिनः सहोभिः सहोभिरमिनो द्विबर्हा द्विबर्हाऽ अमिनः सहोभिः। द्विबर्हाऽ इति द्वि बर्हाः। अमिनः सहोभिः सहोभि-रमिनोमिनः सहोभिः। सहोभिरिति सहं÷ भिः॥ अस्म्मद्र्यग्ग्वावृधे ब्ववृधे-

स्म्मद्द्र्यगस्म्मद्द्र्यग्ग्वावृधे ब्बीर्य्याय ब्बीर्य्याय ब्ववृधेस्म्मद्द्र्यगस्म्मद्द्र्यग्ग्वावृधे ब्बीर्य्याय[1]। ब्बावृधे ब्बीर्य्याय ब्बीर्य्याय ब्ववृधे ब्बावृधे ब्बीर्य्यायोरुरुरुर्ब्बीर्य्याय ब्ववृधे ब्बावृधे ब्बीर्य्यायोरुः। ब्ववृधऽ इति ववृधे। ब्बीर्य्यायोरुरुरुर्ब्बीर्य्याय ब्बीर्य्यायोरुः पृथुः पृथुरुरुर्ब्बीर्य्याय ब्बीर्य्यायोरुः पृथुः। उरुः पृथुः पृथुरुरुरुरुः पृथुः सुकृतः सुकृतः पृथुरुरुरुरुः पृथुः सुकृतः। पृथुः सुकृतः सुकृतः पृथुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिः कर्तृभिः सुकृतः पृथुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिः। सुकृतः कर्तृभिः कर्तृभिः सुकृतः सुकृतः कर्तृभिर्ब्भूद् भूत्कर्तृभिः सुकृतः सुकृतः कर्तृभिर्ब्भूत्[2]। सुकृतऽ इति सु कृतः। कर्तृभिर्ब्भूद् भूत्कर्तृभिः कर्तृभिर्ब्भून्महेन्द्राय महेन्द्राय भूत्कर्तृभिः कर्तृभिर्ब्भून्महेन्द्राय। कर्तृभिरिति कर्तृ भिः। भून्महेन्द्राय महेन्द्राय भूद् भून्महेन्द्राय त्वा त्वा महेन्द्राय भूद् भून्महेन्द्राय त्वा॥ महेन्द्राय त्वा त्वा महेन्द्राय महेन्द्राय त्वा। महेन्द्रायेति महा इन्द्राय। त्वेति त्वा॥३७॥

यऽ ओजसौजसा यो यऽ ओजसा पर्ज्जन्न्यः पर्ज्जन्न्यऽ ओजसा यो यऽ ओजसा पर्ज्जन्न्यः। ओजसा पर्ज्जन्न्यः पर्ज्जन्न्यऽ ओजसौजसा पर्ज्जन्न्यो ब्बृष्टिमाँ२॥ऽइव ब्बृष्टिमानिव पर्ज्जन्न्यऽ ओजसौजसा पर्ज्जन्न्यो ब्बृष्टिमाँ२॥ऽइव। पर्ज्जन्न्यो ब्बृष्टिमाँ२॥ऽइव ब्बृष्टिमानिव पर्ज्जन्न्यः पर्ज्जन्न्यो ब्बृष्टिमाँ२॥ऽइव। ब्बृष्टिमानिवेति वृष्टिमान् इव॥ स्तोमैर्ब्बत्सस्य ब्बत्सस्य स्तोमै स्तोमैर्ब्बत्सस्य ब्बावृधे ब्ववृधे ब्बत्सस्य स्तोमै स्तोमैर्ब्बत्सस्य ब्बावृधे। ब्बत्सस्य ब्बावृधे ब्ववृधे ब्बत्सस्य ब्बत्सस्य ब्बावृधे। ब्ववृधऽ इति ववृधे॥३८॥

---

1. व वृधवृजोः (वा. प्रा. ३.११३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ वृध परे रहने के कारण व का स्वर दीर्घ होने से वावृधे ऐसा अनुलोम में पाठ होता है।

2. सुकृतम्भूते (वा. प्रा. २.४५) भूतकाल का वाचक सुकृत पद आद्युदात्त होता है।

उदु॒ त्यन्त्यम्म्वुदुदु॒ त्यञ्जा॒तवे॑दसञ्जा॒तवे॑दस॒न्त्यम्म्वुदुदु॒ त्यञ्जा॒तवे॑दसम्[1]।
ॐऽ इत्यूँ। त्यञ्जा॒तवे॑दसञ्जा॒तवे॑दस॒न्त्यन्त्यञ्जा॒तवे॑दसन्दे॒वन्दे॒वञ्जा॒तवे॑दस॒न्त्यन्त्य-
ञ्जा॒तवे॑दसन्दे॒वम्। जा॒तवे॑दसन्दे॒वन्दे॒वञ्जा॒तवे॑दसञ्जा॒तवे॑दसन्दे॒वँव्वहन्ति व्वहन्ति
दे॒वञ्जा॒तवे॑दसञ्जा॒तवे॑दसन्दे॒वँव्वहन्ति। जा॒तवे॑दस॒मिति॑ जा॒त व्वे॑दसम्। दे॒वँव्वहन्ति
व्वहन्ति दे॒वन्दे॒वँव्वहन्ति के॒तव॑ः के॒तवो॑ व्वहन्ति दे॒वन्दे॒वँव्वहन्ति के॒तव॑ः। व्व॒ह॒न्ति॒
के॒तव॑ः के॒तवो॑ व्वहन्ति व्वहन्ति के॒तव॑ः। के॒तव॒ऽ इति॑ के॒तव॑ः॥ दृ॒शे व्विश्वा॑य॒
व्विश्वा॑य दृ॒शे दृ॒शे व्विश्वा॑य॒ सूर्य॒ꣳ सूर्यँ॒व्विश्वा॑य दृ॒शे दृ॒शे व्विश्वा॑य॒ सूर्य॑म्। व्विश्वा॑य॒
सूर्य॒ꣳ सूर्यँ॒व्विश्वा॑य॒ व्विश्वा॑य॒ सूर्य॒ꣴ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सूर्यँ॒व्विश्वा॑य॒ व्विश्वा॑य॒ सूर्य॒ꣴ
स्वाहा॑। सूर्य॒ꣴ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सूर्य॒ꣳ सूर्य॒ꣴ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥३९॥

चि॒त्रन्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॑ञ्चि॒त्रञ्चि॒त्रन्दे॒वाना॒मुदु॒द्देवाना॑ञ्चि॒त्रञ्चि॒त्रन्दे॒वाना॒मुत्[2]।
दे॒वाना॒मुदु॒द्देवाना॑न्दे॒वाना॒मुद॑गादगा॒दुद्देवाना॑न्दे॒वाना॒मुद॑गात्। उद॑गादगा॒दुदुद॑गा॒-
दनी॑क॒मनी॑कमगा॒दुदुद॑गा॒दनी॑कम्। अ॒गा॒दनी॑क॒मनी॑कमगादगा॒दनी॑क॒ञ्चक्षु॒श्च-
क्षु॒रनी॑कमगादगा॒दनी॑क॒ञ्चक्षु॑ः। अनी॑क॒ञ्चक्षु॒श्चक्षु॒रनी॑क॒मनी॑क॒ञ्चक्षु॒र्म्मि॒त्र-
स्य॑ मि॒त्रस्य॒ चक्षु॒रनी॑क॒मनी॑क॒ञ्चक्षु॒र्म्मि॒त्रस्य॑[3]। चक्षु॒र्म्मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒
चक्षु॒श्चक्षु॒र्म्मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॒ चक्षु॒श्चक्षु॒र्म्मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्य।
मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्या॒ग्नेर॒ग्नेर्व्वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॑
मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्या॒ग्नेः। व्वरु॑णस्या॒ग्नेर॒ग्नेर्व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्या॒ग्नेः। अ॒ग्नेरित्य॒-

---

[1]. उकारोऽपृक्तोऽस्पर्शात्(वा.प्रा.४.९१) इस सूत्र के अनुसार स्पर्श से बाद में न होने पर ही उकार प्रकृतिभाव से रहता है। त्यम् उ उत् इस विलोम में उकार प्रकृतिभाव से नहीं रहेगा। इस सम्बन्ध में ज्यो. वृ. पृ.२२८ में कहा है- सवर्णेऽपृक्त उः स्पर्शात् स्वरे याति वतामिह। जटायां सवर्णे स्वरे परे स्पर्शात् परः उ इति शब्दो वकारभावं याति। यथा-

उदु त्यन्त्यम्मवुदु दुत्यम्(पद.७.३९ सं.७.४१) अत्र मय उञो वो वा(पा.८.३.३३) इति वकारः।

[2]. वा. प्रा. ६.२७. के अनुसार यहाँ चित्रम् पद में चि से परे त्र में एक ही स्पर्श होगा।

[3]. चक्षुः मित्रस्य यहाँ वा.प्रा.४.३७. के अनुसार विसर्जनीय रेफ होता है तथा वा.प्रा.४.१०२. के अनुसार रेफ से परवर्ती मकार का द्वित्व होता है।

ग्नेः॥ आप्प्राऽ अप्प्राऽ आप्प्रा द्यावांपृथिवी द्यावांपृथिवीऽ अंप्प्राऽ आप्प्रा द्यावां-पृथिवी। अप्प्रा द्यावांपृथिवी द्यावांपृथिवीऽ अंप्प्राऽ अप्प्रा द्यावांपृथिवीऽ अन्तरिं-क्षमन्तरिंक्षन्द्यावांपृथिवीऽ अंप्प्राऽ अप्प्रा द्यावांपृथिवीऽ अन्तरिंक्षम्। द्यावां-पृथिवीऽ अन्तरिंक्षमन्तरिंक्षन्द्यावांपृथिवी द्यावांपृथिवीऽ अन्तरिंक्षꣳ सूर्य्यः सूर्य्योन्तरिंक्षन्द्यावांपृथिवी द्यावांपृथिवीऽ अन्तरिंक्षꣳ सूर्य्यः। द्यावांपृथिवीऽ इति द्यावांपृथिवी। अन्तरिंक्षꣳ सूर्य्यः सूर्य्योन्तरिंक्षमन्तरिंक्षꣳ सूर्य्यऽ आत्मात्मा सूर्य्योन्तरिंक्षमन्तरिंक्षꣳ सूर्य्यऽ आत्मा। सूर्य्यऽ आत्मात्मा सूर्य्यः सूर्य्यऽ आत्मा जगंतो जगंतऽ आत्मा सूर्य्यः सूर्य्यऽ आत्मा जगंतः। आत्मा जगंतो जगंतऽ आत्मात्मा जगंतस्तस्थुषंस्तस्थुषो जगंतऽ आत्मात्मा जगंतस्तस्थुषंः। जगंतस्तस्थुषंस्तस्थुषो जगंतो जगंतस्तस्थुषंश्च च तस्थुषो जगंतो जगंतस्तस्थुषंश्च। तस्थुषंश्च च तस्थुषंस्तस्थुषंश्च स्वाहा स्वाहां च तस्थुषंस्तस्थुषंश्च स्वाहां। च स्वाहा स्वाहां च च स्वाहां। स्वाहेति स्वाहां॥४०॥

रूपेणं वो वो रूपेणं रूपेणं वो रूपꣳ रूपँव्वों रूपेणं रूपेणं वो रूपम्। व्वो रूपꣳ रूपँव्वों वो रूपमभ्युभि रूपँव्वों वो रूपमभि। रूपमभ्युभि रूपꣳ रूपम-भ्यागांमगामाभि रूपꣳ रूपमभ्यागांम्। अभ्यागांमगामाभ्यभ्यागांन्तुथ-स्तुथोगामाभ्यभ्यागान्तुथः। आगांम्। अगान्तुथस्तुथोगामगान्तुथो वों वस्तुथोगामगान्तुथो वंः। तुथो वों वस्तुथस्तुथो वों व्विश्ववेंदा व्विश्ववेंदा वस्तुथस्तुथो वों व्विश्ववेंदाः। व्वो व्विश्ववेंदा व्विश्ववेंदा वो वो व्विश्ववेंदा व्वि वि विश्ववेंदा वो वो व्विश्ववेंदा व्वि। व्विश्ववेंदा व्वि वि विश्ववेंदा व्विश्ववेंदा व्वि भंजतु भजतु व्वि विश्ववेंदा व्विश्ववेंदा व्वि भंजतु। व्विश्ववेंदाऽ इतिं विश्व व्वेंदाः। व्वि भंजतु

भजतु व्वि वि भंजतु। भजुत्त्विति भजतु॥ ऋतस्य पथा पथऽ ऋतस्यंऽ ऋतस्य पथा प्प्र प्प्र पथऽ[1] ऋतस्यंऽ ऋतस्य पथा प्प्र। पथा प्प्र प्प्र पथा पथा प्प्रेतेंतु प्प्र पथा पथा प्प्रेत। प्रेतेंतु प्प्र प्प्रेत चन्द्रदक्षिणाश्चन्द्रदक्षिणाऽ इतु प्प्र प्प्रेत चन्द्रदक्षिणाः। इतु चन्द्रदक्षिणाश्चन्द्रदक्षिणाऽ इतेत चन्द्रदक्षिणा व्वि वि चन्द्रदक्षिणाऽ इतेत चन्द्रदक्षिणा व्वि। चन्द्रदक्षिणा व्वि वि चन्द्रदक्षिणाश्चन्द्रदक्षिणा व्वि स्वः स्वर्व्वि चन्द्रदक्षिणाश्चन्द्रदक्षिणा व्वि स्वः। चन्द्रदक्षिणाऽ इति चन्द्र दक्षिणाः। व्वि स्वः स्वर्व्वि वि स्वः पश्श्य पश्श्य स्वर्व्वि वि स्वः पश्श्य। स्वः पश्श्य पश्श्य स्वः स्वः पश्श्य व्वि वि पश्श्य स्वः स्वः पश्श्य व्वि। स्वरिति स्वः। पश्श्य व्वि वि पश्श्य पश्श्य द्यन्तरिक्षमन्तरिक्षँव्वि पश्श्य पश्श्य द्यन्तरिक्षम्। द्यन्तरिक्षमन्तरिक्षँव्वि द्यन्तरिक्षँय्यतस्व यतस्वान्तरिक्षँव्वि द्यन्तरिक्षँय्यतस्व। अन्तरिक्षँय्यतस्व यतस्वान्तरिक्षमन्तरिक्षँय्यतस्व सदस्यैः सदस्यैर्य्यतस्वान्तरिक्षमन्तरिक्षँय्यतस्व सदस्यैः[2]। यतस्व सदस्यैः सदस्यैर्य्यतस्व यतस्व सदस्यैः। सदस्यैरिति सदस्यैः॥४१॥

ब्राह्मणमद्याद्य ब्राह्मणम्ब्राह्मणमद्य व्विदेयँव्विदेयमद्य ब्राह्मणम्ब्राह्मणमद्य व्विदेयम्। अद्य व्विदेयँव्विदेयमद्याद्य व्विदेयम्पितृमन्तम्पितृमन्तँव्विदेयमद्याद्य व्विदेयम्पितृमन्तम्। व्विदेयम्पितृमन्तम्पितृमन्तँव्विदेयँव्विदेयम्पितृमन्तम्पैतृमत्स्यम्पैतृमत्स्यम्पितृमन्तँव्विदेयँव्विदेयम्पितृमन्तम्पैतृमत्स्यम्। पितृमन्तम्पैतृमत्स्यम्पैतृमत्स्यम्पितृमन्तम्पितृमन्तम्पैतृमत्स्यमृषिमृषिम्पैतृमत्स्यम्पितृमन्तम्पितृमन्तम्पैतृमत्स्यमृषिम्। पितृमन्तमिति पितृ मन्तम्[3]। पैतृमत्स्यमृषिमृषिम्पैतृमत्स्यम्पैतृम-

1. पथा ऋतस्य यहाँ कण्ठ्य ऋकारे ह्रस्वम्(वा.प्रा.४.५०) इस सूत्र के अनुसार ऋकार बाद में होने पर कण्ठ्य स्वर था का ह्रस्व थ होता है।

2. स्येति ण्यत्वं च(वा.प्रा.४.१५७) के अनुसार सदस्यैः पद में एक यकार है।

3. णकारर्कारावग्रहे (वा. प्रा. १.८८) इस सूत्र के अनुसार णकार एवं ऋकार सावग्रह पद के पूर्वपद में ही आते हैं।

त्यमृषिंमार्षेयमार्षेयमृषिंम्पैतृमत्त्यम्पैतृमत्त्यमृषिंमार्षेयम्। पैतृमत्त्यमितिं पैतृ मत्त्यम्। ऋषिंमार्षेयमार्षेयमृषिमृषिंमार्षेयꣳ सुधातुंदक्क्षिणꣳ सुधातुंदक्क्षिणमार्षेयमृषिमृषिंमार्षेयꣳ सुधातुंदक्क्षिणम्। आर्षेयꣳ सुधातुंदक्क्षिणꣳ सुधातुंदक्क्षिणमार्षेयमार्षेयꣳ सुधातुंदक्क्षिणम्। सुधातुंदक्क्षिणमितिं सुधातुं दक्क्षिणम्॥ अस्स्मद्द्राता देवत्रा दैवत्रास्स्मद्द्राताऽ अस्स्मद्द्राता देवत्रा गंच्छत गच्छत देवत्रास्स्मद्द्राताऽ अस्स्मद्द्राता देवत्रा गंच्छत। अस्स्मद्द्राताऽ इत्त्युस्स्मत् रांताः। देवत्रा गंच्छत गच्छत देवत्रा दैवत्रा गंच्छत प्प्रदातारंम्प्रदातारंङ्गच्छत देवत्रा दैवत्रा गंच्छत प्प्रदातारंम्। देवत्रेतिं देव त्रा[1]। गच्छत प्प्रदातारंम्प्रदातारंङ्गच्छत गच्छत प्प्रदातारमा विंशत व्विशता प्प्रदातारंङ्गच्छत गच्छत प्प्रदातारमा विंशत। प्रदातारमा विंशत व्विशता प्प्रदातारंम्प्रदातारमा विंशत। प्रदातारमितिं प्प्र दातारंम्। आ विंशत। व्विशतेतिं विशत॥४२॥

अग्ग्नयें त्वा त्वाग्ग्नयेग्ग्नयें त्वा मह्यम्मह्यंन्त्वाग्ग्नयेग्ग्नयें त्वा मह्यंम्। त्वा मह्यम्मह्यंन्त्वा त्वा मह्यँव्वरुंणो व्वरुंणो मह्यंन्त्वा त्वा मह्यँव्वरुंणः। मह्यँव्वरुंणो व्वरुंणो मह्यम्मह्यँव्वरुंणो ददातु ददातु व्वरुंणो मह्यम्मह्यँव्वरुंणो ददातु। व्वरुंणो ददातु ददातु व्वरुंणो व्वरुंणो ददातु स स ददातु व्वरुंणो व्वरुंणो ददातु सः। ददातु स स ददातु ददातु सोमृतत्त्वमंमृतत्त्वꣳ स ददातु ददातु सोमृतत्त्वम्। सोंमृतत्त्वमंमृतत्त्वꣳ स सोंमृतत्त्वमंशीयाशीयामृतत्त्वꣳ स सोंमृतत्त्वमंशीय। अमृतत्त्वमंशीयाशीयामृतत्त्वमंमृतत्त्वमंशीयायुरायुंरशीयामृतत्त्वमंमृतत्त्वमंशीयायुंः। अमृतत्त्वमित्त्यंमृत त्वम्। अशीयायुरायुंरशीयाशीयायुंर्द्दात्रे दात्रऽ आयुंरशीयाशीयायुंर्द्दात्रे। आयुंर्द्दात्रे दात्रऽ आयुरायुंर्द्दात्रऽ एंद्ध्येधि दात्रऽ आयुरायुंर्द्दात्रऽ एंधि।[2] दात्रऽ एंद्ध्येधि दात्रे दात्रऽ एंधि मयो मयंऽ एधि दात्रे दात्रऽ एंधि मयंः। एधि

[1]. शस्स्वत्रातातिषु (वा. प्रा. ५.९) इस सूत्र के अनुसार देवत्रा पद का पृथक्करण होता है।

मयो॒ मय॑ऽ एद्ध्येधि॒ मयो॒ मह्य॒म्मह्य॒म्मय॑ऽ एद्ध्येधि॒ मयो॒ मह्य॑म्। मयो॒ मह्य॒म्मह्य॒म्मयो॒ मयो॒ मह्य॑म्प्रतिग्ग्रही॒त्रे प्प्र॑तिग्ग्रही॒त्रे मह्य॒म्मयो॒ मयो॒ मह्य॑म्प्रतिग्ग्रही॒त्रे। मह्य॑म्प्रतिग्ग्रही॒त्रे प्प्र॑तिग्ग्रही॒त्रे मह्य॒म्मह्य॑म्प्रतिग्ग्रही॒त्रे रु॒द्राय॑ रु॒द्राय॑ प्प्रतिग्ग्रही॒त्रे मह्य॒म्मह्य॑म्प्रतिग्ग्रही॒त्रे रु॒द्राय॑। प्र॒ति॒ग्ग्र॒ही॒त्रे रु॒द्राय॑ रु॒द्राय॑ प्प्रतिग्ग्रही॒त्रे प्प्र॑तिग्ग्रही॒त्रे रु॒द्राय॑ प्प्रा॒णः प्प्रा॒णो रु॒द्राय॑ प्प्रतिग्ग्रही॒त्रे प्प्र॑तिग्ग्रही॒त्रे रु॒द्राय॑ प्प्रा॒णः। प्र॒ति॒ग्ग्र॒ही॒त्रऽ इति॑ प्प्रति ग्रही॒त्रे। रु॒द्राय॑ प्प्रा॒णः प्प्रा॒णो रु॒द्राय॑ रु॒द्राय॑ प्प्रा॒णो व्वयो॒ व्वय॑ः प्प्रा॒णो रु॒द्राय॑ रु॒द्राय॑ प्प्रा॒णो व्वय॑ः। प्रा॒णो व्वयो॒ व्वय॑ः प्प्रा॒णः प्प्रा॒णो व्वयो॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ व्वय॑ः प्प्रा॒णः प्प्रा॒णो व्वयो॒ बृह॒स्प्पत॑ये। व्वयो॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ व्वयो॒ व्वयो॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ त्वक्क्वग्ग्बृह॒स्प्पत॑ये॒ व्वयो॒ व्वयो॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ त्वक्। बृह॒स्प्पत॑ये॒ त्वक्क्वग्ग्बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ त्वङ्ङ्मयो॒ मय॒स्त्वग्ग्बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ त्वङ्ङ् मय॑ः[1]। त्वङ्ङ् मयो॒ मय॒स्त्वक्क्वङ्ङ् मयो॑ य्य॒माय॑ य्य॒माय॒ मय॒स्त्वक्क्वङ्ङ् मयो॑ य्य॒माय॑। मयो॑ य्य॒माय॑ य्य॒माय॒ मयो॒ मयो॑ य्य॒माय॒ हयो॒ हयो॑ य्य॒माय॒ मयो॒ मयो॑ य्य॒माय॒ हय॑ः। य्य॒माय॒ हयो॒ हयो॑ य्य॒माय॑ य्य॒माय॒ हयो॒ व्वयो॒ व्वयो॒ हयो॑ य्य॒माय॑ य्य॒माय॒ हयो॒ व्वय॑ः। हयो॒ व्वयो॒ व्वयो॒ हयो॒ हयो॒ व्वय॑ः। व्वय॒ऽ इति॒ वय॑ः ॥४३॥

कोऽदाददा॒त्कः कोऽदा॒त्कस्म्मै॒ कस्म्मा॑ऽ अदा॒त्कः कोऽदा॒त्कस्म्मै॑। अ॒दा॒त्कस्म्मै॒ कस्म्मा॑ऽ अदाददा॒त्कस्म्मै॒ काम॒ङ्काम॒ङ् कस्म्मा॑ऽ अदाददा॒त्कस्म्मै॒ काम॑ः। कस्म्मै॒ काम॒ङ् काम॒ङ् कस्म्मै॒ कस्म्मै॒ काम॒ङ् कामा॑य॒ कामा॑य॒ काम॒ङ् कस्म्मै॒ कस्म्मै॒ काम॒ङ् कामा॑य। काम॒ङ् कामा॑य॒ कामा॑य॒ काम॒ङ् काम॒ङ्

---

[2]. दात्रे एधि यहाँ सन्ध्यक्षरमयवायावम्(वा.प्रा.४.४८) इस सूत्र से एकार अय् होता है। वा.प्रा.४.१२७. से यकार का लोप तथा सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ(वा.प्रा.४.५८) से प्राप्त ऐकार का निषेध न परकालः पूर्वकाले पुनः(वा.प्रा.३.४) से होता है।

[1]. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार बृहस्पतिः पद का पृथक्करण नहीं होता है। त्वक् मयः यहाँ पञ्चमे पञ्चमम्(वा.प्रा.४.१२३) से ङकार तथा स्वरात्संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र(वा.प्रा.४.१०१) इस सूत्र से ङकार का द्विर्भाव होता है।

कामा॑य। का॒मा॒येति॑ कामा॑य॥ कामो॑ दा॒ता दा॒ता काम॒ꣳ कामो॑ दा॒ता काम॒ꣳ कामो॑ दा॒ता काम॒ꣳ कामो॑ दा॒ता काम॑ः। दा॒ता काम॒ꣳ कामो॑ दा॒ता दा॒ता काम॑ः प्प्रतिग्ग्रही॒ता प्प्र॑तिग्ग्रही॒ता कामो॑ दा॒ता दा॒ता काम॑ः प्प्रतिग्ग्रही॒ता। काम॑ः प्प्रतिग्ग्रही॒ता प्प्र॑तिग्ग्रही॒ता काम॒ꣳ काम॑ः प्प्रतिग्ग्रही॒ता काम॒ काम॑ प्प्रतिग्ग्रही॒ता काम॒ꣳ काम॑ः प्प्रतिग्ग्रही॒ता काम॑। प्र॒ति॒ग्ग्र॒ही॒ता काम॒ काम॑ प्प्रतिग्ग्रही॒ता प्प्र॑ति-ग्ग्रही॒ता काम॒ैतदे॒तत्काम॑ प्प्रतिग्ग्रही॒ता प्प्र॑तिग्ग्रही॒ता काम॒ैतत्। प्र॒ति॒ग्ग्र॒ही॒तेति॑ प्प्रति ग्रही॒ता। काम॒ैतदे॒तत्काम॒ काम॒ैतत्तेँ तऽ ए॒तत्काम॒ काम॒ैतत्तेँ। ए॒तत्तेँ तऽ ए॒तदे॒तत्तेँ। त॒ऽ इति॑ ते॥४४॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे सप्तमोध्यायः॥

॥अष्टमोध्यायः॥

हरिः॑ ॐ॥ आ॒दि॒त्येभ्य॑स्त्वा त्वादि॒त्येभ्य॑ऽ आदि॒त्येभ्य॑स्त्वा। त्वेति॑ त्वा॥ व्विष्ण्ण॑ऽ उरुगायोरुगाय॒ व्विष्ण्णो॒ व्विष्ण्ण॑ऽ उरुगाय। व्विष्ण्णो॒ऽ इति॒ विष्ण्णो[1]। उ॒रु॒गा॒येत्यु॑रु गाय॥१॥

कु॒दा च॒न च॒न कु॒दा कु॒दा च॒न प्प्र प्प्र च॒न कु॒दा कु॒दा च॒न प्प्र[2]। च॒न प्प्र प्प्र च॒न च॒न प्प्र युं॑च्छसि युच्छसि॒ प्प्र च॒न च॒न प्प्र युं॑च्छसि। प्र युं॑च्छसि युच्छसि॒ प्प्र प्प्र युं॑च्छस्यु॒भेऽ उ॒भे युं॑च्छसि॒ प्प्र प्प्र युं॑च्छस्यु॒भे। यु॒च्छ॒स्यु॒भेऽ उ॒भे युं॑च्छसि युच्छस्यु॒भे नि न्न्यु॒भे युं॑च्छसि युच्छस्यु॒भे नि। उ॒भे नि न्न्यु॒भेऽ उ॒भे नि पा॑सि पासि॒ न्न्यु॒भेऽ उ॒भे नि पा॑सि। उ॒भेऽ इत्यु॒भे। नि पा॑सि पासि॒ नि नि पा॑सि॒ जन्म॑नी॒ जन्म॑नी पासि॒ नि नि पा॑सि॒ जन्म॑नी। पा॒सि॒ जन्म॑नी॒ जन्म॑नी पासि पासि॒ जन्म॑नी। जन्म॑नी॒ऽ इति॒ जन्म॑नी॥ तुरी॑यादित्यादित्य॒ तुरी॑य॒ तुरी॑यादित्य॒ सव॑न॒ꣳ सव॑नमादित्य॒ तुरी॑य॒ तुरी॑यादित्य॒ सव॑नम्। आ॒दि॒त्य॒ सव॑न॒ꣳ सव॑नमादि-त्यादित्य॒ सव॑नन्ते ते॒ सव॑नमादित्यादित्य॒ सव॑नन्ते। सव॑नन्ते ते॒ सव॑न॒ꣳ सव॑न-न्तऽ इन्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यन्ते॒ सव॑न॒ꣳ सव॑नन्तऽ इन्द्रि॒यम्। त॒ऽ इ॒न्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यन्ते॑ तऽ इन्द्रि॒यमा त॑स्त्थौ तस्त्था॒वेन्द्रि॒यन्ते॑ तऽ इन्द्रि॒यमा त॑स्त्थौ। इ॒न्द्रि॒यमा त॑स्त्थौ तस्त्था॒वेन्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यमा त॑स्त्थाव॒मृत॑म॒मृत॑न्तस्त्था॒वेन्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यमा त॑स्त्थाव॒-मृत॑म्। आ त॑स्त्थौ। त॒स्त्था॒व॒मृत॑म॒मृत॑न्तस्त्थौ तस्त्थाव॒मृत॑न्दि॒वि दि॒व्यमृत॑-न्तस्त्थौ तस्त्थाव॒मृत॑न्दि॒वि। अ॒मृत॑न्दि॒वि दि॒व्य॒मृत॑म॒मृत॑न्दि॒व्या॒दि॒त्येभ्य॑ऽ आदि॒त्येभ्यो॑ दि॒व्य॒मृत॑म॒मृत॑न्दि॒व्या॒दि॒त्येभ्य॑ः। दि॒व्या॒दि॒त्येभ्य॑ऽ आदि॒त्ये-

---

[1]. वा.प्रा.१.९४. के अनुसार यहाँ विष्णो पद का ओकार प्रगृह्य है।

[2]. कदा नरिष्येम पूर्वम् (वा. प्रा. २.२३) इस सूत्र के अनुसार कदा पद न रिष्येम से पूर्व में आद्युदात होता है, यहाँ कदा पद न रिष्येम से पूर्ववर्ती नहीं है, अतः आद्युदात्त नहीं होगा।

ब्भ्यों दिवि दिव्याादित्येब्भ्यंस्त्वा त्वादित्येब्भ्यों दिवि दिव्याादित्येब्भ्यंस्त्वा[1]।
आदित्येब्भ्यंस्त्वा त्वादित्येब्भ्यंऽ आदित्येब्भ्यंस्त्वा। त्वेतिं त्वा॥२॥

यज्ञो देवानान्देवानाँ्यज्ञो यज्ञो देवानाम्प्रति प्प्रतिं देवानाँ्यज्ञो यज्ञो देवानाम्प्रतिं। देवानाम्प्रति प्प्रतिं देवानान्देवानाम्प्रत्यैत्येति प्प्रतिं देवानान्देवानाम्प्रत्यैति। प्रत्यैत्येति प्प्रति प्प्रत्यैति सुम्म्नꣳ सुम्म्नमैति प्प्रति प्प्रत्यैति सुम्म्नम्। एति सुम्म्नꣳ सुम्म्नमैत्येति सुम्म्नमादित्यासऽ आदित्यासꣳ सुम्म्नमैत्येति सुम्म्नमादित्यासः। सुम्म्नमादित्यासऽ आदित्यासः सुम्म्नꣳ सुम्म्नमादित्यासो भवंत भवतादित्यासः सुम्म्नꣳ सुम्म्नमादित्यासो भवंत। आदित्यासो भवंत भवतादित्यासऽ आदित्यासो भवंता मृडयन्तों मृडयन्तो भवतादित्यासऽ आदित्यासो भवंता[2] मृडयन्तंः। भवंता मृडयन्तों मृडयन्तो भवंत भवंता मृडयन्तंः। मृडयन्तऽ इतिं मृडयन्तंः॥ आ वों वऽ आ वोर्वाच्यर्वाचीं वऽ आ वोर्वाचीं[3]। व्वोर्वाच्यर्वाचीं वो वोर्वाचीं सुमतिः सुमतिरर्वाचीं वो वोर्वाचीं सुमतिः। अर्वाचीं सुमतिः सुमतिरर्वाच्यर्वाचीं सुमतिर्वृत्याद्ववृत्यात्सुमतिरर्वाच्यर्वाचीं सुमतिर्वृत्यात्। सुमतिर्वृत्याद्ववृत्यात्सुमतिः सुमतिर्वृत्यादꣳहोरꣳहोर्ववृत्यात्सुमतिः सुमतिर्वृत्यादꣳहोः। सुमतिरितिं सु मतिः। ववृत्यादꣳहोरꣳहोर्ववृत्याद्ववृत्यादꣳहोश्चिंचिदꣳहोर्ववृत्याद्ववृत्यादꣳहोश्चित्। अꣳहोश्चिंचिदꣳहोरꣳहोश्चिद्या या चिंदꣳहोरꣳहोश्चिद्या। चिद्या या चिंचिद्या व्वरिवोवित्तंरा व्वरिवोवित्तंरा या चिंचिद्या व्वरिवोवित्तंरा। या व्वरिवोवित्तंरा व्वरिवोवित्तंरा या या व्वरिवोवित्तरासदसंद्वरिवोवित्तंरा या या व्वरिवोवित्तरासंत्। व्वरिवोवित्तरासदसंद्वरिवोवित्तंरा

[1]. त्वा च(वा.प्रा.२.६) इस सूत्र के अनुसार मध्यम पुरुष के अर्थ में विद्यमान त्वा पद अनुदात होता है।

[2]. वा.प्रा.३.११६. के अनुसार वाद में मकार होने पर भवत के अन्तिम स्वर का दीर्घ होता है।

[3]. वोर्वाची यहाँ वा. प्रा. ४.६६. के अनुसार अर्वाची के अकार का अभिनिधान होता है।

व्वरिवोवित्तरासंदादित्येब्भ्यंऽ आदित्येब्भ्योसंद्वरिवोवित्तरा व्वरिवोवित्तरासंदादित्येब्भ्यंः । व्वरिवोवित्तरेति वरिवोवित् तरा[1]। असंदादित्येब्भ्यंऽ आदित्येब्भ्योसदसंदादित्येब्भ्यंस्त्वा त्वादित्येब्भ्योसदसंदादित्येब्भ्यंस्त्वा। आदित्येब्भ्यंस्त्वा त्वादित्येब्भ्यंऽ आदित्येब्भ्यंस्त्वा। त्वेति त्वा॥३॥

व्विवंस्वन्नादित्यादित्य व्विवंस्वन्विवंस्वन्नादित्यैषऽ एषऽ आंदित्य व्विवंस्वन्विवंस्वन्नादित्यैषः। आदित्यैषऽ एषऽ आंदित्यादित्यैष तें तऽ एषऽ आंदित्यादित्यैष तें। एष तें तऽ एषऽ एष तें सोमपीथः सोंमपीथस्तंऽ एषऽ एष तें सोमपीथः। ते सोमपीथः सोंमपीथस्तें ते सोमपीथस्तस्म्मिँस्तस्म्मिंन्त्सोमपीथस्तें ते सोमपीथस्तस्म्मिंन्। सोमपीथस्तस्म्मिँस्तस्म्मिंन्त्सोमपीथः सोंमपीथस्तस्म्मिंन्नमत्स्व मत्स्व तस्म्मिंन्त्सोमपीथः सोंमपीथस्तस्म्मिंन्नमत्स्व। सोमपीथऽ इति सोम पीथः। तस्म्मिंन्नमत्स्व मत्स्व तस्म्मिँस्तस्म्मिंन्नमत्स्व। मत्स्वेति मत्स्व॥ श्रदंस्म्माऽ अस्म्मै श्रच्छ्रदंस्म्मै नरो नरोस्म्मै श्रच्छ्रदंस्म्मै नरः। अस्म्मै नरो नरोस्म्माऽ अस्म्मै नरो व्वर्चसे व्वर्चसे नरोस्म्माऽ अस्म्मै नरो व्वर्चसे। नरो व्वर्चसे व्वर्चसे नरो नरो व्वर्चसे दधातन दधातन व्वर्चसे नरो नरो व्वर्चसे दधातन। व्वर्चसे दधातन दधातन व्वर्चसे व्वर्चसे दधातन यद्यद्दधातन व्वर्चसे व्वर्चसे दधातन यत्। दधातन यद्यद्दधातन दधातन यदांशीर्दाशीर्दा यद्दधातन दधातन यदांशीर्दा[2]। यदांशीर्दाशीर्दा यद्यदांशीर्दा दम्पंती दम्पंतीऽ आशीर्दा यद्यदांशीर्दा दम्पंती। आशीर्दा दम्पंती दम्पंतीऽ आशीर्दाशीर्दा दम्पंती व्वामँव्वामन्दम्पंतीऽ आशीर्दाशीर्दा दम्पंती व्वामम्। आशीर्दित्यांशीः दा। दम्पंती व्वामँव्वामन्दम्पंती

[1]. तरतमयोश्चातिशयेऽदक्षिणप्रत्यासङ्गे(वा.प्रा.५.२) इस सूत्र के अनुसार वरिवोवित्तरा इस पद को तरा इस अतिशय के वाचक पदावयव से पृथक् किया जाता है।

[2]. हविर्दम्पत्योः साध्या दा (वा. प्रा. ४.३३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ आशीर्दा पद स्वरान्त है।

दम्पती व्वाममश्नुतोश्नुतो व्वामन्दम्पती दम्पती व्वाममश्नुतः। दम्पतीऽ इति दम् पती। व्वाममश्नुतोश्नुतो व्वामँव्वाममश्नुतः। अश्नुतऽ इत्यश्नुतः॥ पुमान्पुत्रः पुत्रः पुमान्पुमान्पुत्रो जायते जायते पुत्रः पुमान्पुमान्पुत्रो जायते। पुत्रो जायते जायते पुत्रः पुत्रो जायते व्विन्दते व्विन्दते जायते पुत्रः पुत्रो जायते व्विन्दते। जायते व्विन्दते व्विन्दते जायते जायते व्विन्दते व्वसु व्वसु व्विन्दते जायते जायते व्विन्दते व्वसु। व्विन्दते व्वसु व्वसु व्विन्दते व्विन्दते व्वस्वधाध व्वसु व्विन्दते व्विन्दते व्वस्वध। व्वस्वधाध व्वसु व्वस्वधा व्विश्वाहा व्विश्वाहाध व्वसु व्वस्वधा[1] व्विश्वाहा। अधा व्विश्वाहा व्विश्वाहाधाधा व्विश्वाहारपोरपो व्विश्वाहाधाधा व्विश्वाहारपः। व्विश्वाहारपोरपो व्विश्वाहा व्विश्वाहारपऽ एधतऽ एधतेरपो व्विश्वाहा व्विश्वाहारपऽ एधते। अरपऽ एधतऽ एधतेरपोरपऽ एधते गृहे गृहऽ एधतेरपोरपऽ एधते गृहे। एधते गृहे गृहऽ एधतऽ एधते गृहे। गृहऽ इति गृहे॥४॥

व्वाममद्याद्य व्वामँव्वाममद्य सवितः सवितरद्य व्वामँव्वाममद्य सवितः। अद्य सवितः सवितरद्याद्य सवितर्व्वामँव्वामछ सवितरद्याद्य सवितर्व्वामम्। सवितर्व्वामँव्वामछ सवितः सवितर्व्वाममु श्वः श्वऽ उ व्वामछ सवितः सवितर्व्वाममु श्वः। व्वाममु श्वः श्वऽ उ व्वामँव्वाममु श्वो दिवेदिवे दिवेदिवे श्वऽ उ व्वामँव्वाममु श्वो दिवेदिवे। ऊँऽ इत्यूँ। श्वो दिवेदिवे दिवेदिवे श्वः श्वो दिवेदिवे व्वामँव्वामन्दिवेदिवे श्वः श्वो दिवेदिवे व्वामम्। दिवेदिवे व्वामँव्वामन्दिवेदिवे दिवेदिवे व्वाममस्म्मभ्यमस्म्मभ्यँव्वामन्दिवेदिवे दिवेदिवे व्वाममस्म्मभ्यम्। दिवेदिवऽ इति दिवे दिवे। व्वाममस्म्मभ्यमस्म्मभ्यँव्वामँव्वाममस्म्मभ्यछ सावीः सावीरस्म्मभ्यँव्वामँव्वाममस्म्मभ्यछ सावीः। अस्म्मभ्यछ सावीः सावीरस्म्मभ्यमस्म्मभ्यछ सावीः। सावीरिति सावीः॥ व्वामस्य हि हि व्वामस्य व्वामस्य हि क्षयस्य क्षयस्य हि

[1]. अधायत्स्मग्नावायुषु(वा.प्रा.३.१२६) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अध का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है।

व्रामस्य व्रामस्य हि क्षयस्य। हि क्षयस्य क्षयस्य हि हि क्षयस्य देव देव क्षयस्य हि हि क्षयस्य देव। क्षयस्य देव देव क्षयस्य क्षयस्य देव भूरेर्भूरेर्देव क्षयस्य क्षयस्य देव भूरेः[1]। देव भूरेर्भूरेर्देव देव भूरेरयाया भूरेर्देव देव भूरेरया। भूरेरयाया भूरेर्भूरेरया धिया धियाया भूरेर्भूरेरया धिया। अया धिया धियायाया धिया व्रामभाजो व्रामभाजो धियायाया धिया व्रामभाजः। धिया व्रामभाजो व्रामभाजो धिया धिया व्रामभाजः स्याम स्याम व्रामभाजो धिया धिया व्रामभाजः स्याम। व्रामभाजः स्याम स्याम व्रामभाजो व्रामभाजः स्याम। व्रामभाजऽ इति वाम भाजः। स्यामेति स्याम॥५॥

सावित्रोस्यसि सावित्रः सावित्रोसि चनोधाश्चनोधाऽ असि सावित्रः सावित्रोसि चनोधाः[2]। असि चनोधाश्चनोधाऽ अस्यसि चनोधाश्चनोधाश्चनो-धाश्चनोधाऽ अस्यसि चनोधाश्चनोधाः। चनोधाश्चनोधाश्चनोधाश्चनोधाश्चनोधा-श्चनोधाऽ अस्यसि चनोधाश्चनोधाश्चनोधाश्चनोधाऽ असि। चनोधाऽ इति चनः धाः। चनोधाऽ अस्यसि चनोधाश्चनोधाऽ असि चनश्चनोसि चनोधाश्चनोधाऽ असि चनः। चनोधाऽ इति चनः धाः। असि चनश्चनोस्यसि चनो मयि मयि चनोस्यसि चनो मयि। चनो मयि मयि चनश्चनो मयि धेहि धेहि मयि चनश्चनो मयि धेहि। मयि धेहि धेहि मयि मयि धेहि। धेहीति धेहि॥ जिन्वं यज्ञँय्यज्ञञ्जिन्व जिन्वं यज्ञञ्जिन्व जिन्वं यज्ञञ्जिन्व जिन्वं यज्ञञ्जिन्वं। यज्ञञ्जिन्व जिन्वं यज्ञँय्यज्ञञ्जिन्वं यज्ञपतिँय्यज्ञपतिञ्जिन्वं यज्ञँय्यज्ञ-ञ्जिन्वं यज्ञपतिम्। जिन्वं यज्ञपतिँय्यज्ञपतिञ्जिन्व जिन्वं यज्ञपतिम्भगाय

---

[1]. पकार के साथ विसर्ग रहने पर हेकार सदृश उच्चारण करना चाहिये – ल. मा. शि. २०.

[2]. चनोधाः चनोधाः यहाँ विसर्जनीयः(वा.प्रा.३.६) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित चछयोः शम्(वा.प्रा.३.७) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय शकार होता है। तदुत्तरवर्ती चकार का द्वित्व ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०२) से विहित है।

भगा॑य य॒ज्ज्ञप॑ति॒ञ्जिन्व॒ जिन्व॑ य॒ज्ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य। य॒ज्ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य॒ भगा॑य य॒ज्ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य दे॒वाय॑ दे॒वाय॒ भगा॑य य॒ज्ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य दे॒वाय॑। य॒ज्ज्ञप॑ति॒मिति॑ य॒ज्ज्ञ प॑तिम्। भगा॑य दे॒वाय॑ दे॒वाय॒ भगा॑य॒ भगा॑य दे॒वाय॑ त्वा त्वा दे॒वाय॒ भगा॑य॒ भगा॑य दे॒वाय॑ त्वा। दे॒वाय॑ त्वा त्वा दे॒वाय॑ दे॒वाय॑ त्वा सवि॒त्रे स॑वि॒त्रे त्वा॑ दे॒वाय॑ दे॒वाय॑ त्वा सवि॒त्रे। त्वा॒ स॒वि॒त्रे स॑वि॒त्रे त्वा॑ त्वा सवि॒त्रे। स॒वि॒त्रऽ इति॑ सवि॒त्रे॥६॥

सु॒शर्म्मा॑स्यसि सु॒शर्म्मा॑ सु॒शर्म्मा॑सि सुप्प्रतिष्ठा॒नः सु॑प्प्रतिस्त्था॒नो॒सि सु॒शर्म्मा॑ सु॒शर्म्मा॑सि सुप्प्रतिष्ठा॒नः। सु॒शर्म्मेति॑ सु॒ शर्म्मा॑। अ॒सि॒ सु॒प्प्र॒ति॒ष्ठा॒नः सु॑प्प्रतिस्त्था॒नो॒स्यसि सुप्प्रतिष्ठा॒नो बृ॒हदु॑क्क्षाय बृ॒हदु॑क्क्षाय सुप्प्रतिस्त्था॒नो॒स्य-सि सुप्प्रतिष्ठा॒नो बृ॒हदु॑क्क्षाय। सु॒प्प्र॒ति॒ष्ठा॒नो बृ॒हदु॑क्क्षाय बृ॒हदु॑क्क्षाय सुप्प्रतिस्त्था॒-नः सु॑प्प्रतिष्ठा॒नो बृ॒हदु॑क्क्षाय॒ नमो॒ नमो॑ बृ॒हदु॑क्क्षाय सुप्प्रतिस्त्था॒नः सु॑प्प्रतिष्ठा॒नो बृ॒हदु॑क्क्षाय॒ नम॑ः। सु॒प्प्र॒ति॒स्त्था॒नऽ इति॑ सु प्रतिस्त्था॒नः[1]। बृ॒हदु॑क्क्षाय॒ नमो॒ नमो॑ बृ॒हदु॑क्क्षाय बृ॒हदु॑क्क्षाय॒ नम॑ः। बृ॒हदु॑क्क्षा॒येति॑ बृ॒हत् उ॑क्क्षाय। नम॒ऽ इति॒ नम॑ः॥७॥

बृ॒ह॒स्प्पति॑सुतस्य देव दे॒व बृ॒ह॒स्प्पति॑सुतस्य॒ बृ॒ह॒स्प्पति॑सुतस्य देव सोम सोम दे॒व बृ॒ह॒स्प्पति॑सुतस्य॒ बृ॒ह॒स्प्पति॑सुतस्य देव सोम[2]। बृ॒ह॒स्प्पति॑सुत॒स्येति॒ बृ॒ह॒स्प्पति॑ सुतस्य। दे॒व॒ सो॒म॒ सो॒म॒ दे॒व॒ दे॒व॒ सो॒म॒ ते॒ ते॒ सो॒म॒ दे॒व॒ दे॒व॒ सो॒म॒ ते॒। सो॒म॒ ते॒ ते॒ सो॒म॒ सो॒म॒ त॒ऽ इन्दो॒रिन्दो॑स्त्ते सोम सोम त॒ऽ इन्दो॑ः। त॒ऽ इन्दो॒रिन्दो॑-स्त्ते त॒ऽ इन्दो॑रिन्द्रि॒याव॑तऽ इन्द्रि॒याव॑त॒ऽ इन्दो॑स्त्ते त॒ऽ इन्दो॑रिन्द्रि॒याव॑तः[3]।

1. विनामे(वा.प्रा.४.१९३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ स्थितोपस्थित पाठ होता है।

2. वा. प्रा. ३.८१. के अनुसार बृहस्पतिसुतस्य इस पद में सकार प्रकृतिभाव से रहता है। भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) इस सूत्र से सु का सकार षकार होता है, जिसका अपवादभूत उक्त सूत्र है।

3. वा.प्रा.३.९७. के अनुसार वकार बाद में होने पर इन्द्रिय का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है।

इन्द्रो॑रिन्द्रि॒यावं॑तऽ इन्द्रि॒यवं॑त॒ऽ इन्द्रो॒रिन्द्रो॑रिन्द्रि॒यावं॑त॒ः पत्नी॑वत॒ः पत्नी॑वतऽ इन्द्रि॒यवं॑त॒ऽ इन्द्रो॒रिन्द्रो॑रिन्द्रि॒यावं॑त॒ः पत्नी॑वतः। इ॒न्द्रि॒यावं॑त॒ः पत्नी॑वत॒ः पत्नी॑वतऽ इन्द्रि॒यवं॑तऽ इन्द्रि॒यावं॑त॒ः पत्नी॑वतो॒ ग्ग्रहा॒न्ग्रहा॒न्पत्नी॑वतऽ इन्द्रि॒य-वं॑तऽ इन्द्रि॒यावं॑त॒ः पत्नी॑वतो॒ ग्ग्रहा॑न्। इ॒न्द्रि॒यवं॑त॒ऽ इती॑न्द्रि॒य व्वंतः। पत्नी॑वतो॒ ग्ग्रहा॒न्ग्रहा॒न्पत्नी॑वत॒ः पत्नी॑वतो॒ ग्ग्रहा॑रँ॥ऽ ऋद्ध्यासमृद्ध्यास॒ङ्ग्रहा॒न्पत्नी॑वत॒ः पत्नी॑वतो॒ ग्ग्रहा॑रँ॥ऽ ऋद्ध्यासम्। पत्नी॑वत॒ऽ इति॒ पत्नी॑ व्वतः। ग्रहा॑रँ॥ऽ ऋद्ध्यासमृद्ध्यास॒ङ्ग्रहा॒न्ग्रहा॑रँ॥ऽ ऋद्ध्यासम्। ऋ॒द्ध्या॒स॒मित्त्यृ॑द्ध्यासम्॥ अ॒हम्पु॒-रस्त्ता॑त्पु॒रस्त्ता॑द॒हम॒हम्पु॒रस्त्ता॑द॒हम॒हम्पु॒रस्त्ता॑द॒हम॒हम्पु॒रस्त्ता॑द॒हम्। पु॒रस्त्ता॑द॒हम॒ह-म्पु॒रस्त्ता॑त्पु॒रस्त्ता॑द॒हम॒वस्त्ता॑द॒वस्त्ता॑द॒हम्पु॒रस्त्ता॑त्पु॒रस्त्ता॑द॒हम॒वस्त्ता॑त्। अ॒हम॒व-स्त्ता॑द॒वस्त्ता॑द॒हम॒हम॒वस्त्ता॒द्यद्यद॒वस्त्ता॑द॒हम॒हम॒वस्त्ता॒द्यत्। अ॒वस्त्ता॒द्यद्यद॒वस्त्ता॑द॒व-स्त्ता॒द्यद॒न्तरि॑क्क्षम॒न्तरि॑क्क्षँ॒ य्यद॒वस्त्ता॑द॒वस्त्ता॒द्यद॒न्तरि॑क्क्षम्। यद॒न्तरि॑क्क्षम॒न्त-रि॑क्क्षँ॒ य्यद्यद॒न्तरि॑क्क्ष॒न्तत्तद॒न्तरि॑क्क्षँ॒ य्यद्यद॒न्तरि॑क्क्ष॒न्तत्। अ॒न्तरि॑क्क्ष॒न्तत्तद॒न्त-रि॑क्क्षम॒न्तरि॑क्क्ष॒न्तदु॑ मे मऽ उ॒ तद॒न्तरि॑क्क्षम॒न्तरि॑क्क्ष॒न्तदु॑ मे। तदु॑ मे मऽ उ॒ तत्तदु मे पि॒ता पि॒ता म॑ऽ उ॒ तत्तदु मे पि॒ता। उँ॑ऽ इत्त्यूँ॑। मे॒ पि॒ता पि॒ता मे॑ मे पि॒ता-भू॑दभूत्पि॒ता मे॑ मे पि॒ताभू॑त्। पि॒ताभू॑दभूत्पि॒ता पि॒ताभू॑त्। अ॒भू॒दित्त्य॑भूत्॥ अ॒हꣳ सू॒र्य्य॒ꣳ सू॒र्य्य॑म॒हम॒हꣳ सू॒र्य्य॑मु॒भ॒यत॑ऽ उभ॒यत॒ः सू॒र्य्य॑म॒हम॒हꣳ सू॒र्य्य॑मु॒भ॒यत॑ः। सू॒र्य्य॑मु॒भ॒यत॑ऽ उभ॒यत॒ः सू॒र्य्य॒ꣳ सू॒र्य्य॑मु॒भ॒यतो॑ ददर्श ददर्शो॒भ॒यत॒ः सू॒र्य्य॒ꣳ सू॒र्य्य॑-मु॒भ॒यतो॑ ददर्श। उ॒भ॒यतो॑ ददर्श ददर्शो॒भ॒यत॑ऽ उभ॒यतो॑ ददर्शा॒हम॒हन्द॑दर्शो॒भ॒यत॑ऽ उभ॒यतो॑ ददर्शा॒हम्। द॒द॒र्शा॒हम॒हन्द॑दर्श ददर्शा॒हन्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॑म॒हन्द॑दर्श ददर्शा॒-हन्दे॒वाना॑म्। अ॒हन्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॑म॒हम॒हन्दे॒वाना॑म्पर॒मम्प॑र॒मन्दे॒वाना॑म॒हम॒हन्दे॒-वाना॑म्पर॒मम्। दे॒वाना॑म्पर॒मम्प॑र॒मन्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॑म्पर॒मङ्गुहा॒ गुहा॑ पर॒मन्दे॒वाना॑-

न्देवानाम्परमङ्गुहा। परमङ्गुहा गुहा परमम्परमङ्गुहा यद्यद् गुहा परमम्परमङ्गुहा यत्। गुहा यद्यद् गुहा गुहा यत्। यदिति यत्॥८॥

अग्ना३॥ऽइ पत्नीवन्पत्नीवन्नग्ना३॥ऽ अग्ना३॥ऽइ पत्नीवन्त्सजूः सजूः पत्नीवन्नग्ना३॥ऽ अग्ना३॥ऽइ पत्नीवन्त्सजूः[1]। पत्नीवन्त्सजूः सजूः पत्नीवन्पत्नीवन्त्सजूर्देवेन देवेन सजूः पत्नीवन्पत्नीवन्त्सजूर्देवेन। पत्नीवन्निति पत्नी वन्। सजूर्देवेन देवेन सजूः सजूर्देवेन त्वष्ट्रा त्वष्ट्रा देवेन सजूः सजूर्देवेन त्वष्ट्रा। सजूरिति स जूः। देवेन त्वष्ट्रा त्वष्ट्रा देवेन देवेन त्वष्ट्रा सोमꣳ सोमन्त्वष्ट्रा देवेन देवेन त्वष्ट्रा सोमम्। त्वष्ट्रा सोमꣳ सोमन्त्वष्ट्रा त्वष्ट्रा सोमम्पिब पिब सोमन्त्वष्ट्रा त्वष्ट्रा सोमम्पिब। सोमम्पिब पिब सोमꣳ सोमम्पिब स्वाहा स्वाहा पिब सोमꣳ सोमम्पिब स्वाहा। पिब स्वाहा स्वाहा पिब पिब स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ प्रजापतिर्वृषा वृषा प्प्रजापतिः प्प्रजापतिर्वृषास्यसि वृषा प्प्रजापतिः प्प्रजापतिर्वृषासि। प्रजापतिरिति प्प्रजा पतिः। वृषास्यसि वृषा वृषासि रेतोधा रेतोधाऽ असि वृषा वृषासि रेतोधाः। असि रेतोधा रेतोधाऽ अस्यसि रेतोधा रेतो रेतो रेतोधाऽ अस्यसि रेतोधा रेतः। रेतोधा रेतो रेतो रेतोधा रेतोधा रेतो मयि मयि रेतो रेतोधा रेतोधा रेतो मयि। रेतोधाऽ इति रेतः धाः। रेतो मयि मयि रेतो रेतो मयि धेहि धेहि मयि रेतो रेतो मयि धेहि। मयि धेहि धेहि मयि मयि धेहि प्प्रजापतेः प्प्रजापतेर्द्धेहि मयि मयि धेहि प्प्रजापतेः। धेहि प्प्रजापतेः प्प्रजापतेर्द्धेहि धेहि प्प्रजापतेस्त्वे ते प्प्रजापतेर्द्धेहि धेहि प्प्रजापते-

1. वा. प्रा. २.५०. के अनुसार अग्ना३॥ऽइ पद सर्वोदात्त एवं तीन मात्रा का है। अग्ना३॥ऽ इ अग्ना३॥ऽ इ की द्विरुक्ति में प्रथम इ का यवयोः पदान्तयोः स्वरमध्ये लोपः (वा. प्रा. ४.१२७) से लोप होने के कारण यण् सन्धि अप्राप्त है। अतः अग्नाम्यग्ना ऐसी सन्धि नहीं होगी। इकार का लोप होने के पश्चात् प्राप्त स्वरसन्धि का न परकालः पूर्वकाले पुनः (वा. प्रा. ३.४) इस सूत्र से निषेध होता है।

स्ते[1]। प्र॒जाप॑तेस्त्ते ते प्प्र॒जाप॑तेः प्प्र॒जाप॑तेस्त्ते॒ ब्वृष्ण्णो॒ ब्वृष्ण्ण॑स्त्ते प्प्र॒जाप॑तेः प्प्र॒जाप॑तेस्त्ते॒ ब्वृष्ण्ण॑ः। प्र॒जाप॑ते॒रिति॑ प्प्र॒जा प॑तेः[2]। ते॒ ब्वृष्ण्णो॒ ब्वृष्ण्ण॑स्त्ते ते॒ ब्वृष्ण्णो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒धसो॒ ब्वृष्ण्ण॑स्त्ते ते॒ ब्वृष्ण्णो॑ रेतो॒धस॑ः। ब्वृष्ण्णो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒-धसो॒ ब्वृष्ण्णो॒ ब्वृष्ण्णो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒धाꣳ रे॑तो॒धाꣳ रे॑तो॒धसो॒ ब्वृष्ण्णो॒ ब्वृष्ण्णो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒धाम्। रे॒तो॒धसो॑ रेतो॒धाꣳ रे॑तो॒धाꣳ रे॑तो॒धसो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒धाम॑शीयाशीय रेतो॒धाꣳ रे॑तो॒धसो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒धाम॑शीय। रे॒तो॒धस॒ऽ इति॑ रेत॒ः धस॑ः। रे॒तो॒धाम॑शीयाशीय रेतो॒धाꣳ रे॑तो॒धाम॑शीय। रे॒तो॒धामिति॑ रेत॒ः धाम्। अ॒शी॒येत्य॑शीय॥९॥

हरि॑रस्यसि॒ हरि॒र्हरि॑रसि हारियोज॒नो हा॑रियोज॒नो॒सि॒ हरि॒र्हरि॑रसि हारियो-ज॒नः। अ॒सि॒ हा॒रि॒यो॒ज॒नो हा॑रियोज॒नो॒स्यसि हारियोज॒नो हरि॑ब्भ्या॒ꣳ हरि॑ब्भ्याꣳ हारियोज॒नो॒स्यसि हारियोज॒नो हरि॑ब्भ्याम्। हा॒रि॒यो॒ज॒नो हरि॑ब्भ्या॒ꣳ हरि॑ब्भ्याꣳ हारियोज॒नो हा॑रियोज॒नो हरि॑ब्भ्यान्त्वा त्वा॒ हरि॑ब्भ्याꣳ हारियोज॒नो हा॑रियोज॒नो हरि॑ब्भ्यान्त्वा। हा॒रि॒यो॒ज॒नऽ इति॑ हारि योज॒नः। हरि॑ब्भ्यान्त्वा त्वा॒ हरि॑ब्भ्या॒ꣳ हरि॑ब्भ्यान्त्वा। हरि॑ब्भ्या॒मिति॒ हरि॑ भ्याम्। त्वेति॑ त्वा॥ हर्व्वो॑र्द्धा॒ना धा॒ना हर्व्वो॒र्हर्व्वो॑र्द्धा॒ना स्त्थ॑ स्त्थ धा॒ना हर्व्वो॒र्हर्व्वो॑र्द्धा॒ना स्त्थ॑। धा॒ना स्त्थ॑ स्त्थ धा॒ना धा॒ना स्त्थ॑ स॒हसो॑माः स॒हसो॑मा स्त्थ धा॒ना धा॒ना स्त्थ॑ स॒हसो॑माः। स्त्थ॒ स॒हसो॑माः स॒हसो॑मा स्त्थ स्त्थ स॒हसो॑मा॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य स॒हसो॑मा स्त्थ स्त्थ स॒हसो॑मा॒ऽ इन्द्रा॑य। स॒हसो॑मा॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य स॒हसो॑माः स॒हसो॑मा॒ऽ इन्द्रा॑य। स॒हसो॑मा॒ऽ इति॑ स॒ह सो॑माः। इन्द्रा॒येतीन्द्रा॑य॥१०॥

---

[1]. तथयोः सम् (वा. प्रा. ३.८) तकार एवं थकार परे रहते विसर्जनीय सकार हो जाता है।

[2].बहुप्रकृतावागन्तुना पर्वणा(वा.प्रा.५.७) इस सूत्र के अनुसार प्रजापतेः इस पद में समास के नियमानुसार समास रचना के समय बाद में जोड़े गये पद पतेः को पृथक् किया गया है।

षस्तें ते॒ षो षस्तेंऽ अश्व॒सनिंरश्व॒सनिंस्ते॒ षो षस्तेंऽ अश्व॒सनिंः। ते॒ऽ अ॒श्व॒सनिंरश्व॒सनिंस्त्ते तेऽ अश्व॒सनिंर्भ॒क्षो भ॒क्षो॒श्व॒सनिंस्त्ते तेऽ अश्व॒सनिंर्भ॒क्षः। अ॒श्व॒सनिंर्भ॒क्षो भ॒क्षो॒श्व॒सनिंरश्व॒सनिंर्भ॒क्षो षो षो भ॒क्षो॒श्व॒सनिंरश्व॒सनिंर्भ॒क्षो षः। अ॒श्व॒सनि॒रित्त्यंश्व॒ सनिंः। भ॒क्षो षो षो भ॒क्षो भ॒क्षो षो गो॒सनिंर्गो॒सनि॒र्ष्वो भ॒क्षो भ॒क्षो षो गो॒सनिंः। षो गो॒सनिंर्गो॒सनि॒र्ष्वो षो गो॒सनि॒स्तस्य॒ तस्यं गो॒सनि॒र्ष्वो षो गो॒सनि॒स्तस्यं। गो॒सनि॒स्तस्य॒ तस्यं गो॒सनिंर्गो॒सनि॒स्तस्यं ते ते॒ तस्यं गो॒सनिंर्गो॒सनि॒स्तस्यं ते। गो॒सनि॒रितिं गो॒ सनिंः। तस्यं ते ते॒ तस्य॒ तस्यं तऽ इ॒ष्टयंजुषऽ इ॒ष्टयंजुषस्ते॒ तस्य॒ तस्यं तऽ इ॒ष्टयंजुषः[1]। त॒ऽ इ॒ष्टयंजुषऽ इ॒ष्टयंजुषस्त्ते तऽ इ॒ष्टयंजुष स्तु॒तस्तोंमस्य स्तु॒तस्तोंमस्ये॒ष्टयंजुषस्त्ते तऽ इ॒ष्टयंजुष स्तु॒तस्तोंमस्य। इ॒ष्टयंजुष स्तु॒तस्तोंमस्य स्तु॒तस्तोंमस्ये॒ष्टयंजुषऽ इ॒ष्टयंजुष स्तु॒तस्तोंमस्य श॒स्तोक्थंस्य श॒स्तोक्थंस्य स्तु॒तस्तोंमस्ये॒ष्टयंजुषऽ इ॒ष्टयंजुष स्तु॒तस्तोंमस्य श॒स्तोक्थंस्य। इ॒ष्टयंजुष॒ऽ इती॒ष्ट षंजुषः। स्तु॒तस्तोंमस्य श॒स्तोक्थंस्य श॒स्तोक्थंस्य स्तु॒तस्तोंमस्य स्तु॒तस्तोंमस्य श॒स्तोक्थ॒स्योपंहूत॒स्योपंहूतस्य श॒स्तोक्थंस्य स्तु॒तस्तोंमस्य स्तु॒तस्तोंमस्य श॒स्तोक्थ॒स्योपंहूतस्य। स्तु॒तस्तोंम॒स्येतिं स्तु॒त स्तोंमस्य। श॒स्तोक्थ॒स्योपंहूत॒स्योपंहूतस्य श॒स्तोक्थंस्य श॒स्तोक्थ॒स्योपंहूत॒स्योपंहूत॒ऽ उपंहूत॒ऽ उपंहूतस्य श॒स्तोक्थंस्य श॒स्तोक्थ॒स्योपंहूत॒स्योपंहूतः। श॒स्तोक्थ॒स्येतिं श॒स्त उंक्थस्य। उपंहूत॒स्योपंहूत॒ऽ उपंहूत॒ऽ उपंहूत॒स्योपंहूत॒स्योपंहूतो भक्षयामि भक्षया॒म्म्युपंहूत॒ऽ उपंहूत॒स्योपंहूत॒स्योपंहूतो भक्षयामि। उपंहूत॒स्येत्युपं हूतस्य। उपंहूतो भक्षयामि

1. इष्टयजुषः यहां समस्तपद के मध्य में होने से यकार यकार नहीं होगा। स्थितोपस्थित पद में उत्तर पद का आदि होने से षकार होगा।

भक्षया॒म्म्युप॑हूत॒ऽ उप॑हूतो भक्षयामि। उप॑हूत॒ऽ इत्युप॑ हूतः। भ॒क्ष॒या॒मीति॑ भक्षयामि॥११॥

दे॒वकृ॑त॒स्यैन॑स॒ऽ एन॑सो दे॒वकृ॑तस्य दे॒वकृ॑त॒स्यैन॑सोव॒यज॑नमव॒यज॑न॒मेन॑-सो दे॒वकृ॑तस्य दे॒वकृ॑त॒स्यैन॑सोव॒यज॑नम्[1]। दे॒वकृ॑त॒स्येति॑ दे॒व कृ॑तस्य। एन॑सो-व॒यज॑नमव॒यज॑न॒मेन॑स॒ऽ एन॑सोव॒यज॑नमस्यस्यव॒यज॑न॒मेन॑स॒ऽ एन॑सोव॒यज॑नम-सि[2]। अ॒व॒यज॑नमस्यस्यव॒यज॑नमव॒यज॑नमसि मनु॒ष्य॒कृतस्य मनु॒ष्य॒कृत-स्यास्यव॒यज॑नमव॒यज॑नमसि मनु॒ष्य॒कृतस्य। अ॒व॒यज॑न॒मित्य॑व॒ यज॑नम्। अ॒सि॒ म॒नु॒ष्य॒कृतस्य मनु॒ष्य॒कृतस्यास्यसि मनु॒ष्य॒कृतस्य पि॒तृकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्य मनु॒ष्य॒कृतस्यास्यसि मनु॒ष्य॒कृतस्य पि॒तृकृ॑तस्य। म॒नु॒ष्य॒कृतस्य पि॒तृकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्य मनु॒ष्य॒कृतस्य मनु॒ष्य॒कृतस्य पि॒तृकृ॑तस्या॒त्मकृ॑तस्या॒त्मकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्य मनु॒ष्य॒कृतस्य मनु॒ष्य॒कृतस्य पि॒तृकृ॑तस्या॒त्मकृ॑तस्य। म॒नु॒ष्य॒-कृ॒त॒स्येति॑ मनु॒ष्य॒ कृतस्य। पि॒तृकृ॑तस्या॒त्मकृ॑तस्या॒त्मकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्या॒त्मकृ॑त॒स्यैन॑सऽएनस॒ऽ एन॑सऽएनसऽ आ॒त्मकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्या॒त्मकृ॑त॒स्यैन॑सऽएनसः। पि॒तृकृ॑त॒स्येति॑ पि॒तृ कृ॑तस्य। आ॒त्मकृ॑त॒-स्यैन॑सऽएनस॒ऽ एन॑सऽएनसऽ आ॒त्मकृ॑तस्या॒त्मकृ॑त॒स्यैन॑सऽएनसोव॒यज॑नमव॒-यज॑न॒मेन॑सऽएनसऽ आ॒त्मकृ॑तस्या॒त्मकृ॑त॒स्यैन॑सऽएनसोव॒यज॑नम्। आ॒त्मकृ॑त॒-स्येत्या॒त्म कृ॑तस्य। एन॑सऽएनसोव॒यज॑नमव॒यज॑न॒मेन॑सऽएनस॒ऽ एन॑सऽएन-सोव॒यज॑नमस्यस्यव॒यज॑न॒मेन॑सऽएनस॒ऽ एन॑सऽएनसोव॒यज॑नमसि। एन॑सऽ-एनस॒ऽ इत्येन॑सः एनसः। अ॒व॒यज॑नमस्यस्यव॒यज॑नमव॒यज॑नमसि। अ॒व॒यज॑-

---

[1]. एनोऽपापो (वा. प्रा. २.१३) पाप का वाचक न होने पर एनः पद अनुदात्त होता है। यहाँ पाप का वाचक होने के कारण आद्युदात्त है।

[2]. असि(वा.प्रा.२.८) असि पद अनुदात्त होता है।

नमित्त्येव यजनम्। असीत्त्यसि॥ यच्च च यद्यचाहमहञ्च यद्यचाहम्। चाहमहञ्च चाहमेनऽ एनोहञ्च चाहमेनः। अहमेनऽ एनोहमहमेनो विद्वान्विद्वानेनोहमहमेनो विद्वान्। एनो विद्वान्विद्वानेनऽ एनो विद्वाँश्चकार चकार विद्वानेनऽ एनो विद्वाँश्चकार। विद्वाँश्चकार चकार विद्वान्विद्वाँश्चकार यद्यचकार विद्वान्विद्वाँश्चकार यत्। चकार यद्यचकार चकार यच्च च यच्चकार चकार यच्च। यच्च च यद्यचाविद्वानविद्वाँश्च यद्यचाविद्वान्। चाविद्वानविद्वाँश्च चाविद्वाँस्तस्य तस्याविद्वाँश्च चाविद्वाँस्तस्य[1]। अविद्वाँस्तस्य तस्याविद्वानविद्वाँस्तस्य सर्व्वस्य सर्व्वस्य तस्याविद्वानविद्वाँस्तस्य सर्व्वस्य। तस्य सर्व्वस्य सर्व्वस्य तस्य तस्य सर्व्वस्य। सर्व्वस्येति सर्व्वस्य॥१२॥

समिन्द्रेन्द्र सछ समिन्द्र णो नऽ इन्द्र सछ समिन्द्र णः[2]। इन्द्र णो नऽ इन्द्रेन्द्र णो मनसा मनसा नऽ इन्द्रेन्द्र णो मनसा। नो मनसा मनसा नो नो मनसा नेषि नेषि मनसा नो नो मनसा नेषि। मनसा नेषि नेषि मनसा मनसा नेषि गोभिर्ग्गोभिर्न्नेषि मनसा मनसा नेषि गोभिः। नेषि गोभिर्ग्गोभिर्न्नेषि नेषि गोभिः सूरिभिः सूरिभिर्ग्गोभिर्न्नेषि नेषि गोभिः सूरिभिः। गोभिः सूरिभिः सूरिभिर्ग्गोभिर्ग्गोभिः सूरिभिर्म्मघवन्मघवन्त्सूरिभिर्ग्गोभिर्ग्गोभिः सूरिभिर्म्मघवन्। सूरिभिर्म्मघवन्मघवन्त्सूरिभिः सूरिभिर्म्मघवन्त्स्वस्त्या स्वस्त्या मघवन्त्सूरिभिः सूरिभिर्म्मघवन्त्स्वस्त्या। सूरिभिरिति सूरि भिः। मघवन्त्स्वस्त्या स्वस्त्या मघवन्मघवन्त्स्वस्त्या। मघवन्निति मघ वन्। स्वस्त्येति स्वस्त्या॥ ब्रह्मणा देवकृतन्देवकृतम्ब्रह्मणा ब्रह्मणा देवकृतँय्यद्यद्देवकृतम्ब्रह्मणा ब्रह्मणा

---

1. अविद्वाँस्तस्य यहाँ अनुनासिकत्व पृथग् वर्ण न होकर आकार का धर्म है, अतः वा.प्रा.३.१०३. के अनुसार तकार का द्वित्व होने में कुछ बाधा न होगी।

2. वा. प्रा. ३.८६. के अनुसार समिन्द्र णः यहाँ नकार निपातन से णकार होता है। ज्यो. वृ. पृ.२२ में कहा है- अन्यथाप्राप्तस्य अन्यथोच्चारणं निपातनम्।

देवकृतँ्ँय्यत्। देवकृतँ्ँय्यद्यद्देवकृतन्देवकृतँ्ँय्यदस्त्यस्ति यद्देवकृतन्देवकृतँ्ँय्यद-स्ति। देवकृतमितिं देव कृतम्। यदस्त्यस्ति यद्यदस्ति देवानान्देवानामस्ति यद्यदस्ति देवानाम्। अस्ति देवानान्देवानामस्त्यस्ति देवानाꣳ सुमतौ सुमतौ देवानामस्त्यस्ति देवानाꣳ सुमतौ। देवानाꣳ सुमतौ सुमतौ देवानान्देवानाꣳ सुमतौ यज्ज्ञियानाँय्यज्ज्ञियानाꣳ सुमतौ देवानान्देवानाꣳ सुमतौ यज्ज्ञियानाम् । सुमतौ यज्ज्ञियानाँय्यज्ज्ञियानाꣳ सुमतौ सुमतौ यज्ज्ञियानाꣳ स्वाहा स्वाहा यज्ज्ञियानाꣳ सुमतौ सुमतौ यज्ज्ञियानाꣳ स्वाहा। सुमतावितिं सु मतौ। यज्ज्ञियानाꣳ स्वाहा स्वाहा यज्ज्ञियानाँय्यज्ज्ञियानाꣳ स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१३॥

धाता राती रातिर्द्धाता धाता रातिः सविता सविता रातिर्द्धाता धाता रातिः सविता[1]। रातिः सविता सविता राती रातिः सवितेदमिदꣳ सविता राती रातिः सवितेदम्[2]। सवितेदमिदꣳ सविता सवितेदञ्जुषन्ताञ्जुषन्तामिदꣳ सविता सवितेदञ्जुषन्ताम्। इदञ्जुषन्ताञ्जुषन्तामिदमिदञ्जुषन्ताम्प्रजापतिः प्प्रजापति-र्ज्जुषन्तामिदमिदञ्जुषन्ताम्प्रजापतिः। जुषन्ताम्प्रजापतिः प्प्रजापतिर्ज्जुषन्ता-ञ्जुषन्ताम्प्रजापतिर्न्निधिपा निधिपाः प्प्रजापतिर्ज्जुषन्ताञ्जुषन्ताम्प्रजापतिर्न्निधि-पाः। प्रजापतिर्न्निधिपा निधिपाः प्प्रजापतिः प्प्रजापतिर्न्निधिपा देवो देवो निधिपाः प्प्रजापतिः प्प्रजापतिर्न्निधिपा देवः। प्रजापतिरितिं प्प्रजा पतिः। निधिपा देवो देवो निधिपा निधिपा देवोऽ अग्निरग्निर्द्देवो निधिपा निधिपा देवोऽ अग्निः। निधिपाऽ इतिं निधि पाः। देवोऽ अग्निरग्निर्द्देवो देवोऽ अग्निः।

[1]. रातिः रातिः यहाँ सन्धि की दशा में रेफे लुप्यते दीर्घं चोपधा (वा. प्रा. ४.३६) इस सूत्र से रेफ परे रहने के कारण विसर्ग का लोप एवं उपधा का दीर्घ होता है।

[2].सविता इदम् यहाँ अथैकमुत्तरश्च(वा.प्रा.४.५१) इसके अधिकार में पठित सूत्र कण्ठ्यादिवर्ण एकारम्(वा.प्रा.४.५४) से आ से परवर्ती इ आ के साथ एकार होता है।

अग्निरित्यग्निः॥ त्वष्टा व्विष्ण्णुर्व्विष्ण्णुस्त्वष्टा त्वष्टा व्विष्ण्णुं÷ प्प्रजया प्प्रजया व्विष्ण्णुस्त्वष्टा त्वष्टा व्विष्ण्णुं÷ प्प्रजया। व्विष्ण्णुं÷ प्प्रजया प्प्रजया व्विष्ण्णुर्व्विष्ण्णुं÷ प्प्रजया सꣳरराणाः संꣳरराणाः प्प्रजया व्विष्ण्णुर्व्विष्ण्णुं÷ प्प्रजया सꣳरराणाः। प्रजया सꣳरराणाः संꣳरराणाः प्प्रजया प्प्रजया सꣳरराणा यजमानाय यजमानाय सꣳरराणाः प्प्रजया प्प्रजया सꣳरराणा यजमानाय। प्रजयेति प्प्र जया। सꣳरराणा यजमानाय यजमानाय सꣳरराणाः संꣳरराणा यजमानाय द्रविणन्द्रविणँय्यजमानाय सꣳरराणाः संꣳरराणा यजमानाय द्रविणम्। सꣳरराणाऽ इति सम् रराणाः। यजमानाय द्रविणन्द्रविणँय्यजमानाय यजमानाय द्रविणन्दधात दधात द्रविणँय्यजमानाय यजमानाय द्रविणन्दधात। द्रविणन्दधात दधात द्रविणन्द्रविणन्दधात स्वाहा स्वाहा दधात द्रविणन्द्रविणन्दधात स्वाहा। दधात स्वाहा स्वाहा दधात दधात स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१४॥

सुगा वो वः सुगा सुगा वो देवा देवा वः सुगा सुगा वो देवाः। सुगेति सु गा। व्वो देवा देवा वो वो देवाः सदना सदना देवा वो वो देवाः सदना। देवाः सदना सदना देवा देवाः सदनाऽ अकर्म्माकर्म्म सदना देवा देवाः सदनाऽ अकर्म्म[1]। सदनाऽ अकर्म्माकर्म्म सदना सदनाऽ अकर्म्म ये येकर्म्म सदना सदनाऽ अकर्म्म ये। अकर्म्म ये येकर्म्माकर्म्म यऽ आजग्ग्माजग्ग्म येकर्म्माकर्म्म यऽ आजग्ग्म। यऽ आजग्ग्माजग्ग्म ये यऽ आजग्ग्मेदमिदमाजग्ग्म ये यऽ आजग्ग्मेदम्। आजग्ग्मेदमिदमाजग्ग्माजग्ग्मेदꣳ सवनꣳ सवनमिदमाजग्ग्माजग्ग्मेदꣳ सवनम्। आजग्ग्मेत्या जग्ग्म। इदꣳ सवनꣳ सवनमिदमिदꣳ सवनञ्जुषाणा जुषाणाः सवनमिदमिदꣳ सवनञ्जुषाणाः। सवनञ्जुषाणा जुषाणाः

---

[1]. वा. प्रा. ४.८७. के अनुसार सदना अकर्म यहाँ सदना यह पद प्रकृतिभाव से रहता है। अतः सूत्र ४.५२. से दीर्घ की प्राप्ति नहीं होगी।

सव॑न॒ꣳ सव॑नञ्जु॒षा॒णाः। जु॒षा॒णाऽ इति॑ जु॒षा॒णाः॥ भर॑माणा॒ ब्वह॑माना॒ ब्वह॑माना॒ भर॑माणा॒ भर॑माणा॒ ब्वह॑माना ह॒वीꣳषि॑ ह॒वीꣳषि॒ ब्वह॑माना॒ भर॑माणा॒ भर॑माणा॒ ब्वह॑माना ह॒वीꣳषि॑। ब्वह॑माना ह॒वीꣳषि॑ ह॒वीꣳषि॒ ब्वह॑माना॒ ब्वह॑माना ह॒वीꣳष्य॒-स्म्मेऽ अ॒स्म्मे ह॒वीꣳषि॒ ब्वह॑माना॒ ब्वह॑माना ह॒वीꣳष्य॒स्म्मे। ह॒वीꣳष्य॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे ह॒वीꣳषि॑ ह॒वीꣳष्य॒स्म्मे ध॑त्त ध॒त्ता॒स्म्मे ह॒वीꣳषि॑ ह॒वीꣳष्य॒स्म्मे ध॑त्त। अ॒स्म्मे ध॑त्त ध॒त्ता॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे ध॑त्त ब्वसवो ब्वसवो ध॒त्ता॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे ध॑त्त ब्वसवः। अ॒स्म्मेऽ इत्य॒स्म्मे। ध॒त्त॒ ब्व॒स॒वो॒ ब्व॒स॒वो॒ ध॒त्त॒ ध॒त्त॒ ब्व॒स॒वो॒ ब्वसू॑नि॒ ब्वसू॑नि ब्वसवो धत्त धत्त ब्वसवो॒ ब्वसू॑नि। ब्व॒स॒वो॒ ब्वसू॑नि॒ ब्वसू॑नि ब्वसवो ब्वसवो॒ ब्वसू॑नि॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ ब्वसू॑नि ब्वसवो ब्वसवो॒ ब्वसू॑नि॒ स्वाहा॑। ब्वसू॑नि॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ ब्वसू॑नि॒ ब्वसू॑नि॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१५॥

याँ॥ऽ आव॒होव॑ह॒ऽ आ यान्याँ॥ऽ आव॑हऽ उश॒तऽ उँश॒तोव॑ह॒ऽ आ यान्याँ॥ऽ आव॑हऽ उश॒तः[1]। आव॑हः। अव॑हऽ उश॒तऽ उँश॒तोव॒होव॑हऽ उश॒तो दे॑व दे॒वोश॒तोव॒होव॑हऽ उश॒तो दे॑व। उ॒श॒तो दे॑व दे॒वोश॒तऽ उँश॒तो दे॑व दे॒वान्दे॒वा-न्दे॑वोश॒तऽ उँश॒तो दे॑व दे॒वान्। दे॒व॒ दे॒वान्दे॒वान्दे॑व देव दे॒वाँस्ताँस्तान्दे॒वान्दे॑व देव दे॒वाँस्तान्। दे॒वाँस्ताँस्तान्दे॒वान्दे॒वाँस्तान्प्र प्प्र तान्दे॒वान्दे॒वाँस्तान्प्र। तान्प्र प्प्र ताँस्तान्प्रेर॑येरय॒ प्प्र ताँस्तान्प्रेर॑य। प्रेर॑येरय॒ प्प्र प्प्रेर॑य॒ स्वे स्वऽ ईर॑य॒ प्प्र प्प्रेर॑य॒ स्वे। ई॒र॒य॒ स्वे स्वऽ ईर॑येरय॒ स्वेऽ अ॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ स्वऽ ईर॑येरय॒ स्वेऽ अ॑ग्ग्ने। स्वेऽ अ॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ स्वे स्वेऽ अ॑ग्ग्ने स॒धस्त्थे॑ स॒धस्त्थे॑ग्ग्ने॒ स्वे स्वेऽ अ॑ग्ग्ने स॒धस्त्थे॑। अ॒ग्ग्ने॒ स॒धस्त्थे॑ स॒धस्त्थे॑ग्ग्नेग्ग्ने स॒धस्त्थे॑। स॒धस्त्थ॒ऽ इति॑ स॒ध स्थे॑॥ ज॒क्क्षि॒वाꣳसः॑ पपि॒वाꣳसः॑

[1]. यान् आ यहाँ आकारोपधो यकारम्(वा.प्रा.३.१४२) इस सूत्र से नकार यकार तथा उपधा अनुनासिक होता है। यवयोः पदान्तयोः स्वरमध्ये लोपः(वा.प्रा.४.१२७) से यकार का लोप होने पर न परकालः पूर्वकाले पुनः(वा.प्रा.३.४) से पूर्वकाल की सन्धि का निषेध होने से याँ आ रूप होता है।

पपिवाꣳसों जक्षिवाꣳसों जक्षिवाꣳसः पपिवाꣳसंश्च च पपिवाꣳसों जक्षिवाꣳसों जक्षिवाꣳसः पपिवाꣳसंश्च[1]। जक्षिवाꣳस इति जक्षि ब्राꣳसः। पपिवाꣳसंश्च च पपिवाꣳसः पपिवाꣳसंश्च व्विश्वे व्विश्वे च पपिवाꣳ-सः पपिवाꣳसंश्च व्विश्वे। पपिवाꣳस इति पपि ब्राꣳसः। च व्विश्वे व्विश्वे च च व्विश्वेसुमसुँव्विश्वे च च व्विश्वेसुम्[2]। व्विश्वेसुमसुँव्विश्वे व्विश्वेसुङ्घर्म्मङ्घर्म्ममसुँव्विश्वे व्विश्वेसुङ्घर्म्मम्। असुङ्घर्म्मङ्घर्म्ममसुमसुङ्घर्म्मꣳ स्वः स्वर्ग्घर्म्ममसुमसुङ्घर्म्मꣳ स्वः। घर्म्मꣳ स्वः स्वर्ग्घर्म्मङ्घर्म्मꣳ स्वरा तिष्ठत तिष्ठता स्वर्ग्घर्म्मङ्घर्म्मꣳ स्वरा तिष्ठत। स्वरा तिष्ठत तिष्ठता स्वः स्वरा तिष्ठतान्वनु तिष्ठता स्वः स्वरा तिष्ठतानु। आ तिष्ठत। तिष्ठतान्वनु तिष्ठत तिष्ठतानु स्वाहा स्वाहानु तिष्ठत तिष्ठतानु स्वाहा। अनु स्वाहा स्वाहान्वनु स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१६॥

व्वयꣳ हि हि व्वयँव्वयꣳ हि त्वा त्वा हि व्वयँव्वयꣳ हि त्वा। हि त्वा त्वा हि हि त्वा प्प्रयति प्प्रयति त्वा हि हि त्वा प्प्रयति। त्वा प्प्रयति प्प्रयति त्वा त्वा प्प्रयति यज्ञे यज्ञे प्प्रयति त्वा त्वा प्प्रयति यज्ञे। प्रयति यज्ञे यज्ञे प्प्रयति प्प्रयति यज्ञेऽ अस्मिन्नस्मिन्न्यज्ञे प्प्रयति प्प्रयति यज्ञेऽ अस्मिन्। प्रयतीति प्प्र यति। यज्ञेऽ अस्मिन्नस्मिन्न्यज्ञे यज्ञेऽ अस्मिन्नग्ग्नेग्ग्नेस्मिन्न्यज्ञे यज्ञेऽ अस्मिन्नग्ग्ने। अस्मिन्नग्ग्नेग्ग्नेस्मिन्नस्मिन्नग्ग्ने होतारꣳ होतारमग्ग्ने-स्मिन्नस्मिन्नग्ग्ने होतारम्। अग्ग्ने होतारꣳ होतारमग्ग्नेग्ग्ने होतारमवृणीमह्यवृ-वृणीमहि होतारमग्ग्नेग्ग्ने होतारमवृणीमहि। होतारमवृणीमह्यवृणीमहि होतारꣳ होतारमवृणीमहीहेहावृणीमहि होतारꣳ होतारमवृणीमहीह। अवृणीमहीहेहावृ-

---

[1]. नुश्चान्तः पदेऽरेफे (वा. प्रा. ४.२) इस सूत्र के अनुसार जक्षिवान् सः एवं पपिवान् सः में नकार अनुस्वार हो जाता है।

[2]. वा.प्रा.४.७१. के अनुसार विश्वे असुम् यहाँ विश्वे से परवर्ती अकार अभिनिधान को प्राप्त करता है। वा.प्रा.५.१४. के अनुसार मूर्धन्य न बना सु यह विभक्तिप्रत्यय बाद में होने पर पृथक्करण होता है। असुम् पद में सु विभक्तिमत्यय नहीं है। अतः इस पद का पृथक्करण नहीं होगा।

णीमुह्यवृंणीमहीह। इहेतीह॥ ऋधंगयाऽ अयाऽ ऋधगृधंगयाऽ ऋधगृधंगयाऽ ऋधगृधंगयाऽ ऋधंक्। अयाऽ ऋधगृधंगयाऽ अयाऽ ऋधंगुतोतऽ ऋधंगयाऽ अयाऽ ऋधंगुत। ऋधंगुतोतऽ ऋधगृधंगुताशंमिष्टाऽ अशमिष्टाऽ उतऽ ऋधगृधं-गुताशंमिष्टाः[1]। उताशंमिष्टाऽ अशमिष्टाऽ उतोताशंमिष्टाः प्प्रजानन्प्रंजानन्न्-शमिष्टाऽ उतोताशंमिष्टाः प्प्रजानन्। अशमिष्टाः प्प्रजानन्प्रंजानन्नशमिष्टाऽ अशमिष्टाः प्रजानन्न्यज्ज्ञँय्यज्ञम्प्रंजानन्नशमिष्टाऽ अशमिष्टाः प्प्रजानन्न्यज्ज्ञम् । प्रजानन्न्यज्ज्ञँय्यज्ञम्प्रंजानन्प्रंजानन्न्यज्ज्ञमुपोपं यज्ज्ञम्प्रंजानन्प्रंजानन्न्य-ज्ज्ञमुपं। प्रजानन्निति प्प्र जानन्। यज्ज्ञमुपोपं यज्ज्ञँय्यज्ज्ञमुपं याहि याह्युपं यज्ज्ञँय्यज्ज्ञमुपं याहि। उपं याहि याह्युपोपं याहि व्विद्वान्विद्वान्याह्युपोपं याहि व्विद्वान्। याहि व्विद्वान्विद्वान्यांहि याहि व्विद्वान्त्स्वाहा स्वाहां व्विद्वान्यांहि याहि व्विद्वान्त्स्वाहां।[2] व्विद्वान्त्स्वाहा स्वाहां व्विद्वान्विद्वान्त्स्वाहां। स्वाहेति स्वाहां॥ १७॥ शतम्॥३००॥

यज्ज्ञं यज्ज्ञँय्यज्ज्ञँय्यज्ज्ञ यज्ज्ञं यज्ज्ञङ्गच्छ गच्छ यज्ज्ञँय्यज्ज्ञ यज्ज्ञं यज्ज्ञङ्गच्छ। यज्ज्ञङ्गच्छ गच्छ यज्ज्ञँय्यज्ज्ञङ्गच्छ यज्ज्ञपंतिँय्यज्ज्ञपंतिङ्गच्छ यज्ज्ञँय्यज्ज्ञङ्गच्छ यज्ज्ञपंतिम्। गच्छ यज्ज्ञपंतिँय्यज्ज्ञपंतिङ्गच्छ गच्छ यज्ज्ञपंतिँ स्वाँ स्वाँय्यज्ज्ञपंतिङ्गच्छ गच्छ यज्ज्ञपंतिँ स्वाम्। यज्ज्ञपंतिँ स्वाँ स्वाँय्यज्ज्ञपंतिँय्यज्ज्ञपंतिँ स्वाँय्योनिँय्योनिँ स्वाँय्यज्ज्ञपंतिँय्यज्ज्ञ-पंतिँ स्वाँय्योनिम्। यज्ज्ञपंतिमिति यज्ज्ञ पंतिम्। स्वाँय्योनिँय्योनिँ स्वाँ स्वाँय्योनिम्। योनिमिति योनिम्॥ एष तें तऽ एषऽ एष तें यज्ज्ञो यज्ज्ञस्तंऽ

1. उत एवं अशमिष्ठाः यहाँ सन्धि की स्थिति में सिं सवर्णे दीर्घम् (वा. प्रा. ४.५२) इस सूत्र से दीर्घ होगा।

2. विद्वान् स्वाहा यहाँ ङ्णौ क्ताभ्यां सकारे(वा.प्रा.४.१५) इस सूत्र के अनुसार सकार वाद में होने से नकार तकार से व्यवहित होता है।

एषऽ एष तें यज्ञः। ते यज्ञो यज्ञस्तें ते यज्ञो यंज्ञपते यज्ञपते यज्ञस्तें ते यज्ञो यंज्ञपते। यज्ञो यंज्ञपते यज्ञपते यज्ञो यज्ञो यंज्ञपते सहसूंक्तवाकः सहसूक्तवाको यज्ञपते यज्ञो यज्ञो यंज्ञपते सहसूंक्तवाकः। यज्ञपते सहसूंक्तवाकः सहसूक्तवाको यज्ञपते यज्ञपते सहसूंक्तवाकः सर्ब्बवीरः सर्ब्बवीरः सहसूक्तवाको यज्ञपते यज्ञपते सहसूंक्तवाकः सर्ब्बवीरः[1]। यज्ञपतऽ इतिं यज्ञ पते। सहसूंक्तवाकः सर्ब्बवीरः सर्ब्बवीरः सहसूंक्तवाकः सहसूंक्तवाकः सर्ब्बवीरस्तन्तꣳ सर्ब्बवीरः सहसूक्तवाकः सहसूंक्तवाकः सर्ब्बवीरस्तम्। सहसूंक्तवाकऽ इतिं सह सूंक्तवाकः। सर्ब्बवीरस्तन्तꣳ सर्ब्बवीरः सर्ब्बवीरस्तञ्जुंषस्व जुषस्व तꣳ सर्ब्बवीरः सर्ब्बवीरस्तञ्जुंषस्व। सर्ब्बवीरऽ इति सर्ब्ब व्वीरः। तञ्जुंषस्व जुषस्व तन्तञ्जुंषस्व स्वाहा स्वाहां जुषस्व तन्तञ्जुंषस्व स्वाहां। जुषस्व स्वाहा स्वाहां जुषस्व जुषस्व स्वाहां। स्वाहेति स्वाहां॥१८॥

उरुꣳ हि ह्युरुमुरुꣳ हि राजा राजा ह्युरुमुरुꣳ हि राजां। हि राजा राजा हि हि राजा व्वरुंणो व्वरुंणो राजा हि हि राजा व्वरुंणः। राजा व्वरुंणो व्वरुंणो राजा राजा व्वरुंणश्चकारं चकार व्वरुंणो राजा राजा व्वरुंणश्चकारं। व्वरुंणश्चकारं चकार व्वरुंणो व्वरुंणश्चकार सूर्य्यांय सूर्य्यांय चकार व्वरुंणो व्वरुंणश्चकार सूर्य्यांय। चकार सूर्य्यांय सूर्य्यांय चकारं चकार सूर्य्यांय पन्थाम्पन्थाꣳ सूर्य्यांय चकारं चकार सूर्य्यांय पन्थांम्। सूर्य्यांय पन्थाम्पन्थाꣳ सूर्य्यांय सूर्य्यांय पन्थामन्वैंतवाऽ अन्वैंतवै पन्थाꣳ सूर्य्यांय सूर्य्यांय पन्थामन्वैंतवै[2]। पन्थामन्वैंतवाऽ अन्वैंतवै पन्थाम्पन्थामन्वैंतवाऽ उंऽ उऽ अन्वैंतवै पन्थाम्पन्थामन्वैंतवाऽ उं। अन्वैंतवाऽ

---

1. सहसूक्तवाकः सर्ववीरः यहां अविकारं शाकल्यः शषसेषु(वा.प्रा.३.१०) इस सूत्र से शाकल्याचार्य के मत में विसर्ग का विकार नहीं होता, यह मत माध्यन्दिन शाखा में ग्राह्य है।

2. वा. प्रा. २.४७. के अनुसार अन्वैंतवै पद में दो अक्षर उदात्त हैं।

उंऽ उऽ अन्वेंतवाऽ अन्वेंतवाऽ उं। अन्वेंतवाऽ इत्त्यंनु एतवै। ॐऽ इत्यूँ॥ अपदे पादा पादापदेपदे पादा प्प्रतिंधातवे प्प्रतिंधातवे पादापदेपदे पादा प्प्रतिंधातवे। पादा प्प्रतिंधातवे प्प्रतिंधातवे पादा पादा प्प्रतिंधातवेकरकुः प्प्रतिंधातवे पादा पादा प्प्रतिंधातवेकः। प्रतिंधातवेकरकुः प्प्रतिंधातवे प्प्रतिंधातवेकरुतोताकुः प्प्रतिंधातवे प्प्रतिंधातवेकरुत[1]। प्रतिंधातवऽ इति प्प्रतिं धातवे। अकरुतोता कंरकरुतापंवक्कापंवक्कोताकंरकरुतापंवक्का। उतापंवक्कापंवक्कोतोतापापंवक्का हृंदयाविधों हृदयविधोंपवक्कोतोतापंवक्का हृंदयाविधंः। अपवक्का हृंदयाविधों हृदयविधोंपवक्कापंवक्का हृंदयाविधेंश्चिचिद्धृदयविधोंपवक्कापंवक्का हृंदयाविधंश्चित्। अपवक्केत्त्यंप ब्वक्का। हृदयाविधंश्चिचिद्धृदयविधों हृदयाविधंश्चित्। हृदयविधऽ इतिं हृदय ब्विधंः। चिदितिं चित्॥ नमो ब्वरुंणाय ब्वरुंणाय नमो नमो ब्वरुंणायाभिष्टिं-तोभिस्त्थिंतो ब्वरुंणाय नमो नमो ब्वरुंणायाभिष्टिंतः। ब्वरुंणायाभिष्टिंतोभिस्त्थिंतो ब्वरुंणाय ब्वरुंणायाभिष्टिंतो ब्वरुंणस्य ब्वरुंणस्याभिस्त्थिंतो ब्वरुंणाय ब्वरुंणायाभि-ष्टिंतो ब्वरुंणस्य। अभिष्टिंतो ब्वरुंणस्य ब्वरुंणस्याभिस्त्थिंतोभिष्टिंतो ब्वरुंणस्य पाशः पाशो ब्वरुंणस्याभिस्त्थिंतोभिष्टिंतो ब्वरुंणस्य पाशंः। अभिस्त्थिंतऽ इत्त्यभि स्थिंतः। ब्वरुंणस्य पाशः पाशो ब्वरुंणस्य ब्वरुंणस्य पाशंः[2]। पाशऽ इति पाशंः॥१९॥

अग्ग्नेरनींकमनींकमग्ग्नेरग्ग्नेरनींकमप्पोपोनींकमग्ग्नेरग्ग्नेरनींकमपः। अ-नींकमप्पोपोनींकमनींकमपऽ आ विंवेश ब्विवेशापोनींकमनींकमपऽ आ विंवेश। अपऽ आ विंवेश ब्विवेशापोपऽ आ विंवेशापामपाँब्विंवेशापोपऽ आ विंवेशापाम्। आ विंवेश। ब्विवेशापामपाँब्विंवेश ब्विवेशापात्रपात्रपांदपाँब्विंवेश ब्विवेशापात्रपांत्।

[1]. अकः उत यहाँ रेफं स्वरधौ(वा.प्रा.४.३७) इस सूत्र से विसर्जनीय रेफ होता है।

[2]. प्रकृत्या कखयोः पफयोश्च (वा. प्रा. ३.११) ककार, खकार तथा पकार, फकार परे रहने पर विसर्जनीय अविकृत रहता है।

अपान्नपान्नपाद्पामपान्नपात्प्रतिरक्षंन्प्रतिरक्षन्नपाद्पामपान्नपात्प्रतिरक्षन्। नपात्प्रतिरक्षंन्प्रतिरक्षन्नपान्नपात्प्रतिरक्षन्नसुर्य्यमसुर्य्यम्प्रतिरक्षन्नपान्नपा-त्प्रतिरक्षन्नसुर्य्यम्। प्रतिरक्षन्नसुर्य्यमसुर्य्यम्प्रतिरक्षन्प्रतिरक्षन्नसुर्य्यम्। प्रतिरक्षन्निति प्प्रति रक्षन्। असुर्य्यमित्यसुर्य्यम्॥ दमेंदमे समिधंᳬ समिध-न्दमेंदमे दमेंदमे समिधँग्ग्यक्षि यक्षि समिधन्दमेंदमे दमेंदमे समिधँग्ग्यक्षि। दमेंदमऽ इति दमें दमे। समिधँग्ग्यक्षि यक्षि समिधंᳬ समिधँग्ग्यक्ष्यग्ग्नेग्ग्ने यक्षि समिधंᳬ समिधँग्ग्यक्ष्यग्ग्ने। समिधमिति सम् इधम्। यक्ष्यग्ग्नेग्ग्ने यक्षि यक्ष्यग्ग्ने प्प्रति प्प्रत्यंग्ग्ने यक्षि यक्ष्यग्ग्ने प्प्रति। अग्ग्ने प्प्रति प्प्रत्यं-ग्ग्नेग्ग्ने प्प्रति ते ते प्प्रत्यंग्ग्नेग्ग्ने प्प्रति ते। प्रति ते ते प्प्रति प्प्रति ते जिह्वा जिह्वा ते प्प्रति प्प्रति ते जिह्वा। ते जिह्वा जिह्वा तें ते जिह्वा घृतङ्घृतञ्जिह्वा तें ते जिह्वा घृतम्। जिह्वा घृतङ्घृतञ्जिह्वा जिह्वा घृतमुदुद् घृतञ्जिह्वा जिह्वा घृतमुत्। घृतमुदुद् घृतङ्घृ-तमुच्चरण्ण्यच्चरण्ण्युदुद् घृतङ्घृतमुच्चरण्ण्यत्[1]। उच्चरण्ण्यच्चरण्ण्युदुदुच्चरण्ण्यत्स्वा-हा स्वाहा चरण्ण्युदुदुच्चरण्ण्यत्स्वाहा। चरण्ण्यत्स्वाहा स्वाहा चरण्ण्यच्चरण्ण्य-त्स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२०॥

समुद्रे तें ते समुद्रे संमुद्रे ते हृदंयᳬ हृदंयन्ते समुद्रे संमुद्रे ते हृदंयम्। ते हृदंयᳬ हृदंयन्ते ते हृदंयमप्प्स्वप्प्सु हृदंयन्ते ते हृदंयमप्प्सु। हृदंयमप्प्स्वप्प्सु हृदंयᳬ हृदंयमप्प्स्वन्तरन्तरप्प्सु हृदंयᳬ हृदंयमप्प्स्वन्तः। अप्प्स्वन्तरन्तर-प्प्स्वप्प्स्वन्तः सᳬ समन्तरप्प्स्वप्प्स्वन्तः सम्। अप्प्स्वित्यप् सु[2]। अन्तः सᳬ समन्तरन्तः सन्त्वा त्वा समन्तरन्तः सन्त्वा। अन्तरित्यन्तः। सन्त्वा त्वा सᳬ सन्त्वा व्विशन्तु व्विशन्तु त्वा सᳬ सन्त्वा व्विशन्तु। त्वा व्विशन्तु व्विशन्तु त्वा

---

1. उत् चरण्यत् यहाँ वा.प्रा.४.९६. के अनुसार तकार चकार होता है।

2. स्विति चानतौ(वा.प्रा.५.१४) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

त्वा ब्विशन्त्वोषधीरोषधीर्ब्बिशन्तु त्वा त्वा ब्विशन्त्वोषधीः। ब्विशन्त्वोषधीरोषधीर्ब्बिशन्तु ब्विशन्त्वोषधीरुतोतौषधीर्ब्बिशन्तु ब्विशन्त्वोषधीरुत। ओषधीरुतोतौषधीरोषधीरुतापऽ आपऽ उतौषधीरोषधीरुतापः। उतापऽ आपऽ उतोतापः। आपऽ इत्यापः॥ यज्ञस्य त्वा त्वा यज्ञस्य यज्ञस्य त्वा यज्ञपते यज्ञपते त्वा यज्ञस्य यज्ञस्य त्वा यज्ञपते। त्वा यज्ञपते यज्ञपते त्वा त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ सूक्तोक्तौ यज्ञपते त्वा त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ। यज्ञपते सूक्तोक्तौ सूक्तोक्तौ यज्ञपते यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके नमोवाके सूक्तोक्तौ यज्ञपते यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके। यज्ञपतऽ इति यज्ञ पते। सूक्तोक्तौ नमोवाके नमोवाके सूक्तोक्तौ सूक्तोक्तौ नमोवाके ब्विधेम ब्विधेम नमोवाके सूक्तोक्तौ सूक्तोक्तौ नमोवाके ब्विधेम। सूक्तोक्ताविति सूक्त उक्तौ। नमोवाके ब्विधेम ब्विधेम नमोवाके नमोवाके ब्विधेम यद्यद्विधेम नमोवाके नमोवाके ब्विधेम यत्। नमोवाकऽ इति नमः ब्वाके। ब्विधेम यद्यद्विधेम ब्विधेम यत्स्वाहा स्वाहा यद्विधेम ब्विधेम यत्स्वाहा। यत्स्वाहा स्वाहा यद्यत्स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२१॥

देवीरापऽ आपो देवीर्द्देवीरापऽ एषऽ एषऽ आपो देवीर्द्देवीरापऽ एषः। आपऽ एषऽ एषऽ आपऽ आपऽ एष वो वऽ एषऽ आपऽ आपऽ एष वः[1]। एष वो वऽ एषऽ एष वो गर्ब्भो गर्ब्भो वऽ एषऽ एष वो गर्ब्भः। ब्वो गर्ब्भो गर्ब्भो वो वो गर्ब्भस्तन्तङ्गर्ब्भो वो वो गर्ब्भस्तम्। गर्ब्भस्तन्तङ्गर्ब्भो गर्ब्भस्तꣳ सुप्प्रीतꣳ सुप्प्रीतन्तङ्गर्ब्भो गर्ब्भस्तꣳ सुप्प्रीतम्। तꣳ सुप्प्रीतꣳ सुप्प्रीतन्तन्तꣳ सुप्प्रीतꣳ सुभृतꣳ सुभृतꣳ सुप्प्रीतन्तन्तꣳ सुप्प्रीतꣳ सुभृतम्। सुप्प्रीतꣳ सुभृतꣳ सुभृतꣳ सुप्प्रीतꣳ सुप्प्रीतꣳ सुभृतम्बिभृत बिभृत सुभृतꣳ सुप्प्रीतꣳ सुप्प्रीतꣳ सुभृतम्बिभृत। सुप्प्रीतमिति सु प्रीतम्। सुभृतम्बिभृत बिभृत सुभृतꣳ सुभृतम्बिभृत।

[1]. स्य एष च (वा. प्रा. ३.१७) व्यञ्जन परे रहने पर स्यः एवं एषः का विसर्जनीय लुप्त हो जाता है।

सुभृंतमिति सु भृंतम्। बिभृतेतिं बिभृत॥ देवं सोम सोम देव देवं सोमैषऽ एष सोंम देव देवं सोमैषः। सोमैषऽ एष सोंम सोमैष तें तऽ एष सोंम सोमैष तें। एष तें तऽ एषऽ एष तें लोको लोकस्त्तंऽ एषऽ एष तें लोकः। ते लोको लोकस्त्तें ते लोकस्तस्मिंमँस्तस्मिंमँल्लोकस्त्तें ते लोकस्तस्मिंमन्[1]। लोकस्तस्मिंमँस्तस्मिंमँ-ल्लोको लोकस्तस्मिंमञ्छꣳ शन्तस्मिंमँल्लोको लोकस्तस्मिंमञ्छम्। तस्मिंम-ञ्छꣳ शन्तस्मिंमँस्तस्मिंमञ्छञ्चं च शन्तस्मिंमँस्तस्मिंमञ्छञ्चं। शञ्चं च शꣳ शञ्च ब्वक्ष्व ब्वक्ष्वं च शꣳ शञ्च ब्वक्ष्वं। च ब्वक्ष्व ब्वक्ष्वं च च ब्वक्ष्व परि परि वक्ष्वं च च ब्वक्ष्व परिं। ब्वक्ष्व परि परि वक्ष्व ब्वक्ष्व परिं च च परि वक्ष्व ब्वक्ष्व परिं च। परिं च च परि परिं च ब्वक्ष्व ब्वक्ष्व च परि परिं च ब्वक्ष्व[2]। च ब्वक्ष्व ब्वक्ष्व च च ब्वक्ष्व। ब्वक्ष्वेतिं वक्ष्व॥ देवानांꣳ समित्समिद्देवानान्दे-वानांꣳ समिदंस्यसि समिद्देवानान्देवानांꣳ समिदंसि। समिदंस्यसि समित्समि-दंसि। समिदितिं सम् इत्। असीत्यंसि॥२२॥

एजंतु दशंमास्यो दशंमास्यऽ एजत्त्वेजंतु दशंमास्यो गर्ब्भो गर्ब्भो दशंमास्यऽ एजत्त्वेजंतु दशंमास्यो गर्ब्भः। दशंमास्यो गर्ब्भो गर्ब्भो दशंमास्यो दशंमास्यो गर्ब्भो जरायुंणा जरायुंणा गर्ब्भो दशंमास्यो दशंमास्यो गर्ब्भो जरा-युंणा। दशंमास्यऽ इति दशं मास्यः। गर्ब्भो जरायुंणा जरायुंणा गर्ब्भो गर्ब्भो जरायुंणा सह सह जरायुंणा गर्ब्भो गर्ब्भो जरायुंणा सह। जरायुंणा सह सह जरायुंणा जरायुंणा सह। सहेतिं सह॥ यथायमयँय्यथा यथायँव्वायुर्व्वायुरयँय्यथा यथायँव्वायुः। अयँव्वायुर्व्वायुरयमयँव्वायुरेजत्त्येजंति व्वायुरयमयँव्वायुरेजंति। व्वायुरे-

---

[1]. तस्मिन् तस्मिन् यहाँ तथयोः सम्(वा.प्रा.३.१३५) इस सूत्र से नकार सकार होता है तथा उपधा अनुनासिक होता है।

[2]. द्वयोः पूर्वं समुच्चये (वा. प्रा. ६.१९) दो क्रियापदों के समुच्चय अर्थ में होने पर प्रथम क्रिया पद अपने प्रकृति स्वर से युक्त होता है। जैसे यहाँ वक्ष्वं पद।

जुत्येजति वायुर्वायुरेजति यथा यथैजति वायुर्वायुरेजति यथा[1]। एजति यथा यथैजत्येजति यथा समुद्रः समुद्रो यथैजत्येजति यथा समुद्रः। यथा समुद्रः समुद्रो यथा यथा समुद्रऽ एजत्येजति समुद्रो यथा यथा समुद्रऽ एजति। समुद्रऽ एजत्येजति समुद्रः समुद्रऽ एजति। एजतीत्येजति॥ एवायमयमेवैवायन्दशमास्यो दशमास्योयमेवैवायन्दशमास्यः। अयन्दशमास्यो दशमास्योयमयन्दशमास्योऽ अस्रदस्रदशमास्योयमयन्दशमास्योऽ अस्रत्[2]। दशमास्योऽ अस्रदस्रदशमास्यो दशमास्योऽ अस्रज्जरायुणा जरायुणास्रद्दशमास्यो दशमास्योऽ अस्रज्जरायुणा। दशमास्यऽ इति दश मास्यः। अस्रज्जरायुणा जरायुणास्रदस्रज्जरायुणा सह सह जरायुणास्रदस्रज्जरायुणा सह। जरायुणा सह सह जरायुणा जरायुणा सह। सहेति सह॥२३॥

यस्यै ते ते यस्यै यस्यै ते यज्ञियो यज्ञियस्ते यस्यै यस्यै ते यज्ञियः। ते यज्ञियो यज्ञियस्ते ते यज्ञियो गर्भो गर्भो यज्ञियस्ते ते यज्ञियो गर्भः। यज्ञियो गर्भो गर्भो यज्ञियो यज्ञियो गर्भो यस्यै यस्यै गर्भो यज्ञियो यज्ञियो गर्भो यस्यै। गर्भो यस्यै यस्यै गर्भो गर्भो यस्यै योनिर्योनिर्यस्यै गर्भो गर्भो यस्यै योनिः। यस्यै योनिर्योनिर्यस्यै यस्यै योनिर्हिरण्ययी हिरण्ययी योनिर्यस्यै यस्यै योनिर्हिरण्ययी। योनिर्हिरण्ययी हिरण्ययी योनिर्योनिर्हिरण्ययी। हिरण्ययीति हिरण्ययी॥ अङ्गान्यहुताहुताङ्गान्यङ्गान्यहुता यस्य यस्याहुताङ्गान्यङ्गान्यहुता यस्य[3]। अहुता यस्य यस्याहुताहुता यस्य तन्तँयस्याहुताहुता यस्य तम्। यस्य तन्तँयस्य

[1]. यथा एजति यहाँ सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ(वा.प्रा.४.५८) इस सूत्र से सन्ध्यक्षर बाद में होने पर आकार परवर्ती एकार के सहित ऐकार होता है।

[2]. वा. प्रा. ४.८५. के अनुसार दशमास्यो का ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

[3]. अहुता इस पद में अर्हुता ऐसा उच्चारण करने पर स्वरभक्ति अपरिहार्य होगी, जो कि अविवक्षित है।

यस्य तम्मात्रा मात्रा तँय्यस्य यस्य तम्मात्रा। तम्मात्रा मात्रा तन्तम्मात्रा सꣳ सम्मात्रा तन्तम्मात्रा सम्। मात्रा सꣳ सम्मात्रा मात्रा समंजीगममजीगमꣳ सम्मात्रा मात्रा समंजीगमम्। समंजीगममजीगमꣳ सꣳ समंजीगमꣳ स्वाहा स्वाहाजीगमꣳ सꣳ समंजीगमꣳ स्वाहा। अजीगमꣳ स्वाहा स्वाहाजीगममजीगमꣳ स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२४॥

पुरुदस्म्मो विषुरूपो विषुरूपः पुरुदस्म्मः पुरुदस्म्मो विषुरूपऽ इन्दुरिन्दुर्विषुरूपः पुरुदस्म्मः पुरुदस्म्मो विषुरूपऽ इन्दुः। पुरुदस्म्मऽ इति पुरु दस्म्मः। विषुरूपऽ इन्दुरिन्दुर्विषुरूपो विषुरूपऽ इन्दुरन्तरन्तरिन्दुर्विषुरूपो विषुरूपऽ इन्दुरन्तः। विषुरूपऽ इति विषु रूपः। इन्दुरन्तरन्तरिन्दुरिन्दुरन्तम्मँहिमानम्महिमानमन्तरिन्दुरिन्दुरन्तम्मँहिमानम्। अन्तम्मँहिमानम्महिमानमन्तरन्तम्मँहिमानमानञ्ञानञ्ञ महिमानमन्तरन्तम्मँहिमानमानञ्ञ। महिमानमानञ्ञानञ्ञ महिमानम्महिमानमानञ्ञ धीरो धीरऽ आनञ्ञ महिमानम्महिमानमानञ्ञ धीरः। आनञ्ञ धीरो धीरऽ आनञ्ञानञ्ञ धीरः। धीरऽ इति धीरः॥

एकंपदीन्द्विपदीन्द्विपदीमेकंपदीमेकंपदीन्द्विपदीन्त्रिपदीन्त्रिपदीन्द्विपदीमेकंपदीमेकं पदीन्द्विपदीन्त्रिपदीम्। एकंपदीमित्येकं पदीम्। द्विपदीन्त्रिपदीन्त्रिपदीन्द्विपदीन्द्विपदीन्त्रिपदीञ्चतुष्प्पदीञ्चतुः पदीन्त्रिपदीन्द्विपदीन्द्विपदीन्त्रिपदीञ्चतुष्प्पदीम्। द्विपदीमिति द्वि पदीम्। त्रिपदीञ्चतुष्प्पदीञ्चतुः पदीन्त्रिपदीन्त्रिपदीञ्चतुष्प्पदीमष्टापदीमष्टापदीञ्चतुः पदीन्त्रिपदीन्त्रिपदीञ्चतुष्प्पदीमष्टापदीम्। त्रिपदीमिति त्रि पदीम्। चतुष्प्पदीमष्टापदीमष्टापदीञ्चतुः पदीञ्चतुष्प्पदीमष्टापदीम्भुवना भुवनाष्टापदीञ्चतुः पदीञ्चतुष्प्पदीमष्टापदीम्भुवना। चतुः पदीमिति चतुः पदीम्। अष्टापदीम्भुवना भुवनाष्टापदीमष्टापदीम्भुवनान्वनु भुवनाष्टापदीमष्टापदी-

म्भुवनानु। अष्टापदीमित्यष्टा पदीम्। भुवनान्वनु भुवना भुवनानु प्प्रथन्ताम्प्रथन्तामनु भुवना भुवनानु प्प्रथन्ताम्। अनु प्प्रथन्ताम्प्रथन्तामन्वनु प्प्रथन्ताँ स्वाहा स्वाहा प्प्रथन्तामन्वनु प्प्रथन्ताँ स्वाहा। प्रथन्ताँ स्वाहा स्वाहा प्प्रथन्ताम्प्रथन्ताँ स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२५॥

मरुतो यस्य यस्य मरुतो मरुतो यस्य हि हि यस्य मरुतो मरुतो यस्य हि[1]। यस्य हि हि यस्य यस्य हि क्षये क्षये हि यस्य यस्य हि क्षये। हि क्षये क्षये हि हि क्षये पाथ पाथ क्षये हि हि क्षये पाथ। क्षये पाथ पाथ क्षये क्षये पाथा दिवो दिवः पाथ क्षये क्षये पाथा दिवः। पाथा दिवो दिवः पाथ पाथा दिवो व्विमहसो व्विमहसो दिवः पाथ पाथा दिवो व्विमहसः। दिवो व्विमहसो व्विमहसो दिवो दिवो व्विमहसः। व्विमहसऽ इति वि महसः॥ स सुगोपातमः सुगोपातमः स स सुगोपातमो जनो जनः सुगोपातमः स स सुगोपातमो जनः। सुगोपातमो जनो जनः सुगोपातमः सुगोपातमो जनः। सुगोपातमऽ इति सु गोपातमः[2]। जनऽ इति जनः॥२६॥

मही द्यौर्द्यौर्म्महीं मही द्यौः पृथिवी पृथिवी द्यौर्म्मही मही द्यौः पृथिवी। द्यौः पृथिवी पृथिवी द्यौर्द्यौः पृथिवी च च पृथिवी द्यौर्द्यौः पृथिवी च। पृथिवी च च पृथिवी पृथिवी च नो नश्च पृथिवी पृथिवी च नः। च नो नश्च च नऽ इममिमन्नश्च च नऽ इमम्। नऽ इममिमन्नो नऽ इमँय्यज्ञँय्यज्ञमिमन्नो नऽ इमँय्यज्ञम्। इमँय्यज्ञँय्यज्ञमिममिमँय्यज्ञम्मिमिक्षताम्मिमिक्षताँय्यज्ञमिममिमँय्यज्ञम्मिमिक्षताम्। यज्ञम्मिमिक्षताम्मिमिक्षताँय्यज्ञँय्यज्ञम्मि-

---

[1]. वा.प्रा.४.१५७. के अनुसार यस्य पद में सकार के बाद एक यकार है।

[2]. वीतमहूतमसूतमगोपातमरत्नधातमवसुधातमाः पूर्वेण (वा. प्रा. ५.३) इस सूत्र के अनुसार यह पद पूर्ववर्ती पद के सहित अवगृहीत होता है।

मिक्षताम्। मिमिक्षतामिति मिमिक्षताम्॥ पिपृतान्नो नः पिपृताम्पिपृतान्नो भरीमभिर्भरीमभिर्न्नः पिपृताम्पिपृतान्नो भरीमभिः। नो भरीमभिर्भरीमभिर्न्नो नो भरीमभिः। भरीमभिरिति भरीम भिः॥२७॥

आ तिष्ठ तिष्ठा तिष्ठ वृत्रहन्वृत्रहँस्तिष्ठा तिष्ठ वृत्रहन्[1]। तिष्ठ वृत्रहन्वृत्रहँस्तिष्ठ तिष्ठ वृत्रहन्रथꣳ रथँवृत्रहँस्तिष्ठ तिष्ठ वृत्रहन्रथम्। वृत्रहन्रथꣳ रथँवृत्रहन्वृत्रहन्रथँयुक्ता युक्ता रथँवृत्रहन्वृत्रहन्रथँयुक्ता। वृत्रहन्निति वृत्र हन्। रथँयुक्ता युक्ता रथꣳ रथँयुक्ता ते ते युक्ता रथꣳ रथँयुक्ता ते। युक्ता ते ते युक्ता युक्ता ते ब्रह्मणा ब्रह्मणा ते युक्ता युक्ता ते ब्रह्मणा। ते ब्रह्मणा ब्रह्मणा ते ते ब्रह्मणा हरी हरी ब्रह्मणा ते ते ब्रह्मणा हरी। ब्रह्मणा हरी हरी ब्रह्मणा ब्रह्मणा हरी। हरीऽ इति हरी॥ अर्वाचीनꣳ सु स्वर्वाचीनमर्वाचीनꣳ सु ते ते स्वर्वाचीनमर्वाचीनꣳ सु ते। सु ते ते सु सु ते मनो मनस्ते सु सु ते मनः। ते मनो मनस्ते ते मनो ग्ग्रावा ग्ग्रावा मनस्ते ते मनो ग्ग्रावा। मनो ग्ग्रावा ग्ग्रावा मनो मनो ग्ग्रावा कृणोतु कृणोतु ग्ग्रावा मनो मनो ग्ग्रावा कृणोतु। ग्रावा कृणोतु कृणोतु ग्ग्रावा ग्ग्रावा कृणोतु वग्ग्नुना वग्ग्नुना कृणोतु ग्ग्रावा ग्ग्रावा कृणोतु वग्ग्नुना। कृणोतु वग्ग्नुना वग्ग्नुना कृणोतु कृणोतु वग्ग्नुना। वग्ग्नुनेति वग्ग्नुना॥ इन्द्राय त्वा त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा षोडशिने षोडशिने त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा षोडशिने। त्वा षोडशिने षोडशिने त्वा त्वा षोडशिने। षोडशिनऽ इति षोडशिने॥२८॥

युक्ष्वा हि हि युक्ष्व युक्ष्वा हि केशिना केशिना हि युक्ष्व युक्ष्वा हि केशिना[2]। हि केशिना केशिना हि हि केशिना हरी हरी केशिना हि हि केशिना हरी। केशिना हरी हरी केशिना केशिना हरी वृषणा वृषणा हरी केशिना केशिना

[1]. । वा. प्रा. ३.१०३. के अनुसार आद्युदात्त तिष्ठ पद का अकार दीर्घ होता है। यहाँ आद्युदात्त न होने से दीर्घ नहीं होगा।

[2]. वा.प्रा.३.१२९. के अनुसार युक्ष्व हि यहाँ युक्ष्व के अकार का दीर्घ हो गया है।

हरी वृषणा। हरी वृषणा वृषणा हरी हरी वृषणा कक्ष्यप्रा कक्ष्यप्रा वृषणा हरी हरी वृषणा कक्ष्यप्रा। हरीऽ इति हरी। वृषणा कक्ष्यप्रा कक्ष्यप्रा वृषणा वृषणा कक्ष्यप्रा। कक्ष्यप्रेति कक्ष्य प्रा॥ अथा नो नोथाथा नऽ इन्द्रेन्द्र नोथाथा नऽ इन्द्र। नऽ इन्द्रेन्द्र नो नऽ इन्द्र सोमपाः सोमपाऽ इन्द्र नो नऽ इन्द्र सोमपाः। इन्द्र सोमपाः सोमपाऽ इन्द्रेन्द्र सोमपा गिराङ्गिराꣳ सोमपाऽ इन्द्रेन्द्र सोमपा गिराम्। सोमपा गिराङ्गिराꣳ सोमपाः सोमपा गिरामुपश्रुति-मुपश्रुतिङ्गिराꣳ सोमपाः सोमपा गिरामुपश्रुतिम्। सोमपाऽ इति सोम पाः। गिरामुपश्रुतिमुपश्रुतिङ्गिराङ्गिरामुपश्रुतिञ्चर चरोपश्रुतिङ्गिराङ्गिरामुपश्रुतिञ्चर। उपश्रुतिञ्चर चरोपश्रुतिमुपश्रुतिञ्चर। उपश्रुतिमित्युप श्रुतिम्। चरेति चर॥२९॥

इन्द्रमिदिदिन्द्रमिन्द्रमिद्धरी हरीऽ इदिन्द्रमिन्द्रमिद्धरी। इद्धरी हरीऽ इदिद्धरी बृहतो बृहतो हरीऽ इदिद्धरी बृहतः। हरी बृहतो बृहतो हरी हरी बृहतोप्रतिधृष्टशवसमप्रतिधृष्टशवसँबृहतो हरी हरी बृहतोप्रतिधृष्टशवसम्। हरीऽ इति हरी। बृहतोप्रतिधृष्टशवसमप्रतिधृष्टशवसँबृहतो बृहतोप्रतिधृष्टश-वसम्। अप्रतिधृष्टशवसमित्यप्रतिधृष्ट शवसम्॥ ऋषीणाञ्च चऽ ऋषीणामृ-षीणाञ्च स्तुती स्तुतीश्चऽ ऋषीणामृषीणाञ्च स्तुतीः। च स्तुती स्तुतीश्च च स्तुतीरुपोप स्तुतीश्च च स्तुतीरुप। स्तुतीरुपोप स्तुती स्तुतीरुप यज्ञँय्यज्ञमुप स्तुती स्तुतीरुप यज्ञम्[1]। उप यज्ञँय्यज्ञमुपोप यज्ञञ्च च यज्ञमुपोप यज्ञञ्च। यज्ञञ्च च यज्ञँय्यज्ञञ्च मानुषाणाम्मानुषाणाञ्च यज्ञँय्यज्ञञ्च मानुषाणाम्। च मानुषाणाम्मानुषाणाञ्च च मानुषाणाम्। मानुषाणामिति मानुषाणाम्॥३०॥

---

[1]. पादादौ च पदादौ च सँय्योगावग्रहेषु च। जः शब्द इति विज्ञेयो योऽन्यः स य इति स्मृतः॥ -या. शि. १५०.

उप यज्ञम् यहाँ पादादि होने के कारण यकार का जकार के सदृश उच्चारण होगा।

यस्म्मा॒न्न न यस्म्मा॒द्यस्म्मा॒न्न जा॒तो जा॒तो न यस्म्मा॒द्यस्म्मा॒न्न जा॒तः। न जा॒तो जा॒तो न न जा॒तः प॒रः परो॑ जा॒तो न न जा॒तः पर॑ः। जा॒तः प॒रः परो॑ जा॒तो जा॒तः परो॑ऽ अ॒न्यो॒न्यः परो॑ जा॒तो जा॒तः परो॑ऽ अ॒न्यः। परो॑ऽ अ॒न्यो॒न्यः प॒रः परो॑ऽ अ॒न्योऽ अस्त्यस्त्य॒न्यः प॒रः परो॑ऽ अ॒न्योऽ अस्ति॑। अ॒न्योऽ अस्त्यस्त्य॒न्यो॒न्योऽ अस्ति॒ यो योस्त्य॒न्यो॒न्योऽ अस्ति॒ यः। अस्ति॒ यो योस्त्यस्ति॒ यऽ आ॑वि॒वेशा॑वि॒वेश॒ योस्त्यस्ति॒ यऽ आ॑वि॒वेश॑। यऽ आ॑वि॒वेशा॑वि॒वेश॒ यो यऽ आ॑वि॒वेश॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नान्याविवेश॒ यो यऽ आ॑वि॒वेश॒ भुव॑नानि। आवि॒वेश॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नान्याविवेशा॑वि॒वेश॒ भुव॑नानि॒ व्विश्वा॒ व्विश्वा॒ भुव॑नान्याविवेशा॑वि॒वेश॒ भुव॑नानि॒ व्विश्वा॑। आ॒वि॒वेशेत्या॑ व्विवेश॑। भुव॑नानि॒ व्विश्वा॒ व्विश्वा॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नानि॒ व्विश्वा॑। व्विश्वेति॒ विश्वा॑॥ प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जया॑ सꣳररा॒णः सꣳ॑ररा॒णः प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जया॑ सꣳररा॒णः। प्र॒जाप॑ति॒रिति॑ प्प्र॒जा प॑तिः[1]। प्र॒जया॑ सꣳररा॒णः सꣳ॑ररा॒णः प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जया॑ सꣳररा॒णस्त्रीणि॒ त्रीणि॑ सꣳररा॒णः प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जया॑ सꣳररा॒णस्त्रीणि॑। प्र॒जयेति॑ प्प्र॒ जया॑। स॒ꣳर॒रा॒णस्त्रीणि॒ त्रीणि॑ सꣳररा॒णः सꣳ॑ररा॒णस्त्रीणि॒ ज्ज्योती॑ꣳषि॒ ज्ज्योती॑ꣳषि॒ त्रीणि॑ सꣳररा॒णः सꣳ॑ररा॒णस्त्रीणि॒ ज्ज्योती॑ꣳषि। स॒ꣳर॒रा॒णऽ इति॑ सम् र॒रा॒णः। त्रीणि॒ ज्ज्योती॑ꣳषि॒ ज्ज्योती॑ꣳषि॒ त्रीणि॒ त्रीणि॒ ज्ज्योती॑ꣳषि सचते सचते॒ ज्ज्योती॑ꣳषि॒ त्रीणि॒ त्रीणि॒ ज्ज्योती॑ꣳषि सचते। ज्योती॑ꣳषि सचते सचते॒ ज्ज्योती॑ꣳषि॒ ज्ज्योती॑ꣳषि सचते॒ स स सं॑चते॒ ज्ज्योती॑ꣳषि॒ ज्ज्योती॑ꣳषि सचते॒ सः[2]। स॒च॒ते॒ स स सं॑चते सचते॒ स षो॑ड॒शी

---

1. जिस पद में समास की बहुलता होती है, उस पद में उत्तरकालिक समास के साथ अवग्रह का विधान होता है- बहुमकृतावागन्तुना पर्वणा(वा.प्रा.५.७)।

2. व्यञ्जने च (वा. प्रा. ३.१६) व्यञ्जन परे रहने पर सः का विसर्जनीय लुप्त होता है।

षोंडुशी स संचते सचते स षोंडुशी। स षोंडुशी षोंडुशी स स षोंडुशी। षोडुशीतिं षोडुशी॥३१॥

इन्द्रंश्च चेन्द्रऽ इन्द्रंश्च सम्म्राट्ट् सम्म्राट्ट् चेन्द्रऽ इन्द्रंश्च सम्म्राट्। च सम्म्राट्ट् सम्म्राट्ट् चं च सम्म्राड्वरुंणो व्वरुंणः सम्म्राट्ट् चं च सम्म्राड्वरुंणः। सम्म्राड्वरुंणो व्वरुंणः सम्म्राट्ट् सम्म्राड्वरुंणश्च च व्वरुंणः सम्म्राट्ट् सम्म्राड्वरुंणश्च। सम्म्राडितिं सम् राट्। व्वरुंणश्च च व्वरुंणो व्वरुंणश्च राजा राजां च व्वरुंणो व्वरुंणश्च राजां। च राजा राजां च च राजा तौ तौ राजां च च राजा तौ। राजा तौ तौ राजा राजा तौ तें ते तौ राजा राजा तौ तें[1]। तौ तें ते तौ तौ तें भुक्षम्भुक्षन्ते तौ तौ तें भुक्षम्। ते भुक्षम्भुक्षन्तें ते भुक्षञ्चंक्रतुश्चक्रतुर्भुक्षन्तें ते भुक्षञ्चंक्रतुः। भुक्षञ्चंक्रतुश्चक्रतुर्भुक्षम्भुक्षञ्चंक्रतुरग्ग्रेग्ग्रें चक्रतुर्भुक्षम्भुक्षञ्चंक्रतुरग्ग्रें। चक्रतुरग्ग्रेग्ग्रें चक्रतुश्चक्रतुरग्ग्रंऽ एतमेतमग्ग्रें चक्रतुश्चक्रतुरग्ग्रंऽ एतम्। अग्ग्रंऽ एतमेतमग्ग्रेग्ग्रंऽ एतम्। एतमित्येतम्॥ तयोंरुहमुहन्तयोस्त-योंरुहमन्न्वन्न्वुहन्तयोस्तयोंरुहमनुं। अहमन्न्वन्न्वुहमुहमनुं भुक्षम्भुक्षमन्न्वुहम-हमनुं भुक्षम्। अनुं भुक्षम्भुक्षमन्न्वनुं भुक्षम्भंक्षयामि भक्षयामि भुक्षमन्न्वनुं भुक्षम्भंक्षयामि। भुक्षम्भंक्षयामि भक्षयामि भुक्षम्भुक्ष-म्भंक्षयामि व्वाग्ग्वाग्ग्भंक्षयामि भुक्षम्भुक्षम्भंक्षयामि व्वाक्। भुक्षयामि व्वाग्ग्वाग्ग्भंक्षयामि भक्षयामि व्वाग्ग्देवी देवी व्वाग्ग्भंक्षयामि भक्षयामि व्वाग्ग्देवी। व्वाग्ग्देवी देवी व्वाग्ग्वाग्ग्देवी जुंषाणा जुंषाणा देवी व्वाग्ग्वाग्ग्देवी जुंषाणा। देवी जुंषाणा जुंषाणा देवी देवी जुंषाणा सोमंस्य सोमंस्य जुषाणा देवी देवी जुंषाणा सोमंस्य। जुषाणा सोमंस्य सोमंस्य जुषाणा जुंषाणा सोमंस्य तृप्प्यतु तृप्प्यतु सोमंस्य जुषाणा जुंषाणा सोमंस्य तृप्प्यतु। सोमंस्य तृप्प्यतु

[1]. वा.प्रा.२.५. के अनुसार यहाँ ते पद अनुदात्त है।

तृप्प्यतु॒ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य तृप्प्यतु स॒ह स॒ह तृ॑प्प्यतु॒ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य तृप्प्यतु स॒ह। तृ॒प्प्य॒तु स॒ह स॒ह तृ॑प्प्यतु तृप्प्यतु स॒ह प्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णेन॑ स॒ह तृ॑प्प्यतु तृप्प्यतु स॒ह प्प्रा॒णेन॑। स॒ह प्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णेन॑ स॒ह स॒ह प्प्रा॒णेन॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ प्प्रा॒णेन॑ स॒ह स॒ह प्प्रा॒णेन॒ स्वाहा॑। प्रा॒णेन॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ प्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णेन॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥३२॥

अग्ग्ने॒ पव॑स्व॒ पव॒स्वाग्ग्नेग्ग्ने॒ पव॑स्व॒ स्वपा॒ः स्वपा॒ः पव॒स्वाग्ग्नेग्ग्ने॒ पव॑स्व॒ स्वपा॑ः[1] । पव॑स्व॒ स्वपा॒ः स्वपा॒ः पव॑स्व॒ पव॑स्व॒ स्वपा॑ऽ अ॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे स्वपा॒ः पव॑स्व॒ पव॑स्व॒ स्वपा॑ऽ अ॒स्म्मे। स्वपा॑ऽ अ॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे स्वपा॒ः स्वपा॑ऽ अ॒स्म्मे ब्वर्चो॒ ब्वर्चो॒स्म्मे स्वपा॒ः स्वपा॑ऽ अ॒स्म्मे ब्वर्च॑ः। स्वपा॒ऽ इति॑ सु॒ अपा॑ः। अ॒स्म्मे ब्वर्चो॒ ब्वर्चो॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे ब्वर्च॑ः सु॒वीर्य्यँ॑ꣳ सु॒वीर्य्यँ॒म्ब्वर्चो॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे ब्वर्च॑ः सु॒वीर्य्यँ॑म्। अ॒स्म्मेऽ इत्य॒स्म्मे। ब्वर्च॑ः सु॒वीर्य्यँ॑ꣳ सु॒वीर्य्यँ॒म्ब्वर्चो॒ ब्वर्च॑ः सु॒वीर्य्यँ॑म्। सु॒वीर्य्य॒मिति॑ सु॒ ब्वीर्य्यँ॑म्॥ दध॑द्द्रयिꣳ र॒यिन्दध॒द्दध॑द्द्रयिम्मयि॒ मयि॑ र॒यिन्दध॒द्दध॑द्द्र-यिम्मयि॑। र॒यिम्मयि॒ मयि॑ र॒यिꣳ र॒यिम्मयि॒ पोष॒म्पोष॒म्मयि॑ र॒यिꣳ र॒यिम्मयि॒ पोष॑म्। मयि॒ पोष॒म्पोष॒म्मयि॒ मयि॒ पोष॑म्। पोष॒मिति॒ पोष॑म्॥ अ॒ग्ग्नये॑ त्वा त्वा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ त्वा॒ ब्वर्च॑से॒ ब्वर्च॑से त्वा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ त्वा॒ ब्वर्च॑से। त्वा॒ ब्वर्च॑से॒ ब्वर्च॑से त्वा त्वा॒ ब्वर्च॑से। ब्वर्च॑स॒ऽ इति॒ वर्च॑से॥ अग्ग्ने॑ ब्वर्चस्विन्न्वर्चस्वि॒न्नग्ग्नेग्ग्ने॑ ब्वर्चस्वि॒न्नवर्च॑-स्वा॒न्वर्च॑स्वान्वर्चस्वि॒न्नग्ग्नेग्ग्ने॑ ब्वर्चस्वि॒न्नवर्च॑स्वान्। ब्व॒र्च॒स्वि॒न्नवर्च॑स्वा॒न्वर्च॑स्वान्व-र्चस्विन्वर्चस्वि॒न्वर्च॑स्वाँ॒स्त्वन्त्वँ॑ब्वर्च॑स्वान्वर्चस्विन्वर्चस्वि॒न्वर्च॑स्वाँ॒स्त्वम्। ब्वर्च॑-स्वाँ॒स्त्वन्त्वँ॑ब्वर्च॑स्वा॒न्वर्च॑स्वाँ॒स्त्वन्दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ त्वँ॑ब्वर्च॑स्वा॒न्वर्च॑स्वाँ॒स्त्वन्दे॒वेषु॑।

[1]. उदाताच्चामन्त्रितादनन्तरम् (वा. प्रा. ६.१२) उदात-सम्बोधन-पद से परवर्ती क्रिया-पद अपने प्रकृति स्वर से युक्त होता है, जैसे यहाँ अग्ने से परवर्ती पवस्व।

त्वन्देवेषु देवेषु त्वन्त्वन्देवेष्ष्वस्यसि देवेषु त्वन्त्वन्देवेष्ष्वसि[1]। देवेष्ष्वस्यसि देवेषु देवेष्ष्वसि व्वर्चस्वान्वर्चस्वानसि देवेषु देवेष्ष्वसि व्वर्चस्वान्। असि व्वर्चस्वान्वर्चस्वानस्यसि व्वर्चस्वानहमहँव्वर्चस्वानस्यसि व्वर्चस्वानहम्[2]। व्वर्चस्वानहमहँव्वर्चस्वान्वर्चस्वानहम्मनुष्ष्येषु मनुष्ष्येष्ष्वहँव्वर्चस्वान्वर्चस्वानहम्मनुष्ष्येषु। अहम्मनुष्ष्येषु मनुष्ष्येष्ष्वहमहम्मनुष्ष्येषु भूयासम्भूयासम्मनुष्ष्येष्ष्वहमहम्मनुष्ष्येषु भूयासम्। मनुष्ष्येषु भूयासम्भूयासम्मनुष्ष्येषु मनुष्ष्येषु भूयासम्। भूयासमिति भूयासम्॥३३॥

उत्तिष्ठन्नोजसौजसोत्तिष्ठन्नुत्तिष्ठन्नोजसा सह सहौजसोत्तिष्ठन्नुत्तिष्ठन्नोजसा सह। उत्तिष्ठन्नित्युत् तिष्ठन्। ओजसा सह सहौजसौजसा सह पीत्वी पीत्वी सहौजसौजसा सह पीत्वी। सह पीत्वी पीत्वी सह सह पीत्वी शिप्प्रे शिप्प्रे पीत्वी सह सह पीत्वी शिप्प्रे। पीत्वी शिप्प्रे शिप्प्रे पीत्वी पीत्वी शिप्प्रेऽ अवेपयोवेपयः शिप्प्रे पीत्वी पीत्वी शिप्प्रेऽ अवेपयः। शिप्प्रेऽ अवेपयोवेपयः शिप्प्रे शिप्प्रेऽ अवेपयः। शिप्प्रेऽ इति शिप्प्रे। अवेपयऽ इत्यवेपयः॥ सोममिन्द्रेन्द्र सोमꣳ सोममिन्द्र चमू चमूऽ इन्द्र सोमꣳ सोममिन्द्र चमू। इन्द्र चमू चमूऽ इन्द्रेन्द्र चमू सुतꣳ सुतञ्चमूऽ इन्द्रेन्द्र चमू सुतम्। चमू सुतꣳ सुतञ्चमू चमू सुतम्। चमूऽ इति चमू[3]। सुतमिति सुतम्॥ इन्द्राय त्वा त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वौजसऽ ओजसे त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वौजसे। त्वौजसऽ ओजसे त्वा त्वौजसे। ओजसऽ इत्योजसे॥ इन्द्रौजिष्ठौजिष्ठेन्द्रेन्द्रौजिष्ठौजिष्ठऽ ओजिष्ठऽ ओजिष्ठेन्द्रेन्द्रौजिष्ठौजिष्ठः। ओजिष्ठौजिष्ठऽ ओजिष्ठऽ ओजिष्ठौजिष्ठौजिष्ठस्त्वन्त्वमोजिष्ठऽ ओजिष्ठौजिष्ठौजिष्ठस्त्व-

---

1. वा. प्रा. २.४०. के अनुसार यहाँ असि पद आद्युदात है।
2. वर्चस्वान् अहम् यहाँ सन्धि की स्थिति में वा.प्रा.३.१५०. के अनुसार नकार प्रकृतिभाव से रहता है।
3. चमू अस्मे त्वे (वा. प्रा. १.९६) ये पद प्रगृह्य होते हैं। प्रगृह्य होने के कारण स्थितोपस्थित पाठ होता है।

म्। ओजिंष्ठस्त्वन्त्वमोजिंष्ठऽ ओजिंष्ठस्त्वन्देवेषु देवेषु त्वमोजिंष्ठऽ ओजिंष्ठस्त्व-न्देवेषु। त्वन्देवेषु देवेषु त्वन्त्वन्देवेष्ष्वस्यसिं देवेषु त्वन्त्वन्देवेष्ष्वसिं। देवेष्ष्व-स्यसिं देवेषु देवेष्ष्वस्योजिंष्ठऽ ओजिष्ठोसिं देवेषु देवेष्ष्वस्योजिंष्ठः। अस्योजिंष्ठऽ ओजिष्ठोस्यस्योजिंष्ठोहमहमोजिष्ठोस्यस्योजिंष्ठोहम्। ओजिंष्ठोहमहमोजिंष्ठऽ ओजिंष्ठोहम्मंनुष्ष्येषु मनुष्ष्येष्ष्वहमोजिंष्ठऽ ओजिंष्ठोहम्मंनुष्ष्येषु। अहम्मंनु-ष्ष्येषु मनुष्ष्येष्ष्वहमहम्मंनुष्ष्येषु भूयासम्भूयासम्मनुष्ष्येष्ष्वहमहम्मंनुष्ष्येषु भूयासम्। मनुष्ष्येषु भूयासम्भूयासम्मनुष्ष्येषु मनुष्ष्येषु भूयासम्। भूयासमितिं भूयासम्॥३४॥

अदृंश्रमस्यास्यादृंश्रमदृंश्रमस्य केतवंः केतवोस्यादृंश्रमदृंश्रमस्य केत-वंः[1]। अस्य केतवंः केतवोंस्यास्य केतवो व्वि वि केतवोंस्यास्य केतवो व्वि। केतवो व्वि वि केतवंः केतवो व्वि रश्म्मयों रश्म्मयो व्वि केतवंः केतवो व्वि रश्म्मयंः। व्वि रश्म्मयों रश्म्मयो व्वि वि रश्म्मयो जनाञ्जनान्रश्म्मयो व्वि वि रश्म्मयो जनान्। रश्म्मयो जनाञ्जनान्रश्म्मयों रश्म्मयो जनाँ॥ऽ अन्वनु जनान्रश्म्मयों रश्म्मयो जनाँ॥ऽ अनुं। जनाँ॥ऽ अन्वनु जनाञ्जनाँ॥ऽ अनुं। अन्वित्यनुं॥ भ्राजन्तोऽ अग्ग्नयोग्ग्नयो ब्भ्राजन्तो ब्भ्राजन्तोऽ अग्ग्नयों यथा यथाग्ग्नयो ब्भ्राजन्तो ब्भ्राजन्तोऽ अग्ग्नयों यथा[2]। अग्ग्नयों यथा यथाग्ग्नयोग्ग्नयों यथा। यथेतिं यथा॥ सूर्य्यांय त्वा त्वा सूर्य्यांय सूर्य्यांय त्वा ब्भ्राजायं ब्भ्राजायं त्वा सूर्य्यांय सूर्य्यांय त्वा ब्भ्राजायं। त्वा ब्भ्राजायं ब्भ्राजायं त्वा त्वा ब्भ्राजायं। भ्राजायेतिं ब्भ्राजायं ॥ सूर्य्यं ब्भ्राजिष्ट ब्भ्राजिष्ट सूर्य्य सूर्य्यं

---

1. व्यञ्जनपराश्च न(वा.प्रा.४.१५९) इस सूत्र के अनुसार अदृश्रम् इस पद में शकार के बाद यकार नहीं है।

2. यथागृभोभुवोऽग्निभ्यः (वा. प्रा. २.९) गृभः, भुवः एवं अग्नि से बाद में स्थित यथा पद अनुदात्त होता है।

ब्भ्राजिष्ठ ब्भ्राजिंष्ठो ब्भ्राजिंष्ठो ब्भ्राजिष्ठ सूर्य्य सूर्य्यं ब्भ्राजिष्ठ ब्भ्राजिंष्ठः[1]। भ्राजिष्ठ ब्भ्राजिंष्ठो ब्भ्राजिंष्ठो ब्भ्राजिष्ठ ब्भ्राजिष्ठ ब्भ्राजिंष्ठस्त्वन्त्वम्भ्राजिंष्ठो ब्भ्राजिष्ठ ब्भ्राजिष्ठ ब्भ्राजिंष्ठस्त्वम्। भ्राजिंष्ठस्त्वन्त्वम्भ्राजिंष्ठो ब्भ्राजिंष्ठस्त्वन्दे-वेषुं देवेषु त्वम्भ्राजिंष्ठो ब्भ्राजिंष्ठस्त्वन्देवेषुं। त्वन्देवेषुं देवेषु त्वन्त्वन्देवेष्ष्वस्यसिं देवेषु त्वन्त्वन्देवेष्ष्वसिं[2]। देवेष्ष्वस्यसिं देवेषुं देवेष्ष्वसि ब्भ्राजिंष्ठो ब्भ्राजिष्ठोसिं देवेषुं देवेष्ष्वसि ब्भ्राजिंष्ठः। असि ब्भ्राजिंष्ठो ब्भ्राजिष्ठोस्यसि ब्भ्राजिंष्ठोहम्-हम्भ्राजिष्ठोस्यसि ब्भ्राजिंष्ठोहम्। भ्राजिंष्ठोहमहम्भ्राजिंष्ठो ब्भ्राजिंष्ठोहम्मंनुष्ष्येषु मनुष्ष्येष्ष्वहम्भ्राजिंष्ठो ब्भ्राजिंष्ठोहम्मंनुष्ष्येषु। अहम्मंनुष्ष्येषु मनुष्ष्येष्ष्वहम्-हम्मंनुष्ष्येषु भूयासम्भूयासम्मनुष्ष्येष्ष्वहमहम्मंनुष्ष्येषु भूयासम्। मनुष्ष्येषु भूयासम्भूयासम्मनुष्ष्येषु मनुष्ष्येषु भूयासम्। भूयासमितिं भूयासम्॥३५॥

आ जिंग्घ्र जिग्घ्रा जिंग्घ्र कुलशंङ्कुलशंञ्जिग्घ्रा जिंग्घ्र कुलशंम्। जिग्घ्र कुलशंङ्कुलशंञ्जिग्घ्र जिग्घ्र कुलशंम्महि महि कुलशंञ्जिग्घ्र जिग्घ्र कुलशंम्महि। कुलशंम्महि महि कुलशंङ्कुलशंम्मुह्या त्वा त्वा मंहि कुलशंङ्कुलशंम्मुह्या त्वां। मुह्या त्वा त्वा मंहि मुह्या त्वां ब्विशन्तु ब्विशन्तु त्वा मंहि मुह्या त्वां ब्विशन्तु। आ त्वां। त्वा ब्विशन्तु ब्विशन्तु त्वा त्वा ब्विशन्त्विन्दंवऽ इन्दंवो ब्विशन्तु त्वा त्वा ब्विशन्त्विन्दंवः। ब्विशन्त्विन्दंवऽ इन्दंवो ब्विशन्तु ब्विशन्त्विन्दंवः। इन्दंवऽ इती-न्दंवः॥ पुनंरूर्ज्जोर्ज्जा पुनः पुनंरूर्ज्जा नि न्यूर्ज्जा पुनः पुनंरूर्ज्जा नि। ऊर्ज्जा नि न्यूर्ज्जोर्ज्जा नि वंर्त्तस्व ब्वर्त्तस्व न्यूर्ज्जोर्ज्जा नि वंर्त्तस्व। नि वंर्त्तस्व ब्वर्त्तस्व नि नि वंर्त्तस्व सा सा ब्वंर्त्तस्व नि नि वंर्त्तस्व सा। ब्वर्त्तस्व सा सा ब्वंर्त्तस्व ब्वर्त्तस्व सा नों नः

[1]. इस अर्धरी में प्रथम आमन्त्रित सूर्य पद पादादि होने से अनुदात्त नहीं है, दूसरा आमन्त्रित पद भ्राजिष्ठ पद किसी पद(सूर्य) के बाद में होने से अनुदात्त है। तृतीय पद भ्राजिष्ठः आमन्त्रित नहीं है, अतः अनुदात्त नहीं है, पदपूर्वमामन्त्रितमनानार्थेऽपादादौ(वा.प्रा.२.१७)।

[2]. वा. प्रा. २.४०. के अनुसार यहाँ असिं पद आद्युदात्त है।

सा व्वर्तस्व व्वर्तस्व सा नः। सा नो नः सा सा नः सहस्रꣳ सहस्रन्नः सा सा नः सहस्रम्। नः सहस्रꣳ सहस्रन्नो नः सहस्रन्धुक्ष्व धुक्ष्व सहस्रन्नो नः सहस्रन्धुक्ष्व। सहस्रन्धुक्ष्व धुक्ष्व सहस्रꣳ सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारोरुधारा धुक्ष्व सहस्रꣳ सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा। धुक्ष्वोरुधारोरुधारा धुक्ष्व धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पयस्वत्युरुधारा धुक्ष्व धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती। उरुधारा पयस्वती पयस्वत्युरुधारोरुधारा पयस्वती पुनः पुनः पयस्वत्युरुधारोरुधारा पयस्वती पुनः। उरुधारेत्युरु धारा। पयस्वती पुनः पुनः पयस्वती पयस्वती पुनर्म्मा मा पुनः पयस्वती पयस्वती पुनर्म्मा[1]। पुनर्म्मा मा पुनः पुनर्म्मा विंशताद्विंशतादा मा पुनः पुनर्म्मा विंशतात्। मा विंशताद्विंशतादा मा मा विंशताद्द्रयी रयिर्व्विंशतादा मा मा विंशताद्द्रयिः। आ विंशतात्। व्विशताद्द्रयी रयिर्व्विंशताद्विशताद्द्रयिः। रयिरिति रयिः ॥३६॥

इडे रन्ते रन्तऽ इडऽ इडे रन्ते हव्ये हव्ये रन्तऽ इडऽ इडे रन्ते हव्ये[2]। रन्ते हव्ये हव्ये रन्ते रन्ते हव्ये काम्म्ये काम्म्ये हव्ये रन्ते रन्ते हव्ये काम्म्ये। हव्ये काम्म्ये काम्म्ये हव्ये हव्ये काम्म्ये चन्द्रे चन्द्रे काम्म्ये हव्ये हव्ये काम्म्ये चन्द्रे। काम्म्ये चन्द्रे चन्द्रे काम्म्ये काम्म्ये चन्द्रे ज्योते ज्योते चन्द्रे काम्म्ये काम्म्ये चन्द्रे ज्योते। चन्द्रे ज्योते ज्योते चन्द्रे चन्द्रे ज्योतेदित्यदिति ज्योते चन्द्रे चन्द्रे ज्योतेदिति । ज्योतेदित्यदिति ज्योते ज्योतेदिति सरस्वति सरस्वत्यदिति ज्योते ज्योतेदिति सरस्वति[3]। अदिति सरस्वति सरस्वत्यदित्यदिति सरस्वति महि महि सरस्वत्यदित्यदिति सरस्वति महि। सरस्वति महि महि

1. पुनः मा यहाँ सन्धि की दशा में रेफं स्वरधौ (वा. प्रा. ४.३७) इस सूत्र से विसर्जनीय रेफ होता है।

2. वा.प्रा.२.२१. के अनुसार इस कण्डिका के प्रारम्भ के नौ पद आद्युदात्त हैं।

3. इडे रन्तेश्विनकृतस्य ते पातन्नो यस्ते युवꣳ सुराममिडऽ एहि।

पदकाले तु वाक्ये च ह्रस्वाः पञ्च सरस्वति ॥-अ.शि.५२.

सर॑स्वति॒ सर॑स्वति॒ महि॒ ब्विश्रु॑ति॒ ब्विश्रु॑ति॒ महि॒ सर॑स्वति॒ सर॑स्वति॒ महि॒ ब्विश्रु॑ति। महि॒ ब्विश्रु॑ति॒ ब्विश्रु॑ति॒ महि॒ महि॒ ब्विश्रु॑ति। ब्विश्रुतीति॒ वि श्रु॑ति॥ ए॒ता तें तऽ ए॒तैता तेंऽ अग्घ्येग्घ्ये तऽ ए॒तैता तेंऽ अग्घ्ये। ते॒ऽ अ॒ग्घ्येग्घ्ये॒ ते॒ ते॒ऽ अ॒ग्घ्ये॒ नामा॑नि॒ नामा॑न्न्यग्घ्ये ते तेऽ अग्घ्ये॒ नामा॑नि[1]। अ॒ग्घ्ये॒ नामा॑नि॒ नामा॑न्न्यग्घ्येग्घ्ये॒ नामा॑नि दे॒वेब्भ्यों दे॒वेब्भ्यो॒ नामा॑न्न्यग्घ्येग्घ्ये॒ नामा॑नि दे॒वेब्भ्य॑÷। नामा॑नि दे॒वेब्भ्यों दे॒वेब्भ्यो॒ नामा॑नि॒ नामा॑नि दे॒वेब्भ्यों मा मा दे॒वेब्भ्यो॒ नामा॑नि॒ नामा॑नि दे॒वेब्भ्यों मा। दे॒वेब्भ्यों मा मा दे॒वेब्भ्यों दे॒वेब्भ्यों मा सु॒कृत॑ᳬ सु॒कृत॑म्मा दे॒वेब्भ्यों दे॒वेब्भ्यों मा सु॒कृत॑म्। मा॒ सु॒कृत॑ᳬ सु॒कृत॑म्मा मा सु॒कृत॑म्ब्रूताद् ब्रूतात्सु॒कृत॑म्मा मा सु॒कृत॑म्ब्रूतात्। सु॒कृत॑म्ब्रूताद् ब्रूतात्सु॒कृत॑ᳬ सु॒कृत॑म्ब्रूतात्। सु॒कृ॒तमिति॑ सु कृत॑म्। ब्रू॒तादिति॑ ब्रूतात्॥३७॥

ब्वि नों नो॒ ब्वि वि न॑ऽ इन्द्रेन्द्र नो॒ ब्वि वि न॑ऽ इन्द्र। न॒ऽ इ॒न्द्रे॒न्द्र॒ नो॒ न॒ऽ इ॒न्द्र॒ मृधो॒ मृध॑ऽ इन्द्र नो नऽ इन्द्र॒ मृध॑÷। इ॒न्द्र॒ मृधो॒ मृध॑ऽ इन्द्रेन्द्र॒ मृधों जहि जहि॒ मृध॑ऽ इन्द्रेन्द्र॒ मृधों जहि। मृधों जहि जहि॒ मृधो॒ मृधों जहि नी॒चा नी॒चा ज॑हि॒ मृधो॒ मृधों जहि नी॒चा। ज॒हि॒ नी॒चा नी॒चा ज॑हि जहि नी॒चा य॑च्छ यच्छ नी॒चा ज॑हि जहि नी॒चा य॑च्छ। नी॒चा य॑च्छ यच्छ नी॒चा नी॒चा य॑च्छ पृतन्न्य॒तः॒ पृ॑तन्न्य॒तो य॑च्छ नी॒चा नी॒चा य॑च्छ पृतन्न्य॒तः॒। य॒च्छ॒ पृ॒त॒न्न्य॒तः॒ पृ॑तन्न्य॒तो य॑च्छ यच्छ पृतन्न्य॒तः॒। पृ॒त॒न्न्य॒तऽ इति॑ पृतन्न्य॒तः॒॥ यो॑ऽ अ॒स्म्मान॒स्म्मान्न्यो योऽ अ॒स्म्मार॑ँ॥ऽ अ॑भि॒दास॑त्त्यभि॒दास॑त्त्य॒स्म्मान्न्यो योऽ अ॒स्म्मार॑ँ॥ऽ अ॑भि॒दास॑ति। अ॒स्म्मार॑ँ॥ऽ अ॑भि॒दास॑त्त्यभि॒दास॑त्त्य॒स्म्मान॒स्म्मार॑ँ॥ऽ अ॑भि॒दास॒त्त्यध॑र॒मध॑रम- भि॒दास॑त्त्य॒स्म्मान॒स्म्मार॑ँ॥ऽ अ॑भि॒दास॒त्त्यध॑रम्। अ॒भि॒दास॒त्त्यध॑र॒मध॑रमभि॒दास॑-

---

[1]. निशब्दो बहुलम् (वा. प्रा. ३.१८) पदान्त में स्थित नि पद अधिकांशतः लुप्त हो जाता है। कहीं लुप्त नहीं होता है। जैसे नामानि में लुप्त नहीं हुआ है।

त्यभिदासत्यधरङ्गमय गमयाधरमभिदासत्यभिदासत्यधरङ्गमय। अभिदासती-त्यभि दासति। अधरङ्गमय गमयाधरमधरङ्गमया तमस्तमो गमयाधरमधरङ्गमया तमः। गमया तमस्तमो गमय गमया तमः। तमऽ इति तमः॥ इन्द्राय त्वा त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा विमृधे विमृधे त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा विमृधे। त्वा विमृधे विमृधे त्वा त्वा विमृधे। विमृधऽ इति वि मृधे॥३८॥

वाचस्पतिम्पतिंवाचो वाचस्पतिंविश्वकर्म्माणंविश्वकर्म्माणम्पतिंवाचो वाचस्पतिंविश्वकर्म्माणम्[1]। पतिंविश्वकर्म्माणंविश्वकर्म्माणम्पतिम्पतिंविश्व-कर्म्माणमूतयऽ ऊतये विश्वकर्म्माणम्पतिम्पतिंविश्वकर्म्माणमूतये। विश्वक-र्म्माणमूतयऽ ऊतये विश्वकर्म्माणंविश्वकर्म्माणमूतये मनोजुवम्मनोजुवमूतये विश्वकर्म्माणंविश्वकर्म्माणमूतये मनोजुवम्। विश्वकर्म्माणमिति विश्व कर्म्माणम्। ऊतये मनोजुवम्मनोजुवमूतयऽ ऊतये मनोजुवँवाजे वाजे मनोजु-वमूतयऽ ऊतये मनोजुवँवाजे। मनोजुवँवाजे वाजे मनोजुवम्मनोजुवँवाजेऽ अद्याद्य वाजे मनोजुवम्मनोजुवँवाजेऽ अद्य। मनोजुवमिति मनः जुवम्। वाजेऽ अद्याद्य वाजे वाजेऽ अद्या हुवेम हुवेमाद्य वाजे वाजेऽ अद्या हुवेम। अद्या हुवेम हुवेमाद्याद्या हुवेम। हुवेमेति हुवेम॥ स नो नः स स नो विश्वानि विश्वानि नः स स नो विश्वानि। नो विश्वानि विश्वानि नो नो विश्वानि हवनानि हवनानि विश्वानि नो नो विश्वानि हवनानि। विश्वानि हवनानि हवनानि विश्वानि विश्वानि हवनानि जोषज्जोषद्धवनानि विश्वानि विश्वानि हवनानि जोषत्[2]। हवनानि जोषज्जोषद्धवनानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूर्विश्वशम्भूर्ज्जोषद्धवनानि

---

1. पत्यौ तालव्यस्वरोदये (वा. प्रा. ३.३५) तथा पदे च(वा.प्रा.३.३६) इन सूत्रों के अनुसार यहाँ वाचः पद का विसर्जनीय सकार होता है।

2. जोषत् हवनानि यहाँ वा.प्रा.४.१२०. के अनुसार तकार दकार तथा वा.प्रा.४.१२४. के अनुसार हकार धकार होता है।

हवंनानि जोषद्विश्वशंम्भूः। जोषद्विश्वशंम्भूर्विश्वशंम्भूर्ज्जोषज्जोषद्विश्वशंम्भूरवसे-वंसे विश्वशंम्भूर्ज्जोषज्जोषद्विश्वशंम्भूरवंसे। विश्वशंम्भूरवसेवंसे विश्वशंम्भूर्विश्व-शंम्भूरवंसे साधुकंर्म्मा साधुकर्म्मावंसे विश्वशंम्भूर्विश्वशंम्भूरवंसे साधुकर्म्मा। विश्वशंम्भूरितिं विश्व शंम्भूः। अवंसे साधुकंर्म्मा साधुकर्म्मावसेवंसे साधुकंर्म्मा। साधुकर्म्मेतिं साधु कंर्म्मा॥ इन्द्रांय त्वा त्वेन्द्रायेन्द्रांय त्वा विश्वकंर्म्मणे विश्वकंर्म्मणे त्वेन्द्रायेन्द्रांय त्वा विश्वकंर्म्मणे। त्वा विश्वकंर्म्मणे विश्वकंर्म्मणे त्वा त्वा विश्वकंर्म्मणे। विश्वकंर्म्मणऽ इतिं विश्व कंर्म्मणे॥३९॥

विश्वंकर्म्मन्न्हविषां हविषा विश्वंकर्म्मन्विश्वंकर्म्मन्न्हविषा वर्द्धनेन वर्द्धनेन हविषा विश्वंकर्म्मन्विश्वंकर्म्मन्न्हविषा वर्द्धनेन। विश्वंकर्म्मन्निति विश्वं कर्म्मन्। हविषा वर्द्धनेन वर्द्धनेन हविषां हविषा वर्द्धनेन त्रातारन्त्रातारँवर्द्धनेन हविषां हविषा वर्द्धनेन त्रातारंम्। वर्द्धनेन त्रातारन्त्रातारँवर्द्धनेन वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमिन्द्रन्त्राता-रँवर्द्धनेन वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रंम्। त्रातारमिन्द्रमिन्द्रन्त्रातारन्त्रातारमिन्द्रंम-कृणोरकृणोरिन्द्रन्त्रातारन्त्रातारमिन्द्रमकृणोः। इन्द्रंमकृणोरकृणोरिन्द्रमिन्द्रंम-कृणोरवद्ध्यमंवद्ध्यमंकृणोरिन्द्रमिन्द्रंमकृणोरवद्ध्यम्। अकृणोरवद्ध्यमंवद्ध्यमं-कृणोरकृणोरवद्ध्यम्। अवद्ध्यमित्यंवद्ध्यम्॥ तस्म्मै विशो विशस्तस्म्मै तस्म्मै विशः सः सँविशस्तस्म्मै तस्म्मै विशः सम्। विशः सः सँविशो विशः समंनमन्तानमन्तु सँविशो विशः समंनमन्त। समंनमन्तानमन्तु सः समंनमन्त पूर्व्वीः पूर्व्वीरंनमन्तु सः समंनमन्त पूर्व्वीः। अनमन्तु पूर्व्वीः पूर्व्वीरंनमन्तानमन्त पूर्व्वीरयमयम्पूर्व्वीरंनमन्तानमन्त पूर्व्वीरयम्। पूर्व्वीरयमय-म्पूर्व्वीः पूर्व्वीरयमुग्ग्रऽ उग्ग्रोयम्पूर्व्वीः पूर्व्वीरयमुग्ग्रः। अयमुग्ग्रऽ उग्ग्रोयमयमुग्ग्रो विहव्यों विहव्यंऽ उग्ग्रोयमयमुग्ग्रो विहव्यंः। उग्ग्रो विहव्यों विहव्यंऽ उग्ग्रऽ

उग्ग्रो व्विहव्यो यथा यथा व्विहव्यंऽ उग्ग्रऽ उग्ग्रो व्विहव्यो यथा। व्विहव्यो यथा यथा व्विहव्यों व्विहव्यो यथासदसद्यथा व्विहव्यों व्विहव्यो यथासत्। व्विहव्यऽ इति वि हव्यं÷। यथासदसद्यथा यथासत्। असदित्यसत्॥४०॥

अग्ग्नयें त्वा त्वाग्ग्नयेग्ग्नयें त्वा गायत्रच्छंन्दसङ्गायत्रच्छंन्दसन्त्वाग्ग्नये-ग्ग्नयें त्वा गायत्रच्छंन्दसम्[1]। त्वा गायत्रच्छंन्दसङ्गायत्रच्छंन्दसन्त्वा त्वा गायत्रच्छंन्दसङ्गृह्णामि गृह्णामि गायत्रच्छंन्दसन्त्वा त्वा गायत्रच्छंन्दसङ्गृह्णामि। गायत्रच्छंन्दसङ्गृह्णामि गृह्णामि गायत्रच्छंन्दसङ्गायत्रच्छंन्दसङ्गृह्णामीन्द्रायेन्द्राय गृह्णामि गायत्रच्छंन्दसङ्गायत्रच्छंन्दसङ्गृह्णामीन्द्राय[2]। गायत्रच्छंन्दसमिति गायत्र छंन्दसम्। गृह्णामीन्द्रायेन्द्राय गृह्णामि गृह्णामीन्द्राय त्रिष्टुप्प्छंन्दसन्त्रि-स्तुप्प्छंन्दसमिन्द्राय गृह्णामि गृह्णामीन्द्राय त्रिष्टुप्प्छंन्दसम्। इन्द्राय त्रिष्टुप्प्छं-न्दसन्त्रिस्तुप्प्छंन्दसमिन्द्रायेन्द्राय त्रिष्टुप्प्छंन्दसँव्विश्श्वेंब्भ्यो व्विश्श्वेंब्भ्यस्त्रिस्तुप्प्छं-न्दसमिन्द्रायेन्द्राय त्रिष्टुप्प्छंन्दसँव्विश्श्वेंब्भ्यः। त्रिष्टुप्प्छंन्दसँव्विश्श्वेंब्भ्यो व्विश्श्वेंब्भ्य-स्त्रिस्तुप्प्छंन्दसन्त्रिष्टुप्प्छंन्दसँव्विश्श्वेंब्भ्यो देवेब्भ्यों देवेब्भ्यो व्विश्श्वेंब्भ्यस्त्रिस्तुप्प्छं-न्दसन्त्रिष्टुप्प्छंन्दसँव्विश्श्वेंब्भ्यो देवेब्भ्यं÷। त्रिस्तुप्प्छंन्दसमिति त्रिस्तुप् छंन्दसम्। व्विश्श्वेंब्भ्यो देवेब्भ्यों देवेब्भ्यो व्विश्श्वेंब्भ्यो व्विश्श्वेंब्भ्यो देवेब्भ्यो जगच्छन्दसञ्जग-च्छन्दसन्देवेब्भ्यो व्विश्श्वेंब्भ्यो व्विश्श्वेंब्भ्यो देवेब्भ्यो जगच्छन्दसम्। देवेब्भ्यो जगच्छन्दसञ्जगच्छन्दसन्देवेब्भ्यों देवेब्भ्यो जगच्छन्दसमनुष्टुब्बनुस्तुञ्जगच्छ-न्दसन्देवेब्भ्यों देवेब्भ्यो जगच्छन्दसमनुष्टुप्। जगच्छन्दसमनुष्टुब्बनुस्तुञ्जग-च्छन्दसञ्जगच्छन्दसमनुष्टुप्सें तेनुस्तुञ्जगच्छन्दसञ्जगच्छन्दसमनुष्टुप्सें।

---

1. स्वरश्छकारे चकारेण सर्वत्र (वा. प्रा. ४.२५) छकार बाद में होने पर स्वर सर्वत्र चकार से व्यवहित होता है।

2. अयेकमुत्तरश्च(वा.प्रा.४.५१) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पढ़े गये सिं सवर्णे दीर्घम्(वा.प्रा.४.५२) इस सूत्र के अनुसार गृह्णामि इन्द्राय यहाँ दीर्घ ईकार होता है। सिमादितोऽष्टौ स्वराणाम्(वा.प्रा.१.४४) के अनुसार इ स्वर सिं संज्ञक है।

जगच्छन्दसमिति जगत् छन्दसम्। अनुष्टुप्स्वैं तेनुस्तुबनुष्टुप्स्वैंभिगुरोभिगुरस्तैंनु- स्तुबनुष्टुप्स्वैंभिगुरः[1]। अनुस्तुबित्यनु स्तुप्। तेभिगुरोभिगुरस्तैं तेभिगुरः। अभिगुरऽ इत्यभि गुरः ॥४१॥

व्रेशींनान्त्वा त्वा व्रेशींनाँव्रेशींनान्त्वा पत्मन्नपत्मँस्त्वा व्रेशींनाँव्रेशींनान्त्वा पत्मन् । त्वा पत्मन्नपत्मँस्त्वा त्वा पत्मन्ना धूंनोमि धूनोम्म्या पत्मँस्त्वा त्वा पत्मन्ना धूंनोमि। पत्मन्ना धूंनोमि धूनोम्म्या पत्मन्नपत्मन्ना धूंनोमि कुकूननां- नाङ्कुकूननांनान्धूनोम्म्या पत्मन्नपत्मन्ना धूंनोमि कुकूननांनाम्। आ धूंनोमि। धूनोमि कुकूननांनाङ्कुकूननांनान्धूनोमि धूनोमि कुकूननांनाम्भन्दनांनाम्भन्द- नांनाङ्कुकूननांनान्धूनोमि धूनोमि कुकूननांनाम्भन्दनांनाम्। कुकूननांनाम्भ- न्दनांनाम्भन्दनांनाङ्कुकूननांनाङ्कुकूननांनाम्भन्दनांनाम्मदिन्तमानाम्मदिन्त- मानाम्भन्दनांनाङ्कुकूननांनाङ्कुकूननांनाम्भन्दनांनाम्मदिन्तमानाम्। भन्दनां- नाम्मदिन्तमानाम्मदिन्तमानाम्भन्दनांनाम्भन्दनांनाम्मदिन्तमानाम्मधुन्तमा- नाम्मधुन्तमानाम्मदिन्तमानाम्भन्दनांनाम्भन्दनांनाम्मदिन्तमानाम्मधुन्तमा- नाम्[2]। मदिन्तमानाम्मधुन्तमानाम्मधुन्तमानाम्मदिन्तमानाम्मदिन्तमाना- म्मधुन्तमानाꣳ शुक्रꣳ शुक्रम्मधुन्तमानाम्मदिन्तमानाम्मदिन्तमानाम्मधुन्त- मानाꣳ शुक्रम्। मदिन्तमानामितिं मदिन् तमानाम्। मधुन्तमानाꣳ शुक्रꣳ शुक्रम्मधुन्तमानाम्मधुन्तमानाꣳ शुक्रन्त्वां त्वा शुक्रम्मधुन्तमानाम्मधुन्तमा- नाꣳ शुक्रन्त्वां। मधुन्तमानामितिं मधुन् तमानाम्। शुक्रन्त्वां त्वा शुक्रꣳ शुक्रन्त्वां शुक्रे शुक्रे त्वां शुक्रꣳ शुक्रन्त्वां शुक्रे। त्वा शुक्रे शुक्रे त्वां त्वा शुक्रऽ आ धूंनोमि धूनोम्म्या शुक्रे त्वां त्वा शुक्रऽ आ धूंनोमि। शुक्रऽ आ धूंनोमि

1. ते अभिगरः यहाँ यजुष्षु च(वा.प्रा.४.८०) के अनुसार अकार का अभिनिधान होता है।

2. न तमे (वा. प्रा. ३.१४३) तम परे रहने पर नकार विकार को नहीं प्राप्त करता है।

धूनोम्म्या शुक्रे शुक्रऽ आ धूंनोम्म्यह्वोह्वौ धूनोम्म्या शुक्रे शुक्रऽ आ धूंनोम्म्यह्वं÷ । आ धूंनोमि। धूनोम्म्यह्वोह्वौ धूनोमि धूनोम्म्यह्वौ रूपे रूपेह्वौ धूनोमि धूनोम्म्यह्वौ रूपे। अह्वौ रूपे रूपेह्वोह्वौ रूपे सूर्व्यस्य सूर्व्यस्य रूपेह्वोह्वौ रूपे सूर्व्यस्य। रूपे सूर्व्यस्य सूर्व्यस्य रूपे रूपे सूर्व्यस्य रश्मिमषु रश्मिमषु सूर्व्यस्य रूपे रूपे सूर्व्यस्य रश्मिमषु। सूर्व्यस्य रश्मिमषु रश्मिमषु सूर्व्यस्य सूर्व्यस्य रश्मिमषु। रश्मिमष्ष्विति रश्मिमषु॥४२॥

ककुभꣳ रूपꣳ रूपङ्कुभङ्कुभꣳ रूपँव्वृषभस्यं वृषभस्यं रूपङ्कुभङ्कुभꣳ रूपँव्वृषभस्यं[1]। रूपँव्वृषभस्यं वृषभस्यं रूपꣳ रूपँव्वृषभस्यं रोचते रोचते वृषभस्यं रूपꣳ रूपँव्वृषभस्यं रोचते। वृषभस्यं रोचते रोचते वृषभस्यं वृषभस्यं रोचते बृहद् बृहद्रोचते वृषभस्यं वृषभस्यं रोचते बृहत्। रोचते बृहद् बृहद्रोचते रोचते बृहच्छुक्रः शुक्रो बृहद्रोचते रोचते बृहच्छुक्रः। बृहच्छुक्रः शुक्रो बृहद् बृहच्छुक्रः शुक्रस्यं शुक्रस्यं शुक्रो बृहद् बृहच्छुक्रः शुक्रस्यं। शुक्रः शुक्रस्यं शुक्रस्यं शुक्रः शुक्रः शुक्रस्यं पुरोगाः पुंरोगाः शुक्रस्यं शुक्रः शुक्रः शुक्रस्यं पुरोगाः। शुक्रस्यं पुरोगाः पुंरोगाः शुक्रस्यं शुक्रस्यं पुरोगाः सोमꣳ सोमं÷ पुरोगाः शुक्रस्यं शुक्रस्यं पुरोगाः सोमं÷। पुरोगाः सोमꣳ सोमं÷ पुरोगाः पुंरोगाः सोमꣳ सोमंस्य सोमंस्य सोमं÷ पुरोगाः पुंरोगाः सोमꣳ सोमंस्य। पुरोगाऽ इतिं पुरꣳ गाः। सोमꣳ सोमंस्य सोमंस्य सोमꣳ सोमꣳ सोमंस्य पुरोगाः पुंरोगाः सोमंस्य सोमꣳ सोमꣳ सोमंस्य पुरोगाः। सोमंस्य पुरोगाः पुंरोगाः सोमंस्य सोमंस्य पुरोगाः। पुरोगाऽ इतिं पुरꣳ गाः॥ त्वा गृह्णामि गृह्णामि त्वा त्वा गृह्णामि। गृह्णामीतिं गृह्णामि॥४३॥

---

1. अनुस्वारं रोष्मसु मकारः (वा. प्रा. ४.१) रेफ एवं ऊष्म वर्ण बाद में होने पर मकार अनुस्वार होता है। प्रतिज्ञा सूत्र ३. में अनुस्वार का ꣳ आदेश कहा है। इसके तीन भेद कहे गये हैं। ह्रस्व, दीर्घ एवं गुरु।

उशिगिंहीह्युशिगुशिगिंहि व्रशी व्रशीह्युशिगुशिगिंहि व्रशी[1]। इहि व्रशी व्रशीहींहि व्रशीन्द्रस्येन्द्रस्य व्रशीहींहि व्रशीन्द्रस्य। व्रशीन्द्रस्येन्द्रस्य व्रशी व्रशीन्द्रस्यास्म्मत्त्संखास्म्मत्त्सखेन्द्रस्य व्रशी व्रशीन्द्रस्यास्म्मत्त्संखा। इन्द्रस्यास्म्मत्त्संखास्म्मत्त्सखेन्द्रस्येन्द्रंस्यास्म्मत्त्संखा विश्श्वेषाँविश्श्वेषामस्म्मत्त्सखेन्द्रस्येन्द्रंस्यास्म्मत्त्संखा विश्श्वेषाम्। अस्म्मत्त्संखा विश्श्वेषाँविश्श्वेषामस्म्मत्त्संखास्म्मत्त्संखा विश्श्वेषान्देवानांन्देवानाँविश्श्वेषामस्म्मत्त्संखास्म्मत्त्संखा विश्श्वेषान्देवानांम्। अस्म्मत्त्सखेत्त्यस्म्मत् संखा। विश्श्वेषान्देवानांन्देवानाँविश्श्वेषाँविश्श्वेषान्देवानांम्। देवानामितिं देवानांम्॥४४॥

इह रती रतिंरिहेह रतीं रमद्ध्वꣳ रमद्ध्वꣳ रतिंरिहेह रतीं रमद्ध्वम्। रतीं रमद्ध्वꣳ रमद्ध्वꣳ रती रतीं रमद्ध्वन्धृतिर्धृतीं रमद्ध्वꣳ रती रतीं रमद्ध्वन्धृतिं÷। रमद्ध्वन्धृतिर्धृतीं रमद्ध्वꣳ रमद्ध्वन्धृतिः स्वधृंतिः स्वधृंतिर्धृतीं रमद्ध्वꣳ रमद्ध्वन्धृतिः स्वधृंतिः[2]। धृतिः स्वधृंतिः स्वधृंतिर्धृतिर्धृतिः स्वधृंतिः स्वाहा स्वाहा स्वधृंतिर्धृतिर्धृतिः स्वधृंतिः स्वाहां। स्वधृंतिः स्वाहा स्वाहा स्वधृंतिः स्वधृंतिः स्वाहां। स्वधृंतिरिति स्व धृंतिः। स्वाहेति स्वाहां॥ उपसृजन्धरुणंन्धरुणंमुपसृजन्नुंपसृजन्धरुणंम्मात्रे मात्रे धरुणंमुपसृजन्नुंपसृजन्धरुणंम्मात्रे। उपसृजन्नित्युंप सृजन्। धरुणंम्मात्रे मात्रे धरुणंन्धरुणंम्मात्रे धरुणों धरुणों मात्रे धरुणंन्धरुणंम्मात्रे धरुणं÷। मात्रे धरुणों धरुणों मात्रे मात्रे धरुणों मातरंम्मातरंन्धरुणों मात्रे मात्रे धरुणों मातरंम्। धरुणों मातरंम्मातरंन्धरुणों धरुणों मातरन्धयन्धयंन्नमातरंन्धरुणों धरुणों मातरन्धयंन्। मातरन्धयन्धयंन्नमातरंम्मातरन्धयंन्। धयन्निति धयंन्॥ रायस्प्पोषम्पोषंꣳ रायो रायस्प्पोषंमस्म्मास्वस्म्मासु पोषंꣳ

---

[1]. व्रशी इहि यहाँ वा.प्रा.४.५२. के अनुसार दीर्घ होता है।

[2]. धृतिर्धृतिः तथा स्वधृतिर्धृतिः इन स्थलों में ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११३) इस सूत्र से रेफ से परवर्ती धकार का द्वित्व नहीं होगा।

रायो रायस्पोषमस्मासु[1]। पोषमस्मास्वस्मासु पोषम्पोषमस्मासु दीधर-
द्दीधरदस्मासु पोषम्पोषमस्मासु दीधरत्। अस्मासु दीधरद्दीधरदस्मास्व-
स्मासु दीधरत्त्स्वाहा स्वाहा दीधरदस्मास्वस्मासु दीधरत्त्स्वाहा। दीधरत्त्स्वाहा
स्वाहा दीधरद्दीधरत्त्स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥४५॥

सत्रस्यऽ ऋद्धिर्ऋद्धिः सत्रस्य सत्रस्यऽ ऋद्धिरस्यस्यृद्धिः सत्रस्य सत्र-
स्यऽ ऋद्धिरसि[2]। ऋद्धिरस्यस्यृद्धिर्ऋद्धिरस्यगन्मागन्मास्यृद्धिर्ऋद्धिरस्यगन्म।
अस्यगन्मागन्मास्यस्यगन्म ज्योतिर्ज्योतिरगन्मास्यस्यगन्म ज्योतिः।
अगन्म ज्योतिर्ज्योतिरगन्मागन्म ज्योतिरमृताऽ अमृता ज्योतिरगन्मागन्म
ज्योतिरमृताः। ज्योतिरमृताऽ अमृता ज्योतिर्ज्योतिरमृताऽ अभूमाभूमामृता
ज्योतिर्ज्योतिरमृताऽ अभूम। अमृताऽ अभूमाभूमामृताऽ अमृताऽ अभूम।
अभूमेत्यभूम॥ दिवम्पृथिव्याः पृथिव्या दिवन्दिवम्पृथिव्याऽ अद्ध्यधि पृथिव्या
दिवन्दिवम्पृथिव्याऽ अधि। पृथिव्याऽ अद्ध्यधि पृथिव्याः पृथिव्याऽ अद्ध्यारुहा-
मारुहामाधि पृथिव्याः पृथिव्याऽ अद्ध्यारुहाम। अद्ध्यारुहामारुहामाद्ध्यद्ध्यारु-
हामाविदामाविदामारुहामाद्ध्यद्ध्यारुहामाविदाम। अरुहामाविदामाविदामारुहा-
मारुहामाविदाम देवान्देवानविदामारुहामारुहामाविदाम देवान्। अविदाम देवा-
न्देवानविदामाविदाम देवान्त्स्वः स्वर्देवानविदामाविदाम देवान्त्स्वः।
देवान्त्स्वः स्वर्देवान्देवान्त्स्वर्ज्योतिर्ज्योतिः स्वर्देवान्देवान्त्स्वर्ज्योतिः।
स्वर्ज्योतिर्ज्योतिः स्वः स्वर्ज्योतिः। ज्योतिरिति ज्योतिः॥४६॥

---

1. रायः सहस्रः पोषपुत्रयोः (वा. प्रा. ३.२५) इस सूत्र के अनुसार पोष परे रहने पर रायः का विसर्जनीय सकार होता है।

2. वा.प्रा.६.२५. के अधिकार में पढ़े गये सूत्र ६.२६. के अनुसार ऋद्धिः इस पद में दो स्पर्श (दकार, धकार) होते हैं।

सुवन्तन्तँऽसुवँऽसुवन्तमिन्द्रापर्व्वतेन्द्रापर्व्वता तँऽसुवँऽसुवन्तमिन्द्रापर्व्वता[1]। तमिन्द्रापर्व्वतेन्द्रापर्व्वता तन्तमिन्द्रापर्व्वता पुरोयुधा पुरोयुधेन्द्रापर्व्वता तन्तमिन्द्रापर्व्वता पुरोयुधा। इन्द्रापर्व्वता पुरोयुधा पुरोयुधेन्द्रापर्व्वतेन्द्रापर्व्वता पुरोयुधा यो यः पुरोयुधेन्द्रापर्व्वतेन्द्रापर्व्वता पुरोयुधा यः। पुरोयुधा यो यः पुरोयुधा पुरोयुधा यो नो नो यः पुरोयुधा पुरोयुधा यो नः। पुरोयुधेति पुरः युधा। यो नो नो यो यो नः पृतन्न्यात्पृतन्न्यान्नो यो यो नः पृतन्न्यात्। नः पृतन्न्यात्पृतन्न्यान्नो नः पृतन्न्यादपाप पृतन्न्यान्नो नः पृतन्न्यादप। पृतन्न्यादपाप पृतन्न्यात्पृतन्न्यादप तन्तन्तन्तमप पृतन्न्यात्पृतन्न्यादप तन्तम्। अप तन्तन्तन्तमपाप तन्तमिदितन्तमपाप तन्तमित्। तन्तमिदितन्तन्तन्तमिद्धतः हतमितन्तन्तन्तमिद्धतम्। तन्तमिति तम् तम्। इद्धतः हतमिदिद्धतँव्वज्ज्रेण व्वज्ज्रेण हतमिदिद्धतँव्वज्ज्रेण। हतँव्वज्ज्रेण व्वज्ज्रेण हतः हतँव्वज्ज्रेण तन्तन्तन्तँव्वज्ज्रेण हतः हतँव्वज्ज्रेण तन्तम्। व्वज्ज्रेण तन्तन्तन्तँव्वज्ज्रेण व्वज्ज्रेण तन्तमिदितन्तँव्वज्ज्रेण व्वज्ज्रेण तन्तमित्। तन्तमिदितन्तन्तन्तमिद्धतः हतमितन्तन्तन्तमिद्धतम्। तन्तमिति तम् तम्। इद्धतः हतमिदिद्धतम्। हतमिति हतम्॥ दूरे चत्ताय चत्ताय दूरे दूरे चत्ताय च्छन्त्सच्छन्त्सचत्ताय दूरे दूरे चत्ताय च्छन्त्सत्। चत्ताय च्छन्त्सच्छन्त्सचत्ताय चत्ताय च्छन्त्सद् गहनङ्गहनच्छन्त्सचत्ताय चत्ताय च्छन्त्सद् गहनम्। छन्त्सद् गहनङ्गहनच्छन्त्सच्छन्त्सद् गहनँय्यद्यद् गहनच्छन्त्सच्छन्त्सद् गहनँय्यत्[2]। गहनँय्यद्यद् गहनङ्गहनँय्यदिनक्क्षदिनक्क्षद्यद् गहनङ्गहनँय्यदिनक्क्षत्। यदिनक्क्षदिनक्क्षद्यद्यदिनक्क्षत्। इनक्क्षदितीनक्क्षत्॥ अस्म्माकः

---

1. पूर्वो द्वन्द्वेष्ववायुषु (वा. प्रा. ३.१२७) वायुरहित द्वन्द्व समासों में पूर्वपद का अन्तिम स्वर दीर्घ हो जाता है।

2. गहनम् यत् यहाँ वा.प्रा.४.१०. के अनुसार मकार अनुनासिक अन्तस्थ यँ हो जाता है। याज्ञवल्क्य शिक्षा १५०. के अनुसार यकार का यकारोच्चारण होता है।

शत्रूञ्छत्रूंनुस्म्माकंमुस्म्माकुꣳ शत्रूंन्पुरि परि शत्रूंनुस्म्माकंमुस्म्माकुꣳ शत्रूंन्प- रिं। शत्रूंन्पुरि परि शत्रूञ्छत्रूंन्पुरिं शूर शूर परि शत्रूञ्छत्रूंन्पुरिं शूर। परिं शूर शूर परि परिं शूर ब्विश्श्वतों ब्विश्श्वतं: शूर परि परिं शूर ब्विश्श्वतं:। शूर ब्विश्श्वतों ब्विश्श्वतं: शूर शूर ब्विश्श्वतों दुम्र्म्मा दुम्र्म्मा ब्विश्श्वतं: शूर शूर ब्विश्श्वतों दुम्र्म्मा। ब्विश्श्वतों दुम्र्म्मा दुम्र्म्मा ब्विश्श्वतों ब्विश्श्वतों दुम्र्म्मा दंर्षीष्ट दर्षीष्ट दुम्र्म्मा ब्विश्श्वतों ब्विश्श्वतों दुम्र्म्मा दंर्षीष्ट। दुम्र्म्मा दंर्षीष्ट दर्षीष्ट दुम्र्म्मा दुम्र्म्मा दंर्षीष्ट ब्विश्श्वतों ब्विश्श्वतों दर्षीष्ट दुम्र्म्मा दुम्र्म्मा दंर्षीष्ट ब्विश्श्वतं:। दुर्षीष्ट ब्विश्श्वतों ब्विश्श्वतों दर्षीष्ट दर्षीष्ट ब्विश्श्वतं:। ब्विश्श्वतुऽ इतिं विश्श्वतं: ॥ स्यामु सुवीरांः सुवीरांः स्याम स्याम सुवीरां ब्वीरैर्ब्बीरैः सुवीरांः स्याम स्याम सुवीरां ब्वीरैः[1]। सुवीरां ब्वीरैर्ब्बीरैः सुवीरांः सुवीरां ब्वीरैः सुपोषांः सुपोषां ब्वीरैः सुवीरांः सुवीरां ब्वीरैः सुपोषांः। सुवीराऽ इतिं सु ब्वीरांः। ब्वीरैः सुपोषांः सुपोषां ब्वीरैर्ब्बीरैः सुपोषाः पोषैः पोषैः सुपोषां ब्वीरैर्ब्बीरैः सुपोषाः पोषैः। सुपोषाः पोषैः पोषैः सुपोषांः सुपोषाः पोषैः। सुपोषाऽ इतिं सु पोषांः। पोषैरिति पोषैः॥ ४७॥

परमेष्ठ्यभिधींतोभिधींतः परमेस्त्थी पंरमेष्ठ्यभिधींतः प्प्रजापंतिः प्प्रजा- पंतिरुभिधींतः परमेस्त्थी पंरमेष्ठ्यभिधींतः प्प्रजापंतिः[2]। परमेस्त्थीतिं परमे स्थी। अभिधींतः प्प्रजापंतिः प्प्रजापंतिरुभिधींतोभिधींतः प्प्रजापंतिर्ब्वाचि ब्वाचि प्प्रजापंतिरुभिधींतोभिधींतः प्प्रजापंतिर्ब्वाचि। अभिधींतुऽ इत्युभि धींतः। प्रजा- पंतिर्ब्वाचि ब्वाचि प्प्रजापंतिः प्प्रजापंतिर्ब्वाचि ब्याहंतायाँब्याहंतायाँब्वाचि प्प्रजा- पंतिः प्प्रजापंतिर्ब्वाचि ब्याहंतायाम्। प्रजापंतिरितिं प्प्रजा पंतिः। ब्वाचि ब्याहं-

---

1. ऐकारान्त विसर्ग में हिकारसदृश उच्चारण होता है। अथ स्वैर्ई (द?) क्षैरित्यादौ हिकारसदृशो भवेत्।- ल.मा.शि.२१.

2. भाविभ्यः सः षं समानपदे (वा. प्रा. ३.५६) इस सूत्र के अनुसार एक पद में भावी से परे स्थित सकार षकार होता है। अकण्ठ्यो भावी (वा. प्रा. १.४६) इस सूत्र के अनुसार अकण्ठ्यस्वर भावी कहलाते हैं।

तायाँघ्याहृतायाँव्वाचि व्वाचि घ्याहृतायामन्धोन्धो घ्याहृतायाँव्वाचि व्वाचि घ्याहृता-यामन्धं÷। घ्याहृतायामन्धोन्धो घ्याहृतायाँघ्याहृतायामन्धोऽ अच्छेतोच्छेतोन्धो घ्याहृतायाँघ्याहृतायामन्धोऽ अच्छेतः। घ्याहृतायामितिं वि आहृतायाम्। अन्धोऽ अच्छेतोच्छेतोन्धोन्धोऽ अच्छेतः सविता संविताच्छेतोन्धोन्धोऽ अच्छे-तः सविता। अच्छेतः सविता संविताच्छेतोच्छेतः सविता सुन्न्याँ सुन्न्याँ संविताच्छेतोच्छेतः सविता सुन्न्याम्। अच्छेतुऽ इत्यच्छं इतः। सविता सुन्न्याँ सुन्न्याँ संविता संविता सुन्न्याँव्विश्वकर्म्मा व्विश्वकर्म्मा सुन्न्याँ संविता संविता सुन्न्याँव्विश्वकर्म्मा। सुन्न्याँव्विश्वकर्म्मा व्विश्वकर्म्मा सुन्न्याँ सुन्न्याँव्विश्वकर्म्मा दीक्षायान्दीक्षायाँव्विश्वकर्म्मा सुन्न्याँ सुन्न्याँव्विश्वकर्म्मा दीक्षायाम्। व्विश्व-कर्म्मा दीक्षायान्दीक्षायाँव्विश्वकर्म्मा व्विश्वकर्म्मा दीक्षायाम्पूषा पूषा दीक्षा-याँव्विश्वकर्म्मा व्विश्वकर्म्मा दीक्षायाम्पूषा। व्विश्वकर्म्मेतिं विश्व कर्म्मा। दीक्षा-याम्पूषा पूषा दीक्षायान्दीक्षायाम्पूषा सोमक्क्रयंण्ण्याँ सोमक्क्रयंण्ण्याम्पूषा दीक्षायान्दीक्षायाम्पूषा सोमक्क्रयंण्ण्याम्। पूषा सोमक्क्रयंण्ण्याँ सोमक्क्रयं-ण्ण्याम्पूषा पूषा सोमक्क्रयंण्ण्यामिन्द्रऽ इन्द्रं÷ सोमक्क्रयंण्ण्याम्पूषा पूषा सोमक्क्र-यंण्ण्यामिन्द्रं÷। सोमक्क्रयंण्ण्यामिन्द्रऽ इन्द्रं÷ सोमक्क्रयंण्ण्याँ सोमक्क्रयंण्ण्या-मिन्द्रंश्च चेन्द्रं÷ सोमक्क्रयंण्ण्याँ सोमक्क्रयंण्ण्यामिन्द्रंश्च[1]। सोमक्क्रयंण्ण्यामितिं सोम क्रयंण्ण्याम्॥४८॥

इन्द्रंश्च चेन्द्रऽ इन्द्रंश्च मरुतों मरुतश्चेन्द्रऽ इन्द्रंश्च मरुतं÷। च मरुतों मरुतंश्च च मरुतंश्च च मरुतंश्च च मरुतंश्च। मरुतंश्च च मरुतों मरुतंश्च क्क्रयार्यं क्क्रयार्यं च मरुतों मरुतंश्च क्क्रयार्यं। च क्क्रयार्यं क्क्रयार्यं च च क्क्रयायोपोत्थितऽ

[1]. वा.प्रा.२.१६. के अनुसार यहाँ च पद अनुदात्त है।

उ॒पोत्स्थि॑तः क्क्र॒याय॑ च च क्क्र॒याया॒पोत्स्थि॑तः[1]। क्क्र॒याया॒पोत्स्थि॑तऽ उ॒पोत्स्थि॑तः क्क्र॒याय॑ क्क्र॒याया॒पोत्स्थि॒तोसु॒रोसु॑रऽ उ॒पोत्स्थि॑तः क्क्र॒याय॑ क्क्र॒याया॒पोत्स्थि॒तोसु॑रः। उ॒पोत्स्थि॒तोसु॒रोसु॑रऽ उ॒पोत्स्थि॑तऽ उ॒पोत्स्थि॒तोसु॑रः पु॒ण्ण्यमा॑नः पु॒ण्ण्यमा॒नोसु॑रऽ उ॒पोत्स्थि॑तऽ उ॒पोत्स्थि॒तोसु॑रः पु॒ण्ण्यमा॑नः[2]। उ॒पोत्स्थि॑त॒ऽ इत्त्यु॑प॒ उत्स्थि॑तः। असु॑रः पु॒ण्ण्यमा॑नः पु॒ण्ण्यमा॒नोसु॒रोसु॑रः पु॒ण्ण्यमा॑नो मि॒त्रो मि॒त्रः पु॒ण्ण्यमा॒नो-सु॒रोसु॑रः पु॒ण्ण्यमा॑नो मि॒त्रः। पु॒ण्ण्यमा॑नो मि॒त्रो मि॒त्रः पु॒ण्ण्यमा॑नः पु॒ण्ण्यमा॑नो मि॒त्रः क्क्री॒तः क्क्री॒तो मि॒त्रः पु॒ण्ण्यमा॑नः पु॒ण्ण्यमा॑नो मि॒त्रः क्क्री॒तः। मि॒त्रः क्क्री॒तः क्क्री॒तो मि॒त्रो मि॒त्रः क्क्री॒तो व्विष्ण्णु॒र्व्विष्ण्णु॑ः क्क्री॒तो मि॒त्रो मि॒त्रः क्क्री॒तो व्विष्ण्णु॑ः। क्क्री॒तो व्विष्ण्णु॒र्व्विष्ण्णु॑ः क्क्री॒तः क्क्री॒तो व्विष्ण्णु॑ः शिपिवि॒ष्टः शिं॑पिवि॒ष्टो व्विष्ण्णु॑ः क्क्री॒तः क्क्री॒तो व्विष्ण्णु॑ः शिपिवि॒ष्टः। व्विष्ण्णु॑ः शिपिवि॒ष्टः शिं॑पिवि॒ष्टो व्विष्ण्णु-र्व्विष्ण्णु॑ः शिपिवि॒ष्टऽ ऊ॒राऽ ऊ॒रौ शिं॑पिवि॒ष्टो व्विष्ण्णु॒र्व्विष्ण्णु॑ः शिपिवि॒ष्टऽ ऊ॒रौ। शि॒पि॒वि॒ष्टऽ ऊ॒राऽ ऊ॒रौ शिं॑पिवि॒ष्टः शिं॑पिवि॒ष्टऽ ऊ॒रावास॑न्न॒ऽ आस॑न्नऽ ऊ॒रौ शिं॑पिवि॒ष्टः शिं॑पिवि॒ष्टऽ ऊ॒रावास॑न्नः[3]। शि॒पि॒वि॒ष्टऽ इति॑ शिपि व्वि॒ष्टः। ऊ॒रावा-स॑न्न॒ऽ आस॑न्नऽ ऊ॒राऽ ऊ॒रावास॑न्नो॒ व्विष्ण्णु॒र्व्विष्ण्णु॒रास॑न्नऽ ऊ॒राऽ ऊ॒रावास॑न्नो॒ व्विष्ण्णु॑ः। आस॑न्नो॒ व्विष्ण्णु॒र्व्विष्ण्णु॒रास॑न्न॒ऽ आस॑न्नो॒ व्विष्ण्णु॑र्न्न॒रन्धि॑षो न॒रन्धि॑षो॒ व्विष्ण्णु॒रास॑न्न॒ऽ आस॑न्नो॒ व्विष्ण्णु॑र्न्न॒रन्धि॑षः। आस॑न्न॒ऽ इत्त्या स॑न्नः। व्विष्ण्णु॑र्न्न॒र-न्धि॑षो न॒रन्धि॑षो॒ व्विष्ण्णु॒र्व्विष्ण्णु॑र्न्न॒रन्धि॑षः प्प्रो॒ह्यमा॑णः प्प्रो॒ह्यमा॑नो न॒रन्धि॑षो॒ व्विष्ण्णु॒र्व्विष्ण्णु॑र्न्न॒रन्धि॑षः प्प्रो॒ह्यमा॑णः। न॒रन्धि॑षः प्प्रो॒ह्यमा॑णः प्प्रो॒ह्यमा॑नो

---

[1]. उपोत्स्थित उत्तम्भनमुत्तभानोत्स्यायोत्स्थितायेति त्रीणि (वा. प्रा. ६.२९) इस सूत्र के अनुसार उपोत्स्थितः पद में तीन स्पर्शों का संयोग है।

[2]. वा. प्रा. ४.१५७. के अनुसार पण्यमानः में एक यकार है।

[3]. न वकारस्यासस्थान एकेषाम्(वा.प्रा.४.१२८) इस सूत्र के अनुसार ऊरौ ऊरौ यहां वकार का लोप होता है, ऊरौ आसन्नः यहां वकार का लोप नहीं होता है।

नरन्धिषो नरन्धिषः प्प्रोह्यमाणः सोमः सोमः प्प्रोह्यमानो नरन्धिषो नरन्धिषः प्प्रोह्यमाणः सोमः ॥४९॥

प्रोह्यमाणः सोमः सोमः प्प्रोह्यमानः प्प्रोह्यमाणः सोमऽ आगतऽ आगतः सोमः प्प्रोह्यमानः प्प्रोह्यमाणः सोमऽ आगतः। प्रोह्यमानऽ इति प्र उह्यमानः। सोमऽ आगतऽ आगतः सोमः सोमऽ आगतो व्वरुणो व्वरुणऽ आगतः सोमः सोमऽ आगतो व्वरुणः। आगतो व्वरुणो व्वरुणऽ आगतऽ आगतो व्वरुणऽ आसन्द्यामासन्द्याँव्वरुणऽ आगतऽ आगतो व्वरुणऽ आसन्द्याम्। आगतऽ इत्या गतः। व्वरुणऽ आसन्द्यामासन्द्याँव्वरुणो व्वरुणऽ आसन्द्यामासन्नऽ आसन्नऽ आसन्द्याँव्वरुणो व्वरुणऽ आसन्द्यामासन्नः। आसन्द्यामासन्नऽ आसन्नऽ आसन्द्यामासन्द्यामासन्नोग्ग्निरग्ग्निरासन्नऽ आसन्द्यामासन्द्यामासन्नोग्ग्निः[1]। आसन्द्यामित्या सन्द्याम्। आसन्नोग्ग्निरग्ग्निरासन्नऽ आसन्नोग्ग्निराग्ग्नीध्रऽ आग्ग्नीध्रेग्ग्निरासन्नऽ आसन्नोग्ग्निराग्ग्नीध्रे। आसन्नऽ इत्या सन्नः। अग्ग्निराग्ग्नीध्रऽ आग्ग्नीध्रेग्ग्निरग्ग्निराग्ग्नीध्रऽ इन्द्रऽ इन्द्रऽ आग्ग्नीध्रेग्ग्निरग्ग्निराग्ग्नीध्रऽ इन्द्रः। आग्ग्नीध्रऽ इन्द्रऽ इन्द्रऽ आग्ग्नीध्रऽ आग्ग्नीध्रऽ इन्द्रो हविर्द्धाने हविर्द्धानऽ इन्द्रऽ आग्ग्नीध्रऽ आग्ग्नीध्रऽ इन्द्रो हविर्द्धाने। इन्द्रो हविर्द्धाने हविर्द्धानऽ इन्द्रऽ इन्द्रो हविर्द्धानेथर्व्वाथर्व्वा हविर्द्धानऽ इन्द्रऽ इन्द्रो हविर्द्धानेथर्व्वा। हविर्द्धानेथर्व्वाथर्व्वा हविर्द्धाने हविर्द्धानेथर्व्वोपावह्रियमाणऽ उपावह्रियमाणोथर्व्वा हविर्द्धाने हविर्द्धानेथर्व्वोपावह्रियमाणः। हविर्द्धानऽ इति हविः धाने। अथर्व्वोपावह्रियमाणऽ उपावह्रियमाणोथर्व्वाथर्व्वोपावह्रियमाणो व्विश्वे व्विश्वऽ उपावह्रियमाणोथर्व्वाथर्व्वोपावह्रियमाणो व्विश्वे। उपावह्रियमाणो व्विश्वे व्विश्वऽ उपावह्रियमाणऽ उपावह्रियमाणो व्विश्वे देवा देवा व्विश्वऽ

1. आसन्नः अग्निः यहाँ वा.प्रा.४.८०. के अनुसार अकार का अभिनिधान होता है। वा.प्रा.४.४३. तथा वा.प्रा.४.४४. से विसर्जनीय का ओकार विहित है।

उपावह्रियमाणऽ उपावह्रियमाणो व्विश्वे देवाः[1]। उपावह्रियमाणऽ इत्युप अवह्रियमाणः ॥५०॥

व्विश्वे देवा देवा व्विश्वे व्विश्वे देवाऽ अꣳशुष्ष्वꣳशुषु देवा व्विश्वे व्विश्वे देवाऽ अꣳशुषु। देवाऽ अꣳशुष्ष्वꣳशुषु देवा देवाऽ अꣳशुषु न्युप्तो न्युप्तोꣳशुषु देवा देवाऽ अꣳशुषु न्युप्तः। अꣳशुषु न्युप्तो न्युप्तोꣳशुष्ष्वꣳशुषु न्युप्तो व्विष्णुर्व्विष्णुर्न्युप्तोꣳशुष्ष्वꣳशुषु न्युप्तो व्विष्णुः। न्युप्तो व्विष्णुर्व्विष्णुर्न्युप्तो न्युप्तो व्विष्णुराप्प्रीतपाऽ आप्प्रीतपा व्विष्णुर्न्युप्तो न्युप्तो व्विष्णुराप्प्रीतपाः। न्युप्तऽ इति नि उप्तः। व्विष्णुराप्प्रीतपाऽ आप्प्रीतपा व्विष्णुर्व्विष्णुराप्प्रीतपाऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्रीतपा व्विष्णुर्व्विष्णुराप्प्रीतपाऽ आप्प्याय्यमानः[2]। आप्प्रीतपाऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्रीतपाऽ आप्प्रीतपाऽ आप्प्याय्यमानो यमो यमऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्रीतपाऽ आप्प्रीतपाऽ आप्प्याय्यमानो यमः। आप्प्रीतपाऽ इत्याप्प्रीत पाः। आप्प्याय्यमानो यमो यमऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्याय्यमानो यमः सूयमानः सूयमानो यमऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्याय्यमानो यमः सूयमानः। आप्प्याय्यमानऽ इत्याप्प्याय्यमानः। यमः सूयमानः सूयमानो यमो यमः सूयमानो व्विष्णुर्व्विष्णुः सूयमानो यमो यमः सूयमानो व्विष्णुः। सूयमानो व्विष्णुर्व्विष्णुः सूयमानः सूयमानो व्विष्णुः सम्भ्रियमाणः सम्भ्रियमाणो व्विष्णुः सूयमानः सूयमानो व्विष्णुः सम्भ्रियमाणः। व्विष्णुः सम्भ्रियमाणः सम्भ्रियमाणो व्विष्णुर्व्विष्णुः सम्भ्रियमाणो व्वायुर्व्वायुः सम्भ्रियमाणो व्विष्णुर्व्विष्णुः सम्भ्रियमाणो व्वायुः। सम्भ्रियमाणो व्वायुर्व्वायुः सम्भ्रियमाणः सम्भ्रियमाणो व्वायुः पूयमानः

---

[1]. देवाः देवाः तथा देवाः विश्वे यहाँ लोपं धौ(वा.प्रा.४.३९) इस सूत्र से विसर्जनीय का लोप होता है।

[2]. वा. प्रा. ४.१५३. के अनुसार आप्प्याय्यमानः इस पद में दो यकार हैं।

पूयमानो वायुः सम्भ्रियमाणः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः। सम्भ्रियमाणऽ इति सम् भ्रियमाणः। वायुः पूयमानः पूयमानो वायुर्वायुः पूयमानः शुक्रः शुक्रः पूयमानो वायुर्वायुः पूयमानः शुक्रः[1]। पूयमानः शुक्रः शुक्रः पूयमा-नः पूयमानः शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः पूयमानः पूयमानः शुक्रः पूतः। शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः शुक्रः। पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीः क्षीरश्रीः शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीः। शुक्रः क्षीरश्रीः क्षीरश्रीः शुक्रः शुक्रः क्षीरश्रीर्म्मन्थी मन्थी क्षीरश्रीः शुक्रः शुक्रः क्षीरश्रीर्म्मन्थी। क्षीरश्रीर्म्मन्थी मन्थी क्षीरश्रीः क्षीरश्रीर्म्मन्थी सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्म्मन्थी क्षीरश्रीः क्षीरश्रीर्म्मन्थी सक्तुश्रीः। क्षीरश्रीरिति क्षीर श्रीः। मन्थी सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्म्मन्थी मन्थी सक्तुश्रीर्व्विश्वे विश्वे सक्तुश्रीर्म्मन्थी मन्थी सक्तुश्रीर्व्विश्वे। सक्तुश्रीर्व्विश्वे विश्वेँ सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्व्विश्वे देवा देवा विश्वे सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्व्विश्वे देवाः। सक्तुश्रीरिति सक्तु श्रीः ॥५१॥

विश्वे देवा देवा विश्वे विश्वे देवाश्चमसेषु चमसेषु देवा विश्वे विश्वे देवा-श्चमसेषु[2]। देवाश्चमसेषु चमसेषु देवा देवाश्चमसेषून्नीतऽ उन्नीतश्चमसेषु देवा देवाश्चमसेषून्नीतः। चमसेषून्नीतऽ उन्नीतश्चमसेषु चमसेषून्नीतोसुरसुरुन्नीतश्च-मसेषु चमसेषून्नीतोसुः। उन्नीतोसुरसुरुन्नीतऽ उन्नीतोसुर्होमाय होमायासुरुन्नीतऽ उन्नीतोसुर्होमाय। उन्नीतऽ इत्युत् नीतः। असुर्होमाय होमायासुरसुर्होमायोद्यतऽ उद्यतो होमायासुरसुर्होमायोद्यतः। होमायोद्यतऽ उद्यतो होमाय होमायोद्यतो

[1]. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार वायुः पद पृथक् नहीं किया जाता है।

[2]. देवाः चमसेषु यहाँ चछयोः शम्(वा.प्रा.३.७) इस सूत्र से विसर्ग शकार होता है। तदुत्तरवर्ती चकार का द्वित्व ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) से होता है।

पूयमा॑नो वा॒युः सं॑म्भ्रि॒यमा॑णः सम्भ्रि॒यमा॑णो वा॒युः पू॒यमा॑नः। स॒म्भ्रि॒यमा॑ण॒ऽ इति॑ सम् भ्रि॒यमा॑णः। वा॒युः पू॒यमा॑नः पू॒यमा॑नो वा॒युर्वा॒युः पू॒यमा॑नः शु॒क्रः शु॒क्रः पू॒यमा॑नो वा॒युर्वा॒युः पू॒यमा॑नः शु॒क्रः[1]। पू॒यमा॑नः शु॒क्रः शु॒क्रः पू॒यमा॑-नः पू॒यमा॑नः शु॒क्रः पू॒तः पू॒तः शु॒क्रः पू॒यमा॑नः पू॒यमा॑नः शु॒क्रः पू॒तः। शु॒क्रः पू॒तः पू॒तः शु॒क्रः शु॒क्रः पू॒तः शु॒क्रः शु॒क्रः पू॒तः शु॒क्रः शु॒क्रः पू॒तः शु॒क्रः। पू॒तः शु॒क्रः शु॒क्रः पू॒तः पू॒तः शु॒क्रः क्षी॑र॒श्रीः क्षी॑र॒श्रीः शु॒क्रः पू॒तः पू॒तः शु॒क्रः क्षी॑र॒श्रीः। शु॒क्रः क्षी॑र॒श्रीः क्षी॑र॒श्रीः शु॒क्रः शु॒क्रः क्षी॑र॒श्रीर्म्म॒न्थी म॒न्थी क्षी॑र॒श्रीः शु॒क्रः शु॒क्रः क्षी॑र॒श्रीर्म्म॒न्थी। क्षी॒र॒श्रीर्म्म॒न्थी म॒न्थी क्षी॑र॒श्रीः क्षी॑र॒श्रीर्म्म॒न्थी सं॑क्तु॒श्रीः सं॑क्तु॒श्रीर्म्म॒न्थी क्षी॑र॒श्रीः क्षी॑र॒श्रीर्म्म॒न्थी सं॑क्तु॒श्रीः। क्षी॒र॒श्रीरिति॑ क्षीर॒ श्रीः। म॒न्थी सं॑क्तु॒श्रीः सं॑क्तु॒श्रीर्म्म॒न्थी म॒न्थी सं॑क्तु॒श्रीर्वि॒श्वे॒ विश्वे॑ सक्तु॒श्रीर्म्म॒न्थी म॒न्थी सं॑क्तु॒श्रीर्वि॒श्वे॑। स॒क्तु॒श्रीर्वि॒श्वे॒ विश्व॑ँ सक्तु॒श्रीः सं॑क्तु॒श्रीर्वि॒श्वे॑ दे॒वा दे॒वा विश्वे॑ सक्तु॒श्रीः सं॑क्तु॒श्रीर्वि॒श्वे॑ दे॒वाः। स॒क्तु॒श्रीरिति॑ सक्तु॒ श्रीः ॥५१॥

विश्वे॑ दे॒वा दे॒वा विश्वे॒ विश्वे॑ दे॒वाश्च॑म॒सेषु॑ चम॒सेषु॑ दे॒वा विश्वे॒ विश्वे॑ दे॒वा-श्च॑म॒सेषु॑[2]। दे॒वाश्च॑म॒सेषु॑ चम॒सेषु॑ दे॒वा दे॒वाश्च॑म॒सेषून्नी॑त॒ऽ उन्नी॑तश्चम॒सेषु॑ दे॒वा दे॒वाश्च॑म॒सेषून्नी॑तः। च॒म॒सेषून्नी॑त॒ऽ उन्नी॑तश्चम॒सेषु॑ चम॒सेषून्नी॒तोसु॒रसु॒रुन्नी॑तश्च-म॒सेषु॑ चम॒सेषून्नी॒तोसु॑ः। उन्नी॒तोसु॒रसु॒रुन्नी॑त॒ऽ उन्नी॒तोसु॒र्होमा॑य॒ होमा॒यासु॒रुन्नी॑त॒ऽ उन्नी॒तोसु॒र्होमा॑य। उन्नी॑त॒ऽ इत्युत् नी॑तः। असु॒र्होमा॑य॒ होमा॒यासु॒रसु॒र्होमा॒योद्य॑त॒ऽ उद्य॑तो॒ होमा॒यासु॒रसु॒र्होमा॒योद्य॑तः। होमा॒योद्य॑त॒ऽ उद्य॑तो॒ होमा॑य॒ होमा॒योद्य॑तो

---

[1]. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार वायुः पद पृथक् नहीं किया जाता है।

[2]. देवाः चमसेषु यहाँ चछयोः शम्(वा.प्रा.३.७) इस सूत्र से विसर्ग शकार होता है। तदुतरवर्ती चकार का द्वित्व ऊष्मान्तस्याभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) से होता है।

रु॒द्रो रु॒द्रऽ उद्य॑तो॒ होमा॑य॒ होमा॒योद्य॑तो रु॒द्रः। उद्य॑तो रु॒द्रो रु॒द्रऽ उद्य॑त॒ऽ उद्य॑तो रु॒द्रो हू॒यमा॑नो हू॒यमा॑नो रु॒द्रऽ उद्य॑त॒ऽ उद्य॑तो रु॒द्रो हू॒यमा॑नः। उद्य॑त॒ऽ इत्युत् य॑तः। रु॒द्रो हू॒यमा॑नो हू॒यमा॑नो रु॒द्रो रु॒द्रो हू॒यमा॑नो॒ व्रातो॒ व्रातो॑ हू॒यमा॑नो रु॒द्रो रु॒द्रो हू॒यमा॑नो॒ व्रात॑ः। हू॒यमा॑नो॒ व्रातो॒ व्रातो॑ हू॒यमा॑नो हू॒यमा॑नो॒ व्रातो॒ऽभ्यावृ॑त्तो॒ऽभ्या-वृ॑त्तो॒ व्रातो॑ हू॒यमा॑नो हू॒यमा॑नो॒ व्रातो॒ऽभ्यावृ॑त्तः। व्रातो॒ऽभ्यावृ॑त्तो॒ऽभ्यावृ॑त्तो॒ व्रातो॒ व्रातो॒ऽभ्यावृ॑त्तो नृ॒चक्षा॑ नृ॒चक्षा॑ऽ अ॒भ्यावृ॑त्तो॒ व्रातो॒ व्रातो॒ऽभ्यावृ॑त्तो नृ॒चक्षा॑ः। अ॒भ्यावृ॑त्तो नृ॒चक्षा॑ नृ॒चक्षा॑ऽ अ॒भ्यावृ॑त्तो॒ऽभ्यावृ॑त्तो नृ॒चक्षा॒ः प्रति॑ख्यात॒ः प्रति॑ख्यातो नृ॒चक्षा॑ऽ अ॒भ्यावृ॑त्तो॒ऽभ्यावृ॑त्तो नृ॒चक्षा॒ः प्रति॑ख्यातः। अ॒भ्यावृ॑त्त॒ऽ इत्य॑भि॒ आवृ॑त्तः। नृ॒चक्षा॒ः प्रति॑ख्यात॒ः प्रति॑ख्यातो नृ॒चक्षा॑ नृ॒चक्षा॒ः प्रति॑ख्यातो भ॒क्षो भ॒क्षः प्रति॑ख्यातो नृ॒चक्षा॑ नृ॒चक्षा॒ः प्रति॑ख्यातो भ॒क्षः। नृ॒चक्षा॒ऽ इति॑ नृ॒ चक्षा॑ः[1]। प्रति॑ख्यातो भ॒क्षो भ॒क्षः प्रति॑ख्यात॒ः प्रति॑ख्यातो भ॒क्षो भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्षः प्रति॑ख्यात॒ः प्रति॑ख्यातो भ॒क्षो भ॒क्ष्यमा॑णः[2]। प्रति॑ख्यात॒ऽ इति॒ प्रति॑ ख्यातः। भ॒क्षो भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्षो भ॒क्षो भ॒क्ष्यमा॑णः पि॒तर॑ः पि॒तरो॑ भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्षो भ॒क्षो भ॒क्ष्यमा॑णः पि॒तर॑ः। भ॒क्ष्यमा॑णः पि॒तर॑ः पि॒तरो॑ भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्ष्यमा॑णः पि॒तरो॑ नाराशꣳसा ना॑राशꣳसाः पि॒तरो॑ भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्ष्यमा॑णः पि॒तरो॑ नाराश॒ꣳसाः। पि॒तरो॑ नाराश॒ꣳसा ना॑राश॒ꣳसाः पि॒तर॑ः पि॒तरो॑ नाराश॒ꣳसाः स॒न्नः स॒न्नो ना॑राश॒ꣳसाः

1. णकारर्कारावग्रहे(वा.प्रा.१.८८) इस सूत्र के अनुसार इस सावग्रह पद में ऋकार पूर्वपद(अवग्रह के अन्त) में ही आता है।

2. अग्नेरनीकं व्युक्ष्वा हि, विश्वेदेवा, द्वितीयकम्। उदग्ने चायमुत्तरा, त्रमी (मो ?) ब्रन्याय हीत्ययम्॥
देवम्बर्हि, र्य्यदापोऽस्ति त्वामद्य, स्वस्ति नस्तथा। मानो मित्रो हि ब्रक्ष्यन्ती क्षकारा ययुतास्तथा॥ - अमो. शि. १२९-१३०.
इन श्लोकों में जिन कण्डिकाओं में क्ष्य आता है, उनकी गणना है, विश्वेदेवा द्वितीयकम् से प्रकृत कण्डिका निर्दिष्ट है।

पितरः पितरो नाराशꣳसाः सन्नः[1]। नाराशꣳसाः सन्नः सन्नो नाराशꣳसा नाराशꣳसाः सन्नः सिन्धुः सिन्धुः सन्नो नाराशꣳसा नाराशꣳसाः सन्नः सिन्धुः ॥५२॥

सन्नः सिन्धुः सिन्धुः सन्नः सन्नः सिन्धुरवभृथायावभृथाय सिन्धुः सन्नः सन्नः सिन्धुरवभृथाय। सिन्धुरवभृथायावभृथाय सिन्धुः सिन्धुरवभृथायो-द्यतऽ उद्यतोवभृथाय सिन्धुः सिन्धुरवभृथायोद्यतः। अवभृथायोद्यतऽ उद्यतोव-भृथायावभृथायोद्यतः समुद्रः संमुद्रऽ उद्यतोवभृथायावभृथायोद्यतः समुद्रः। अवभृथायेत्यव भृथाय। उद्यतः समुद्रः संमुद्रऽ उद्यतऽ उद्यतः समुद्रोभ्यवह्रिय-माणोभ्यवह्रियमाणः समुद्रऽ उद्यतऽ उद्यतः समुद्रोभ्यवह्रियमाणः। उद्यतऽ इत्युत् यतः। समुद्रोभ्यवह्रियमाणोभ्यवह्रियमाणः समुद्रः संमुद्रोभ्यवह्रिय-माणः सलिलः संलिलोभ्यवह्रियमाणः समुद्रः संमुद्रोभ्यवह्रियमाणः सलि-लः। अभ्यवह्रियमाणः सलिलः संलिलोभ्यवह्रियमाणोभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतः प्रप्लुतः सलिलोभ्यवह्रियमाणोभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतः। अभ्यवह्रियमाणऽ इत्यभि अवह्रियमाणः। सलिलः प्रप्लुतः प्रप्लु-तः सलिलः संलिलः प्रप्लुतो ययोर्ययोः प्रप्लुतः सलिलः संलिलः प्रप्लुतो ययोः। प्रप्लुतो ययोर्ययोः प्रप्लुतः प्रप्लुतो ययोरोजसौजसा ययोः प्रप्लुतः प्रप्लुतो ययोरोजसा। प्रप्लुतऽ इति प्र प्लुतः। ययोरोजसौजसा ययोर्ययोरोजसा स्कभिता स्कभितौजसा ययोर्ययोरोजसा स्कभिता। ओजसा स्कभिता स्कभितौजसौजसा स्कभिता रजाꣳसि रजाꣳसि स्कभितौजसौजसा स्कभिता रजाꣳसि। स्कभिता रजाꣳसि रजाꣳसि स्कभिता स्कभिता

[1]. वा.प्रा.६.२५. के अधिकार में पढ़े गये सूत्र वा.प्रा.६.२६. के अनुसार सन्नः पद में दो स्पर्श हैं।

रजा॑ꣳसि व्वी॒र्य्ये॑भिर्व्वी॒र्य्ये॑भी॒ रजा॑ꣳसि स्कभि॒ता स्क्कभि॒ता रजा॑ꣳसि व्वी॒र्य्ये॑भिः[1]। रजा॑ꣳसि व्वी॒र्य्ये॑भिर्व्वी॒र्य्ये॑भी॒ रजा॑ꣳसि॒ रजा॑ꣳसि व्वी॒र्य्ये॑भिर्व्वी॒रत॑मा व्वी॒रत॑मा व्वी॒र्य्ये॑भी॒ रजा॑ꣳसि॒ रजा॑ꣳसि व्वी॒र्य्ये॑भिर्व्वी॒रत॑मा। व्वी॒र्य्ये॑भिर्व्वी॒रत॑मा व्वी॒रत॑मा व्वी॒र्य्ये॑भिर्व्वी॒र्य्ये॑भिर्व्वी॒रत॑मा॒ शवि॑ष्ठा॒ शवि॑ष्ठा व्वी॒रत॑मा व्वी॒र्य्ये॑भिर्व्वी॒र्य्ये॑भिर्व्वी॒रत॑मा॒ शवि॑ष्ठा। व्वी॒रत॑मा॒ शवि॑ष्ठा॒ शवि॑ष्ठा व्वी॒रत॑मा व्वी॒रत॑मा॒ शवि॑ष्ठा। व्वी॒रत॒मेति॑ वी॒र तमा। शवि॒ष्ठेति॒ शवि॑ष्ठा॥ या पत्यै॑ते॒ पत्यै॑ते॒ या या पत्यै॑ते॒ऽ अप्प्र॑ती॒ताप्प्र॑तीता॒ पत्यै॑ते॒ या या पत्यै॑ते॒ऽ अप्प्र॑तीता। पत्यै॑ते॒ऽ अप्प्र॑ती॒ताप्प्र॑तीता॒ पत्यै॑ते॒ पत्यै॑ते॒ऽ अप्प्र॑तीता॒ सहो॑भिः॒ सहो॑भि॒रप्प्र॑तीता॒ पत्यै॑ते॒ पत्यै॑ते॒ऽ अप्प्र॑तीता॒ सहो॑भिः। पत्यै॑ते॒ऽ इति॒ पत्यै॑ते। अप्प्र॑तीता॒ सहो॑भिः॒ सहो॑भि॒रप्प्र॑ती॒ताप्प्र॑तीता॒ सहो॑भि॒र्व्विष्ण्णू॒ व्विष्ण्णू॒ सहो॑भि॒रप्प्र॑ती॒ताप्प्र॑तीता॒ सहो॑भि॒र्व्विष्ण्णू॑। अप्प्र॑ती॒ते-त्यप्प्रति इता। सहो॑भि॒र्व्विष्ण्णू॒ व्विष्ण्णू॒ सहो॑भिः॒ सहो॑भि॒र्व्विष्ण्णू॑ऽ अगन्न-ग॒न्विष्ण्णू॒ सहो॑भिः॒ सहो॑भि॒र्व्विष्ण्णू॑ऽ अगन्। सहो॑भि॒रिति॒ सह॑ः भिः। व्विष्ण्णू॑ऽ अगन्नग॒न्विष्ण्णू॒ व्विष्ण्णू॑ऽ अग॒न्वरु॑णा॒ व्वरु॑णाग॒न्विष्ण्णू॒ व्विष्ण्णू॑ऽ अग॒न्वरु॑णा। व्विष्ण्णू॒ऽ इति॒ विष्ण्णू॑। अ॒ग॒न्वरु॑णा॒ व्वरु॑णागन्नग॒न्वरु॑णा पू॒र्व्वहू॑तौ पू॒र्व्वहू॑तौ॒ व्वरु॑णागन्नग॒न्वरु॑णा पू॒र्व्वहू॑तौ। व्वरु॑णा पू॒र्व्वहू॑तौ पू॒र्व्वहू॑तौ॒ व्वरु॑णा॒ व्वरु॑णा पू॒र्व्वहू॑तौ। पू॒र्व्वहू॑ता॒विति॑ पू॒र्व्व हू॑तौ॥५३॥

दे॒वान्दि॒व॒न्दिव॑न्दे॒वान्दे॒वान्दिव॑मगन्नग॒न्दिव॑न्दे॒वान्दे॒वान्दिव॑मगन्। दिव॑मगन्नग॒न्दि॒व॒न्दिव॑मगन्न्य॒ज्ञो य॒ज्ञोग॒न्दि॒व॒न्दिव॑मगन्न्य॒ज्ञः। अ॒ग॒न्न्य॒ज्ञो य॒ज्ञोगन्नगन्न्य॒ज्ञस्तत॒स्ततो॑ य॒ज्ञोगन्नगन्न्य॒ज्ञस्तत॑ः। य॒ज्ञस्तत॒स्ततो॑

---

[1]. नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः (वा. प्रा. ४.१०६) प्रस्तुत सन्धि प्रारम्भ करते समय प्रथम स्कभिता पद में अस्वरपूर्व होने के कारण ककार का द्वित्व नहीं होगा। वीर्येभिः रजाꣳसि यहाँ रेफे लुप्यते दीर्घं चोपधा(वा.प्रा.४.३६) इस सूत्र से रेफ बाद में होने से भावी विसर्जनीय का लोप होता है तथा उपधा का दीर्घ। र का निर्देश एफ से होता है- र एफेन च(वा.प्रा.१.३९)।

यज्ञो यज्ञस्ततो मा मा ततो यज्ञो यज्ञस्ततो मा[1]। ततो मा मा ततस्ततो मा द्रविणन्द्रविणम्मा ततस्ततो मा द्रविणम्। मा द्रविणन्द्रविणम्मा मा द्रविणमष्टष्टु द्रविणम्मा मा द्रविणमष्टु। द्रविणमष्टष्टु द्रविणन्द्रविणमष्टु मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानष्टु द्रविणन्द्रविणमष्टु मनुष्ष्यान्। अष्टु मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानष्टष्टु मनुष्ष्यानन्तरिक्षमन्तरिक्षम्मनुष्ष्यानष्टष्टु मनुष्ष्यानन्तरिक्षम्। मनुष्ष्यानन्तरिक्षमन्तरिक्षम्मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानन्तरिक्षम्पितॄन्पितॄनन्तरिक्षम्मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानन्तरिक्षम्पितॄन्। अन्तरिक्षम्पितॄन्पितॄनन्तरिक्षमन्तरिक्षम्पितॄन्पृथिवीम्पृथिवीम्पितॄनन्तरिक्षमन्तरिक्षम्पितॄन्पृथिवीम्। पितॄन्पृथिवीम्पृथिवीम्पितॄन्पितॄन्पृथिवीँऽयँऽयम्पृथिवीम्पितॄन्पितॄन्पृथिवीँऽयम्। पृथिवीँऽयँऽयम्पृथिवीम्पृथिवीँऽयङ्कङ्कँऽयम्पृथिवीम्पृथिवीँऽयङ्कम्। यङ्कङ्कँऽयँऽयङ्कञ्च च कँऽयँऽयङ्कञ्च। कञ्च च कङ्कञ्च लोकँल्लोकञ्च कङ्कञ्च लोकम्। च लोकँल्लोकञ्च च लोकमगन्नगँल्लोकञ्च च लोकमगन्[2]। लोकमगन्नगँल्लोकँल्लोकमगन्न्यज्ञो यज्ञोगँल्लोकँल्लोकमगन्न्यज्ञः। अगन्न्यज्ञो यज्ञोगन्नगन्न्यज्ञस्ततस्ततो यज्ञोगन्नगन्न्यज्ञस्ततः। यज्ञस्ततस्ततो यज्ञो यज्ञस्ततो मे मे ततो यज्ञो यज्ञस्ततो मे। ततो मे मे ततस्ततो मे भद्रम्भद्रम्मे ततस्ततो मे भद्रम्। मे भद्रम्भद्रम्मे मे भद्रमभूदभूद् भद्रम्मे मे भद्रमभूत्। भद्रमभूदभूद् भद्रम्भद्रमभूत्। अभूदित्यभूत्॥५४॥

चतुस्त्रिꣳशत्तन्तवस्तन्तवश्चतुस्त्रिꣳशच्चतुस्त्रिꣳशत्तन्तवो ये ये तन्तवश्चतुस्त्रिꣳशच्चतुस्त्रिꣳशत्तन्तवो ये। चतुस्त्रिꣳशदिति चतुः त्रिꣳशत्। तन्तवो ये ये तन्तवस्तन्तवो ये वितत्निरे वितत्निरे ये तन्तवस्तन्तवो ये वितत्निरे। ये

[1]. स्वरितात् परमनुदात्तमुदात्तमयम् (वा. प्रा. ४.१४१) स्वरित अक्षर से परवर्ती अनुदात्त अक्षर प्रचय हो जाता है जैसे ततः मा = ततो मा।

[2]. अगन् लोकम् यहाँ नुश्चानुनासिकम्(वा.प्रा.४.१४) इस सूत्र से नकार अनुनासिक लकार होता है।

व्वितत्त्निरे व्वितत्त्निरे ये ये व्वितत्त्निरे ये ये व्वितत्त्निरे ये ये व्वितत्त्निरे ये। व्वितत्त्निरे ये ये व्वितत्त्निरे व्वितत्त्निरे यऽ इममिमँय्ये व्वितत्त्निरे व्वितत्त्निरे यऽ इमम्। व्वितत्त्निरऽ इति वि तत्त्निरे। यऽ इममिमँय्ये यऽ इमँय्यज्ञँय्यज्ञमिमँय्ये यऽ इमँय्यज्ञम्। इमँय्यज्ञँय्यज्ञमिममिमँय्यज्ञꣳ स्वधया स्वधया यज्ञमिम-मिमँय्यज्ञꣳ स्वधया। यज्ञꣳ स्वधया स्वधया यज्ञँय्यज्ञꣳ स्वधया ददन्ते ददन्ते स्वधया यज्ञँय्यज्ञꣳ स्वधया ददन्ते। स्वधया ददन्ते ददन्ते स्वधया स्वधया ददन्ते। ददन्तऽ इति ददन्ते॥ तेषाञ्छिन्नञ्छिन्नन्तेषान्तेषाञ्छिन्नꣳ सꣳ सञ्छिन्नन्तेषान्तेषाञ्छिन्नꣳ सम्। छिन्नꣳ सꣳ सञ्छिन्नञ्छिन्नꣳ सम्म्वे-तदेतदु सञ्छिन्नञ्छिन्नꣳ सम्म्वेतत्[1]। सम्म्वेतदेतदु सꣳ सम्म्वेतद्दधामि दधा-म्म्येतदु सꣳ सम्म्वेतद्दधामि। ॐऽ इत्यूँ[2]। एतद्दधामि दधाम्म्येतदेतद्दधामि स्वाहा स्वाहा दधाम्म्येतदेतद्दधामि स्वाहा। दधामि स्वाहा स्वाहा दधामि दधामि स्वाहा घर्म्मो घर्म्मः स्वाहा दधामि दधामि स्वाहा घर्म्मः। स्वाहा घर्म्मो घर्म्मः स्वाहा स्वाहा घर्म्मोऽ अप्प्यपि घर्म्मः स्वाहा स्वाहा घर्म्मोऽ अपि। घर्म्मोऽ अप्प्यपि घर्म्मो घर्म्मोऽ अप्प्यैत्त्वेत्त्वपि घर्म्मो घर्म्मोऽ अप्प्यैतु। अप्प्यैत्त्वेत्त्व-प्प्यप्प्यैतु देवान्देवानेत्त्वप्प्यप्प्यैतु देवान्। एतु देवान्देवानेत्त्वेतु देवान्। देवानिति देवान्॥५५॥

यज्ञस्य दोहो दोहो यज्ञस्य यज्ञस्य दोहो व्वितंतो व्वितंतो दोहो यज्ञ-स्य यज्ञस्य दोहो व्वितंतः। दोहो व्वितंतो व्वितंतो दोहो दोहो व्वितंतः पुरुत्रा पुरु-

---

[1]. वा. प्रा. ४.९१. के अनुसार स्पर्श से बाद में न होने पर अपृक्त उकार प्रकृतिभाव से रहता है। सम् उ एतत् यहाँ स्पर्श से परे होने के कारण समुऽ एतत् ऐसा पाठ नहीं होगा।

[2]. प्रगृह्यं चर्चायामितिना पदेषु(वा.प्रा.४.१८) इस सूत्र के अनुसार चर्चा (इतिकरण के बाद पुनः पाठ) होने पर प्रगृह्य संज्ञक पद इति शब्द से व्यवहित होता है। उकारोऽपृक्तः(वा.प्रा.१.९५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अपृक्त उकार प्रगृह्य है। वा.प्रा.१.१५१. के अनुसार यहाँ उकार अपृक्तसंज्ञक है।

त्रा व्वितंतो दोहो दोहो व्वितंतः पुरुत्रा। व्वितंतः पुरुत्रा पुंरुत्रा व्वितंतो व्वितंतः पुरुत्रा स स पुंरुत्रा व्वितंतो व्वितंतः पुरुत्रा सः। व्वितंतऽ इति वि तंतः। पुरुत्रा स स पुंरुत्रा पुंरुत्रा सोऽ अंष्टधाष्टधा स पुंरुत्रा पुंरुत्रा सोऽ अंष्टधा। पुरुत्रेतिं पुरु त्रा[1]। सोऽ अंष्टधाष्टधा स सोऽ अंष्टधा दिवन्दिवंमष्टधा स सोऽ अंष्टधा दिवंम्। अष्टधा दिवन्दिवंमष्टधाष्टधा दिवंमन्वातंतानान्वातंतान दिवंमष्टधाष्टधा दिवंमन्वातंतान[2]। दिवंमन्वातंतानान्वातंतान दिवन्दिवंमन्वातंतान। अन्वातंतानेत्यंनु आतंतान॥ स यंज्ज्ञ यज्ज्ञ स स यंज्ज्ञ धुक्क्ष्व धुक्क्ष्व यज्ज्ञ स स यंज्ज्ञ धुक्क्ष्व। यज्ज्ञ धुक्क्ष्व धुक्क्ष्व यज्ज्ञ यज्ज्ञ धुक्क्ष्व महि महिं धुक्क्ष्व यज्ज्ञ यज्ज्ञ धुक्क्ष्व महिं। धुक्क्ष्व महि महिं धुक्क्ष्व धुक्क्ष्व महिं मे मे महिं धुक्क्ष्व धुक्क्ष्व महिं मे। महिं मे मे महि महिं मे प्प्रजायांम्प्रजायांम्मे महि महिं मे प्प्रजायांम्। मे प्प्रजायांम्प्रजायांम्मे मे प्प्रजायांꣳ रायो रायः प्प्रजायांम्मे मे प्प्रजायांꣳ रायः। प्रजायांꣳ रायो रायः प्प्रजायांम्प्रजायांꣳ रायस्प्पोषम्पोषꣳ रायः प्प्रजायांम्प्रजायांꣳ रायस्प्पोषंम्। प्रजायामितिं प्प्र जायांम्। रायस्प्पोषम्पोषꣳ रायो रायस्प्पोषँव्विश्श्वँव्विश्श्वम्पोषꣳ रायो रायस्प्पोषँव्विश्श्वंम्। पोषँव्विश्श्वँव्विश्श्वम्पोषम्पोषँव्विश्श्वमायुरायुर्व्विश्श्वम्पोषम्पोषँव्विश्श्वमायुंः। व्विश्श्वमायुरायुर्व्विश्श्वँव्विश्श्वमायुंरशीयाशीयायुर्व्विश्श्वँव्विश्श्वमायुंरशीय। आयुंरशीयाशीयायुरायुंरशीय स्वाहा स्वाहांशीयायुरायुंरशीय स्वाहां। अशीय स्वाहा स्वाहांशीयाशीय स्वाहां। स्वाहेति स्वाहां॥५६॥

आ पंवस्व पवस्वा पंवस्व हिरंण्ण्यवद्धिरंण्ण्यवत्पवस्वा पंवस्व हिरंण्ण्यवत्। पवस्व हिरंण्ण्यवद्धिरंण्ण्यवत्पवस्व पवस्व हिरंण्ण्यवदश्श्वंवदश्श्वंवद्धिरंण्ण्यव-

1. शस्त्वत्रातातिषु(वा.प्रा.५.९) इस सूत्र के अनुसार पुरुत्रा पद में त्रा तद्धित प्रत्यय बाद में होने से पृथक्करण होता है।

2. सङ्ख्यापूर्वश्च धा (वा. प्रा. ५.२७) इस सूत्र के अनुसार अष्टधा पद का पृथक्करण नहीं होगा।

त्पवस्व पवस्व॒ हिर॑ण्यव॒दश्व॑वत्[1]। हिर॑ण्यव॒दश्व॑व॒दश्व॑व॒द्धिर॑ण्यव॒द्धिर॑ण्यव॒-
दश्व॑वत्सोम सो॒माश्व॑व॒द्धिर॑ण्यव॒द्धिर॑ण्यव॒दश्व॑वत्सोम। हिर॑ण्यव॒दिति॒ हिर॑ण्य
व्वत्। अश्व॑वत्सोम सो॒माश्व॑व॒दश्व॑वत्सोम व्वी॒रव॑द्वी॒रव॑त्सो॒माश्व॑व॒दश्व॑वत्सोम
व्वी॒रव॑त् । अश्व॑व॒दित्यश्व॑ व्वत्। सो॒म॒ व्वी॒रव॑द्वी॒रव॑त्सोम सोम व्वी॒रव॑त्। व्वी॒रव॒दिति॑
वी॒र व्वत्॥ व्वाज॒ङ्गोम॑न्त॒ङ्गोम॑न्तँ॒व्वाजँ॒व्वाज॒ङ्गोम॑न्त॒मा भ॑र भ॒रा गोम॑न्तँ॒व्वा-
जँ॒व्वाज॒ङ्गोम॑न्त॒मा भ॑र। गोम॑न्त॒मा भ॑र भ॒रा गोम॑न्त॒ङ्गोम॑न्त॒मा भ॑र॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑
भ॒रा गोम॑न्त॒ङ्गोम॑न्त॒मा भ॑र॒ स्वाहा॑। गोम॑न्त॒मिति॒ गो म॑न्तम्[2]। आ भ॑र। भ॒र॒
स्वाहा॒ स्वाहा॑ भर भर॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥५७॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठेष्टमोध्यायः॥

---

1. नाश्ववद्धिरण्यात् (वा. प्रा. ३.९८) इस सूत्र के अनुसार अश्ववत् पद में दीर्घ नहीं होता है अर्थात् अश्वावत् नहीं होता है।

2. वा. प्रा. ५.८. के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

॥नवमोध्यायः॥

हरिं÷ॐ॥ देव॑ सवितः सवितु॒र्द्देव॒ देव॑ सवितु॒ः प्प्र प्प्र स॑वितु॒र्द्देव॒ देव॑ सवितु॒ः प्प्र। स॒वि॒तु॒ः प्प्र प्प्र स॑वितः सवितु॒ः प्प्र सु॑व सुव॒ प्प्र स॑वितः सवितु॒ः प्प्र सु॑व। स॒वि॒तुरिति॑ सवितः। प्र सु॑व सुव॒ प्प्र प्प्र सु॑व य॒ज्ज्ञँय्य॒ज्ज्ञꣳ सु॑व॒ प्प्र प्प्र सु॑व य॒ज्ज्ञम्। सुव॒ य॒ज्ज्ञँय्य॒ज्ज्ञꣳ सु॑व सुव य॒ज्ज्ञम्प्र प्प्र य॒ज्ज्ञꣳ सु॑व सुव य॒ज्ज्ञम्प्र। य॒ज्ज्ञम्प्र प्प्र य॒ज्ज्ञँय्य॒ज्ज्ञम्प्र सु॑व सुव॒ प्प्र य॒ज्ज्ञँय्य॒ज्ज्ञम्प्र सु॑व। प्र सु॑व सुव॒ प्प्र प्प्र सु॑व य॒ज्ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ज्ञप॑तिꣳ सुव॒ प्प्र प्प्र सु॑व य॒ज्ज्ञप॑तिम्। सुव॒ य॒ज्ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ज्ञप॑तिꣳ सुव सुव य॒ज्ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य॒ भगा॑य य॒ज्ज्ञप॑तिꣳ सुव सुव य॒ज्ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य। य॒ज्ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य॒ भगा॑य य॒ज्ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य। य॒ज्ज्ञप॑ति॒मिति॑ य॒ज्ज्ञ प॑तिम्। भगा॒येति॒ भगा॑य॥ दि॒ब्यो ग॑न्ध॒र्ब्बो ग॑न्ध॒र्ब्बो दि॒ब्यो दि॒ब्यो ग॑न्ध॒र्ब्बः कै॑त॒पूः कै॑त॒पूर्ग्ग॑न्ध॒र्ब्बो दि॒ब्यो दि॒ब्यो ग॑न्ध॒र्ब्बः कै॑त॒पूः। ग॒न्ध॒र्ब्बः कै॑त॒पूः कै॑त॒पूर्ग्ग॑न्ध॒र्ब्बो ग॑न्ध॒र्ब्बः कै॑त॒पूः केत॒ङ्केत॑ङ्केत॒पूर्ग्ग॑न्ध॒र्ब्बो ग॑न्ध॒र्ब्बः कै॑त॒पूः केत॑म्। के॒त॒पूः केत॒ङ्केत॑ङ्केत॒पूः कै॑त॒पूः केत॑न्नो न॒ः केत॑ङ्केत॒पूः कै॑त॒पूः केत॑न्नः। के॒त॒पूरिति॑ केत॒ पूः। केत॑न्नो न॒ः केत॒ङ्केत॑न्नः पुनातु पुनातु न॒ः केत॒ङ्केत॑न्नः पुनातु। न॒ः पु॒ना॒तु॒ पु॒ना॒तु॒ नो॒ न॒ः पु॒ना॒तु॒ ब्बा॒चो ब्बा॒चः पु॑नातु नो नः पुनातु ब्बा॒चः। पु॒ना॒तु॒ ब्बा॒चो ब्बा॒चः पु॑नातु पुनातु ब्बा॒चस्प्पति॒ः पति॑र्ब्बा॒चः पु॑नातु पुनातु ब्बा॒चस्प्पति॑÷[1]। ब्बा॒चस्प्पति॒ः पति॑र्ब्बा॒चो ब्बा॒चस्प्पति॒र्ब्बाजँ॒ब्बाज॒म्पति॑र्ब्बा॒चो ब्बा॒चस्प्पति॒र्ब्बाज॑म्। पति॒र्ब्बाजँ॒ब्बाज॒म्पति॒ः पति॒र्ब्बाज॑न्नो नो॒ ब्बाज॒म्पति॒ः पति॒र्ब्बाज॑न्नः। ब्बाज॑न्नो नो॒ ब्बाजँ॒ब्बाज॑न्नः स्वदतु स्वदतु नो॒ ब्बाजँ॒ब्बाज॑न्नः स्वदतु।

---

[1]. वाचः पतिः यहाँ वा.प्रा.३.३५. तथा वा.प्रा.३.३६. के अनुसार विसर्जनीय सकार होता है तथा वा.प्रा.४.१०२. के अनुसार पकार का द्वित्व होता है।

नः स्वदतु स्वदतु नो नः स्वदतु स्वाहा स्वाहा स्वदतु नो नः स्वदतु स्वाहा। स्वदतु स्वाहा स्वाहा स्वदतु स्वदतु स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१॥

ध्रुवसदन्त्वा त्वा ध्रुवसदन्ध्रुवसदन्त्वा नृषदन्नृसदन्त्वा ध्रुवसदन्ध्रुवसदन्त्वा नृषदम्[1]। ध्रुवसदमिति ध्रुव सदम्। त्वा नृषदन्नृसदन्त्वा त्वा नृषदम्मनःसदम्मनःसदन्नृसदन्त्वा त्वा नृषदम्मनःसदम्। नृषदम्मनःसदम्मनःसदन्नृसदन्नृषदम्मनःसदमिन्द्रायेन्द्राय मनःसदन्नृसदन्नृषदम्मनःसदमिन्द्राय। नृसदमिति नृ सदम्। मनःसदमिन्द्रायेन्द्राय मनःसदम्मनःसदमिन्द्राय त्वा त्वेन्द्राय मनःसदम्मनःसदमिन्द्राय त्वा। मनःसदमिति मनः सदम्। इन्द्राय त्वा त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा जुष्टञ्जुष्टन्त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा जुष्टम्। त्वा जुष्टञ्जुष्टन्त्वा त्वा जुष्टङ्गृह्णामि गृह्णामि जुष्टन्त्वा त्वा जुष्टङ्गृह्णामि। जुष्टङ्गृह्णामि गृह्णामि जुष्टञ्जुष्टङ्गृह्णामि जुष्टतमञ्जुष्टतमङ्गृह्णामि जुष्टञ्जुष्टङ्गृह्णामि जुष्टतमम्। गृह्णामि जुष्टतमञ्जुष्टतमङ्गृह्णामि गृह्णामि जुष्टतमम्। जुष्टतममिति जुष्ट तमम्॥ अप्प्सुषदङ्घृतसदङ्घृतसदमप्प्सुसदमप्प्सुषदङ्घृतसदँव्योमसदँव्योमसदङ्घृतसदमप्प्सुसदमप्प्सुषदङ्घृतसदँव्योमसदम्। अप्प्सुसदमित्यप्प्सु सदम्। घृतसदँव्योमसदँव्योमसदङ्घृतसदङ्घृतसदँव्योमसदम्। घृतसदमिति घृत सदम्। व्योमसदमिति व्योम सदम्॥ पृथिविसदमन्तरिक्षसदमन्तरिक्षसदम्पृथिविसदम्पृथिविसदमन्तरिक्षसदन्दिविसदन्दिविसदमन्तरिक्षसदम्पृथिविसदम्पृथिविसदमन्तरिक्षसदन्दिविसदम्[2]। पृथिविसदमिति पृथिवि सदम्। अन्तरिक्षसदन्दिविसदन्दिविसदमन्तरिक्षसदमन्तरिक्षसदन्दिविसदन्देवसदन्देवसदन्दिविसदमन्तरिक्षसदमन्तरि-

1. वा.प्रा.३.५६. के अनुसार ध्रुवसदम् पद में सकार षकार नहीं होगा।

2. पृथिविदिव्युपरिचर्षणिशकुनियासिभ्यः (वा. प्रा. ३.८३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथिवि एवं दिवि से परे स्थित सकार अविकृत रहता है।

क्ष॒सद॑न्दिवि॒सद॑न्देव॒सद॑म्। अ॒न्त॒रि॒क्ष॒सद॒मित्य॑न्तरिक्ष॒ सद॑म्। दि॒वि॒सद॑न्देव॒-
सद॑न्देव॒सद॑न्दिवि॒सद॑न्दिवि॒सद॑न्देव॒सद॑न्नाक॒सद॑न्नाक॒सद॑न्देव॒सद॑न्दिवि॒सद॑न्दिवि॒-
सद॑न्देव॒सद॑न्नाक॒सद॑म्। दि॒वि॒सद॒मिति॑ दिवि॒ सद॑म्। दे॒व॒सद॑न्नाक॒सद॑न्नाक॒सद॑न्दे-
व॒सद॑न्देव॒सद॑न्नाक॒सद॑म्। दे॒व॒सद॒मिति॑ देव॒ सद॑म्। ना॒क॒सद॒मिति॑ नाक॒ सद॑म्॥
२॥

अ॒पाꣳ रस॒ꣳ रस॑म॒पाम॒पाꣳ रस॒मुद्व॑यस॒मुद्व॑यस॒ꣳ रस॑म॒पाम॒पाꣳ रस॒मुद्व॑-
यसम्[1]। रस॒मुद्व॑यस॒मुद्व॑यस॒ꣳ रस॒ꣳ रस॒मुद्व॑यस॒ꣳ सूर्य्ये॒ सूर्य्य॒ऽ उद्व॑यस॒ꣳ रस॒ꣳ
रस॒मुद्व॑यस॒ꣳ सूर्य्ये॑। उद्व॑यस॒ꣳ सूर्य्ये॒ सूर्य्य॒ऽ उद्व॑यस॒मुद्व॑यस॒ꣳ सूर्य्ये॒ सन्त॒ꣳ
सन्त॒ꣳ सूर्य्य॒ऽ उद्व॑यस॒मुद्व॑यस॒ꣳ सूर्य्ये॒ सन्त॑म्। उद्व॑यस॒मित्युत् व्व॑यसम्। सूर्य्ये॒
सन्त॒ꣳ सन्त॒ꣳ सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒ सन्त॑ꣳ स॒माहि॑तꣳ स॒माहि॑त॒ꣳ सन्त॒ꣳ सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒
सन्त॑ꣳ स॒माहि॑तम्। सन्त॑ꣳ स॒माहि॑तꣳ स॒माहि॑त॒ꣳ सन्त॒ꣳ सन्त॑ꣳ स॒माहि॑तम्
। स॒माहि॑त॒मिति॑ स॒म् आहि॑तम्॥ अ॒पाꣳ रस॑स्य॒ रस॑स्या॒पाम॒पाꣳ रस॑स्य॒ यो यो
रस॑स्या॒पाम॒पाꣳ रस॑स्य॒ यः। रस॑स्य॒ यो यो रस॑स्य॒ रस॑स्य॒ यो रसो॒ रसो॒ यो
रस॑स्य॒ रस॑स्य॒ यो रसः॑। यो रसो॒ रसो॒ यो यो रस॒स्तन्त॒ꣳ रसो॒ यो यो रस॒स्तम्।
रस॒स्तन्त॒ꣳ रसो॒ रस॒स्तँव्वो॑ व॒स्त॒ꣳ रसो॒ रस॒स्तँव्वः॑। तँव्वो॑ व॒स्तन्तँव्वो॑ गृह्णामि
गृह्णामि व॒स्तन्तँव्वो॑ गृह्णामि। व्वो॒ गृ॒ह्णा॒मि॒ गृ॒ह्णा॒मि॒ वो॒ वो॒ गृ॒ह्णा॒म्म्यु॒त्त॒-
मम॑मुत्त॒मङ्गृ॑ह्णामि वो वो गृह्णाम्म्युत्त॒मम॑म्। गृ॒ह्णा॒म्म्यु॒त्त॒मम॑मुत्त॒मङ्गृ॑ह्णामि गृह्णाम्म्यु-
त्त॒मम्। उ॒त्त॒ममित्युत् त॒मम्[2] ॥३॥

ग्रहा॑ऽ ऊर्ज्जाहुतय॒ऽ ऊर्ज्जाहुतयो॒ ग्ग्रहा॒ ग्ग्रहा॑ऽ ऊर्ज्जाहुतयो॒ व्यन्तो॒
व्यन्त॑ऽ ऊर्ज्जाहुतयो॒ ग्ग्रहा॒ ग्ग्रहा॑ऽ ऊर्ज्जाहुतयो॒ व्यन्तः॑। ऊ॒र्ज्जा॒हु॒त॒यो॒ व्यन्तो॒

---

1. अङ्गुष्ठाकुब्जनं लघावनुस्वारे त्वपाꣳरसम्।- या.शि.६२.

2. उत्कृष्ट का वाचक तम बाद में होने से उत्तमम् इस पद में उत् शब्द को तमम् से पृथक् किया जाता है।

ध्यन्त॑ऽ ऊर्ज्जाहुतयऽ ऊर्ज्जाहुतयो॒ ध्यन्तो॒ व्विप्प्रा॑य॒ व्विप्प्रा॑य॒ ध्यन्त॑ऽ ऊर्ज्जाहुतयऽ ऊर्ज्जाहुतयो॒ ध्यन्तो॒ व्विप्प्रा॑य। ऊ॒र्ज्जा॒हु॒त॒य॒ऽ इत्यू॒र्ज्जा आहुतयः। ध्यन्तो॒ व्विप्प्रा॑य॒ व्विप्प्रा॑य॒ ध्यन्तो॒ ध्यन्तो॒ व्विप्प्रा॑य म॒तिम्म॒तिँव्विप्प्रा॑य॒ ध्यन्तो॒ ध्यन्तो॒ व्विप्प्रा॑य म॒तिम्। व्विप्प्रा॑य म॒तिम्म॒तिँव्विप्प्रा॑य॒ व्विप्प्रा॑य म॒तिम्। म॒तिमिति॑ म॒तिम्॥ तेषाँ॒-व्विशि॑ष्प्रियाणाँ॒व्विशि॑ष्प्रियाणा॒न्तेषा॒न्तेषाँ॒व्विशि॑ष्प्रियाणाँव्वो व्वो॒ व्विशि॑ष्प्रियाणा॒न्ते-षा॒न्तेषाँ॒व्विशि॑ष्प्रियाणाँव्वः। व्विशि॑ष्प्रियाणाँव्वो व्वो॒ व्विशि॑ष्प्रियाणाँ॒व्विशि॑ष्प्रियाणाँव्वो॒-हम॒हँव्वो॒ व्विशि॑ष्प्रियाणाँ॒व्विशि॑ष्प्रियाणाँव्वो॒हम्[1]। व्विशि॑ष्प्रियाणा॒मिति॒ वि शि॑ष्प्रि-याणाम्। व्वो॒हम॒हँव्वो॑ व्वो॒हमि॒षमिष॑म॒हँव्वो॑ व्वो॒हमिष॑म्। अ॒हमि॒षमिष॑म॒हम॒हमि॒षमू-र्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मिष॑म॒हम॒हमि॒षमूर्ज्ज॑म्। इ॒षमूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मि॒षमि॒षमूर्ज्ज॒ꣳ सꣳ समूर्ज्ज॒मि॒ष-मि॒षमूर्ज्ज॒ꣳ सम्। ऊर्ज्ज॒ꣳ सꣳ समूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒ꣳ सम॑ग्ग्रभमग्ग्रभ॒ꣳ समूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒ꣳ सम॑ग्ग्रभम्। सम॑ग्ग्रभमग्ग्रभ॒ꣳ सꣳ सम॑ग्ग्रभम्। अ॒ग्ग्र॒भ॒मित्य॑ग्ग्रभम्॥ सु॒म्पृचौ॑ स्त्थ स्त्थः सु॒म्पृचौ॑ सु॒म्पृचौ॑ स्त्थ॒ः सꣳ सꣳ स्त्थ॑ः सु॒म्पृचौ॑ सु॒म्पृचौ॑ स्त्थ॒ः सम्। सु॒म्पृचा॒विति॑ सु॒म् पृचौ॑। स्त्थ॒ः सꣳ सꣳ स्त्थ॑ स्त्थ॒ः सम्मा॑ मा॒ सꣳ स्त्थ॑ स्त्थ॒ः सम्मा॑। सम्मा॑ मा॒ सꣳ सम्मा॑ भ॒द्रेण॑ भ॒द्रेण॑ मा॒ सꣳ सम्मा॑ भ॒द्रेण॑। मा॒ भ॒द्रेण॑ भ॒द्रेण॑ मा मा भ॒द्रेण॑ पृङ्क्ष्म्पृङ्क्ष्म्भ॒द्रेण॑ मा मा भ॒द्रेण॑ पृङ्क्ष्म्। भ॒द्रेण॑ पृङ्क्ष्म्पृङ्क्ष्म्भ॒द्रेण॑ भ॒द्रेण॑ पृङ्क्ष्व॒व्वि॒पृचौ॑ व्वि॒पृचौ॑ पृङ्क्ष्म्भ॒द्रेण॑ भ॒द्रेण॑ पृङ्क्षँव्वि॒पृचौ॑। पृ॒ङ्क्षँव्वि॒पृचौ॑ व्वि॒पृचौ॑ पृङ्क्ष्म्पृङ्क्षँव्वि॒पृचौ॑ स्त्थ स्त्थो व्वि॒पृचौ॑ पृङ्क्ष्म्पृङ्क्षँव्वि॒पृ-चौ॑ स्त्थः। व्वि॒पृचौ॑ स्त्थ स्त्थो व्वि॒पृचौ॑ व्वि॒पृचौ॑ स्त्थो॒ व्वि वि स्त्थो॑ व्वि॒पृचौ॑ व्वि॒पृचौ॑ स्त्थो॒ व्वि। व्वि॒पृचा॒विति॑ वि॒ पृचौ॑। स्त्थो॒ व्वि वि स्त्थ॑ स्त्थो॒ व्वि मा॑ मा॒ व्वि स्त्थ॑ स्त्थो॒ व्वि मा॑। व्वि मा॑ मा॒ व्वि वि मा॑ पा॒प्प्मना॑ पा॒प्प्मना॑ मा॒ व्वि वि मा॑ पा॒प्प्मना॑। मा॒

[1]. वोऽहं सोऽहं सोऽस्माकं तेऽभिगरो वोऽर्वाची (वा. प्रा. ४.६६) इस सूत्र के अनुसार वोहम् में अकार का अभिनिधान होता है।

पाप्प्मना पाप्प्मना मा मा पाप्प्मना पृङ्क्तम्पृङ्क्तम्पाप्प्मना मा मा पाप्प्मना पृङ्क्तम्[1]। पाप्प्मना पृङ्क्तम्पृङ्क्तम्पाप्प्मना पाप्प्मना पृङ्क्तम्। पृङ्क्तमिति पृङ्क्तम्॥४॥

इन्द्रस्य व्वज्ज्रो व्वज्ज्रऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य व्वज्ज्रोस्यसि व्वज्ज्रऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य व्वज्ज्रोसि[2]। व्वज्ज्रोस्यसि व्वज्ज्रो व्वज्ज्रोसि व्वाजसा व्वाजसाऽ असि व्वज्ज्रो व्वज्ज्रोसि व्वाजसाः। असि व्वाजसा व्वाजसाऽ अस्यसि व्वाजसास्त्वया त्वया व्वाजसाऽ अस्यसि व्वाजसास्त्वया। व्वाजसास्त्वया त्वया व्वाजसा व्वाजसास्त्वया-यमयन्त्वया व्वाजसा व्वाजसास्त्वयायम्। व्वाजसाऽ इति वाज सा:। त्वयायम्-यन्त्वया त्वयायँव्वाजँव्वाजमयन्त्वया त्वयायँव्वाजम्। अयँव्वाजँव्वाजमयमयँव्वाजँ सेत्त्सेद्वाजमयमयँव्वाजँ सेत्। व्वाजँ सेत्त्सेद्वाजँव्वाजँ सेत्। सेदिति सेत्॥ व्वाजस्य नु नु व्वाजस्य व्वाजस्य नु प्प्रसवे प्प्रसवे नु व्वाजस्य व्वाजस्य नु प्प्रसवे। नु प्प्रसवे प्प्रसवे नु नु प्प्रसवे मातरम्मातरम्प्रसवे नु नु प्प्रसवे मातरम्। प्रसवे मातरम्मातरम्प्रसवे प्प्रसवे मातरम्महीम्महीम्मातरम्प्रसवे प्प्रसवे मातरम्महीम्। प्रसवऽ इति प्प्र सवे। मातरम्महीम्महीम्मातरम्मातरम्महीमदितिमदितिम्मही-म्मातरम्मातरम्महीमदितिम्। महीमदितिमदितिम्महीम्महीमदितिन्नाम नामा-दितिम्महीम्महीमदितिन्नाम। अदितिन्नाम नामादितिमदितिन्नाम व्वचसा व्वचसा नामादितिमदितिन्नाम व्वचसा। नाम व्वचसा व्वचसा नाम नाम व्वचसा करामहे करामहे व्वचसा नाम नाम व्वचसा करामहे। व्वचसा करामहे करामहे व्वचसा व्वचसा करामहे। करामहऽ इति करामहे॥ यस्यामिदमिदँय्यस्याँय्य-स्यामिदँव्विश्श्वँव्विश्श्वमिदँय्यस्याँय्यस्यामिदँव्विश्श्वम्। इदँव्विश्श्वँव्विश्श्वमिदमिदँव्विश्श्वम्भु-

[1]. बर्हिरङ्क्राम्भद्रेण पृङ्क्तं ....च (वा. प्रा. ६.३०) इस सूत्र के अनुसार भद्रेण पृङ्क्तम् यहाँ दो अनुनासिक होंगे। सूत्रोक्त चकार से तज्जातीयक भद्रेण पृङ्क्त मा. सं. १९.११., मा. प. १९.९. का ग्रहण किया जा सकता है। पाप्मना पृङ्क्तम् का ग्रहण प्रतीत नहीं होता।

[2]. असि(वा.प्रा.२.८) यह आख्यात पद अनुदात्त होता है।

वनम्भुवनँव्विश्वमिदमिदँव्विश्वम्भुवनम्। व्विश्वम्भुवनम्भुवनँव्विश्वँव्विश्वम्भुवनमा-
विवेशाविवेश भुवनँव्विश्वँव्विश्वम्भुवनमाविवेश। भुवनमाविवेशाविवेश भुवनम्भु-
वनमाविवेश तस्यान्तस्यामाविवेश भुवनम्भुवनमाविवेश तस्याम्[1]। आविवेश
तस्यान्तस्यामाविवेशाविवेश तस्यान्नो नस्तस्यामाविवेशाविवेश तस्यान्नः।
आविवेशेत्या व्विवेश। तस्यान्नो नस्तस्यान्तस्यान्नो देवो देवो नस्तस्यान्तस्यान्नो
देवः। नो देवो देवो नो नो देवः सविता सविता देवो नो नो देवः सविता। देवः
सविता सविता देवो देवः सविता धर्म्म धर्म्मं सविता देवो देवः सविता धर्म्मं।
सविता धर्म्म धर्म्मं सविता सविता धर्म्मं साविषत्साविषद्धर्म्मं सविता सविता
धर्म्मं साविषत्। धर्म्मं साविषत्साविषद्धर्म्म धर्म्मं साविषत्। साविषदिति
साविषत्॥५॥

अप्प्स्वन्तरन्तरप्प्स्वप्प्स्वन्तरमृतममृतमन्तरप्प्स्वप्प्स्वन्तरमृतम्[2]।
अप्प्स्वित्यप् सु। अन्तरमृतममृतमन्तरन्तरमृतमप्प्स्वप्प्स्वमृतमन्तरन्तरमृतम-
प्प्सु। अमृतमप्प्स्वप्प्स्वमृतममृतमप्प्सु भेषजम्भेषजमप्प्स्वमृतममृतमप्प्सु
भेषजम्। अप्प्सु भेषजम्भेषजमप्प्स्वप्प्सु भेषजमपामपाम्भेषजमप्प्स्वप्प्सु
भेषजमपाम्। अप्प्स्वित्यप् सु। भेषजमपामपाम्भेषजम्भेषजमपामुतोतापाम्भे-
षजम्भेषजमपामुत। अपामुतोतापामपामुत प्प्रशस्तिषु प्प्रशस्तिषूतापामपामुत
प्प्रशस्तिषु। उत प्प्रशस्तिषु प्प्रशस्तिषूतोत प्प्रशस्तिष्ष्वश्वाऽ अश्वाः प्प्रशस्ति-
षूतोत प्प्रशस्तिष्ष्वश्वाः। प्रशस्तिष्ष्वश्वाऽ अश्वाः प्प्रशस्तिषु प्प्रशस्तिष्ष्वश्वा
भवत भवताश्वाः प्प्रशस्तिषु प्प्रशस्तिष्ष्वश्वा भवत। प्रशस्तिष्ष्विति प्प्र शस्तिषु
। अश्वा भवत भवताश्वाऽ अश्वा भवत व्वाजिनो व्वाजिनो भवताश्वाऽ अश्वा भवत

---

1. वा.प्रा.४.१५७. के अनुसार तस्याम् पद में एक यकार होगा।

2. अन्तरनाद्युदात्तम् (वा. प्रा. १.१६२) आद्युदात न होने पर अन्तः पद रिफितसंज्ञक होता है।

व्वाजिनः[1]। भवत व्वाजिनो व्वाजिनो भवत भवत व्वाजिनः। व्वाजिनऽ इति वाजिनः॥ देवीरापऽ आपो देवीर्देवीरापो यो यऽ आपो देवीर्देवीरापो यः। आपो यो यऽ आपऽ आपो यो वो वो यऽ आपऽ आपो यो वः। यो वो वो यो यो वऽ ऊर्म्मिरूर्म्मिर्व्वो यो यो वऽ ऊर्म्मिः। व्वऽ ऊर्म्मिरूर्म्मिर्व्वो वऽ ऊर्म्मिः प्प्रतूर्त्तिः प्प्रतूर्त्तिरूर्म्मिर्व्वो वऽ ऊर्म्मिः प्प्रतूर्त्तिः। ऊर्म्मिः प्प्रतूर्त्तिः प्प्रतूर्त्तिरूर्म्मिरूर्म्मिः प्प्रतूर्त्तिः ककुन्मान्ककुन्मान्प्रतूर्त्तिरूर्म्मिरूर्म्मिः प्प्रतूर्त्तिः ककुन्मान्। प्रतूर्त्तिः ककुन्मान्ककुन्मान्प्रतूर्त्तिः प्प्रतूर्त्तिः ककुन्मान्वाजसा व्वाजसाः ककुन्मान्प्रतूर्त्तिः प्प्रतूर्त्तिः ककुन्मान्वाजसाः। प्रतूर्त्तिरिति प्प्र तूर्त्तिः। ककुन्मान्वाजसा व्वाजसाः ककुन्मान्ककुन्मान्वाजसास्तेन तेन व्वाजसाः ककुन्मान्ककुन्मान्वाजसास्तेन। ककुन्मानिति ककुत् मान्। व्वाजसास्तेन तेन व्वाजसा व्वाजसास्तेनायमयन्तेन व्वाजसा व्वाजसास्तेनायम्। व्वाजसाऽ इति वाज साः। तेनायमयन्तेन तेनायँव्वाजँव्वाजमयन्तेन तेनायँव्वाजम् । अयँव्वाजँव्वाजमयमयँव्वाजꣳ सेत्सेद्वाजमयमयँव्वाजꣳ सेत्। व्वाजꣳ सेत्सेद्वाजँव्वाजꣳ सेत्। सेदिति सेत्॥६॥

व्वातो वा वा व्वातो व्वातो वा मनो मनो वा व्वातो व्वातो वा मनः। व्वा मनो मनो वा वा मनो वा वा मनो वा वा मनो वा। मनो वा वा मनो मनो वा गन्धर्व्वा गन्धर्व्वा वा मनो मनो वा गन्धर्व्वाः। व्वा गन्धर्व्वा गन्धर्व्वा वा वा गन्धर्व्वाः सप्तविꣳशतिः सप्तविꣳशतिर्ग्गन्धर्व्वा वा वा गन्धर्व्वाः सप्तविꣳशतिः। गन्धर्व्वाः सप्तविꣳशतिः सप्तविꣳशतिर्ग्गन्धर्व्वा गन्धर्व्वाः सप्तविꣳशतिः। सप्तविꣳशतिरिति सप्त व्विꣳशतिः॥ तेऽ अग्ग्रेग्ग्रे ते तेऽ अग्ग्रेश्श्वमश्श्वमग्ग्रे ते तेऽ अग्ग्रेश्श्व-

1. वा.प्रा.३.११६. के अनुसार मकार बाद में होने पर भवत का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है, यहाँ मकार बाद में न होने से दीर्घ नहीं होगा।

म्[1]। अग्ग्रेश्श्वमश्श्वमग्ग्रेग्ग्रेश्श्वंमयुञ्जन्नयुञ्जन्नश्श्वमग्ग्रेग्ग्रेश्श्वंमयुञ्जन्। अश्श्वंमयुञ्जन्नयुञ्जन्नश्श्वमश्श्वंमयुञ्जँस्त्ते तेंयुञ्जन्नश्श्वमश्श्वंमयुञ्जँस्त्ते। अयुञ्जँस्त्ते तेंयुञ्जन्नयुञ्जँस्त्तेऽ अंस्म्मिन्नस्म्मिँस्त्तेयुञ्जन्नयुञ्जँस्त्तेऽ अंस्म्मिन्। तेऽ अंस्म्मिन्नस्म्मिँस्त्ते तेऽ अंस्म्मिञ्जवञ्जवमंस्म्मिँस्त्ते तेऽ अंस्म्मिञ्जवम्[2]। अस्म्मिञ्जवञ्जवमंस्म्मिन्नस्म्मिञ्जवमादंधुरदधुरा जवमंस्म्मिन्नस्म्मिञ्जवमादंधुः। जवमादंधुरदधुरा जवञ्जवमादंधुः। आदंधुः। अदुधुरित्त्यंदधुः॥७॥

ब्वातंरह्हा भव भव ब्वातंरह्हा ब्वातंरह्हा भव ब्वाजिन्वाजिन्भव ब्वातंरह्हा ब्वातंरह्हा भव ब्वाजिन्। ब्वातंरह्हाऽ इति वातं रह्हाः। भव ब्वाजिन्वाजिन्भव भव ब्वाजिन्युज्ज्यमानो युज्ज्यमानो ब्वाजिन्भव भव ब्वाजिन्युज्ज्यमानः। ब्वाजिन्युज्ज्यमानो युज्ज्यमानो ब्वाजिन्वाजिन्युज्ज्यमानऽ इन्द्रंस्येवेन्द्रंस्येव युज्ज्यमानो ब्वाजिन्वाजिन्युज्ज्यमानऽ इन्द्रंस्येव। युज्ज्यमानऽ इन्द्रंस्येवेन्द्रंस्येव युज्ज्यमानो युज्ज्यमानऽ इन्द्रंस्येव दक्क्षिंणो दक्क्षिंणऽ इन्द्रंस्येव युज्ज्यमानो युज्ज्यमानऽ इन्द्रंस्येव दक्क्षिंणः। इन्द्रंस्येव दक्क्षिंणो दक्क्षिंणऽ इन्द्रंस्येवेन्द्रंस्येव दक्क्षिंणः श्श्रिया श्श्रिया दक्क्षिंणऽ इन्द्रंस्येवेन्द्रंस्येव दक्क्षिंणः श्श्रिया[3]। इन्द्रंस्येवेतीन्द्रंस्य इव। दक्क्षिंणः श्श्रिया श्श्रिया दक्क्षिंणो दक्क्षिंणः श्श्रियैद्ध्येंधि श्श्रिया दक्क्षिंणो दक्क्षिंणः श्श्रियैधिं। श्श्रियैद्ध्येंधि श्श्रिया श्श्रियैधिं। एधीत्त्येंधि॥ युञ्जन्तुं त्त्वा त्त्वा युञ्जन्तु युञ्जन्तु त्त्वा मरुतों मरुतंस्त्त्वा युञ्जन्तु युञ्जन्तु त्त्वा मरुतंः। त्त्वा मरुतों मरुतंस्त्त्वा त्त्वा मरुतों ब्विश्श्ववेंदसो ब्विश्श्ववेंदसो मरुतंस्त्त्वा त्त्वा मरुतों ब्विश्श्ववेंदसः। मरुतों ब्विश्श्ववेंदसो ब्विश्श्ववेंदसो मरुतों मरुतों ब्विश्श्ववेंदसऽ आ तें तऽ

1. विश्वेऽग्रे विशो रायोऽनग्नौ (वा. प्रा. ४.७१) इस सूत्र के अनुसार अग्रेश्वम् यहाँ अश्वम् के अकार का अभिनिधान होता है।

2. अस्मिन् जवम् यहाँ तकारवर्गश्चकारवर्गे चकारवर्गम्(वा.प्रा.४.९६) इस सूत्र से तवर्ग (नकार) चवर्ग (ञकार) होता है।

3. दक्षिणः श्रिया यहाँ विसर्जनीय से परवर्ती शकार का द्वित्व नहीं होगा, विसर्जनीयाद्व्यञ्जनपरः(वा.प्रा.४.१०७)।

आ विश्ववेदसो मरुतो मरुतो ब्विश्ववेदसऽ आ ते। ब्विश्ववेदसऽ आ ते तऽ आ विश्ववेदसो ब्विश्ववेदसऽ आ ते त्वष्टा त्वष्टा तऽ आ विश्ववेदसो ब्विश्ववेदसऽ आ ते त्वष्टा। ब्विश्ववेदसऽ इति विश्व ब्वेदसः। आ ते। ते त्वष्टा त्वष्टा ते ते त्वष्टा पत्सु पत्सु त्वष्टा ते ते त्वष्टा पत्सु। त्वष्टा पत्सु पत्सु त्वष्टा त्वष्टा पत्सु जवञ्जवम्पत्सु त्वष्टा त्वष्टा पत्सु जवम्। पत्सु जवञ्जवम्पत्सु पत्सु जवन्दधातु दधातु जवम्पत्सु पत्सु जवन्दधातु। पत्स्विति पत् सु।[1] जवन्दधातु दधातु जवञ्जवन्दधातु। दधात्विति दधातु॥८॥

जवो यो यो जवो जवो यस्ते ते यो जवो जवो यस्ते। यस्ते ते यो यस्ते ब्वाजिन्वाजिंस्ते यो यस्ते ब्वाजिन्। ते ब्वाजिन्वाजिंस्ते ते ब्वाजिन्निहितो निहितो ब्वाजिंस्ते ते ब्वाजिन्निहितः। ब्वाजिन्निहितो निहितो ब्वाजिन्वाजिन्निहितो गुहा गुहा निहितो ब्वाजिन्वाजिन्निहितो गुहा। निहितो गुहा गुहा निहितो निहितो गुहा यो यो गुहा निहितो निहितो गुहा यः। निहितऽ इति नि हितः। गुहा यो यो गुहा गुहा यः श्येने श्श्येने यो गुहा गुहा यः श्येने। यः श्येने श्श्येने यो यः श्येने परीत्तः परीत्तः श्येने यो यः श्येने परीत्तः। श्येने परीत्तः परीत्तः श्येने श्श्येने परीत्तोऽ अचरदचरत्परीत्तः श्येने श्श्येने परीत्तोऽ अचरत्। परीत्तोऽ अचरदचरत्परीत्तः परीत्तोऽ अचरच्च चाचरत्परीत्तः परीत्तोऽ अचरच्च[2]। अचरच्च चाचरदचरच्च ब्वाते ब्वाते चाचरदचरच्च ब्वाते। च ब्वाते ब्वाते च च ब्वाते। ब्वातऽ इति वाते॥ तेन नो नस्तेन तेन नो ब्वाजिन्वाजिन्नस्तेन तेन नो ब्वाजिन्। नो ब्वाजिन्वाजिन्नो नो ब्वाजिन्बलवान्बलवान्वाजिन्नो नो ब्वाजिन्बलवान्।

---

[1]. स्विति चानतौ(वा.प्रा.५.१४) नति न होने से सु प्रत्यय बाद में रहने वाले इस पद का पृथक्करण होता है। दन्त्य-वर्ण का मूर्धन्य होना नति है, दन्त्यस्य मूर्धन्यापत्तिर्नतिः(वा.प्रा.१.४२)।

[2]. परीत्तोऽवत्तानां सुविताय सन्धिरिति (वा. प्रा. ५. ४५) इस सूत्र के अनुसार परीत्तः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

वा॒जि॒न्बल॑वा॒न्बल॑वान्वाजिन्वाजि॒न्बल॑वा॒न्बलै॑न॒ बलै॑न॒ बल॑वान्वाजिन्वाजि॒न्बल॑वा॒न्बलै॑न। बल॑वा॒न्बलै॑न॒ बलै॑न॒ बल॑वा॒न्बल॑वा॒न्बलै॑न वा॒ज॒जिद्वा॑ज॒जिद् बलै॑न॒ बल॑वा॒न्बल॑वा॒न्बलै॑न वा॒ज॒जित्। बल॑वा॒निति॒ बल॑ वान्। बलै॑न वा॒ज॒जिद्वा॑ज॒जिद् बलै॑न॒ बलै॑न वा॒ज॒जिच्च॑ च वा॒ज॒जिद् बलै॑न॒ बलै॑न वा॒ज॒जिच्च॑। वा॒ज॒जिच्च॑ च वा॒ज॒जिद्वा॑ज॒जिच्च॒ भव॒ भव॑ च वा॒ज॒जिद्वा॑ज॒जिच्च॒ भव॑। वा॒ज॒जिदिति॑ वाज॒ जित्। च॒ भव॒ भव॑ च च॒ भव॒ सम॑ने॒ सम॑ने॒ भव॑ च च॒ भव॒ सम॑ने। भव॒ सम॑ने॒ सम॑ने॒ भव॒ भव॒ सम॑ने च च॒ सम॑ने॒ भव॒ भव॒ सम॑ने च। सम॑ने च च॒ सम॑ने॒ सम॑ने च पारयि॒ष्णुः पा॑रयि॒ष्णुश्च॒ सम॑ने॒ सम॑ने च पारयि॒ष्णुः। च॒ पा॒र॒यि॒ष्णुः पा॑रयि॒ष्णुश्च॑ च पारयि॒ष्णुः। पा॒र॒यि॒ष्णुरिति॑ पारयि॒ष्णुः॥ वाजि॑नो वाजजितो वाजजितो॒ वाजि॑नो॒ वाजि॑नो वाजजितो॒ वाजँ॒वाजँ॒वाजजितो॒ वाजि॑नो॒ वाजि॑नो वाजजितो॒ वाज॑म्। वा॒ज॒जि॒तो॒ वाजँ॒वाजँ॒वाजजितो वाजजितो॒ वाज॑ꣳ सरि॒ष्यन्त॑ः सरि॒ष्यन्तो॒ वाजँ॒वाजजितो वाजजितो॒ वाज॑ꣳ सरि॒ष्यन्त॑ः। वा॒ज॒जि॒तऽ इति॑ वाज जित॑ः। वाज॑ꣳ सरि॒ष्यन्त॑ः सरि॒ष्यन्तो॒ वाजँ॒वाज॑ꣳ सरि॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्पते॒र्बृह॒स्पतेः सरि॒ष्यन्तो॒ वाजँ॒वाज॑ꣳ सरि॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्पतेः[1]। स॒रि॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्पते॒र्बृह॒स्पतेः सरि॒ष्यन्त॑ः सरि॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्पतेर्भा॒गम्भा॒गम्बृह॒स्पतेः सरि॒ष्यन्त॑ः सरि॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्पतेर्भा॒गम्। बृह॒स्पतेर्भा॒गम्भा॒गम्बृह॒स्पते॒र्बृह॒स्पतेर्भा॒गमवाव॑ भा॒गम्बृह॒स्पते॒र्बृह॒स्पतेर्भा॒गमव॑[2]। भा॒गमवाव॑ भा॒गम्भा॒गमव॑ जिघ्रत जिघ्र॒ताव॑ भा॒गम्भा॒गमव॑ जिघ्रत। अव॑ जिघ्रत जिघ्र॒तावाव॑ जिघ्रत। जि॒घ्र॒तेति॑ जिघ्रत॥९॥

---

1. वा. प्रा. २.४७. के अनुसार बृहस्पतिः पद द्विरुदात्त है।

2. उपसर्ग अव॑ पद आद्युदात्त होता है जबकि आख्यात अ॒व॒ सर्वानुदात्त होता है।

दे॒वस्या॒हम॒हन्दे॒वस्य॑ दे॒वस्या॒हꣳ स॑वि॒तुः स॑वि॒तुर॒हन्दे॒वस्य॑ दे॒वस्या॒हꣳ स॑वि॒तुः। अ॒हꣳ स॑वि॒तुः स॑वि॒तुर॒हम॒हꣳ स॑वि॒तुः सु॒वे सु॒वे स॑वि॒तुर॒हम॒हꣳ स॑वि॒तुः सु॒वे। स॒वि॒तुः सु॒वे सु॒वे स॑वि॒तुः स॑वि॒तुः सु॒वे स॒त्यस॑वसः स॒त्यस॑वसः सु॒वे स॑वि॒तुः स॑वि॒तुः सु॒वे स॒त्यस॑वसः। सु॒वे स॒त्यस॑वसः स॒त्यस॑वसः सु॒वे सु॒वे स॒त्यस॑वसो॒ बृह॒स्प्पते॒र्बृह॒स्प्पतेः॑ स॒त्यस॑वसः सु॒वे सु॒वे स॒त्यस॑वसो॒ बृह॒स्प्पतेः॑। स॒त्यस॑वसो॒ बृह॒स्प्पते॒र्बृह॒स्प्पतेः॑ स॒त्यस॑वसः स॒त्यस॑वसो॒ बृह॒स्प्पते॑रुत्त॒मम॑मुत्त॒मम्बृह॒स्प्पतेः॑ स॒त्यस॑वसः स॒त्यस॑वसो॒ बृह॒स्प्पते॑रुत्त॒मम्। स॒त्यस॑वस॒ऽ इति॑ स॒त्य स॑वसः। बृह॒स्प्पते॑रुत्त॒मम॑मुत्त॒मम्बृह॒स्प्पते॒र्बृह॒स्प्पते॑रुत्त॒मन्नाक॒न्नाक॑मुत्त॒मम्बृह॒स्प्पते॒र्बृह॒स्प्पते॑रुत्त॒मन्नाक॑म्। उ॒त्त॒मन्नाक॒न्नाक॑मुत्त॒मम॑मुत्त॒मन्नाक॑ꣳ रुहेयꣳ रुहेय॒न्नाक॑मुत्त॒मम॑मुत्त॒मन्नाक॑ꣳ रुहेयम्। उ॒त्त॒ममित्यु॑त् त॒मम्। नाक॑ꣳ रुहेयꣳ रुहेय॒न्नाक॒न्नाक॑ꣳ रुहेयम्। रु॒हे॒य॒मिति॑ रुहेयम्॥ इन्द्र॑स्य स॒त्यप्प्र॑सवसः स॒त्यप्प्र॑सवस॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य स॒त्यप्प्र॑सवसोरुहमरुहꣳ स॒त्यप्प्र॑सवस॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य स॒त्यप्प्र॑सवसोरुहम्॥ स॒त्यप्प्र॑सवसोरुहमरुहꣳ स॒त्यप्प्र॑सवसः स॒त्यप्प्र॑सवसोरुहम्[1]। स॒त्यप्प्र॑सवस॒ऽ इति॑ स॒त्य प्र॑सवसः। अ॒रु॒ह॒मित्य॑रुहम्॥१०॥

बृह॑स्प्पते॒ ब्वाजँ॒ब्वाज॒म्बृह॑स्प्पते॒ बृह॑स्प्पते॒ ब्वाजं॑ञ्जय जय॒ ब्वाज॒म्बृह॑स्प्पते॒ बृह॑स्प्पते॒ ब्वाजं॑ञ्जय[2]। ब्वाजं॑ञ्जय जय॒ ब्वाजँ॒ब्वाजं॑ञ्जय॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये जय॒ ब्वाजँ॒ब्वाजं॑ञ्जय॒ बृह॒स्प्पत॑ये। ज॒य॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये जय जय॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ ब्वाचँ॒ब्वाच॒म्बृह॒स्प्पत॑ये जय जय॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ ब्वाच॑म्। बृह॒स्प्पत॑ये॒ ब्वाचँ॒ब्वाच॒म्बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ ब्वाचँ॑ब्वदत ब्वदत॒ ब्वाच॒म्बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ ब्वाचँ॑ब्वदत। ब्वाचँ॑ब्वदत ब्वदत॒ ब्वाचँ॒ब्वाचँ॑ब्वदत॒ बृह॒स्प्पति॒म्बृह॒स्प्पतिँ॑ब्वदत॒ ब्वाचँ॒ब्वाचँ॑ब्वदत॒ बृह॒स्प्प-

1. सत्यप्रसवसः अरुहम् यहाँ सङ्क्रमे च सर्वत्र(वा.प्रा.४.८१) इस सूत्र से अकार का अभिनिधान होता है।

2. वा. प्रा. २.२४. के अनुसार यहाँ बृहस्पते पद आद्युदात्त है।

तिंम्। ब्वदत बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिँब्वदत ब्वदत बृहस्प्पतिँब्वाजँब्वाजम्बृहस्प्पतिँब्वदत ब्वदत बृहस्प्पतिँब्वाजंम्। बृहस्प्पतिँब्वाजँब्वाजम्बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिँब्वाजंञ्जापयत जापयत ब्वाजम्बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिँब्वाजंञ्जापयत। ब्वाजंञ्जापयत जापयत ब्वाजँ-ब्वाजंञ्जापयत। जापयतेतिं जापयत॥ इन्द्रेन्द्राायेन्द्राायेन्द्रेन्द्रेन्द्राायेन्द्रमिन्द्रमिन्द्रा-येन्द्रेन्द्रेन्द्राायेन्द्रंम्। इन्द्राायेन्द्रमिन्द्रमिन्द्राायेन्द्राायेन्द्रंम् । इन्द्रमितीन्द्रंम्॥११॥

एषा वों वऽ एषैषा वः सा सा वंऽ एषैषा वः सा। ब्वः सा सा वों वः सा सत्या सत्या सा वों वः सा सत्या। सा सत्या सत्या सा सा सत्या सँब्वाक्क्सँब्वा-क्कसत्या सा सा सत्या सँब्वाक्। सत्या सँब्वाक्क सँब्वाक्क सत्या सत्या सँब्वागंभूदभू-त्त्सँब्वाक्क सत्या सत्या सँब्वागंभूत्। सँब्वागंभूदभूत्त्सँब्वाक्क सँब्वागंभूद्ध्यया ग्ध्यंाभूत्त्सँ-ब्वाक्सँब्वागंभूद्ध्ययां। सँब्वागितिं सम् ब्वाक्। अभूद्ध्यया ग्ध्यंाभूदभूद्ध्यया बृहस्प्पति-म्बृहस्प्पतिँग्ध्ययांभूदभूद्ध्यया बृहस्प्पतिंम्। ग्ध्यया बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिँग्ध्यया ग्ध्यया बृहस्प्पतिँब्वाजँब्वाजम्बृहस्प्पतिँग्ध्यया ग्ध्यया बृहस्प्पतिँब्वाजंम्। बृहस्प्पतिँब्वाजँब्वा-जम्बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिँब्वाजमजींजपताजींजपत ब्वाजम्बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिँ-ब्वाजमजींजपत। ब्वाजमजींजपताजींजपत ब्वाजँब्वाजमजींजपताजींजपताजीं-जपताजींजपत ब्वाजँब्वाजमजींजपताजींजपत। अजींजपताजींजपताजींजप-ताजींजपताजींजपताजींजपत ब्वाजँब्वाजमजींजपताजींपताजींजपताजींजपत ब्वाजंम्। अजींजपत ब्वाजँब्वाजमजींजपताजींजपत ब्वाजँब्वनंस्प्पतयो ब्वनंस्प्पतयो ब्वाजमजींजपताजींजपत ब्वाजँब्वनंस्प्पतयः[1]। ब्वाजँब्वनंस्प्पतयो ब्वनंस्प्पतयो ब्वाजँब्वाजँब्वनंस्प्पतयो ब्वि वि वनंस्प्पतयो ब्वाजँब्वाजँब्वनंस्प्पतयो ब्वि। ब्वनंस्प्पतयो ब्वि वि वनंस्प्पतयो ब्वनंस्प्पतयो ब्वि मुंञ्चयद्ध्वम्मुञ्चयद्ध्वँब्वि वनंस्प्पतयो ब्वनंस्प्पतयो

1. वा.प्रा.२.४६. तथा वा.प्रा.२.४७. के अनुसार वनस्पति पद द्विरुदात होता है, यहाँ आमन्त्रित पद होने से वनस्पति पद द्विरुदात नहीं है। वा.प्रा.३.५०. के अनुसार पति शब्द बाद में होने पर वन शब्द सकार से व्यवहित होता है।

व्वि मु॑च्यध्वम्। व्वि मु॑च्यध्वम्मुच्यध्वँ॒व्वि वि मु॑च्यध्वम्। मु॒च्य॒ध्व॒मिति॑ मुच्यध्वम्॥ इन्द्रँ॑व्वाज॒जितो॑ व्वाज॒जित॒ऽ इन्द्र॒मिन्द्रँ॑व्वाज॒जितो॒ व्वाजँ॑व्वाजँ॑व्वाज॒जित॒ऽ इन्द्र॒मि- न्द्रँ॑व्वाज॒जितो॒ व्वाज॑म्॥ व्वा॒ज॒जितो॒ व्वाजँ॑व्वाजँ॑व्वाज॒जितो॑ व्वाज॒जितो॒ व्वाज॑ञ्जेषञ्जेषँ॒- व्वाजँ॑व्वाज॒जितो॑ व्वाज॒जितो॒ व्वाज॑ञ्जेषम्। व्वा॒ज॒जित॒ऽ इति॑ वाज॒ जित॑÷। व्वाजँ॑ञ्जे- षञ्जेषँ॒व्वाजँ॒व्वाज॑ञ्जेषम्। जे॒ष॒मिति॑ जेषम्॥ व्वाजि॑नो व्वाजजितो व्वाजजितो॒ व्वाजि॑- नो॒ व्वाजि॑नो व्वाजजि॒तोध्व॒नोध्व॑नो व्वाजजितो॒ व्वाजि॑नो॒ व्वाजि॑नो व्वाजजि॒तोध्व॑नः। व्वा॒ज॒जि॒तोध्व॒नोध्व॑नो व्वाजजितो व्वाजजि॒तोध्व॑न स्कब्भु॒वन्त॑ स्कब्भुवन्तोध्व॑नो व्वा- जजितो व्वाजजि॒तोध्व॑न स्कब्भुवन्त॑÷[1]। व्वा॒ज॒जि॒त॒ऽ इति॑ वाज जितः। अध्व॑न स्कब्भु॒वन्त॑ स्कब्भु॒वन्तोध्व॒नोध्व॑न स्कब्भु॒वन्तो॒ योज॑ना॒ योज॑ना स्कब्भु॒वन्तोध्व॒- नोध्व॑न स्कब्भु॒वन्तो॒ योज॑ना। स्क॒ब्भु॒वन्तो॒ योज॑ना॒ योज॑ना स्कब्भु॒वन्त॑ स्क- ब्भु॒वन्तो॒ योज॑ना॒ मिमा॑ना॒ मिमा॑ना॒ योज॑ना स्कब्भु॒वन्त॑ स्कब्भु॒वन्तो॒ योज॑ना॒ मिमा॑नाः। योज॑ना॒ मिमा॑ना॒ मिमा॑ना॒ योज॑ना॒ योज॑ना॒ मिमा॑नाः॒ काष्ठा॒ङ्काष्ठा॒- म्मिमा॑ना॒ योज॑ना॒ योज॑ना॒ मिमा॑नाः॒ काष्ठा॑म्। मिमा॑नाः॒ काष्ठा॒ङ्काष्ठा॒म्मिमा॑ना॒ मिमा॑नाः॒ काष्ठा॑ङ्गच्छत गच्छत॒ काष्ठा॒म्मिमा॑ना॒ मिमा॑नाः॒ काष्ठा॑ङ्गच्छत। काष्ठा॑ङ्गच्छत गच्छत॒ काष्ठा॒ङ्काष्ठा॑ङ्गच्छत। ग॒च्छ॒तेति॑ गच्छत॥१२॥

ए॒ष स्य स्यऽ ए॒षऽ ए॒ष स्य व्वा॒जी व्वा॒जी स्यऽ ए॒षऽ ए॒ष स्य व्वा॒जी[2]। स्य व्वा॒जी व्वा॒जी स्य स्य व्वा॒जी क्षि॑प॒णिङ्क्षि॑प॒णिँ॑व्वा॒जी स्य स्य व्वा॒जी क्षि॑प॒णिम्। व्वा॒जी क्षि॑प॒णिङ्क्षि॑प॒णिँ॑व्वा॒जी व्वा॒जी क्षि॑प॒णिन्तु॑रण्ण्यति तुरण्ण्यति क्षिप॒णिँ॑व्वा॒- जी व्वा॒जी क्षि॑प॒णिन्तु॑रण्ण्यति। क्षि॒प॒णिन्तु॑रण्ण्यति तुरण्ण्यति क्षिप॒णिङ्क्षिप॒- णिन्तु॑रण्ण्यति ग्ग्री॒वाया॑ङ्ग्री॒वाया॑न्तुरण्ण्यति क्षिप॒णिङ्क्षिप॒णिन्तु॑रण्ण्यति ग्ग्री॒वा-

---

1. अध्वनः स्कभ्भुवन्तः यहाँ सन्धि की दशा में लुड् मुदि जित्परे (वा. प्रा. ३.१३) के अनुसार विसर्जनीय का लोप होता है।

2. स्य एष च(वा.प्रा.३.१७) के अनुसार व्यञ्जन बाद में होने पर स्यः तथा एषः का विसर्जनीय लुप्त होता है।

याम्। तुरण्यति ग्ग्रीवायांङ्ग्रीवायान्तुरण्यति तुरण्यति ग्ग्रीवायाम्बद्धो बद्धो ग्ग्रीवायान्तुरण्यति तुरण्यति ग्ग्रीवायाम्बद्धः। ग्रीवायाम्बद्धो बद्धो ग्ग्रीवायाङ्ग्रीवायाम्बद्धोऽ अपिकक्क्षेपिकक्क्षे बद्धो ग्ग्रीवायाङ्ग्रीवायाम्बद्धोऽ अपिकक्क्षे[1]। बद्धोऽ अपिकक्क्षेपिकक्क्षे बद्धो बद्धोऽ अपिकक्क्षऽ आसन्न्यासन्न्यपिकक्क्षे बद्धो बद्धोऽ अपिकक्क्षऽ आसनि। अपिकक्क्षऽ आसन्न्यासन्न्यपिकक्क्षेपिकक्क्षऽ आसनि। अपिकक्क्षऽ इत्त्यपि कक्क्षे। आसनीत्त्यासनि॥ क्रतुन्दधिक्क्रा दधिक्क्राः क्क्रतुङ्क्रतुन्दधिक्क्राऽ अन्न्वनु दधिक्क्राः क्क्रतुङ्क्रतुन्दधिक्क्राऽ अनु। दधिक्क्राऽ अन्न्वनु दधिक्क्रा दधिक्क्राऽ अनु सꣳसनिष्ष्यदत्त्सꣳसनिस्स्यददनु दधिक्क्रा दधिक्क्राऽ अनु सꣳसनिष्ष्यदत्। दधिक्क्राऽ इति दधि क्राः। अनु सꣳसनिष्ष्यदत्त्सꣳसनिस्स्यद-दन्न्वनु सꣳसनिष्ष्यदत्त्पथाम्पथाꣳ सꣳसनिस्स्यददन्न्वनु सꣳसनिष्ष्यदत्त्पथाम्। सꣳसनिष्ष्यदत्त्पथाम्पथाꣳ सꣳसनिस्स्यदत्त्सꣳसनिष्ष्यदत्त्पथामङ्क्काꣳस्यङ्क्काꣳसि पथाꣳ सꣳसनिस्स्यदत्त्सꣳसनिष्ष्यदत्त्पथामङ्क्काꣳसि। सꣳसनिस्स्यददिति सम् सनिस्स्यदत्। पथामङ्क्काꣳस्यङ्क्काꣳसि पथाम्पथामङ्क्काꣳस्यन्न्वन्न्वङ्क्काꣳसि पथाम्प-थामङ्क्काꣳस्यनु। अङ्क्काꣳस्यन्न्वन्न्वङ्क्काꣳस्यङ्क्काꣳस्यन्न्वापनीफणदापनीफणदन्न्व-ङ्क्काꣳस्यङ्क्काꣳस्यन्न्वापनीफणत्[2]। अन्न्वापनीफणदापनीफणदन्न्वन्न्वापनीफण-त्त्स्वाहा स्वाहापनीफणदन्न्वन्न्वापनीफणत्त्स्वाहा। आपनीफणत्त्स्वाहा स्वाहा-पनीफणदापनीफणत्त्स्वाहा। आपनीफणदित्त्या पनीफणत्। स्वाहेति स्वाहा॥ १३॥

[1]. अपिकक्षे अपिकक्षे यहाँ एदोद्भ्यां पूर्वमकारः(वा.प्रा.४.६२) से एकार से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है। तौ चेदुदात्तावनुदात्ते स्वरितौ(वा.प्रा.४.६३) इस सूत्र से एकार स्वरित होता है। एदोद्भ्यामकारो लुगभिनिहितः(वा.प्रा.१.११४) से अभिनिहित स्वरित की प्राप्ति होती है।

[2]. वा. प्रा. ६.८. के अनुसार इस कण्डिका में अनु संसनिष्यदत् एवं अनु आपनीफणत् दोनों स्थानों में अनु अनुदात्त नहीं होता है।

उत स्म्मं स्म्मोतोत स्म्मास्यास्य स्म्मोतोत स्म्मास्य[1]। स्मास्यास्य स्म्म स्म्मास्य द्रवंतो द्रवंतोस्य स्म्म स्म्मास्य द्रवंतः। अस्य द्रवंतो द्रवंतोस्यास्य द्रवंतस्तुरण्ण्यतस्तुरण्ण्यतो द्रवंतोस्यास्य द्रवंतस्तुरण्ण्यतः। द्रवंतस्तुरण्ण्यतस्तुंरण्ण्यतो द्रवंतो द्रवंतस्तुरण्ण्यतः पुर्णम्पुर्णन्तुंरण्ण्यतो द्रवंतो द्रवंतस्तुरण्ण्यतः पुर्णम्। तुरण्ण्यतः पुर्णम्पुर्णन्तुंरण्ण्यतस्तुंरण्ण्यतः पुर्णन्न न पुर्णन्तुंरण्ण्यतस्तुंरण्ण्यतः पुर्णन्न। पुर्णन्न न पुर्णम्पुर्णन्न वेर्व्वेर्न्न पुर्णम्पुर्णन्न वेः[2]। न वेर्व्वेर्न्न न वेरन्न्वनु वेर्न्न न वेरनुं। व्वेरन्न्वनु वेर्व्वेरनुं वाति व्वात्यनु वेर्व्वेरनुं वाति। अनुं वाति व्वात्यन्न्वनुं वाति प्प्रगर्द्धिनं÷ प्प्रगर्द्धिनों व्वात्यन्न्वनुं वाति प्प्रगर्द्धिनं÷। व्वाति प्प्रगर्द्धिनं÷ प्प्रगर्द्धिनों व्वाति व्वाति प्प्रगर्द्धिनं÷। प्रगर्द्धिनऽ इतिं प्प्र गर्द्धिनं÷॥ श्ष्येनस्येव द्ध्रजंतो द्ध्रजंतः श्ष्येनस्येव श्ष्येनस्येव द्ध्रजंतोऽ अङ्कसमङ्कसन्ध्रजंतः श्ष्येनस्येव श्ष्येनस्येव द्ध्रजंतोऽ अङ्कसम्। श्ष्येनस्येवेतिं श्ष्येनस्यं इव। ध्रजंतोऽ अङ्कसमङ्कसन्ध्रजंतो द्ध्रजंतोऽ अङ्कसम्परि पर्य्यङ्कसन्ध्रजंतो द्ध्रजंतोऽ अङ्कसम्परिं। अङ्कसम्परि पर्य्यङ्कसमङ्कसम्परिं दधिक्काव्वण्णों दधिक्काव्वण्णः पर्य्यङ्कसमङ्कसम्परिं दधिक्काव्वण्णं÷। परिं दधिक्काव्वण्णों दधिक्काव्वण्णः परि परिं दधिक्काव्वण्णं÷ सह सह दंधिक्काव्वण्णः परि परिं दधिक्काव्वण्णं÷ सह। दधिक्काव्वण्णं÷ सह सह दंधिक्काव्वण्णों दधिक्काव्वण्णं÷ सहोर्ज्जोर्ज्जा सह दंधिक्काव्वण्णों दंधिक्काव्वण्णं÷ सहोर्ज्जा। दधिक्काव्वण्णऽ इतिं दधि क्काव्वण्णं÷। सहोर्ज्जोर्ज्जा सह सहोर्ज्जा तरिंत्रतस्तरिंत्रतऽ ऊर्ज्जा सह सहोर्ज्जा तरिंत्रतः। ऊर्ज्जा तरिंत्रतस्तरिंत्रतऽ ऊर्ज्जोर्ज्जा तरिंत्रतः स्वाहा स्वाहा तरिंत्रतऽ ऊर्ज्जोर्ज्जा तरिंत्रतः स्वाहा। तरिंत्रतः स्वाहा स्वाहा तरिंत्रतस्तरिंत्रतः स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१४॥

---

1. वा.मा.२.१६. के अनुसार यहाँ स्म पद अनुदात्त है।

2. अय मा –स –न –शब्देभ्यो विभाषाम्रेडिते यवौ – या. शि. १५७.

शन्नों नः शः शन्नों भवन्तु भवन्तु नः शः शन्नों भवन्तु। नो भवन्तु भवन्तु नो नो भवन्तु वाजिनों वाजिनों भवन्तु नो नो भवन्तु वाजिनः। भवन्तु वाजिनों वाजिनों भवन्तु भवन्तु वाजिनो हवेषु हवेषु वाजिनों भवन्तु भवन्तु वाजिनो हवेषु। वाजिनो हवेषु हवेषु वाजिनों वाजिनो हवेषु देवताता देवताता हवेषु वाजिनों वाजिनो हवेषु देवताता। हवेषु देवताता देवताता हवेषु हवेषु देवताता मितद्रवो मितद्रवो देवताता हवेषु हवेषु देवताता मितद्रवः। देवताता मितद्रवो मितद्रवो देवताता देवताता मितद्रवः स्वर्काः स्वर्का मितद्रवो देवताता देवताता मितद्रवः स्वर्काः। देवतातेति देव ताता[1]। मितद्रवः स्वर्काः स्वर्का मितद्रवो मितद्रवः स्वर्काः। मितद्रवऽ इति मित द्रवः। स्वर्काऽ इति सु अर्काः॥ जम्भयन्तोहिमहिञ्जम्भयन्तो जम्भयन्तोहिंवृकँवृकमहिञ्जम्भयन्तो जम्भयन्तोहिंवृकम्[2]। अहिंवृकँवृकमहिमहिंवृकः रक्षांसि रक्षांसि वृकमहिमहिंवृकः रक्षांसि। वृकः रक्षांसि रक्षांसि वृकँवृकः रक्षांसि सनेमि सनेमि रक्षांसि वृकँवृकः रक्षांसि सनेमि। रक्षांसि सनेमि सनेमि रक्षांसि रक्षांसि सनेम्म्यस्म्मदस्म्मत्सनेमि रक्षांसि रक्षांसि सनेम्म्यस्म्मत्। सनेम्म्यस्म्मदस्म्मत्सनेमि सनेम्म्यस्म्मद्युयवन्युयवन्नस्म्मत्सनेमि सनेम्म्यस्म्मद्युयवन्। अस्म्मद्युयवन्युयवन्नस्म्मदस्म्मद्युयवन्नमीवाऽ अमीवा सुयवन्नस्म्मदस्म्मद्युयवन्नमीवाः। सुयवन्नमीवाऽ अमीवा सुयवन्युयवन्नमीवाः। अमीवाऽ इत्यमीवाः॥१५॥

---

[1]. शस्त्वन्नातातिषु च(वा.प्रा.५.९) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण विहित है।

[2]. वा. प्रा. ४.६५. के अनुसार यहाँ जम्भ्यन्तः से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है।

ते नो॑ नु॒स्ते ते नो॒ऽ अर्व्व॒न्तोर्व्व॑न्तो नु॒स्ते ते नो॒ऽ अर्व्व॑न्तः[1]। नो॒ऽ अर्व्व॒न्तोर्व्व॑न्तो नो नो॒ऽ अर्व्व॑न्तो हवन॒श्श्रुतो॑ हवन॒श्श्रुतोर्व्व॑न्तो नो नो॒ऽ अर्व्व॑न्तो हवन॒श्श्रुत॑ः। अर्व्व॑न्तो हवन॒श्श्रुतो॑ हवन॒श्श्रुतोर्व्व॒न्तोर्व्व॑न्तो हवन॒श्श्रुतो॒ हव॒ꣳ हव॑ꣳ हवन॒श्श्रुतोर्व्व॒न्तोर्व्व॑न्तो हवन॒श्श्रुतो॒ हव॑म्। हु॒व॒न॒श्श्रुतो॒ हव॒ꣳ हव॑ꣳ हवन॒श्श्रुतो॑ हवन॒श्श्रुतो॒ हवँ॒व्विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॒ हव॑ꣳ हवन॒श्श्रुतो॑ हवन॒श्श्रुतो॒ हवँ॒व्विश्श्वे॑। हु॒व॒न॒श्श्रु॒त॒ऽ इति॑ हवन श्रुत॑ः। हवँ॒व्विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॒ हव॒ꣳ हवँ॒व्विश्श्वे॑ शृण्ण्वन्तु शृण्ण्वन्तु॒ व्विश्श्वे॒ हव॒ꣳ हवँ॒व्विश्श्वे॑ शृण्ण्वन्तु। व्विश्श्वे॑ शृण्ण्वन्तु शृण्ण्वन्तु॒ व्विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॑ शृण्ण्वन्तु व्वा॒जिनो॑ व्वा॒जिन॑ः शृण्ण्वन्तु॒ व्विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॑ शृण्ण्वन्तु व्वा॒जिन॑ः। शृ॒ण्ण्व॒न्तु॒ व्वा॒जिनो॑ व्वा॒जिन॑ः शृण्ण्वन्तु शृण्ण्वन्तु व्वा॒जिनो॑ मि॒तद्द्र॑वो मि॒तद्द्र॑वो व्वा॒जिन॑ः शृण्ण्वन्तु शृण्ण्वन्तु व्वा॒जिनो॑ मि॒तद्द्र॑वः। व्वा॒जिनो॑ मि॒तद्द्र॑वो मि॒तद्द्र॑वो व्वा॒जिनो॑ व्वा॒जिनो॑ मि॒तद्द्र॑वः। मि॒तद्द्र॑व॒ऽ इति॑ मि॒त द्र॑वः॥ स॒ह॒स्र॒सा मे॒धसा॑ता मे॒धसा॑ता सहस्र॒साः स॑हस्र॒सा मे॒धसा॑ता सनि॒ष्ष्यव॑ः सनि॒ष्ष्यवो॑ मे॒धसा॑ता सहस्र॒साः स॑हस्र॒सा मे॒धसा॑ता सनि॒ष्ष्यव॑ः। स॒ह॒स्र॒साऽ इति॑ सहस्र॒ साः। मे॒धसा॑ता सनि॒ष्ष्यव॑ः सनि॒ष्ष्यवो॑ मे॒धसा॑ता मे॒धसा॑ता सनि॒ष्ष्यवो॑ म॒हो म॒हः स॑नि॒ष्ष्यवो॑ मे॒धसा॑ता मे॒धसा॑ता सनि॒ष्ष्यवो॑ म॒हः। मे॒धसा॒तेति॑ मे॒ध सा॑ता। स॒नि॒ष्ष्यवो॑ म॒हो म॒हः स॑नि॒ष्ष्यव॑ः सनि॒ष्ष्यवो॑ म॒हो ये ये म॒हः स॑नि॒ष्ष्यव॑ः सनि॒ष्ष्यवो॑ म॒हो ये। म॒हो ये ये म॒हो म॒हो ये धन॒न्धनँ॒य्ये म॒हो म॒हो ये धन॑म्। ये धन॒न्धनँ॒य्ये ये धन॑ꣳ समि॒थेषु॑ समि॒थेषु॒ धनँ॒य्ये ये धन॑ꣳ समि॒थेषु॑। धन॑ꣳ समि॒थेषु॑ समि॒थेषु॒ धन॒न्धन॑ꣳ समि॒थेषु॑ जब्भ्रि॒रे ज॑ब्भ्रि॒रे स॑मि॒थेषु॒ धन॒न्धन॑ꣳ समि॒थेषु॑ जब्भ्रि॒रे। स॒मि॒थेषु॑ जब्भ्रि॒रे ज॑ब्भ्रि॒रे स॑मि॒थेषु॑ समि॒थेषु॑ जब्भ्रि॒रे। स॒मि॒थेष्ष्विति॑ सम् इ॒थेषु॑। ज॒ब्भ्रि॒रऽ इति॑ जब्भ्रि॒रे॥ १६॥

[1]. नो अर्वन्तः यहाँ वा.प्रा.४.८२. के अनुसार ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

ब्वाजेंवाजेवतावत् ब्वाजेंवाजे ब्वाजेंवाजेवत ब्वाजिनो ब्वाजिनोवत् ब्वाजेंवाजे ब्वाजेंवाजेवत ब्वाजिनः। ब्वाजेंवाजऽ इति वाजें ब्वाजे। अवत् ब्वाजिनो ब्वाजिनो-वतावत् ब्वाजिनो नो नो ब्वाजिनोवतावत् ब्वाजिनो नः। ब्वाजिनो नो नो ब्वाजिनो ब्वाजिनो नो धनेंषु धनेंषु नो ब्वाजिनो ब्वाजिनो नो धनेंषु। नो धनेंषु धनेंषु नो नो धनेंषु ब्विप्रा ब्विप्रा धनेंषु नो नो धनेंषु ब्विप्राः। धनेंषु ब्विप्रा ब्विप्रा धनेंषु धनेंषु ब्विप्राऽ अमृताऽ अमृता ब्विप्रा धनेंषु धनेंषु ब्विप्राऽ अमृताः। ब्विप्राऽ अमृताऽ अमृता ब्विप्रा ब्विप्राऽ अमृताऽ ऋतज्ज्ञाऽ ऋतज्ज्ञाऽ अमृता ब्विप्रा ब्विप्राऽ अमृताऽ ऋतज्ज्ञाः। अमृताऽ ऋतज्ज्ञाऽ ऋतज्ज्ञाऽ अमृताऽ अमृताऽ ऋतज्ज्ञाः। ऋतज्ज्ञाऽ इत्यृत ज्ञाः॥ अस्य मद्धो मद्धोस्यास्य मद्धंः पिबत पिबत् मद्धो-स्यास्य मद्धंः पिबत[1]। मद्धंः पिबत पिबत् मद्धो मद्धंः पिबत मादयंद्ध-म्मादयंद्धम्पिबत् मद्धो मद्धंः पिबत मादयंद्धम्। पिबत् मादयंद्धम्मादयंद्धम्पिबत पिबत मादयंद्धन्तृप्पास्तृप्पा मादयंद्धम्पिबत पिबत मादयंद्धन्तृप्पाः[2]। मादयं-द्धन्तृप्पास्तृप्पा मादयंद्धम्मादयंद्धन्तृप्पा य्यांत य्यात तृप्पा मादयंद्धम्मादयंद्धन्तृ-प्पा य्यांत। तृप्पा य्यांत य्यात तृप्पास्तृप्पा य्यांत पथिभिंः पथिभिंर्य्यात तृप्पास्तृप्पा य्यांत पथिभिंः। य्यात पथिभिंः पथिभिंर्य्यात य्यात पथिभिंर्द्देवयानैंर्द्देवयानैंः पथि-भिंर्य्यात य्यात पथिभिंर्द्देवयानैंः। पथिभिंर्द्देवयानैंर्द्देवयानैंः पथिभिंः पथिभिंर्द्देव-यानैंः। पथिभिरितिं पथि भिंः। देवयानैरितिं देव यानैंः॥१७॥

आ मा मा मा ब्वाजंस्य ब्वाजंस्य मा मा ब्वाजंस्य[3]। मा ब्वाजंस्य ब्वाजंस्य मा मा ब्वाजंस्य प्प्रसवः प्प्रंसवो ब्वाजंस्य मा मा ब्वाजंस्य प्प्रसवः। ब्वाजंस्य

---

[1]. वा. प्रा. २.६२. के अनुसार यहाँ मध्वः परे रहने के कारण अस्य पद अन्तोदात्त है।

[2]. तृप्पास्तृप्पाः यहाँ ऊष्मान्तस्याभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) इस सूत्र से तकार का द्वित्व प्राप्त है, परन्तु ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११३) से निषेध है। वा.प्रा. में इस सूत्र का उदाहरण अनिष्कृतः है, जबकि ज्यो. वृ. में अनिष्टृतः दिया गया है।

[3]. मा आ यहाँ उदात्तवानुदात्तः(वा.प्रा.४.१३४) के अनुसार आ उदात्त एकीभाव में मा भी उदात्त होता है।

प्प्रसुवः प्प्रसुवो व्वाजस्य व्वाजस्य प्प्रसुवो जगम्म्याज्जगम्म्यात्प्रसुवो व्वाजस्य व्वाजस्य प्प्रसुवो जगम्म्यात्। प्रसुवो जगम्म्याज्जगम्म्यात्प्रसुवः प्प्रसुवो जगम्म्यादेमेऽ इमेऽ आ जगम्म्यात्प्रसुवः प्प्रसुवो जगम्म्यादेमे। प्रसुवऽ इति प्प्र सुवः। जगम्म्यादेमेऽ इमेऽ आ जगम्म्याज्जगम्म्यादेमे द्यावापृथिवी द्यावापृथिवीऽ इमेऽ आ जगम्म्याज्जगम्म्यादेमे द्यावापृथिवी। एमे। इमे द्यावापृथिवी द्यावापृथिवीऽ इमेऽ इमे द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे व्विश्वरूपे द्यावापृथिवीऽ इमेऽ इमे द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे। इमेऽ इतीमे। द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे व्विश्वरूपे द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे। द्यावापृथिवीऽ इति द्यावापृथिवी। व्विश्वरूपेऽ इति विश्व रूपे॥ आ मा मा मा गन्ताङ्गन्ताम्मा मा गन्ताम्। मा गन्ताङ्गन्ताम्मा मा गन्ताम्पितरा पितरा गन्ताम्मा मा गन्ताम्पितरा। गन्ताम्पितरा पितरा गन्ताङ्गन्ताम्पितरा मातरा मातरा पितरा गन्ताङ्गन्ताम्पितरा मातरा। पितरा मातरा मातरा पितरा पितरा मातरा च च मातरा पितरा पितरा मातरा च। मातरा च च मातरा मातरा चा मा मा च मातरा मातरा चा मा। चा मा मा च चा मा सोमः सोमो मा च चा मा सोमः। आ मा। मा सोमः सोमो मा मा सोमोऽ अमृतत्त्वेनामृतत्त्वेन सोमो मा मा सोमोऽ अमृतत्त्वेन। सोमोऽ अमृतत्त्वेनामृतत्त्वेन सोमः सोमोऽ अमृतत्त्वेन गम्म्याद् गम्म्यादमृतत्त्वेन सोमः सोमोऽ अमृतत्त्वेन गम्म्यात्। अमृतत्त्वेन गम्म्याद् गम्म्यादमृतत्त्वेनामृतत्त्वेन गम्म्यात्। अमृतत्त्वेनेत्त्यमृत त्वेन। गम्म्यादिति गम्म्यात्॥ ससूवाꣳसो निमृजाना निमृजानाः ससूवाꣳसः ससूवाꣳसो निमृजानाः। ससूवाꣳसऽ इति ससु व्वाꣳसः[1]। निमृजानाऽ इति नि मृजानाः॥१८॥

---

[1]. वांसौ च भूतकाले स्वरेण ह्रस्वादनुषि (वा. प्रा. ५.११) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

आपये स्वाहा स्वाहापयऽ आपये स्वाहा स्वापयें स्वापये स्वाहापयऽ आपये स्वाहा स्वापयें। स्वाहा स्वापयें स्वापये स्वाहा स्वाहा स्वापयेंपिजायापि- जायं स्वापये स्वाहा स्वाहा स्वापयेंपिजायं। स्वापयेंपिजायापिजायं स्वापयें स्वापयेंपिजाय क्रतवे क्रतवेपिजायं स्वापयें स्वापयेंपिजाय क्रतवे। स्वापयऽ इति सु आपयें। अपिजाय क्रतवे क्रतवेपिजायापिजाय क्रतवे व्रसंवे व्रसंवे क्रतवेपि- जायापिजाय क्रतवे व्रसंवे। अपिजायेत्यंपि जायं। क्रतवे व्रसंवे व्रसंवे क्रतवे क्रतवे व्रसंवेहर्प्पतयेहःपतये व्रसंवे क्रतवे क्रतवे व्रसंवेहर्प्पतये[1]। व्रसंवेहर्प्पतये- हःपतये व्रसंवे व्रसंवेहर्प्पतयेह्वेह्वेंहःपतये व्रसंवे व्रसंवेर्हर्प्पतयेह्वें। अहर्प्पतयेह्वे- ह्वेंहःपतयेहर्प्पतयेह्वे मुग्ग्धायं मुग्ग्धायाह्वेंहःपतयेहर्प्पतयेह्वे मुग्ग्धायं। अहःपत- यऽ इत्यहः पतये। अह्वें मुग्ग्धायं मुग्ग्धायाह्वेह्वें मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं मुग्ग्धायाह्वेह्वें मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं। मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं व्वैनङ्शिनायं व्वैनङ्शिनायं मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं व्वैनङ्- शिनायं। मुग्ग्धायं व्वैनङ्शिनायं व्वैनङ्शिनायं मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं व्वैनङ्शिनायं व्विनङ्शिनें व्विनङ्शिनें व्वैनङ्शिनायं मुग्ग्धायं मुग्ग्धायं व्वैनङ्शिनायं व्विनङ्शि- नें। व्वैनङ्शिनायं व्विनङ्शिनें व्विनङ्शिनें व्वैनङ्शिनायं व्वैनङ्शिनायं व्विनङ्शि- नंऽ आन्त्यायनायान्त्यायनायं व्विनङ्शिनें व्वैनङ्शिनायं व्वैनङ्शिनायं व्विनङ्- शिनंऽ आन्त्यायनायं। व्विनङ्शिनंऽ आन्त्यायनायान्त्यायनायं व्विनङ्शिनें व्विनङ्शिनंऽ आन्त्यायनायान्त्यायान्त्यायान्त्यायनायं व्विनङ्शिनें व्विनङ्शिनंऽ आन्त्यायनायान्त्याय। व्विनङ्शिनऽ इति वि नङ्शिनें। आन्त्यायनायान्त्या- यान्त्यायान्त्यायनायान्त्यायनायान्त्याय भौवनायं भौवनायान्त्यायान्त्यायना- यान्त्यायनायान्त्याय भौवनायं। आन्त्यायनायेत्यान्त्य आयनायं। अन्त्याय

[1]. अहः पतौ रेफम् (वा. प्रा. ३.३९) पति परे रहने पर अहः का विसर्जनीय रेफ होता है।

भौवनायं भौवनायान्त्यायान्त्याय भौवनाय भुवनस्य भुवनस्य भौवनायान्त्या-यान्त्याय भौवनाय भुवनस्य। भौवनाय भुवनस्य भुवनस्य भौवनायं भौवनाय भुवनस्य पतये पतये भुवनस्य भौवनायं भौवनाय भुवनस्य पतये। भुवनस्य पतये पतये भुवनस्य भुवनस्य पतयेधिपतयेधिपतये पतये भुवनस्य भुवनस्य पतयेधिपतये। पतयेधिपतयेधिपतये पतये पतयेधिपतये। अधिपतयऽ इत्यधि पतये॥१९॥

आयुर्य्यज्ञेन यज्ञेनायुरायुर्य्यज्ञेन कल्प्पताङ्कल्प्पताँय्यज्ञेनायुरायु-र्य्यज्ञेन कल्प्पताम्[1]। यज्ञेन कल्प्पताङ्कल्प्पताँय्यज्ञेन यज्ञेन कल्प्पता-म्प्राणः प्प्राणः कल्प्पताँय्यज्ञेन यज्ञेन कल्प्पताम्प्राणः। कल्प्पताम्प्राणः प्प्राणः कल्प्पताङ्कल्प्पताम्प्राणश्चक्षुश्चक्षुः प्प्राणः कल्प्पताङ्कल्प्पताम्प्राण-श्चक्षुः[2]। प्राणश्चक्षुश्चक्षुः प्प्राणः प्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रꣳ श्रोत्रञ्चक्षुः प्प्राणः प्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रम्[3]। चक्षुः श्रोत्रꣳ श्रोत्रञ्चक्षुश्चक्षुः श्रोत्रम्पृष्टम्पृष्टꣳ श्रोत्रञ्चक्षुश्चक्षुः श्रोत्रम्पृष्टम्। श्रोत्रम्पृष्टम्पृष्टꣳ श्रोत्रꣳ श्रोत्रम्पृष्टँय्यज्ञो यज्ञः पृष्टꣳ श्रोत्रꣳ श्रोत्रम्पृष्टँय्यज्ञः। पृष्टँय्यज्ञो यज्ञः पृष्टम्पृष्टँय्यज्ञो यज्ञेन यज्ञेन यज्ञः पृष्टम्पृष्टँय्यज्ञो यज्ञेन। यज्ञो यज्ञेन यज्ञेन यज्ञो यज्ञो यज्ञेन कल्प्पताङ्कल्प्पताँय्यज्ञेन यज्ञो यज्ञो यज्ञेन कल्प्पताम्। यज्ञेन कल्प्पताङ्कल्प्पताँय्यज्ञेन यज्ञेन कल्प्पताम्। कल्प्पतामिति कल्प्पताम्॥ प्रजापतेः प्प्रजाः प्प्रजाः प्प्रजापतेः प्प्रजापतेः प्प्रजाऽ अभूमा-भूम प्प्रजाः प्प्रजापतेः प्प्रजापतेः प्प्रजाऽ अभूम। प्रजापतेरिति प्प्रजा पतेः।

---

1. कल्प्पताम् यहाँ वा.प्रा.४.१०३. के अनुसार पकार का द्वित्व होता है।

2. असमाने (वा. प्रा. ४.१७४) भिन्न पदार्थ से संबद्ध पुनरुक्त पद में संक्रम होता है।

3. प्राग्निभ्यामनिन्धौ प्रक्षेपे(वा.प्रा.५.३३) इस सूत्र के अनुसार प्राणः इस पद का पृथक्करण विहित नहीं है।

प्रजाऽ अभूमाभूम प्प्रजाः प्प्रजाऽ अभूम स्वः स्वरभूम प्प्रजाः प्प्रजाऽ अभूम स्वः। प्रजाऽ इति प्प्र जाः। अभूम स्वः स्वरभूमाभूम स्वर्द्देवा देवाः स्वरभूमाभूम स्वर्द्देवाः। स्वर्द्देवा देवाः स्वः स्वर्द्देवाऽ अगन्मागन्म देवाः स्वः स्वर्द्देवाऽ अगन्म। देवाऽ अगन्मागन्म देवा देवाऽ अगन्मामृताऽ अमृताऽ अगन्म देवा देवाऽ अगन्मामृताः। अगन्मामृताऽ अमृताऽ अगन्मागन्मामृताऽ अभूमाभूमामृताऽ अगन्मागन्मामृताऽ अभूम। अमृताऽ अभूमाभूमामृताऽ अमृताऽ अभूम। अभूमेत्यभूम॥२०॥

अस्म्मे वो वोस्म्मेऽ अस्म्मे वोऽ अस्त्वस्तु वोस्म्मेऽ अस्म्मे वोऽ अस्तु[1]। अस्म्मेऽ इत्यस्म्मे। व्वोऽ अस्त्वस्तु वो वोऽ अस्त्विन्द्रियमिन्द्रियमस्तु वो वोऽ अस्त्विन्द्रियम्। अस्त्विन्द्रियमिन्द्रियमस्त्वस्त्विन्द्रियमस्म्मेऽ अस्म्मेऽ इन्द्रियमस्त्वस्त्विन्द्रियमस्म्मे। इन्द्रियमस्म्मेऽ अस्म्मेऽ इन्द्रियमिन्द्रियमस्म्मे नृम्म्णन्नृम्म्णमस्म्मेऽ इन्द्रियमिन्द्रियमस्म्मे नृम्म्णम्। अस्म्मे नृम्म्णन्नृम्म्णमस्म्मेऽ अस्म्मे नृम्म्णमुतोत नृम्म्णमस्म्मेऽ अस्म्मे नृम्म्णमुत। अस्म्मेऽ इत्यस्म्मे। नृम्म्णमुतोत नृम्म्णन्नृम्म्णमुत क्क्रतुः क्क्रतुरुत नृम्म्णन्नृम्म्णमुत क्क्रतुः। उत क्क्रतुः क्क्रतुरुतोत क्क्रतुरस्म्मेऽ अस्म्मे क्क्रतुरुतोत क्क्रतुरस्म्मे। क्क्रतुरस्म्मेऽ अस्म्मे क्क्रतुः क्क्रतुरस्म्मे व्वर्चाँꣳसि व्वर्चाँꣳस्यस्म्मे क्क्रतुः क्क्रतुरस्म्मे व्वर्चाँꣳसि। अस्म्मे व्वर्चाँꣳसि व्वर्चाँꣳस्यस्म्मेऽ अस्म्मे व्वर्चाँꣳसि सन्तु सन्तु व्वर्चाँꣳस्यस्म्मेऽ अस्म्मे व्वर्चाँꣳसि सन्तु। अस्म्मेऽ इत्यस्म्मे। व्वर्चाँꣳसि सन्तु सन्तु व्वर्चाँꣳसि व्वर्चाँꣳसि सन्तु वो वः सन्तु व्वर्चाँꣳसि व्वर्चाँꣳसि सन्तु वः। सन्तु वो वः सन्तु सन्तु वः। व्वऽ इति वः॥ नमो मात्रे मात्रे नमो नमो मात्रे पृथिव्यै पृथिव्यै मात्रे

[1]. वा.प्रा.४.८८. के अनुसार स्वर बाद में होने पर प्रगृह्य पद प्रकृतिभाव से रहता है। वा.प्रा.१.९६. के अनुसार अस्मे पद प्रगृह्यसंज्ञक है।

नमो नमो मात्रे पृथिव्यै। मात्रे पृथिव्यै पृथिव्यै मात्रे मात्रे पृथिव्यै नमो नमः पृथिव्यै मात्रे मात्रे पृथिव्यै नमः। पृथिव्यै नमो नमः पृथिव्यै पृथिव्यै नमो मात्रे मात्रे नमः पृथिव्यै पृथिव्यै नमो मात्रे। नमो मात्रे मात्रे नमो नमो मात्रे पृथिव्यै पृथिव्यै मात्रे नमो नमो मात्रे पृथिव्यै। मात्रे पृथिव्यै पृथिव्यै मात्रे मात्रे पृथिव्याऽ इयमियम्पृथिव्यै मात्रे मात्रे पृथिव्याऽ इयम्। पृथिव्याऽ इयमियम्पृथिव्यै पृथिव्याऽ इयन्तें तऽ इयम्पृथिव्यै पृथिव्याऽ इयन्तें। इयन्तें तऽ इयमियन्ते राड्राट् तंऽ इयमियन्ते राट्। ते राड्राट् तें ते राड्युन्ता यन्ता राट् तें ते राड्युन्ता। राड्युन्ता यन्ता राड्राड्युन्तास्यसि यन्ता राड्राड्युन्तासि। यन्तास्यसि यन्ता यन्तासि यमनो यमनोसि यन्ता यन्तासि यमनः। असि यमनो यमनोस्यसि यमनो ध्रुवो ध्रुवो यमनोस्यसि यमनो ध्रुवः। यमनो ध्रुवो ध्रुवो यमनो यमनो ध्रुवो धरुणो धरुणो ध्रुवो यमनो यमनो ध्रुवो धरुणः। ध्रुवो धरुणो धरुणो ध्रुवो ध्रुवो धरुणः। धरुणऽ इति धरुणः॥ कृष्यै त्वा त्वा कृष्यै कृष्यै त्वा क्षेमाय क्षेमाय त्वा कृष्यै कृष्यै त्वा क्षेमाय। त्वा क्षेमाय क्षेमाय त्वा त्वा क्षेमाय रुय्यै रुय्यै क्षेमाय त्वा त्वा क्षेमाय रुय्यै[1]। क्षेमाय रुय्यै रुय्यै क्षेमाय क्षेमाय रुय्यै पोषाय पोषाय रुय्यै क्षेमाय क्षेमाय रुय्यै पोषाय। रुय्यै पोषाय पोषाय रुय्यै रुय्यै पोषाय। पोषायेति पोषाय॥२१॥

वाजस्येममिमँवाजस्य वाजस्येमम्प्रसवः प्प्रसवऽ इमँवाजस्य वाजस्येमम्प्रसवः। इमम्प्रसवः प्प्रसवऽ इममिमम्प्रसवः सुषुवे सुसुवे प्प्रसवऽ इममिमम्प्रसवः सुषुवे। प्रसवः सुषुवे सुसुवे प्प्रसवः प्प्रसवः सुषुवेग्ग्रेग्ग्रे सुसुवे प्प्रसवः प्प्रसवः सुषुवेग्ग्रे। प्रसवऽ इति प्प्र सवः। सुषुवेग्ग्रेग्ग्रे सुसुवे सुषुवेग्ग्रे सोमः

[1]. वा. प्रा. ४.१५३. के अनुसार रय्यै पद दो यकार वाला है।

सोममग्ग्रें सुसुवे सुषुवेग्ग्रे सोमम्[2]। सुसुवऽ इति सुसुवे। अग्ग्रे सोमꣳ सोमम-ग्ग्रेग्ग्रे सोमꣳ राजानꣳ राजानꣳ सोममग्ग्रेग्ग्रे सोमꣳ राजानम्। सोमꣳ राजा-नꣳ राजानꣳ सोमꣳ सोमꣳ राजानमोषधीष्ष्वोषधीषु राजानꣳ सोमꣳ सोमꣳ राजानमोषधीषु। राजानमोषधीष्ष्वोषधीषु राजानꣳ राजानमोषधीष्ष्वप्प्स्वु-प्प्स्वोषधीषु राजानꣳ राजानमोषधीष्ष्वप्प्सु। ओषधीष्ष्वस्वप्प्स्वोषधीष्ष्वोष-धीष्ष्वप्प्सु। अप्प्स्वित्त्यप् सु॥ ताऽ अस्म्मब्भ्यमस्म्मब्भ्यन्तास्ताऽ अस्म्म-ब्भ्यम्मधुमतीर्म्मधुमतीरस्म्मब्भ्यन्तास्ताऽ अस्म्मब्भ्यम्मधुमतीः। अस्म्म-ब्भ्यम्मधुमतीर्म्मधुमतीरस्म्मब्भ्यमस्म्मब्भ्यम्मधुमतीर्ब्भवन्तु भवन्तु मधुमती-रस्म्मब्भ्यमस्म्मब्भ्यम्मधुमतीर्ब्भवन्तु। मधुमतीर्ब्भवन्तु भवन्तु मधुमतीर्म्मधु-मतीर्ब्भवन्तु व्वयँव्वयम्भवन्तु मधुमतीर्म्मधुमतीर्ब्भवन्तु व्वयम्। मधुमतीरिति मधु मतीः। भवन्तु व्वयँव्वयम्भवन्तु भवन्तु व्वयꣳ राष्ट्रे राष्ट्रे व्वयम्भवन्तु भवन्तु व्वयꣳ राष्ट्रे। व्वयꣳ राष्ट्रे राष्ट्रे व्वयँव्वयꣳ राष्ट्रे जागृयाम जागृयाम राष्ट्रे व्वयँव्वयꣳ राष्ट्रे जागृयाम। राष्ट्रे जागृयाम जागृयाम राष्ट्रे राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः पुरोहिता जागृयाम राष्ट्रे राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः। जागृयाम पुरोहिताः पुरोहिता जागृयाम जागृयाम पुरोहिताः स्वाहा स्वाहा पुरोहिता जागृयाम जागृयाम पुरोहिताः स्वाहा। पुरोहिताः स्वाहा स्वाहा पुरोहिताः पुरोहिताः स्वाहा। पुरोहिताऽ इति पुरः हिताः। स्वाहेति स्वाहा॥२२॥

व्वाजस्येमामिमाँव्वाजस्य व्वाजस्येमाम्प्रसवः प्प्रसवऽ इमाँव्वाजस्य व्वाज-स्येमाम्प्रसवः। इमाम्प्रसवः प्प्रसवऽ इमामिमाम्प्रसवः शिश्रिये शिश्रिये प्प्रसु-वऽ इमामिमाम्प्रसवः शिश्रिये। प्रसवः शिश्रिये शिश्रिये प्प्रसवः प्प्रसवः शिश्रिये दिवन्दिवꣳ शिश्रिये प्प्रसवः प्प्रसवः शिश्रिये दिवम्। प्रसवऽ इति प्प्र

[2]. सुषुवे अग्रे यहाँ वा. प्रा. ४.६५. के अनुसार अकार का अभिनिधान होता है।

सुवः। शिश्रिये दिवन्दिवंꣳ शिश्रिये शिश्रिये दिवंमिमेमा दिवंꣳ शिश्रिये शिश्रिये दिवंमिमा[1]। दिवंमिमेमा दिवन्दिवंमिमा च चेमा दिवन्दिवंमिमा च। इमा च चेमेमा च विश्वा विश्वा चेमेमा च विश्वा।[2] च विश्वा विश्वा च च विश्वा भुवनानि भुवनानि विश्वा च च विश्वा भुवनानि। विश्वा भुवनानि भुवनानि विश्वा विश्वा भुवनानि सम्म्राट्ट् सम्म्राड्ड् भुवनानि विश्वा विश्वा भुवनानि सम्म्राट् । भुवनानि सम्म्राट्ट् सम्म्राड्ड् भुवनानि भुवनानि सम्म्राट्। सम्म्राडिति सम् राट्॥ अदित्त्सन्तन्दापयति दापयत्त्यदित्त्सन्तमदित्त्सन्तन्दापयति प्प्रजानन्प्प्रजानन्दापयत्त्यदित्त्सन्तमदित्त्सन्तन्दापयति प्प्रजानन्। दापयति प्प्रजानन्प्प्रजानन्दापयति दापयति प्प्रजानन्त्स स प्प्रजानन्दापयति दापयति प्प्रजानन्त्सः। प्रजानन्त्स स प्प्रजानन्प्प्रजानन्त्स नो नः स प्प्रजानन्प्प्रजानन्त्स नः। प्रजानन्निति प्प्र जानन्। स नो नः स स नो रयिꣳ रयिन्नः स स नो रयिम्। नो रयिꣳ रयिन्नो नो रयिꣳ सर्व्ववीरꣳ सर्व्ववीरꣳ रयिन्नो नो रयिꣳ सर्व्ववीरम्। रयिꣳ सर्व्ववीरꣳ सर्व्ववीरꣳ रयिꣳ रयिꣳ सर्व्ववीरन्नि नि सर्व्ववीरꣳ रयिꣳ रयिꣳ सर्व्ववीरन्नि । सर्व्ववीरन्नि नि सर्व्ववीरꣳ सर्व्ववीरन्नि यच्छतु यच्छतु नि सर्व्ववीरꣳ सर्व्ववीरन्नि यच्छतु। सर्व्ववीरमिति सर्व्व व्वीरम्। नि यच्छतु यच्छतु नि नि यच्छतु स्वाहा स्वाहा यच्छतु नि नि यच्छतु स्वाहा। यच्छतु स्वाहा स्वाहा यच्छतु यच्छतु स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२३॥

व्वाजस्य नु नु व्वाजस्य व्वाजस्य नु प्प्रसवः प्प्रसवो नु व्वाजस्य व्वाजस्य नु प्प्रसवः। नु प्प्रसवः प्प्रसवो नु नु प्प्रसवऽ आ बभूव बभूवा प्प्रसवो नु नु प्प्रसवऽ आ बभूव। प्रसवऽ आ बभूव बभूवा प्प्रसवः प्प्रसवऽ आ बभूवेमेमा बभूवा प्प्रस-

---

[1]. वा.प्रा.४.२९. के अनुसार यहाँ इमा पद स्वरान्त है।

[2]. वा.प्रा.४.२७. में उल्लिखित न होने से यहाँ विश्वा पद स्वरान्त है।

व॒ः प्प्र॑स॒वऽ आ ब॑भूवे॒मा। प्र॒स॒वऽ इति॑ प्प्र स॒वः। आ ब॑भूव। ब॒भू॒वे॒मेमा ब॑भूव बभूवे॒मा च॑ चे॒मा ब॑भूव बभूवे॒मा च॑। इ॒मा च॑ चे॒मेमा च॒ व्विश्श्वा॒ व्विश्श्वा॑ चे॒मेमा च॒ व्विश्श्वा॑[1]। च॒ व्विश्श्वा॒ व्विश्श्वा॑ च च॒ व्विश्श्वा॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नानि॒ व्विश्श्वा॑ च च॒ व्विश्श्वा॒ भुव॑नानि। व्विश्श्वा॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नानि॒ व्विश्श्वा॒ व्विश्श्वा॒ भुव॑नानि स॒र्व्वत॑ः स॒र्व्वतो॒ भुव॑-नानि॒ व्विश्श्वा॒ व्विश्श्वा॒ भुव॑नानि स॒र्व्वत॑ः। भुव॑नानि स॒र्व्वत॑ः स॒र्व्वतो॒ भुव॑नानि॒ भुव॑ना-नि स॒र्व्वत॑ः। स॒र्व्वत॒ऽ इति॑ स॒र्व्वत॑ः॥ सनै॑मि॒ राजा॒ राजा॒ सनै॑मि॒ सनै॑मि॒ राजा॒ परि॒ परि॒ राजा॒ सनै॑मि॒ सनै॑मि॒ राजा॒ परि॑। राजा॒ परि॒ परि॒ राजा॒ राजा॒ परि॑ याति याति॒ परि॒ राजा॒ राजा॒ परि॑ याति। परि॑ याति याति॒ परि॒ परि॑ याति व्वि॒द्वान्व्वि॒द्वान्न्या॑ति॒ परि॒ परि॑ याति व्वि॒द्वान्। या॒ति॒ व्वि॒द्वान्व्वि॒द्वान्न्या॑ति याति व्वि॒द्वान्न्प्र॒जाम्प्र॒जाँ-व्वि॒द्वान्न्या॑ति याति व्वि॒द्वान्न्प्र॒जाम्। व्वि॒द्वान्न्प्र॒जाम्प्र॒जाँव्वि॒द्वान्व्वि॒द्वान्न्प्र॒जाम्पुष्टि॒-म्पुष्टि॑म्प्र॒जाँव्वि॒द्वान्व्वि॒द्वान्न्प्र॒जाम्पुष्टि॑म्। प्र॒जाम्पुष्टि॒म्पुष्टि॑म्प्र॒जाम्प्र॒जाम्पुष्टिँव्व॒र्द्धय॑-मानो व्व॒र्द्धय॑मान॒ꣳ पुष्टि॑म्प्र॒जाम्प्र॒जाम्पुष्टिँव्व॒र्द्धय॑मानꣳ। प्र॒जामिति॑ प्प्र॒ जाम्। पुष्टिँव्व॒र्द्धय॑मानो व्व॒र्द्धय॑मान॒ꣳ पुष्टि॒म्पुष्टिँव्व॒र्द्धय॑मानोऽ अ॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे व्व॒र्द्धय॑मान॒ꣳ पुष्टि॒म्पुष्टिँव्व॒र्द्धय॑मानोऽ अ॒स्म्मे[2]। व्व॒र्द्धय॑मानोऽ अ॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे व्व॒र्द्धय॑मानो व्व॒र्द्धय॑मानोऽ अ॒स्म्मे स्वाहा॒ स्वाहा॒स्म्मे व्व॒र्द्धय॑मानो व्व॒र्द्धय॑मानोऽ अ॒स्म्मे स्वाहा॑। अ॒स्म्मे स्वाहा॒ स्वाहा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे स्वाहा॑। अ॒स्म्मेऽ इत्य॒स्म्मे। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥२४॥

सोम॒ꣳ राजा॑न॒ꣳ राजा॑न॒ꣳ सोम॒ꣳ सोम॒ꣳ राजा॑न॒मव॒सेव॑से॒ राजा॑न॒ꣳ सोम॒ꣳ सोम॒ꣳ राजा॑न॒मव॑से। राजा॑न॒मव॒सेव॑से॒ राजा॑न॒ꣳ राजा॑न॒मव॑से॒ग्ग्निम॒ग्ग्नि-मव॑से॒ राजा॑न॒ꣳ राजा॑न॒मव॑से॒ग्ग्निम्। अव॑से॒ग्ग्निम॒ग्ग्निमव॒सेव॑से॒ग्ग्निम॒न्न्वार॑भामहे॒-

---

[1]. वा. प्रा. ४.२९. के अनुसार यहाँ इमा पद स्वरान्त है।

[2]. चमू अस्मे त्वे (वा. प्रा. १.९६) सूत्रोक्त पद प्रगृह्य होते हैं। प्रगृह्य पद स्वर परे रहते प्रकृतिभाव से रहते हैं।

न्वार॑भामहे॒ग्निमव॒सेव॑से॒ग्निम॒न्वार॑भामहे[3]। अ॒ग्निम॒न्वार॑भामहे॒न्वार॑भामहे॒-ग्निम॒ग्निम॒न्वार॑भामहे। अ॒न्वार॑भामह॒ऽ इत्य॑नु आर॑भामहे॥ आ॒दि॒त्यान्विष्णु॑ँ-ब्विष्णु॑मादि॒त्याना॑दि॒त्यान्विष्णु॒ꣳ सूर्य्य॒ꣳ सूर्य्य॒ँब्विष्णु॑मादि॒त्याना॑दि॒त्यान्वि-ष्णु॒ꣳ सूर्य्य॑म्। ब्विष्णु॒ꣳ सूर्य्य॒ꣳ सूर्य्य॒ँब्विष्णु॑ँब्विष्णु॒ꣳ सूर्य्य॑म्ब्र॒ह्माण॑म्ब्र॒ह्माण॒ꣳ सूर्य्य॒ँब्विष्णु॑ँब्विष्णु॒ꣳ सूर्य्य॑म्ब्र॒ह्माण॑म्। सूर्य्य॑म्ब्र॒ह्माण॑म्ब्र॒ह्माण॒ꣳ सूर्य्य॒ꣳ सूर्य्य॑म्ब्र-ह्माण॑ञ्च च ब्र॒ह्माण॒ꣳ सूर्य्य॒ꣳ सूर्य्य॑म्ब्र॒ह्माण॑ञ्च। ब्र॒ह्माण॑ञ्च च ब्र॒ह्माण॑म्ब्र॒ह्माण॑ञ्च बृह॒स्पति॒म्बृह॒स्पति॑ञ्च ब्र॒ह्माण॑म्ब्र॒ह्माण॑ञ्च बृह॒स्पति॑म्। च॒ बृह॒स्पति॒म्बृह॒स्प-ति॑ञ्च च॒ बृह॒स्पति॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ बृह॒स्पति॑ञ्च च॒ बृह॒स्पति॒ꣳ स्वाहा॑। बृह॒-स्पति॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ बृह॒स्पति॒म्बृह॒स्पति॒ꣳ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥२५॥

अ॒र्य्यम॒णम्बृह॒स्पति॒म्बृह॒स्पति॑मर्य्य॒मण॑मर्य्य॒मण॒म्बृह॒स्पति॒मिन्द्र॒मिन्द्र॒-म्बृह॒स्पति॑मर्य्य॒मण॑मर्य्य॒मण॒म्बृह॒स्पति॒मिन्द्र॑म्। बृह॒स्पति॒मिन्द्र॒मिन्द्र॒म्बृह॒-स्पति॒म्बृह॒स्पति॒मिन्द्र॒न्दाना॑य॒ दाना॒येन्द्र॒म्बृह॒स्पति॒म्बृह॒स्पति॒मिन्द्र॒न्दाना॑य। इन्द्र॒न्दाना॑य॒ दाना॒येन्द्र॒मिन्द्र॒न्दाना॑य चोदय चोदय॒ दाना॒येन्द्र॒मिन्द्र॒न्दाना॑य चोदय। दाना॑य चोदय चोदय॒ दाना॑य॒ दाना॑य चोदय। चो॒द॒येति॑ चोदय॥ ब्वाचँ॒-ब्विष्णु॑ँब्विष्णु॑ँब्वाचँ॒ब्वाचँ॒ब्विष्णु॒ꣳ सर॑स्वती॒ꣳ सर॑स्वती॒ँब्विष्णु॑ँब्वाचँ॒ब्वाचँ॒ब्विष्णु॒ꣳ सर॑स्वतीम्। ब्विष्णु॒ꣳ सर॑स्वती॒ꣳ सर॑स्वती॒ँब्विष्णु॑ँब्विष्णु॒ꣳ सर॑स्वतीꣳ सवि॒ता-र॑ꣳ सवि॒तार॒ꣳ सर॑स्वती॒ँब्विष्णु॑ँब्विष्णु॒ꣳ सर॑स्वतीꣳ सवि॒तार॑म्। सर॑स्वतीꣳ सवि॒तार॑ꣳ सवि॒तार॒ꣳ सर॑स्वती॒ꣳ सर॑स्वतीꣳ सवि॒तार॑ञ्च च सवि॒तार॒ꣳ सर॑स्व-ती॒ꣳ सर॑स्वतीꣳ सवि॒तार॑ञ्च। स॒वि॒तार॑ञ्च च सवि॒तार॑ꣳ सवि॒तार॑ञ्च ब्वा॒जिन॑ँब्वा॒जि-न॑ञ्च सवि॒तार॑ꣳ सवि॒तार॑ञ्च ब्वा॒जिन॑म्। च॒ ब्वा॒जिन॑ँब्वा॒जिन॑ञ्च च ब्वा॒जिन॒ꣳ स्वाहा॒

[3]. अवसे अग्निम् यहाँ वा.प्रा.४.६५. के अनुसार अवसे से परवर्ती अकार का अभिनिधान होता है।

स्वाहा ब्वाजिनंञ्च च ब्वाजिनुँ स्वाहा। ब्वाजिनुँ स्वाहा स्वाहा ब्वाजिनँब्वाजिनुँ स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२६॥

अग्ग्नेऽ अच्छाच्छाग्ग्नेग्ग्नेऽ अच्छा ब्वद ब्वदाच्छाग्ग्नेग्ग्नेऽ अच्छा ब्वद[1]। अच्छा ब्वद ब्वदाच्छाच्छा ब्वदेहेह ब्वदाच्छाच्छा ब्वदेह। ब्वदेहेह ब्वंद ब्वदेह नो नऽ इह ब्वंद ब्वदेह नं÷। इह नो नऽ इहेह नः प्प्रति प्प्रतिं नऽ इहेह नः प्प्रतिं। नः प्प्रति प्प्रतिं नो नः प्प्रतिं नो नः प्प्रतिं नो नः प्प्रतिं नः। प्रतिं नो नः प्प्रति प्प्रतिं नः सुमनाः सुमना नः प्प्रति प्प्रतिं नः सुमनाः। नः सुमनाः सुमना नो नः सुमना भव भव सुमना नो नः सुमना भव। सुमना भव भव सुमनाः सुमना भव। सुमनाऽ इतिं सु मनाः। भवेतिं भव॥ प्र नो नः प्प्र प्प्र नो यच्छ यच्छ नः प्प्र प्प्र नो यच्छ। नो यच्छ यच्छ नो नो यच्छ सहस्रजित्सहस्रजिद्यच्छ नो नो यच्छ सहस्रजित्। यच्छ सहस्रजित्सहस्रजिद्यच्छ यच्छ सहस्रजित्त्वन्त्वꣳ संहस्रजिद्यच्छ यच्छ सहस्रजित्त्वम्। सहस्रजित्त्वन्त्वꣳ संहस्रजित्सहस्रजित्त्वꣳ हि हि त्वꣳ संहस्रजित्सहस्रजित्त्वꣳ हि। सहस्रजिदितिं सहस्र जित्। त्वꣳ हि हि त्वन्त्वꣳ हि धंनदा धंनदा हि त्वन्त्वꣳ हि धंनदाः। हि धंनदा धंनदा हि हि धंनदाऽ अस्यसिं धनदा हि हि धंनदाऽ असिं[2]। धनदाऽ अस्यसिं धनदा धंनदाऽ असि स्वाहा स्वाहासिं धनदा धंनदाऽ असि स्वाहा। धनदाऽ इतिं धन दाः। असि स्वाहा स्वाहास्यसि स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२७॥

प्र नो नः प्प्र प्प्र नो यच्छतु यच्छतु नः प्प्र प्प्र नो यच्छतु। नो यच्छतु यच्छतु नो नो यच्छत्वर्य्यमार्य्यमा यच्छतु नो नो यच्छत्वर्य्यमा[3]। यच्छत्व-

---

[1]. एवाच्छचकृमाथ (वा. प्रा. ३.१२४) एव, अच्छ, चकृम एवं अय का अन्तिम स्वर व्यञ्जन बाद में रहने पर दीर्घ हो जाता है।

[2]. वा. प्रा. २.४१. के अनुसार यहाँ असिं पद आद्युदात्त होता है।

[3]. यच्छतु अर्य्यमा यहाँ स्वरे भाव्यन्तस्याम्(वा.प्रा.४.४७) इस सूत्र से उकार अन्तस्थ होता है। विकारी यथासन्नम्(वा.प्रा.१.१४२) इस सूत्र से विकार को प्राप्त होने वाला वर्ण समीपता के अनुसार विकार को प्राप्त होता है। तस्मिन्निति

र्य्यमार्य्यमा यंच्छतु यच्छत्त्वर्य्यमा पूषा पूषार्य्यमा यंच्छतु यच्छत्त्वर्य्यमा पूषा। अर्य्यमा पूषा पूषार्य्यमार्य्यमा पूषा बृहस्स्पतिर्बृहस्स्पतिं÷ पूषार्य्यमार्य्यमा पूषा बृहस्स्पतिं÷। पूषा बृहस्स्पतिर्बृहस्स्पतिं÷ पूषा पूषा बृहस्स्पतिं÷। बृहस्स्पतिरिति बृहस्स्पतिं÷॥ व्वाग्ग्देवी देवी व्वाग्ग्वाग्ग्देवी दंदातु ददातु देवी व्वाग्ग्वाग्ग्देवी दंदातु। देवी दंदातु ददातु देवी देवी दंदातु नो नो ददातु देवी देवी दंदातु नः। ददातु नो नो ददातु ददातु नः स्वाहा स्वाहा नो ददातु ददातु नः स्वाहा। नः स्वाहा स्वाहा नो नः स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२८॥

सरंस्वत्यै व्वाचो व्वाचः सरंस्वत्यै सरंस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्य्यन्तुर्व्वाचः सरंस्वत्यै सरंस्वत्यै व्वाचो यन्तुः। व्वाचो यन्तुर्य्यन्तुर्व्वाचो व्वाचो यन्तुर्य्यन्त्रियें यन्त्रियें यन्तुर्व्वाचो व्वाचो यन्तुर्य्यन्त्रियें। यन्तुर्य्यन्त्रियें यन्त्रियें यन्तुर्य्यन्तुर्य्यन्त्रियें दधामि दधामि यन्त्रियें यन्तुर्य्यन्तुर्य्यन्त्रियें दधामि। यन्त्रियें दधामि दधामि यन्त्रियें यन्त्रियें दधामि बृहस्स्पतेर्बृहस्स्पतेंर्द्दधामि यन्त्रियें यन्त्रियें दधामि बृहस्स्पतेंः। दधामि बृहस्स्पतेर्बृहस्स्पतेंर्द्दधामि दधामि बृहस्स्पतेंष्ट्वा त्वा बृहस्स्पतेंर्द्दधामि दधामि बृहस्स्पतेंष्ट्वा[1]। बृहस्स्पतेंष्ट्वा त्वा बृहस्स्पतेर्बृहस्स्पतेंष्ट्वा साम्म्राज्ज्येन साम्म्राज्ज्येन त्वा बृहस्स्पतेर्बृहस्स्पतेंष्ट्वा साम्म्राज्ज्येन[2]। त्वा साम्म्राज्ज्येन साम्म्राज्ज्येन त्वा त्वा साम्म्राज्ज्येनाब्भ्युभि साम्म्राज्ज्येन त्वा त्वा साम्म्राज्ज्येनाभि। साम्म्राज्ज्येनाब्भ्युभि साम्म्राज्ज्येन साम्म्राज्ज्येनाभि षिञ्चामि सिञ्चाम्म्युभि साम्म्राज्ज्येन साम्म्राज्ज्येनाभि षिञ्चामि[3]। साम्म्राज्ज्येनेति साम् राज्ज्येन। अभि

निर्दिष्टे पूर्वस्य(वा.प्रा.१.१३४) इस सूत्र से सप्तमी के द्वारा निर्दिष्ट होने पर अव्यवहित पूर्ववर्ती के कार्य का विधान होता है।

1. सकारपरे च (वा. प्रा. ३.७७) के अनुसार यहाँ सकार परे रहने वाले एकाक्षर पद बाद में रहने के कारण विसर्जनीय षकार हो जाता है।

2. वा.प्रा.४.६. के अनुसार साम्राज्येन पद में मकार(अनुस्वार न होकर) प्रकृतिभाव से रहता है।

3. अभेश्च (वा. प्रा. ३.६३) के अनुसार अभि से परे सकार षकार हो जाता है।

षिंञ्चामि सिञ्चाम्म्यभ्भ्युभि षिंञ्चाम्म्यसावसौ सिञ्चाम्म्यभ्भ्युभि षिंञ्चाम्म्यसौ। सिञ्चाम्म्यसावसौ सिञ्चामि सिञ्चाम्म्यसौ। असावित्त्यसौ॥२९॥

अग्निरेकाक्षरेणैकाक्षरेणाग्निरग्निरेकाक्षरेण प्प्राणम्प्राणमेकाक्षरेणाग्निरग्निरेकाक्षरेण प्प्राणम्। एकाक्षरेण प्प्राणम्प्राणमेकाक्षरेणैकाक्षरेण प्प्राणमुदुत्प्राणमेकाक्षरेणैकाक्षरेण प्प्राणमुत्। एकाक्षरेणेत्त्येकं अक्क्षरेण। प्राणमुदुत्प्राणम्प्राणमुदंजयदजयदुत्प्राणम्प्राणमुदंजयत्। उदंजयदजयदुदुदंजयत्तन्तमंजयदुदुदंजयत्तम्। अजयत्तन्तमंजयदजयत्तमुदुत्तमंजयदजयत्तमुत्। तमुदुत्तन्तमुज्जेंषञ्जेषमुत्तन्तमुज्जेंषम्। उज्जेंषञ्जेषमुदुज्जेंषमश्विनावश्विनौं जेषमुदुज्जेंषमश्विनौं। जेषमश्विनावश्विनौं जेषञ्जेषमश्विनौ द्व्यक्क्षरेण द्व्यक्क्षरेणाश्विनौं जेषञ्जेषमश्विनौ द्व्यक्क्षरेण। अश्विनौ द्व्यक्क्षरेण द्व्यक्क्षरेणाश्विनावश्विनौ द्व्यक्क्षरेण द्विपदौं द्विपदो द्व्यक्क्षरेणाश्विनावश्विनौ द्व्यक्क्षरेण द्विपदंः। द्व्यंक्क्षरेण द्विपदौं द्विपदो द्व्यक्क्षरेण द्व्यक्क्षरेण द्विपदौं मनुष्ष्यान्न्मनुष्ष्यान्द्विपदो द्व्यक्क्षरेण द्व्यक्क्षरेण द्विपदौं मनुष्ष्यान्। द्व्यंक्क्षरेणेति द्वि अंक्क्षरेण। द्विपदौं मनुष्ष्यान्न्मनुष्ष्यान्द्विपदौं द्विपदौं मनुष्ष्यानुदुन्न्मंनुष्ष्यान्द्विपदौं द्विपदौं मनुष्ष्यानुत्[1]। द्विपदऽ इतिं द्वि पदंः। मनुष्ष्यानुदुन्न्मंनुष्ष्यान्न्मनुष्ष्यानुदंजयतामजयतामुन्न्मंनुष्ष्यान्न्मनुष्ष्यानुदंजयताम्। उदंजयतामजयतामुदुदंजयतान्ताँस्तानंजयतामुदुदंजयतान्तान्। अजयतान्ताँस्तानंजयतामजयतान्तान्विष्ष्णुर्व्विष्ष्णुस्तानंजयतामजयतान्तान्विष्ष्णुंः। तान्विष्ष्णुर्व्विष्ष्णुस्ताँस्तान्विष्ष्णुस्त्त्र्यक्क्षरेण त्त्र्यक्क्षरेण व्विष्ष्णुस्ताँस्तान्विष्ष्णुस्त्त्र्यक्क्षरेण। व्विष्ष्णुस्त्त्र्यक्क्षरेण त्त्र्यक्क्षरेण व्विष्ष्णुर्व्विष्ष्णुस्त्त्र्यक्क्षरेण त्त्रीँस्त्त्रीँस्त्त्र्यंक्क्षरेण

[1]. वा. प्रा. ३.१४७. के अनुसार यहाँ उत् परे होने से मनुष्यान् का नकार प्रकृतिभाव से रहता है। वा.प्रा.३.३. के अनुसार सन्धि पदान्त तथा पदादि में होती है अतः यहाँ भाष्यकार के कथनानुसार नकार से तात्पर्य पदान्त नकार से है।

त्रिष्णुर्विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रीन्। त्र्यक्षरेण त्रींस्त्रींस्त्र्यक्षरेण त्र्यक्षरेण त्रींल्लोकाँल्लोकाँस्त्रींस्त्र्यक्षरेण त्र्यक्षरेण त्रींल्लोकान्। त्र्यक्षरेणेति त्रि अक्षरेण। त्रींल्लोकाँल्लोकाँस्त्रींस्त्रींल्लोकान्त्सोमः सोमो लोकाँस्त्रींस्त्रींल्लोकान्त्सोमः। लोकान्त्सोमः सोमो लोकाँल्लोकान्त्सोमश्चतुरक्षरेण चतुरक्षरेण सोमो लोकाँल्लोकान्त्सोमश्चतुरक्षरेण। सोमश्चतुरक्षरेण चतुरक्षरेण सोमः सोमश्चतुरक्षरेण चतुष्पदश्चतुःपदश्चतुरक्षरेण सोमः सोमश्चतुरक्षरेण चतुष्पदः[1]। चतुरक्षरेण चतुष्पदश्चतुःपदश्चतुरक्षरेण चतुरक्षरेण चतुष्पदः पशून्पशूँश्चतुःपदश्चतुरक्षरेण चतुरक्षरेण चतुष्पदः पशून्। चतुरक्षरेणेति चतुः अक्षरेण। चतुष्पदः पशून्पशूँश्चतुःपदश्चतुष्पदः पशून्पूषा पूषा पशूँश्चतुःपदश्चतुष्पदः पशून्पूषा। चतुःपद इति चतुः पदः। पशून्पूषा पूषा पशून्पशून्पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्चाक्षरेण पूषा पशून्पशून्पूषा पञ्चाक्षरेण॥३०॥

पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्चाक्षरेण पूषा पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च पञ्च पञ्चाक्षरेण पूषा पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च। पञ्चाक्षरेण पञ्च पञ्च पञ्चाक्षरेण पञ्चाक्षरेण पञ्च दिशो दिशः पञ्च पञ्चाक्षरेण पञ्चाक्षरेण पञ्च दिशः। पञ्चाक्षरेणेति पञ्च अक्षरेण। पञ्च दिशो दिशः पञ्च पञ्च दिशस्तास्ता दिशः पञ्च पञ्च दिशस्ताः। दिशस्तास्ता दिशो दिशस्ताः संविता संविता ता दिशो दिशस्ताः संविता। ताः संविता संविता तास्ताः संविता षडक्षरेण षडक्षरेण सविता तास्ताः संविता षडक्षरेण। सविता षडक्षरेण षडक्षरेण सविता संविता षडक्षरेण षट् षट् षडक्षरेण सविता संविता षडक्षरेण षट्। षडक्षरेण षट् षट् षडक्षरेण षडक्षरेण षडृतूनृतून्षट् षडक्षरेण षडक्षरेण षडृतून्। षडक्षरेणेति षट् अक्षरेण। षडृतूनृतून्षट् षडृतून्मरुतो मरुतऽ ऋतून्षट् षडृतून्मरुतः। ऋतु-

[1]. समानपदे च(वा.प्रा.३.३०) इस सूत्र के अनुसार चतुःपदः इस पद में विसर्जनीय पकार होता है।

न्मरुतो मरुतऽ ऋतूनृतून्मरुतः सप्ताक्षरेण सप्ताक्षरेण मरुतऽ ऋतूनृतून्म-
रुतः सप्ताक्षरेण। मरुतः सप्ताक्षरेण सप्ताक्षरेण मरुतो मरुतः सप्ता-
क्षरेण सप्त सप्त सप्ताक्षरेण मरुतो मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त। सप्ताक्षरेण
सप्त सप्त सप्ताक्षरेण सप्ताक्षरेण सप्त ग्ग्राम्म्यान्ग्राम्म्यान्त्सप्त सप्ताक्ष-
रेण सप्ताक्षरेण सप्त ग्ग्राम्म्यान्। सप्ताक्षरेणेति सप्त अक्षरेण। सप्त
ग्ग्राम्म्यान्ग्राम्म्यान्त्सप्त सप्त ग्ग्राम्म्यानजयन्नजयन्ग्राम्म्यान्त्सप्त सप्त
ग्ग्राम्म्यानजयन्। ग्राम्म्यानजयन्नजयन्ग्राम्म्यान्ग्राम्म्यानजयन्बृहस्प्पतिर्बृ-
हस्प्पतिरजयन्ग्राम्म्यान्ग्राम्म्यानजयन्बृहस्प्पतिः[1]। अजयन्बृहस्प्पतिर्बृह-
स्प्पतिरजयन्नजयन्बृहस्प्पतिरष्टाक्षरेणाष्टाक्षरेण बृहस्प्पतिरजयन्नजयन्बृह-
स्प्पतिरष्टाक्षरेण। बृहस्प्पतिरष्टाक्षरेणाष्टाक्षरेण बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिरष्टा-
क्षरेण गायत्रीङ्गायत्रीमष्टाक्षरेण बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीम्[2]।
अष्टाक्षरेण गायत्रीङ्गायत्रीमष्टाक्षरेणाष्टाक्षरेण गायत्रीन्तान्ताङ्गायत्रीमष्टा-
क्षरेणा-ष्टाक्षरेण गायत्रीन्ताम्। अष्टाक्षरेणेत्यष्ट अक्षरेण। गायत्रीन्तान्ता-
ङ्गायत्रीङ्गायत्रीन्ताम्मित्रो मित्रस्ताङ्गायत्रीङ्गायत्रीन्ताम्मित्रः। ताम्मित्रो मित्र-
स्तान्ताम्मित्रो नवाक्षरेण नवाक्षरेण मित्रस्तान्ताम्मित्रो नवाक्षरेण॥३१॥

मित्रो नवाक्षरेण नवाक्षरेण मित्रो मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतन्त्रिवृतन्नवा-
क्षरेण मित्रो मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतम्। नवाक्षरेण त्रिवृतन्त्रिवृतन्नवाक्षरेण

---

[1]. बृहस्पतिर्बृहस्पतिः यहाँ ऋवर्ण बाद में होने से बृ के बकार का द्वित्व नहीं होगा। ऋवर्णे (वा. प्रा. ४.११३) इस सूत्र के भाष्यकारों द्वारा ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः (वा. प्रा. ४.१०३) के अपवाद के रूप में प्रस्तुत सूत्र को कहना विचारणीय है।

[2].स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र(वा.प्रा.४.१०१) इस सूत्र से संयोगादि वर्ण का द्विरुच्चारण प्राप्त है, जिसके अपवाद के रूप में न क्षवृचिश्विसतयेभ्यस्त्रैकम्(वा.प्रा.६.२७) सूत्र है। इस सूत्र में क्ष, वृ, चि, श्वि, स, त, य इन वर्णों के बाद त्र में द्विरुच्चारण का निषेध है। इस सूत्र के अनुसार यत्र पद में एक ही त रहेगा। चूँकि प्रातिशाख्य की प्रवृत्ति पदों को आधार मानकर होती है, अतः गायत्री, गायत्र, (वोचासि+अत्र) वोचास्यत्र, (अभि+अत्र) अभ्यत्र, यमस्य त्रयोदशी इत्यादि स्थलों में तकार के द्विरुच्चारण में कुछ आपत्ति नहीं है। भाष्यकारों के अनुसार ज्योत्स्नावृत्ति में भी गायत्रादि पद उदाहृत नहीं है।

नवाक्षरेण त्रिवृतꣳ स्तोमꣳ स्तोमन्त्रिवृतन्नवाक्षरेण नवाक्षरेण त्रिवृतꣳ स्तोमम्[1]। नवाक्षरेणेति नव अक्षरेण। त्रिवृतꣳ स्तोमꣳ स्तोमन्त्रिवृतन्त्रिवृतꣳ स्तोमँव्वरुणो व्वरुण स्तोमन्त्रिवृतन्त्रिवृतꣳ स्तोमँव्वरुणः। त्रिवृतमिति त्रि वृतम्। स्तोमँव्वरुणो व्वरुण स्तोमꣳ स्तोमँव्वरुणो दशाक्षरेण दशाक्षरेण व्वरुण स्तोमꣳ स्तोमँव्वरुणो दशाक्षरेण। व्वरुणो दशाक्षरेण दशाक्षरेण व्वरुणो व्वरुणो दशाक्षरेण व्विराजँव्विराजन्दशाक्षरेण व्वरुणो व्वरुणो दशाक्षरेण व्विराजम्। दशाक्षरेण व्विराजँव्विराजन्दशाक्षरेण दशाक्षरेण व्विराजमिन्द्रऽ इन्द्रो व्विराजन्दशाक्षरेण दशाक्षरेण व्विराजमिन्द्रः। दशाक्षरेणेति दश अक्षरेण। व्विराजमिन्द्रऽ इन्द्रो व्विराजँव्विराजमिन्द्रऽ एकादशाक्षरेणैकादशाक्षरेणेन्द्रो व्विराजँव्विराजमिन्द्रऽ एकादशाक्षरेण। व्विराजमिति वि राजम्। इन्द्रऽ एकादशाक्षरेणैकादशाक्षरेणेन्द्रऽ इन्द्रऽ एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभन्त्रिस्तुभमेकादशाक्षरेणेन्द्रऽ इन्द्रऽ एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभम्। एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभन्त्रिस्तुभमेकादशाक्षरेणैकादशाक्षरेण त्रिष्टुभँव्विश्वे व्विश्वे त्रिस्तुभमेकादशाक्षरेणैकादशाक्षरेण त्रिष्टुभँव्विश्वे। एकादशाक्षरेणेत्येकादश अक्षरेण। त्रिष्टुभँव्विश्वे व्विश्वे त्रिस्तुभन्त्रिष्टुभँव्विश्वे देवा देवा व्विश्वे त्रिस्तुभन्त्रिष्टुभँव्विश्वे देवाः। त्रिस्तुभमिति त्रि स्तुभम्। व्विश्वे देवा देवा व्विश्वे व्विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण द्वादशाक्षरेण देवा व्विश्वे व्विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण। देवा द्वादशाक्षरेण द्वादशाक्षरेण देवा देवा द्वादशाक्षरेण जगतीञ्जगतीन्द्वादशाक्षरेण देवा देवा द्वादशाक्षरेण जगतीम्। द्वादशाक्षरेण जगतीञ्जगतीन्द्वादशाक्षरेण द्वादशा-

---

[1]. त्रिवृतꣳ स्तोमम् यहाँ अनुस्वार से परवर्ती सकार तदुत्तरवर्ती तकार का द्वित्व नहीं करेगा, नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः (वा. प्रा. ४.१०६)।

अनुस्वार की गणना व्यञ्जनों में की गयी है (वा. प्रा. ८.२१)।

क्षरेण जगतीँव्वसवो व्वसवो जगतीन्द्वादशाक्षरेण द्वादशाक्षरेण जगतीँव्वसवः[1]। द्वादशाक्षरेणेति द्वादश अक्षरेण। जगतीँव्वसवो व्वसवो जगतीञ्जगतीँव्वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशाक्षरेण व्वसवो जगतीञ्जगतीँव्वसवस्त्रयोदशाक्षरेण॥३२॥

व्वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशाक्षरेण व्वसवो व्वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशन्त्रयोदशन्त्रयोदशाक्षरेण व्वसवो व्वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशम्। त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशन्त्रयोदशन्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशꣳ रुद्रा रुद्रास्त्रयोदशन्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशꣳ रुद्राः। त्रयोदशाक्षरेणेति त्रयोदश अक्षरेण। त्रयोदशꣳ रुद्रा रुद्रास्त्रयोदशन्त्रयोदशꣳ रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशाक्षरेण रुद्रास्त्रयोदशन्त्रयोदशꣳ रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण। त्रयोदशमिति त्रयः दशम्। रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशाक्षरेण रुद्रा रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशञ्चतुर्दशञ्चतुर्दशाक्षरेण रुद्रा रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशम्। चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशञ्चतुर्दशञ्चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशमादित्याऽ आदित्याश्चतुर्दशञ्चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशमादित्याः। चतुर्दशाक्षरेणेति चतुर्दश अक्षरेण। चतुर्दशमादित्याऽ आदित्याश्चतुर्दशञ्चतुर्दशमादित्याः पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशाक्षरेणादित्याश्चतुर्दशञ्चतुर्दशमादित्याः पञ्चदशाक्षरेण। चतुर्दशमिति चतुः दशम्। आदित्याः पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशाक्षरेणादित्याऽ आदित्याः पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशम्पञ्चदशम्पञ्चदशाक्षरेणादित्याऽ आदित्याः पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशम्। पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशम्पञ्चदशम्पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशमदितिरदितिः पञ्चदशम्पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशमदितिः। पञ्चदशाक्षरेणेति पञ्चदश अक्षरेण। पञ्चदशमदितिरदितिः

[1]. जगतीम् वसवः यहाँ वा.प्रा.४.१०. के अनुसार मकार अनुनासिक वकार होता है। सवर्णे(वा.प्रा.४.११२) इस सूत्र से यहाँ द्वित्व का निषेध है(भाष्यकार अनन्त ने तृतीय वकार का निषेध माना है)।

पञ्चद॒शम्पं॑ञ्चद॒शमदि॑ति॒ः षोडं॑शाक्षरेण॒ षोडं॑शाक्षरे॒णादि॑तिः पञ्चद॒शम्पं॑ञ्चद॒शमदि॑ति॒ः षोडं॑शाक्षरेण[1]। प॒ञ्च॒द॒शमिति॑ पञ्च द॒शम्। अदि॑ति॒ः षोडं॑शाक्षरेण॒ षोडं॑शाक्षरे॒णादि॑ति॒रदि॑ति॒ः षोडं॑शाक्षरेण षो॒ड॒शꣳ षो॑ड॒शꣳ षोडं॑शाक्षरे॒णादि॑ति॒रदि॑ति॒ः षोडं॑शाक्षरेण षो॒ड॒शम्[2]। षोडं॑शाक्षरेण षो॒ड॒शꣳ षो॑ड॒शꣳ षोडं॑शाक्षरेण॒ षोडं॑शाक्षरेण षो॒ड॒शम्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जाप॑तिः षो॒ड॒शꣳ षोडं॑शाक्षरेण॒ षोडं॑शाक्षरेण षो॒ड॒शम्प्र॒जाप॑तिः। षोडं॑शाक्षरे॒णेति॒ षोडं॑श अक्षरेण। षो॒ड॒शम्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जाप॑तिः षो॒ड॒शꣳ षों॑ड॒शम्प्र॒जाप॑तिः स॒प्तदं॑शाक्षरेण स॒प्तदं॑शाक्षरेण प्प्र॒जाप॑तिः षो॒ड॒शꣳ षों॑ड॒शम्प्र॒जाप॑तिः स॒प्तदं॑शाक्षरेण। प्र॒जाप॑तिः स॒प्तदं॑शाक्षरेण स॒प्तदं॑शाक्षरेण प्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जाप॑तिः स॒प्तदं॑शाक्षरेण सप्तद॒शꣳ सं॑प्तद॒शꣳ स॒प्तदं॑शाक्षरेण प्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जाप॑तिः स॒प्तदं॑शाक्षरेण सप्तद॒शम्। प्र॒जाप॑ति॒रिति॑ प्प्र॒जा प॑तिः[3]। स॒प्तदं॑शाक्षरेण सप्तद॒शꣳ सं॑प्तद॒शꣳ स॒प्तदं॑शाक्षरेण स॒प्तदं॑शाक्षरेण सप्तद॒शम्। स॒प्तदं॑शाक्षरे॒णेति॑ स॒प्तदं॑श अक्षरेण। स॒प्त॒द॒शमिति॑ सप्त द॒शम्॥३२॥

ए॒ष तें तऽ ए॒षऽ ए॒ष तें निर्ऋते निर्ऋते तऽ ए॒षऽ ए॒ष तें निर्ऋते। ते॒ नि॒र्ऋ॒ते॒ नि॒र्ऋ॒ते॒ ते॒ ते॒ नि॒र्ऋ॒ते॒ भा॒गो भा॒गो निं॑र्ऋते ते ते निर्ऋते भा॒गः। नि॒र्ऋ॒ते॒ भा॒गो भा॒गो निं॑र्ऋते निर्ऋते भा॒गस्तन्तम्भा॒गो निं॑र्ऋते निर्ऋते॑ भा॒गस्तम्। नि॒र्ऋ॒त॒ऽ इति॑ निः ऋते। भा॒गस्तन्तम्भा॒गो भा॒गस्तज्जु॑षस्व जुषस्व॒ तम्भा॒गो भा॒गस्तज्जु॑षस्व। तज्जु॑षस्व जुषस्व॒ तन्तज्जु॑षस्व॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ जुषस्व॒ तन्तज्जु॑षस्व॒ स्वाहा॑। जु॒ष॒स्व॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ जुषस्व जुषस्व॒ स्वाहा॒ग्निर्नें॑त्रेभ्यो॒ग्निर्नें॑त्रेभ्य॒ः स्वाहा॑

---

1. षट् दश यहाँ षड् दशदन्तयोः संख्यावयोऽर्थयोश्च (वा. प्रा. ३.४७) के अनुसार षट् शब्द का अन्तिम वर्ण उपधा के सहित ओकार हो जाता है।

2. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार षोडश पद का पृथक्करण नहीं होता है।

3. वा.प्रा.५.७. के अनुसार यह बहुप्रकृति पद समास के नियमानुसार पश्चात्कालिक पद पतिः से पृथक् होता है।

जुषस्व जुषस्व॒ स्वाहा॒ग्निनेत्रेभ्यः। स्वाहा॒ग्निनेत्रेभ्यो॒ग्निनेत्रेभ्य॒ः स्वाहा॒
स्वाहा॒ग्निनेत्रेभ्यो दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॒ग्निनेत्रेभ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्निनेत्रेभ्यो
दे॒वेभ्य॑ः। अ॒ग्निनेत्रेभ्यो दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॒ग्निनेत्रेभ्यो॒ग्निनेत्रेभ्यो दे॒वेभ्य॑ः
पुर॒ःसद्भ्य॑ः पुर॒ःसद्भ्यो॑ दे॒वेभ्यो॒ग्निनेत्रेभ्यो॒ग्निनेत्रेभ्यो दे॒वेभ्य॑ः पुर॒ःस-
द्भ्य॑ः। अ॒ग्निनेत्रेभ्य॒ऽ इत्य॒ग्नि नेत्रेभ्यः। दे॒वेभ्य॑ः पुर॒ःसद्भ्य॑ः पुर॒ःस-
द्भ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑ः पुर॒ःसद्भ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ पुर॒ःसद्भ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑
दे॒वेभ्य॑ः पुर॒ःसद्भ्य॒ः स्वाहा॑। पु॒र॒ःसद्भ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ पुर॒ःसद्भ्य॑ः
पुर॒ःसद्भ्य॒ः स्वाहा॑ य॒मनेत्रेभ्यो य॒मनेत्रेभ्य॒ः स्वाहा॑ पुर॒ःसद्भ्य॑ः पुर॒ःस-
द्भ्य॒ः स्वाहा॑ य॒मनेत्रेभ्यः। पु॒र॒ःसद्भ्य॒ऽ इति॑ पुर॒ःसत् भ्य॑ः[1]। स्वाहा॑ य॒म-
नेत्रेभ्यो य॒मनेत्रेभ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ य॒मनेत्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ दक्षिणा॒स-
द्भ्यो॑ य॒मनेत्रेभ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ य॒मनेत्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्य॑ः[2]। य॒मनेत्रे-
भ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ य॒मनेत्रेभ्यो य॒मनेत्रेभ्यो दक्षिणा॒स-
द्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ य॒मनेत्रेभ्यो य॒मनेत्रे-
भ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यः। य॒मनेत्रेभ्य॒ऽ इति॑ य॒म नेत्रेभ्यः।
द॒क्षि॒णा॒सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ दक्षिणा॒-
सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यः प॒श्चा॒त्सद्भ्य॑ः प॒श्चा॒त्सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो
दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यः पश्चा॒सद्भ्य॑ः। द॒क्षि॒णा॒स-
द्भ्य॒ऽ इति॑ दक्षिणा॒सत् भ्य॑ः। वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यः प॒श्चा॒त्सद्भ्य॑ः प॒श्चा॒त्सद्भ्यो॑
वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यः पश्चा॒सद्भ्यो॑ मि॒त्रावरु॑णनेत्रेभ्यो मि॒त्रावरु॑-

[1]. ह्रस्व स्वर तथा व्यञ्जन के बाद में भकार(भ्यः) से प्रारम्भ होने वाला विभक्ति-प्रत्यय होने से यहाँ अवग्रह है ह्रस्वव्यञ्जनाभ्यां भकारादौ विभक्तिप्रत्यये(वा.प्रा.५.१३)

[2]. न दशविश्वकर्मानिषद्येन्द्रस्यपातुसदःसक्थ्येषु (वा. प्रा. २.३०) इस सूत्र के अनुसार यहाँ दक्षिणा शब्द आद्युदात्त नहीं है।

णनेत्रेभ्यः पश्चात्सद्भ्यो विश्वदेवनेत्रेभ्यो विश्वदेवनेत्रेभ्यः पश्चात्सद्भ्यो मित्रावरुणनेत्रेभ्यः। विश्वदेवनेत्रेभ्यऽ इति विश्वदेव नेत्रेभ्यः। पश्चात्सद्भ्यो मित्रावरुणनेत्रेभ्यो मित्रावरुणनेत्रेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः पश्चात्सद्भ्यो मित्राव-रुणनेत्रेभ्यो वा वा मित्रावरुणनेत्रेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः पश्चात्सद्भ्यो मित्रावरु-णनेत्रेभ्यो वा। पश्चात्सद्भ्यऽ इति पश्चात्सत् भ्यः। मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा वा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा मरुन्नेत्रेभ्यो मरुन्नेत्रेभ्यो वा मित्रा-वरुणनेत्रेभ्यो मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा मरुन्नेत्रेभ्यः। मित्रावरुणनेत्रेभ्यऽ इति मित्रावरुण नेत्रेभ्यः। वा मरुन्नेत्रेभ्यो मरुन्नेत्रेभ्यो वा वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा। मरुन्नेत्रेभ्यो वा वा मरुन्नेत्रेभ्यो मरुन्नेत्रे-भ्यो वोत्तरासद्भ्यऽ उत्तरासद्भ्यो वा मरुन्नेत्रेभ्यो मरुन्नेत्रेभ्यो वोत्तरासद्भ्यः । मरुन्नेत्रेभ्यऽ इति मरुत् नेत्रेभ्यः। वोत्तरासद्भ्यऽ उत्तरासद्भ्यो वा वोत्तरा-सद्भ्यः सोमनेत्रेभ्यः सोमनेत्रेभ्यऽ उत्तरासद्भ्यो वा वोत्तरासद्भ्यः सोमने-त्रेभ्यः। उत्तरासद्भ्यः सोमनेत्रेभ्यः सोमनेत्रेभ्यऽ उत्तरासद्भ्यऽ उत्तरास-द्भ्यः सोमनेत्रेभ्यऽ उपरिसद्भ्यऽ उपरिसद्भ्यः सोमनेत्रेभ्यऽ उत्तरासद्भ्यऽ उत्तरासद्भ्यः सोमनेत्रेभ्यऽ उपरिसद्भ्यः। उत्तरासद्भ्यऽ इत्युत्तरासत् भ्यः। सोमनेत्रेभ्यऽ उपरिसद्भ्यऽ उपरिसद्भ्यः सोमनेत्रेभ्यः सोमनेत्रेभ्यऽ उपरि-सद्भ्यो दुवस्वद्भ्यो दुवस्वद्भ्यऽ उपरिसद्भ्यः सोमनेत्रेभ्यः सोमनेत्रेभ्यऽ उपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्यः। सोमनेत्रेभ्यऽ इति सोम नेत्रेभ्यः। उपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्यो दुवस्वद्भ्यऽ उपरिसद्भ्यऽ उपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्यः। उपरिस-द्भ्यऽ इत्युपरिसत् भ्यः। दुवस्वद्भ्यऽ इति दुवस्वत् भ्यः॥३४॥

ये देवा देवा ये ये देवाऽ अग्निनेत्राऽ अग्निनेत्रा देवा ये ये देवाऽ अग्निनेत्राः। देवाऽ अग्निनेत्राऽ अग्निनेत्रा देवा देवाऽ अग्निनेत्राः पुरःसदः पुरःसदोग्निनेत्रा देवा देवाऽ अग्निनेत्राः पुरःसदः[1]। अग्निनेत्राः पुरःसदः पुरःसदोग्निनेत्राऽ अग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यस्तेभ्यः पुरःसदोग्निनेत्राऽ अग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः। अग्निनेत्राऽ इत्यग्नि नेत्राः। पुरःसदस्तेभ्यस्तेभ्यः पुरःसदः पुरःसदस्तेभ्यो यमनेत्रा यमनेत्रास्तेभ्यः पुरःसदः पुरःसदस्तेभ्यो यमनेत्राः[2]। पुरःसदऽ इति पुरः सदः। तेभ्यो यमनेत्रा यमनेत्रास्तेभ्यस्तेभ्यो यमनेत्रा दक्षिणासदो दक्षिणासदो यमनेत्रास्तेभ्यस्तेभ्यो यमनेत्रा दक्षिणासदः[3]। यमनेत्रा दक्षिणासदो दक्षिणासदो यमनेत्रा यमनेत्रा दक्षिणासदो विश्वदेवनेत्रा विश्वदेवनेत्रा दक्षिणासदो यमनेत्रा यमनेत्रा दक्षिणासदो विश्वदेवनेत्राः। यमनेत्राऽ इति यम नेत्राः। दक्षिणासदो विश्वदेवनेत्रा विश्वदेवनेत्रा दक्षिणासदो दक्षिणासदो विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदः पश्चात्सदो विश्वदेवनेत्रा दक्षिणासदो दक्षिणासदो विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदः। दक्षिणासदऽ इति दक्षिणा सदः। विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदः पश्चात्सदो विश्वदेवनेत्रा विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदो मित्रावरुणनेत्रा मित्रावरुणनेत्राः पश्चात्सदो विश्वदेवनेत्रा विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदो मित्रावरुणनेत्राः। विश्वदेवनेत्राऽ इति विश्वदेव नेत्राः। पश्चात्सदो मित्रावरुणनेत्रा मित्रावरुणनेत्राः पश्चात्सदः पश्चात्सदो मित्रावरुणनेत्रा मरुन्नेत्रा मरुन्नेत्रा मित्रावरुणनेत्राः

---

[1]. भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) इस सूत्र में एक पद में अकण्ठ्य स्वर से भिन्न स्वर से बाद में स्थित सकार का षकार होना कहा है। अतः पुरःसदः में सकार षकार नहीं होगा।

[2]. तेभ्यः यमनेत्राः यहाँ संहिता में इन दोनों पदों के मध्य आने वाले स्वाहा ये देवाः इन तीन पदों को छोड़ दिया गया है, इस प्रकार के सन्धि के स्थलों को सङ्क्रम कहते हैं-

गलत्पदान्यनुच्चार्य तदाद्यन्ते पदद्वये। यः सन्धिः क्रमपाठेऽस्ति सङ्क्रमः प्रोच्यते तु सा॥ स.प्र.शि.१३२.

[3]. वा. प्रा. २.३०. के अनुसार यहाँ दक्षिणा शब्द आद्युदात्त नहीं होता है।

पश्चात्सदः पश्चात्सदो मित्रावरुणनेत्रा मरुन्नेत्राः। पश्चात्सदऽ इति पश्चात् सदः। मित्रावरुणनेत्रा मरुन्नेत्रा मरुन्नेत्रा मित्रावरुणनेत्रा मित्रावरुणनेत्रा मरुन्नेत्राऽ उत्तरासदऽ उत्तरासदो मरुन्नेत्रा मित्रावरुणनेत्रा मित्रावरुणनेत्रा मरुन्नेत्राऽ उत्तरासदः। मित्रावरुणनेत्राऽ इति मित्रावरुण नेत्राः। मरुन्नेत्राऽ उत्तरासदऽ उत्तरासदो मरुन्नेत्रा मरुन्नेत्राऽ उत्तरासदः सोमनेत्राः सोमनेत्राऽ उत्तरासदो मरुन्नेत्रा मरुन्नेत्राऽ उत्तरासदः सोमनेत्राः। मरुन्नेत्राऽ इति मरुत् नेत्राः। उत्तरासदः सोमनेत्राः सोमनेत्राऽ उत्तरासदऽ उत्तरासदः सोमनेत्राऽ उपरिसदऽ उपरिसदः सोमनेत्राऽ उत्तरासदऽ उत्तरासदः सोमनेत्राऽ उपरिसदः। उत्तरासदऽ इत्युत्तरा सदः। सोमनेत्राऽ उपरिसदऽ उपरिसदः सोमनेत्राः सोमनेत्राऽ उपरिसदो दुवस्वन्तो दुवस्वन्तऽ उपरिसदः सोमनेत्राः सोमनेत्राऽ उपरिसदो दुवस्वन्तः। सोमनेत्राऽ इति सोम नेत्राः। उपरिसदो दुवस्वन्तो दुवस्वन्तऽ उपरिसदऽ उपरिसदो दुवस्वन्तः। उपरिसदऽ इत्युपरि सदः। दुवस्वन्तऽ इति दुवस्वन्तः॥३५॥

अग्ने सहस्व सहस्वाग्नेग्ने सहस्व पृतनाः पृतनाः सहस्वाग्नेग्ने सहस्व पृतनाः[1]। सहस्व पृतनाः पृतनाः सहस्व सहस्व पृतनाऽ अभिमातीरभिमातीः पृतनाः सहस्व सहस्व पृतनाऽ अभिमातीः। पृतनाऽ अभिमातीरभिमातीः पृतनाः पृतनाऽ अभिमातीरपापाभिमातीः पृतनाः पृतनाऽ अभिमातीरप। अभिमातीरपापाभिमातीरभिमातीरपास्यास्यापाभिमातीरभिमातीरपास्य। अभिमातीरित्यभि मातीः। अपास्यास्यापापास्य। अस्येत्यस्य॥ दुष्टरस्तरँस्तरन्दुस्तरो

1. उदात्ताद्यामन्त्रितादनन्तरम्(वा.प्रा.६.१२) इस सूत्र के अनुसार उदात्त युक्त सम्बोधन से युक्त पद (अग्ने) से अव्यवहित परवर्ती क्रियापद (सहस्व) यहाँ अपने प्रकृति स्वर से युक्त (अनुदात्त नहीं) है।

दुष्टरस्तरन्नरातीररातीस्तरन्दुस्तरो दुष्टरस्तरन्नरातीः। दुस्तरऽ इति दुस्तरः[1]। तरन्नरातीररातीस्तरँस्तरन्नरातीर्व्वर्चो व्वर्चोरातीस्तरँस्तरन्नरातीर्व्वर्चः। अरातीर्व्वर्चो व्वर्चोरातीररातीर्व्वर्चो धा धा व्वर्चोरातीररातीर्व्वर्चो धाः। व्वर्चो धा धा व्वर्चो व्वर्चो धा यज्ञवाहसि यज्ञवाहसि धा व्वर्चो व्वर्चो धा यज्ञवाहसि। धा यज्ञवाहसि यज्ञवाहसि धा धा यज्ञवाहसि। यज्ञवाहसीति यज्ञ व्वाहसि॥३६॥

उपाꣳशोर्व्वीर्य्येण व्वीर्य्येणोपाꣳशोरुपाꣳशोर्व्वीर्य्येण जुहोमि जुहोमि व्वीर्य्येणोपाꣳशोरुपाꣳशोर्व्वीर्य्येण जुहोमि। उपाꣳशोरित्युप अꣳशोः। व्वीर्य्येण जुहोमि जुहोमि व्वीर्य्येण व्वीर्य्येण जुहोमि हतꣳ हतञ्जुहोमि व्वीर्य्येण व्वीर्य्येण जुहोमि हतम्। जुहोमि हतꣳ हतञ्जुहोमि जुहोमि हतꣳ रक्षो रक्षो हतञ्जुहोमि जुहोमि हतꣳ रक्षः। हतꣳ रक्षो रक्षो हतꣳ हतꣳ रक्षः स्वाहा स्वाहा रक्षो हतꣳ हतꣳ रक्षः स्वाहा। रक्षः स्वाहा स्वाहा रक्षो रक्षः स्वाहा रक्षसाꣳ रक्षसाꣳ स्वाहा रक्षो रक्षः स्वाहा रक्षसाम्। स्वाहा रक्षसाꣳ रक्षसाꣳ स्वाहा स्वाहा रक्षसान्त्वा त्वा रक्षसाꣳ स्वाहा स्वाहा रक्षसान्त्वा[2]। रक्षसान्त्वा त्वा रक्षसाꣳ रक्षसान्त्वा व्वधाय व्वधाय त्वा रक्षसाꣳ रक्षसान्त्वा व्वधाय। त्वा व्वधाय व्वधाय त्वा त्वा व्वधायावधिष्म्मावधिष्म्म व्वधाय त्वा त्वा व्वधायावधिष्म्म। व्वधायावधिष्म्मावधिष्म्म व्वधाय व्वधायावधिष्म्म रक्षो रक्षोवधिष्म्म व्वधाय व्वधायावधिष्म्म रक्षः। अवधिष्म्म रक्षो रक्षोवधिष्म्मावधिष्म्म रक्षोवधिष्म्मावधिष्म्म रक्षोवधिष्म्मावधिष्म्म रक्षोवधिष्म्म। रक्षोवधिष्म्मावधिष्म्म रक्षो रक्षोवधिष्म्मामुममुमवधिष्म्म रक्षो रक्षोवधिष्म्मामुम्। अवधिष्म्मामुममुमवधिष्म्मावधिष्म्मामुमसावसावमुमव-

---

[1]. दुष्टरो विष्टरो विष्टपो विष्टम्भो विष्टम्भनीम् (वा. प्रा. ५.४१) इस सूत्र के अनुसार इस पद का पृथक्करण नहीं होता है।

[2].वा.प्रा.२.६. के अनुसार यहाँ त्वा पद अनुदात्त है।

धिष्म्मावंधिष्म्मामुमसौ[1]। अमुमसावसावमुममुमसौ हुतो हुतोसावमुममुमसौ हुतः। असौ हुतो हुतोसावसौ हुतः। हुतऽ इति हुतः॥३७॥

सविता त्वां त्वा सविता संविता त्वां सवानांᳬ सवानान्त्वा सविता संविता त्वां सवानांम्। त्वा सवानांᳬ सवानान्त्वा त्वा सवानांᳬ सुवताᳬ सुवताᳬ सवानान्त्वा त्वा सवानांᳬ सुवताम्। सवानांᳬ सुवताᳬ सुवताᳬ सवानांᳬ सवानांᳬ सुवतामग्निरग्निः सुंवताᳬ सवानांᳬ सवानांᳬ सुवतामग्निः। सुवतामग्निरग्निः सुंवताᳬ सुवतामग्निर्गृहपंतीनाङ्गृहपंतीनामग्निः सुंवताᳬ सुवतामग्निर्गृहपंतीनाम्। अग्निर्गृहपंतीनाङ्गृहपंतीनामग्निरग्निर्गृहपंतीनाᳬ सोमः सोमों गृहपंतीनामग्निरग्निर्गृहपंतीनाᳬ सोमंः[2]। गृहपंतीनाᳬ सोमः सोमों गृहपंतीनाङ्गृहपंतीनाᳬ सोमो ब्वनस्प्पतींनाँब्वनस्प्पतींनाᳬ सोमों गृहपंतीनाङ्गृहपंतीनाᳬ सोमो ब्वनस्प्पतींनाम्। गृहपंतीनामितिं गृह पंतीनाम्। सोमो ब्वनस्प्पतींनाँब्वनस्प्पतींनाᳬ सोमः सोमो ब्वनस्प्पतींनाम्। ब्वनस्प्पतींनामिति वनस्प्पतींनाम्॥ बृहस्प्पतिंर्ब्वाचे ब्वाचे बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिंर्ब्वाचऽ इन्द्रऽ इन्द्रों ब्वाचे बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिंर्ब्वाचऽ इन्द्रंः। ब्वाचऽ इन्द्रऽ इन्द्रों ब्वाचे ब्वाचऽ इन्द्रो ज्ज्यैष्ठ्याय ज्ज्यैष्ठ्यायेन्द्रों ब्वाचे ब्वाचऽ इन्द्रो ज्ज्यैष्ठ्यांय। इन्द्रो ज्ज्यैष्ठ्यांय ज्ज्यैष्ठ्यायेन्द्रऽ इन्द्रो ज्ज्यैष्ठ्यांय रुद्रो रुद्रो ज्ज्यैष्ठ्यायेन्द्रऽ इन्द्रो ज्ज्यैष्ठ्यांय रुद्रः। ज्ज्यैष्ठ्यांय रुद्रो रुद्रो ज्ज्यैष्ठ्याय ज्ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुब्भ्यंः पशुब्भ्यों रुद्रो ज्ज्यैष्ठ्याय ज्ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुब्भ्यंः। रुद्रः पशुब्भ्यंः पशुब्भ्यों रुद्रो रुद्रः पशुब्भ्यों मित्रो मित्रः पशुब्भ्यों रुद्रो रुद्रः पशुब्भ्यों मित्रः। पशुब्भ्यों मित्रो मित्रः पशुब्भ्यंः पशुब्भ्यों

---

1. यहाँ असौ यह सर्वनाम पूर्ववर्ती प्रज्ञापित अर्थ का निर्देश न करने के कारण अनुदात नहीं है पूर्वबाननुदेशः(वा.प्रा.२.७)।

2. वा. प्रा. ४.१५१. के अनुसार दीर्घ स्वर से परवर्ती अनुस्वार आधी मात्राकाल वाला एवं पूर्ववर्ती दीर्घस्वर डेढ़ मात्रा काल वाला होता है।

मित्रः सत्यः सत्यो मित्रः पशुभ्यः पशुभ्यो मित्रः सत्यः। पशुभ्यऽ इति पशु भ्यः। मित्रः सत्यः सत्यो मित्रो मित्रः सत्यो ब्वरुणो ब्वरुणः सत्यो मित्रो मित्रः सत्यो ब्वरुणः। सत्यो ब्वरुणो ब्वरुणः सत्यः सत्यो ब्वरुणो धर्म्मपतीना-न्धर्म्मपतीनाँब्वरुणः सत्यः सत्यो ब्वरुणो धर्म्मपतीनाम्। ब्वरुणो धर्म्मपतीना-न्धर्म्मपतीनाँब्वरुणो ब्वरुणो धर्म्मपतीनाम्। धर्म्मपतीनामिति धर्म्म पतीनाम्॥ ३८॥

इमन्देवा देवाऽ इममिमन्देवाऽ असपत्नमसपत्नन्देवाऽ इममिमन्देवाऽ असपत्नम्[1]। देवाऽ असपत्नमसपत्नन्देवा देवाऽ असपत्नꣳ सुवद्धꣳ सुवद्ध-मसपत्नन्देवा देवाऽ असपत्नꣳ सुवद्धम्। असपत्नꣳ सुवद्धꣳ सुवद्धमसपत्नम-सपत्नꣳ सुवद्धम्महते महते सुवद्धमसपत्नमसपत्नꣳ सुवद्धम्महते। सुवद्धम्म-हते महते सुवद्धꣳ सुवद्धम्महते क्क्षत्राय क्क्षत्राय महते सुवद्धꣳ सुवद्धम्महते क्क्षत्राय। महते क्क्षत्राय क्क्षत्राय महते महते क्क्षत्राय ज्ज्यैष्ठ्याय ज्ज्यैष्ठ्याय क्क्षत्राय महते महते क्क्षत्राय ज्ज्यैष्ठ्याय। क्षत्राय ज्ज्यैष्ठ्याय ज्ज्यैष्ठ्याय क्क्षत्राय क्क्षत्राय ज्ज्यैष्ठ्याय जानराज्याय जानराज्याय ज्ज्यैष्ठ्याय क्क्षत्राय क्क्षत्राय ज्ज्यैष्ठ्याय जानराज्याय। ज्ज्यैष्ठ्याय जानराज्याय जानराज्याय ज्ज्यैष्ठ्याय ज्ज्यैष्ठ्याय जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रस्य जानराज्याय ज्ज्यैष्ठ्याय ज्ज्यैष्ठ्याय जान-राज्यायेन्द्रस्य। जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रस्य जानराज्याय जानराज्यायेन्द्रस्ये-न्द्रियायेन्द्रियायेन्द्रस्य जानराज्याय जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। जानरा-ज्यायेति जान राज्याय। इन्द्रस्येन्द्रियायेन्द्रियायेन्द्रस्येन्द्रस्येन्द्रियाय। इन्द्रियायेतीन्द्रियाय॥ इममुमुष्ष्यामुष्ष्येममिमममुष्ष्य पुत्रम्पुत्रममुष्ष्येममिम-ममुष्ष्य पुत्रम्। अमुष्ष्य पुत्रम्पुत्रममुष्ष्यामुष्ष्य पुत्रममुष्ष्याऽ अमुष्ष्यै

[1]. वा.प्रा.२.१७. के अनुसार यहाँ देवाः यह आमन्त्रित पद अनुदात्त है।

पु॒त्रम॒मु॒ष्ष्या॒मु॒ष्ष्यं पु॒त्रम॒मु॒ष्ष्यै। पु॒त्रम॒मु॒ष्ष्या॑ऽ अ॒मु॒ष्ष्यै पु॒त्रम्पु॒त्रम॒मु॒ष्ष्यै पु॒त्रम्पु॒त्रम॒मु॒ष्ष्यै पु॒त्रम्पु॒त्रम॒मु॒ष्ष्यै पु॒त्रम्। अ॒मु॒ष्ष्यै पु॒त्रम्पु॒त्रम॒मु॒ष्ष्या॑ऽ अ॒मु॒ष्ष्यै पु॒त्रम॒स्या॑ऽ अ॒स्यै पु॒त्रम॒मु॒ष्ष्या॑ऽ अ॒मु॒ष्ष्यै पु॒त्रम॒स्यै। पु॒त्रम॒स्या॑ऽ अ॒स्यै पु॒त्रम्पु॒त्रम॒स्यै ब्रि॒शे ब्रि॒शे॒स्यै पु॒त्रम्पु॒त्रम॒स्यै ब्रि॒शे[1]। अ॒स्यै ब्रि॒शे ब्रि॒शे॒स्या॑ऽ अ॒स्यै ब्रि॒शऽ ए॒षऽ ए॒ष ब्रि॒शे॒स्या॑ऽ अ॒स्यै ब्रि॒शऽ ए॒षः। ब्रि॒शऽ ए॒षऽ ए॒ष ब्रि॒शे ब्रि॒शऽ ए॒ष वो॑ वऽ ए॒ष ब्रि॒शे ब्रि॒शऽ ए॒ष वं॑÷। ए॒ष वो॑ वऽ ए॒षऽ ए॒ष वो॑मीऽ अमी वऽ ए॒षऽ ए॒ष वो॑मी[2]। ब्रो॒मी॒ऽ अ॒मी॒ वो॒ वो॒मी॒ रा॒जा॒ राजा॑मी वो वो॒मी॒ राजा॑। अ॒मी॒ रा॒जा॒ राजा॑मीऽ अमी॒ रा॒जा॒ सोम॒ः सोमो॒ राजा॑मीऽ अमी॒ रा॒जा॒ सोमं॑÷। अ॒मी॒ऽ इत्य॒मी। रा॒जा॒ सोम॒ः सोमो॒ रा॒जा॒ रा॒जा॒ सोमो॒ऽस्माकं॑म॒स्माकु॒ः सोमो॒ रा॒जा॒ रा॒जा॒ सोमो॒ऽस्माकं॑म्। सोमो॒ऽस्माकं॑म॒स्माकु॒ः सोम॒ः सोमो॒ऽस्माकं॑म्ब्राह्म॒णा-नां॑म्ब्राह्म॒णानां॑म॒स्माकु॒ः सोम॒ः सोमो॒ऽस्माकं॑म्ब्राह्म॒णानां॑म्। अ॒स्माकं॑-म्ब्राह्म॒णानां॑म्ब्राह्म॒णानां॑म॒स्माकं॑म॒स्माकं॑म्ब्राह्म॒णाना॒ꣳ रा॒जा॒ राजा॑ ब्राह्म॒णा-नां॑म॒स्माकं॑म॒स्माकं॑म्ब्राह्म॒णाना॒ꣳ राजा॑। ब्रा॒ह्म॒णाना॒ꣳ रा॒जा॒ राजा॑ ब्राह्म॒णा-नां॑म्ब्राह्म॒णाना॒ꣳ राजा॑। राजेति॒ राजा॑॥३९॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे नवमोध्यायः॥

1. अयैकमुत्तरश्च(वा.प्रा.४.५१) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र एदोद्भ्यां पूर्वमकारः(वा.प्रा.४.६२) के अनुसार वि॒शे अ॒स्यै यहाँ एकार से परवर्ती अकार एकार के सहित एकार को प्राप्त करता है। ज्यो. के अनुसार 'कारग्रहणे तत्कालग्रहणम्' -पृ.२३ तौ चेदुदात्तावनुदात्ते स्वरितौ(वा.प्रा.४.६३) से स्वरित स्वर का विधान किया गया है। एदोद्भ्यामकारो लुगभिनिहितः(वा.प्रा.१.११४) से अभिनिहित स्वरित कहा है।

2. अमी पदम् (वा. प्रा. १.९८) अमी यदि पदावयव न होते हुये स्वतन्त्र पद हो तो प्रगृह्य होता है।

॥दशमोध्यायः॥

हरिः॑ ॐ॥ अ॒पो दे॒वा दे॒वाऽ अ॒पो॒पो दे॒वा मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीर्दे॒वाऽ अ॒पो॒पो दे॒वा मधु॑मतीः। दे॒वा मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीर्दे॒वा दे॒वा मधु॑मतीरगृभ्णन्नगृभ्ण॒न्मधु॑मतीर्दे॒वा दे॒वा मधु॑मतीरगृभ्णन्। मधु॑मतीरगृभ्णन्नगृभ्ण॒न्मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीरगृभ्ण॒न्नूर्ज्ज॑स्वती॒रूर्ज्ज॑स्वतीरगृभ्ण॒न्मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीरगृभ्ण॒न्नूर्ज्ज॑स्वतीः। मधु॑मती॒रिति॒ मधु॑ मतीः। अ॒गृ॒भ्ण॒न्नूर्ज्ज॑स्वती॒रूर्ज्ज॑स्वतीरगृभ्णन्नगृभ्ण॒न्नूर्ज्ज॑स्वती राज॒स्वो॒ राज॒स्व॒ऽ ऊर्ज्ज॑स्वतीरगृभ्णन्नगृभ्ण॒न्नूर्ज्ज॑स्वती राज॒स्व॒ः। ऊर्ज्ज॑स्वती राज॒स्वो॒ राज॒स्व॒ऽ ऊर्ज्ज॑स्वती॒रूर्ज्ज॑स्वती राज॒स्व॒श्चिता॑ना॒श्चिता॑ना राज॒स्व॒ऽ ऊर्ज्ज॑स्वती॒रूर्ज्ज॑स्वती राज॒स्व॒श्चिता॑नाः। रा॒ज॒स्व॒श्चिता॑ना॒श्चिता॑ना राज॒स्वो॒ राज॒स्व॒श्चिता॑नाः। रा॒ज॒स्व॒ऽ इति॑ राज॒ स्व॒ः। चिता॑ना॒ऽ इति॒ चिता॑नाः॥ याभि॑र्म्मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णौ॒ याभि॒र्य्याभि॑र्म्मि॒त्रावरु॑णाव॒भ्यु॒भि मि॒त्रावरु॑णौ॒ याभि॒र्य्याभि॑र्म्मि॒त्रावरु॑णाव॒भि[1]। मि॒त्रावरु॑णाव॒भ्यु॒भि मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णाव॒भ्यषि॑ञ्च॒न्नसि॑ञ्चन्न॒भि मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णाव॒भ्यषि॑ञ्चन्[2]। अ॒भ्यषि॑ञ्च॒न्नसि॑ञ्चन्न॒भ्यु॒भ्यषि॑ञ्च॒न्याभि॒र्य्याभि॒रसि॑ञ्चन्न॒भ्यु॒भ्यषि॑ञ्च॒न्याभि॑ः। असि॑ञ्च॒न्याभि॒र्य्याभि॒रसि॑ञ्च॒न्नसि॑ञ्च॒न्याभि॒रिन्द्र॒मिन्द्रँ॒य्याभि॒रसि॑ञ्च॒न्नसि॑ञ्च॒न्याभि॒रिन्द्र॑म्। याभि॒रिन्द्र॒मिन्द्रँ॒य्याभि॒र्य्याभि॒रिन्द्र॒मन॑य॒न्नन॑य॒न्निन्द्रँ॒य्याभि॒र्य्याभि॒रिन्द्र॒मन॑यन्। इन्द्र॒मन॑य॒न्नन॑य॒न्निन्द्र॒मिन्द्र॒मन॑य॒न्नत्य॒त्यन॑य॒न्निन्द्र॒मिन्द्र॒मन॑य॒न्नति॑। अन॑य॒न्नत्य॒त्यन॑य॒न्नन॑य॒न्नत्यरा॑ती॒ररा॑ती॒रत्यन॑य॒न्नन॑य॒न्नत्यरा॑तीः। अत्यरा॑ती॒ररा॑ती॒रत्य॒त्यरा॑तीः। अरा॑ती॒रित्यरा॑तीः॥१॥

---

1. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि(वा.प्रा.२.४८) इस सूत्र के अनुसार यहाँ मि॒त्रावरु॑णौ पद सम्बोधन न होने से द्विरुदात्त है।
2. अव्यवहितोऽपि (वा. प्रा. ३.६५) अकार से व्यवहित होने पर भी अभि से परवर्ती सिञ्च का सकार षकार हो जाता है।

वृष्ण्णऽ ऊर्म्मिरूर्म्मिर्वृष्ण्णो वृष्ण्णऽ ऊर्म्मिरस्यस्यूर्म्मिर्वृष्ण्णो वृष्ण्णऽ ऊर्म्मिरसि। ऊर्म्मिरस्यस्यूर्म्मिरूर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रदाऽ अस्यूर्म्मिरूर्म्मिरसि राष्ट्रदाः। असि राष्ट्रदा राष्ट्रदाऽ अस्यसि राष्ट्रदा राष्ट्रः राष्ट्रः राष्ट्रदाऽ अस्यसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्[1]। राष्ट्रदा राष्ट्रः राष्ट्रः राष्ट्रदा राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे मे राष्ट्रः राष्ट्रदा राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे। राष्ट्रदाऽ इति राष्ट्र दाः। राष्ट्रम्मे मे राष्ट्रः राष्ट्रम्मे देहि देहि मे राष्ट्रः राष्ट्रम्मे देहि। मे देहि देहि मे मे देहि स्वाहा स्वाहा देहि मे मे देहि स्वाहा। देहि स्वाहा स्वाहा देहि देहि स्वाहामुष्म्माऽ अमुष्म्मै स्वाहा देहि देहि स्वाहामुष्म्मै। स्वाहामुष्म्माऽ अमुष्म्मै स्वाहा स्वाहामुष्म्मै वृषसेनो वृषसेनोमुष्म्मै स्वाहा स्वाहामुष्म्मै वृषसेनः। अमुष्म्मै वृषसेनो वृषसेनोमुष्म्माऽ अमुष्म्मै वृषसेनोर्त्थेतोर्त्थेतो वृषसेनोमुष्म्माऽ अमुष्म्मै वृषसेनोर्त्थेतः। वृषसेनोर्त्थेतोर्त्थेतो वृषसेनो वृषसेनोर्त्थेत स्त्थ स्त्थार्त्थेतो वृषसेनो वृषसेनोर्त्थेत स्त्थ। वृषसेनऽ इति वृष सेनः॥२॥

अर्त्थेत स्त्थ स्त्थार्त्थेतोर्त्थेत स्त्थ दत्त दत्त स्त्थार्त्थेतोर्त्थेत स्त्थ दत्त। अर्त्थेतऽ इत्यर्त्थ इतः। स्त्थ दत्त दत्त स्त्थ स्त्थ दत्तौजस्वतीरोजस्वतीर्दत्त स्त्थ स्त्थ दत्तौजस्वतीः[2]। दत्तौजस्वतीरोजस्वतीर्दत्त दत्तौजस्वतीरापऽ आपऽ ओजस्वतीर्दत्त दत्तौजस्वतीरापः। ओजस्वतीरापऽ आपऽ ओजस्वतीरोजस्वतीरापः परिवाहिणीः परिवाहिनीरापऽ ओजस्वतीरोजस्वतीरापः परिवाहिणीः। आपः परिवाहिणीः परिवाहिनीरापऽ आपः परिवाहिणीरपामपाम्परिवाहिनीरापऽ आपः परिवाहिणीरपाम्। परिवाहिणीरपामपाम्परिवाहिनीः परिवा-

1. राष्ट्रदाः राष्ट्रदाः तथा राष्ट्रदाः राष्ट्रम् यहाँ लोपं घौ(वा.प्रा.४.३९) इस सूत्र से घि संज्ञक व्यञ्जन र बाद में रहने से अरिफित कण्ठ्यपूर्व विसर्ग का लोप होता है।

2. दत्त ओजस्वतीः यहाँ सन्धि की दशा में –सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ (वा. प्रा. ४.५८) यह सूत्र सन्ध्यक्षर परे रहने पर अ को सन्ध्यक्षर के सहित औकार करता है।

हिणीरपा-म्पतिः पतिरपाम्परिवाहिनीः परिवाहिणीरपाम्पतिः। परिवाहिनी-रिति परि वाहिनीः। अपाम्पतिः पतिरपामपाम्पतिरपामपाम्पतिरपाम-पाम्पतिरपाम्। पतिरपामपाम्पतिः पतिरपाङ्गर्भो गर्भोपाम्पतिः पतिरपा-ङ्गर्भः। अपाङ्गर्भो गर्भोपामपाङ्गर्भः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यत्वचसो गर्भोपामपाङ्गर्भः सूर्य्यत्वचसः। गर्भः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यत्वचसो गर्भो गर्भः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यत्वचसो गर्भो गर्भः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यवर्चसः॥३॥

सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यवर्चसो मान्दा मान्दाः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यवर्चसो मान्दाः। सूर्य्यत्वचसऽ इति सूर्य्य त्वचसः। सूर्य्यवर्चसो मान्दा मान्दाः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यवर्चसो मान्दा व्व्रजक्षितो व्व्रजक्षितो मान्दाः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यवर्चसो मान्दा व्व्रजक्षितः। सूर्य्यवर्चसऽ इति सूर्य्य व्वर्चसः। मान्दा व्व्रजक्षितो व्व्रजक्षितो मान्दा मान्दा व्व्रजक्षितो व्वाशा व्वाशा व्व्रजक्षितो मान्दा मान्दा व्व्रजक्षितो व्वाशाः। व्व्रजक्षितो व्वाशा व्वाशा व्व्रजक्षितो व्व्रजक्षितो व्वाशाः शविष्ठाः शविष्ठा व्वाशा व्व्रजक्षितो व्व्रजक्षितो व्वाशाः शविष्ठाः[1]। व्व्रजक्षितऽ इति व्व्रज क्षितः। व्वाशाः शविष्ठाः शविष्ठा व्वाशा व्वाशाः शविष्ठाः शक्क्वरीः शक्क्वरीः शविष्ठा व्वाशा व्वाशाः शविष्ठाः[2] शक्क्वरीः। शविष्ठाः शक्क्वरीः शक्क्वरीः शविष्ठाः शविष्ठाः शक्क्वरीर्ज्जनभृतो जनभृतः शक्क्वरीः शविष्ठाः शविष्ठाः शक्क्वरीर्ज्जनभृतः। शक्क्वरीर्ज्जनभृतो जनभृतः शक्क्वरीः शक्क्वरीर्ज्जनभृतो व्विश्वभृतो व्विश्वभृतो जनभृतः शक्क्वरीः शक्क्वरीर्ज्जनभृतो

1. शविष्ठाः यहाँ वा.प्रा.४.१०३. के अनुसार ठकार का द्वित्व प्राप्त है, वह वा.प्रा.४.११०. के अनुसार ट के साथ होता है।

2. वाशाः शविष्ठाः यहाँ सन्धि होने पर निहितमुदात्तस्वरितपरम् (वा. प्रा. ४.१३८) इस सूत्र से वाशाः का स्वरित अनुदात्त होता है।

व्रिश्वभृतः। जनभृतो विश्वभृतो विश्वभृतो जनभृतो जनभृतो विश्वभृतऽ आपऽ आपो विश्वभृतो जनभृतो जनभृतो विश्वभृतऽ आपः। जनभृतऽ इति जन भृतः। विश्वभृतऽ आपऽ आपो विश्वभृतो विश्वभृतऽ आपः स्वराजः स्वराजऽ आपो विश्वभृतो विश्वभृतऽ आपः स्वराजः। विश्वभृतऽ इति विश्व भृतः। आपः स्वराजः स्वराजऽ आपऽ आपः स्वराजः। स्वराजऽ इति स्व राजः॥ महिं क्षत्रङ्क्षत्रम्महि महिं क्षत्रङ्क्षत्रियाय क्षत्रियाय क्षत्रम्महि महिं क्षत्रङ्क्षत्रियाय[1]। क्षत्रङ्क्षत्रियाय क्षत्रियाय क्षत्रङ्क्षत्रङ्क्षत्रियाय व्वन्वाना व्वन्वानाः क्षत्रियाय क्षत्रङ्क्षत्रङ्क्षत्रियाय व्वन्वानाः। क्षत्रियाय व्वन्वाना व्वन्वानाः क्षत्रियाय क्षत्रियाय व्वन्वाना अनाधृष्टाऽ अनाधृष्टा व्वन्वानाः क्षत्रियाय क्षत्रियाय व्वन्वानाऽ अनाधृष्टाः। व्वन्वानाऽ अनाधृष्टाऽ अनाधृष्टा व्वन्वाना व्वन्वानाऽ अनाधृष्टाः सीदत सीदतानाधृष्टा व्वन्वाना व्वन्वानाऽ अनाधृष्टाः सीदत। अनाधृष्टाः सीदत सीदतानाधृष्टाऽ अनाधृष्टाः सीदत सहौजसः सहौजसः सीदतानाधृष्टाऽ अनाधृष्टाः सीदत सहौजसः। सीदत सहौजसः सहौजसः सीदत सीदत सहौजसो दधतीर्दधतीः सहौजसः सीदत सीदत सहौजसो दधतीः। सहौजसो दधतीर्दधतीः सहौजसः सहौजसो दधतीः। सहौजसऽ इति सह ओजसः। दधतीरिति दधतीः॥४॥

सोमस्य त्विषिस्त्विषिः सोमस्य सोमस्य त्विषिरस्यसि त्विषिः सोमस्य सोमस्य त्विषिरसि। त्विषिरस्यसि त्विषिस्त्विषिरसि तवैव तवैवासि त्विषिस्त्विषिरसि तवैव। असि तवैव तवैवास्यसि तवैव मे मे तवैवास्यसि तवैव मे। तवैव मे मे तवैव तवैव मे त्विषिस्त्विषिर्म्मे तवैव तवैव मे त्विषिः। तवेवेति तव

[1]. वा.प्रा.६.२७. के अनुसार क्ष से उत्तरवर्ती त्र आने पर तकार के द्वित्व का निषेध है। यह निषेध क्षत्रिय पद में मानना उचित नहीं है, क्योंकि प्रातिशाख्य की प्रवृत्ति पदों के आधार मानकर है। क्षत्र पद से क्षत्रिय पद पृथक् है।

इव। मे त्विषिस्त्विषिर्म्मे मे त्विषिर्ब्भूयाद् भूयात्त्विषिर्म्मे मे त्विषिर्ब्भूयात्। त्विषिर्ब्भूयाद् भूयात्त्विषिस्त्विषिर्ब्भूयात्। भूयादिति भूयात्॥ अग्ग्नये स्वाहा स्वाहाग्ग्नयेग्ग्नये स्वाहा सोमाय सोमाय स्वाहाग्ग्नयेग्ग्नये स्वाहा सोमाय। स्वाहा सोमाय सोमाय स्वाहा स्वाहा सोमाय सवित्रे सवित्रे सोमाय स्वाहा स्वाहा सोमाय सवित्रे । सोमाय सवित्रे सवित्रे सोमाय सोमाय सवित्रे सरस्वत्यै सरस्वत्यै सवित्रे सोमाय सोमाय सवित्रे सरस्वत्यै। सवित्रे सरस्वत्यै सरस्वत्यै सवित्रे सवित्रे सरस्वत्यै पूष्णणे सरस्वत्यै सवित्रे सवित्रे सरस्वत्यै पूष्णणे[1]। सरस्वत्यै पूष्णणे पूष्णणे सरस्वत्यै सरस्वत्यै पूष्णणे बृहस्प्पतये बृहस्प्पतये पूष्णणे सरस्वत्यै सरस्वत्यै पूष्णणे बृहस्प्पतये। पूष्णणे बृहस्प्पतये बृहस्प्पतये पूष्णणे पूष्णणे बृहस्प्पतयऽ इन्द्रायेन्द्राय बृहस्प्पतये पूष्णणे पूष्णणे बृहस्प्पतयऽ इन्द्राय। बृहस्प्पतयऽ इन्द्रायेन्द्राय बृहस्प्पतये बृहस्प्पतयऽ इन्द्राय घोषाय घोषायेन्द्राय बृहस्प्पतये बृहस्प्पतयऽ इन्द्राय घोषाय[2]। इन्द्राय घोषाय घोषायेन्द्रायेन्द्राय घोषाय श्श्लोकाय श्श्लोकाय घोषायेन्द्रायेन्द्राय घोषाय श्श्लोकाय[3]। घोषाय श्श्लोकाय श्श्लोकाय घोषाय घोषाय श्श्लोकायाꣳशायाꣳशाय श्श्लोकाय घोषाय घोषाय श्श्लोकायाꣳशाय। श्लोकायाꣳशायाꣳशाय श्श्लोकाय श्श्लोकायाꣳशाय भगाय भगायाꣳशाय श्श्लोकाय श्श्लोकायाꣳशाय भगाय। अꣳशाय भगाय भगायाꣳशायाꣳशाय भगायाऽर्य्यम्म्णेऽर्य्यम्म्णे भगायाꣳशायाꣳशाय भगाया-

---

[1]. ऋषरेफेभ्यो नकारो णकारं समानपदे(वा.प्रा.३.८४) इस सूत्र के अनुसार पूष्णे पद में षकार से उत्तरवर्ती नकार णकार हो गया है।

[2]. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार बृहस्पतिः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

[3]. घोषाय श्लोकाय यहाँ सन्धि की स्थिति में वा.प्रा.४.१०१. से शकार का द्विरुच्चारण होगा। वा.प्रा.४.१०३. में ऊष्म वर्णों के बाद स्पर्श के ही द्वित्व का विधान है, अतः लकार का द्वित्व नहीं होगा।

इव। मे॒ त्विषि॒स्त्विषि॑र्म्मे मे॒ त्विषि॑र्भ्भूयाद् भूया॒त्त्विषि॑र्म्मे मे॒ त्विषि॑र्भ्भूयात्। त्विषि॑र्भ्भूयाद् भूया॒त्त्विषि॒स्त्विषि॑र्भ्भूयात्। भू॒या॒दिति॑ भूयात्॥ अ॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य। स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य सवि॒त्रे सं॑वि॒त्रे सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य सवि॒त्रे । सोमा॑य सवि॒त्रे सं॑वि॒त्रे सोमा॑य॒ सोमा॑य सवि॒त्रे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै सवि॒त्रे सोमा॑य॒ सोमा॑य सवि॒त्रे सर॑स्वत्यै। स॒वि॒त्रे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै सवि॒त्रे सं॑वि॒त्रे सर॑स्वत्यै पू॒ष्ण्णे पू॒ष्ण्णे सर॑स्वत्यै सवि॒त्रे सं॑वि॒त्रे सर॑स्वत्यै पू॒ष्ण्णे[1]। सर॑स्वत्यै पू॒ष्ण्णे पू॒ष्ण्णे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै पू॒ष्ण्णे बृ॒ह॒स्स्पत॑ये॒ बृ॒ह॒स्स्पत॑ये पू॒ष्ण्णे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै पू॒ष्ण्णे बृ॒ह॒स्स्पत॑ये। पू॒ष्ण्णे बृ॒ह॒स्स्पत॑ये॒ बृ॒ह॒स्स्पत॑ये पू॒ष्ण्णे पू॒ष्ण्णे बृ॒ह॒स्स्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ बृ॒ह॒स्स्पत॑ये पू॒ष्ण्णे पू॒ष्ण्णे बृ॒ह॒स्स्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॑य। बृ॒ह॒स्स्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ बृ॒ह॒स्स्पत॑ये॒ बृ॒ह॒स्स्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॒येन्द्रा॑य॒ बृ॒ह॒स्स्पत॑ये॒ बृ॒ह॒स्स्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॑य॒ घोषा॑य[2]। इन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॒येन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॑य॒ घोषा॒येन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॑य[3]। घोषा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॑य। श्लोका॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॑य॒ भगा॑य॒ भगा॒याꣳशा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॑य॒ भगा॑य। अꣳशा॑य॒ भगा॑य॒ भगा॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ भगा॑याऽर्य्य॒म्म्णे॒ऽर्य्यम्म्णे भगा॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ भगा॑या-

---

[1]. ऋषरेफेभ्यो नकारो णकारं समानपदे(वा.प्रा.३.८४) इस सूत्र के अनुसार पूष्णे पद में षकार से उत्तरवर्ती नकार णकार हो गया है।

[2]. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार बृहस्पतिः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

[3]. घोषाय श्लोकाय यहाँ सन्धि की स्थिति में वा.प्रा.४.१०१. से शकार का द्विरुच्चारण होगा। वा.प्रा.४.१०३. में ऊष्म वर्णों के बाद स्पर्श के ही द्वित्व का विधान है, अतः लकार का द्वित्व नहीं होगा।

ऽर्व॒म्म्णे। भगा॑याऽर्व॒म्म्णेऽर्व॒म्म्णे भगा॑य॒ भगा॑याऽर्व॒म्म्णे। अ॒ऽर्व॒म्म्णऽ इत्य॑ऽर्व॒-म्म्णे ॥५॥

अनि॑भृष्टमस्य॒स्यनि॑भृष्ट॒मनि॑भृष्टमसि व्वा॒चो व्वा॒चो॒स्यनि॑भृष्ट॒मनि॑भृष्टमसि व्वा॒चः। अनि॑भृष्ट॒मित्यनि॑ भृष्टम्। अ॒सि॒ व्वा॒चो व्वा॒चो॒स्यसि व्वा॒चो बन्धु॒र्ब्बन्धु॑र्व्वा॒चो॒-स्यसि व्वा॒चो बन्धुः॑। व्वा॒चो बन्धु॒र्ब्बन्धु॑र्व्वा॒चो व्वा॒चो बन्धु॑स्तप॒ोजास्त॑प॒ोजा बन्धु॑-र्व्वा॒चो व्वा॒चो बन्धु॑स्तप॒ोजाः। बन्धु॑स्तप॒ोजास्त॑प॒ोजा बन्धु॒र्ब्बन्धु॑स्तप॒ोजाः सोम॑-स्य॒ सोम॑स्य तप॒ोजा बन्धु॒र्ब्बन्धु॑स्तप॒ोजाः सोम॑स्य। त॒प॒ोजाः सोम॑स्य॒ सोम॑स्य तप॒ोजास्त॑प॒ोजाः सोम॑स्य दा॒त्रन्दा॒त्रꣳ सोम॑स्य तप॒ोजास्त॑प॒ोजाः सोम॑स्य दा॒त्रम्[1]। त॒प॒ोजाऽ इति॑ तपः॒ जाः। सोम॑स्य दा॒त्रन्दा॒त्रꣳ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य दा॒त्रम॑स्यसि दा॒त्रꣳ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य दा॒त्रम॑सि। दा॒त्रम॑स्यसि दा॒त्रन्दा॒त्रम॑सि॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑सि दा॒त्रन्दा॒त्रम॑सि॒ स्वाहा॑। अ॒सि॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑स्यसि॒ स्वाहा॑ राज॒स्वो॒ राज॒स्वः॒ स्वाहा॑स्यसि॒ स्वाहा॑ राज॒स्वः॑। स्वाहा॑ राज॒स्वो॒ राज॒स्वः॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ राज॒स्वः॑। रा॒ज॒स्व॒ऽ इति॑ राज॒ स्वः॑ ॥६॥

स॒ध॒मादो॑ द्यु॒म्म्निनी॑र्द्यु॒म्म्निनीः॒ सध॒माद॑ः सध॒मादो॑ द्यु॒म्म्निनी॒राप॒ऽ आपो॑ द्यु॒म्म्निनीः॒ सध॒माद॑ः सध॒मादो॑ द्यु॒म्म्निनी॒राप॑ः। स॒ध॒माद॒ऽ इति॑ सध॒ माद॑ः। द्यु॒म्म्निनी॒राप॒ऽ आपो॑ द्यु॒म्म्निनी॑र्द्यु॒म्म्निनी॒राप॑ऽ ए॒ताऽ ए॒ताऽ आपो॑ द्यु॒म्म्निनी॑र्द्यु॒म्म्नि-नी॒राप॑ऽ ए॒ताः। आप॑ऽ ए॒ताऽ ए॒ताऽ आप॒ऽ आप॑ऽ ए॒ताऽ अना॑धृष्टा॒ऽ अना॑धृष्टाऽ ए॒ताऽ आप॒ऽ आप॑ऽ ए॒ताऽ अना॑धृष्टाः। ए॒ताऽ अना॑धृष्टा॒ऽ अना॑धृष्टाऽ ए॒ताऽ ए॒ताऽ अना॑धृष्टाऽ अप॒स्यो॒प॒स्योना॑धृष्टाऽ ए॒ताऽ ए॒ताऽ अना॑धृष्टाऽ अप॒स्यः॑। अना॑धृष्टाऽ अप॒स्यो॒प॒स्योना॑धृष्टा॒ऽ अना॑धृष्टाऽ अप॒स्यो॒ व्वसा॑ना॒ व्वसा॑नाऽ अप॒स्योना॑धृष्टा॒ऽ

[1]. वा. प्रा. ६.२६. के अनुसार दात्रम् पद में दो स्पर्शों का संयोग है।

अनाधृष्टाऽ[1] अपस्यो वसानाः। अपस्यो वसाना वसानाऽ अपस्योपस्यो वसानाः। वसानाऽ इति वसानाः॥ पस्त्यासु चक्रे चक्रे पस्त्यासु पस्त्यासु चक्रे वरुणो वरुणश्चक्रे पस्त्यासु पस्त्यासु चक्रे वरुणः। चक्रे वरुणो वरुणश्चक्रे चक्रे वरुणः सधस्थꣳ सधस्थँवरुणश्चक्रे चक्रे वरुणः सधस्थम्। वरुणः सधस्थꣳ सधस्थँवरुणो वरुणः सधस्थमपामपाꣳ सधस्थँवरुणो वरुणः सधस्थमपाम्। सधस्थमपामपाꣳ सधस्थꣳ सधस्थमपाꣳ शिशुः शिशुरपाꣳ सधस्थꣳ सधस्थमपाꣳ शिशुः। सधस्थमिति सध स्थम्। अपाꣳ शिशुः शिशुरपामपाꣳ शिशुर्मातृतमासु मातृतमासु शिशुरपामपाꣳ शिशुर्मातृतमासु। शिशुर्मातृतमासु मातृतमासु शिशुः शिशुर्मातृतमास्वन्तरन्तर्मातृतमासु शिशुः शिशुर्मातृतमास्वन्तः। मातृतमास्वन्तरन्तर्मातृतमासु मातृतमास्वन्तः। मातृतमास्विति मातृ तमासु। अन्तरित्यन्तः॥७॥

क्षत्रस्योल्बमुल्बङ्क्षत्रस्य क्षत्रस्योल्बमस्यस्युल्बङ्क्षत्रस्य क्षत्रस्योल्बमसि[2]। उल्बमस्यस्युल्बमुल्बमसि जरायु जराय्वस्युल्बमुल्बमसि जरायु। असि जरायु जराय्वस्यसि जरायु योनिर्योनिर्जराय्वस्यसि जरायु योनिः। जरायु योनिर्योनिर्जरायु जरायु योनिर्नाभिर्नाभिर्योनिर्जरायु जरायु योनिर्नाभिः। योनिर्नाभिर्नाभिर्योनिर्योनिर्नाभिरिन्द्रस्येन्द्रस्य नाभिर्योनिर्योनिर्नाभिरिन्द्रस्य। नाभिरिन्द्रस्येन्द्रस्य नाभिर्नाभिरिन्द्रस्य वार्त्रघ्नँवार्त्रघ्नमिन्द्रस्य नाभिर्नाभिरिन्द्रस्य वार्त्रघ्नम्[3]। इन्द्रस्य वार्त्रघ्नँवार्त्रघ्नमिन्द्रस्येन्द्रस्य

---

1. वा.प्रा.५.२४. के अनुसार अनाधृष्टाः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

2. उल्बम् यहाँ स्वरात्संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र(वा.प्रा.४.१०१) इस सूत्र से लकार के द्विरुच्चारण की प्राप्ति है परन्तु ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) इस सूत्र के अनुसार लकारोत्तरवर्ती बकार का द्विरुच्चारण प्राप्त है। वा.प्रा.१.१५९. के अनुसार यहाँ परवर्ती सूत्र प्रबल होगा।

3. वा. प्रा. ३.९२. के अनुसार वार्त्रघ्नम् का नकार प्रकृतिभाव से रहता है।

व्वार्त्रँग्घ्नम्मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ व्वार्त्रँग्घ्न॒मिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ व्वार्त्रँग्घ्नम्मि॒त्रस्य॑। व्वार्त्रँग्घ्नम्मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ व्वार्त्रँग्घ्नँ॒व्वार्त्रँग्घ्नम्मि॒त्रस्य॒ व्व॑रुणस्य॒ व्व॑रुणस्य मि॒त्रस्य॒ व्वार्त्रँग्घ्नँ॒व्वार्त्रँग्घ्नम्मि॒त्रस्य॒ व्व॑रुणस्य। व्वार्त्रँग्घ्न॒मिति॒ वार्त्रँ घ्नम्। मि॒त्रस्य॒ व्व॑रुणस्य॒ व्व॑रुणस्य मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ व्व॑रुणस्य॒ त्वया॒ त्वया॒ व्व॑रुणस्य मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ व्व॑रुणस्य॒ त्वया॑। व्व॑रुणस्य॒ त्वया॒ त्वया॒ व्व॑रुणस्य॒ व्व॑रुणस्य॒ त्वया॒यम॒यन्त्वया॒ व्व॑रुणस्य॒ व्व॑रुणस्य॒ त्वया॒यम्। त्वया॒यम॒यन्त्वया॒ त्वया॒यँव्वृ॒त्रँव्वृ॒त्रम॒यन्त्वया॒ त्वया॒यँव्वृ॒त्रम्। अ॒यँव्वृ॒त्रँव्वृ॒त्रम॒यम॒यँव्वृ॒त्रँव्व॑धेद्व॒धेद्वृ॒त्रम॒यम॒यँव्वृ॒त्रँव्व॑धेत्। व्वृ॒त्रँव्व॑धेद्व॒धेद्वृ॒त्रँ-व्वृ॒त्रँव्व॑धेत्। व्व॒धे॒दिति॑ वधेत्॥ दृ॒बा रु॒जा रु॒जा दृ॒बा दृ॒बा रु॒जा क्क्षु॒मा क्क्षु॒मा रु॒जा दृ॒बा दृ॒बा रु॒जा क्क्षु॒मा। रु॒जा क्क्षु॒मा क्क्षु॒मा रु॒जा रु॒जा क्क्षु॒मा। क्षु॒मेति॑ क्क्षु॒मा॥ पा॒तैन॑मेनम्पा॒त पा॒तैन॒म्प्राञ्च॒म्प्राञ्च॑मेनम्पा॒त पा॒तैन॒म्प्राञ्च॑म्। ए॒न॒म्प्राञ्च॒म्प्राञ्च॑मे-नमेन॒म्प्राञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॒म्प्राञ्च॑मेनमेन॒म्प्राञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑म्। प्राञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑म्प्र॒-त्यञ्च॒म्प्राञ्च॒म्प्राञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॒म्प्राञ्च॒म्प्राञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑म्। प्र॒त्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्यस्ति॒-र्य्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्दि॒ग्ग्भ्यः। ति॒र्य्यञ्च॑न्दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्यस्ति॒र्य्य-ञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्दि॒ग्ग्भ्यः पा॑त पात दि॒ग्ग्भ्यस्ति॒र्य्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्दि॒ग्ग्भ्यः पा॑त। दि॒ग्ग्भ्यः पा॑त पात दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्यः पा॑त। दि॒ग्ग्भ्यऽ इति॑ दि॒क् भ्यः। पा॒तेति॑ पात॥८॥

आ॒विर्म्मर्य्या मर्य्याऽ आ॒विरा॒विर्म्मर्य्या॒ऽ आवि॑त्त॒ऽ आवि॑त्तो मर्य्याऽ आ॒वि-रा॒विर्म्मर्य्या॒ऽ आवि॑त्तः[1]। म॒र्य्या॒ऽ आवि॑त्त॒ऽ आवि॑त्तो मर्य्या मर्य्या॒ऽ आवि॑त्तोऽ अ॒ग्निर॒ग्निरावि॑त्तो मर्य्या मर्य्या॒ऽ आवि॑त्तोऽ अ॒ग्निः[2]। आवि॑त्तोऽ अ॒ग्निर॒ग्निरा-

---

[1]. वा. प्रा. २.१६. के अनुसार यहाँ मर्याः पद अनुदात्त है।

[2]. आवित्तः अग्निः यहाँ वा.प्रा.४.८५. के अनुसार विसर्ग से सम्बन्धित ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

वित्तऽ आवित्तोऽ अग्निर्गृहपतिर्गृहपतिरग्निरावित्तऽ आवित्तोऽ अग्निर्गृहपतिः। आवित्तऽ इत्या वित्तः। अग्निर्गृहपतिर्गृहपतिरग्निरग्निर्गृहपतिरावित्तऽ आवित्तो गृहपतिरग्निरग्निर्गृहपतिरावित्तः। गृहपतिरावित्तऽ आवित्तो गृहपतिर्गृहपतिरा-वित्तऽ इन्द्रऽ इन्द्रऽ आवित्तो गृहपतिर्गृहपतिरावित्तऽ इन्द्रः। गृहपतिरिति गृह पतिः। आवित्तऽ इन्द्रऽ इन्द्रऽ आवित्तऽ आवित्तऽ इन्द्रो वृद्धश्रवा वृद्धश्रवाऽ इन्द्रऽ आवित्तऽ आवित्तऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः। आवित्तऽ इत्या वित्तः। इन्द्रो वृद्धश्रवा वृद्धश्रवाऽ इन्द्रऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाऽ आवित्तावावित्तौ वृद्धश्रवाऽ इन्द्रऽ इन्द्रो वृद्ध-श्रवाऽ आवित्तौ। वृद्धश्रवाऽ आवित्तावावित्तौ वृद्धश्रवा वृद्धश्रवाऽ आवित्तौ मित्रा-वरुणौ मित्रावरुणावावित्तौ वृद्धश्रवा वृद्धश्रवाऽ आवित्तौ मित्रावरुणौ। वृद्धश्रवाऽ इति वृद्ध श्रवाः। आवित्तौ मित्रावरुणौ मित्रावरुणावावित्तावावित्तौ मित्रावरुणौ धृतव्रतौ धृतव्रतौ मित्रावरुणावावित्तावावित्तौ मित्रावरुणौ धृतव्रतौ। आवित्तावि-त्या वित्तौ। मित्रावरुणौ धृतव्रतौ धृतव्रतौ मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ धृतव्रतावावि-त्तऽ आवित्तो धृतव्रतौ मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ धृतव्रतावावित्तः। धृतव्रतावावित्तऽ आवित्तो धृतव्रतौ धृतव्रतावावित्तः पूषा पूषावित्तो धृतव्रतौ धृतव्रतावावित्तः पूषा। धृतव्रतावविति धृत व्रतौ। आवित्तः पूषा पूषावित्तऽ आवित्तः पूषा विश्ववेदा विश्व-वेदाः पूषावित्तऽ आवित्तः पूषा विश्ववेदाः। आवित्तऽ इत्या वित्तः। पूषा विश्ववेदा विश्ववेदाः पूषा पूषा विश्ववेदाऽ आवित्तेऽ आवित्ते विश्ववेदाः पूषा पूषा विश्ववेदाऽ आवित्ते। विश्ववेदाऽ आवित्तेऽ आवित्ते विश्ववेदा विश्ववेदाऽ आवित्ते द्यावापृथिवी द्यावापृथिवीऽ आवित्ते विश्ववेदा विश्ववेदाऽ आवित्ते द्यावापृथिवी। विश्ववेदाऽ इति विश्व वेदाः। आवित्ते द्यावापृथिवी द्यावापृथिवीऽ आवित्तेऽ आवित्ते द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवौ विश्वशम्भुवौ द्यावापृथिवीऽ आवित्तेऽ आवित्ते द्यावापृथिवी विश्वश-

म्भुवौ। आविंत्तेऽ इत्या विंत्ते[1]। द्यावांपृथिवी विश्वशंम्भुवौ विश्वशंम्भुवौ द्यावां-पृथिवी द्यावांपृथिवी विश्वशंम्भुवावावित्ताविंत्ता विश्वशंम्भुवौ द्यावांपृथिवी द्यावांपृ-थिवी विश्वशंम्भुवावाविंत्ता[2]। द्यावांपृथिवीऽ इति द्यावांपृथिवी। विश्वशंम्भुवा-वावित्ताविंत्ता विश्वशंम्भुवौ विश्वशंम्भुवावावित्तादिंतिरदिंतिराविंत्ता विश्वशंम्भुवौ विश्वशंम्भुवावावित्तादिंतिः। विश्वशंम्भुवाविति विश्व शंम्भुवौ। आवित्तादिंतिर-दिंतिरावित्तावित्तादिंतिरुरुशंम्र्मोरुशम्र्मादिंतिरावित्तावित्तादिंतिरुरुशंम्र्मा। आवि-त्तेत्या विंत्ता। अदिंतिरुरुशंम्र्मोरुशम्र्मादिंतिरदिंतिरुरुशंम्र्मा। उरुशम्र्मेत्युरु शंम्र्मा॥९॥

अवेंष्टा दन्दशूकां दन्दशूकाऽ अवेंष्टाऽ अवेंष्टा दन्दशूकाः प्राचीम्प्राचीं-न्दन्दशूकाऽ अवेंष्टाऽ अवेंष्टा दन्दशूकाः प्राचींम्। अवेंष्टाऽ इत्यवं इष्टाः। दन्द-शूकाः प्राचीम्प्राचींन्दन्दशूकां दन्दशूकाः प्राचीमा रोंह रोहा प्राचींन्दन्दशूकां दन्दशूकाः प्राचीमा रोंह। प्राचीमा रोंह रोहा प्राचीम्प्राचीमा रोंह गायत्री गांय-त्री रोहा प्राचीम्प्राचीमा रोंह गायत्री। आ रोंह। रोह गायत्री गांयत्री रोंह रोह गायत्री त्वां त्वा गायत्री रोंह रोह गायत्री त्वां। गायत्री त्वां त्वा गायत्री गांयत्री त्वांवत्ववतु त्वा गायत्री गांयत्री त्वांवतु। त्वावत्ववतु त्वा त्वावतु रथन्तरꣳ रंथन्तरमंवतु त्वा त्वावतु रथन्तरम्। अवतु रथन्तरꣳ रंथन्तरमंवत्ववतु रथन्तरꣳ साम साम रथन्तरमंवत्ववतु रथन्तरꣳ सामं। रथन्तरꣳ साम सामं रथन्तरꣳ रंथन्तरꣳ सामं त्रिवृत्रिवृत्सामं रथन्तरꣳ रंथन्तरꣳ सामं त्रिवृत्। रथन्तरमितिं रथम् तरम्। सामं त्रिवृत्रिवृत्साम सामं त्रिवृत्स्तोम स्तोमंस्त्रिवृत्साम सामं त्रिवृ-

[1]. एकारेकारोकारा द्विवचनान्ताः (वा. प्रा. १.९३) एकार, ईकार एवं ऊकार द्विवचनान्त होने पर प्रगृह्य होते हैं।

[2]. आवित्ता आवित्ता यहाँ सिं सवर्णे दीर्घम्(वा.प्रा.४.५२) इस सूत्र से दीर्घ होता है।

त्स्तोम॑ः[1]। त्रिवृत्स्तोम॒ स्तोम॑स्त्रिवृत्त्रिवृत्स्तोमो॑ वस॒न्तो व॑स॒न्त स्तोम॑स्त्रिवृ-त्रिवृत्स्तोमो॑ वस॒न्तः[2]। त्रिवृदिति॑ त्रि वृत्। स्तोमो॑ वस॒न्तो व॑स॒न्त स्तोम॒ स्तोमो॑ वस॒न्तऽ ऋतुर्ऋतुर्व॑स॒न्त स्तोम॒ स्तोमो॑ वस॒न्तऽ ऋ॒तुः। व॒स॒न्तऽ ऋ॒तुर्ऋ॒-तुर्व॑स॒न्तो व॑स॒न्तऽ ऋ॒तुर्ब्रह्म॒ ब्रह्म॑ऽ ऋ॒तुर्व॑स॒न्तो व॑स॒न्तऽ ऋ॒तुर्ब्रह्म॑। ऋ॒तुर्ब्रह्म॒ ब्रह्म॑ऽ ऋ॒तुर्ऋ॒तुर्ब्रह्म॒ द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒म्ब्रह्म॑ऽ ऋ॒तुर्ऋ॒तुर्ब्रह्म॒ द्रवि॑णम्। ब्रह्म॒ द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒म्ब्रह्म॒ ब्रह्म॒ द्रवि॑ण॒न्दक्षि॑णा॒न्दक्षि॑णा॒न्द्रवि॑ण॒म्ब्रह्म॒ ब्रह्म॒ द्रवि॑ण॒न्दक्षि॑णाम्। द्रवि॑ण॒न्द-क्षि॑णा॒न्दक्षि॑णा॒न्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒न्दक्षि॑णा॒मा रो॑ह रो॒हा दक्षि॑णा॒न्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒-न्दक्षि॑णा॒मा रो॑ह॥१०॥

दक्षि॑णा॒मा रो॑ह रो॒हा दक्षि॑णा॒न्दक्षि॑णा॒मा रो॑ह त्रि॒ष्टुप्त्रि॒ष्टुब्रो॒हा दक्षि॑णा॒न्दक्षि॑णा॒मा रो॑ह त्रि॒ष्टुप्[3]। आ रो॑ह। रो॒ह॒ त्रि॒ष्टुप्त्रि॒ष्टुब्रो॑ह रोह त्रि॒ष्टु-प्त्वा॑ त्वा त्रि॒ष्टुब्रो॑ह रोह त्रि॒ष्टुप्त्वा॑। त्रि॒ष्टुप्त्वा॑ त्वा त्रि॒ष्टुप्त्रि॒ष्टुप्त्वा॑वत्ववतु त्वा त्रि॒ष्टुप्त्रि॒ष्टुप्त्वा॑वतु। त्रि॒ष्टुबिति॑ त्रि स्तुप्। त्वा॒व॒त्व॒व॒तु॒ त्वा॒ त्वा॒व॒तु॒ बृ॒हद् बृ॒हद॑वतु त्वा त्वावतु बृ॒हत्। अ॒व॒तु॒ बृ॒हद् बृ॒हद॑वत्ववतु बृ॒हत्साम॒ साम॑ बृ॒हद॑वत्व-वतु बृ॒हत्साम॑। बृ॒हत्साम॒ साम॑ बृ॒हद् बृ॒हत्साम॑ पञ्चद॒शः प॑ञ्चद॒शः साम॑ बृ॒हद् बृ॒हत्साम॑ पञ्चद॒शः। साम॑ पञ्चद॒शः प॑ञ्चद॒शः साम॒ साम॑ पञ्चद॒श स्तोम॒ स्तोम॑ः पञ्चद॒शः साम॒ साम॑ पञ्चद॒श स्तोम॑ः। प॒ञ्च॒द॒श स्तोम॒ स्तोम॑ः पञ्चद॒शः प॑ञ्चद॒श स्तोमो॑ ग्ग्री॒ष्म्मो ग्ग्री॒ष्म्म स्तोम॑ः पञ्चद॒शः प॑ञ्चद॒श स्तोमो॑ ग्ग्री॒ष्म्मः। प॒ञ्च॒द॒शऽ इति॑ पञ्च द॒शः। स्तोमो॑ ग्ग्री॒ष्म्मो ग्ग्री॒ष्म्म स्तोम॒ स्तोमो॑ ग्ग्री॒ष्म्मऽ

---

[1]. त्रिवृत्स्तोमः यहाँ पर यैस्तु परं तैर्न पूर्वम् (वा. प्रा. ४.१०५) के अनुसार सकार के पूर्व का तकार द्वित्व नहीं होगा।

[2]. वसन्तः स्तोमः तथा स्तोमः स्तोमः यहाँ लुङ् मुदि जित्परे(वा.प्रा.२.१३) इस सूत्र से विसर्ग का लोप होता है।

[3]. भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) इस सूत्र के अनुसार त्रिस्तुप् इस पद का सकार षकार होता है, षात्तथो मूर्धन्यम्(वा.प्रा.३.७९) से षकारोत्तरवर्ती तकार का टकार तथा टकार का द्वित्व ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) से होता है।

ऋतुर्ऋतुर्ग्ग्रीष्म्म स्तोम स्तोमो ग्ग्रीष्म्मऽ ऋतुः। ग्रीष्म्मऽ ऋतुर्ऋतुर्ग्ग्रीष्म्मो ग्ग्रीष्म्मऽ ऋतुः क्क्षत्रङ्क्षत्रमृतुर्ग्ग्रीष्म्मो ग्ग्रीष्म्मऽ ऋतुः क्क्षत्रम्। ऋतुः क्क्षत्रङ्क्षत्रमृतुर्ऋतुः क्क्षत्रन्द्रविणन्द्रविणङ्क्षत्रमृतुर्ऋतुः क्क्षत्रन्द्रविणम्। क्षत्रन्द्रविणन्द्रविणङ्क्षत्रङ्क्षत्रन्द्रविणम्प्रतीचीम्प्रतीचीन्द्रविणङ्क्षत्रङ्क्षत्रन्द्रविणम्प्रतीचीम्। द्रविणम्प्रतीचीम्प्रतीचीन्द्रविणन्द्रविणम्प्रतीचीमा रोह रोहा प्प्रतीचीन्द्रविणन्द्रविणम्प्रतीचीमा रोह॥११॥

प्रतीचीमा रोह रोहा प्प्रतीचीम्प्रतीचीमा रोह जगती जगती रोहा प्प्रतीचीम्प्रतीचीमा रोह जगती। आ रोह। रोह जगती जगती रोह रोह जगती त्वा त्वा जगती रोह रोह जगती त्वा। जगती त्वा त्वा जगती जगती त्वावत्त्ववतु त्वा जगती जगती त्वावतु। त्वावत्त्ववतु त्वा त्वावतु व्वैरूपँव्वैरूपमवतु त्वा त्वावतु व्वैरूपम्[1]। अवतु व्वैरूपँव्वैरूपमवत्त्ववतु व्वैरूपꣳ साम साम व्वैरूपमवत्त्ववतु व्वैरूपꣳ साम। व्वैरूपꣳ साम साम व्वैरूपँव्वैरूपꣳ साम सप्प्तदशः सप्प्तदशः साम व्वैरूपँव्वैरूपꣳ साम सप्प्तदशः। साम सप्प्तदशः सप्प्तदशः साम साम सप्प्तदश स्तोम स्तोमः सप्प्तदशः साम साम सप्प्तदश स्तोमः। सप्प्तदश स्तोम स्तोमः सप्प्तदशः सप्प्तदश स्तोमो व्वर्षा व्वर्षा स्तोमः सप्प्तदशः सप्प्तदश स्तोमो व्वर्षाः। सप्प्तदशऽ इति सप्प दशः। स्तोमो व्वर्षा व्वर्षा स्तोम स्तोमो व्वर्षाऽ ऋतुर्ऋतुर्व्वर्षा स्तोम स्तोमो व्वर्षाऽ ऋतुः। व्वर्षाऽ ऋतुर्ऋतुर्व्वर्षा व्वर्षाऽ ऋतुर्व्विड्विड्डृतुर्व्वर्षा व्वर्षाऽ ऋतुर्व्विट्। ऋतुर्व्विड्विड्डृतुर्ऋतुर्व्विड्ड् द्रविणन्द्रविणँव्विड्डृतुर्ऋतुर्व्विड्ड् द्रविणम्। व्विड्ड् द्रविणन्द्रविणँव्विड्विड्ड् द्रविणमुदीचीमुदीचीन्द्रविणँव्विड्विड्ड् द्रविणमुदीचीम्। द्रविणमुदीचीमुदीचीन्द्रविणन्द्रविणमुदीचीमा रोह रोहोदीचीन्द्रविणन्द्रविणमुदीचीमा रोह॥१२॥

[1]. ऐकारौकारौ च (वा. प्रा. ४.१४५) ऐकार एवं औकार एक वर्ण की भाँति उच्चारित होते हैं।

उदीचीमा रोह रोहोदीचीमुदीचीमा रोहानुष्टुबनुस्तुब्रोहोदीचीमुदीचीमा[1]
रोहानुष्टुप्। आ रोह। रोहानुष्टुबनुस्तुब्रोह रोहानुष्टुप्प्त्वा त्वानुस्तुब्रोह रोहानुष्टु-
प्प्त्वा। अनुष्टुप्प्त्वा त्वानुस्तुबनुष्टुप्प्त्वावत्ववतु त्वानुस्तुबनुष्टुप्प्त्वावतु। अनु-
स्तुबित्यनु स्तुप्। त्वावत्ववतु त्वा त्वावतु वैराजँवैराजमवतु त्वा त्वावतु वैरा-
जम्। अवतु वैराजँवैराजमवत्ववतु वैराजꣳ साम साम वैराजमवत्ववतु वैराजꣳ
साम। वैराजꣳ साम साम वैराजँवैराजꣳ सामैकविꣳशऽ एकविꣳशः साम
वैराजँवैराजꣳ सामैकविꣳशः। सामैकविꣳशऽ एकविꣳशः साम सामैकविꣳश
स्तोम स्तोमऽ एकविꣳशः साम सामैकविꣳश स्तोमः। एकविꣳश स्तोम
स्तोमऽ एकविꣳशऽ एकविꣳश स्तोमः शरच्छरत्स्तोमऽ एकविꣳशऽ एक-
विꣳश स्तोमः शरत्[2]। एकविꣳशऽ इत्येक विꣳशः। स्तोमः शरच्छरत्स्तोम
स्तोमः शरदृतुर्ऋतुः शरत्स्तोम स्तोमः शरदृतुः। शरदृतुर्ऋतुः शरच्छरदृतुः
फलम्फलमृतुः शरच्छरदृतुः फलम्[3]। ऋतुः फलम्फलमृतुर्ऋतुः फलन्द्रवि-
णन्द्रविणम्फलमृतुर्ऋतुः फलन्द्रविणम्। फलन्द्रविणन्द्रविणम्फलम्फलन्द्रवि-
णमूर्द्धामूर्द्धान्द्रविणम्फलम्फलन्द्रविणमूर्द्धाम्। द्रविणमूर्द्धामूर्द्धान्द्रविणन्द्रविणमू-
र्द्धामा रोह रोहोर्द्धान्द्रविणन्द्रविणमूर्द्धा मा रोह॥१३॥

ऊर्द्धामा रोह रोहोर्द्धामूर्द्धामा रोह पङ्क्तिः पङ्क्ती रोहोर्द्धामूर्द्धामा रोह
पङ्क्तिः। आ रोह। रोह पङ्क्तिः पङ्क्ती रोह रोह पङ्क्तिस्त्वा त्वा पङ्क्ती रोह रोह
पङ्क्तिस्त्वा। पङ्क्तिस्त्वा त्वा पङ्क्तिः पङ्क्तिस्त्वावत्ववतु त्वा पङ्क्तिः

[1]. रोह आ उदीचीम् यहाँ रोह के साथ सन्धि न करके आ की सन्धि उ के साथ करने पर ओदीचाम् होगा, फिर रोह के साथ ओदीचीम् की सन्धि होने पर रोहौदीचीम् ऐसा स्वरूप हो सकता है परन्तु ऋ.प्रा. के नियम आनुपूर्व्येण सन्धीन् के अनुसार हमें सर्वप्रथम रोह की सन्धि आ के साथ करनी होगी तदनन्तर रोहा की सन्धि उ के साथ।

[2]. शरत्स्तोमः यहाँ सकार के पहले तथा बाद के तकार का द्वित्व नहीं होगा, यैस्तु परं तैर्न पूर्वम्(वा.प्रा.४.१०५), तथा नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः (वा.प्रा. ४.१०६)

[3]. प्रकृत्या कखयोः पफयोश्च (वा. प्रा. ३.११) इस सूत्र के अनुसार यहाँ फकार परे रहते विसर्ग अविकृत रहता है।

पङ्क्तिस्त्वावतु । त्वावत्ववतु त्वा त्वावतु शाक्वररैवते शाक्वररैवतेऽ अवतु त्वा त्वावतु शाक्वररैवते। अवतु शाक्वररैवते शाक्वररैवतेऽ अवत्ववतु शाक्वररैवते सामनी सामनी शाक्वररैवतेऽ अवत्ववतु शाक्वररैवते सामनी। शाक्वररैवते सामनी सामनी शाक्वररैवते शाक्वररैवते सामनी त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ त्रिनवत्रयस्त्रिꣳशौ सामनी शाक्वररैवते शाक्वररैवते सामनी त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ। शाक्वररैवतेऽ इति शाक्वररैवते। सामनी त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ त्रिनवत्रयस्त्रिꣳशौ सामनी सामनी त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ स्तोमौ स्तोमौ त्रिनवत्रयस्त्रिꣳशौ सामनी सामनी त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ स्तोमौ। सामनीऽ इति सामनी। त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ स्तोमौ स्तोमौ त्रिनवत्रयस्त्रिꣳशौ त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ स्तोमौ हेमन्तशिशिरौ हेमन्तशिशिरौ स्तोमौ त्रिनवत्रयस्त्रिꣳशौ त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ स्तोमौ हेमन्तशिशिरौ। त्रिनवत्रयस्त्रिꣳशाविति त्रिनवत्रयस्त्रिꣳशौ। स्तोमौ हेमन्तशिशिरौ हेमन्तशिशिरौ स्तोमौ स्तोमौ हेमन्तशिशिरावृतूऽ ऋतू हेमन्तशिशिरौ स्तोमौ स्तोमौ हेमन्तशिशिरावृतू। हेमन्तशिशिरावृतूऽ ऋतू हेमन्तशिशिरौ हेमन्तशिशिरावृतू ब्वर्चो ब्वर्चऽ ऋतू हेमन्तशिशिरौ हेमन्तशिशिरावृतू ब्वर्चः। ऋतू ब्वर्चो ब्वर्चऽ ऋतूऽ ऋतू ब्वर्चो द्रविणन्द्रविणँब्वर्चऽ ऋतूऽ ऋतू ब्वर्चो द्रविणम्। ऋतूऽ इत्यृतू। ब्वर्चो द्रविणन्द्रविणँब्वर्चो ब्वर्चो द्रविणम्प्रत्यस्तम्प्रत्यस्तन्द्रविणँब्वर्चो ब्वर्चो द्रविणम्प्रत्यस्तम्। द्रविणम्प्रत्यस्तम्प्रत्यस्तन्द्रविणन्द्रविणम्प्रत्यस्तन्नमुचेर्न्नमुचेः प्रत्यस्तन्द्रविणन्द्रविणम्प्रत्यस्तन्नमुचेः। प्रत्यस्तन्नमुचेर्न्नमुचेः प्प्रत्यस्तम्प्रत्यस्तन्नमुचेः शिरः शिरो नमुचेः प्प्रत्यस्तम्प्रत्यस्तन्नमुचेः शिरः। प्रत्यस्तमिति प्प्रति अस्तम्। नमुचेः शिरः शिरो नमुचेर्न्नमुचेः शिरः। शिरऽ इति शिरः॥ मृत्योः पाहि पाहि मृत्योर्मृत्योः पाह्योजऽ ओजः पाहि मृत्यो-

मृत्योः[1] पाह्योजः। पाह्योजऽ ओजः पाहि पाह्योजोस्यस्योजः पाहि पाह्योजोसि। ओजोस्यस्योजऽ ओजोसि सहः सहोस्योजऽ ओजोसि सहः। असि सहः सहोस्यसि सहोमृतममृतꣳ सहोस्यसि सहोमृतम्[2]। सहोमृतम-मृतꣳ सहः सहोमृतम्। अमृतमित्यमृतम्॥१४॥

हिरण्ण्यरूपाऽ उषसऽ उषसो हिरण्ण्यरूपौ हिरण्ण्यरूपाऽ उषसो व्विरोके व्विरोकऽ उषसो हिरण्ण्यरूपौ हिरण्ण्यरूपाऽ उषसो व्विरोके। हिरण्ण्यरूपाविति हिरण्ण्य रूपौ। उषसो व्विरोके व्विरोकऽ उषसऽ उषसो व्विरोकऽ उभाऽ उभौ व्विरोकऽ उषसऽ उषसो व्विरोकऽ उभौ। व्विरोकऽ उभाऽ उभौ व्विरोके व्विरोकऽ उभाविन्द्राविन्द्राऽ उभौ व्विरोके व्विरोकऽ उभाविन्द्रौ। व्विरोकऽ इति वि रोके। उभाविन्द्राविन्द्राऽ उभाऽ उभाविन्द्राऽ उदुदिन्द्राऽ उभाऽ उभाविन्द्राऽ[3] उत्। इन्द्राऽ उदुदिन्द्राविन्द्राऽ उदिथऽ इथऽ उदिन्द्राविन्द्राऽ उदिथः। उदिथऽ इथऽ उदुदिथः सूर्य्यः सूर्य्यऽ इथऽ उदुदिथः सूर्य्यः। इथः सूर्य्यः सूर्य्यऽ इथऽ इथः सूर्य्यश्च च सूर्य्यऽ इथऽ इथः सूर्य्यश्च। सूर्य्यश्च च सूर्य्यः सूर्य्यश्च। चेति च॥ आ रोहतꣳ रोहतमा रोहतँव्वरुण व्वरुण रोहतमा रोहतँव्वरुण। रोहतँव्वरुण व्वरुण रोहतꣳ रोहतँव्वरुण मित्र मित्र व्वरुण रोहतꣳ रोहतँव्वरुण मित्र। व्वरुण मित्र मित्र व्वरुण व्वरुण मित्र गर्त्तङ्गर्त्तम्मित्र व्वरुण व्वरुण मित्र गर्त्तम्। मित्र गर्त्तङ्गर्त्तम्मित्र मित्र गर्त्तन्ततस्ततो गर्त्तम्मित्र मित्र गर्त्तन्ततः। गर्त्तन्ततस्ततो गर्त्तङ्गर्त्तन्ततश्च-

---

[1].ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११३) इस सूत्र के अनुसार मृत्योर्मृत्योः यहाँ रेफ से परवर्ती मकार का द्वित्व नहीं होगा। भाष्यकारों के अनुसार ऊष्मान्तस्याभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) के द्वारा प्राप्त द्वित्व का ही उपर्युक्त सूत्र के द्वारा प्रतिषेध अथवा अपवाद मानना विचारणीय है।

[2]. सङ्क्रमे च सर्वत्र (वा. प्रा. ४.८१) सङ्क्रम में सर्वत्र अकार का अभिनिधान होता है। यहाँ सहः से परे असि पद पुनरुक्त (गलत्) होने के कारण सहः का अमृतम् के साथ सन्धि करना सङ्क्रम कहलाता है। गलत् पद को गणान्त भी कहा जाता है।

[3]. उभौ इन्द्रौ यहाँ सन्ध्यक्षरमयवायावम्(वा.प्रा.४.४८) से आव् होता है। न वकारस्यासस्थान एकेषाम्(वा.प्रा.४.१२८) इस सूत्र से उभाविन्द्रौ यहाँ वकार का लोप नहीं होता है। उभाऽ उभौ यहां लोप विहित है।

क्षाथाञ्चक्षाथा॒न्तते॒ा गर्त्त॒ङ्गर्त्त॒न्ततं॑श्चक्षाथाम्। ततं॑श्चक्षाथाञ्चक्षाथा॒न्तत॒स्त-
तं॑श्चक्षाथा॒मदि॑ति॒मदि॑तिञ्चक्षाथा॒न्तत॒स्ततं॑श्चक्षाथा॒मदि॑तिम्। च॒क्षा॒था॒मदि॑-
ति॒मदि॑तिञ्चक्षाथाञ्चक्षाथा॒मदि॑ति॒न्दिति॒न्दिति॒मदि॑तिञ्चक्षाथाञ्चक्षाथा॒मदि॑ति॒-
न्दितिं॑म्। अदि॑ति॒न्दिति॒न्दिति॒मदि॑ति॒मदि॑ति॒न्दितिं॑ञ्च च॒ दिति॒मदि॑ति॒मदि॑ति॒न्दि-
तिं॑ञ्च। दितिं॑ञ्च च॒ दिति॒न्दितिं॑ञ्च मि॒त्रो मि॒त्रश्च॒ दिति॒न्दितिं॑ञ्च मि॒त्रः। च॒ मि॒त्रो
मि॒त्रश्चं॑ च मि॒त्रो॒स्य॑सि मि॒त्रश्चं॑ च मि॒त्रो॒सि। मि॒त्रो॒स्य॑सि मि॒त्रो मि॒त्रो॒सि॒ व्वरु॑णो॒
व्वरु॑णोसि मि॒त्रो मि॒त्रो॒सि॒ व्वरु॑णः। अ॒सि॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णोस्यसि॒ व्वरु॑णोस्यसि॒
व्वरु॑णोस्यसि॒ व्वरु॑णोसि। व्वरु॑णोस्यसि॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णोसि। अ॒सीत्यं॑सि॥१५॥

सोमं॑स्य त्वा त्वा॒ सोमं॑स्य॒ सोमं॑स्य त्वा द्यु॒म्म्नेनं॑ द्यु॒म्म्नेनं॑ त्वा॒ सोमं॑स्य॒
सोमं॑स्य त्वा द्यु॒म्म्नेनं॑। त्वा॒ द्यु॒म्म्नेनं॑ द्यु॒म्म्नेनं॑ त्वा त्वा द्यु॒म्म्नेना॒ब्भ्यु॒भि द्यु॒म्म्नेनं॑ त्वा
त्वा द्यु॒म्म्नेना॒भि। द्यु॒म्म्नेना॒ब्भ्यु॒भि द्यु॒म्म्नेनं॑ द्यु॒म्म्नेना॒भि षिं॑ञ्चामि सिञ्चाम्म्य॒भि
द्यु॒म्म्नेनं॑ द्यु॒म्म्नेना॒भि षिं॑ञ्चामि[1]। अ॒भि षिं॑ञ्चामि सिञ्चाम्म्य॒ब्भ्यु॒भि षिं॑ञ्चाम्म्य॒ग्ग्ने-
र॒ग्ग्नेः सिं॑ञ्चाम्म्य॒ब्भ्यु॒भि षिं॑ञ्चाम्म्य॒ग्ग्नेः। सि॒ञ्चा॒म्म्य॒ग्ग्नेर॒ग्ग्नेः सिं॑ञ्चामि सिञ्चा-
म्म्य॒ग्ग्नेब्भ्राजं॑सा॒ ब्भ्राजं॑सा॒ग्ग्नेः सिं॑ञ्चामि सिञ्चाम्म्य॒ग्ग्नेब्भ्राजं॑सा। अ॒ग्ग्नेब्भ्राजं॑सा॒
ब्भ्राजं॑सा॒ग्ग्नेर॒ग्ग्नेब्भ्राजं॑सा॒ सूर्य्यं॑स्य॒ सूर्य्यं॑स्य॒ ब्भ्राजं॑सा॒ग्ग्नेर॒ग्ग्नेब्भ्राजं॑सा॒ सूर्य्यं॑स्य।
भ्राजं॑सा॒ सूर्य्यं॑स्य॒ सूर्य्यं॑स्य॒ ब्भ्राजं॑सा॒ ब्भ्राजं॑सा॒ सूर्य्यं॑स्य॒ व्वर्च्चं॑सा॒ व्वर्च्चं॑सा॒ सूर्य्यं॑स्य॒
ब्भ्राजं॑सा॒ ब्भ्राजं॑सा॒ सूर्य्यं॑स्य॒ व्वर्च्चं॑सा। सूर्य्यं॑स्य॒ व्वर्च्चं॑सा॒ व्वर्च्चं॑सा॒ सूर्य्यं॑स्य॒ सूर्य्यं॑स्य॒
व्वर्च्च॒सेन्द्र॒स्येन्द्रं॑स्य॒ व्वर्च्चं॑सा॒ सूर्य्यं॑स्य॒ सूर्य्यं॑स्य॒ व्वर्च्च॒सेन्द्रं॑स्य। व्वर्च्च॒सेन्द्र॒स्येन्द्रं॑स्य॒
व्वर्च्चं॑सा॒ व्वर्च्च॒सेन्द्रं॑स्येन्द्रि॒येणें॑न्द्रि॒येणेन्द्रं॑स्य॒ व्वर्च्चं॑सा॒ व्वर्च्च॒सेन्द्रं॑स्येन्द्रि॒येणं॑। इन्द्रं॑स्ये-
न्द्रि॒येणें॑न्द्रि॒येणेन्द्र॒स्येन्द्रं॑स्येन्द्रि॒येणं॑। इ॒न्द्रि॒येणेतीं॑न्द्रि॒येणं॑॥ क्ष॒त्त्राणां॑क्ष॒त्त्रप॑तिः

---

[1]. अभेश्च (वा. प्रा. ३.६३) अभि से परवर्ती सकार षकार हो जाता है। अतः अभि के पश्चात् सिञ्चामि की सन्धि करने पर षकार होगा। अन्यथा सिञ्चामि ही रहेगा।

क्षत्रपतिः क्षत्राणांक्षत्राणांक्षत्रपतिरेद्धयेधि क्षत्रपतिः क्षत्राणांक्षत्राणांक्षत्र-पतिरेधि। क्षत्रपतिरेद्धयेधि क्षत्रपतिः क्षत्रपतिरेद्धयत्स्यत्स्येधि क्षत्रपतिः क्षत्रपतिरेद्धयति। क्षत्रपतिरिति क्षत्र पतिः। एद्धयत्स्यत्स्यैद्धयेद्धयति दिद्यून्दिद्यू-नत्स्यैद्धयेद्धयति दिद्यून्। अति दिद्यून्दिद्यूनत्स्यति दिद्यून्पाहि पाहि दिद्यूनत्स्यति दिद्यून्पाहि। दिद्यून्पाहि पाहि दिद्यून्दिद्यून्पाहि। पाहीति पाहि॥१६॥

प्र पर्व्वतस्य पर्व्वतस्य प्प्र प्प्र पर्व्वतस्य वृषभस्य वृषभस्य पर्व्वतस्य प्प्र प्प्र पर्व्वतस्य वृषभस्य। पर्व्वतस्य वृषभस्य वृषभस्य पर्व्वतस्य पर्व्वतस्य वृषभस्य पृष्ठा-त्पृष्ठाद्वृषभस्य पर्व्वतस्य पर्व्वतस्य वृषभस्य पृष्ठात्। वृषभस्य पृष्ठात्पृष्ठाद्वृषभस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावो नावः पृष्ठाद्वृषभस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावः। पृष्ठान्नावो नावः पृष्ठात्पृष्ठान्नावश्चरन्ति चरन्ति नावः पृष्ठात्पृष्ठान्नावश्चरन्ति[1]। नावश्चरन्ति चर-न्ति नावो नावश्चरन्ति स्वसिचः स्वसिचश्चरन्ति नावो नावश्चरन्ति स्वसिचः। चरन्ति स्वसिचः स्वसिचश्चरन्ति चरन्ति स्वसिचऽ इयानाऽ ईयानाः स्वसि-चश्चरन्ति चरन्ति स्वसिचऽ इयानाः। स्वसिचऽ इयानाऽ ईयानाः स्वसिचः स्वसिचऽ इयानाः। स्वसिचऽ इति स्व सिचः। इयानाऽ इतीयानाः॥ ताऽ आववृत्रन्नववृत्रन्ना तास्ताऽ आववृत्रन्नधरागधरागववृत्रन्ना तास्ताऽ आववृत्रन्न-धराक्। आववृत्रन्[2]। अववृत्रन्नधरागधरागववृत्रन्नववृत्रन्नधरागुदक्ताऽ उदक्ताऽ अधरागववृत्रन्नववृत्रन्नधरागुदक्ताः। अधरागुदक्ताऽ उदक्ताऽ अधरागधरागुदक्ताऽ अहिमहिमुदक्ताऽ अधरागधरागुदक्ताऽ अहिम्। उदक्ताऽ अहिमहिमुदक्ताऽ उदक्ताऽ अहिम्बुद्ध्यम्बुद्ध्यमहिमुदक्ताऽ उदक्ताऽ अहिम्बुद्ध्यम्। उदक्ताऽ इत्युत्

---

1. नावः चरन्ति यहाँ विसर्जनीयः(वा.प्रा.३.६) इसके अधिकार में पठित सूत्र चछयोः शम्(वा.प्रा.३.७) से विसर्ग शकार होता है।

2. प्रकृत्या पदान्तीयः (वा. प्रा. ३.८९) पद के अन्त में स्थित नकार अविकृत रहता है।

अक्काः। अहिम्बुध्न्यम्बुध्न्यमहिमहिम्बुध्न्यमन्वनु बुध्न्यमहिमहिम्बुध्न्यमनु। बुध्न्यमन्वनु बुध्न्यम्बुध्न्यमनु रीयमाणा रीयमाणाऽ अनु बुध्न्यम्बुध्न्यमनु रीयमाणाः। अनु रीयमाणा रीयमाणाऽ अन्वनु रीयमाणाः। रीयमाणाऽ इति रीयमाणाः॥ व्विष्णोर्व्विक्रमणँव्विक्रमणँव्विष्णोव्विष्णोर्व्विक्रमणमस्यसि व्विक्रमणँव्विष्णोर्व्विष्णोर्व्विक्रमणमसि। व्विक्रमणमस्यसि व्विक्रमणँव्विक्रमणमसि व्विक्रान्तँव्विक्रान्तमसि व्विक्रमणँव्विक्रमणमसि व्विक्रान्तम्। व्विक्रमणमिति वि क्रमणम्। असि व्विक्रान्तँव्विक्रान्तमस्यसि व्विक्रान्तङ्क्रान्तङ्क्रान्तँव्विक्रान्तमस्यसि व्विक्रान्तङ्क्रान्तम्। व्विक्रान्तङ्क्रान्तङ्क्रान्तँव्विक्रान्तँव्विक्रान्तङ्क्रान्तम् । व्विक्रान्तमिति वि क्रान्तम्। क्रान्तमिति क्रान्तम्॥१७॥

प्रजापते न न प्प्रजापते प्प्रजापते न त्वत्त्वन्न प्प्रजापते प्प्रजापते न त्वत् । प्रजापतऽ इति प्प्रजा पते। न त्वत्त्वन्न न त्वदेतान्न्येतानि त्वन्न न त्वदेतानि। त्वदेतान्न्येतानि त्वत्त्वदेतान्न्यन्न्योन्न्यऽ एतानि त्वत्त्वदेतान्न्यन्न्यः। एतान्न्यन्न्योन्न्यऽ एतान्न्येतान्न्यन्न्यो व्विश्श्वा व्विश्श्वान्न्यऽ एतान्न्येतान्न्यन्न्यो व्विश्श्वा। अन्न्यो व्विश्श्वा व्विश्श्वान्न्योन्न्यो व्विश्श्वा रूपाणि रूपाणि व्विश्श्वान्न्योन्न्यो व्विश्श्वा रूपाणि। व्विश्श्वा रूपाणि रूपाणि व्विश्श्वा व्विश्श्वा रूपाणि परि परि रूपाणि व्विश्श्वा व्विश्श्वा रूपाणि परि। रूपाणि परि परि रूपाणि रूपाणि परि ता ता परि रूपाणि रूपाणि परि ता[1]। परि ता ता परि परि ता बभूव बभूव ता परि परि ता बभूव। ता बभूव बभूव ता ता बभूव। बभूवेति बभूव॥ यत्कामास्त्ते ते यत्कामा यत्कामास्त्ते जुहुमो जुहुमस्त्ते यत्कामा यत्कामास्त्ते जुहुमः[2]। यत्कामाऽ इति यत् कामाः। ते जुहुमो जुहुमस्त्ते ते जुहुमस्त्तत्ज्जुहुमस्त्ते ते जुहुमस्त्तत्। जुहुमस्त्तत्ज्जुहुमो जुहुमस्त्तन्नो

1. वा.प्रा.४.३१. के अनुसार यहाँ ता पद स्वरान्त है।

2. वो वां ते त्वदर्थे(वा.प्रा.२.५) के अनुसार यहाँ ते पद अनुदात है।

नस्तज्जुंहुमो जुंहुमस्तन्नं÷। तन्नों नस्ततन्नोंऽ अस्त्वस्तु नस्ततन्नोंऽ अस्तु। नोऽ अस्त्वस्तु नो नोऽ अस्त्वयमयमस्तु नो नोऽ अस्त्वयम्। अस्त्वयमयमस्त्वस्त्वयममुष्ष्यामुष्ष्यायमस्त्वस्त्वयममुष्ष्यं। अयममुष्ष्यामुष्ष्यायमयममुष्ष्यं पिता पितामुष्ष्यायमयममुष्ष्यं पिता। अमुष्ष्यं पिता पितामुष्ष्यामुष्ष्यं पितासावसौ पितामुष्ष्यामुष्ष्यं पितासौ। पितासावसौ पिता पितासावस्यास्यासौ पिता पितासावस्य[1]। असावस्यास्यासावसावस्य पिता पितास्यासावसावस्य पिता। अस्य पिता पितास्यास्य पिता व्वयँव्वयम्पितास्यास्य पिता व्वयम्। पिता व्वयँव्वयम्पिता पिता व्वयꣳ स्याम स्याम व्वयम्पिता पिता व्वयꣳ स्याम। व्वयꣳ स्याम स्याम व्वयँव्वयꣳ स्याम पतयः पतयः स्याम व्वयँव्वयꣳ स्याम पतयः। स्याम पतयः पतयः स्याम स्याम पतयो रयीणाꣳ रयीणाम्पतयः स्याम स्याम पतयो रयीणाम्। पतयो रयीणाꣳ रयीणाम्पतयः पतयो रयीणाꣳ स्वाहा स्वाहा रयीणाम्पतयः पतयो रयीणाꣳ स्वाहा। रयीणाꣳ स्वाहा स्वाहा रयीणाꣳ रयीणाꣳ स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ रुद्र यद्यद्रुद्र रुद्र यत्तें ते यद्रुद्र रुद्र यत्तें। यत्तें ते यद्यत्ते क्रिवि क्रिविं ते यद्यत्ते क्रिविं। ते क्रिवि क्रिविं ते ते क्रिवि परम्परङ्क्रिविं ते ते क्रिवि परम्। क्रिवि परम्परङ्क्रिवि क्रिवि परन्नाम नाम परङ्क्रिवि क्रिवि परन्नाम। परन्नाम नाम परम्परन्नाम तस्मिँस्तस्मिन्नाम परम्परन्नाम तस्मिन्[2]। नाम तस्मिँस्तस्मिन्नाम नाम तस्मिन्हुतꣳ हुतन्तस्मिन्नाम नाम तस्मिन्हुतम्। तस्मिन्हुतꣳ हुतन्तस्मिँस्तस्मिन्हुतमस्यसि हुतन्तस्मिँस्तस्मिन्हुतमसि। हुतमस्यसि हुतꣳ हुतमस्यमेष्टममेष्टमसि हुतꣳ हुतमस्यमेष्टम्। अस्यमेष्टममेष्ट-

1. वा. प्रा. २.६१. के अनुसार यहाँ अस्य पद अन्तोदात है।

2. तस्मिन् तस्मिन् यहाँ नुः(वा.प्रा.३.१३३) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र तथयोः सम(वा.प्रा.३.१३५) से नकार सकार होता है तथा उपधा अनुनासिक।

मंस्यस्यमेष्टमंस्यस्यमेष्टमंस्यस्यमेष्टमंसि। अमेष्टमंस्यस्यमेष्टममेष्टमंसि स्वाहा स्वाहांस्यमेष्टममेष्टमंसि स्वाहा। अमेष्टमित्यंमा इष्टम्। असि स्वाहा स्वाहांस्यसि स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१८॥

मित्रावरुणयोस्त्वा त्वा मित्रावरुणयोर्म्मित्रावरुणयोस्त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशास्त्रोस्त्वा मित्रावरुणयोर्म्मित्रावरुणयोस्त्वा प्प्रशास्त्रोः। त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशास्त्रोस्त्वा त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा प्प्रशिषा प्प्रशास्त्रोस्त्वा त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा। प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा प्प्रशिषा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा युनज्मि युनज्मि प्प्रशिषा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा युनज्मि। प्रशास्त्रोरिति प्प्र शास्त्रोः। प्रशिषा युनज्मि युनज्मि प्प्रशिषा प्प्रशिषा युनज्मि। प्रशिषेति प्प्र शिषा। युनज्मीति युनज्मि॥ अध्वंथायै त्वा त्वाध्वंथायाऽ अध्वंथायै त्वा स्वधायै स्वधायै त्वाध्वंथायाऽ अध्वंथायै त्वा स्वधायै। त्वा स्वधायै स्वधायै त्वा त्वा स्वधायै त्वा त्वा स्वधायै त्वा त्वा स्वधायै त्वा। स्वधायै त्वा त्वा स्वधायै स्वधायै त्वारिष्टोरिंष्टस्त्वा स्वधायै स्वधायै त्वारिष्टः। त्वारिष्टोरिंष्टस्त्वा त्वारिंष्टोऽ अर्ज्जुनोर्ज्जुनोरिंष्टस्त्वा त्वारिंष्टोऽ अर्ज्जुनः[1]। अरिंष्टोऽ अर्ज्जुनोर्ज्जुनो-रिष्टोरिंष्टोऽ अर्ज्जुनो मरुतांम्मरुतामर्ज्जुनोरिष्टोरिंष्टोऽ अर्ज्जुनो मरुतांम्। अर्ज्जुनो मरुतांम्मरुतामर्ज्जुनोर्ज्जुनो मरुतांम्प्रसवेनं प्प्रसवेनं मरुतामर्ज्जुनोर्ज्जुनो मरुतांम्प्रसवेनं। मरुतांम्प्रसवेनं प्प्रसवेनं मरुतांम्मरुतांम्प्रसवेनं जय जय प्प्रसवेनं मरुतांम्मरुतांम्प्रसवेनं जय। प्रसवेनं जय जय प्प्रसवेनं प्प्रसवेनं जयापामापांम जय प्प्रसवेनं प्प्रसवेनं जयापांम। प्रसवेनेति प्प्र सवेनं। जयापामापांम जय जयापांम् मनंसा मनसापांम जय जयापांम् मनंसा। आपांम्

[1]. वा. प्रा. ४.८५. के अनुसार अरिष्टो अर्जुनः यहाँ ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

मनसा मनसापामापाम् मनसा सꣳ सम्मनसापामापाम् मनसा[1] सम्। मनसा सꣳ सम्मनसा मनसा समिन्द्रियेणेन्द्रियेण सम्मनसा मनसा समिन्द्रियेण। समिन्द्रियेणेन्द्रियेण सꣳ समिन्द्रियेण। इन्द्रियेणेतीन्द्रियेण॥१९॥

मा ते ते मा मा तऽ इन्द्रेन्द्र ते मा मा तऽ इन्द्र। तऽ इन्द्रेन्द्र ते तऽ इन्द्र ते तऽ इन्द्र ते तऽ इन्द्र ते। इन्द्र ते तऽ इन्द्रेन्द्र ते व्वयँव्वयन्तऽ इन्द्रेन्द्र ते व्वयम्। ते व्वयँव्वयन्ते ते व्वयन्तुराषाट्ट् तुराषाड्व्वयन्ते ते व्वयन्तुराषाट्। व्वयन्तुराषाट्ट् तुराषा-ड्व्वयँव्वयन्तुराषाडयुक्तासोयुक्तासस्तुराषाड्व्वयँव्वयन्तुराषाडयुक्तासः। तुराषाडयुक्ता-सोयुक्तासस्तुराषाट्ट् तुराषाडयुक्तासोऽ अब्रह्मताब्रह्मतायुक्तासस्तुराषाट्ट् तुराषाड-युक्तासोऽ अब्रह्मता। अयुक्तासोऽ अब्रह्मताब्रह्मतायुक्तासोयुक्तासोऽ अब्रह्मता व्वि ध्यब्रह्मतायुक्तासोयुक्तासोऽ अब्रह्मता व्वि। अब्रह्मता व्वि ध्यब्रह्मताब्रह्मता व्वि दसाम दसाम् ध्यब्रह्मताब्रह्मता व्वि दसाम। व्वि दसाम दसाम् व्वि वि दसाम। दसामेति दसाम॥ तिष्ठा रथꣳ रथन्तिष्ठ तिष्ठा रथमध्यधि रथन्तिष्ठ तिष्ठा[2] रथमधि। रथमध्यधि रथꣳ रथमधि यँय्यमधि रथꣳ रथमधि यम्। अधि यँय्यमध्यधि यँव्वज्ज्रहस्त व्वज्ज्रहस्त यमध्यधि यँव्वज्ज्रहस्त। यँव्वज्ज्रहस्त व्वज्ज्रहस्त यँय्यँ-व्वज्ज्रहस्ता रश्श्मीन्न्रश्श्मीना वज्ज्रहस्त यँय्यँव्वज्ज्रहस्ता रश्श्मीन्। व्वज्ज्रहस्ता रश्श्मीन्न्रश्श्मीना वज्ज्रहस्त व्वज्ज्रहस्ता रश्श्मीन्देव देव रश्श्मीना वज्ज्रहस्त व्वज्ज्रहस्ता रश्श्मीन्देव। व्वज्ज्रहस्तेति वज्ज्र हस्त। आ रश्श्मीन्। रश्श्मीन्देव देव रश्श्मीन्न्रश्श्मीन्देव यमसे यमसे देव रश्श्मीन्न्रश्श्मीन्देव यमसे। देव यमसे

---

[1]. भाष्यकार उव्वट तथा महीधर ने अपाम पद माना है। अथ मध्ये गवामुच्चच्छति। आपाम मनसेति।- श.ब्रा.५.४.३.९. यहाँ आपाम पद है।

[2]. तिष्ठाद्युदात्तम् (वा. प्रा. ३.१०३) आद्युदात्त तिष्ठ पद का अकार दीर्घ हो जाता है।

यमसे देव देव यमसे स्वश्वान्त्स्वश्वान्यमसे देव देव यमसे स्वश्वान्। यमसे स्वश्वान्त्स्वश्वान्यमसे यमसे स्वश्वान्। स्वश्वानिति सु अश्वान्॥२०॥

अग्नये गृहपतये गृहपतयेऽग्नयेऽग्नये गृहपतये स्वाहा स्वाहा गृहपतयेऽग्नयेऽग्नये गृहपतये स्वाहा। गृहपतये स्वाहा स्वाहा गृहपतये गृहपतये स्वाहा सोमाय सोमाय स्वाहा गृहपतये गृहपतये स्वाहा सोमाय। गृहपतयऽ इति गृह पतये। स्वाहा सोमाय सोमाय स्वाहा स्वाहा सोमाय वनस्पतये वनस्पतये सोमाय स्वाहा स्वाहा सोमाय वनस्पतये। सोमाय वनस्पतये वनस्पतये सोमाय सोमाय वनस्पतये मरुताम्मरुताँवनस्पतये सोमाय सोमाय वनस्पतये मरुताम्। वनस्पतये मरुताम्मरुताँवनस्पतये वनस्पतये मरुतामोजसऽ ओजसे मरुताँवनस्पतये वनस्पतये[1] मरुतामोजसे। मरुतामोजसऽ ओजसे मरुताम्मरुतामोजसऽ इन्द्रस्येन्द्रस्यौजसे मरुताम्मरुतामोजसऽ इन्द्रस्य। ओजसऽ इन्द्रस्येन्द्रस्यौजसऽ ओजसऽ इन्द्रस्येन्द्रियायेन्द्रियायेन्द्रस्यौजसऽ ओजसऽ इन्द्रस्येन्द्रियाय। इन्द्रस्येन्द्रियायेन्द्रियायेन्द्रस्येन्द्रस्येन्द्रियाय। इन्द्रियायेतीन्द्रियाय॥ पृथिवि मातर्म्मातः पृथिवि पृथिवि मातर्म्मा मा मातः पृथिवि पृथिवि मातर्म्मा[2]। मातर्म्मा मा मातर्म्मातर्म्मा मां मा मा मातर्म्मातर्म्मा मां। मा मां मा मा मा मां हिꣳसीर्हिꣳसीर्म्मा मा मा मां हिꣳसीः। मा हिꣳसीर्हिꣳसीर्म्मा मा हिꣳसीर्म्मो मो हिꣳसीर्म्मा मा हिꣳसीर्म्मो। हिꣳसीर्म्मो मो हिꣳसीर्हिꣳसीर्म्मोऽ अहमहम्मो हिꣳसीर्हिꣳसीर्म्मोऽ अहम्। मोऽ अहमहम्मो मोऽ

[1]. वा.प्रा.६.३७. के अनुसार वनस्पतिः पद पृथक्करण नहीं होता है।

[2]. वा. प्रा. १.१६८. के अनुसार मातः पद का विसर्जनीय रिफित संज्ञक है।

अहन्त्वान्त्वामहम्मो मोऽ अहन्त्वाम्। मोऽ[3] इति मो। अहन्त्वान्त्वामहमह-न्त्वाम्। त्वामिति त्वाम्॥२१॥शतम्॥ ४००॥

हꣳसः शुचिषच्छुचिसद्धꣳसो हꣳसः शुचिषद्वसुर्वसुः शुचिसद्धꣳसो हꣳसः शुचिषद्वसुः। शुचिषद्वसुर्वसुः शुचिसच्छुचिषद्वसुरन्तरिक्ष-सदन्तरिक्षसद्वसुः शुचिसच्छुचिषद्वसुरन्तरिक्षसत्। शुचिसदिति शुचि सत्। वसुरन्तरि-क्षसदन्तरिक्षसद्वसुर्वसुरन्तरिक्षसद्धोता होतान्तरिक्षसद्वसुर्वसुर-न्तरिक्षसद्धोता। अन्तरिक्षसद्धोता होतान्तरिक्षसदन्तरिक्षसद्धोता वेदिषद्वे-दिसद्धोतान्तरिक्षसदन्तरिक्षसद्धोता वेदिषत्। अन्तरिक्षसदित्यन्तरिक्ष सत्। होता वेदिषद्वेदिसद्धोता होता वेदिषदतिथिरतिथिर्वेदिसद्धोता होता वेदिषदतिथिः। वेदिषदतिथिरतिथिर्वेदिसद्वेदिषदतिथिर्दुरोणसद्दुरोणसदतिथिर्वे-दिसद्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। वेदिसदिति वेदि सत्। अतिथिर्दुरोणसद्दुरोणसद-तिथिरतिथिर्दुरोणसत्। दुरोणसदिति दुरोण सत्॥ नृषद्वरसद्वरसन्नृसन्नृषद्व-रसदृतसदृतसद्वरसन्नृसन्नृषद्वरसदृतसत्। नृसदिति नृ सत्। वरसदृतसदृतसद्व-रसद्वरसदृतसद्व्योमसद्व्योमसदृतसद्वरसद्वरसदृतसद्व्योमसत्। वरसदिति वर सत्। ऋतसद्व्योमसद्व्योमसदृतसदृतसद्व्योमसदब्जाऽ अब्जा व्योमसदृतसदृतस-द्व्योमसदब्जाः। ऋतसदित्यृत सत्। व्योमसदब्जाऽ अब्जा व्योमसद्व्योमसदब्जा गोजा गोजाऽ अब्जा व्योमसद्व्योमसदब्जा गोजाः। व्योमसदिति व्योम सत्। अब्जा गोजा गोजाऽ अब्जाऽ अब्जा गोजाऽ ऋतजाऽ ऋतजा गोजाऽ अब्जाऽ अब्जा गोजाऽ ऋतजाः। अब्जाऽ इत्यप् जाः। गोजाऽ ऋतजाऽ ऋतजा गोजा गोजाऽ ऋतजाऽ अद्रिजाऽ अद्रिजाऽ ऋतजा गोजा गोजाऽ ऋतजाऽ अद्रिजाः। गोजाऽ इति गो जाः। ऋतजाऽ अद्रिजाऽ अद्रिजाऽ ऋतजाऽ

[3]. ओकारश्च(वा.प्रा.४.९२) इस सूत्र के अनुसार इति शब्द बाद में रहने पर पदान्त ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

ऋतुजाऽ अद्रिजाऽ ऋतमृतमद्रिजाऽ ऋतुजाऽ ऋतुजाऽ अद्रिजाऽ ऋतम्। ऋतुजाऽ इत्यृतु जाः। अद्रिजाऽ ऋतमृतमद्रिजाऽ अद्रिजाऽ ऋतम्बृहद् बृहदृतमद्रिजाऽ अद्रिजाऽ ऋतम्बृहत्। अद्रिजाऽ इत्यद्रि जाः। ऋतम्बृहद् बृहदृतमृतम्बृहत्। बृहदिति बृहत्॥२२॥

इयदस्यसीयदियदस्यायुरायुरसीयदियदस्यायुः। अस्यायुरायुरस्यस्यायु-रस्यस्यायुरस्यस्यायुरसि। आयुरस्यस्यायुरायुरस्यायुरायुरस्यायुरायुरस्यायुः। अस्यायुरायुरस्यस्यायुर्म्मयि मय्यायुरस्यस्यायुर्म्मयि[1]। आयुर्म्मयि मय्यायुरा-युर्म्मयि धेहि धेहि मय्यायुरायुर्म्मयि धेहि। मयि धेहि धेहि मयि मयि धेहि यु-ङ्ङ्युङ् धेहि मयि मयि धेहि युङ्। धेहि युङ्ङ्युङ् धेहि धेहि युङ्ङ्वर्चो व्वर्चो युङ् धेहि धेहि युङ्ङ्वर्चः। युङ्ङ्वर्चो व्वर्चो युङ्ङ्युङ्ङ्वर्चऽ ऊर्ग्गूर्ग्वर्चो युङ्ङ्युङ्ङ्वर्चऽ ऊर्क्[2]। व्वर्चऽ ऊर्ग्गूर्ग्वर्चो व्वर्चऽ ऊर्ग्गूर्ज्जमूर्ज्जमूर्ग्वर्चो व्वर्चऽ ऊर्ग्गूर्ज्जम्। ऊर्ग्गूर्ज्जमूर्ज्ज-मूर्ग्गूर्ग्गूर्ज्जम्। ऊर्ज्जमित्यूर्ज्जम्॥ इन्द्रस्य वाँवामिन्द्रस्येन्द्रस्य वाँव्वीर्य्यकृतौ व्वी-र्य्यकृतौ वामिन्द्रस्येन्द्रस्य वाँव्वीर्य्यकृतः। व्वाँव्वीर्य्यकृतौ व्वीर्य्यकृतौ वाँव्वाँव्वीर्य्य-कृतौ बाहू बाहू व्वीर्य्यकृतौ वाँव्वाँव्वीर्य्यकृतौ बाहू। व्वीर्य्यकृतौ बाहू बाहू व्वीर्य्यकृतौ व्वीर्य्यकृतौ बाहूऽ अब्भ्युपावहराम्म्यब्भ्युपावहरामि बाहू व्वीर्य्यकृतौ व्वीर्य्यकृतौ बाहूऽ अब्भ्युपावहरामि। व्वीर्य्यकृतऽ इति वीर्य्य कृतः। बाहूऽ अब्भ्युपावहरा-म्म्यब्भ्युपावहरामि बाहू बाहूऽ अब्भ्युपावहरामि। बाहूऽ इति बाहू[3]। अब्भ्युपावहरामीत्यभि उपावहरामि॥२३॥

---

1. मयि आयुः यहाँ या.शि.१५०. के अनुसार सन्धि के अनन्तर संयोग में यकार होगा।

2. ऊर्क् यहाँ अवसितं च(वा.प्रा.४.११८) से ककार के द्वित्व का निषेध है। द्वित्व की प्राप्ति परं तु रेफहकाराभ्याम्(वा.प्रा.४.१०२) से है।

3. प्रगृह्ये (वा. प्रा. ४.१९४) प्रगृह्य-संज्ञक पद में स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये। बाहू पद की एकारेकारोकारा द्विवचनान्ताः (वा. प्रा. १.९३) इस सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा होती है।

स्योनास्यसि स्योना स्योनासि सुषदा सुसदासि स्योना स्योनासि सुषदा। असि सुषदा सुसदास्यसि सुषदा क्षत्रस्य क्षत्रस्य सुसदास्यसि सुषदा क्षत्रस्य । सुषदा क्षत्रस्य क्षत्रस्य सुसदा सुषदा क्षत्रस्य योनिर्य्योनिः क्षत्रस्य सुसदा सुषदा क्षत्रस्य योनिः। सुसदेति सु सदा। क्षत्रस्य योनिर्य्योनिः क्षत्रस्य क्षत्रस्य योनिः। योनिरिति योनिः॥ स्योनामा सीद सीदा स्योनाँ स्योनामा सीद सुषदाँ सुसदाँ सीदा स्योनाँ स्योनामा सीद सुषदाम्। आ सीद। सीद सुषदाँ सुसदाँ सीद सीद सुषदाङ्क्षत्रस्य क्षत्रस्य सुसदाँ सीद सीद सुषदाङ्क्षत्रस्य। सुषदाङ्क्षत्रस्य क्षत्रस्य सुसदाँ सुषदाङ्क्षत्रस्य योनिँय्योनिङ्क्षत्रस्य सुसदाँ सुषदाङ्क्षत्रस्य योनिम्। सुसदामिति सु सदाम्। क्षत्रस्य योनिँय्योनिङ्क्षत्रस्य क्षत्रस्य योनिम्। योनिमिति योनिम्॥२४॥

नि षसाद ससाद नि नि षसाद[1] धृतव्रतो धृतव्रतः ससाद नि नि षसाद धृतव्रतः। ससाद धृतव्रतो धृतव्रतः ससाद ससाद धृतव्रतो वरुणो वरुणो धृतव्रतः ससाद ससाद धृतव्रतो वरुणः[2]। धृतव्रतो वरुणो वरुणो धृतव्रतो धृतव्रतो वरुणः पस्त्यासु पस्त्यासु वरुणो धृतव्रतो धृतव्रतो वरुणः पस्त्यासु। धृतव्रतऽ इति धृत व्रतः। वरुणः पस्त्यासु पस्त्यासु वरुणो वरुणः पस्त्यास्वा पस्त्यासु वरुणो वरुणः पस्त्यास्वा। पस्त्यास्वा पस्त्यासु पस्त्यास्वा। एत्या॥ साम्म्राज्याय सुक्रतुः सुक्रतुः साम्म्राज्याय साम्म्राज्याय सुक्रतुः। साम्म्राज्यायेति साम् राज्याय। सुक्रतुरिति सु क्रतुः॥२५॥

अभिभूरस्यस्यभिभूरभिभूरस्येताऽ एताऽ अस्यभिभूरभिभूरस्येताः। अभिभूरित्यभि भूः। अस्येताऽ एताऽ अस्यस्येतास्तै तऽ एताऽ अस्यस्येतास्तै।

---

1. ससाद च (वा. प्रा. ३.६०) इस सूत्र से नि से परे ससाद का प्रथम सकार षकार हो जाता है।

2. या.शि.११३. के अनुसार वरुणः पद में र स्वरित है।

एतास्ते तऽ एताऽ एतास्ते पञ्च पञ्च तऽ एताऽ एतास्ते पञ्च। ते पञ्च पञ्च ते ते पञ्च दिशो दिशः पञ्च ते ते पञ्च दिशः। पञ्च दिशो दिशः पञ्च पञ्च दिशः कल्पन्ताङ्कल्पन्तान्दिशः पञ्च पञ्च दिशः कल्पन्ताम्। दिशः कल्पन्ता-ङ्कल्पन्तान्दिशो दिशः कल्पन्ताम्ब्रह्मन्ब्रह्मन्कल्पन्तान्दिशो दिशः कल्प-न्ताम्ब्रह्मन् । कल्पन्ताम्ब्रह्मन्ब्रह्मन्कल्पन्ताङ्कल्पन्ताम्ब्रह्मँस्त्वन्त्वम्ब्रह्मन्क-ल्पन्ताङ्कल्पन्ताम्ब्रह्मँस्त्वम्। ब्रह्मँस्त्वन्त्वम्ब्रह्मन्ब्रह्मँस्त्वम्ब्रह्मा ब्रह्मा त्वम्ब्रह्म-न्ब्रह्मँस्त्वम्ब्रह्मा। त्वम्ब्रह्मा ब्रह्मा त्वन्त्वम्ब्रह्मास्यसि ब्रह्मा त्वन्त्वम्ब्रह्मासि। ब्रह्मास्यसि ब्रह्मा ब्रह्मासि सविता सविता सविता॒सि ब्रह्मा ब्रह्मासि सविता। असि सविता सवितास्यसि सविता सत्यप्रसवः सत्यप्रसवः सवितास्यसि सविता सत्यप्रसवः। सविता सत्यप्रसवः सत्यप्रसवः सविता सविता सत्यप्रसवो वरुणो वरुणः सत्यप्रसवः सविता सविता सत्यप्रसवो वरुणः। सत्यप्रसवो वरुणो वरुणः सत्यप्रसवः सत्यप्रसवो वरुणः सत्यौजाः सत्यौजा वरुणः सत्यप्रसवः सत्यप्रसवो वरुणः सत्यौजाः। सत्यप्रसवऽ इति सत्य प्रसवः। वरुणः सत्यौजाः सत्यौजा वरुणो वरुणः सत्यौजाऽ इन्द्रऽ इन्द्रः सत्यौजा वरुणो वरुणः सत्यौजाऽ इन्द्रः। सत्यौजाऽ इन्द्रऽ इन्द्रः सत्यौजाः सत्यौजाऽ इन्द्रो विशौजा विशौजाऽ इन्द्रः सत्यौजाः सत्यौजाऽ इन्द्रो विशौजाः। सत्यौजाऽ इति सत्य ओजाः। इन्द्रो विशौजा विशौजाऽ इन्द्रऽ इन्द्रो विशौजा रुद्रो रुद्रो विशौजाऽ इन्द्रऽ इन्द्रो विशौजा रुद्रः। विशौजा रुद्रो रुद्रो विशौजा विशौजा रुद्रः सुशेवः सुशेवो रुद्रो विशौजा विशौजा[1] रुद्रः सुशेवः। रुद्रः सुशेवः सुशेवो रुद्रो रुद्रः सुशेवः। सुशेवऽ इति सु शेवः॥

[1]. विशौजा इत्यन्यायसमासात् (वा. प्रा. ५.३९) व्याकरण के नियमानुसार समास न होने के कारण विशौजाः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

ए॒तास्त्ते॑ तऽ ए॒ताऽ ए॒तास्त्ते॒ पञ्च॒ पञ्च॑ तऽ ए॒ताऽ ए॒तास्त्ते॒ पञ्च॑। ते॒ पञ्च॒ पञ्च॑ ते ते॒ पञ्च॒ दिशो॒ दिश॒ः पञ्च॑ ते ते॒ पञ्च॒ दिश॑÷। पञ्च॒ दिशो॒ दिश॒ः पञ्च॒ पञ्च॒ दिश॑÷ कल्प्पन्ताङ्कल्प्पन्ता॒न्दिश॒ः पञ्च॒ पञ्च॒ दिश॑÷ कल्प्पन्ताम्। दिश॑÷ कल्प्पन्ता-ङ्कल्प्पन्ता॒न्दिशो॒ दिश॑÷ कल्प्पन्ता॒म्ब्रह्म॒न्ब्रह्म॑न्कल्प्पन्ता॒न्दिशो॒ दिश॑÷ कल्प्प-न्ता॒म्ब्रह्म॑न्। क॒ल्प्प॒न्ता॒म्ब्रह्म॒न्ब्रह्म॑न्कल्प्पन्ताङ्कल्प्पन्ता॒म्ब्रह्मँ॑स्त्वन्त्वम्ब्रह्म॑न्क-ल्प्पन्ताङ्कल्प्पन्ता॒म्ब्रह्मँ॑स्त्वम्। ब्रह्मँ॑स्त्वन्त्वम्ब्रह्म॒न्ब्रह्मँ॑स्त्वम्ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मा त्वम्ब्रह्म॒-न्ब्रह्मँ॑स्त्वम्ब्र॒ह्मा। त्वम्ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मा त्वन्त्वम्ब्र॒ह्मास्य॑सि ब्र॒ह्मा त्वन्त्वम्ब्र॒ह्मासि॑। ब्र॒ह्मास्य॑सि ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मासि॑ सवि॒ता स॑वि॒तासि॑ ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मासि॑ सवि॒ता। अ॒सि॒ स॒वि॒ता स॑वि॒तास्य॑सि सवि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवः सवि॒तास्य॑सि सवि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवः। स॒वि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवः सवि॒ता स॑वि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवो॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः स॒त्यप्प्र॑सवः सवि॒ता स॑वि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवो॒ व्वरु॑णः। स॒त्यप्प्र॑सवो॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवो॒ व्वरु॑णः स॒त्यौजाः॑ स॒त्यौजा॒ व्वरु॑णः स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवो॒ व्वरु॑णः स॒त्यौजाः॑। स॒त्यप्प्र॑सव॒ऽ इति॑ स॒त्य प्र॑सवः। व्वरु॑णः स॒त्यौजाः॑ स॒त्यौजा॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्र॑÷ स॒त्यौजा॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्र॑÷। स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्र॑÷ स॒त्यौजाः॑ स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्रो॒ व्विशौ॑जा॒ व्विशौ॑जा॒ऽ इन्द्र॑÷ स॒त्यौजाः॑ स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्रो॒ व्विशौ॑जाः। स॒त्यौजा॒ऽ इति॑ स॒त्य ओ॑जाः। इन्द्रो॒ व्विशौ॑जा॒ व्विशौ॑जा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॒ व्विशौ॑जा रु॒द्रो रु॒द्रो व्विशौ॑जा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॒ व्विशौ॑जा रु॒द्रः। व्विशौ॑जा रु॒द्रो रु॒द्रो व्विशौ॑जा॒ व्विशौ॑जा रु॒द्रः सु॒शेव॑÷ सु॒शेवो॑ रु॒द्रो व्विशौ॑जा॒ व्विशौ॑जा[1] रु॒द्रः सु॒शेव॑÷। रु॒द्रः सु॒शेव॑÷ सु॒शेवो॑ रु॒द्रो रु॒द्रः सु॒शेव॑÷। सु॒शेव॒ऽ इति॑ सु शेव॑÷॥

[1]. विशौजा इत्यन्यायसमासात् (वा. प्रा. ५.३९) व्याकरण के नियमानुसार समास न होने के कारण विशौजाः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

बहुंकार् श्रेयंस्कर् श्रेयं÷कर् बहुंकार् बहुंकार् श्रेयंस्कर् भूयंस्कर् भूयं÷कर् श्रेयं÷कर् बहुंकार् बहुंकार् श्रेयंस्कर् भूयंस्कर[1]। बहुंकारेति बहु कार। श्रेयंस्कर् भूयंस्कर् भूयं÷कर् श्रेयं÷कर् श्रेयंस्कर् भूयंस्कर् तेन् तेन् भूयं÷कर् श्रेयं÷कर् श्रेयंस्कर् भूयंस्कर् तेनं। श्रेयं÷करेति श्रेयं÷ कर। भूयंस्कर् तेन् तेन् भूयं÷कर् भूयंस्कर् तेनं मे मे तेन् भूयं÷कर् भूयंस्कर् तेनं मे। भूयं÷करेति भूयं÷ कर। तेनं मे मे तेन् तेनं मे रद्ध्य रद्ध्य मे तेन् तेनं मे रद्ध्य। मे रद्ध्य रद्ध्य मे मे रद्ध्य। रद्ध्येति रद्ध्य॥२६॥

अग्निः पृथुः पृथुरग्निरग्निः पृथुर्द्धर्म्मणो धर्म्मणः पृथुरग्निरग्निः पृथुर्द्धर्म्मणः। पृथुर्द्धर्म्मणो धर्म्मणः पृथुः पृथुर्द्धर्म्मणस्प्पतिः पतिर्द्धर्म्मणः पृथुः पृथुर्द्धर्म्मणस्प्पतिं÷[2]। धर्म्मणस्प्पतिः पतिर्द्धर्म्मणो धर्म्मणस्प्पतिर्ज्जुषाणो जुंषाणः पतिर्द्धर्म्मणो धर्म्मणस्प्पतिर्ज्जुषाणः। पतिर्ज्जुषाणो जुंषाणः पतिः पतिर्ज्जुषाणोऽ अग्निरग्निर्ज्जुषाणः पतिः पतिर्ज्जुषाणोऽ अग्निः। जुषाणोऽ अग्निरग्निर्ज्जुषाणो जुंषाणोऽ अग्निः पृथुः पृथुरग्निर्ज्जुषाणो जुंषाणोऽ अग्निः पृथुः। अग्निः पृथुः पृथुरग्निरग्निः पृथुर्द्धर्म्मणो धर्म्मणः पृथुरग्निरग्निः पृथुर्द्धर्म्मणः। पृथुर्द्धर्म्मणो धर्म्मणः पृथुः पृथुर्द्धर्म्मणस्प्पतिः पतिर्द्धर्म्मणः पृथुः पृथुर्द्धर्म्मणस्प्पतिं÷। धर्म्मणस्प्पतिः पतिर्द्धर्म्मणो धर्म्मणस्प्पतिराज्ज्यस्याज्ज्यंस्य पतिर्द्धर्म्मणो धर्म्मणस्प्पतिराज्ज्यंस्य। पतिराज्ज्यस्याज्ज्यंस्य पतिः पतिराज्ज्यंस्य व्वेतु व्वेत्त्वाज्ज्यंस्य पतिः पतिराज्ज्यंस्य व्वेतु। आज्ज्यंस्य व्वेतु व्वेत्त्वाज्ज्यस्याज्ज्यंस्य व्वेतु स्वाहा स्वाहा व्वेत्त्वाज्ज्यस्याज्ज्यंस्य व्वेतु स्वाहा। व्वेतु स्वाहा स्वाहा व्वेतु व्वेतु

---

[1]. समानपदे च (वा. प्रा. ३.३०) इस सूत्र से श्रेयः एवं भूयः से परवर्ती विसर्ग का सकार विहित है।

[2]. धर्म्मणः पतिः यहाँ वा.प्रा.३.३५. तथा ३.३६. से विसर्जनीय सकार होता है। सकारोत्तरवर्ती पकार का द्वित्व वा.प्रा.४.१०३. से होता है।

स्वाहा॒ स्वाहा॑कृता॒ः स्वाहा॑कृता॒ः स्वाहा॑ व्वेतु व्वेतु स्वाहा॒ स्वाहा॑कृता॒ः। स्वाहा॒ स्वाहा॑कृता॒ः स्वाहा॑कृता॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑कृता॒ः सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्य॒ स्वाहा॑-कृता॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑कृता॒ः सूर्य्य॑स्य। स्वाहा॑कृता॒ः सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्य॒ स्वाहा॑कृता॒ः स्वाहा॑कृता॒ः सूर्य्य॑स्य र॒श्म्मिभी॑ र॒श्म्मिभि॒ः सूर्य्य॑स्य॒ स्वाहा॑कृता॒ः स्वाहा॑कृता॒ः सूर्य्य॑स्य र॒श्म्मिभि॑ः। स्वाहा॑कृता॒ऽ इति॒ स्वाहा॑ कृता॒ः। सूर्य्य॑स्य र॒श्म्मिभी॑ र॒श्म्मिभि॒ः सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्य र॒श्म्मिभि॑र्य्यतद्ध्वँय्यतद्ध्वꣳ र॒श्म्मिभि॒ः सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्य र॒श्म्मिभि॑र्य्यतद्ध्वम्[1]। र॒श्म्मिभि॑र्य्यतद्ध्वँय्यतद्ध्वꣳ र॒श्म्मिभी॑ र॒श्म्मिभि॑र्य्यतद्ध्वꣳ सजा॒ताना॑ꣳ सजा॒ताना॑ँय्यतद्ध्वꣳ र॒श्म्मिभी॑ र॒श्म्मिभि॑र्य्य-तद्ध्वꣳ सजा॒ताना॑म्। र॒श्म्मिभि॒रिति॑ र॒श्म्मि भि॑ः। य॒त॒द्ध्व॒ꣳ स॒जा॒ताना॑ꣳ सजा॒-ताना॑ँय्यतद्ध्वँय्यतद्ध्वꣳ सजा॒ताना॑म्मद्ध्य॒मेष्ठ्या॑य मद्ध्य॒मेस्त्थ्या॑य सजा॒ताना॑ँय्यत-द्ध्वँय्यतद्ध्वꣳ सजा॒ताना॑म्मद्ध्य॒मेष्ठ्या॑य। स॒जा॒ताना॑म्मद्ध्य॒मेष्ठ्या॑य मद्ध्य॒मेस्त्थ्या॑य सजा॒ताना॑ꣳ सजा॒ताना॑म्मद्ध्य॒मेष्ठ्या॑य। स॒जा॒ता॒नामिति॑ स जा॒ताना॑म्। म॒द्ध्य॒मेस्त्थ्या॒येति॑ मद्ध्य॒मे स्थ्या॑य॥२७॥

स॒वि॒त्रा प्प्र॑सवि॒त्रा प्प्र॑सवि॒त्रा स॑वि॒त्रा स॑वि॒त्रा प्प्र॑सवि॒त्रा सर॑स्वत्या॒ सर॑स्व-त्या प्प्रसवि॒त्रा स॑वि॒त्रा स॑वि॒त्रा प्प्र॑सवि॒त्रा सर॑स्वत्या। प्र॒स॒वि॒त्रा सर॑स्वत्या॒ सर॑स्वत्या प्प्रसवि॒त्रा प्प्र॑सवि॒त्रा सर॑स्वत्या व्वा॒चा व्वा॒चा सर॑स्वत्या प्प्रसवि॒त्रा प्प्र॑सवि॒त्रा सर॑स्वत्या व्वा॒चा। प्र॒स॒वि॒त्रेति॑ प्प्र सवि॒त्रा। सर॑स्वत्या व्वा॒चा व्वा॒चा सर॑स्वत्या॒ सर॑स्वत्या व्वा॒चा त्वष्ट्रा॒ त्वष्ट्रा॑ व्वा॒चा सर॑स्वत्या॒ सर॑स्वत्या व्वा॒चा त्वष्ट्रा॑। व्वा॒चा त्वष्ट्रा॒ त्वष्ट्रा॑ व्वा॒चा व्वा॒चा त्वष्ट्रा॑ रू॒पै रू॒पैस्त्वष्ट्रा॑ व्वा॒चा व्वा॒चा त्वष्ट्रा॑ रू॒पैः।

---

[1]. यतध्वम् यतध्वम् यहाँ सन्धि की स्थिति में प्रथम यतध्वम् का मकार अन्तस्थामन्तस्थास्वनुनासिकां परसस्थानाम् (वा. प्रा. ४.१०) इस सूत्र से अनुनासिक यकार होता है। सवर्णे (वा. प्रा. ४.११२) इस सूत्र से भाष्यकार अनन्त के अनुसार तृतीय यकार का निषेध है।

त्वष्ट्रा रूपै रूपैस्त्वष्ट्रा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्ण्णा पूष्ण्णा रूपैस्त्वष्ट्रा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्ण्णा। रूपैः पूष्ण्णा पूष्ण्णा रूपै रूपैः पूष्ण्णा पशुभिः पशुभिः पूष्ण्णा रूपै रूपैः पूष्ण्णा पशुभिः। पूष्ण्णा पशुभिः पशुभिः पूष्ण्णा पूष्ण्णा पशुभिरिन्द्रेणेन्द्रेण पशुभिः पूष्ण्णा पूष्ण्णा पशुभिरिन्द्रेण। पशुभिरिन्द्रेणेन्द्रेण पशुभिः पशुभिरिन्द्रेणास्म्मेऽ अस्म्मेऽ इन्द्रेण पशुभिः पशुभिरिन्द्रेणास्म्मे[1]। पशुभिरिति पशु भिः। इन्द्रेणास्म्मेऽ अस्म्मेऽ इन्द्रेणेन्द्रेणास्म्मे बृहस्प्पतिना बृहस्प्पतिनास्म्मेऽ इन्द्रेणेन्द्रेणास्म्मे बृहस्प्पतिना। अस्म्मे बृहस्प्पतिना बृहस्प्पतिनास्म्मेऽ अस्म्मे बृहस्प्पतिना ब्रह्मणा ब्रह्मणा बृहस्प्पतिनास्म्मेऽ अस्म्मे बृहस्प्पतिना ब्रह्मणा। अस्म्मेऽ इत्यस्म्मे। बृहस्प्पतिना ब्रह्मणा ब्रह्मणा बृहस्प्पतिना बृहस्प्पतिना ब्रह्मणा व्वरुणेन व्वरुणेन ब्रह्मणा बृहस्प्पतिना बृहस्प्पतिना[2] ब्रह्मणा व्वरुणेन।ब्रह्मणा व्वरुणेन व्वरुणेन ब्रह्मणा ब्रह्मणा व्वरुणेनौजसौजसा व्वरुणेन ब्रह्मणा ब्रह्मणा व्वरुणेनौजसा। व्वरुणेनौजसौजसा व्वरुणेन व्वरुणेनौजसाग्गिनाग्गिनौजसा व्वरुणेन व्वरुणेनौजसाग्गिना। ओजसाग्गिनाग्गिनौजसौजसाग्गिना तेजसा तेजसाग्गिनौजसौजसाग्गिना तेजसा। अग्गिना तेजसा तेजसाग्गिनाग्गिना तेजसा सोमेन सोमेन तेजसाग्गिनाग्गिना तेजसा सोमेन। तेजसा सोमेन सोमेन तेजसा तेजसा सोमेन राज्ज्ञा राज्ज्ञा सोमेन तेजसा तेजसा सोमेन राज्ज्ञा। सोमेन राज्ज्ञा राज्ज्ञा सोमेन सोमेन राज्ज्ञा व्विष्ण्णुना व्विष्ण्णुना राज्ज्ञा सोमेन सोमेन राज्ज्ञा व्विष्ण्णुना। राज्ज्ञा व्विष्ण्णुना व्विष्ण्णुना राज्ज्ञा राज्ज्ञा व्विष्ण्णुना दशम्म्या दशम्म्या व्विष्ण्णुना राज्ज्ञा राज्ज्ञा व्विष्ण्णुना दशम्म्या। व्विष्ण्णुना दशम्म्या

1. अस्मे पद वा. प्रा. १.९६. के अनुसार प्रगृह्य है। वा. प्रा. ४.८८ के अनुसार स्वर परे रहते प्रगृह्य स्वर प्रकृतिभाव से रहता है।

2. वा.प्रा.५.३७. के अनुसार बृहस्पतिः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

दशम्म्या व्विष्ण्णुना व्विष्ण्णुना दशम्म्या देवतया देवतया दशम्म्या व्विष्ण्णुना व्विष्ण्णुना दशम्म्या देवतया। दशम्म्या देवतया देवतया दशम्म्या दशम्म्या देवतया प्प्रसूतः प्प्रसूतो देवतया दशम्म्या दशम्म्या देवतया प्प्रसूतः। देवतया प्प्रसूतः प्प्रसूतो देवतया देवतया प्प्रसूतः प्प्र प्प्र प्प्रसूतो देवतया देवतया प्प्रसूतः प्प्र। प्रसूतः प्प्र प्प्र प्प्रसूतः प्प्रसूतः प्प्र सर्प्पामि सर्प्पामि प्प्र प्प्रसूतः प्प्रसूतः प्प्र सर्प्पामि। प्रसूतऽ इति प्प्र सूतः। प्र सर्प्पामि सर्प्पामि प्प्र प्प्र सर्प्पामि। सर्प्पामीति सर्प्पामि॥२८॥

अश्विब्भ्याम्पच्यस्व पच्यस्वाश्विब्भ्यामश्विब्भ्याम्पच्यस्व सरस्वत्यै सरस्वत्यै पच्यस्वाश्विब्भ्यामश्विब्भ्याम्पच्यस्व सरस्वत्यै। अश्विब्भ्यामित्यश्वि भ्याम्। पच्यस्व सरस्वत्यै सरस्वत्यै पच्यस्व पच्यस्व सरस्वत्याऽ इन्द्रायेन्द्राय सरस्वत्यै पच्यस्व पच्यस्व सरस्वत्याऽ इन्द्राय। सरस्वत्याऽ इन्द्रायेन्द्राय सरस्वत्यै सरस्वत्याऽ इन्द्राय सुत्राम्म्णे सुत्राम्म्णऽ इन्द्राय सरस्वत्यै सरस्वत्याऽ इन्द्राय सुत्राम्म्णे। इन्द्राय सुत्राम्म्णे सुत्राम्म्णऽ इन्द्रायेन्द्राय सुत्राम्म्णे। सुत्राम्म्णऽ इति सु त्राम्म्णे॥ व्वायुः पूतः पूतो व्वायुर्व्वायुः पूतः पवित्त्रेण पवित्त्रेण पूतो व्वायुर्व्वायुः पूतः पवित्त्रेण। पूतः पवित्त्रेण पवित्त्रेण पूतः पूतः पवित्त्रेण प्प्रत्त्यङ्ङ् प्रत्त्यङ्ङ् पवित्त्रेण पूतः पूतः पवित्त्रेण प्प्रत्त्यङ्। पवित्त्रेण प्प्रत्त्यङ्ङ् प्रत्त्यङ्ङ् पवित्त्रेण पवित्त्रेण प्प्रत्त्यङ्ङ् सोमः सोमः प्प्रत्त्यङ्ङ् पवित्त्रेण पवित्त्रेण प्प्रत्त्यङ्ङ् सोमः। प्रत्त्यङ्ङ् सोमः सोमः प्प्रत्त्यङ्ङ् प्प्रत्त्यङ्ङ् सोमोऽ अतिस्स्रुतोतिस्स्रुतः सोमः प्प्रत्त्यङ्ङ् प्रत्त्यङ्ङ्[1] सोमोऽ अतिस्स्रुतः। सोमोऽ अतिस्स्रुतोतिस्स्रुतः सोमः सोमोऽ अतिस्स्रुतः। अतिस्स्रुतऽ इत्यति स्स्रुतः॥ इन्द्रस्य युज्ज्यो युज्ज्यऽ

[1]. वा. प्रा. ५.३०. के अनुसार यहां प्रत्यङ् पद का पृथक्करण विहित नहीं है। प्रत्यङ् सोमः यहां ङ्णौ क्ताभ्यां सकारे(वा.प्रा.४.१५) इस सूत्र से ये दोनों पद ककार से व्यवहित होते हैं। स्ववर्गीये चानुत्तमे(वा.प्रा.४.११७) इस सूत्र से ङकार के द्वित्व का निषेध है।

इन्द्रस्येन्द्रस्य युज्यः सखा सखा युज्यऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य युज्यः सखा। युज्यः सखा सखा युज्यो युज्यः सखा। सखेति सखा॥२९॥

कुविदङ्गाङ्ग कुवित्कुविदङ्ग यवमन्तो यवमन्तोङ्ग कुवित्कुविदङ्ग यवमन्तः। अङ्ग यवमन्तो यवमन्तोङ्गाङ्ग यवमन्तो यवँ्यवँ्यवमन्तोङ्गाङ्ग यवमन्तो यवम्। यवमन्तो यवँ्यवँ्यवमन्तो यवमन्तो यवञ्चिच्चिद्यवँ्यवमन्तो यवमन्तो यवञ्चित्। यवमन्तऽ इति यव मन्तः। यवञ्चिच्चिद्यवँ्यवञ्चिद्यथा यथा चिद्यवँ्य-वञ्चिद्यथा। चिद्यथा यथा चिच्चिद्यथा दान्ति दान्ति यथा चिच्चिद्यथा दान्ति। यथा दान्ति दान्ति यथा यथा दान्त्यनुपूर्वमनुपूर्वन्दान्ति यथा यथा दान्त्यनुपूर्वम्। दान्त्यनुपूर्वमनुपूर्वन्दान्ति दान्त्यनुपूर्वंवियूय वियूयानुपूर्वन्दान्ति दान्त्यनुपूर्वं-वियूय। अनुपूर्वंवियूय वियूयानुपूर्वमनुपूर्वंवियूय। अनुपूर्वमित्यनु पूर्वम्। वियूयेति वि यूय॥ इहेहैषामेषामिहेहेहेहैषाङ्कृणुहि कृणुह्येषामिहेहेहेहैषाङ्कृणुहि[1]। इहेहे-तीह इह। एषाङ्कृणुहि कृणुह्येषामेषाङ्कृणुहि भोजनानि भोजनानि कृणुह्येषामे-षाङ्कृणुहि भोजनानि। कृणुहि भोजनानि भोजनानि कृणुहि कृणुहि भोजनानि ये ये भोजनानि कृणुहि कृणुहि भोजनानि ये। भोजनानि ये ये भोजनानि भोजनानि ये बर्हिषो बर्हिषो ये भोजनानि भोजनानि ये बर्हिषः। ये बर्हिषो बर्हिषो ये ये बर्हिषो नमऽउक्तिन्नमऽउक्तिम्बर्हिषो ये ये बर्हिषो नमऽउक्तिम्। बर्हिषो नमऽउक्तिन्नमऽउक्तिम्बर्हिषो बर्हिषो नमऽउक्तिँ्यजन्ति यजन्ति नमऽ-उक्तिम्बर्हिषो बर्हिषो नमऽउक्तिँ्यजन्ति। नमऽउक्तिँ्यजन्ति यजन्ति नमऽउ-क्तिन्नमऽउक्तिँ्यजन्ति। नमऽउक्तिमिति नमः उक्तिम्। यजन्तीति यजन्ति॥ अश्विभ्यान्त्वा त्वाश्विभ्यामश्विभ्यान्त्वा सरस्वत्यै सरस्वत्यै त्वाश्विभ्याम्-

[1]. वा. प्रा. २.७. के अनुसार यहाँ एषाम् यह सर्वनाम पद अनुदात्त है।

श्विभ्यान्त्वा सरस्वत्यै। अश्विभ्यामित्यश्वि भ्याम्[1]। त्वा सरस्वत्यै सरस्वत्यै त्वा त्वा सरस्वत्याऽ इन्द्रायेन्द्राय सरस्वत्यै त्वा त्वा सरस्वत्याऽ इन्द्राय। सरस्वत्याऽ इन्द्रायेन्द्राय सरस्वत्यै सरस्वत्याऽ इन्द्राय सुत्राम्म्णे सुत्राम्म्णऽ इन्द्राय सरस्वत्यै सरस्वत्याऽ इन्द्राय सुत्राम्म्णे। इन्द्राय सुत्राम्म्णे सुत्राम्म्णऽ इन्द्रायेन्द्राय सुत्राम्म्णे। सुत्राम्म्णऽ इति सु त्राम्म्णे॥३०॥

युवꣳ सुरामꣳ सुरामँ्युवँ्युवꣳ सुराममश्विनाश्विना सुरामँ्युवँ्युवꣳ सुराममश्विना। सुराममश्विनाश्विना सुरामꣳ सुराममश्विना नमुचौ नमुचावश्विना सुरामꣳ सुराममश्विना नमुचौ। अश्विना नमुचौ नमुचावश्विनाश्विना नमुचावासुरऽ आसुरे नमुचावश्विनाश्विना नमुचावासुरे। नमुचावासुरऽ आसुरे नमुचौ नमुचावासुरे सचा सचासुरे नमुचौ नमुचावासुरे सचा। आसुरे सचा सचासुरऽ आसुरे सचा। सचेति सचा॥ विपिपाना शुभꣳ शुभो विपिपाना विपिपाना शुभस्पती पती शुभो विपिपाना विपिपाना शुभस्पती[2]। विपिपानेति वि पिपाना। शुभस्पती पती शुभꣳ शुभस्पतीऽ इन्द्रमिन्द्रम्पती शुभꣳ शुभस्पतीऽ इन्द्रम्। पतीऽ इन्द्रमिन्द्रम्पती पतीऽ इन्द्रङ्कर्म्मसु कर्म्मस्विन्द्रम्पती पतीऽ इन्द्रङ्कर्म्मसु। पतीऽ इति पती। इन्द्रङ्कर्म्मसु कर्म्मस्विन्द्रमिन्द्रङ्कर्म्मस्वावतमावतङ्कर्म्मस्विन्द्रमिन्द्रङ्कर्म्मस्वावतम्। कर्म्मस्वावतमावतङ्कर्म्मसु कर्म्मस्वावतम्। कर्म्मस्विति कर्म्म सु। आवतमित्यावतम्॥३१॥

पुत्रमिव पितरौ पितरौ पुत्रमिव पुत्रमिव पितरावश्विनाश्विना पितरौ पुत्रमिव पुत्रमिव पितरावश्विना। पुत्रमिवेति पुत्रम् इव। पितरावश्विनाश्विना पितरौ पितरावश्विनोभोभाश्विना पितरौ पितरावश्विनोभा। अश्विनोभोभाश्विनाश्विनो-

[1]. ह्रस्वव्यञ्जनाभ्यां भकारादौ विभक्तिप्रत्यये(वा.प्रा.५.१३) इस सूत्र के अनुसार इस पद में ह्रस्व(स्वर) तथा व्यञ्जन के बाद में भकार से प्रारम्भ होने वाला विभक्ति-प्रत्यय होने से पृथक्करण होता है।

[2].वा.प्रा.३.३५. तथा ३.३६. के अनुसार शुभः पती यहाँ विसर्जनीय सकार होता है।

भेन्द्रेन्द्रो॒भाश्विना॒श्विनो॒भेन्द्र॑ । उ॒भेन्द्रेन्द्रो॒भोभेन्द्रा॒वथु॑रा॒वथु॒रिन्द्रो॒भोभेन्द्रा॒वथुः॑ । इन्द्रा॒वथु॑रा॒वथु॒रिन्द्रेन्द्रा॒वथु॒ꣳ काव्यै॒ꣳ काव्यै॑रा॒वथु॒रिन्द्रेन्द्रा॒वथु॒ꣳ काव्यैः॑ । आ॒वथु॒ꣳ काव्यै॒ꣳ काव्यै॑रा॒वथु॑रा॒वथु॒ꣳ काव्यै॑र्द्द॒ꣳसना॑भिर्द्द॒ꣳसना॑भि॒ꣳ काव्यै॑रा॒वथु॑रा॒वथु॒ꣳ काव्यै॑र्द्द॒ꣳसना॑भिꣳ । काव्यै॑र्द्द॒ꣳसना॑भिर्द्द॒ꣳसना॑भि॒ꣳ काव्यै॒ꣳ काव्यै॑र्द्द॒ꣳसना॑भिꣳ । द॒ꣳसना॑भि॒रिति॑ द॒ꣳसना॑भिꣳ ॥ यत्सु॒राम॑ꣳ सु॒राम॒ꣳ य्यद्यत्सु॒राम॒ꣳ व्वि वि सु॒राम॒ꣳ य्य-द्यत्सु॒राम॒ꣳ व्वि । सु॒राम॒ꣳ व्वि वि सु॒राम॑ꣳ सु॒राम॒ꣳ व्यपि॒बोपि॑बो॒ व्वि सु॒राम॑ꣳ सु॒राम॒ꣳ व्यपि॑बꣳ[1] । व्यपि॒बोपि॑बो॒ व्वि व्यपि॑ब॒ꣳ शची॑भि॒ꣳ शची॑भि॒रपि॑बो॒ व्वि व्यपि॑ब॒ꣳ शची॑भिꣳ । अपि॑ब॒ꣳ शची॑भि॒ꣳ शची॑भि॒रपि॒बोपि॑ब॒ꣳ शची॑भि॒ꣳ सर॑स्वती॒ सर॑स्वती॒ शची॑भि॒रपि॒बोपि॑ब॒ꣳ शची॑भि॒ꣳ सर॑स्वती । शची॑भि॒ꣳ सर॑स्वती॒ सर॑स्वती॒ शची॑भि॒ꣳ शची॑भि॒ꣳ सर॑स्वती त्वा त्वा॒ सर॑स्वती॒ शची॑भि॒ꣳ शची॑भि॒ꣳ सर॑स्वती त्वा । सर॑स्वती त्वा त्वा॒ सर॑स्वती॒ सर॑स्वती त्वा मघवन्मघवँस्त्वा॒ सर॑स्वती॒ सर॑स्वती त्वा मघवन् । त्वा॒ म॒घ॒व॒न्म॒घ॒वँ॒स्त्वा॒ त्वा॒ म॒घ॒व॒न्न॒भि॒ष्ण॒ग॒भि॒ष्ण॒ङ्म॒घ॒वँ॒स्त्वा॒ त्वा॒ म॒घ॒व॒न्न॒भि॒ष्ण॒क्[2] । म॒घ॒व॒न्न॒भि॒ष्ण॒ग॒भि॒ष्ण॒ङ्म॒घ॒व॒न्म॒घ॒व॒न्न॒भि॒ष्ण॒क् । म॒घ॒व॒न्निति॑ मघ ब्वन् । अ॒भि॒ष्ण॒गित्य॑भिष्णक् ॥३२॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे दशमोध्यायः॥

॥इति प्रथमो दशकः॥

[1].वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार सुरामम् पद का पृथक्करण नहीं होता है।

[2].अभिष्णक् अभिष्णक् यहां स्पर्शोऽपञ्चमः स्वरघौ तृतीयम्(वा.प्रा.४.१२०) इस सूत्र से अपञ्चम-स्पर्श(क) स्वर(अ) बाद में होने से तृतीय-स्पर्श(ग) होता है।